।। श्रीवीतरागाय नमः ।।

पञ्च भाव

प्रश्नोत्तर मञ्जूषा

प्रथम खण्ड

❊ प्रस्तुति ❊

आर्यिका १०५ श्री विज्ञानमती माताजी

❊ प्रकाशक ❊

लालावत धनपाल जी पुत्र श्री निहालचन्द जी
(आशीष, दिपेश लालावत परिवार)

घाटोल, जिला-बाँसवाड़ा (राज.)

www.aaryikavigyanmatiji.in

पञ्च भाव प्रश्नोत्तर मञ्जूषा - प्रथम खण्ड

प्रस्तुति : आर्यिका १०५ श्री विज्ञानमती माताजी

सम्पादन : डॉ. चेतनप्रकाश पाटनी, जोधपुर

अर्थसहयोग : लालावत धनपाल जी पुत्र श्री निहालचन्द जी लालावत
(आशीष, दिपेश लालावत परिवार)

प्राप्ति स्थान :
- ब्र. अनिल जैन
  उदासीन आश्रम, छप्पन दुकान के पीछे
  ५८४, एम.जी. रोड, तुकोगंज, पलासिया
  इन्दौर-१० फोन : ०७३१-२५४५७४४
- संजीव जैन (रामपुर)
  पूजा परिधान, गुलाबगंज चौराहा
  आरौन (गुना-म.प्र.)
  फोन : ०७५४५-२५८४९७
- ब्र. भरत जैन
  धर्मोदय परीक्षा बोर्ड
  महिला आई.टी.आई. के सामने
  ज्वाय स्कूल के पास, खुरई रोड
  सागर (म.प्र.)

संस्करण : प्रथम, १००० प्रतियाँ

प्रकाशन तिथि : अनन्त चतुर्दशी - २०१३ (१८.०९.२०१३)
(पूज्य आर्यिकाश्री विज्ञानमती जी के १० उपवास के उपलक्ष्य में)

मूल्य : स्वाध्याय

संकल्पना : निधि कम्प्यूटर्स, जोधपुर ☎ ०२९१-२४४०५७८

मुद्रक : प्रिण्ट प्लस, जोधपुर ☎ ०२९१-२६५६३२०

卐 सम्पादकीय 卐

भाव : भाव शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है- भवनं भवतीति वा भावः, होना मात्र या जो होता है सो भाव है। **(रा.वा.१/५/२८/९)**

- **भवनं भावः**, भूतिर्वा भाव इति भावसद्दस्स विउप्पत्ति **(ध.५/१,७,१/१८४/१०)**
- **भावो खलु परिणामो -** पदार्थों के परिणाम को भाव कहते हैं। **(ध.१/१/१/८/गा.१०३)**
- **भावो णाम.....दव्वपरिणामो।** द्रव्य के परिणाम को भाव कहते हैं। **(ध.५/१,७,१/१८७)**
- **परिणाम मात्रलक्षणो भावः -** भाव का लक्षण परिणाम मात्र है। **(प्र.सा.त.प्र. १२९)**
- **भावः चित्परिणामः** - चेतन के परिणाम को भाव कहते हैं। **(गो.जी./जी.प्र.१६५/३९१/६)**
- **भावश्चित्तोत्थ उच्यते -** भाव अर्थात् चित्त का विकार **(प.प्र.टीका १/१२१/१११/८)**

इस प्रकार परिणाम - परिणमन ही भाव है। जड़-चेतन सभी द्रव्यों का स्वभाव परिणमनशील है अतः सभी भावयुक्त हैं।

जीव द्रव्य के पाँच भाव हैं –

कर्मों के उदय से होने वाले रागादि भाव **औदयिक।**

कर्मों के उपशम से होने वाले सम्यक्त्व व चारित्र **औपशमिक।**

कर्मों के क्षय से होने वाले केवलज्ञानादि **क्षायिक।**

कर्मों के क्षयोपशम से होने वाले मतिज्ञानादि **क्षायोपशमिक।**

कर्मों से सर्वथा निरपेक्ष चैतन्यादि भाव **पारिणामिक।**

एक समय में एक जीव के भिन्न-भिन्न गुणों की अपेक्षा भिन्न-भिन्न गुणस्थानों में यथायोग्य भाव होने सम्भव है, जिनके संयोगी भंगों को सान्निपातिक भाव कहते हैं।

पुद्गल द्रव्य में औदयिक, क्षायिक व पारिणामिक ये तीन भाव होते हैं।

शेष चार द्रव्यों - धर्म, अधर्म, आकाश और काल में केवल एक पारिणामिक भाव ही सम्भव है।

जैन धर्म भावप्रधान धर्म है। जीव के परिणाम ही उसके बन्ध-मोक्ष में कारण कहे गये हैं। **भाव पाहुड़** में **कुन्दकुन्दाचार्य** ने बताया है –

पावं हवइ असेसं पुण्णमसेसं च हवइ परिणामाद्।
परिणामादो बंधो मुक्खो जिणसासणे दिट्ठो॥११६॥

पढ़ना-सुनना भी भाव बिना कुछ नहीं है –

पढिएणवि किं कीरइ किं वा सुणिएण भावरहिएण।
भावो कारणभूदो सायारणयारभूदाणं।।६६।।

भाव रहित पढ़ने-सुनने से क्या होता है? अर्थात् कुछ भी कार्यकारी नहीं है इसलिए श्रावकत्व तथा मुनित्व इनका कारणभूत भाव ही है। अर्थात् पढ़कर सुनकर आपको ज्ञानस्वरूप जान कर अनुभव करे तब भाव जाना जाता है, इसलिए बार-बार भावना से भाव लगाने पर ही सिद्धि है।

गुणभद्राचार्य आत्मानुशासन में लिखते हैं –

परिणाममेव कारणमाहु: खलु पुण्यपापयो: प्राज्ञा:।
तस्मात् पापापचय: पुण्योपचयश्च सुविधेय:।।२३।।

प्राज्ञपुरुषों ने पुण्य-पाप का कारण परिणामों को ही कहा है अत: पाप का नाश और पुण्य का संचय भली प्रकार से करना ही योग्य है। पर का किया पुण्य-पाप नहीं होता- अपने ही परिणामों से पुण्यपाप होते हैं अत: अशुभ को छोड़ कर शुभ परिणाम करना चाहिए।

कल्याणमन्दिर स्तोत्र में भक्त भगवान से शिकायत करता है -

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दु:खपात्रं,
यस्मात् क्रिया: प्रतिफलन्ति न भावशून्या:।।३८।।

''हे जगद्बन्धो ! मैंने आपको सुना भी है, पूजा भी की है और दर्शन भी किए हैं अर्थात् मैंने आपका नाम भी सुना है, उपदेश भी सुना है, बड़ी-बड़ी पूजाएँ भी की हैं और तीर्थों पर आपके दर्शन भी किये हैं फिर भी भक्तिपूर्वक चित्त में धारण नहीं करने से मैं आज तक दु:खों का ही पात्र बना हुआ हूँ।'' भक्त की इस शिकायत का कारण बताते हुए **आचार्य कुमुदचन्द्र** लिखते हैं कि **भाव रहित क्रियाएँ सफल नहीं होतीं।** यदि भाव से करता तो कभी दु:ख नहीं उठाने पड़ते।

जब भावों की इतनी महत्ता है तो उनके सम्बन्ध में साधक को जानना अत्यावश्यक है। जैनागम में जीव के मूल पाँच भाव और उनके उत्तर भेद करके कुल ५३ भाव कहे गए हैं। कर्मों के बंध, उदय आदि के मूल स्रोत ये भाव ही हैं। प्रस्तुत कृति **प:ा भाव प्रश्नोत्तर मंजूषा (प्रथम खण्ड) में आर्यिका विज्ञानमती माताजी** ने आगमाधार से इन्हीं भावों का विवेचन कर्म के उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम तथा गुणस्थानों एवं मार्गणास्थानों के परिप्रेक्ष्य में तालिकाओं और प्रश्नोत्तरों के माध्यम से किया है। विषय जटिल होते हुए भी रुचिशील जिज्ञासुओं के लिए उपयोग की एकाग्रता और कषायों की मन्दता में निमित्त बनेगा। करणानुयोग के अध्ययन की यही विशेषता है। गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान और

संयम इन आठ मार्गणाओं से सम्बंधित इस विवेचना में कुल तालिकाएँ ५८ हैं और प्रश्नोत्तरों की संख्या ८५० है।

प्रस्तुत कृति की उद्भावना और संयोजना के सम्बन्ध में **पू. आर्यिका विज्ञानमतीजी** ने अपने आलेख **'सृजन का स्रोत'** में विस्तार से प्रकाश डाला है और **पू. आर्यिका आदित्यमतीजी** ने अपने आलेख में कृति के अध्ययन-प्रभाव का उल्लेख किया है। निश्चय ही, पूज्य विज्ञानमतीजी की यह नवीन कृति पूर्ववर्ती कृतियों के समान ही स्वाध्यायियों की सराहना का विषय बनेगी। पूज्य माताजी अपनी अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी आराधना के फलस्वरूप आगम के गूढ़ रहस्यों को इसी प्रकार पाठकों के लिए सरल रूप में प्रस्तुत करती रहें- यही कामना करता हूँ।

आर्यिका श्री आदित्यमती माताजी ने अपने आलेख **'अप्रतिम व्यक्तित्व की धनी'** में पूज्य माताजी के जीवन पर संक्षेप में प्रकाश डाला है। संघस्थ आर्यिका वृन्द एवं ब्र. बहिनों ने स्रोतग्रन्थों के प्रमाण मिला कर कृति की प्रामाणिकता को पुष्ट किया है। मैं आप सबका आभारी हूँ और पूज्य माताजी व संघस्थ आर्यिका वृन्द के श्रीचरणों में सविनय वन्दामि निवेदन करता हूँ। ब्र. बहिनों को सादर वन्दना।

ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु **श्री धनपालजी पुत्र श्री निहालचन्दजी लालावत, घाटोल निवासी** ने पूर्ण आर्थिक सहयोग प्रदान किया है, एतदर्थ मैं आपका आभारी हूँ।

तालिकाओं सहित इस कृति के सुन्दर एवं सुसंयोजित कम्प्यूटरीकरण के लिए मैं **निधि कम्प्यूटर्स** जोधपुर के **डॉ. क्षेमंकर** को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। सुरुचिपूर्ण मुद्रण हेतु **प्रिण्ट प्लस** के कर्मचारी मेरे साधुवाद के पात्र हैं।

ग्रन्थ प्रकाशन में सहयोगी सभी श्रुतप्रेमियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। अपने प्रमाद व अज्ञान से ग्रन्थ के सम्पादन-प्रकाशन में रही खामियों के लिए सविनय क्षमायाचना करता हूँ। शीघ्र ही दूसरा खण्ड भी आपके कर-कमलों में पहुँचेगा।

– डॉ. चेतनप्रकाश पाटनी

'अविरल', ५४-५५ इन्द्रा विहार
सेक्शन ७ विस्तार, न्यू पॉवर हाउस रोड
जोधपुर (राज.)

卐 सृजन का स्रोत 卐

संसार में मनुष्य प्रात:काल उठते ही सबसे पहले न्यूज पेपर में भाव देखता है, पढ़ता है। अथवा दूरदर्शन पर कोई भी कार्यक्रम देखे या नहीं देखे, भाव अवश्य देखता है, क्योंकि भावों के आधार से ही उसे लाभ-हानि होती है, अर्थात् यदि भाव गिर जाता है तो हानि और भाव बढ़ जाता है तो लाभ होता है। इसी प्रकार ज्ञानी जीव अथवा मोक्षमार्ग में स्थित साधक भी प्रतिपल अपने भावों को देखता रहता है। उसके जीवन में भी भावों में उतार-चढ़ाव आता रहता है। जब भावों में चढ़ाव आता है, अर्थात् परिणामों में निर्मलता आती है, विशुद्धि बढ़ती है, कषायों की मंदता होने से लेश्या की विशुद्धि होती है, तो उसके संयम लब्धि स्थान में वृद्धि होती है, पूर्वोपार्जित कर्मों की निर्जरा होती है और जब विशुद्धि कम होती है, पंचेन्द्रिय के विषय-भोगों के प्रति आकर्षण उत्पन्न होने लगता है तो वह तत्काल अपनी व अपने पापों की निन्दा-गर्हा करते हुए उनको नष्ट करने का प्रयास करता है। यही मोक्षमार्ग कहलाता है।

इस जीव के कितने भाव होते हैं, कितने भाव हो सकते हैं एवं बदलते हुए परिणामों में कब कौन सा भाव नष्ट होकर नया भाव उत्पन्न हो जाता है अर्थात् परिणामों के परिवर्तन से गुणस्थानों में परिवर्तन आता है और गुणस्थानों के परिवर्तन से भावों में भी परिवर्तन आता है। **आचार्य भगवन्त उमास्वामी महाराज** ने जैन धर्म के हार्द स्वरूप **तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ** के दूसरे अध्याय में पहले सूत्र से सातवें सूत्र तक जीव के भावों का वर्णन किया है। इसके पूर्व भी भावों का संकेत देते हुए उन्होंने प्रथम अध्याय के आठवें सूत्र में भी सामान्यत: भाव अनुयोग द्वार से सम्यग्दर्शन व जीव-अजीवादि तत्त्वों को जानने की प्रेरणा दी है। **आचार्य पूज्यपाद स्वामी** ने इसी तत्त्वार्थसूत्र की टीका करते हुए गुणस्थान एवं मार्गणाओं में कहाँ कैसा भाव होता है? इसका वर्णन किया है। **आचार्य वीरसेन स्वामी** ने भी **षट्खण्डागम** की टीका करते हुए भावानुगम में भावों का वर्णन किया है। इस प्रकार जीव के भावों का अनेक स्थानों पर अथवा सभी ग्रन्थों में कहीं विस्तार से तो कहीं संक्षेप से वर्णन अवश्य ही किया गया है, क्योंकि धर्म भाव-प्रधान होता है। मोक्षमार्ग भी भावों के आधार से ही बनता है। कर्मों के उदय, बंध आदि की आधार-शिला भी जीव के भाव ही हैं। इन्हीं भावों का वर्णन इस **प:ा-भाव प्रश्नोत्तर मञ्जूषा** में किया गया है।

'चउबीस-ठाणा' के समान इसमें भी २४ स्थानों में मूल एवं उत्तर भावों की संख्या बताई गई है। ताकि मार्गणाओं में भावों को पढ़ते समय सुविधा रहे। 'चउबीस-ठाणा' की अपेक्षा इसमें प्रत्येक स्थान का वर्णन करते समय सर्वप्रथम स्थान में होने वाले गुणस्थान किस कर्म के उदय, क्षय, क्षयोपशम, उपशम की अपेक्षा होते हैं, इसे 'कर्म-विवक्षा' के नाम से कहा गया है। उसके बाद उस गुणस्थान या मार्गणा में एक दो तीन आदि के समूह रूप कितने स्थान बन सकते हैं इसे **स्थान विवेचन** के नाम से कहा गया है। तदुपरांत त्रेपन भावों में कौनसे-कौनसे अथवा कितने स्थान हो सकते हैं, तत्पश्चात् भावों

में मार्गणा तथा गुणस्थान एवं मार्गणा के प्रत्येक भेद में भावों का कथन किया है। अंत में परीक्षा के लिए एक प्रश्नपत्र भी दिया है।

कई साधर्मी बन्धुओं ने कहा कि इतनी कठिन यह **पंच भाव प्रश्नोत्तर मंजूषा** आखिर कौन पढ़ेगा? आज किसके पास समय है कि वह इसके एक-दो पृष्ठों को पढ़ने में घण्टों लगा पावे। कौन ऐसा विद्वान है, जो अपना समय देकर जिज्ञासु को समझावे? यह तो बड़े विद्वानों और करणानुयोग के स्वाध्याय प्रेमियों के लिए ही उपयोगी है। यह सत्य है कि इसको चलते-फिरते, बातें करते हुए नहीं पढ़ा जा सकता है, क्योंकि यह करणानुयोग का विषय है फिर भी यदि कोई दो-चार व्यक्ति मिलकर इसका पठन-पाठन करें तो काफी विषय समझ में आ सकता है। इसका अध्ययन करते हुए दो-चार घंटे तो यूँ ही निकल जाते हैं। पढ़ने में उपयोग एकाग्र होता है, दुनिया भर के सब विकल्पों को भूलकर धर्म-ध्यान में लगने का सबसे अच्छा उपाय करणानुयोग ही है।

रावतभाटा वर्षायोग के समय **आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज** के शिष्य परम पूज्य श्री **प्रशान्तसागर जी महाराज** के द्वारा लिखित **'तिरेपन भाव चर्चा'** पुस्तक हमें देखने को मिली। उसे देखकर हम सभी का भाव हुआ कि हमें भी ५३ भावों के बारे में पढ़ना चाहिए। हम लोगों ने कक्षा प्रारम्भ कर दी। कक्षा में प्रश्न-उत्तर हुए, चर्चा हुई। उसी को आधार बनाकर गुणस्थान, मार्गणा आदि में भी उत्तरोत्तर प्रश्नोत्तर होते-होते एक दिन सबका भाव हुआ कि चउबीस-ठाणा के समान इसे भी प्रश्नोत्तर के रूप में संकलित कर दिया जाये तो संभव है हम जैसे अल्पज्ञ भी करणानुयोग के विषय में कुछ जान पावें। योजना बनी और वहीं से संकलन प्रारम्भ हुआ। संकलन करते-करते एक दिन धवला ग्रंथ में भावों का प्रकरण देखते-देखते कर्म विवक्षा एवं स्थानों का भी प्रकरण देखने को मिला, तो विचार किया, कि इसे भी इसमें संकलित कर दिया जाये तो नया विषय होगा। इस संदर्भ में भी लोगों की जिज्ञासा बढ़ेगी, ज्ञान वृद्धिंगत होगा। इसलिए इसे भी संकलित कर दिया गया।

प्रस्तुत कृति के संकलन का मुख्य उद्देश्य तो अपने समय को धर्मध्यान में व्यतीत करने का ही है तथा हमारे आचार्य गुरुवरों ने अपनी साधना के अमूल्य समय में से समय निकालकर हम जैसे अज्ञानियों के अज्ञान को दूर करने के लिए शास्त्रों की रचना की है। उनका उपकार हम क्या चुका सकते हैं! उन्हीं गुरुवर्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए यह सब कुछ किया है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी शक्ति के अनुसार आचार्यों की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें, ताकि हमारी जिनवाणी अजर-अमर रहे, उसके आधार से ही हम अपनी श्रद्धा को मजबूत बना सकते हैं, ज्ञान को वृद्धिंगत कर सकते हैं, चारित्र में निखार ला सकते हैं, चर्या को सुधार सकते हैं।

यह संकलन **सर्वार्थसिद्धि, तत्त्वार्थराजवार्तिक, धवलाग्रंथ २,५,७** आदि का आधार लेकर ही किया गया है। कार्य पूर्ण होने के बाद इसे कक्षा में भी पढ़ा, कुछ विद्वानों के साथ भी चर्चा की। एक कॉपी **पं. रतनलाल जी बैनाडा** के पास भेजी। **पं. रतनचंदजी बिहाड़ा** ने भी इसे पढ़ा। पंडितद्वय के सुझावों एवं आगम के अनुसार परिशोधित भी किया है, फिर भी अल्पबुद्धि, उपयोग की चंचलता

तथा प्रमाद से, अज्ञान से गलती रहना सम्भव है। आगम अगाध है, उसमें प्रवेश पाना दुष्कर है। इसलिए इसमें जो गलती हो, उसके लिए जिनवाणी माँ मुझे क्षमा करें। प्राज्ञ पुरुष शुद्ध करके पढ़ें तथा सुधार का आवश्यक संकेत अवश्य दें।

ग्रन्थ तैयार होने के बाद, जितने ग्रंथों के प्रमाण इसमें दिये गये हैं, उन सबको ग्रंथों से २-३ बार मिलाने का कार्य संघस्थ सभी आर्यिकाओं एवं ब्र. बहिनों ने किया है। वास्तव में इन सभी ने अपना सभी कार्य छोड़कर ग्रंथ को पढ़ने-सुनने, शास्त्र इकट्ठे करके प्रमाण मिलाने के कार्य में एकजुट होकर मेरा पूरा-पूरा सहयोग किया है। इसी कारण से यह कार्य करने में मुझे श्रम महसूस नहीं हुआ। इन सभी को गुरुदेव का बहुत-बहुत शुभाशिष, मेरी शुभकामनाएँ। आर्यिका वृंद शीघ्र ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करें, बहिनें रत्नत्रय को धारण कर मानव भव को सार्थक करें। शास्त्र संकलन के फलस्वरूप मेरे दु:खों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो, समाधिमरण हो एवं सिद्ध पद की प्राप्ति हो।

पण्डितद्वय एवं परोक्ष-प्रत्यक्ष में सहायता करने वाले सभी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। वे भी यथायोग्य व्रत-संयम को धारणकर अपना कल्पाण करें, यही मेरी मनोकामना है।

डॉ. चेतनप्रकाश जी पाटनी, जोधपुर वालों ने मेरी अन्य कृतियों की भाँति प्रस्तुत कृति का भी सफल सम्पादन किया है। वृद्धावस्था में भी श्रुत की सेवा का जो महत् कार्य सुव्यवस्थित किया है, वह प्रशंसनीय है, उन्हें गुरुवर का शुभाशिष।

रावतभाटा में विराजमान पार्श्वनाथ भगवान, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, समाधिस्थ दीक्षागुरु आचार्य कल्प श्री विवेकसागर जी महाराज का शुभाशिष और जिनवाणी माँ की कृपा ही प्रस्तुत ग्रंथ के उद्‌भव में कारण है, यह सब उन्हीं का प्रसाद है, मेरा कुछ भी नहीं है। सभी के चरणारविन्द में कोटि-कोटि नमन-नमन-नमन।

– आर्यिका विज्ञानमती

卐 अप्रतिम व्यक्तित्व की धनी 卐

फूल अपनी खुशबू फैलाने द्वार-द्वार नहीं जाता, न ही सूरज अपने उगने का संदेश देने घर-घर दस्तक देता है। सूरज के उगने पर सारा संसार अपने आप ही जाग जाता है। चांद अपनी चांदनी बिखेरने किसी के आंगन में नहीं जाता है वरन् चंद्रिका की शीतलता स्वयमेव सभी की तपन शांत करती है और गगन में देदीप्यमान हो चमकती रहती है। ऐसी ही नारी जगत् की देदीप्यमान चंद्रिका हैं हमारी रत्नत्रय-प्रदातृ गुरु माँ **पू. आर्यिकाश्री विज्ञानमती जी** जिनके असाधारण व्यक्तित्व की खुशबू सर्वत्र फैल रही है, जिनका साहित्य पढ़कर देश के कोने-कोने से लोग दर्शन करने चले आते हैं और आकर पाते हैं जैसा पढ़ा-सुना उससे कई अधिक गुना।

पू. आर्यिकाश्री के व्यक्तित्व पर जब हमारी दृष्टि जाती है तो पाते हैं अधरों पर खिली बालसुलभ मुस्कान, निर्विकल्प चेहरे पर मीठी सी जुबान, देखे तो कमल खिले, बोले तो कोयल कूके, चले तो धरती झूमे, हँसे तो फूल झरें। हित-मित-प्रिय आगमोक्त भाषा, संयमित सधी चाल, सुमेरु सी दृढ़ता, ज्ञान-ध्यान, तप में अहर्निश रत, अनुशासित व अनुशासन प्रिय, प्रभु के प्रति समर्पित, गुरुचरणों में अर्पित, महान् तार्किक शैली, सूक्ष्म सुष्ठु चिंतन, समता-साधना-सहजता की संगम, अद्वितीय मेधा की धनी, विद्वत्ता और सरलता, बुद्धिमत्ता और निश्छलता, कठोरता और कोमलता जैसे परस्पर विरोधी आयामों से समन्वित हैं पू. आर्यिकाश्री - ऐसे अप्रतिम व्यक्तित्व के सम्बन्ध में लिखने की सामर्थ्य मुझमें कहाँ है, फिर भी भक्तिवशात् अपने ही कल्याण की इच्छा से लेखनी को गति दे रही हूँ।

गौरवान्वित है उदयपुर जिले का वह भीण्डर नगर और वहाँ पर रहने वाले **बालूलाल जी** का परिवार। जिनका सन् १९६३ का कुँवार अर्थात् कड़वा माह भी मीठा मधुर माह बन गया। क्योंकि यह वही माह है जब आया था यह कन्या रत्न उनके आंगन में। जन्मते ही कन्या की किलकारी सुनकर दादा-दादी को कुछ अलग ही आनंद आया और कन्या ने भी अपनी बाल चेष्टाओं से उन्हें आकर्षित किया तभी तो उन्होंने नाम दिया लीला। बचपन से ही माँ ने धार्मिक संस्कारों से संस्कारित किया तो साधु-संतों के समागम ने उन्हें पुष्टता प्रदान की। लौकिक शिक्षा में पीछे रहकर भी लीला धार्मिक शिक्षा में अग्रणी रही। माँ के द्वारा प्रदत्त संस्कारों ने और अनन्तर आचार्य शिवसागर जी महाराज से प्राप्त संस्कारों ने वैराग्य का बीज वपन कर दिया, अत: अब मन में सिर्फ एक ही भावना कि मुझे बाल ब्रह्मचारिणी रहना है; आर्यिका दीक्षा लेकर स्त्री पर्याय का छेद करना है। अहर्निश भगवान से एक ही प्रार्थना मुझे मोक्षमार्ग पर चलना है। परंतु संकोचशील स्वभाव होने से किसी के सामने अपनी यह भावना अभिव्यक्त नहीं कर पायी।

जैसे ही किशोरावस्था लाँघकर कौमार्य से यौवन की ओर बढ़ने लगी तो माँ-बापू ने आपकी शादी करके अपना कर्त्तव्य पूरा कर लिया। जहाँ चाह हो वहाँ राह मिल ही जाती है। भगवान के सामने भायी गयी भावना सफल हुई। आपके भाग्य से ही आचार्यकल्प विवेकसागर जी महाराज का वर्षायोग

भीण्डर में हो गया। संघस्थ बहिनों ब्र. कुसुम दीदी, ब्र. कंचन दीदी को देखकर आपको ऐसा लगता कि मैं इनसे अपने मन की बात कहूँ तो ये मुझे गुरुवर के चरणों तक पहुँचा देंगी। और ऐसा ही हुआ, फिर क्या था, मिल गया उमड़ते वैराग्य के अंकुर को खाद-पानी। पानी पाते ही अंकुर ने पौधे का रूप लेने का पुरुषार्थ शुरू कर दिया, गुरु रूप माली ने उसे सींचना-सम्हालना भी प्रारंभ कर दिया। गुरु-आशिष का सहारा पाते ही पौधा लहलहाने लगा। फिर उसे शादी का बंधन, माता-पिता का बंधन, कोई भी नहीं रोक पाया। गुरु के चरणों में पहुँचकर संयम, रत्नत्रय को धारण करने की भावना बलवती हो उठी और उनकी भावनाओं को संबल, साहस दिया आर्यिका विशालमती जी ने, तो भावनाओं को साकार कर दिया पू. गुरुदेव ने २ फरवरी १९८५ को कूकनवाली गाँव में और अब **लीला हो गई आ. विज्ञानमती।** तभी से अनवरत अपनी साधना से, चर्चा व चर्या से, त्याग-तपस्या से, साहित्य-रचना से, अध्ययन-अध्यापन से जिनधर्म की प्रभावना करते हुए आत्मकल्याण को मुख्य बनाकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति का पुरुषार्थ कर रही हैं।

पू.आर्यिकाश्री के मानस रूपी मानसरोवर में विविध विधाओं की लहरें निरन्तर लहराती रहती हैं, उनमें से ही एक लहर है प्रस्तुत कृति **पंच भाव प्रश्नोत्तर मंजूषा** जिसमें पंच भावों का आगमोक्त संकलन है जिसे स्वयं का चिन्तन-मनन-मंथन करके विस्तार से भव्य जीवों को समझाया है। वैसे भी देखा जाये तो जैनधर्म भाव प्रधान धर्म है। वस्तुत: भावों की परिकल्पनाएँ ही व्यक्ति को जीवन के परम लक्ष्य का बोध कराती हैं। संसार के भयावह दृश्य का चित्रण ही व्यक्ति के मानस पटल को परिवर्तित करता है। तभी वह अपने आत्मकल्याण के बारे में विचार करता है। प्रसंगवशात् मुझे पू. आर्यिकाश्री का २००० का रहली प्रवास याद आ रहा है। उस समय पू. आर्यिकाश्री ने भावों का खेल बताते हुए चिलातीपुत्र की कथा सुनायी थी- कहाँ वह वासनाओं से आसक्त होकर शादी के मण्डप से दुल्हन को उठा लाया और जब 'वह उसे मिल नहीं सकती है,' ऐसा समझ में आया तो उसकी हत्या कर दी। वृक्ष के इस ओर उसने हत्या की और वृक्ष के उस ओर उसकी दृष्टि गयी, तो पाया दिगम्बर संत को। मुनिराज को देखते ही उसके भाव ऐसे परिवर्तित हुए कि तत्काल ब्रह्मचर्य महाव्रत अर्थात् मुनि बनने के भाव हो गये। उसकी भव्यता को जान कर मुनिराज ने उसे तत्काल दीक्षा भी दे दी। दीक्षा लेते ही ध्यान में खड़े हो गये और पूर्वोपार्जित पाप के उदय से उन पर घोर उपसर्ग हुआ। उपसर्ग में भेद-विज्ञान के माध्यम से (शरीर अलग है आत्मा अलग है) वे सर्वार्थसिद्धि पहुँच गये। एक भव अवतारी बन गये, मोक्ष निश्चित हो गया। यह भावों की महिमा है। तभी से मुझे भावों की महत्ता समझ में आयी। कई बार जब तत्त्वार्थ-सूत्र पढ़ते, टीकाएँ पढ़ते, तब बार-बार ५ भावों को समझते, लेकिन जब पू. आर्यिकाश्री ने कक्षा में सामूहिक रूप से पंचभावों को, इनके उत्तरभेदों को, गुणस्थानों में, मार्गणाओं में, कर्म विवक्षा के संदर्भ में, स्थान आदि में विस्तार से समझाया तो बहुत ही अच्छा लगा। जब हम सब पौष माह की सर्दी में भावों पर चर्चा करने बैठते तो सर्दी है, इस बात की अनुभूति भी नहीं होती। जेठ माह के आसमान से लंबे दिन कब व्यतीत हो जाते पता ही नहीं लगता। १५ किलोमीटर विहार करके भी जब पू. आर्यिकाश्री

पृच्छना रूप में भावों की चर्चा करने लग जाती तो किसी को याद ही नहीं रहता कि हम विहार करके भी आये हैं। मैं यह सब अपनी अनुभूति ही अभिव्यक्त कर रही हूँ। कोई अतिशयोक्ति नहीं कर रही हूँ। सच में करणानुयोग का विषय ऐसा ही है। आप भी अनुभव करके देखना, लगातार ४-५ घंटे तक भी हम आर्त्त-रौद्र ध्यान से बच सकते हैं। उपयोग को एकाग्र कर सकते हैं। पंचम काल में पल-पल पर होने वाले आर्त्त-रौद्र ध्यान से बचने का सशक्त उपाय है जिनागम का अध्ययन-अध्यापन। उस पर भी करणानुयोग का स्वाध्याय।

जैन दर्शन अथाह है, अगाध है। ज्ञान का भण्डार अपने अंदर समेटे हुए प्रतिदिन अपने गहन चिंतन के सागर से अनमोल मणियों को निकालकर ज्ञान-पिपासुओं की प्यास शांत करने में तत्पर पू.आर्यिका श्री निरंतर श्रुतज्ञान की परम्परा में संलग्न, प्रमाद से कोसों दूर, साहित्य-सृजन में अपनी लेखनी को विभिन्न विधाओं पर अविराम श्रम करवाने में निपुण हैं, कुशल हैं, दक्ष हैं।

ज्ञान-ध्यान ही साधक की साधना है, वैराग्य की पुष्टि है। समय का समुचित उपयोग है। सदैव स्वाध्याय में लीन रहकर आचार्यप्रणीत ग्रंथों का संघ में अध्ययन-अध्यापन व अनुशीलन निरंतर चलता रहता है। आपकी चारों अनुयोगों में दक्षता है। आपकी वाणी में आगम और अध्यात्म का सुमेल है। सहज ही जनमानस पापत्याग के लिए प्रेरित होता है। भाषाशैली पर पूर्ण नियंत्रण के साथ निज भावों को सम्हालते हुए सभी को अपने भावों को सम्भालने का ही उपदेश मुख्यत: देती हैं।

पू. आर्यिकाश्री ने न केवल सिद्धान्त ग्रन्थों को ही सरल किया है वरन् सामाजिक, पारिवारिक, वैयक्तिक और नैतिक बिन्दुओं पर भी जनमानस को झकझोर देने वाला साहित्य समाज को दिया है। जैसे- संस्कार-मंजूषा, विवेक-मंजूषा, शील-मंजूषा, अनर्थदण्ड क्या, बहू कैसी, समझदार बेटा, अच्छी सास, पलायन क्यों....आदि, इन कृतियों का अध्ययन कर अध्येता सुख-शांति से जिंदगी जीकर दुर्गतियों से बच सकता है। आपने भगवद् भक्ति में भी अपनी लेखनी को प्रवृत्त किया है। अनेक विधान, भक्तिपाठ, महाकाव्य, चम्पूकाव्यों का भी सृजन किया है। आपकी लेखनी सतत चलती रहती है, कभी थमती नहीं है, क्योंकि थकती नहीं है। मैं तो जिनेन्द्र देव से यही प्रार्थना करती हूँ कि हमारी गुरु माँ की लेखनी इसी प्रकार अनवरत चलती रहे ताकि हम जैसे अज्ञ प्राणी अपनी आत्मा को पापों से बचाने का मार्ग पाते रहें। आपका साहित्य हमें देता है सकारात्मक विचार-सही भी है क्योंकि सकारात्मक विचारधारा ही समाज में, व्यक्ति में परिवर्तन ला सकती है।

प्रस्तुत कृति भी हमें देगी वो आयाम जिससे संभाल सकेंगे हम अपने परिणामों को और परिणाम संभल गये तो समझना भव सुधर गया, मानव पर्याय पाना सार्थक हो गया। मुझे विश्वास है, पाठकगण प्रस्तुत कृति का स्वाध्याय करके अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने का पुरुषार्थ करने के लिए उद्यत होंगे। सभी की भावना निर्मल-निर्मलतर-निर्मलतम बने। इसी भावना से पू. आर्यिकाश्री के श्रीचरणों में वंदामि।

– आर्यिका आदित्यमती, संघस्थ

卐 आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी : जीवन-झाँकी 卐

पूर्वनाम	:	लीला
पिताश्री	:	बालूलाल जी
माता	:	श्रीमती कमला जी
जन्मतिथि	:	मिति आश्विन शुक्ला पंचमी, सन् १९६३
जन्मस्थान	:	भीण्डर (उदयपुर-राजस्थान)
लौकिक शिक्षा	:	हाई स्कूल
परिणय	:	भीण्डर में ही, १८ वर्ष की आयु में, सन् १९८१
गृह त्याग:		परिणय के १८ माह बाद
प्रतिमा धारण	:	अलोध में ५ प्रतिमा, कुचामन में ९ प्रतिमा के व्रत
आर्यिका दीक्षातिथि	:	२ फरवरी १९८५
दीक्षा स्थान	:	कूकनवाली (कुचामन सिटी-राजस्थान)
दीक्षागुरु	:	परम पूज्य आचार्यकल्प श्री विवेकसागरजी महाराज
रुचियाँ	:	स्वाध्याय, तप-त्याग, चिन्तन-मनन, लेखन
विशिष्टता	:	मधुर, गम्भीर पौराणिक शैली में प्रवचन
कृतियाँ	:	**पद्यात्मक :** तत्त्वार्थसूत्र विधान, सम्मेदशिखर विधान, चौंसठ ऋद्धि विधान, बड़े बाबा विधान, रक्षाबंधन विधान, भूषणद्वय महाकाव्य, धीवर की धी, सुदर्शन चरित्र, भक्तिपुञ्ज मञ्जूषा, सम्मेदशिखर माहात्म्य पूजन मञ्जूषा, कल्पद्रुम मण्डल विधान, पार्श्वनाथ विधान, शान्ति विधान **गद्यात्मक :** तत्त्वार्थ मञ्जूषा १-२, चउबीस ठाणा प्रश्नोत्तरी १-२, संस्कार मञ्जूषा १-२, शीलमञ्जूषा, सच्चे देव का स्वरूप, पलायन क्यों, भोगोपभोग परिमाण विधि, बाल संस्कार मञ्जूषा १-२, अच्छी सास, बहू कैसी, अनर्थदण्ड क्या, समझदार बेटा, विवेक मञ्जूषा
दीक्षित शिष्याएँ	:	आर्यिका वृषभमती, आर्यिका आदित्यमती आर्यिका पवित्रमती, आर्यिका गरिमामती आर्यिका सम्भवमती, आर्यिका वरदमती आर्यिका शरदमती, आर्यिका चरणमती आर्यिका करणमती, आर्यिका शरणमती

卐 हमारी पाती 卐

ऊपर जिसका अंत नहीं है, उसे आसमां कहते हैं।
जहाँ में जिसका अंत नहीं है, उसे माँ कहते हैं।।
रत्नत्रय की एकता को मोक्षमार्ग कहते हैं।
सरलता से जो मोक्षमार्ग में लगा दे, उसे विज्ञानमती माँ कहते हैं।।

संसारी प्राणियों में मानव एक श्रेष्ठ प्राणी माना जाता है क्योंकि वह अपने शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक पुरुषार्थ से आत्मिक सफलता की विकासशील यात्रा तय करता है। इस विकासोन्मुख यात्रा के चरम शिखर को स्पर्श कर अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने वाले ही सर्वज्ञ कहे जाते हैं। जिनकी दिव्य देशना से प्रकृति की प्रत्येक चेतना हित का मार्ग पाती है, साथ ही पाती है मार्गनिर्देशन भी, जो दिलाता है उसे असीम सुख रूपी मंजिल। जहाँ पहुँचकर वह करता है अलौकिक अद्वितीय आनंद की अनुभूति। उसी दिव्य देशना को गणधर देव ने आत्मसात् किया और सभी प्राणियों को समझाया। जिसको समझकर ही पूर्वाचार्यों ने माँ जिनवाणी के भण्डार को वृद्धिंगत किया और परम्परागत मनीषियों ने, ऋषि-मुनियों ने सुरक्षित, संरक्षित करते हुए समृद्ध बनाकर हम जैसे तुच्छ प्राणियों का परम उपकार किया है। सर्वज्ञ की वाणी को आगम ग्रंथों में पढ़कर आज हम सभी अपनी समीचीन श्रद्धा, ज्ञान एवं आचरण को सुव्यवस्थित करते हुए दृढ़-दृढ़तर-दृढ़तम बनाने में सफलता प्राप्त कर पा रहे हैं। पूर्वाचार्यों की यह वाणी अक्षरात्मक है, शब्दात्मक है, क्योंकि भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा है, अक्षर है। जब जीवन रूपी प्रयोगशाला में उसका आचरण होता है तब वह अनुभवसिद्ध हो जाती है।

वर्तमान परिवेश में इसी प्रयोग को श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र व जिनवाणी से अनुभवसिद्ध किया है **आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज** के द्वितीय शिष्य समाधिस्थ **आचार्यकल्पश्री विवेकसागर जी महाराज** की शिष्या **आर्यिका श्री विज्ञानमती** माताजी ने, जिनका चारित्र और हृदय अत्यंत विशुद्ध है, गुणों से सुशोभित हैं। वे श्रेष्ठ आर्यिका हैं। नारी जगत् में अग्रणी हैं, अतिशय पण्डिता हैं, अपने रत्नत्रय की पवित्रता से सावित्री हैं, गायत्री हैं, सरस्वती हैं, लक्ष्मी हैं। जिनवाणी की पर्यायवाची हैं। निश्चित ही जन्मान्तरों में उपार्जित पुण्यकर्म के प्रभाव से ही अभी इस जन्म में भी मोक्षमार्ग की निस्पृह साधिका बनकर स्वयं भी उस पर निर्बाध चल रही हैं और हम सभी को भी चला रही हैं। इस पृथिवी रूपी कुटिया में आर्यिका विज्ञानमती जैसी प्रधान आर्यिका का वर्षायोग हमारे वर्ष भर के अथक प्रयास से एवं गुरुवर की असीम अनुकम्पा से हम घाटोलवासियों को मिला है।

बागड़ प्रांत के बाँसवाड़ा जिले में घाटोल नगरी है, जहाँ इस युग के १२ वें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान का ७०० वर्ष पुराना 'बावन डेरी जिनालय' धर्मध्वजा को ऊर्ध्वोन्मुखी करता हुआ सुशोभित हो

रहा है। इसका निर्माण एक **'बाई जी'** ने करवाया है जिसे बागड़ी भाषा में 'डोकरी' शब्द से भी जाना जाता है। वासुपूज्य भगवान की महती कृपा से ही हमें अनेक साधु-संतों का समागम एवं वर्षायोग मिलता रहता है किन्तु इस वर्ष वासुपूज्य भगवान की कुछ विशेष कृपा ही हम नगरवासियों पर हुई और हमें श्रेष्ठ आर्यिका संघ का वर्षायोग मिला जिनकी चर्या, तप, त्याग, ज्ञान आदि गुणों की प्रशंसा दिगम्बर मुनिराज भी किया करते हैं।

आपका सान्निध्य पाते ही समाज का युवा वर्ग – जो मंदिर भी नहीं आता था, वो भी आज पू. आर्यिकाश्री की कक्षा में हाथ में जिनवाणी लेकर डेढ़ घंटे तक जिनागम का अध्ययन करके संस्कारों से सुसज्जित होता हुआ दिखायी दे रहा है, जिन्होंने कभी धोती-दुपट्टा नहीं पहना था आज वे भी सूर्य उदित होते ही धोती दुपट्टा पहनकर हाथ में अष्ट द्रव्य का थाल लेकर अभिषेक-पूजन करते हुए दिखायी दे रहे हैं। हम लोगों ने पू. आर्यिकाश्री के बारे में सुना था कि पू. माताजी की चर्या सीता, अंजना आदि आर्यिकाओं की हस्ताक्षर है, वे सभी को पढ़ाती भी हैं और जैनत्व को सुरक्षित एवं समृद्ध करने के लिए संस्कारित भी करती हैं, सुनी हुई वार्ता का ठोस धरातल पर साक्षात्कार हुआ इस वर्षायोग के दौरान।

वर्षायोग में श्रावकों ने भी अपनी पूरी क्षमता के साथ समय को पहिचानकर जीवन को संस्कारित किया एवं संयम-व्रत अंगीकार कर आत्मा को परमात्मा बनाने का मार्ग पाकर उस पर चलने का प्रयास किया। इसका जीवंत उदाहरण रहा- **'पर्वराज पर्यूषण'** जहाँ सूर्य ने अपनी प्रचण्डता के साथ अपने प्रताप को धरती पर दिखाया, वहीं पू. आर्यिकाश्री ने भी त्याग, अध्यात्म की उत्कृष्टता के साथ आचरण करके सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। पू. आर्यिकाश्री के साथ-साथ, हमारे नगर के जो श्रावक कभी एक समय का भोजन भी नहीं छोड़ पाते थे, उन्होंने भी १० उपवास कर लिये। लगभग ६६ श्रावकों ने १० उपवास, १०-१२ लोगों ने ८,५ आदि उपवास किये। हमारे नगर के ढाई वर्ष से लेकर के १५ वर्ष तक के लगभग २०० बच्चे प्रतिदिन पाठशाला में पढ़ते, उनमें जो संस्कार आये उनको मैं शब्दों में भी नहीं लिख सकता हूँ। यह सब पू. आर्यिकाश्री की चर्या और ज्ञानवैराग्य का ही प्रभाव है।

इन सभी क्षणों के बीच में मैं देखता रहता था कि पू.आर्यिकाश्री की लेखनी भी अनवरत चलती रहती थी। कभी-कभी देखता, आर्यिकाश्री के साथ-साथ आर्यिकासंघ भी कुछ-कुछ लेखन संबंधी काम करता। एक बार मैंने आर्यिका आदित्यमती जी के हाथ में कुछ पेपर देखे। वो पढ़-पढ़कर उन्हें मिला रही थीं, तो मैंने पूछ लिया कि माताजी ये किसके पेपर हैं? तब उन्होंने बताया कि पू. आर्यिकाश्री ने सिद्धांत ग्रंथों का आलोड़न करके जीव के असाधारण ५ भावों के ५३ उत्तर भेदों पर आगम का मंथन-मनन कर प्रश्नोत्तरों को वृहद् रूप से २४ स्थानों में विस्तार से प्रस्तुत किया है। उसी का कार्य चल रहा है। सुनकर मैंने पूछा, ''माताजी ! इसका प्रकाशन भी तो होगा?'' माताजी बोलीं - ''हाँ'', सुनते ही मैंने कहा-''इसका सौभाग्य मुझ पामर को मिल जाये तो मैं भी पावन बन सकूँ दान देकर।'' सुनकर माताजी ने कहा - ''विचार करेंगे।'' २-३ दिन बाद पुन: पूछा तो बोलीं-''मैं पू. आर्यिकाश्री से चर्चा करूँगी, फिर बताऊँगी।'' समय निकला। दशलक्षण पर्व के बाद तो मेरा भाव और भी ऊँचाइयों को छूने

लगा, कारण कि इस बीच मैंने पू. आर्यिकाश्री द्वारा रचित साहित्य को पढ़ लिया था। मैं आर्यिका आदित्यमतीजी के पास आया। उनसे पूछा, ''माताजी ! हमारे भावों को प्रोत्साहन हेतु शुभाशिष मिला या नहीं?'' तब माताजी बोलीं-''मैंने आर्यिकाश्री से कहा था तो वे बोलीं, ''मुझे इस सबसे कोई मतलब नहीं है। मेरा काम हो गया। समय शुभोपयोग के साथ व्यतीत हो इस हेतु यह कार्य किया। प्रकाशन हो, न हो मुझे कोई प्रयोजन नहीं।'' सुनकर मैं विस्मित सा रह गया। आदमी एक पंक्ति लिखता है तो सभी को बताने का, छपवाने का भाव रखता है और ये निस्पृह साधिका हैं जो ग्रंथ तैयार करके भी उसके प्रकाशन संबंधी कोई विकल्प नहीं। फिर मैंने कहा-''माताजी ! अब आप ही हाँ कह दो'' तो उन्होंने अपनी करुणामयी अनुकम्पा मुझ पर बरसायी और मुझे यह सुनहरा अवसर मिला चंचला लक्ष्मी के सदुपयोग का।

पूज्य आर्यिकाश्री के चरणों में यही प्रार्थना करता हूँ कि ''हे माँ ! हमें सदैव इसी प्रकार अपनी आत्मा के कल्याणार्थ अवसर मिलते रहें, मैं सदैव श्रुत के प्रकाशन में अपनी सम्पदा का उपयोग करता रहूँ।'' इन्हीं भावनाओं के साथ पू. आर्यिकाश्री के चरणारविंद में कोटि-कोटिश: वंदामि....

मैंने - ब्राह्मी से चर्या मांगी, गौतम गणधर से ज्ञान लिया,
गाय से मांगा भोलापन, गंगा से मांगी पावनता।
वायु से मांगी व्यापकता, चांद से मांगी शीतलता,
पारस प्रभु से धैर्य मांगा, बाहुबली से निस्पृहता।
सागर से मांगी गहराई, पर्वत से मांगी ऊँचाई,
सब ने सब कुछ देकर मुझको पूरी की मन की आशा।
फिर भी पूरी बनी नहीं,
माँ **विज्ञानमती** की परिभाषा।।

– श्रद्धावनत

अजीत लालावत, घाटोल

卐 ग्रन्थ- सूची 卐

क्र.	संकेत	ग्रन्थ का नाम	ग्रंथकर्त्ता
१.	आ.सा.	आराधना सार/अधिकार सं./गाथा संख्या	आ. देवसेन स्वामी
२.	आ.समु.	आराधना सार समुच्चय/गा.सं.	आ. श्री रविचंद्र स्वामी
३.	क.प्र.	कर्म-प्रकृति/गाथा सं.	आ.श्री नेमिचंद्र
४.	गो.जी.जी.	गोम्मटसार जीवकाण्ड/जीवप्रबोधिनी टीका	केशव वर्णी जी
५.	गो.क.जी.प्र.	गोम्मटसार कर्मकाण्ड/जीव प्रबोधिनी टीका	केशव वर्णी जी
६.	गो.जी.	गोम्मटसार जीवकाण्ड/ गा.सं.	आ.श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती
७.	गो.क.	गोम्मटसार कर्मकाण्ड/गा.सं.	आ.श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती
८.	ज.ध.	जय धवल/पुस्तक सं./पृ.सं.	आ. वीरसेन स्वामी
९.	त.सा.	तत्त्वार्थ सार/अधि.सं./गा.सं.	आ. अमृतचंद्र स्वामी
१०.	त.सू.	तत्त्वार्थ सूत्र/अध्याय सं./सू.सं.	आ.उमास्वामी
११.	ति.प.	तिलोयपण्णत्ति/अधि.सं./गा.सं.	आ. यतिवृषभ महाराज
१२.	द्र.सं.	द्रव्य-संग्रह/गा.सं.	आ. श्री नेमिचंद्र
१३.	ध.	धवला/पुस्तक सं./पृ.सं.	आ. वीरसेन स्वामी
१४.	न.च.वृ.	नयचक्र वृत्ति/गा.सं.	आ.माइल्ल धवल
१५.	नि.सा.ता.	नियमसार /गाथा सं. तात्पर्य वृत्ति	आ. कुन्दकुन्द स्वामी (मुनि पद्मप्रभ मल्लधारी देव)
१६.	प.सा.	परमागम सार/गा.सं....	
१७.	पं. का.	पंचास्तिकाय/गा.सं.	आ. कुन्दकुन्द स्वामी
१८.	पं.सं.	पंच संग्रह/अधि.सं./गा.से.	अज्ञात
१९.	पं.सं.प्रा.	पंच संग्रह प्राकृत/अधि.सं./गा.सं.	अज्ञात
२०.	पं.सं.सं.	पंच संग्रह संस्कृत/अधि.सं./गा.सं.	आ. अमितगति
२१.	पं.का.स.	पंचास्तिकाय समय व्याख्या/गा.सं.	आ.अमृतचंद्र स्वामी
२२.	प.प्र.	परमात्म प्रकाश/अधि.सं./गा.सं.	आ.ब्रह्मदेव सूरि
२३.	प्र.सा.ता.	प्रवचनसार तात्पर्य वृत्ति/गा.सं.	आ. जयसेन स्वामी
२४.	पु.सि.	पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय/गा.सं.	आ.अमृतचंद्र स्वामी
२५.	वृ.द्र.सं.	वृहद् द्रव्य संग्रह टीका/गाथा संख्या	आ. ब्रह्मदेव सूरि
२६.	भ.आ.	भगवती आराधना/गा.सं.	आ. शिवकोटि
२७.	म.पु.	महापुराण सर्ग सं./गा.सं.	आ. जिनसेन

क्र.	संकेत	ग्रन्थ का नाम	ग्रंथकर्त्ता
२८.	मू.प्र.	मूलाचार प्रदीप/गा.सं.	आ. सकलकीर्ति
२९.	मू.आ.	मूलाचार आचार वृत्ति/गा.सं.	आ.वट्टकेर स्वामी
३०.	य.ति.च.	यशस्तिलक चम्पू काव्य/अधि.सं./गा.सं.	आ. सोमदेव सूरि
३१.	यो.सा.	योगसार अधि.सं./गा.सं.	आ.अमितगति
३२.	र.क.श्रा.	रत्नकरण्ड श्रावकाचार/गा.सं.	आ. समन्तभद्र स्वामी
३३.	रा.वा.	राजवार्तिक अध्याय सं./सूत्र सं.	आ. अकलंक देव
३४.	ल.सा.	लब्धिसार/गा.सं.	आ.नेमिचंद्र
३५.	स.सू.	सन्मति-सूत्र/अधि.सं./गा.सं.	सिद्धसेनाचार्य
३६.	सर्वा.	सर्वार्थसिद्धि/अध्याय सं./सू.सं.	आ. पूज्यपाद स्वामी
३७.	स.सा.आ.	समयसार आत्मख्याति/गा.सं.	आ.अमृतचंद्र
३८.	सु.बो.त.वृ.	सुखबोधा तत्त्वार्थ वृत्ति/पृष्ठ सं.	मुनि भास्करनंदी
३९.	श.चू.	शतक-चूर्णिका	आ. शिवशर्मा जी
४०.	श्लो.वा.	श्लोकवार्तिक/पुस्तक सं. /पृ.सं.	आ. विद्यानंद स्वामी
४१.	वी.व.चा.	वीरवर्द्धमान चारित्र/सर्ग सं./श्लोक सं.	आ. सकलकीर्ति
४२.	ज्ञा.	ज्ञानार्णव अधिकार सं./गा.सं.	शुभचंद्र आचार्य
४३.	सि.सा.दी.	सिद्धान्तसार दीपक अधिकार सं./गा.सं.	आ. सकलकीर्ति

卐 अनुक्रम 卐

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

卐 शास्त्रस्वाध्याय का प्रारम्भिक मंगलाचरण 卐

ॐ नमः सिद्धेभ्यः! ॐ नमः सिद्धेभ्यः! ॐ नमः सिद्धेभ्यः!

ओकारं बिन्दुसंयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमोनमः॥

अविरलशब्दघनौघ-प्रक्षालितसकल-भूतलकलङ्का।
मुनिभिरुपासिततीर्था, सरस्वती हरतु नो दुरितम्॥

अज्ञानतिमिरान्धानां, ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

❋

श्रीपरमगुरवे नमः, परम्पराचार्यगुरुभ्यो नमः। सकलकलुषविध्वंसकं, श्रेयसां परिवर्धकं, धर्मसम्बन्धकं, भव्यजीवमनःप्रतिबोधकारकं, पुण्यप्रकाशकं, पापप्रणाशकमिदं शास्त्रं **'पञ्चभाव प्रश्नोत्तर मञ्जूषा'** नामधेयं अस्य मूलग्रन्थकर्तारः श्रीसर्वज्ञदेवास्तदुत्तरग्रन्थकर्तारः श्रीगणधरदेवाः प्रतिगणधरदेवास्तेषां वचोऽनुसारतामासाद्य पूज्य **आर्यिकाश्रीविज्ञानमतीसंकलितं** विरचितं इदं शास्त्रं। श्रोतारः सावधानतया शृण्वन्तु।

❋

मङ्गलं भगवान् **वीरो,** मङ्गलं **गौतमो** गणी।
मङ्गलं **कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु** मङ्गलम्॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्॥

जैं

॥ श्रीवीतरागाय नमः॥

卐 पञ्च भाव 卐

प्रश्नोत्तर मञ्जूषा

प्रश्न : भाव किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्मों के उपशम क्षय आदि के निमित्त से जीव के जो परिणाम विशेष होते हैं उन्हें **भाव** कहते हैं।

चेतन के परिणाम को भाव कहते हैं। **(गो.जी.जी. १६५)**

पदार्थों के परिणाम को भाव कहते हैं। **(ध. १/१५९)**

भाव नाम जीव के परिणाम का है, जो तीव्र-मंद निर्जरा भाव आदि के रूप से अनेक प्रकार का है। **(ध. ५/१८६)**

कर्म विशेष के उपशम आदि के आश्रय से जो जीव की परिणति होती है उसे भाव कहते हैं।

प्रश्न : जीव के कितने भाव होते हैं-

उत्तर : जीव के मुख्य रूप से पाँच भाव होते हैं -

(१) औपशमिक भाव (२) क्षायिक भाव (३) मिश्र भाव (४) औदयिक भाव (५) पारिणामिक भाव। **(पं. का. ५६ समयव्याख्या)**

जीव गुण पाँच हैं, उनमें उपाधि का चतुर्विधपना जिनका कारण है ऐसे चार हैं तथा स्वभाव जिसका कारण है ऐसा एक है। उपाधि के भेद से एवं स्वरूप के भेद से भेद करने पर उन्हें अनेक प्रकारों में विस्तृत किया जाता है। **(पं. का. ५६ स.)**

जीव के औपशमिकादि पाँचों भाव होते हैं एवं इन पाँच भावों के परस्पर संयोग से उत्पन्न हुआ **सान्निपातिक** नामका एक छठा भाव भी आचार्यों ने माना है। **(ज्ञा. ६/४२)**

प्रश्न : औपशमिक भाव किसे कहते हैं ?

उत्तर : कर्मों के उपशम से उत्पन्न होने वाला भाव औपशमिक भाव कहलाता है। **(ध. ५/२०५)**

कर्म जिन स्वभावों को बिगाड़ता है, वे स्वभाव जब तक कर्मोदय न होने से न बिगड़ें तब तक औपशमिक भाव कहलाते हैं। **(पं.सं.१/१४)** कर्मों का फलदान समर्थ रूप से अनुद्भव सो उपशम है। उपशम युक्त वह औपशमिक है। **(पं.का.५६ स.)** जैसे कतक फल या निर्मली के डालने से मैले पानी का मैल नीचे बैठ जाता है और जल निर्मल हो जाता है, उसी प्रकार परिणामों की विशुद्धि से कर्मों की शक्ति का अनुद्भूत रहना (प्रगट न होना) उपशम है तथा उपशम जिसका प्रयोजन है वह औपशमिक भाव है। **(रा.वा.२/१)**

जो कर्मों के उपशम से उत्पन्न होता है उसे **औपशमिक भाव** कहते हैं, क्योंकि गुणों के साहचर्य से आत्मा भी गुण संज्ञा को प्राप्त होता है। **(ध. १/१६२)**

प्रश्न : क्षायिक भाव किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्मों का क्षय होने पर उत्पन्न होने वाला भाव क्षायिक भाव है तथा कर्मों के क्षय के लिए उत्पन्न हुआ क्षायिक भाव है, ऐसे दो प्रकार की शब्द व्युत्पत्ति ग्रहण करनी चाहिए। **(ध. ५/२०६)** कर्मों की अत्यन्त निवृत्ति को क्षय कहते हैं। जैसे-जिस जल का मैल नीचे बैठा हो उसे यदि दूसरे पवित्र पात्र में रख दिया जाता है तो उसमें अत्यन्त निर्मलता आ जाती है, उसी प्रकार आत्मा से कर्मों की अत्यन्त निर्वृत्ति अर्थात् नाश हो जाने से जो आत्यन्तिक विशुद्धि होती है, वह क्षय कहलाती है तथा कर्मों का क्षय जिसमें प्रयोजन भूत है वह **क्षायिक भाव** है। **(रा.वा. २/१)**

कर्म क्षय होने पर जो-जो स्वभाव प्रकट हों, वे क्षायिक भाव हैं। **(पं.सं.सं. १/१४)**

प्रश्न : क्षायोपशमिक (मिश्र) भाव किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्मों के उदय के साथ चेतन गुणों का प्रगट होना क्षायोपशमिक भाव है। **(पर.सा. ९८)**

क्षीणाक्षीण मद शक्ति वाले कोदों के समान उभयात्मक परिणाम को मिश्र/क्षायोपशमिक भाव कहते हैं। जैसे जल से प्रक्षालन करने पर कोदों की मदशक्ति कुछ क्षीण हो जाती है और कुछ अक्षीण। उसी प्रकार यथोक्त क्षय के कारणों के सन्निधान होने पर कर्मों के एकदेश क्षय और एक-देश कर्मों की शक्ति का उपशम होने पर उभयात्मक मिश्र भाव होता है। क्षय और उपशम रूप प्रयोजन होने से क्षायोपशमिक भाव होता है। **(रा.वा.२/१)**

आत्मगुण स्वभाव को घातने वाला कर्म कुछ तो अनायास क्षीण हो गया हो और कुछ रहते हुए भी उदयगत न हुआ हो इस प्रकार दो दृष्टि से उस स्वभाव को प्रगट होने में मौका मिला हो तो उसे क्षायोपशमिक भाव कहते हैं। **(पं.सं. १/१४)**

कर्मों के उदय होते हुए भी जो जीव गुण का खण्ड (अंश) उपलब्ध रहता है वह क्षायोपशमिक भाव है। **(ध. ५/१८५)**

सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय तथा आगे उदय में आने वाले उन्हीं का सत्ता में उपशम तथा देशघाति स्पर्धकों का उदय होते हुए क्षायोपशमिक भाव होता है।

प्रश्न : क्षायोपशमिक भाव कैसे उत्पन्न होता है?

उत्तर : उदय प्राप्त सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय होने पर, अनुदय प्राप्त सर्वघाति स्पर्धकों का सदवस्थारूप उपशम होने पर तथा देशघाति स्पर्धकों का उदय होने पर क्षायोपशमिक भाव होता है। **(रा.वा. २/५)**

प्रश्न : उदयाभावी क्षय किसे कहते हैं?

उत्तर : जब सर्वघाति स्पर्धकों का उदय होता है, जब आत्मा के गुण की तनिक भी अभिव्यक्ति नहीं होती इसलिए उस उदय के अभाव को उदयाभावी क्षय कहते हैं। **(रा.वा.२/१)**

सर्वघाति स्पर्धक अनन्तगुणे हीन होकर और देशघाति स्पर्धकों में परिणत होकर उदय में आते हैं।

उन सर्वघाति स्पर्धकों का अनन्तगुण हीनत्व ही क्षय कहलाता है। **(ध.७/९२)**

प्रश्न : सदवस्था रूप उपशम किसे कहते हैं?

उत्तर : अनुदय प्राप्त सर्वघाति स्पर्धकों की सदवस्थाउपशम संज्ञा है, क्योंकि उनकी शक्ति अभी प्रगट नहीं है **(रा.वा. २/५)** सत्ता में स्थित आगामी सर्वघाति कर्म स्पर्धकों को असमय में उदय में नहीं आने देना सदवस्था रूप उपशम कहलाता है। **(सु.बो.त.वृ. ८१)**

प्रश्न : स्पर्धक किसे कहते हैं?

उत्तर : सर्व जीव राशि के अनन्तगुणे प्रमाण ऐसे सर्व जघन्य अविभागी प्रतिच्छेदों की राशि को एक वर्ग कहते हैं। वर्ग के समूह को वर्गणा कहते हैं और वर्गणा के समूह को स्पर्धक कहते हैं। **(रा.वा.२/४)**

प्रश्न : स्पर्धक कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : स्पर्धक दो प्रकार के होते हैं -

(१) सर्वघाती स्पर्धक (२) देशघाति स्पर्धक

सर्वघाती स्पर्धक जो आत्मा के गुणों का सर्व प्रकार से आच्छादन करने वाली कर्म शक्तियाँ हैं वे सर्वघाति स्पर्धक कहलाती हैं। **(वृ.द्र.सं.टी. ३४)** जैसे केवलज्ञानावरण कर्म के सर्वघाती स्पर्धकों का उदय रहने से किंचित् भी केवलज्ञान प्रकट नहीं होता है।

देशघाती स्पर्धक - विवक्षित एकदेश से जो आत्मा के गुणों का आच्छादन करने वाली कर्म शक्तियाँ हैं वे देशघातिस्पर्धक कहलाती हैं। **(वृ.द्र.सं.टी. ३४)** जैसे मतिज्ञानावरण कर्म के देशघाती स्पर्धकों का उदय रहते हुए मतिज्ञान प्रगट रहता है। **(रा.वा. २/५)**

प्रश्न : औदयिक भाव किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्म के उदय से उत्पन्न भाव औदयिक भाव कहे जाते हैं। **(ध. ५/१८५)**

द्रव्यादि के निमित्त से विपच्यमान कर्मों के फल देने को उदय कहते हैं और उदय ही जिसका प्रयोजन है वह औदयिक भाव है। **(त.सा. २/३)**

कर्म में फलदान अर्थात् फल देने का सामर्थ्य प्रगट होना उदय है, उदय में जो हो वह औदयिक भाव है। **(सु.बो.ता.वृ. ७७)**

प्रश्न : पारिणामिक भाव किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो कर्मों के उदय, उपशम, क्षय और क्षयोपशम की अपेक्षा बिना जीव के स्वभाव मात्र से उत्पन्न होता है, उसे पारिणामिक भाव कहते हैं। **(ध. १/१६२)**

जो क्षायिक उपशम आदि चारों भावों से व्यतिरिक्त जीव-अजीवगत भाव है वह पारिणामिक भाव है। **(ध. ५/१८५)**

अनन्तों भाव ऐसे हैं जिनका कर्म से सम्बन्ध नहीं है वे पारिणामिक भाव कहलाते हैं। **(पं.सं. १/१४)** जिसमें कर्मों का उपशम, क्षय, क्षयोपशम तथा उदय किसी की अपेक्षा नहीं होती है, वह पारिणामिक भाव है।

भावों में गुणस्थान

क्र.	भाव	गुणस्थान	विवरण
(१)	औपशमिक	८	चौथे से ग्यारहवें तक
(२)	क्षायिक	११	चौथे से चौदहवें तक
(३)	क्षायोपशमिक	१२	पहले से बारहवें तक
(४)	औदयिक	१४	पहले से चौदहवें तक
(५)	पारिणामिक	१४	पहले से चौदहवें तक

प्रश्न : तीन भाव किस-किस गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : तीन भाव पाँच गुणस्थानों में होते हैं -

पहले दूसरे तीसरे-क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक।

तेरहवें चौदहवें-क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक।

क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा चौथे गुणस्थान से सातवें गुणस्थान तक भी तीन भाव होते हैं - क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक।

प्रश्न : किस-किस भाव में बराबर गुणस्थान होते हैं ?

उत्तर : दो भावों में बराबर गुणस्थान होते हैं -

औदयिक एवं पारिणामिक

इन दोनों में पहले से चौदहवाँ गुणस्थान होता है।

प्रश्न : चार भाव किस-किस गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : चार भाव वाले गुणस्थान

सामान्य रूप से मात्र १२ वें गुणस्थान में चार भाव होते हैं-

यहाँ क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक तथा पारिणामिक।

विशेष - क्षायिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा -

चौथे से सातवें गुणस्थान में

क्षपक श्रेणी में - आठवें, नवें, दसवें गुणस्थान में।

उपर्युक्त स्थानों में औपशमिक भाव नहीं होता है

उपशम सम्यग्दृष्टि के चौथे गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान तक ८ गुणस्थानों में चार भाव होते हैं -

औपशमिक, क्षायोपशमिक, औदयिक और पारिणामिक।

प्रश्न : कितने भावों में बारह गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव में बारह गुणस्थान होते हैं -

क्षायोपशमिक भाव, इसमें पहले से बारहवाँ गुणस्थान होता है।

प्रश्न : किस भाव में सबसे कम गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : औपशमिक भाव में केवल ८ गुणस्थान होते हैं -

इसमें चौथे से ग्यारहवाँ गुणस्थान होता है।

प्रश्न : कितने भावों में पहला गुणस्थान भी होता है और बारहवाँ भी?

उत्तर : तीन भावों में पहला गुणस्थान भी होता है और बारहवाँ भी -

क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक।

गुणस्थानों में भाव

क्र.	गुणस्थान	भाव	विवरण
(१)	पहले से तीसरे तक	३	क्षायो.औद.पारि.
(२)	चौथे से ग्यारहवें तक	५	औ.क्षा.क्षायो.औद. पारि.
(३)	बारहवाँ	४	औपशमिक भाव नहीं है।
(४)	तेरहवाँ चौदहवाँ	३	क्षा.औद.पारि.
(५)	गुणस्थानातीत	२	क्षायिक और पारिणामिक

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में पाँचों भाव होते हैं?

उत्तर : आठ गुणस्थानों में पाँचों भाव होते हैं -

चौथे से ग्यारहवें तक।

आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व के साथ उपशम श्रेणी चढ़ने की अपेक्षा। यहाँ क्षायिक सम्यक्त्व एवं औपशमिक चारित्र रूप भाव होने से पाँचों भाव होते हैं।

चौथे से सातवें गुणस्थान तक औपशमिक सम्यक्त्व एवं क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में औपशमिक भाव नहीं पाया जाता है?

उत्तर : छह गुणस्थानों में औपशमिक भाव नहीं पाया जाता है -

पहला, दूसरा, तीसरा, बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ।

गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान के भी औपशमिक भाव नहीं होता है।

क्षपक श्रेणी वालों के तथा क्षायिक सम्यग्दृष्टि चौथे से सातवें गुणस्थान तक भी औपशमिक भाव नहीं है।

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ भी औपशमिक भाव नहीं होते हैं।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में औदयिक एवं क्षायिक दोनों भाव होते हैं?

उत्तर : ग्यारह गुणस्थानों में औदयिक एवं क्षायिक दोनों भाव होते हैं -

चौथे से चौदहवें गुणस्थान तक।

चौथे, पाँचवें, छठे, सातवें तथा ग्यारहवें गुणस्थान में औदयिक भाव के साथ क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव होता है।

आठवें, नवें, दसवें तथा बारहवें गुणस्थान में औदयिक भाव के साथ क्षायिक सम्यक्त्व एवं क्षायिक चारित्र रूप भाव होते हैं।

तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान में औदयिक भाव के साथ पूरे क्षायिक भाव होते हैं।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में क्षायोपशमिक भाव नहीं होता है?

उत्तर : केवल दो गुणस्थानों में क्षायोपशमिक भाव नहीं होता है -

तेरहवें, चौदहवें में।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में क्षायिक भाव होता है लेकिन औपशमिक भाव नहीं होता?

उत्तर : तीन गुणस्थानों में क्षायिक भाव तो होता है लेकिन औपशमिक भाव नहीं होता -

बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ।

गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान के भी क्षायिक भाव होता है लेकिन औपशमिक भाव नहीं होता। क्षपकश्रेणी एवं क्षायिक स. दृष्टि के ५वें, ६वें, ७वें गुणस्थान में भी औपशमिक भाव नहीं है।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में औदयिक भाव होता है लेकिन क्षायिक भाव नहीं होता?

उत्तर : तीन गुणस्थानों में औदयिक भाव होता है लेकिन क्षायिक भाव नहीं होता-

पहला, दूसरा, तीसरा।

चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक उपशम सम्यग्दृष्टि के भी औदयिक भाव होता है लेकिन क्षायिक भाव नहीं होता, क्योंकि एक सम्यक्त्व के साथ दूसरा सम्यक्त्व नहीं होता तथा उपशम सम्यग्दृष्टि क्षपक श्रेणी नहीं चढ़ता इसलिए उसके आठवें आदि गुणस्थानों में भी क्षायिक भाव नहीं होता है।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में औपशमिक एवं क्षायिक दोनों भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : तीन गुणस्थानों में औपशमिक एवं क्षायिक दोनों भाव नहीं होते हैं, क्योंकि इन गुणस्थानों में मोहनीय कर्म का उपशम और क्षय नहीं होता है-

पहला, दूसरा, तीसरा।

क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा चौथे से सातवें गुणस्थान में भी ये दोनों भाव नहीं होते हैं।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में क्षायिक एवं औपशमिक दोनों भाव होते हैं?

उत्तर : आठ गुणस्थानों में क्षायिक एवं औपशमिक दोनों भाव होते हैं -

चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक।

चौथे से सातवें गुणस्थान में दोनों सम्यक्त्व रूप भाव की अपेक्षा जानना चाहिए (नाना जीवों की अपेक्षा) तथा आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान में क्षायिक सम्यग्दृष्टि के उपशम श्रेणी चढ़ने की अपेक्षा।

उत्तर भाव

प्रश्न : भावों के उत्तर भेद कितने होते हैं?

उत्तर : भावों के उत्तर भेद तिरेपन होते हैं -

औपशमिक के २, क्षायिक भाव के ९, क्षायोपशमिक (मिश्र) के १८, औदयिक भाव के २१, पारिणामिक के ३।

प्रश्न : औपशमिक भाव के दो भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर : औपशमिक भाव के भेद -

(१) औपशमिक सम्यक्त्व, (२) औपशमिक चारित्र।

औपशमिक सम्यक्त्व भी दो प्रकार का होता है -

(१) प्रथमोपशम सम्यक्त्व, (२) द्वितीयोपशम सम्यक्त्व।

अथवा - औपशमिक भाव अनेक प्रकार का है -

उपशान्त क्रोध, उपशांत मान, उपशांत माया, उपशांत लोभ, उपशांत राग, उपशांत द्वेष उपशांत मोह, उपशांत कषाय वीतरागछद्मस्थ, औपशमिक सम्यक्त्व, औपशमिक चारित्र.... आदि सभी औपशमिक भाव हैं।

ये उपर्युक्त भाव और दूसरे भी अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय और उपशांत कषाय गुणस्थानों में प्रत्येक समय में उत्पन्न होने वाले जो जीव के भाव हैं वे सब औपशमिक भाव हैं। **(ध. १४/१४-१५)**

यहाँ तिरेपन भावों में सम्यक्त्व और चारित्र दो ही भाव ग्रहण किये गये हैं।

प्रश्न : औपशमिक सम्यक्त्व और चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर : मोहनीय कर्म की सात प्रकृतियों (अनन्तानुबन्धी चतुष्क, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक् प्रकृति) का उपशम होने से **औपशमिक सम्यक्त्व** होता है।

औपशमिक चारित्र - जो चारित्र मोहनीय की देशोपशामना और सर्वोपशामना से उत्पन्न होता है उसे **औपशमिक चारित्र** कहते हैं। **(ध. १४/१५)**

समस्त मोहनीय कर्म के उपशम से **उपशम चारित्र** होता है। **(सर्वा. २/३)**

अनन्तानुबन्धी आदि १६ कषाय, हास्य-रति आदि नौ नोकषाय तथा दर्शनमोह की तीन इन २८ प्रकृतियों के उपशमन से आत्म परिणामों में जो निर्मलता होती है उसे **औपशमिक चारित्र** कहते हैं। **(रा.वा. २/३)**

प्रश्न : स्थान की अपेक्षा औपशमिक भाव कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : स्थान की अपेक्षा औपशमिक भाव दो प्रकार का होता है -

(१) औपशमिक सम्यक्त्व (२) औपशमिक चारित्र **(ध. ५/१९०)**

प्रश्न : क्षायिक भाव के नौ भेद कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर : क्षायिक भाव के नौ भेद -

(१) क्षायिक ज्ञान (२) क्षायिक दर्शन (३) क्षायिक दान (४) क्षायिक लाभ (५) क्षायिक भोग (६) क्षायिक उपभोग (७) क्षायिक वीर्य (८) क्षायिक सम्यक्त्व (९) क्षायिक चारित्र।

अथवा - क्षायिक क्रोध, क्षायिक मान, क्षायिक माया, क्षायिक लोभ, क्षायिक मोह, क्षायिक कषाय... आदि अनेक प्रकार के क्षायिक भाव होते हैं। **(ध. १४/१६)**

प्रश्न : क्षायिक ज्ञान एवं दर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर : क्षायिक ज्ञान - ज्ञानावरणीय कर्म के अत्यन्त क्षय होने से क्षायिक ज्ञान होता है।

क्षायिकदर्शन - दर्शनावरणीय कर्म के अत्यन्त क्षय होने से क्षायिक दर्शन होता है।

प्रश्न : क्षायिक दान किसे कहते हैं?

उत्तर : जो दानान्तराय कर्म के अत्यन्त क्षय से आविर्भूत त्रिकालगोचर अनन्त प्राणियों का हितकारक भगवान का अहिंसामय उपदेश होता है, जिससे जीवों को अभय मिलता है, भगवान का वह उपदेश क्षायिक दान है। **(रा.वा. २/४)**

जो दानान्तराय के निर्मूल क्षय से उत्पन्न होता है वह क्षायिक दान है। **(ध. १४/१६)**

प्रश्न : समवसरण में तो असंख्यात जीव ही होते हैं फिर भगवान अनन्त जीवों के हित का उपदेश कैसे दे सकते हैं?

उत्तर : यद्यपि भगवान के समवसरण में असंख्यात जीव ही होते हैं, क्योंकि संज्ञी जीव असंख्यात ही होते हैं, फिर भी भगवान व्रती-महाव्रतियों अथवा श्रावक एवं श्रमणों को अनन्तानन्त

जीवों की रक्षा का उपदेश देते हैं जिससे उन अनन्तानन्त जीवों के जीवन की रक्षा होती है। उनके जीवन-रक्षा रूप उपकार अवश्य होता ही है अत: भगवान अनन्त जीवों के हित का उपदेश देते हैं, ऐसा कहने में कोई बाधा नहीं है।

प्रश्न : **अरिहंतों के दानान्तराय कर्म तो क्षय हो गया है फिर वे सब जीवों को इच्छित अर्थ क्यों नहीं देते हैं?**

उत्तर : नहीं, क्योंकि उन जीवों के लाभान्तराय कर्म का सद्भाव पाया जाता है। **(ध. १४/१७)**

प्रश्न : **क्षायिक लाभ किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो लाभान्तराय कर्म के क्षय से उत्पन्न होती है वह क्षायिक लाभ लब्धि है। **(ध. १४/१७)**

सकल लाभान्तराय कर्म के अत्यन्त नष्ट हो जाने पर कवलाहार न करने वाले केवली भगवान के शरीर की स्थिति में कारणभूत अन्य मनुष्यों में नहीं पाये जाने वाले असाधारण परम शुभ सूक्ष्म दिव्य अनन्त पुद्गल परमाणुओं का प्रति समय केवली के शरीर में सम्बन्धित होना क्षायिक लाभ है। **(रा.वा. ३)**

केवली भगवान ऐसी वर्गणाओं को ग्रहण करते हैं जिनसे कवलाहार (भोजन-पानी आदि) के बिना भी कुछ कम एक पूर्व कोटि काल तक शरीर की स्थिति बनी रहती है, यही क्षायिक लाभ है। **(प्र.सा. २१ ता.वृ.)**

प्रश्न : **पूर्व कोटि वर्ष किसे कहते हैं?**

उत्तर : ८४ लाख को ८४ लाख से गुणा करने पर एक पूर्व आता है। इसको एक करोड़ से गुणा करने पर एक पूर्व कोटि का प्रमाण प्राप्त होता है अर्थात् ७ नील ५ खरब ६० अरब को एक करोड़ से गुणा करने पर ७०५६०००००००००००००००० वर्ष होते हैं।

प्रश्न : **अरहंतों के यदि लाभान्तराय कर्म का क्षय हो गया है तो उनको सब पदार्थों की प्राप्ति क्यों नहीं होती?**

उत्तर : सत्य है, उन्हें सब पदार्थों की प्राप्ति होती है, क्योंकि उन्होंने अशेष भुवन (सम्पूर्ण लोक) को अपने अधीन कर लिया है। **(ध. १४/१७)** इसीलिए उन्हें त्रिलोकीनाथ भी कहते हैं।

प्रश्न : **क्षायिक भोग किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो भोगान्तराय कर्म के क्षय से उत्पन्न होती है उसे क्षायिक भोग लब्धि कहते हैं। **(ध. १४/१७)** भोगान्तराय कर्म के क्षय से पुष्पवृष्टि, गन्धोदक वृष्टि, सुगन्धित धूप, सुगन्धित वायु आदि अतिशय भोगों की प्राप्ति होना क्षायिक भोग है। **(रा.वा.२/४)**

प्रश्न : क्षायिक उपभोग किसे कहते हैं ?

उत्तर : उपभोग/परिभोगान्तराय कर्म के क्षय से सिंहासन, चामर, अशोकवृक्ष..... आदि उपभोग की सामग्री का प्राप्त होना क्षायिक उपभोग है। **(रा.वा. २/४)**

परिभोगान्तराय कर्म के क्षय हो जाने पर भी वे सभी पदार्थों का परिभोग नहीं करते हैं, क्योंकि जो जीव क्षीणकषाय होते हैं उनको उपभोग परिभोग से प्रयोजन नहीं रहता है। **(ध. १४/१७)**

प्रश्न : क्षायिक वीर्य किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो वीर्यान्तराय कर्म के क्षय से उत्पन्न होती है वह क्षायिक वीर्य लब्धि है। **(ध. १४/१७)** समस्त पदार्थों को जानते हुए भी परिश्रम या खेद नहीं होना, यही अनन्त बल है और यही क्षायिक वीर्य है। **(रा.वा.)** केवलज्ञान के विषय में अनन्त पदार्थों को जानने की जो शक्ति है वही अनन्त/क्षायिक वीर्य है। **(प.प्र. १/६१)**

प्रश्न : क्षायिक सम्यक्त्व एवं चारित्र किसे कहते हैं ?

उत्तर : दर्शन मोहनीय के क्षय से जो भाव उत्पन्न होते हैं उन्हें **क्षायिक सम्यक्त्व** कहते हैं। **(ध. १४/१६)** जो चारित्र मोहनीय के क्षय से उत्पन्न होता है वह **क्षायिक चारित्र** है। **(ध. १४/१६)** मोहनीय कर्म की इक्कीस प्रकृतियों के अत्यन्त विनाश से क्षायिक चारित्र होता है। **(रा.वा. २/४)** २५ प्रकार के समस्त चारित्र मोहनीय कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाले चारित्र को **क्षायिक चारित्र** कहते हैं।

प्रश्न : सिद्धत्व भी क्षायिक भाव है, उसका यहाँ ग्रहण क्यों नहीं किया है ?

उत्तर : ऐसा नहीं है, क्योंकि विशेष का कथन कर देने पर सामान्य बिना कथन किये ही अपने आप सिद्ध हो जाता है। जैसे -पौरों के पृथक् निर्देश से अंगुलि सामान्य का कथन हो ही जाता है उसी प्रकार क्षायिक भावों में व्यापक सिद्धत्व का भी कथन उन विशेष क्षायिक भावों के कथन से हो ही जाता है। उसके पृथक् कथन की आवश्यकता नहीं है। **(रा.वा. २/४)**

प्रश्न : स्थान की अपेक्षा क्षायिक भाव कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर : स्थान की अपेक्षा क्षायिक भाव पाँच प्रकार का होता है-

१. क्षायिक दानादि पाँच लब्धि रूप (२.) क्षायिक सम्यक्त्व (३.) क्षायिक चारित्र (४.) क्षायिक ज्ञान और (५.) क्षायिक दर्शन। **(ध. ५/१९१)**

प्रश्न : क्षायोपशमिक भाव के १८ भेद कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : क्षायोपशमिक भाव के १८ भेद -

४ ज्ञान - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान।

३ अज्ञान - कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, विभंगज्ञान (कुअवधिज्ञान)।

३ दर्शन - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन।

५ लब्धि - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य।

१ - क्षायोपशमिक सम्यक्त्व।

१ - क्षायोपशमिक चारित्र।

१ - संयमासंयम।

अथवा - क्षायोपशमिक भाव अनेक प्रकार के होते हैं – क्षायोपशमिक एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय-लब्धि, मत्यज्ञानी, श्रुतज्ञानी आदि, क्षायोपशमिक आचारधर, क्षायो. प्रश्न व्याकरणधर, क्षायो. स्थान धर आदि। **(ध. १४/१८-१९)**

प्रश्न : क्षायोपशमिक ज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर : ज्ञानावरण के रहते हुए भी आवरणीय ज्ञान जहाँ पर एकदेश रूप उदय में पाया जाता है, वहाँ पर उसे क्षायोपशमिक नाम दिया गया है। **(ध. ७/८७)**

ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जो ज्ञान होता है वह क्षायोपशमिक ज्ञान है। **(ध. ७/८७ के आधार से)**

इसी में ज्ञान के साथ जो मिथ्यात्व का उदय होता है तो वे अज्ञान हो जाते हैं।

प्रश्न : मति आदि ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : मतिज्ञान-मतिज्ञानावरण के क्षयोपशम से जो होता है वह **मतिज्ञान** है।

श्रुतज्ञान-श्रुतज्ञानावरण के क्षयोपशम से जो होता है वह **श्रुतज्ञान** है।

अवधिज्ञान-अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जो होता है वह **अवधिज्ञान** है।

मन:पर्ययज्ञान-मन:पर्यय ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जो होता है वह **मन:पर्ययज्ञान** है।

प्रश्न : कुमतिज्ञान आदि किसे कहते हैं?

उत्तर : **कुमतिज्ञान**-मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के साथ मिथ्यात्व एवं अनंतानुबंधी के उदय में जो होता है वह कुमति ज्ञान है।

कुश्रुतज्ञान-श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के साथ मिथ्यात्व एवं अनंतानुबंधी के उदय में जो होता है वह कुश्रुत ज्ञान है।

कुअवधिज्ञान-अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के साथ मिथ्यात्व एवं अनंतानुबंधी के उदय में जो होता है वह कुअवधि ज्ञान है।

प्रश्न : चक्षुदर्शनादि किसे कहते हैं?

उत्तर : **चक्षुदर्शन** - चक्षु दर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से जो होता है वह **चक्षुदर्शन** है।

अचक्षुदर्शन - अचक्षुदर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से जो होता है वह **अचक्षुदर्शन** है।

अवधिदर्शन - अवधिदर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से जो होता है वह **अवधिदर्शन** है।

प्रश्न : दानादि लब्धियाँ किसे कहते हैं ?

उत्तर : **दान**-दानान्तराय कर्म के सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय, इन्हीं का सदवस्था रूप उपशम होने पर और देशघाति स्पर्धकों के उदय का सहभाव होने पर **क्षायोपशमिक दान लब्धि** होती है। **(रा.वा. ८)**

इसी प्रकार लाभान्तराय आदि के क्षयोपशम से क्षायोपशमिक लाभ आदि लब्धियाँ होती हैं।

प्रश्न : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व किसे कहते हैं ?

उत्तर : सम्यक्त्व प्रकृति के उदय से उत्पन्न क्षायोपशमिक सम्यक्त्व लब्धि कहलाती है। **(ध. १४/२१)**

प्रश्न : क्षायोपशमिक चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर : क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाला प्रमाद युक्त संयम/चारित्र क्षायोपशमिक चारित्र है। **(ध. ५/२२०)**

अनन्तानुबन्धी आदि तीन चौकड़ी कषायों का उदयाभावी क्षय होने से और इन्हीं का सदवस्था रूप उपशम होने से तथा चार संज्वलन कषायों में से किसी एक के देशघाती स्पर्धक के उदय होने पर और नौ नोकषायों का यथासम्भव उदय होने पर जो संसार से पूर्ण निवृत्ति रूप परिणाम होता है, वह क्षायोपशमिक चारित्र है। **(सर्वा. २६३)**

प्रश्न : संयमासंयम किसे कहते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक विरताविरत परिणाम को संयमासंयम कहते हैं। **(रा.वा. ५/८)**

प्रश्न : स्थान की अपेक्षा क्षायोपशमिक भाव के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : स्थान की अपेक्षा क्षायोपशमिक भाव के सात भेद होते हैं -

(१) ज्ञान (२) अज्ञान (३) दर्शन (४) लब्धि (५) चारित्र (६) संयमासंयम (७) सम्यक्त्व। **(ध.५/१९१)**

प्रश्न : औदयिक भाव के २१ भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर : औदयिक भाव के २१ भेद -

४ गति - नरकगति, तिर्यःगगति, मनुष्यगति, देवगति।

४ कषाय - क्रोध, मान, माया, लोभ।

३ लिङ्ग - स्त्री लिङ्ग, पुरुष लिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग।

१ - मिथ्यादर्शन

१ - अज्ञान

१ - असंयत

१ - असिद्धत्व

६ लेश्या - कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म और शुक्ल।

प्रश्न : नरक गति आदि और क्रोध आदि कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : नरकगति - नरकगति नाम कर्म के उदय से नरकगति होती है।

इसी प्रकार तिर्यंच गति आदि नाम कर्म के उदय से तिर्यंच गति आदि होती है।

क्रोध - क्रोध कषाय के उदय से क्रोध उत्पन्न होता है।

इसी प्रकार मान आदि के उदय से मान आदि कषायें होती हैं।

प्रश्न : लिङ्ग एवं मिथ्यात्व आदि किसे कहते हैं?

उत्तर : स्त्रीलिङ्ग - स्त्रीवेद नोकषाय के उदय से स्त्री लिङ्ग होता है।

पुरुषलिङ्ग - पुरुषवेद नोकषाय के उदय से पुरुषलिङ्ग होता है।

नपुंसकलिङ्ग - नपुंसकवेद नोकषाय के उदय से नपुंसकलिङ्ग होता है।

यहाँ इस सूत्र में आत्मा के भावों का प्रकरण है, इसलिए नामकर्म के उदय से होने वाले द्रव्यादि की विवक्षा नहीं है। **(रा.वा. २/६)**

मिथ्यादर्शन - मिथ्यात्व के उदय से मिथ्यादर्शन होता है।

प्रश्न : औदयिक अज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर : ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से अज्ञान होता है। जैसे - प्रकाशमान सूर्य का तेज सघन मेघों के द्वारा तिरोहित हो जाने पर अभिव्यक्त नहीं होता है, उसी प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से 'ज्ञ' स्वभावी आत्मा के ज्ञान गुण की अनभिव्यक्ति होती है वह **औदयिक अज्ञान** है। **(रा.वा. २/६)**

वह अज्ञान भाव ज्ञानावरण कर्म के उदय से होता है, इसलिए औदयिक है।

(सर्वा.२/६)

प्रश्न : असंयत एवं असिद्धत्व भाव किसे कहते हैं?

उत्तर : संयम के घाती कर्मों के उदय से जीव **असंयत** होता है।

असिद्धत्व - प्रत्येक जन्म में ज्ञानादि गुणों का अन्य-अन्य रूप होते रहना असिद्धत्व है। **(म.पु. ४२/९३)**

कर्मोदय सामान्य की अपेक्षा असिद्धत्व भाव होता है। **(सर्वा. २/६)** अनादि कर्मबन्ध संज्ञान के कारण परतंत्र हुए आत्मा के सामान्यत: सभी कर्मों का उदय होने पर असिद्धत्व पर्याय होती है। **(रा.वा. २/६)**

प्रश्न : असिद्धत्व भाव कितने भेद वाला है?

उत्तर : असिद्धत्व भाव दो भेद वाला है -

(१) अनादि-अनन्त असिद्धत्व भाव (२) अनादिसान्त असिद्धत्व भाव

अभव्य जीवों की अपेक्षा असिद्धत्व भाव अनादि-अनन्त है।

भव्य जीवों की अपेक्षा असिद्धत्व भाव अनादि सान्त है। **(ध. १४/१३-१४)**

प्रश्न : लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : जो आत्मा को कर्म से लिम्पन करती है उसे लेश्या कहते हैं। **(ध. १/१४९)**

कृष्णलेश्या - तीव्रतम कषाय के उदय से कृष्णलेश्या होती है।

नीललेश्या - तीव्रतर कषाय के उदय से नील लेश्या होती है।

कापोतलेश्या - तीव्र कषाय के उदय से कापोत लेश्या होती है।

पीतलेश्या - मन्द कषाय के उदय से पीत लेश्या होती है।

पद्मलेश्या - मन्दतर कषाय के उदय से पद्म लेश्या होती है

शुक्ललेश्या - मन्दतम कषाय के उदय से शुक्ल लेश्या होती है। **(ध. ७/१०४ के आधार से)**

प्रश्न : औदयिक भावों में गति आदि के समान जाति आदि को ग्रहण क्यों नहीं किया है ?

उत्तर : औदयिक भावों में गति अघाति कर्मोदय का उपलक्षण है। जैसे-कौओं से घृत की रक्षा करना इसमें 'काक' का ग्रहण उपघातक का उपलक्षण है। उसी प्रकार अघातिया नाम कर्म के उदय से होने वाले गति रूप औदयिक भाव से नामकर्म के उदय से होने वाली जाति आदि तथा आयु, गोत्र और वेदनीय कर्म के उदय से होने वाले जीव विपाकी सर्वभाव गृहीत हो जाते हैं।

इसी प्रकार मिथ्यादर्शन में दर्शनावरण कर्म के उदय से होने वाले अदर्शन, निद्रा-निद्रा आदि का अन्तर्भाव सामान्य दर्शन का आवरक होने से हो जाता है।

लिङ्ग के सहचारी होने से हास्य-रति आदि छह नोकषाय का अन्तर्भाव लिङ्ग में हो जाता है, क्योंकि सहचर होने से नारद का ग्रहण करने से पर्वत का ग्रहण हो जाता है। **(रा.वा. २/६)**

जाति, संस्थान, संहनन आदि का गति नामक औदयिक भाव में अंतर्भाव होता है, क्योंकि इन जाति संस्थान आदि का उदय गति नामकर्म के उदय का अविनाभावी है। इस व्यवस्था में लिंग कषाय आदि औदयिक भावों से भी व्यभिचार नहीं आता है, क्योंकि उन भावों में उस प्रकार की विवक्षा का अभाव है। **(ध. ५/१८८-८९)**

प्रश्न : स्थान की अपेक्षा औदयिक भाव कितने प्रकार का है?

उत्तर : स्थान की अपेक्षा औदयिक भाव आठ प्रकार का है -

(१) गति (२) कषाय (३) लिङ्ग (४) मिथ्यादर्शन (५) अज्ञान (६) असंयत (७) असिद्धत्व (८) लेश्या। **(ध. ५/१८९)**

प्रश्न : पारिणामिक भाव के तीन भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर : पारिणामिक भाव के तीन भेद -

(१) जीवत्व (२) भव्यत्व (३) अभव्यत्व।

प्रश्न : स्थान की अपेक्षा पारिणामिक भाव कितने प्रकार का है ?

उत्तर : पारिणामिक भाव में सामान्य से एक स्थान तथा जीवत्व आदि की अपेक्षा ३ स्थान कहे गये हैं-

(१) जीवत्व (२) भव्यत्व (३) अभव्यत्व **(ध. ५/१९२)**

प्रश्न : आगम में दूसरे गुणस्थान में पारिणामिक भाव कहा है उसका यहाँ ग्रहण क्यों नहीं किया है?

उत्तर : यहाँ पर दूसरे गुणस्थान वाले पारिणामिक भाव की विवक्षा नहीं है, क्योंकि सासादन गुणस्थान में अनन्तानुबन्धी का उदय होने पर भी मिथ्यात्व कर्म के उदय, क्षय, उपशम और क्षयोपशम की अपेक्षा नहीं है। इसलिए वहाँ पारिणामिक भाव कहा है। परन्तु यहाँ पर तो दूसरे गुणस्थान में अनन्तानुबन्धी का उदय होने से औदयिक भाव कहा है। **(रा.वा. २/७)**

प्रश्न : अस्तित्वादिक भी पारिणामिक भाव हैं तो यहाँ उनका ग्रहण क्यों नहीं किया?

उत्तर : अस्तित्वादिक भाव अन्य द्रव्यों में भी पाये जाते हैं इसलिए साधारण होने से सूत्र में इनका

ग्रहण नहीं किया है। जैसे अस्तित्व छह द्रव्यों में पाया जाता है। यद्यपि यह भाव कर्मों के उदय, क्षय और क्षयोपशम की अपेक्षा नहीं रखने वाला होने से पारिणामिक है परन्तु छहों द्रव्यों में पाये जाने से साधारण है। **(रा.वा. १३)**

यहाँ जीव के स्वतत्त्व का वर्णन होने से इनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

तत्त्वार्थ सूत्रकार ने 'च' से अस्तित्वादि भावों को भी गौण रूप से ग्रहण किया है। **(रा.वा.२/७)**

प्रश्न : जीवत्व किसे कहते हैं?

उत्तर : चैतन्य को जीवत्व कहते हैं। सुख-दु:ख का ज्ञान, हित का उपाय/उद्यम और अहित का भय ये चैतन्य विशेष हैं। **(पं.का.सं. १२५)**

प्रश्न : जीवत्व भाव आयु कर्म के उदय से होता है अत: वह पारिणामिक भाव नहीं है?

उत्तर : ऐसा नहीं है, क्योंकि पुद्गल द्रव्य का सम्बन्ध तो धर्म-अधर्म, आकाशादि अन्य द्रव्यों के साथ होने पर भी उनमें जीवत्व के सामर्थ्य का अभाव है। आयु पौद्गलिक द्रव्य है। यदि आयु नामक कर्म पौद्गलिक द्रव्य के सम्बन्ध से जीव का जीवत्व माना जायेगा तो उस कर्म पुद्गल का सम्बन्ध तो धर्मादि द्रव्यों से भी है अत: उनमें भी जीवत्व हो जायेगा। **(रा.वा. २/७)**

अथवा – यदि आयु कर्म के उदय से जीवत्व स्वीकार करेंगे तो सिद्धों में आयु कर्म का अभाव होने से जीवत्व के अभाव का प्रसंग आयेगा। सिद्धों में आयु के उदय की अपेक्षा बिना जीवत्व है इसलिए जीवत्व पारिणामिक भाव है। **(रा.वा. २/७)**

प्रश्न : ग्रन्थान्तरों में जीवत्व भाव को औदयिक कहा है, यहाँ पारिणामिक भाव कैसे कहा है ?

उत्तर : आयु आदि प्राणों का धारण करना जीवन है। वह अयोगी के अन्तिम समय से आगे नहीं पाया जाता, क्योंकि सिद्धों के प्राणों के कारणभूत आठ कर्मों का अभाव है। सिद्धों में प्राणों का अभाव अन्यथा बन नहीं सकता। इससे मालूम पड़ता है कि जीवत्व पारिणामिक नहीं है किन्तु वह कर्म के विपाक से उत्पन्न होता है, क्योंकि जो जिसके सद्भाव और असद्भाव का अविनाभावी होता है वह उसका है यह सिद्ध होता है। यहाँ इस सूत्र में जो जीवत्व को पारिणामिक भाव कहा है वह प्राणों के धारण करने की अपेक्षा नहीं कहा है किन्तु चैतन्य गुण की अपेक्षा से कहा है। इसलिए यह कथन विरोध को प्राप्त नहीं होता है। **(ध. १४/१३)**

प्रश्न : भव्यत्व एवं अभव्यत्व भाव किसे कहते हैं ?

उत्तर : **भव्यत्व –** जिन जीवों के भविष्य काल में रत्नत्रय धर्म प्रकट होगा, वे जीव भव्य कहलाते हैं। यही भव्यत्व भाव है।

अभव्यत्व – जिन जीवों के कालान्तर में भी केवलज्ञान प्रगट नहीं होगा वे अभव्य कहलाते हैं। यही अभव्यत्व भाव है।

प्रश्न : छहों द्रव्यों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : छहों द्रव्यों में भाव -

जीव द्रव्य में ५ - औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक। **पुद्‌गल** द्रव्य में २ - औदयिक और पारिणामिक।

शेष **धर्मादि ४ द्रव्यों** में १ - पारिणामिक भाव। **(ध. ५/१८६)**

नोट – उत्तर भावों में गुणस्थान एवं गुणस्थानों में उत्तर भाव हेतु देखें - गुणस्थान (१५ वाँ स्थान)

भावों में कर्म विवक्षा

क्र.	भाव	कर्म की अपेक्षा	विशेष
१.	**औपशमिक**		
	सम्यक्त्व	प्रतिपक्षी कर्म प्रकृतियों के उपशम से	
	चारित्र	चारित्र मोह के उपशम से	
२.	**क्षायिक**		
	ज्ञान	ज्ञानावरण कर्म के क्षय से	क्षय बारहवें गुणस्थान में होता है।
	दर्शन	दर्शनावरण कर्म के क्षय से	
	दान	दानान्तराय कर्म के क्षय से	
	लाभ	लाभान्तराय कर्म के क्षय से	
	भोग	भोगान्तराय कर्म के क्षय से	
	उपभोग	उपभोगान्तराय कर्म के क्षय से	
	वीर्य	वीर्यान्तराय कर्म के क्षय से	
	सम्यक्त्व	प्रतिपक्षी कर्म प्रकृतियों के क्षय से	दर्शनमोह एवं अनन्तानुबन्धी कर्म के क्षय से
	चारित्र	चारित्र मोहनीय कर्म के क्षय से	
३.	**क्षायोपशमिक**		
	मतिज्ञान	मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से	
	श्रुतज्ञान	श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से	
	अवधिज्ञान	अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से	
	मन:पर्ययज्ञान	मन:पर्यय ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से	
	कुमतिज्ञान	मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से	मिथ्यादर्शन एवं अनन्तानुबन्धी के उदय में मिथ्या होते हैं।
	कुश्रुतज्ञान	श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से	मिथ्यादर्शन एवं अनन्तानुबन्धी के उदय में मिथ्या होते हैं।
	कुअवधिज्ञान	अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से	इसीको विभंगज्ञान भी कहते हैं।
	चक्षुदर्शन	चक्षुदर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से	
	अचक्षुदर्शन	अचक्षुदर्शनावरण कर्म के क्षयापेशम से	
	अवधिदर्शन	अवधिदर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से	
	दान	दानान्तराय कर्म के क्षयोपशम से	
	लाभ	लाभान्तराय कर्म के क्षयोपशम से	
	भोग	भोगान्तराय कर्म के क्षयोपशम से	

	उपभोग	उपभोगान्तराय कर्म के क्षयोपशम से	
	वीर्य	वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से	
	सम्यक्त्व	प्रतिपक्षी कर्म प्रकृतियों के क्षयोपशम से	
	चारित्र	प्रतिपक्षी कर्म प्रकृतियों के क्षयोपशम से	
	संयमासंयम	प्रतिपक्षी कर्म प्रकृतियों के क्षयोपशम से	
४.	**औदयिक**		
	नरकगति	नरकगति नाम कर्म के उदय से	
	तिर्यःागति	तिर्यःागति नाम कर्म के उदय से	
	मनुष्यगति	मनुष्यगति नाम कर्म के उदय से	
	देवगति	देवगति नाम कर्म के उदय से	
	क्रोध	क्रोध कषाय के उदय से	
	मान	मान कषाय के उदय से	
	माया	माया कषाय के उदय से	
	लोभ	लोभ कषाय के उदय से	
	स्त्रीलिङ्ग	स्त्रीवेद नोकषाय के उदय से	
	पुरुषलिङ्ग	पुरुषवेद नोकषाय के उदय से	
	नपुंसकलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग नोकषाय के उदय से	
	मिथ्यादर्शन	मिथ्यात्व के उदय से	
	अज्ञान	ज्ञानावरण कर्म के उदय से	
	असंयत	चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से	
	असिद्धत्व	आठों कर्मों के उदय से	तेरहवें चौदहवें गुणस्थान में चार अघातिया कर्मों के उदय से होता है।
	कृष्ण नील कापोत पीत पद्म शुक्ल लेश्या	कषाय और योग के निमित्त से	शरीर नाम कर्म के उदय से उत्पन्न योग भी लेश्या है। **(ध.७/१०४-५)**
५.	**पारिणामिक**		
	जीवत्व	किसी भी कर्म की अपेक्षा नहीं।	
	भव्यत्व	किसी भी कर्म की अपेक्षा नहीं।	
	अभव्यत्व	किसी भी कर्म की अपेक्षा नहीं।	

प्रश्न : कितने उत्तर भावों में ज्ञानावरणीय कर्म की सभी प्रकृतियों की अपेक्षा होती है?

उत्तर : मात्र एक भाव में ज्ञानावरणीय कर्म की सभी प्रकृतियों की अपेक्षा होती है - औदयिक अज्ञान में।

असिद्धत्व भाव में भी ज्ञानावरण कर्म की सभी प्रकृतियों की अपेक्षा रहती है, क्योंकि वह सभी कर्मों की अपेक्षा से होता है।

प्रश्न : दर्शनावरणीय कर्म की अपेक्षा से कितने भाव होते हैं?

उत्तर : दर्शनावरणीय कर्म की अपेक्षा से चार भाव होते हैं -

क्षायिक भाव का १ - क्षायिक (केवल) दर्शन।

क्षायोपशमिक के ३ - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन।

नोट - असिद्धत्व भाव में भी दर्शनावरण कर्म की अपेक्षा होती है।

प्रश्न : मोहनीय कर्म की अपेक्षा कितने भाव होते हैं?

उत्तर : मोहनीय कर्म की अपेक्षा १६ भाव होते हैं -

औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र।

क्षायिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र।

क्षायोपशमिक भाव के ३ - सम्यक्त्व, चारित्र, संयमासंयम।

औदयिक भाव के ९ - ४ कषाय, ३ लिङ्ग, १ मिथ्या., १ असं.।

नोट - (१) असिद्धत्व भाव में भी मोहनीय कर्म की अपेक्षा होती है।

(२) ६ लेश्या में भी कषाय की अपेक्षा होती है लेकिन यहाँ नाम कर्म के उदय की अपेक्षा लेश्या मानी गई है, इसलिए उनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है। ऐसा ही सर्वत्र जानना चाहिए।

प्रश्न : मोहनीय कर्म के उपशम से होने वाले भावों के साथ कौन-कौन से भाव हो सकते हैं ?

उत्तर : औपशमिक भावों के साथ होने वाले भाव -

- **उपशम सम्यक्त्व** के साथ ३७ भाव हो सकते हैं -

औपशमिक का **१** - चारित्र।

क्षायोपशमिक भाव के **१४** - ४ ज्ञा. ३ दर्शन ५ ल., १ चारित्र १ संयमा.।

औदयिक के **२०** - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.।

पारिणामिक के **२** - जीवत्व, भव्यत्व।

- **उपशम चारित्र** के साथ २७ भाव हो सकते हैं -

  औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व।

  क्षायिक का - १ सम्यक्त्व।

  क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.।

  औदयिक के ११ - १ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)।

  पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

प्रश्न : मोहनीय कर्म की अपेक्षा कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

उत्तर : मोहनीय कर्म की अपेक्षा ३ क्षायोपशमिक भाव होते हैं -

(१) सम्यक्त्व (२) चारित्र (३) संयमासंयम।

प्रश्न : अन्तराय कर्म की अपेक्षा कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अन्तराय कर्म की अपेक्षा १० भाव होते हैं -

क्षायिक भाव के ५ - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य।

क्षायोपशमिक भाव के ५ - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य।

नोट - असिद्धत्व भाव में भी अन्तराय कर्म की अपेक्षा रहती है।

प्रश्न : अन्तराय कर्म के क्षयोपशम से जो भाव होते हैं उनके साथ कितने भाव नहीं होते हैं ?

उत्तर : अन्तराय कर्म के क्षयोपशम से पाँच लब्धियाँ होती हैं, उनके साथ मात्र ७ भाव नहीं हो सकते हैं - क्षायिक ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य।

प्रश्न : कितने भाव अघातिया कर्म की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : अघातिया कर्म की अपेक्षा से ४ भाव होते हैं -

नरकगति, तिर्यःगति, मनुष्यगति, देवगति।

ये चारों भाव नामकर्म के उदय से होते हैं।

- लेश्याएँ कथंचित् शरीर नाम कर्म के उदय से भी होती हैं। **(ध. ७/१०५ आधार से)** इसलिए छह लेश्याओं को भी अघातिया कर्म की अपेक्षा कहा जा सकता है।
- तेरहवें चौदहवें गुणस्थान में होने वाले असिद्धत्व भाव में भी चार अघातिया कर्म के उदय की अपेक्षा रहती है। शेष गुणस्थानों में होने वाले असिद्धत्व भाव में आठों कर्मों की अपेक्षा होती है।

प्रश्न : क्या असिद्धत्व भाव आठों कर्मों के उदय से ही होता है?

उत्तर : हाँ, अनादि कर्मबद्ध आत्मा के सामान्यत: सभी कर्मों के उदय से असिद्ध पर्याय होती है। दसवें गुणस्थान तक आठों कर्मों के उदय, ग्यारहवें और बारहवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म के बिना सात कर्मों के उदय से और तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में चार अघातिया कर्मों के उदय से असिद्धत्व भाव होता है। **(रा.वा. २/६)**

चार अघातिया कर्मों के उदय से हुआ असिद्धत्व भाव है। **(ध. १४/१३)**

प्रश्न : कितने भाव चारों घातिया कर्म की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : २७ भाव चारों घातिया कर्म की अपेक्षा होते हैं -

क्षायिक भाव के ९ - ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय मोहनीय तथा अंतराय कर्म के क्षय से।

क्षायोपशमिक भाव के १८ - ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय मोहनीय तथा अंतराय कर्म के क्षयोपशम से

क्षायोपशमिक भाव में से ७ भाव ज्ञानावरण की, ३ भाव दर्शनावरण की, ३ भाव मोहनीय की तथा ५ भाव अन्तराय कर्म की अपेक्षा होते हैं।

प्रश्न : कितने भाव सबसे ज्यादा कर्मों की अपेक्षा से होते हैं?

उत्तर : एक भाव सबसे ज्यादा अर्थात् आठों कर्मों की अपेक्षा से होता है - असिद्धत्व भाव।

प्रश्न : किस-किस कर्म की अपेक्षा बराबर भाव होते हैं?

उत्तर : दर्शनावरणीय एवं नामकर्म की अपेक्षा बराबर भाव होते हैं -

दर्शनावरणीय कर्म के क्षय से १ भाव - क्षायिक दर्शन।

तथा क्षयोपशम से ३ भाव - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन।

नामकर्म के उदय से - नरकगति, तिर्यःागति, मनुष्यगति, देवगति।

अथवा - लेश्याओं को नाम कर्म की अपेक्षा ग्रहण करने पर अन्तराय और नामकर्म की अपेक्षा बराबर भाव होते हैं अर्थात् दोनों की अपेक्षा दस-दस भाव होते हैं।

प्रश्न : किस भाव के सभी उत्तर भेद एक ही कर्म की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : औपशमिक भाव के सभी उत्तर भेद एक मोहनीय कर्म की अपेक्षा से ही होते हैं -

औपशमिक सम्यक्त्व - प्रतिपक्षी सात प्रकृतियों के उपशम से।

औपशमिक चारित्र - चारित्र मोहनीय के उपशम से।

प्रश्न : औदयिक भाव के कितने उत्तर भेद मोहनीय कर्म के उदय से होते हैं?

उत्तर : औदयिक भाव के ९ उत्तर भेद मोहनीय कर्म के उदय से होते हैं -

४ कषाय - क्रोध, मान, माया, लोभ।

३ लिङ्ग - स्त्रीलिङ्ग, पुरुषलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग।

१ - मिथ्यादर्शन

१ - असंयत

नोट - असिद्धत्व भाव में भी मोहनीय कर्म की अपेक्षा रहती है।

– प्रश्न पत्र –

१. उपयुक्त विकल्प पर (✓) का निशान लगाइये-

(i) **क्षायिक भाव कितने कर्मों की अपेक्षा होते हैं?**

(अ) आठ (ब) चार अघातिया
(स) चार घातिया (द) पाँच

(ii) **दस भाव कौनसे कर्म की अपेक्षा होते हैं?**

(अ) अन्तराय (ब) ज्ञानावरण
(स) मोहनीय (द) कोई नहीं

(iii) **औपशमिक भावों में कितने कर्मों की अपेक्षा नहीं होती है?**

(अ) एक (ब) दो
(स) सात (द) चार

(iv) **ज्ञानावरणीय कर्म की अपेक्षा कितने भाव होते हैं?**

(अ) चार (ब) तीन
(स) आठ (द) नौ

(v) **आठ कर्मों की अपेक्षा कितने गुणस्थानों में भाव होते हैं?**

(अ) ८ (ब) १०
(स) ७ (द) ४

२. हाँ या ना में उत्तर दीजिए-

(i) पाँचों मूल भावों में मोहनीय कर्म की अपेक्षा होती है?
(ii) क्षायिक लाभ रूप भाव ज्ञानावरणीय कर्म की अपेक्षा से होता है?
(iii) क्षायोपशमिक भावों में दर्शनावरणीय की अपेक्षा भी रहती है?
(iv) पारिणामिक भावों में आठों कर्मों की अपेक्षा नहीं है?
(v) गोत्र कर्म की अपेक्षा एक भी भाव नहीं है?

३. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) चार अघातिया कर्म की अपेक्षा कितने भाव होते हैं?
(ii) मोहनीय कर्म के उदय से कितने भाव होते हैं?
(iii) सबसे ज्यादा कर्मों की अपेक्षा भाव कितने गुणस्थानों में होते हैं?
(iv) किस कर्म की अपेक्षा सबसे ज्यादा भाव होते हैं?
(v) कितने कर्मों के उपशम से भी भाव होते हैं?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति करो-

(i) क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव दर्शन मोहनीय कर्म के .... से, औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव .... से तथा क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव .... से होता है।
(ii) आठों कर्मों की अपेक्षा .... भाव, दर्शनावरण कर्म की अपेक्षा .... भाव तथा ज्ञानावरणीय कर्म की अपेक्षा .... भाव होते हैं।
(iii) .... भाव कर्म अपेक्षा रहित .... भाव मोहनीय कर्म की अपेक्षा से तथा .... भाव नाम कर्म की अपेक्षा से होते हैं।
(iv) .... सिद्ध भगवान के .... भाव अयोग केवली भगवान के तथा .... भाव सयोग केवली भगवान के होते हैं।
(v) भावों के मूल भेद .... तथा उत्तर भेद .... होते हैं।

५. सही जोड़ियाँ बनाइये -

	अ		ब
(i)	नाम कर्मोदय से	-	ज्ञानावरणीय कर्म की अपेक्षा से
(ii)	आठ कर्मोदय से	-	अन्तराय कर्म के क्षयोपशम से
(iii)	अज्ञान रूप भाव	-	चार गति रूप भाव

(iv)	केवलदर्शन रूप भाव	-	मोहनीय कर्म की अपेक्षा
(v)	भव्यत्व रूप भाव	-	क्षायिक लाभ रूप भाव
(vi)	लाभान्तराय कर्म के क्षय से	-	कर्म निरपेक्ष
(vii)	५ क्षायोपशमिक लब्धियाँ	-	दर्शनावरणीय कर्म की अपेक्षा से
(viii)	कृष्ण लेश्या रूप भाव	-	असिद्धत्व भाव

– उत्तरमाला –

१. (i) स (ii) अ (iii) स (iv) द (v) ब।

२. (i) ना (ii) ना (iii) हाँ (iv) हाँ (v) ना।

३. (i) ११ (ii) १० (iii) १० (iv) मोहनीय कर्म (v) एक।

४. (i) क्षय, उपशम, क्षयोपशम (ii) १, ४, ९, (iii) ३ पारिणामिक, १६, १० (iv) १०,१३,१४ (v) ५, ५३

५. (i) चार गति रूप भाव (ii) असिद्धत्व भाव (iii) ज्ञानावरणीय कर्म की अपेक्षा से (iv) दर्शनावरणीय कर्म की अपेक्षा से (v) कर्म निरपेक्ष (vi) क्षायिक लाभ रूप भाव (vii) अन्तराय कर्म के क्षयोपशम से (viii) मोहनीय कर्म की अपेक्षा से।

भावों में काल की विवेचना

क्र.	भाव	संख्या	काल	विवरण
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	सादि-सान्त	
	चारित्र	१	सादि-सान्त	चार बार से ज्यादा नहीं हो सकता है।
२.	**क्षायिक**			
	ज्ञान-दर्शन	१	सादि-अनन्त	
	दान लाभादि पाँच	१	सादि-अनन्त	
	सम्यक्त्व	१	सादि-अनन्त	
	चारित्र	१	सादि-अनन्त	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	मति-श्रुत अवधिज्ञान	१	सादि-सान्त	
	मन:पर्ययज्ञान	१	सादि-सान्त	
	कुमति कुश्रुत ज्ञान	३	अनादि-अनन्त	अभव्य जीवों की अपेक्षा
			सादि-सान्त	
			अनादि-सान्त	भव्य जीवों की अपेक्षा
	कुअवधिज्ञान	१	सादि-सान्त	
	चक्षुदर्शन	१	सादि-सान्त	
	अचक्षुदर्शन	२	अनादि-अनन्त	अनादि-अनन्त निगोदिया की अपेक्षा
			अनादि-सान्त	भव्य जीवों की अपेक्षा
	अवधिदर्शन	१	सादि-सान्त	
	५ लब्धि	२	अनादि-अनन्त	अभव्य की अपेक्षा
			अनादि सान्त	
	सम्यक्त्व	१	सादि-सान्त	
	चारित्र	१	सादि-सान्त	
	संयमासंयम	१	सादि-सान्त	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	सादि-सान्त	
	तिर्यःागति	३	अनादि-अनन्त, आदि	सादि-अनन्त भंग नहीं है।
	मनुष्यगति	१	सादि-सान्त	
	देवगति	१	सादि-सान्त	

	क्रोधादि चार कषाय	३	अनादि-अनन्त अनादि-सान्त सादि-सान्त	
	स्त्री लिङ्ग	१	सादि-सान्त	
	पुरुष लिङ्ग	१	सादि-सान्त	
	नपुंसक लिङ्ग	३	अनादि अनन्त अनादि-सान्त सादि-सान्त	सादि-अनन्त भंग नहीं है।
	मिथ्यादर्शन	३	अनादि-अनन्त आदि	
	अज्ञान	२	अनादि-अनन्त अनादि-सान्त	
	असंयत	३	अनादि-अनन्तादि ३ भंग	सादि-अनन्त भंग नहीं है।
	असिद्धत्व	२	अनादि-अनन्त अनादि-सान्त	
	कृष्णादि ३ अशुभ लेश्या	३	अनादि-अनन्त अनादि सान्त सादि-सान्त	सादि-अनन्त भंग नहीं है।
	पीत-पद्मादि ३ शुभ लेश्या	१	सादि-सान्त	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	१	अनादि-अनन्त	
	भव्यत्व	३	अनादि-अनन्त, अनादि सान्त, सादि सान्त	
	अभव्यत्व	१	अनादि-अनन्त	

नोट : उपर्युक्त भंग धवला पुस्तक ७ के आधार पर वर्णित हैं।

प्रश्न : भावों में काल की अपेक्षा कितने भंग बनते हैं?

उत्तर : भावों में काल की अपेक्षा चार भंग बनते हैं -

(१) अनादि-अनन्त (२) अनादि-सान्त

(२) सादि-अनन्त (४) सादि-सान्त

प्रश्न : अनादि-अनन्त आदि के क्या लक्षण हैं?

उत्तर : **अनादि-**अन्+आदि। अन्-निषेधात्मक, आदि प्रारम्भ अर्थात् जिसके प्रारम्भ की कोई तिथि नहीं है, वह अनादि कहलाता है।

अनन्त-अन्+अन्त। अन्-निषेधात्मक, अन्त-समाप्ति अर्थात् जिसकी कभी समाप्ति नहीं हो वह अनन्त कहलाता है।

सादि-स+आदि। स-सहित, आदि-प्रारंभ अर्थात् जो प्रारम्भ से सहित हो या जो कहीं से प्रारम्भ होता है वह सादि है।

सान्त-स+अन्त। स-सहित, अन्त-समाप्ति अर्थात् जो समाप्ति सहित है या जो समाप्त हो जाता है, वह सान्त है।

अनादि और अनन्त मिलकर अनादि-अनन्त, सादि और अनन्त मिलकर सादि-अनन्त, अनादि और सान्त मिलकर अनादि-सान्त, सादि और सान्त मिलकर सादि-सान्त ये चार भंग बनते हैं।

अनादि-अनन्त को ही अनादिनिधन कहते हैं।

प्रश्न : अनादि-अनन्त आदि में क्या-क्या उदाहरण हो सकते हैं?

उत्तर : अनादि-अनन्त आदि में उदाहरण -

अभव्य जीवों के असिद्धता, धर्मास्तिकाय के गमन हेतुता, अधर्मास्तिकाय में स्थिति हेतुता आदि अनादिनिधन अनादि-अनन्त भाव हैं।

भव्य जीवों के असिद्धता, भव्यता, मिथ्यात्व, असंयम आदि अनादि-सान्त भाव हैं। केवलज्ञान, केवलदर्शन आदि सादि-अनन्त भाव हैं।

सम्यक्त्व और संयम धारकर पीछे आये हुए जीवों के मिथ्यात्व, असंयम आदि सादि-सान्त भाव हैं। **(ध. ५/१८८)**

प्रश्न : कितने मूल भावों में चारों में से केवल एक भंग ही होता है ?

उत्तर : दो मूल भावों में मात्र एक-एक भंग ही होता है-

औपशमिक भाव - सादि-सान्त। **क्षायिक भाव -** सादि अनन्त।

प्रश्न : कितने भावों में अनादि-अनन्त रूप भंग ही पाया जाता है?

उत्तर : केवल दो भावों में अनादि-अनन्त रूप भंग ही पाया जाता है -

(१) जीवत्व (२) अभव्यत्व

अभव्य तथा दूरानुदूर भव्य जीवों की अपेक्षा से ११ भाव भी अनादि-अनन्त रूप हैं -

क्षायोपशमिक भाव के ८ = २ अज्ञान (कुमति कुश्रुत) १ दर्शन (अचक्षु), ५ लब्धि।

औदयिक भाव के ४ = मिथ्यादर्शन, अज्ञान, असंयत, असिद्धत्व।

नोट - कुमति एवं कुश्रुत में से एक समय में एक ही होता है इसलिए इनमें से कोई भी अनादि-अनन्त नहीं हो सकता। फिर भी सामान्य से यह जीव (अभव्य) कुमति-कुश्रुतज्ञान को (क्षयोपशम की अपेक्षा) कभी नहीं छोड़ता इसलिए इनको अनादि-अनन्त कहा है।जिस प्रकार सिद्ध भगवान अनादि से हैं फिर भी यह नहीं कहा जा सकता है कि कोई जीव अनादि काल से सिद्ध ही है अपितु यही कहा जाता है कि जीव अनादि काल से निगोद में था, निगोद से निकलकर मोक्ष पुरुषार्थ करके सिद्ध बनता है। इससे यह सिद्ध है कि कोई भी जीव अनादि से सिद्ध नहीं है फिर भी सिद्ध भगवान को अनादि माना गया है। इसी प्रकार......।

जो जीव निगोद से कभी नहीं निकलेंगे अथवा जिन्होंने तिर्यःगति को नहीं छोड़ा है और न छोड़ेंगे उनके अचक्षुदर्शन, तिर्यःगति, नपुंसकलिङ्ग, पंचलब्धि, मिथ्यादर्शन, अज्ञान, असंयत, असिद्धत्व, दूरानुदूर भव्य की अपेक्षा भव्यत्वभाव भी अनादि-अनन्त होता है।

प्रश्न : कितने भावों में अनादि-अनन्तादि तीन भंग होते हैं?

उत्तर : १३ भावों में अनादि-अनन्तादि तीन भंग होते हैं -

- क्षायोपशमिक के २ - कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान
- औदयिक के ११ - तिर्यःगति, ४ कषाय, १ लिङ्ग (नपुंसक), १ मिथ्यादर्शन, १ असंयत ३ अशुभ लेश्या
- पारिणामिक के १ - भव्यत्व

इनमें अनादि-अनन्त, अनादि-सान्त तथा सादि-सान्त, ये तीन भंग होते हैं।

जब यह जीव मिथ्यात्व को छोड़कर पुन: मिथ्यात्व में, तिर्यःगति को छोड़कर पुन: तिर्यःगति में, असंयतपने को छोड़कर पुन: असंयत में, नपुंसक लिङ्ग को छोड़कर अथवा अवेद अवस्था को प्राप्त कर पुन: नपुंसकवेद तथा कृष्णादि लेश्या को छोड़कर पुन: कृष्णादि लेश्या को प्राप्त करता है तब इन भावों में सादि-सान्त भंग बनता है।

प्रश्न : चार गति रूप भाव में कितने भंग होते हैं।

उत्तर : तिर्यःगति में तीन भंग हैं -

अनादि-अनन्त, अनादि-सान्त, सादि-सान्त।

शेष गतियों में १ भंग है - सादि-सान्त।

यह जीव अनादि काल से निगोद में रहा है। निगोदिया जीव तिर्यःागति के हैं इसलिए तिर्यःागति को अनादि कहा है और शेष गतियों में जीव निगोद से निकल कर ही जाता है इसलिए उन्हें सादि कहा है। जिन जीवों ने आज तक मनुष्य आदि किसी भी गति को प्राप्त नहीं किया है और आगे भी नहीं करेंगे, इस अपेक्षा से तिर्यःागति अनादि-अनन्त है।

जो जीव तिर्यःागति से निकलकर मोक्ष चले जाते हैं उनकी अपेक्षा तिर्यःागति अनादि-सान्त है। जो जीव मनुष्यादि गतियों को प्राप्त करके पुन: तिर्यंचगति में जाते हैं उनकी तिर्यःागति सादि होती है और वहाँ से निकलकर अन्यगति में जाते हैं तब उनकी तिर्यञ्चगति सान्त होती है इसलिए तिर्यःागति को सादि-सान्त कहा है।

मनुष्य, नरक तथा देवगति सादि-सान्त ही हैं, क्योंकि ये गतियाँ तिर्यःागति से निकलकर ही प्राप्त होती हैं और यह जीव नियम से इन गतियों को छोड़कर अन्य गतियों में चला जाता है।

प्रश्न : कितने क्षायोपशमिक भावों में अनादि-सान्त भंग भी बनता है?

उत्तर : ८ क्षायोपशमिक भावों में अनादि-सान्त भंग भी बनता है -

कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, अचक्षुदर्शन तथा पाँच लब्धि।

अभव्य जीवों की अपेक्षा कुमति और कुश्रुतज्ञान में अनादि-अनन्त तथा सादि मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा सादि-सान्त भंग बनता है।

जो जीव कभी निगोद से नहीं निकलेंगे उनकी अपेक्षा अचक्षुदर्शन में अनादि-अनन्त भंग भी बनता है।

कहा भी है - ऐसे अनन्तानन्त जीव हैं जिन्होंने त्रसों की पर्याय अभी तक नहीं पाई है और दूषित भावों की अति प्रचुरता के कारण कभी निगोदवास को नहीं छोड़ते हैं। **(ध. ४/४७७)**

प्रश्न : चार कषायों में सादि-सान्त भंग किस अपेक्षा बनता है?

उत्तर : चार कषायों में सादि-सान्त भंग दो अपेक्षा बनता है -

(१) कोई मुनिराज ग्यारहवें गुणस्थान में सर्व कषायों का उपशम हो जाने से अकषायी अर्थात् कषाय-रहित हो जाते हैं। वे जब वहाँ से गिरकर दसवें आदि गुणस्थानों में आते हैं तब उनके जो कषाय उत्पन्न होती है वह सादि कहलाती है तथा वे जीव जब मोक्ष चले जाते हैं तो उनकी कषायें सान्त कहलाती हैं।

पुनः ग्यारहवाँ गुणस्थान प्राप्त करने पर भी कषायें सान्त हो सकती हैं, क्योंकि जीव चार बार उपशम श्रेणी चढ़ सकता है।

कहा भी है - उपशम श्रेणी चार बार चढ़ने के पीछे अवश्य निर्वाण प्राप्त करता है। अवश्य कर्मों का क्षय करता है **(गो.क.)**

एक कषाय अन्तर्मुहूर्त्त से ज्यादा नहीं रहती इसलिए प्रत्येक कषाय अन्तर्मुहूर्त्त के बाद नयी उत्पन्न होती है इसलिए वे सादि-सान्त होती हैं।

कहा भी है - क्रोध आदि का एक जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त्त है। **(ध.४/४४६)**

प्रश्न : क्या भव्य जीवों के भी असिद्धत्व भाव अनादि-अनन्त हो सकता है?

उत्तर : हाँ, दूरानुदूर भव्य जीवों के असिद्धत्व भाव अनादि-अनन्त हो सकता है, क्योंकि ये भव्य होते हुए भी कभी मोक्ष को प्राप्त नहीं होंगे।

प्रश्न : अज्ञान भाव को सादि क्यों नहीं कहा है?

उत्तर : अज्ञान भाव जीव के अनादि काल से है और जब तक केवलज्ञान प्राप्त नहीं होता तब तक बना रहता है। केवलज्ञान होने के बाद जीव पुनः अज्ञान भाव को प्राप्त नहीं होता है अर्थात् ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होते ही अज्ञान भाव का नाश होकर केवलज्ञान प्राप्त होता है। इसलिए इसे सादि नहीं कहा है।

प्रश्न : भव्यत्व भाव में कौन-कौन से भंग होते हैं?

उत्तर : भव्यत्व भाव में दो प्रकार के भंग हैं -

(१) अनादि सान्त (२) सादि-सान्त

अनादि सान्त - पूर्व में नहीं प्राप्त हुआ है सम्यक्त्व जिसको ऐसे जीव के भव्यत्व भाव अनादि-सान्त होता है।

सादि सान्त - सम्यक्त्व को प्राप्त करके मिथ्यात्व को गये हुए जीव के सादि-सान्त भव्यत्व भाव होता है।

संसार में पुनः लौटकर आने वाले सिद्ध जीवों की अपेक्षा से भव्यत्व को सादि नहीं कह सकते, क्योंकि कर्मास्रव के नष्ट हो जाने से वे संसार में पुनः लौटकर नहीं आते, किन्तु ग्रहण किया है सम्यक्त्व को जिसने ऐसे जीव के भव्यत्व भाव को सादि कहते हैं। **(ध. ४/४७६-७७)**

प्रश्न : अभव्य के समान भी तो भव्य जीव होते हैं इसलिए भव्यत्व भाव को अनादि-अनन्त क्यों नहीं कहा?

उत्तर : नहीं, क्योंकि भव्यों में अविनाश शक्ति का अभाव है अर्थात् यद्यपि अनादि से अनन्तकाल तक रहने वाले भव्य जीव हैं तो सही, पर उनमें शक्ति रूप से तो संसार विनाश की सम्भावना है, अविनाश की संभावना नहीं है।

अथवा यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि पर्यायार्थिक नय के अवलम्बन से जब तक सम्यक्त्व ग्रहण नहीं किया है तब तक जीव का भव्यत्व भाव अनादि-अनन्त रूप है, क्योंकि उसका संसार अन्त रहित है। **(ध. ७/१७६-७७)**

प्रश्न : अचक्षुदर्शन में सादि-सान्त भंग क्यों नहीं बनता है?

उत्तर : अचक्षुदर्शन निगोद से लेकर बारहवें गुणस्थान तक होता है अर्थात् संसार में बारहवें गुणस्थान तक कोई भी जीव ऐसे नहीं हैं जिनके अचक्षुदर्शन नहीं होता है। बारहवें गुणस्थान के अंत में अचक्षुदर्शन का अभाव हो जाता है। उसके बाद पुन: अचक्षुदर्शन उत्पन्न नहीं हो सकता है, क्योंकि वहाँ दर्शनावरण कर्म की सत्ता, उदय आदि नहीं होते हैं। अथवा -

एक समय में एक ही दर्शन होता है। अचक्षुदर्शन भी अन्तर्मुहूर्त से ज्यादा नहीं रह सकता है इसलिए अचक्षुदर्शन में भी सादि-सान्त भंग बन जाता है।

कहा भी है - चक्षुदर्शन का एक जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त्त है। **(ध. ४/४६०)**

प्रश्न : कुमति-कुश्रुत ज्ञान में कितने भंग होते हैं?

उत्तर : कुमति-कुश्रुत ज्ञान में ३ भंग होते हैं -

(१) अनादि-अनन्त (२) अनादि-सान्त (३) सादि-सान्त।

ये दोनों ज्ञान अनन्त नहीं हो सकते, क्योंकि एक समय में एक ही ज्ञान होता है।

कुश्रुतज्ञान अनादि नहीं हो सकता, क्योंकि श्रुतज्ञान मतिज्ञान पूर्वक ही उत्पन्न होता है इसलिए इसमें अनादि-अनन्त भंग नहीं बनता है। परन्तु परम्परागत कुमतिज्ञान के साथ कुश्रुतज्ञान भी पाया जाता है इसलिए इसे भी अनादि-अनन्त कहा है।

मति-श्रुत अज्ञान का काल अनादि-अनन्त तथा अनादि सान्त है। **(ध. ४/४४९)**

इसी प्रकार चार कषाय एवं तीन अशुभ लेश्याओं में भी जानना चाहिए।

प्रश्न : कितने भाव सादि ही होते हैं?

उत्तर : २९ भाव सादि ही होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र।
- क्षायिक भाव के ९ - ज्ञान, दर्शन आदि।
- क्षायोपशमिक भाव के १० - ४ ज्ञान, १ अज्ञान (विभंगावधि), २ दर्शन (चक्षु, अवधि) सम्यक्त्व, चारित्र, संयमासंयम।
- औदयिक भाव के ८ - ३ गति (तिर्यःागति बिना), स्त्रीलिंग, पुरुषलिङ्ग, ३ शुभ लेश्या

  नोट - चार कषाय एवं ३ अशुभ लेश्याएँ अनादि से हैं लेकिन इनमें से कौन सी कषाय एवं लेश्या अनादि है और कौनसी सादि है। ऐसा कहा नहीं जा सकता है, क्योंकि एक समय में एक ही कषाय और एक ही लेश्या होती है।

प्रश्न : क्षायिक भाव को सादि-अनन्त क्यों कहा है ?

उत्तर : क्षायिक भाव यद्यपि स्वभाव की व्यक्ति रूप होने से अनन्त है तथापि कर्मक्षय द्वारा उत्पन्न होने के कारण सादि है इसलिए कर्मकृत ही कहा गया है। **(पं.का. ५८ सम.)**

चौबीस स्थान परिचय

प्रश्न : चौबीस स्थान कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : चौबीस स्थानों के नाम -

चौदह मार्गणाएँ - (१) गति (२) इन्द्रिय (३) काय (४) योग (५) वेद (६) कषाय (७) ज्ञान (८) संयम (९) दर्शन (१०) लेश्या (११) भव्यत्व (१२) सम्यक्त्व (१३) संज्ञी (१४) आहार। (१५) गुणस्थान (१६) जीवसमास (१७) पर्याप्ति (१८) प्राण (१९) संज्ञा (२०) उपयोग (२१) ध्यान (२२) आस्रव के प्रत्यय (२३) जाति (२४) कुल।

प्रश्न : मार्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर : अवग्रह के द्वारा ग्रहण किये अर्थ के विशेष का जिसके द्वारा मार्गण अर्थात् अन्वेषण किया जाता है उसे मार्गणा कहते हैं। **(ध. १३/२४२)**

प्रवचन में बताये गये अनेक प्रकार से स्थित जीवों का जिन भावों के द्वारा अथवा जिन पर्यायों में विचार किया जाए उन्हीं को सूक्ष्म स्वरूप व परोक्ष स्वरूप देखने में चतुर आचार्यों ने मार्गणा कहा है। सत् संख्या आदि अनुयोग द्वारों से युक्त १४ जीवसमास जिसमें या जिसके द्वारा खोजे जाते **(पं.सं. १/१३१)** हैं - उसे मार्गणा कहते हैं **अथवा** श्रुतज्ञान अर्थात् द्रव्य श्रुत परमागम में जीव आदि पदार्थ जिस प्रकार देखे गये हैं उसी प्रकार वे जिन नारकत्वादि पर्यायों के द्वारा या पर्यायों में खोजे जाते हैं, उन्हें मार्गणा कहते हैं। **(ध. १/१३२-३३)**

प्रश्न : मार्गणाएँ कितनी होती हैं?

उत्तर : मार्गणाएँ १४ होती हैं -

(१) गति (२) इन्द्रिय (३) काय (४) योग (५) वेद (६) कषाय (७) ज्ञान (८) संयम (९) दर्शन (१०) लेश्या (११) भव्यत्व (१२) सम्यक्त्व (१३) संज्ञी (१४) आहार।

प्रश्न : मार्गणाओं के उत्तर भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर : मार्गणाओं के उत्तर भेद -

- **गति** मार्गणा के ४ - नरकगति, तिर्यःागति, मनुष्यगति, देवगति।
- **इन्द्रिय** मार्गणा के ५ - एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय।
- **काय** मार्गणा के ६ - पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पति कायिक, त्रसकायिक।
- **योग** मार्गणा के १५ = ४ मनोयोग - सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग, अनुभयमनोयोग। ४ वचनयोग - सत्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, उभयवचनयोग, अनुभयवचनयोग। ७ काययोग - औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारककाययोग, आहारकमिश्र काययोग, कार्मणकाययोग।
- **वेद** मार्गणा के ३ - स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद।
- **कषाय** मार्गणा के २५ - अनन्तानुबन्धी चतुष्क, अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क, प्रत्याख्यानावरण चतुष्क, संज्वलन चतुष्क, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद।
- **ज्ञान** मार्गणा के ८ - कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान, केवलज्ञान।
- **संयम** मार्गणा के ७ - सामायिक संयम, छेदोपस्थापना संयम, परिहारविशुद्धि संयम, सूक्ष्मसाम्पराय संयम, यथाख्यातसंयम, संयमासंयम, असंयम।
- **दर्शन** मार्गणा के ४ - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन।
- **लेश्या** मार्गणा के ६ - कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, पीतलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ल लेश्या।
- **भव्यत्व** मार्गणा के २ - भव्यत्व, अभव्यत्व।

- **सम्यक्त्व** मार्गणा के ६ - उपशमसम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, मिश्र (सम्यग्मिथ्यात्व), सासादनसम्यक्त्व, मिथ्यात्व।
- **संज्ञी** मार्गणा के २ - संज्ञी (सैनी), असंज्ञी (असैनी)।
- **आहार** मार्गणा के २ - आहारक, अनाहारक।

इन चौदह मार्गणाओं में निम्नलिखित १० भेद मिलाने पर चौबीस स्थान होते हैं-

- **गुणस्थान** के १४ - मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अविरतसम्यक्त्व, संयमासंयम, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय, उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, सयोगकेवली, अयोग केवली।
- **जीवसमास** के १९ - नित्यनिगोद सूक्ष्म, नित्यनिगोदबादर, इतरनिगोदसूक्ष्म, इतरनिगोदबादर, पृथ्वीकायिक सूक्ष्म, पृथ्वीकायिक बादर, जलकायिक सूक्ष्म, जलकायिक बादर, अग्नि कायिक सूक्ष्म, अग्निकायिक बादर, वायुकायिक सूक्ष्म, वायुकायिक बादर, सप्रतिष्ठित प्रत्येक, अप्रतिष्ठित प्रत्येक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय।
- **पर्याप्ति** के ६ - आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति, मन:पर्याप्ति।
- **प्राण** के १० - स्पर्शनइन्द्रिय प्राण, रसनाइन्द्रियप्राण, घ्राणइन्द्रिय प्राण, चक्षुइन्द्रिय प्राण, श्रोत्रइन्द्रियप्राण, मनोबलप्राण, वचनबलप्राण, कायबलप्राण, श्वासोच्छ्वासप्राण, आयुप्राण।
- **संज्ञा** के ४ - आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रह संज्ञा।
- **उपयोग** के १२ - ८ ज्ञानोपयोग-कुमतिज्ञानोपयोग कुश्रुतज्ञानोपयोग कुअवधि ज्ञानोपयोग मतिज्ञानोपयोग, श्रुतज्ञानोपयोग, अवधिज्ञानोपयोग, मन:पर्यय ज्ञानोपयोग केवल ज्ञानोपयोग।

  ४ दर्शनोपयोग - चक्षुदर्शनोपयोग, अचक्षुदर्शनोपयोग, अवधिदर्शनोपयोग, केवलदर्शनोपयोग।
- **ध्यान** के १६ - ४ आर्त्तध्यान - इष्टवियोग आर्त्तध्यान, अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान, वेदना आर्त्तध्यान, निदान आर्त्तध्यान। ४ रौद्रध्यान - हिंसानन्द रौद्रध्यान, मृषानन्द रौद्रध्यान, स्तेयानन्द रौद्रध्यान, परिग्रहानन्द रौद्रध्यान। ४ धर्मध्यान - आज्ञाविचय धर्मध्यान, अपायविचय धर्मध्यान, विपाकविचय धर्मध्यान, संस्थानविचय धर्मध्यान। ४ शुक्लध्यान- (१) पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान (२) एकत्ववितर्क अवीचार शुक्ल ध्यान (३) सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती शुक्लध्यान (४) व्युपरतक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान।
- **आस्रव** के प्रत्यय ५७ - ५ **मिथ्यात्व**-विपरीत, एकान्त, विनय, संशय, अज्ञान।

  १२ **अविरति** - ५ इन्द्रिय और मन को वश में नहीं करना, ५ स्थावर और त्रस कायिक

जीवों की रक्षा का संकल्प नहीं करना। २५ **कषाय** - अनन्तानुबन्धी आदि। १५ **योग** - ४ मनो., ४ वच., ७ काय.।

- **जाति** - ८४ लाख - इतर निगोद की ७ लाख, नित्यनिगोद की ७ लाख, पृथ्वीकायिक की ७ लाख, जलकायिक की ७ लाख, अग्निकायिक की ७ लाख, वायुकायिक की ७ लाख, वनस्पतिकायिक की १० लाख, द्वीन्द्रिय की २ लाख, त्रीन्द्रिय की २ लाख, चतुरिन्द्रिय की २ लाख, पंचेन्द्रिय तिर्यःा की ४ लाख, नरकगति ४ लाख, देवगति की ४ लाख, मनुष्यगति की १४ लाख।
- **कुल** १९९$^{१}/_{२}$ लाख करोड़ - पृथ्वीकायिक के २२ लाख करोड़, जलकायिक के ७ लाख करोड़, अग्निकायिक के ३ लाख करोड़, वायुकायिक के ७ लाख करोड़, वनस्पति कायिक के २८ लाख करोड़, द्वीन्द्रिय के ७ लाख करोड़, त्रीन्द्रिय के ८ लाख करोड़, चतुरिन्द्रिय के ९ लाख करोड़, पंचेन्द्रिय में जलचरों के १२$^{१}/_{२}$ लाख करोड़, थलचरों के १९ लाख करोड़, नभश्चरों के १२ लाख करोड़, नारकियों के - २५ लाख करोड़, देवों के २६ लाख करोड़, मनुष्यों के १४ लाख करोड़, **अथवा** १२ लाख करोड़ **(गो.जी.)**

प्रश्न : गति आदि चौदह भेदों को मार्गणा क्यों कहते हैं?

उत्तर : गति आदि चौदह स्थानों में जीवों की मार्गणा/गवेषणा अर्थात् खोज की जाती है इसलिए इनका नाम मार्गणा है। **(ध.७/७)**

प्रश्न : मार्गणाओं को जानने से क्या लाभ है?

उत्तर : मार्गणाओं को जानने से ज्ञान की वृद्धि होती है तथा सम्यग्दर्शन की विशुद्धि में वृद्धि होती है। इसलिए विद्वानों को मार्गणाओं को जानकर अपने ज्ञान की वृद्धि के लिए तथा सम्यग्दर्शन की विशुद्धि के लिए चारों गतियों में रहने वाले संसारी जीवों का इन के द्वारा शीघ्र यत्न से मार्गण/अन्वेषण करना चाहिए। **(वी.व.चा. १६/५७)**

सामान्य से विशेष बलवान होता है, अर्थात् सामान्य से गुणस्थानों में जीव तत्त्व की गवेषणा करने से यद्यपि प्राज्ञजनों को उनका ज्ञान हो जाता है, लेकिन मंद एवं मध्यम बुद्धि वाले प्राणी इतने मात्र से जीव को जानकर अपना उपयोग धर्मध्यान में नहीं लगा पाते हैं, उनको भिन्न-भिन्न मार्गणा, पर्याप्ति, प्राण आदि २० प्ररूपणाओं में तथा चौबीस स्थानों में जीवन को खोजने की भी एक विधा है। मार्गणाओं में मार्गणाओं के उत्तरोत्तर भेदों में जीवों की खोज करने में अधिक से अधिक समय लगाया जा सकता है, इनमें जीवों की खोज करने पर समझ में आता है कि मनुष्य पर्याय, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति, बोधि-रत्नत्रय को प्राप्त करना कितना दुष्कर। दुर्लभ ही नहीं अति दुर्लभ है। ऐसी मनुष्य पर्याय को हमने प्राप्त कर लिया है इसका उपयोग हमें किस प्रकार करना चाहिए।

कहा भी है – दया-दया सबहि कहे दया न जाने कोय।
जीवस्थान जाने बिना, दया कहाँ से होय॥

प्रश्न : मार्गणाओं के चौदह, लेश्या के छह और भव्य मार्गणा के दो आदि भेद ही क्यों किये हैं ? मार्गणाओं के १५ आदि रूप भेद क्यों नहीं किये हैं?

उत्तर : धर्म वाद अर्थात् वस्तु में अनन्त धर्म हैं; यह निर्दोष रीति से प्रतिपादित करने वाला आगम दो प्रकार का है -

(१) हेतुवाद (२) अहेतुवाद

- **हेतुवाद -** जिसमें पदार्थ को परीक्षा करके जाना जा सकता है वह हेतुवाद है। जैसे - सर्वज्ञ की सत्ता स्थापित करना, मुक्ति को उपलब्ध जीव का संसार में लौटकर पुन: न आना आदि कथन सुनिश्चित व असंभव बाधक रूप हेतु होने से हेतुवाद का विषय हैं।

  सम्यग्दर्शन - ज्ञान - चारित्र को प्राप्त करने वाले भव्य जीव हैं। वे नियम से दु:खों का अंत करने वाले हैं, यह हेतुवाद का लक्षण है क्योंकि सम्यग्दर्शन आदि हेतुओं से भव्य जीव को जाना जा सकता है।

- **अहेतुवाद -** जो तत्त्व केवल आगम में कहा गया है, जिसमें हेतुवाद नहीं चल सकता है वह अहेतुवाद है। जैसे - जीव के असंख्यात प्रदेश होते हैं।

  जीव के भव्य-अभव्य भेद क्यों किये गये? इस सम्बन्ध में चिंतन करने के लिए हेतुवाद को अवकाश नहीं है। जो विषय हेतुवाद का है उसे हेतुवाद से जानने वाला ही स्वसमय जैनधर्म का प्ररूपक कहा गया है। इसी प्रकार जो विषय आगमवाद (अहेतुवाद) का है, उसे भी श्रद्धापूर्वक आगम से जानने वाला स्वसमय है किन्तु जो आगमवाद में हेतुवाद और हेतुवाद में आगमवाद का प्रतिपादन करता है वह व्यक्ति अनेकांत सिद्धान्त की विराधना करने वाला है। **(स.सू. ३/४३-४५)**

  उपर्युक्त कथन से सिद्ध है कि मार्गणा चौदह ही क्यों होती है, लेश्या छह ही क्यों होती है, इस प्रकार विकल्प नहीं करना चाहिए, क्योंकि आगम में इनका इसी प्रकार से प्ररूपण किया गया है। अत: श्रद्धा करने योग्य है। कहा भी है - **''सिद्धान्तोऽतर्कगोचर:''**।

प्रश्न : कितने भाव मार्गणाओं के उत्तर भेदों में गर्भित हो जाते हैं ?

उत्तर : ३७ भाव मार्गणाओं के उत्तर भेदों में गर्भित हो जाते हैं -

	उत्तर भाव	**मार्गणा**
(१)	औपशमिक सम्यक्त्व	सम्यक्त्व
(२)	क्षायिक सम्यक्त्व	सम्यक्त्व

(३)	क्षायिक ज्ञान	ज्ञान
(४)	क्षायिक दर्शन	दर्शन
(५-८)	मति आदि चार ज्ञान	ज्ञान
(९-११)	कुमति आदि तीन ज्ञान	ज्ञान
(१२-१४)	चक्षु आदि तीन दर्शन	दर्शन
(१५)	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	सम्यक्त्व
(१६)	संयमासंयम	संयम
(१७-२०)	४ गतियाँ	गति
(२१-२४)	४ कषाय	कषाय
(२५-२७)	३ लिङ्ग	वेद
(२८)	मिथ्यादर्शन	सम्यक्त्व
(२९)	असंयत	संयम
(३०-३५)	६ लेश्या	लेश्या
(३६-३७)	भव्य-अभव्य	भव्य

प्रश्न : कितने उत्तर भाव आस्रव के प्रत्ययों में भी आते हैं?

उत्तर : ९ भाव आस्रव के प्रत्ययों में भी आते हैं -

४ कषाय-क्रोध मान माया लोभ

३ लिंग-स्त्री, पुरुष, नपुंसकलिंग

१ - मिथ्यादर्शन

१ - असंयत (अविरति)

卐 २४ स्थानों में गुणस्थान एवं भाव 卐

गति मार्गणा

क्र.	गति	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	नरक गति	५	३३	४	केवल पहले नरक में ही पाँच भाव होते है।
(२)	तिर्यःा गति	५	३९	५	भोग भूमि की अपेक्षा क्षायिक भाव होता है।
(३)	मनुष्य गति	५	५०	१४	
(४)	देव गति	५	३७	४	वैमानिक देवों के ही क्षायिक भाव होता है।
(५)	सिद्ध गति	२	१०	×	

इन्द्रिय मार्गणा

क्र.	इन्द्रिय	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-३)	एके.द्वीन्द्रि.त्रीन्द्रि.	३	२४	२	क्षायो. औद. पारि. भाव होते हैं।
(४)	चतुरिन्द्रिय	३	२५	२	चक्षुदर्शन भी होता है।
(५)	पःोन्द्रिय	५	५३	१४	संज्ञी पंचेन्द्रिय के ही पाँचों भाव होते हैं।
(६)	अनिन्द्रिय	३	१४	२	सिद्ध भगवान भी अनिन्द्रिय होते हैं।

काय मार्गणा

क्र.	काय	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-३)	पृथ्वी.जल.वन.	३	२४	२	पहला-दूसरा गुणस्थान
(४-५)	अग्नि वायु.	३	२४	१	पहला गुण.
(६)	त्रस कायिक	५	५३	१४	केवल पंचेन्द्रिय में ही पाँच भाव होते हैं।
(७)	कायातीत(अकायिक)	२	१०	-	

योग मार्गणा

क्र.	योग	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-४)	सत्य-अनुभय मन एवं वचन योग	५	५३	१३	
(५-८)	असत्य एवं उभय मन, वचन योग	५	४६	१२	क्षायिक के ज्ञानादि सात भाव नहीं होते हैं।
(९)	औदारिककाय योग	५	५१	१३	नरकगति एवं देवगति नहीं हैं।

(१०)	औदारिकमिश्र-काय योग	४	४५	४(प.दू. चौ.ते.)	औपशमिक भाव नहीं होता है।
(११)	वैक्रियिककाययोग	५	३९	४	
(१२)	वैक्रियिकमिश्र-काय योग	५	३८	३(प.दू. चौ.)	देवों की अपेक्षा औपशमिक भाव होता है।
(१३-१४)	आहारकद्विकयोग	४	२७	१(छठा)	औपशमिक भाव नहीं होता है।
(१५)	कार्मणकाययोग	५	४८	४(प.दू. चौ.ते.)	
(१६)	योगातीत	३	१३	१(चौद.)	सिद्ध भगवान भी योगातीत हैं।

वेद मार्गणा

क्र.	वेद	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	स्त्री वेद	५	४२	९	भाववेद की अपेक्षा ९ गुण. होते हैं।
(२)	पुरुष वेद	५	४३	९	मन:पर्ययज्ञान भी होता है।
(३)	नपुंसक वेद	५	४२	९	
(४)	वेदातीत	५	३३	६	नवें के अवेद भाग से चौदहवें गुणस्थान तक

कषाय मार्गणा

क्र.	कषाय	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-४)	अनन्तानुबंधी चतुष्क	३	३४	२	
(५-८)	अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क	५	४१	४	पहले से चौथा गुणस्थान होता है।
(९-१२)	प्रत्याख्यानावरण चतुष्क	५	४२	५	चौथे-पाँचवें गुण. में पाँचों भाव होते हैं।
(१३-१५)	संज्वलनत्रिक	५	४६	९	
(१६)	संज्वलन लोभ	५	४६	१०	
(१७-२२)	हास्यादि छह	५	४६	८	क्षायिकभाव के सात भेद नहीं होते हैं।
(२३-२५)	तीनों वेदों में मूलभावादि वेद मार्गणा के समान जानना चाहिए।				
(२६)	कषायातीत	५	२९	४(ग्यारह से चौदह)	

ज्ञान मार्गणा

क्र.	ज्ञान	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-२)	कुमति.कुश्रुत	३	३२	२	
(३)	विभंगज्ञान	३	३२	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय के ही होता है।
(४-६)	मति आदि तीनज्ञान	५	३८	९	चौथे से बारहवाँ गुणस्थान होता है।
(७)	मन:पर्ययज्ञान	५	२८	७	छठे से बारहवाँ गुणस्थान होता है।
(८)	केवलज्ञान	३	१४	२	तेरहवें गुण. की अपेक्षा १४ भाव होते हैं।

संयम मार्गणा

क्र.	संयम	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-२)	सामायिक छेदोपस्थापना	५	३३	४	
(३)	परिहार विशुद्धि	४	२७	२	औपशमिक भाव नहीं होता है।
(४)	सूक्ष्म साम्पराय	५	२३	१	उपशम श्रेणी में पाँच भाव होते हैं।
(५)	यथाख्यात	५	२९	४	ग्यारहवें गुण. की अपेक्षा ५ भाव होते हैं।
(६)	संयमासंयम	५	३१	१(पाँचवाँ)	
(७)	असंयम	५	४१	४	चौथे गुण. की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।

दर्शन मार्गणा

क्र.	दर्शन	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-२)	चक्षु-अचक्षु.	५	४४	१२	
(३)	अवधिदर्शन	५	३९	९	चौथे से बारहवें गुण. तक होता है।
(४)	केवलदर्शन	३	१४	२	तेरहवाँ चौदहवाँ गुणस्थान होता है।

लेश्या मार्गणा

क्र.	लेश्या	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-३)	कृष्ण नील कापोत	५	३६	४	चौथे गुण. की अपेक्षा ५ भाव होते हैं।
(४-५)	पीत-पद्म	५	३८	७	
(६)	शुक्ल	५	४७	१३	
(७)	अलेश्यक (लेश्यातीत)	३	१३	१	चौदहवाँ गुण. होता है।

भव्य मार्गणा

क्र.	भव्य	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	भव्यत्व	५	५२	१४	अभव्यत्व भाव नहीं होता है।
(२)	अभव्यत्व	३	३३	१	औप. एवं क्षायिक भाव नहीं होता है।
(३)	भव्य-अभव्य से रहित	२	१०	-	

सम्यक्त्व मार्गणा

क्र.	सम्यक्त्व	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	औपशमिक	४	३८	८	क्षायिक भाव नहीं होता है।
(२)	क्षायोपशमिक	३	३७	४	क्षायोपशमिक/औदयिक और पारिणा. भाव होते हैं।
(३)	क्षायिक	५	४६	११	औपशमिक चारित्र की अपेक्षा औपशमिक भाव होता है।
(४)	सासादन	३	३२	१	
(५)	सम्यग्मिथ्यात्व	३	३२	१	
(६)	मिथ्यात्व	३	३४	१	पहला गुणस्थान ही होता है।

संज्ञी मार्गणा

क्र.	संज्ञी	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	संज्ञी	५	४६	१२	क्षायिक ज्ञानादि ७ भाव नहीं हैं।
(२)	असंज्ञी	३	२८	२	कोई आचार्य पीत लेश्या भी मानते हैं।
(३)	संज्ञी-असंज्ञी से रहित	३	१४	२	

आहार मार्गणा

क्र.	आहारक	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	आहारक	५	५३	१३	
(२)	अनाहारक	५	४८	५	प. दू. चौथा तेरहवाँ चौ. गुणस्थान होता है।

गुणस्थान

क्र.	गुणस्थान	मूलभाव	उत्तरभाव	विवरण
(१)	मिथ्यात्व	३	३४	औपशमिक एवं क्षायिक भाव नहीं हैं।
	सासादन	३	३२	
	सम्यग्मिथ्यात्व	३	३२	
	अविरतसम्यक्त्व	५	३६	सम्यक्त्व की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।
	संयतासंयत	५	३१	सम्यक्त्व की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।
	प्रमत्तसंयत	५	३१	सम्यक्त्व की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।
	अप्रमत्तसंयत	५	३१	सम्यक्त्व की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।
	अपूर्वकरणसंयत	५	२९	उपशमसम्यग्दृष्टि के चार भाव ही होते हैं।
	अनिवृत्तिकरण संयत	५	२९	
	सूक्ष्मसाम्पराय संयत	५	२३	क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।
	उपशान्तकषाय वीत.	५	२१	
	क्षीणकषायवीत.	४	२०	औपशमिक भाव नहीं होता है।
	सयोग केवलीजिन	३	१४	
	अयोगकेवली जिन	३	१३	शुक्ललेश्या भी नहीं होती है।
	गुणस्थानातीत	२	१०	

जीवसमास

क्र.	जीवसमास	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-४)	• नित्यनिगोद सूक्ष्म बादर	३	२४	१	मिथ्यात्व गुणस्थान होता है।
	• इतर निगोद सूक्ष्म बादर	३	२४	१	
	• पृथ्वीकायिक सूक्ष्म	३	२४	१	क्षायो.औद.पारि. भाव होते हैं।
	• जलकायिक सूक्ष्म	३	२४	१	
	• अग्निकायिक सूक्ष्म-बादर	३	२४	१	

• वायुकायिक सूक्ष्म-बादर	३	२४	१	
• पृथ्वीकायिक बादर	३	२४	२	पहला-दूसरा गुणस्थान होता है।
• जलकायिक बादर	३	२४	२	दूसरा गुणस्थान
• सप्रतिष्ठित प्रत्येक वन.	३	२४	२	निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा होता है।
• अप्रतिष्ठित प्रत्येक वन.	३	२४	२	निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा होता है।
• द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय	३	२४	२	निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा होता है।
• चतुरिन्द्रिय	३	२५	२	निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा होता है।
• असंज्ञी पंचेन्द्रिय	३	२८	२	निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा होता है।
• संज्ञी पःोन्द्रिय	५	४६	१२	तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी जीवसमास है।
• जीवसमासातीत	२	१०	-	

पर्याप्ति

पर्याप्ति	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
४ (आहार,शरीर,इन्द्रिय एवं श्वासोच्छ्वास)	३	२४	१	क्षायो.औद. एवं पारि. भाव होते हैं।
५ (मन पर्याप्ति बिना)	३	२८	१	
६ (आ.श.इ.श्वा.) भा.मन)	५	५३	१४	चौथे गुण. से ग्यारहवें गुण. तक पाँच भाव होते हैं।
पर्याप्ति से अतीत	२	१०	-	

प्राण

प्राण	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
१	३	१३	१ (चौदहवाँ)	क्षा.औद.पारि. भाव होते हैं।
२	३	१४	१ (तेरहवाँ)	क्षा.औद.पारि.भाव होते हैं।
३	३	२४	३ (पह.दूस.तेर.)	
४	३ (क्षायो.औद. पारि.)	२४	३ (पह.,दू.तेर)	तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा वचनबल, कायबल, श्वासो., एवं आयु प्राण होते हैं।

५	३	२४	२(पहला-दूसरा)	
६	३	२५	२(पहला-दूसरा)	
७	५	४१	४(पहला-दूसरा-चौ.छ.)	
८	३	२५	१	पहला गुणस्थान ही होता है।
९	३	२८	१	असंज्ञी पंचेन्द्रिय के होते हैं।
१०	५	४६	१२ (पहले से बारहवाँ)	
प्राणातीत	२	१०	–	

संज्ञा

संज्ञा	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• आहार	५	४४	६	पहले से छठा गुण. होता है।
• भय	५	४६	८	क्षपक श्रेणी की अपेक्षा ४ भाव ही हैं।
• मैथुन	५	४६	९	उपशम श्रेणी की अपेक्षा ५ भाव हो सकते हैं।
• परिग्रह	५	४६	१०	
• संज्ञातीत	५	२९	४	ग्यारहवें से चौदहवें तक

उपयोग

उपयोग	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• कुमति आदि तीन ज्ञानो.	३	३२	२	स्वकीय ज्ञानो. होने से दो कुज्ञानो. निकल जाएंगे।
• मति आदि तीन ज्ञानो.	५	३८	९	मतिज्ञानो. में मतिज्ञानो.....ही ग्रहण करना चाहिए।
• मन:पर्यय ज्ञानो.	५	२८	७	
• केवलज्ञानोपयोग	३	१४	२	तेरहवाँ चौदहवाँ गुणस्थान होता है।
• चक्षु-अचक्षुदर्शनो.	५	४४	१२	
• अवधिदर्शनो.	५	३९	९	
• केवलदर्शनोप.	३	१४	२	क्षा. औद. एवं पारि. भाव होते हैं।

ध्यान

ध्यान	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• तीन आर्त्तध्यान	५	४४	६	औ. एवं क्षायि. भाव चौथे से छठे गुण. तक होते हैं।
• निदान आर्त्तध्यान	५	४२	५	

• ४ रौद्रध्यान	५	४२	५	रौद्रध्यान पाँचवें गुण. तक ही होता है।
• आज्ञाविचय धर्म.	५	३९	४	चारों धर्मध्यान
• अपायविचय ,,	५	३९	४	
• विपाकविचय ,,	५	३३	३	
• संस्थान विचय	५	३१	२	
• पृथक्त्ववितर्क- • वीचार शुक्ल.	५	२९	५	
• एकत्ववितर्क- अवीचार शु.	५	२२	२	ग्यारहवें गुण. में भी दूसरा शुक्ल. मानने वालों की अपेक्षा पाँच भाव होंगे।
• सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती	३	१४	१	
• व्युपरतक्रिया निवृत्ति	३	१३	१	चौदहवें गुणस्थान में ही होता है।
ध्यानातीत	२	१०	-	

आस्रव के प्रत्यय

आस्रव प्रत्यय	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• पाँच मिथ्यात्व	३	३४	१	क्षायो.औद. एवं पारि. भाव होते हैं।
• बारह अविरति	५	४१	४	
• कषाय	५	४६	१०	
• योग	५	५३	१३	

जाति

जाति	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• २८ लाख (इतर-निगोद, नित्यनिगोद, अग्नि. व वायु.)	३	२४	१	क्षायो. औद. पारि. भाव होते है।
• २८ लाख (पृ. ज.वन.द्वी.त्री.)	३	२४	२	
• २ लाख चतुरि.	३	२५	२	चक्षुदर्शन रूप भाव भी होता है।
• ४ लाख पं.तिर्य.	५	३९	५	भोगभूमि की अपेक्षा क्षायिकभाव होता है।
• ४ लाख नारकी	५	३३	४	पहले नरक में ही क्षायिक भाव होता है।
• ४ लाख (देव)	५	३७	४	
• १४ लाख मनुष्य	५	५०	१४	

कुल

कुल	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• १० लाख क. (अग्नि.वायु)	३	२४	१	क्षायो.औद. एवं पारि. भाव होते हैं।
• ७२ ला.क.(पृ. ज.वन.द्वी.त्री.)	३	२४	२	पहला, दूसरा गुण. होता है।
• ९ ला.क. (चतु.)	३	२५	२	चक्षुदर्शन रूप भाव भी होता है।
• ४३ $^{1}/_{2}$ ला.क. (पं.ति.)	५	३९	५	जलचर जीवों के क्षायिक भाव नहीं है।
• २५ ला.क. (नर.)	५	३३	४	पहले नरक में पाँचों भाव होते हैं।
• २६ ला.क. (देव)	५	३७	४	
• १४ ला.क. (मनुष्य)	५	५०	१४	तीन गति रूप भाव नहीं होते हैं।

गति मार्गणा

प्रश्न : गति मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : जो प्राप्त की जाये उसे **गति** कहते हैं। **(ध.१/१३५)**

गति नामकर्म के उदय से उस-उस गति विषयक भाव के कारणभूत जीव की अवस्था विशेष को गति कहते हैं।

जिसके उदय से आत्मा भवान्तर को जाता है, वह गति नाम कर्म है। **(मू. १२३६)**

जिसके द्वारा संसार में भ्रमण करे या जो अवस्था गति नामकर्म के द्वारा प्राप्त होती है उसे गति कहते हैं। **(त.सा. १/३६)**

गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव पर्याय को अथवा चारों गतियों में गमन के कारण को गति कहते हैं। **(गो.जी.१४६)**

गतियों में जीवों की खोज करने को **गति मार्गणा** कहते हैं।

प्रश्न : गति मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : गति मार्गणा चार प्रकार की होती है -

(१) नरकगति (२) तिर्यःागति (३) मनुष्यगति (४) देवगति। **(वृ.द्र.सं.१३टी.)**

आदेश प्ररूपणा की अपेक्षा नरकगति, तिर्यःागति, मनुष्यगति, देवगति और सिद्धगति है। **(ध.१/२०१)**

प्रश्न : नरकगति किसे कहते हैं?

उत्तर : जो द्रव्य क्षेत्र काल और भाव में तथा परस्पर में रत नहीं हैं अर्थात् प्रीति नहीं रखते हैं उन्हें नरत कहते हैं और उनकी गति को नरत (नरक) गति कहते हैं। **(ध.१/२०३)**

जो हिंसादि असमीचीन कार्यों में व्यापृत हैं उन्हें निरत कहते हैं और उनकी गति को निरतगति कहते हैं। नरक एक कर्म है इससे जिनकी उत्पत्ति होती है उनको नारक कहते हैं और उनकी गति को नरकगति कहते हैं। अथवा जिस गति का उदय सम्पूर्ण अशुभ कर्मों के उदय का सहकारी कारण है उसे नरकगति कहते हैं। **(ध.१/२०२)**

प्रश्न : तिर्यःागति किसे कहते हैं?

उत्तर : समस्त जाति के तिर्यःाों में उत्पत्ति का जो कारण है, उसे तिर्यःागति कहते हैं अथवा तिर्यग्गति नाम कर्म के उदय से प्राप्त हुए तिर्यःा पर्यायों के समूह को तिर्यःागति कहते हैं। तिरस्, वक्र और कुटिल एकार्थवाची हैं। अत: जो कुटिलता (कुटिल भाव) को प्राप्त होते हैं उन्हें तिर्यःा कहते हैं और उनकी गति को तिर्यःागति कहते हैं। **(ध.१/२०३)**

देव, नारकी और मनुष्यों को छोड़कर शेष सभी तिर्यःा कहलाते हैं। **(त.सू.४/२७)** तिर्यःाों की गति को तिर्यञ्चगति कहते हैं।

प्रश्न : मनुष्यगति किसे कहते हैं?

उत्तर : जो मनुष्य की सभी पर्यायों में उत्पत्ति कराती है, उसे मनुष्यगति कहते हैं।

मनुष्य गति नामकर्म के उदय से प्राप्त हुए मनुष्य पर्यायों के समूह को कार्य में कारण के उपचार से मनुष्यगति कहते हैं। **(ध.१/२०३)**

जिनके मनुष्यगति नाम कर्म का उदय पाया जाता है उन्हें मनुष्य कहते हैं। उनकी गति को मनुष्यगति कहते हैं। **(गो.जी. १४९)**

जो मन से निपुण हैं या मन से उत्कट अर्थात् सूक्ष्म विचार आदि सातिशय उपयोग से युक्त हैं उन्हें मनुष्य कहते हैं और उनकी गति को मनुष्यगति कहते हैं। **(ध.१/२०४)**

प्रश्न : देवगति किसे कहते हैं?

उत्तर : देवगति नामकर्म के उदय से उत्पन्न हुई पर्याय को कार्य में कारण के उपचार से देवगति कहते हैं। **(ध.१/२०४)**

भवनवासी आदि चार प्रकार के देवों की गति को देवगति कहते हैं। **(गो.जी. १५१ म.प्र.)**

जो अणिमा आदि आठ ऋद्धियों की प्राप्ति के बल से क्रीड़ा करते हैं उन्हें देव कहते हैं और देवों की गति को देवगति कहते हैं। **(ध.१/२०४)**

प्रश्न : सिद्धगति किसे कहते हैं?

उत्तर : गति नामकर्म के उदय के अभाव के कारण सिद्धगति होती है, वह अगति कहलाती है। अथवा एक भव से दूसरे भव में संक्रान्ति का नाम गति है और एक भव से दूसरे भव के लिए संक्रान्ति का न होना सिद्ध गति कहलाती है। **(ध.७/६)**

जो ज्ञानावरणादि आठ कर्मों से रहित हैं, अनन्त सुख रूप अमृत के अनुभव करने वाले शान्तिमय हैं, नवीन कर्म बन्ध के कारणभूत मिथ्यादर्शनादि भाव कर्म रूपी अंजन से रहित हैं, नित्य हैं, जिनके सम्यक्त्वादि भाव रूप मुख्य गुण प्रकट हो चुके हैं, जो कृतकृत्य हैं, लोक के अग्रभाग में निवास करने वाले हैं, उनको सिद्ध कहते हैं और उनकी गति को सिद्धगति कहते हैं। **(गो.जी. ६८)**

यद्यपि सिद्ध भगवान के किसी गति नामकर्म का उदय नहीं है फिर भी आठ कर्मों का नाश करके सिद्ध भगवान लोक के अग्रभाग में गमन करते हैं।

(१) जो एकेन्द्रिय आदि जाति, बुढ़ापा, मरण तथा भय से रहित हो,

(२) जो इष्ट वियोग, अनिष्ट संयोग से रहित हो,

(३) जो आहारादि संज्ञाओं से रहित हो,

(४) जो रोग, आधि-व्याधि से रहित हो, वे सिद्ध भगवान हैं, उनकी गति को सिद्ध गति कहते हैं। **(गो.जी. १५२)**

प्रश्न : गति को औदयिक भाव क्यों कहा है?

उत्तर : नरक, तिर्यःा, मनुष्य और देव, ये चारों गतियाँ अपने-अपने नामकर्म के उदय से होती हैं इसलिए इन्हें औदयिक भाव कहा है। जैसे - नरकगति नामकर्म के उदय से नारक भाव होता है। **(रा.वा. ६/१)**

कर्मविवक्षा (धवल. ५)

क्र.	गति	कर्म	गुणस्थान	भाव	
१.	नरकगति	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादनसम्य.	पारिणामिक	दर्शनमोह की अपेक्षा नहीं होने से
			सम्यग्मिथ्यादृष्टि	क्षायोपशमिक	
			अविरतसम्यग्दृष्टि	औप.क्षा.क्षायो.	
२.	तिर्यःागति	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	मिथ्यात्व के उदय से होने के कारण
			सासादनसम्य.	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्यादृष्टि	क्षायोपशमिक	
			अविरतसम्य	औप.क्षा. क्षायो.	भोगभूमि की अपेक्षा क्षायिक भाव है।
			संयमासंयम.	क्षायोपशमिक	
३.	मनुष्यगति	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादनसम्य.	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्या.	क्षायोपशमिक	
			अविरतसम्य.	औप.क्षा.क्षायो.	
			संयमासंयम	क्षायोपशमिक	
			प्रमत्त-अप्रमत्त	क्षायोपशमिक	
			अपूर्व-अनिवृ.	औप.क्षा.	
			सूक्ष्मसा.	औप.क्षा.	
			उपशान्त कषायवीत.	औपशमिक	
			क्षीणकषायवीत.	क्षायिक	
			सयोग केवली.	क्षायिक	
			अयोगकेवली.	क्षायिक	
४.	देवगति	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादनसम्य.	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्या.	क्षायोपशमिक	
			अविरतसम्य.	औप.क्षा.क्षायो.	निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में औपशमिक भाव भी है।
५.	सिद्धगति	क्षय	-	क्षायिक	

प्रश्न : क्या उपर्युक्त तालिका में नरकादि गतियों के गुणस्थानों में भाव बताये गये हैं?

उत्तर : नहीं, उपर्युक्त तालिका में नरकादि गतियों के गुणस्थानों में भाव नहीं बताये गये हैं अपितु नरकगति आदि कौनसा भाव है एवं उनमें होने वाले गुणस्थान किस-किस भाव रूप से उत्पन्न हुए हैं अर्थात् किस कर्म के उदय से उपशम आदि के निमित्त से ये गुणस्थान उत्पन्न हुए हैं इनका उल्लेख किया गया है।

नोट - यहाँ पहले से चौथे गुणस्थान तक दर्शनमोह की अपेक्षा तथा आगे के गुणस्थानों में चारित्रमोह की अपेक्षा भाव कहे गये हैं।

प्रश्न : कितनी गतियों का चौथा गुणस्थान औपशमिक, क्षायिक एवं क्षायोपशमिक तीनों भाव रूप है?

उत्तर : चारों गतियों का चौथा गुणस्थान औपशमिक आदि तीनों भाव रूप हो सकता है।

औपशमिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व सभी गतियों में उत्पन्न हो सकता है तथा बद्धायुष्क कृतकृत्य वेदक या क्षायिक सम्यग्दृष्टि चारों गतियों में उत्पन्न हो सकता है इसलिए वहाँ चौथा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप बन जाता है।

प्रश्न : कौनसी गति की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था का चौथा गुणस्थान उपशम भाव रूप भी होता है?

उत्तर : मात्र देवगति की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था का चौथा गुणस्थान उपशम भाव रूप भी होता है, क्योंकि प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ तो मरण ही नहीं होता है, लेकिन द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में मरण होता है। वह जीव मरकर वैमानिक देवों में ही उत्पन्न होता है। इसलिए मनुष्य आदि गतियों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था का चौथा गुणस्थान औपशमिक भाव रूप नहीं होता है। **(आ.सा.४ टी.)**

नोट - मनुष्यगति को छोड़कर अन्य किसी भी गति में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व नहीं होता है, क्योंकि यह श्रेणी सम्मुख मुनिराजों के ही होता है। **(ध.२/५६९-७० के विशेषार्थ से)**

प्रश्न : मनुष्यगति में कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होते हैं?

उत्तर : मनुष्यगति में चार गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होते हैं -

चौथा, आठवाँ, नवाँ, दसवाँ।

इनमें से तीन गुणस्थान उपशम भाव रूप भी हैं, क्योंकि यहाँ चारित्र मोह का उपशम भी पाया जाता है और चौथा गुणस्थान औपशमिक एवं क्षायोपशमिक भाव रूप भी होता है।

प्रश्न : किन देवों का चौथा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप नहीं होता है?

उत्तर : भवनत्रिक, सभी देवांगनाओं तथा किल्विषिक आदि हीन देवों का चौथा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप नहीं होता है, क्योंकि क्षायिक सम्यग्दृष्टि भवनत्रिक आदि देव दुर्गति में उत्पन्न नहीं होते हैं तथा वहाँ जाने के बाद क्षायिक सम्यक्त्व उत्पन्न भी नहीं कर सकते हैं, क्योंकि क्षायिक सम्यक्त्व कर्मभूमिया मनुष्यों......को ही उत्पन्न होता है।

प्रश्न : क्या सभी तिर्य:ोों का चौथा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होता है?

उत्तर : नहीं, केवल भोगभूमिया तिर्य:ोों का चौथा गुणस्थान ही क्षायिक भाव (सम्यक्त्व) रूप हो सकता है। **(गो.क.जी.)**

मात्र उत्तम मध्यम जघन्य भोगभूमियों में उत्पन्न होने वाले कृतकृत्य वेदक अथवा क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्य:ोों का चौथा गुणस्थान ही क्षायिक भाव रूप हो सकता है और किसी का नहीं, क्योंकि बद्धायुष्क (जिसने तिर्य:ा आयु को बाँधा है) क्षायिक सम्यग्दृष्टि या कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि मनुष्य भोगभूमि में ही जाते हैं इसलिए कर्मभूमिया तिर्यञ्चों का चौथा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप नहीं होता है।

प्रश्न : क्या मनुष्यों में भी इसी प्रकार जानना चाहिए?

उत्तर : नहीं, मनुष्यों में ऐसा नहीं है, क्योंकि कर्मभूमिया मनुष्य ही क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त करते हैं और क्षायिक सम्यग्दृष्टि देव-नारकी मरकर कर्मभूमिया मनुष्य ही बनते हैं, इसलिए इनके कर्मभूमि में भी चौथा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप बन जाता है। दूसरे बद्धायुष्क (जिसने मनुष्य आयु को बाँध लिया है) क्षायिक सम्यग्दृष्टि या कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि मनुष्य भोगभूमि में ही जाते हैं इसलिए इनके भोगभूमि में भी चौथा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप बन जाता है।

विशेष

चौबीस स्थानों में भावों की प्ररूपणा करने के पहले प्रत्येक स्थान के उत्तर भेदों में कर्म विवक्षा बताई गई है। जैसे-गति मार्गणा के चारों भेद किस कर्म के उपशम, क्षय, क्षयोपशम या उदय से होते हैं। उसके बाद प्रत्येक स्थान के उत्तर भेदों में स्थान बताये गये हैं। जैसे गति मार्गणा में चार गति रूप स्थान, तीन गति रूप स्थान, आदि। तत्पश्चात् इन स्थानों में भाव कहे गये हैं। जैसे-दो गति रूप स्थान में एक भाव है - संयमासंयम। उसके बाद भावों में स्थान लगाये गये हैं। जैसे-औपशमिक सम्यक्त्व में ४ गति रूप स्थान, दो गति रूप स्थान, एक गति रूप स्थान। इनमें चार गति रूप स्थान चौथे गुणस्थान की अपेक्षा, दो गति रूप स्थान पंचम गुणस्थान की अपेक्षा तथा एक गति रूप स्थान छठे गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान की अपेक्षा होता है।

यहाँ गति स्थानों में भावों का विभाजन करते समय एक गति रूप स्थान में जो भाव हैं वे किसी दूसरे गतिस्थान में नहीं हैं। जैसे-चार गति रूप स्थान में औपशमिक सम्यक्त्व। यह भाव चार गति रूप स्थान को छोड़कर शेष किसी भी स्थान में नहीं पाया जाता है और भावों में गति स्थानों को बताते समय एक ही भाव में एक, दो, तीन स्थान भी कहे गये हैं। जैसे-क्षायिक सम्यक्त्व में चार गति रूप स्थान **विशेष -** यदि इन्हें मार्गणाओं के उत्तर भेदों में या चौबीस स्थानों में लगाया जावे तो और भी अनेक विकल्प बन सकते हैं। यह चिन्तन एवं ध्यान का विषय है। यहाँ केवल गति मार्गणा एवं गुणस्थानोंको मुख्य बनाकर ही कथन किया गया है।कहीं-कहीं अपवाद रूप में मार्गणाओं के उत्तर भेदों की अपेक्षा भी कथन किया गया है। उसे यथायोग्य जानना चाहिए।

स्थान-विवेचन

प्रश्न : स्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : भाव की उत्पत्ति के कारण को स्थान कहते हैं। कहा भी है - गति, लिङ्ग, कषाय, मिथ्यादर्शन असिद्धत्व, अज्ञान, लेश्या, असंयम ये औदयिक भाव के आठ स्थान होते हैं। गति चार प्रकार की है, लिङ्ग तीन प्रकार का है, ये सभी इन स्थानों के विकल्प कहलाते हैं। **(ध.५/१८९)** जिस संख्या में अथवा जिस अवस्था विशेष में प्रकृतियाँ पाई जाती हैं उस स्थान कहते हैं। **(ध. ६/७९)**

प्रश्न : गति मार्गणा के कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : गति मार्गणा के चार स्थान होते हैं -

(१) एक गति रूप स्थान (२) दो गति रूप स्थान (३) तीन गति रूप स्थान (४) चार गति रूप स्थान

प्रश्न : इन स्थानों में किस-किस गति का ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में गतियाँ -

४ गति रूप स्थान - नरकगति, तिर्यःागति, मनुष्यगति, देवगति।

३ गति रूप स्थान - नरकगति, तिर्यःागति, मनुष्यगति, **अथवा -** तिर्यःागति, मनुष्यगति, देवगति।

२ गति रूप स्थान - तिर्यःागति, मनुष्यगति।

१ गति रूप स्थान - नरकगति या तिर्यःागति या मनुष्यगति या देवगति अथवा सिद्धगति।

प्रश्न : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं ?

उत्तर : ४ गति रूप स्थान के - औपशमिक सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि आदि

३ गति रूप स्थान के - तीन लिङ्ग वाले, तीन शुभ लेश्या वाले आदि

२ गति रूप स्थान के - पंचम गुणस्थानवर्ती आदि

१ गति रूप स्थान के - नरक आदि (स्वकीय) गतियों के जीव

सिद्धगति रूप स्थान के - सिद्ध भगवान

प्रश्न : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं ?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

- चार गति रूप स्थान में ३१ भाव -

  औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन ५ लब्धि १ सम्य.

  औदयिक के ११ - ४ कषाय १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ अशुभलेश्या

  पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

- तीन गति रूप स्थान में ६ भाव -

  औदयिक के - ३ लिङ्ग ३ शुभ लेश्या

- दो गति रूप स्थान में १ भाव -

  संयमासंयम

- एक गति रूप स्थान में १५ भाव -

  औपशमिक १ - चारित्र

  क्षायिक के ८ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य चारित्र

  क्षायोपशमिक के २ - मनःपर्ययज्ञान चारित्र

  औदयिक के ४ - नरकगति तिर्यःगति मनुष्यगति देवगति

  सिद्ध गति में ० अर्थात् ऐसा कोई भाव नहीं है जो मात्र सिद्ध गति में पाया जाता हो।
  (ध.२ के मार्गणाओं में उत्तरभेद के आधार से)

प्रश्न : किस स्थान में किस भाव का मात्र एक उत्तर भेद पाया जाता है?

उत्तर : चार गति रूप स्थान में - औपशमिक एवं क्षायिक भाव का १-१ उत्तर भेद - सम्यक्त्व

दो गति रूप स्थान में - क्षायोपशमिक भाव का १ - संयमासंयम

एक गति रूप स्थान में - औपशमिकभाव का १ - चारित्र

प्रश्न : कितने स्थानों में क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : तीन स्थानों में क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

- चार गति रूप स्थान में - १५ भाव
- दो गति रूप स्थान में - १ (संयमासंयम)
- एकगति रूप स्थान में - २ (मन:पर्ययज्ञान, चारित्र)

प्रश्न : कितने स्थानों में क्षायिक भाव के उत्तर भेद नहीं होते हैं?

उत्तर : दो स्थानों में क्षायिक भाव के उत्तर भेद नहीं होते हैं -

(१) तीन गति रूप स्थान (२) दो गति रूप स्थान

प्रश्न : कितने स्थानों में केवल एक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं ?

उत्तर : दो स्थानों में केवल एक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

- तीन गति रूप स्थान में - औदयिक के।
- दो गति रूप स्थान में - क्षायोपशमिक के।

प्रश्न : कितने स्थानों में पाँचों भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : मात्र एक स्थान में पाँचों भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

चारगति रूप स्थान

इसमें औपशमिक का १, क्षायिक का १, क्षायोपशमिक के १५, औदयिक के ११ एवं पारिणामिक के ३ उत्तर भेद पाये जाते हैं।

प्रश्न : एक गति रूप स्थान में पाये जाने वाले भावों में से कितने भाव वाले तद्भव मोक्षगामी होते हैं?

उत्तर : एक गति रूप स्थान में पाये जाने वाले भावों में से ८ भाव वाले तद्भव मोक्षगामी होते हैं- क्षायिक ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य एवं चारित्र।

नोट - क्षायोपशमिक भावों में से - मन:पर्ययज्ञानी (विपुलमति), सर्वावधिज्ञानी-परमावधिज्ञानी, उत्कृष्ट देशावधिज्ञानी आदि भी तद्‌भव मोक्षगामी होते हैं लेकिन ये कोई भाव नहीं हैं इसलिए इनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न : तीन गति रूप स्थान में भावों की विवेचना किस प्रकार करनी चाहिए?

उत्तर : तीन गति रूप स्थान में -

- तिर्यःागति, मनुष्यगति और देवगति में - स्त्री एवं पुरुष लिङ्ग
- नरकगति, तिर्यःागति और मनुष्यगति में - नपुंसक लिङ्ग
- अर्थात् - तीनों ही लिङ्ग तीन-तीन गतियों में ही होते हैं -

तिर्यःागति, मनुष्यगति एवं देवगति - ३ शुभ लेश्या

नोट - यद्यपि तिर्यःादि तीन गतियों में छहों लेश्याएँ होती हैं लेकिन तीन शुभ लेश्याएँ तीन गतियों में ही होती हैं।

प्रश्न : किस गति रूप स्थान में मात्र एक गुणस्थान में पाये जाने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : • दो गति रूप स्थान का एक भाव-संयमासंयम-पंचम गुणस्थान,

• चार गति रूप स्थान के दो भाव - मिथ्यादर्शन - मिथ्यात्व गुणस्थान

अभव्यत्व - मिथ्यात्व गुणस्थान

प्रश्न : किस स्थान के किस भाव में दो गुणस्थान ही होते हैं?

उत्तर : चार गति रूप स्थान के ३ भावों में -

कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान में-पहला, दूसरा।

- एक गति रूप स्थान के ८ भावों में -

क्षायिक भाव के ७ - ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य-तेरहवाँ चौदहवाँ

क्षायोपशमिक का १ - चारित्र - छठा सातवाँ

भावों में गतिस्थान

क्र.	भाव	स्थान संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	३	४ गतिरूप २ गतिरूप १ गतिरूप	
	चारित्र	१	१ गतिरूप	मनुष्यगति रूप स्थान
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	२	४ ग. १ ग.	छठे गुण. से चौदहवें गुण. की अपेक्षा एक गति रूप स्थान होता है।
	चारित्र	१	१ गति.	
	ज्ञानादिसात	१	१ गति.	सिद्धों में भी होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	३	४ ग. २ ग. १ ग.	चौथे गुणस्थान की अपेक्षा ४ गति रूप स्थान होता है।
	मन:पर्ययज्ञान	१	१ गति.	
	३ अज्ञान	१	४ गति.	
	३ दर्शन	३	४ ग. २ ग. १ ग.	
	५ लब्धि	३	४ ग. २ ग. १ ग.	
	सम्यक्त्व	३	४ ग. २ ग. १ ग.	
	चारित्र	१	१ गति.	
	संयमासंयम	१	२ गति	मनुष्य एवं तिर्यःागतिरूप
४.	**औदयिक**			
	४ गति	१	स्वकीय गति रूप	
	४ कषाय	३	४ ग. २ ग. १ गति.	दो गति रूप स्थान पाँचवें गुण. की अपेक्षा होता है।
	स्त्री एवं पुरुषलिङ्ग	३	३ ग. २ ग. १ गति.	
	नपुंसकलिङ्ग	३	३ ग. २ ग. १ ग.	नरक, तिर्यःा एवं मनुष्यगति रूप स्थान होता है।
	मिथ्यादर्शन	१	४ गतिरूप	
	अज्ञान	३	४ ग. २ ग. १ ग.	
	असंयत	१	४ गतिरूप	
	असिद्धत्व	३	४ ग. २ ग. १ ग.	
	३ अशुभ लेश्या	१	४ गति.	
	२ शुभ लेश्या	३	३ ग. २ ग. १ ग.	
	शुक्ल लेश्या	३	३ ग. २ ग. १ ग.	१ गति रूप स्थान छठे गुण. से तेरहवें गुण. तक होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	३	४ ग. २ ग. २ ग.	सिद्धगति रूप स्थान भी होता है।
	भव्यत्व	३	४ ग. २ ग. १ ग.	
	अभव्यत्व	१	४ गतिरूप	केवल पहले गुणस्थान में ही होता है।

प्रश्न : कितने भावों में चार गति रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : २२ भावों में चार गति रूप स्थान भी होता है -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के ६ - ४ क. १ अज्ञा. १ असि.
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में एक गति रूप स्थान सभी गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : चार भावों में एक गति रूप स्थान सभी गुणस्थानों में होता है -

- औदयिक भाव के २ - मनुष्यगति और असिद्धत्व
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : संयमासंयम में कितने गतिस्थान होते हैं?

उत्तर : संयमासंयम में सामान्य से एक गति स्थान होता है -

- २ गति रूप - यह स्थान औपशमिक एवं क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि मनुष्य तिर्यःांों के होता है।

इसमें एक गति रूप भी हो सकता है -

(१) सम्मूर्च्छन संज्ञी पःोन्द्रिय की अपेक्षा (सम्मूर्च्छन मनुष्यों के संयमासंयम नहीं होने से केवल तिर्यःागति ही कही गई है।)

(२) क्षायिक सम्यग्दृष्टि कर्मभूमिया मनुष्यों की अपेक्षा (क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्यःांों के संयमासंयम नहीं होने से केवल मनुष्यगति ही कही गई है।)

प्रश्न : क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में दो गति रूप स्थान क्यों नहीं बनता है?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव के साथ संयमासंयम रूप भाव तिर्यःागति में नहीं पाया जाता है, क्योंकि तिर्यःागति में क्षायिक सम्यक्त्व भोगभूमिया जीवों के ही होता है, वहाँ संयमासंयम गुणस्थान नहीं होता है इसलिए क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में दो गति रूप स्थान नहीं होता है।

प्रश्न : कितने भावों में गति मार्गणा का मात्र एक स्थान पाया जाता है?

उत्तर : २१ भावों में गति मार्गणा का मात्र एक स्थान पाया जाता है -

- औपशमिक का १ - चारित्र, इसमें एक (मनुष्य) गति रूप स्थान।
- क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना, इसमें एक (मनुष्य) गति रूप स्थान।
- क्षायोपशमिक के ६ - ३ अज्ञान, इसमें ४ गति रूप स्थान।

  मन:पर्यय एवं चारित्र, इसमें से एक (मनुष्य) गति रूप स्थान।

  संयमासंयम, इसमें दो गतिरूप स्थान
- औदयिक के ५ - मिथ्यादर्शन असंयत और ३ अशुभ लेश्या, इनमें चार गति रूप स्थान
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व, चारगति रूप स्थान

प्रश्न : कितने भावों के उत्तरभेद तीन स्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : दो भावों के उत्तरभेद तीन स्थानों में पाये जाते हैं -

(१) क्षायोपशमिक (२) औदयिक

क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद : चारगति रूप, दो गति रूप तथा एक गतिरूप स्थान में।

औदयिक भाव के उत्तर भेद : चारगति रूप, तीन गति रूप तथा एक गति रूप स्थान में।

प्रश्न : कितने भाव के सभी उत्तर भेद मात्र एक स्थान में पाये जाते हैं?

उत्तर : मात्र एक भाव के सभी उत्तर भेद एक स्थान में पाये जाते हैं -

पारिणामिक भाव के - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व, ये चार गति रूप स्थान में पाये जाते हैं।

भावों में गति

क्र.	भाव	संख्या	गति	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	चारित्र	१	मनुष्यगति	उपशम श्रेणी में ही होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	४	नर. तिर्य. मनु. देव	
	चारित्र	१	मनुष्यगति	
	ज्ञानादि सात	१	मनुष्यगति	भगवान के ही होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	मति-श्रुत-अवधिज्ञान	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	मन:पर्ययज्ञान	१	मनुष्यगति	ऋद्धिधारी मुनिराज के ही होता है।
	३ अज्ञान	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	३ दर्शन	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	५ लब्धि	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	सम्यक्त्व	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	चारित्र	१	मनुष्यगति	मुनिराज के ही होते हैं।
	संयमासंयम	२	तिर्य. मनुष्य	
४.	**औदयिक**			
	४ गति	१	स्वकीय	नरकगति में नरकगति......
	४ कषाय	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	स्त्री. पुरु.लिङ्ग	३	तिर्य. मनु. देव.	
	नपुंसकलिङ्ग	३	नर. तिर्य. मनु.	
	मिथ्यादर्शनादि चार	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	३ अशुभ लेश्या	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	३ शुभ लेश्या	३	तिर्य. मनु. देव.	नरकगति में शुभ लेश्या नहीं है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	भव्यत्व	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	
	अभव्यत्व	४	नर. तिर्य. मनु. देव.	

प्रश्न : क्षायोपशमिक भाव के कितने भेदों में मात्र एक गति होती है -

उत्तर : क्षायोपशमिक भाव के दो भेदों में मात्र एक गति होती है -

- मन:पर्यय ज्ञान तथा चारित्र

इन दोनों में केवल एक मनुष्यगति ही होती है, क्योंकि ये दोनों भाव मुनिराज के ही होते हैं।

प्रश्न : कितने भावों में तिर्यःागति है, लेकिन नरकगति नहीं है?

उत्तर : सात भावों में तिर्यःागति है, लेकिन नरकगति नहीं है -

- क्षायोपशमिक भाव का १ - संयमासंयम।
- औदयिक के ६ - तिर्यःागति, स्त्रीलिङ्ग, पुरुषलिङ्ग, पीत, पद्म और शुक्ल लेश्या।

प्रश्न : कितने भावों में मनुष्यगति ही होती है -

उत्तर : १२ भावों में मनुष्यगति ही होती है -

- औपशमिक का १ - चारित्र
- क्षायिक के ८ - ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपयोग, वीर्य, चारित्र
- क्षायोपशमिक के २ - मन:पर्ययज्ञान, चारित्र
- औदयिक का १ - मनुष्यगति

प्रश्न : कितने भावों में नरकगति नहीं होती है?

उत्तर : २० भावों में नरकगति नहीं होती है -

- औपशमिक का १ - चारित्र
- क्षायिक के ८ - ज्ञानादि (सम्यक्त्व बिना)
- क्षायोपशमिक के ३ - मन:पर्ययज्ञान, चारित्र, संयमासंयम
- औदयिक के ८ - ३ गति (म.ति.दे.) २ लिङ्ग (स्त्री-पुरुष) ३ लेश्या (शुभ)

नरकगति

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	औपशमिक	१	सम्यक्त्व	
२.	क्षायिक	१	सम्यक्त्व	मात्र पहले नरक में ही होता है।
३.	क्षायोपशमिक	१५	३ ज्ञान-मति, श्रत, अवधि. ३ अज्ञान-कुमति, कुश्रुत, कुअवधि. ३ दर्शन-चक्षु, अचक्षु, अवधि. ५ लब्धि-दान लाभ भोग उपभोग वीर्य १ - सम्यक्त्व	सभी गुणस्थानों में सभी नारकियों के होती हैं।
४.	औदयिक	१३	१ गति-नरक ४ कषाय-क्रोध मान माया लोभ १ लिङ्ग - नपुंसक १ - मिथ्यात्व १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ३ लेश्या-कृष्ण, नील, कापोत	मिथ्यादृष्टि जीवों के ही मिथ्यात्व होता है। प्रथमादि नरकों में यथायोग्य लेश्या जानना चाहिए।
५.	पारिणामिक	३	जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व	

प्रश्न : नरक कितने होते हैं?

उत्तर : नरक सात होते हैं -

(१) रत्न प्रभा (२) शर्करा प्रभा (३) बालुका प्रभा (४) पंकप्रभा (५) धूम प्रभा (६) तम: प्रभा (७) महातम: प्रभा, ये सात पृथिवियाँ हैं। **(त.सू. ३/१)**

(१) घर्मा (२) वंशा (३) मेघा (४) अंजना (५) अरिष्टा (६) मघवी (७) माघवी। **(ति.प. १/१५३)**

प्रश्न : नरकगति में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : नरकगति में ३३ भाव होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन, ५ लब्धि, १ सम्य.।
- औदयिक के १३ - १ ग. ४ क. १ लि. (नपुंसक), १ मिथ्या. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ अशुभलेश्या

- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

प्रश्न : क्या सभी नरकों में ३३ भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : नहीं, किसी भी नरक में ३३ भाव नहीं पाये जाते हैं, क्योंकि किसी भी नरक में तीनों लेश्या नहीं होती।

- पहले नरक में (पूर्वोक्त भावों में से) कृष्ण और नील लेश्या नहीं होने से ३१
- दूसरे नरक में - दो (कृष्ण और नील) लेश्या एवं क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होने से ३०
- तीसरे नरक में - कृष्ण लेश्या एवं क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होने से - ३१
- चौथे नरक में - कृष्ण, कापोत लेश्या तथा क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होने से ३०
- पाँचवें नरक में - कापोत लेश्या तथा क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होने से ३१
- छठे - सातवें नरक में - नील-कापोत लेश्या तथा क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होने से ३०

प्रश्न : कितने नरकों में केवल एक लेश्या रूप भाव ही रहता है?

उत्तर : पाँच नरकों में केवल एक लेश्या रूप भाव ही रहता है -

- पहले दूसरे नरक में - कापोत लेश्या रूप
- चौथे नरक में - नील लेश्या रूप
- छठे - सातवें नरक में - कृष्ण लेश्या रूप

प्रश्न : कितने नरकों में ३१-३१ भाव होते हैं?

उत्तर : तीन नरकों में ३१-३१ भाव होते हैं, पहले, तीसरे, पाँचवें में।

पहले नरक में - औपश का १, क्षा. १, क्षायो. १५, औद. ११, पारि. ३।

तीसरे नरक में - औपश. का १, क्षायो. १५, औद. १२, पारि. ३।

पाँचवें नरक में - औप. का १, क्षायो. १५, औद. १२ पारि. ३।

प्रश्न : कितने नरकों में पाँचों भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : मात्र पहले नरक में पाँचों भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं, क्योंकि यहाँ क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव भी होता है।

प्रश्न : नरकगति में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : नरकगति में ४ गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन सम्यक्त्व (३) सम्यग्मिथ्यात्व (४) अविरत सम्यक्त्व **(ध.२/४५३)**

प्रश्न : इन गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : इन गुणस्थानों में भाव -

- **मिथ्यात्व गुणस्थान में - २६, क्षायोपशमिक के १०-** ३ अज्ञा. २ दर्श. ५ लब्धि
- **औदयिक** के १३-१ ग. ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या
- **पारिणामिक** के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।
- **सासादन सम्यक्त्व** में - उपर्युक्त भावों में से मिथ्यात्व एवं अभव्यत्व नहीं होने से २४।
- **सम्यग्मिथ्यात्व** में - सासादन सम्यक्त्व के समान ही २४ भाव हैं।
- **अविरत सम्यक्त्व में - २८ औपशमिक** का - १ - सम्यक्त्व,

  क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

  औदयिक के १२-१ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले.

  पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : कितने भाव नारकियों के चारों गुणस्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : २१ भाव नारकियों के चारों गुणस्थानों में पाये जाते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के ७ - २ दर्शन (चक्षु. अचक्षु.) ५ लब्धि।
- औदयिक के १२ - १ गति, ४ कषाय १ लिङ्ग, १ अज्ञान १ असंयत १ असि. ३ ले.।
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

प्रश्न : कौन-कौन से भाव मात्र एक गुणस्थान में पाये जाते हैं?

उत्तर : नौ भाव मात्र एक गुणस्थान में पाये जाते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञान, १ दर्शन (अवधि), १ सम्य.।
- **ये सात भाव केवल चौथे गुणस्थान में पाये जाते हैं।**
- औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

  ये दो भाव केवल पहले गुणस्थान में पाये जाते हैं।

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि नारकी के कितने भाव नहीं हो सकते हैं?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि नारकी के ५ भाव नहीं हो सकते हैं -

- ३ अज्ञान - कुमति, कुश्रुत, कुअवधि
- १ - मिथ्यादर्शन
- १ - अभव्यत्व

प्रश्न : नारकियों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : नारकियों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३१ भाव पाये जाते हैं -

- क्षायिक भाव १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञा. २ अज्ञान (कुमति. कुश्रुत.) ३ दर्शन ५ लब्धि १ सम्यक्त्व (कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा) **(ध.२/४५३)**
- औदयिक के १३ - १ ग. ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले.।
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

प्रश्न : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में २ गुणस्थान होते हैं -

पहला एवं चौथा **(ध.२/४५४)**

इनमें भाव - **पहले गुणस्थान में - २५ क्षायोपशमिक** के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.,

औदयिक के १३ - १ ग. ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले.,

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

चौथे गुणस्थान में - २५ क्षायिक का १ सम्यक्त्व,

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १० - १ ग. ४ क. १. लि., १ अज्ञान १ असंयत, असिद्धत्व, १ ले (कापोत)

पारिणमिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

नोट : चौथा गुणस्थान मात्र पहले नरक की निर्वृत्य पर्याप्त अवस्था में ही होता है। **(ध. २/ ४६१)**

तिर्यञ्च गति

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	औपशमिक	१	सम्यक्त्व	
२.	क्षायिक	१	सम्यक्त्व	भोगभूमि की अपेक्षा होता है।
३.	क्षायोपशमिक	१६	३ ज्ञान. मति श्रुत अवधि	
			३ अज्ञान. कुमति कुश्रुत कुअवधि	
			३ दर्शन. चक्षु. अचक्षु. अवधि	
			५ लब्धि-दान लाभ भोग उप. वीर्य	
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - संयमासंयम	कर्मभूमिया प:ोन्द्रिय के ही होता है।
४.	औदयिक	१८	१ गति - तिर्य:ा	
			४ कषाय-क्रोध मान. माया. लोभ	
			३ लिङ्ग-स्त्री. पुरु. नपुं.	सम्मूर्च्छन जीवों के नपुंसकलिङ्ग ही होता है।
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			६ - लेश्या कृ.नी.का.पी.प.शु.	अशुभ लेश्याएँ चौथे गुणस्थान तक ही होती हैं।
५.	पारिणामिक	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	मिथ्यादृष्टि ही होते हैं।

प्रश्न : तिर्य:ा किसे कहते हैं?

उत्तर : जो मन वचन काय की कुटिलता को प्राप्त हैं, जिनकी आहारादि संज्ञाएँ सुव्यक्त हैं, जो **निकृष्ट** अज्ञानी हैं, जिनके अत्यधिक पाप की बहुलता पाई जाती है, उन्हें तिर्य:ा कहते हैं। **(ध.१/२०३)**

प्रश्न : तिर्य:ा कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : तिर्य:ा दो प्रकार के होते हैं -

- (१) गर्भज तिर्य:ा (२) सम्मूर्च्छनज तिर्य:ा
- तिर्य:ा गति के जीव पृथ्वी आदि एकेन्द्रिय के भेद से, शंबूक जूँआ, मच्छर आदि विकलेन्द्रिय के भेद से, जलचर थलचर नभश्चर द्विपद चतुष्पद आदि पंचेन्द्रिय के भेद से बहुत प्रकार के होते हैं। **(पं.का.ता. ११८)**

- तिर्य:ा सामान्य, पंचेन्द्रिय, पर्याप्त, योनिनी और लब्ध्यपर्याप्तक के भेद से पाँच प्रकार के होते हैं। **(गो.क. १०९)**

प्रश्न : तिर्य:ागति में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : तिर्य:ागति में ३९ भाव होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व **(ध.२/४८२-८३)**
- क्षायोपशमिक के १६ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संय.
- औदयिक के १८ - १ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

नोट : थलचर, नभचर तथा पर्याप्त तिर्य:ा के भी इसी प्रकार जानना चाहिए।

प्रश्न : क्या ऐसे कोई प:ोन्द्रिय तिर्य:ा हैं जिनके औपशमिक भाव नहीं होता है?

उत्तर : हाँ, सम्मूर्च्छन प:ोन्द्रिय तिर्य:ाों के औपशमिक भाव नहीं होता है, क्योंकि उपशम सम्यक्त्व गर्भजों के ही उत्पन्न होता है। **(ल.सा. २)**

तिर्य:ाों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी औपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता है।

प्रश्न : क्या सभी तिर्य:ाों के क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव होता है ?

उत्तर : नहीं, केवल भोगभूमिया तिर्य:ाों के ही क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव होता है, क्योंकि बद्धायुष्क क्षायिक सम्यग्दृष्टि या कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि मनुष्य मरकर यदि तिर्य:ागति में जाता है तो कर्मभूमि में उत्पन्न नहीं होता है और तिर्य:ाों के क्षायिक सम्यक्त्व उत्पन्न नहीं होता है। इसलिए कर्मभूमिया तिर्य:ाों में क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव नहीं होता है।

प्रश्न : क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्य:ाों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्य:ा के २७ भाव होते हैं -

- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञान ३ दर्शन ५ लब्धि
- औदयिक के १३ - १ ग. ४ क. १ लि. (पुरुष) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ लेश्या (का.पी.प.शु.)

  कापोत लेश्या निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था की अपेक्षा जानना चाहिए।
  क्षायिक सम्यग्दृष्टि भोगभूमि में ही होते हैं इसलिए कृष्ण नील लेश्याएँ नहीं हैं।
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

प्रश्न : तिर्य:ों के किस-किस सम्यक्त्व रूप भाव में संयमासंयम रूप भाव भी पाया जाता है?

उत्तर : तिर्य:ों के दो सम्यक्त्व रूप भावों में संयमासंयम रूप भाव भी पाया जाता है -

- उपशम सम्यक्त्व में - गर्भज संज्ञी प:ेन्द्रिय तिर्य:ों के।
- क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में - गर्भज और सम्मूर्च्छन संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्य:ों के।

  नोट - जलचर, थलचर और नभचर तीनों प्रकार के गर्भज जीवों में दोनों प्रकार के सम्यक्त्व के साथ संयमासंयम रूप भाव हो सकता है।
- भोगभूमि में संयमासंयम नहीं होता है।

प्रश्न : जिन तिर्य:ों के असंयम भाव बना हुआ है उनके कितने भाव होते हैं?

उत्तर : जिन तिर्य:ों के असंयम भाव बना हुआ है उनके ३८ भाव होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के १८ - नरकगति, मनुष्यगति और देवगति बिना
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

असंयत भाव पहले से चौथे गुणस्थान तक होता है।

प्रश्न : क्या सभी तिर्य:ों में तीनों पारिणामिक भाव होते हैं?

उत्तर : हाँ, सभी तिर्य:ों के तीनों पारिणामिक भाव होते हैं।

भोगभूमि जैसे सुखमय स्थान में भी अभव्यत्व भाव पाया जाता है और एकेन्द्रिय जैसे पापात्मक जीवों के भी भव्यत्व भाव पाया जाता है। यहाँ तक कि नित्य निगोद में स्थित, पापों से कलंकित जीवों के भी भव्यत्व भाव होता है।

प्रश्न : तिर्य:गति में लेश्या रूप भावों की विवेचना किस प्रकार करनी चाहिए?

उत्तर : तिर्य:गति में लेश्या रूप भावों की विवेचना -

(१) कर्मभूमिया मिथ्यादृष्टि आदि प:ेन्द्रिय तिर्य:ों के छह लेश्या **(ध.२/४८५)**

(२) संयतासंयत तिर्य:ों के ३ शुभ लेश्या **(ध.२/४८४)**

(३) एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय पर्यन्त तिर्य:ों के ३ अशुभ लेश्या **(ध.२/इन्द्रिय मार्गणा)**

(४) असंज्ञी पःोन्द्रिय तिर्यःों के - ४ लेश्या (कृ.नी.का.पीत) **(गो.जी.)**

(५) सम्मूर्च्छन तिर्यःा पःोन्द्रिय के छहों लेश्या

(६) भोगभूमिया तिर्यञ्चों के पर्याप्तावस्था में - ३ शुभ लेश्या

इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में - ३ अशुभ लेश्या

- सम्यग्दृष्टि जीवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में - कापोत लेश्या **(ध.२/४९३)**

प्रश्न : क्या ऐसे कोई औदयिक भाव हैं जो कर्मभूमिया तिर्यःों के होते हैं लेकिन भोगभूमिया तिर्यःों के नहीं होते हैं?

उत्तर : हाँ, एक नपुंसक लिङ्ग रूप औदयिक भाव ऐसा है जो कर्मभूमिया तिर्यःों के होता है लेकिन भोगभूमिया तिर्यःों के नहीं होता है।

भोगभूमि में पर्याप्त अवस्था में शुभ लेश्या रूप भाव ही होते हैं। इस अपेक्षा से उनके अशुभ लेश्या रूप भाव भी नहीं होते हैं।

प्रश्न : भोगभूमिया एवं कर्मभूमिया तिर्यःों के भावों में क्या अन्तर है?

उत्तर : भोगभूमिया एवं कर्मभूमिया तिर्यःों के भावों में अन्तर -

भोगभूमिया तिर्यःा	**कर्मभूमिया तिर्यंच**
क्षायिक सम्यक्त्व है	नहीं है।
संयमासंयम नहीं होता है	होता है।
नपुंसक लिङ्ग नहीं है	होता है।
पर्याप्तावस्था में ३ शुभ लेश्या	छहों लेश्या।
निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३ ज्ञान, अवधिदर्शन, तथा दो सम्यक्त्व रूप भाव हैं।	नहीं हैं।

प्रश्न : तिर्यःागति में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : तिर्यःा गति में पाँच गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन सम्यक्त्व (३) सम्यग्मिथ्यात्व (४) अविरतसम्यक्त्व (५) संयमासंयम **(ध.२/४७४)**

इन गुणस्थानों में भाव -

- **मिथ्यात्व गुणस्थान में ३१- क्षायोपशमिक के १०** - ३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १८ - तीन गति बिना

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

- सासादन एवं सम्यग्मिथ्यात्व में उपर्युक्त भावों में से मिथ्यात्व एवं अभव्यत्व कम कर देने पर २९-२९ भाव होते हैं। सम्यग्मिथ्यात्व में ३ अज्ञान के स्थान पर मिश्र ज्ञान जानना चाहिए।
- अविरतसम्यक्त्व में ३३ -

  औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञान ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

  औदयिक के १७ - १ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

  पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व
- संयमासंयम में २९ - औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संयमा.

  औदयिक के १३ - १ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

  पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न : तिर्यःाों में सबसे ज्यादा क्षायोपशमिक भाव किस गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : तिर्यःाों में सबसे ज्यादा क्षायोपशमिक भाव पाँचवें गुणस्थान में होते हैं -

इसमें ३ ज्ञान, ३ दर्शन, ५ लब्धि, १ सम्य. १ संयमासंयम। ये १३ भाव होते हैं।

प्रश्न : तिर्यःागति में सबसे ज्यादा भाव किस गुणस्थान में होते हैं ?

उत्तर : तिर्यःागति में सबसे ज्यादा भाव चौथे गुणस्थान में होते हैं -

यहाँ तिर्यःागति में होने वाले ३९ भावों में से ३३ भाव होते हैं-

३ अज्ञान, संयमासंयम, मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व रूप छह भाव नहीं होते हैं।

प्रश्न : तिर्यःागति की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव होते हैं ?

उत्तर : तिर्यःागति की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ३३ भाव होते हैं-

- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व **(ध. २/४९३)**
- क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञान २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. (कृतकृत्यवेदक की अवस्था)
- औदयिक के १५ - १ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या (अशुभ)
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

प्रश्न : इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ३ गुणस्थान होते हैं -

पहला, दूसरा, चौथा। चौथा गुणस्थान भोगभूमि की अपेक्षा जानना चाहिए। **(ध.२/४७६)**

पहले गुणस्थान में २७ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १५ - १ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या (अशुभ)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

दूसरे गुणस्थान में मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव नहीं होने से २५ भाव होते हैं।

चौथे गुणस्थान में - नारकियों के समान इनके भी २५ भाव होते हैं मात्र नरकगति के स्थान पर तिर्यःागति लेना चाहिए।

प्रश्न : तिर्यःागति में निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने सम्यक्त्व रूप भाव होते हैं?

उत्तर : तिर्यःागति में निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में सम्यक्त्व रूप दो भाव होते हैं -

क्षायिक सम्यक्त्व और कृतकृत्य वेदक (क्षायोपशमिक सम्यक्त्व)

ये दोनों सम्यक्त्व रूप भाव भोगभूमिया तिर्यःाों की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यःा एवं सम्मूर्च्छन तिर्यःाों के भावों में क्या अन्तर है ?

उत्तर :

लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यःा	**अन्तर**	**सम्मूर्च्छन तिर्यःा**
• मति-श्रुतज्ञान, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व और संयमासंयम नहीं होते हैं।		होते हैं।
• मिथ्यादर्शन एवं असंयत भाव ही होते हैं।		इनका अभाव भी होता है।
• ३ अशुभ लेश्या ही हैं।		छहों लेश्याएँ होती हैं।
• प्रथम गुणस्थान ही होता है।		आदि के पाँच गुणस्थान होते हैं।

नोट : (१) उपर्युक्त कथन सम्मूर्च्छन पर्याप्त तिर्यःाों की अपेक्षा जानना चाहिए।

(२) सम्मूर्च्छन जीवों के अवधिज्ञान और अवधिदर्शन होता है, ऐसा भी कई आचार्य मानते हैं। परन्तु यह लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यंचों के नहीं होता।

प्रश्न : तिर्यःानी (गाय, भैंस आदि) के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : तिर्यःानी के तिर्यःा गति में होने वाले भावों में से केवल एक क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव नहीं होता है अर्थात् उनके ३८ भाव होते हैं।

इनकी निर्वृत्यपर्याप्तावस्था में तिर्यःाों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में होने वाले भावों में से ३ ज्ञान, १ दर्शन (अवधि) और दो सम्यक्त्व रूप भाव नहीं होने से २७ भाव ही होते हैं अर्थात् इनके क्षायोपशमिक भाव के ९, औदयिक के १५ तथा पारिणामिक के ३ भाव होते हैं।

इनके पहले - दूसरे गुणस्थान के भाव तिर्यःाों के समान ही जानने चाहिए।

प्रश्न : मछली आदि जलचर जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : मछली आदि जलचर जीवों के ३२ भाव होते हैं–

क्षायोपशमिक के १३ – २ ज्ञान, २ अज्ञान, २ दर्श., ५ ल., १ सम्य., १ संयमा.

औदयिक के १६ – १ ग. (ति.), ४ क., १ लिंग (नपुं.), १ मि., १ अज्ञा., १ असं., १ असिद्ध, ६ लेश्या

पारिणामिक के ३ – जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

- ये भाव सम्मूर्च्छन जन्म से उत्पन्न होने वाली मछली आदि के जानना चाहिए।
- जो मछली आदि गर्भ से उत्पन्न होते हैं उनके औप.सम्य.अवधिज्ञान, विभंगज्ञान, अवधिदर्शन तथा स्त्री व पुरुष लिंग ये ६ भाव और होने से ३८ भाव होते हैं।

नोट : १. ये चाहे गर्भज हों या सम्मूर्च्छन, इनके क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है, क्योंकि भोगभूमि में जलचर जीव नहीं होते हैं। कर्मभूमि में क्षायिक सम्यग्दृष्टि उत्पन्न नहीं हो सकता है।

२. जो आचार्य सम्मूर्च्छन जीवों के अवधिज्ञान मानते हैं, उनके अवधिज्ञान, विभंगज्ञान और अवधिदर्शन भी हो जाने से ३५ भाव हो जायेंगे।

मनुष्यगति

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	औपशमिक	२	सम्यक्त्व, चारित्र	चारित्र कर्मभूमिया जीवों के ही होता है।
२.	क्षायिक	९	ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग उपभोग, वीर्य, सम्यक्त्व, चारित्र	सम्यक्त्व भोगभूमि में भी होता है।
३.	क्षायोपशमिक	१८	४ ज्ञान-मति श्रुत अवधि मन:।	
			३ अज्ञान-कुमति कुश्रुत कुअवधि.	
			३ दर्शन-चक्षु. अचक्षु. अवधि	
			५ लब्धि-दा.ला.भो.उप.वी.	बारहवें गुणस्थान तक सबके होती है।
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - चारित्र	
			१ - संयमासंयम	कर्मभूमिया मनुष्यों के ही होता है।
४.	औदयिक	१८	१ गति - मनुष्य	
			४ कषाय-क्रोध.मान. माया, लो.	
			३ लिङ्ग-स्त्री.पुरु.नपुं.	
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	बारहवें गुणस्थान तक होता है।
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	अरहंत भगवान के भी होता है।
			६ लेश्या-कृ.नी.का.पी.प.शु.	
५.	पारिणामिक	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	चौदहवें गुणस्थान तक होता है।
			अभव्यत्व	

प्रश्न : मनुष्य कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : मनुष्य **दो** प्रकार के होते हैं -

(१) आर्य (२) म्लेच्छ **(त.सू. ३:३६)**

(२) कर्मभूमिज (२) भोगभूमिज **(नि.सा. १६)**

मनुष्य **तीन** प्रकार के होते हैं -

(१) पर्याप्त (२) निर्वृत्यपर्याप्तक (३) लब्ध्यपर्याप्तक **(ति.प. २९७९)**

मनुष्य **चार** प्रकार के होते हैं -

(१) कर्मभूमिज (२) भोगभूमिज

(३) अन्तरद्वीपज (४) सम्मूर्च्छनज **(भ.आ.७८० क्षेपक)**

सामान्य मनुष्य, पर्याप्त मनुष्य, मनुष्यिनी और अपर्याप्त मनुष्य इन चार भेदों वाले हैं। **(ति.प.४/२९७०)**

प्रश्न : मनुष्यगति में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : मनुष्यगति में ५० भाव होते हैं -

औपशमिक के २, क्षायिक के ९, क्षायोपशमिक के १८, औदयिक के १८ तथा पारिणामिक के ३।

इनके मात्र नरकगति तिर्यःगति एवं देवगति रूप भाव नहीं होते हैं।

इसी प्रकार आर्यमनुष्य, कर्मभूमिया मनुष्य तथा पर्याप्तक मनुष्य के भी जानने चाहिए।

प्रश्न : भोगभूमिया मनुष्यों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : भोगभूमिया मनुष्यों के ३७ भाव होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. (मन:पर्ययबिना) ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के १७ - १ ग. ४ क. २ लि. (स्त्री.पुरु.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या।
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

नोट : इनके पर्याप्त अवस्था में ३ अशुभ लेश्या नहीं हैं अत: ३४ भाव होते हैं।

इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में उपर्युक्त भावों में से ५ भाव नहीं होते हैं -

औपशमिक सम्यक्त्व, विभंगावधिज्ञान तथा ३ शुभ लेश्या।

अत: इनके ३२ भाव ही होते हैं।

अन्तरद्वीपज मनुष्यों के उपर्युक्त भावों में से क्षायिक सम्यक्त्व, अवधिज्ञान, विभंगज्ञान, अवधिदर्शन नहीं होने से ३३ भाव होते हैं।

तथा इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३ ज्ञा. १ दर्श. १ विभंगा. ६ भाव नहीं होते हैं अत: २९ भाव ही होते हैं।

कहा भी है - कुभोगभूमिया जीवों की सभी व्यवस्था जघन्य भोगभूमि के समान है। सम्यग्दृष्टि कुभोगभूमि में नहीं जाता है। **(सि.सा.दी. १०/९५-१०१)**

नोट : अवधिज्ञान एवं अवधिदर्शन के विषय में विचार करें।

प्रश्न : सम्मूर्च्छन मनुष्यों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सम्मूर्च्छन मनुष्यों के २५ भाव होते हैं -

- क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञान २ दर्शन ५ लब्धि
- औदयिक के १३ - १ ग. ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ अशुभलेश्या
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

१. इसी प्रकार लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्यों के भी जानना चाहिए, क्योंकि सम्मूर्च्छन मनुष्य और लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्य एक ही होते हैं। इन जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था नहीं होती है।

२. म्लेच्छ मनुष्यों के स्त्री एवं पुरुष लिङ्ग तथा ३ शुभ लेश्याएँ भी होती हैं तथा नपुंसक लिङ्ग नहीं होता है इसलिए २५+५-१ = २९ भाव होते हैं।

विभंगावधिज्ञान के बारे में विचार करें।

प्रश्न : कितने भाव केवल कर्मभूमिया मनुष्यों के ही होते हैं?

उत्तर : १२ भाव केवल कर्मभूमिया मनुष्यों के ही होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य चारित्र

क्षायोपशमिक के ३ - मन:पर्ययज्ञान, चारित्र, संयमासंयम।

प्रश्न : मनुष्यगति में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : मनुष्यगति में चौदह गुणस्थान होते हैं -

- आर्य मनुष्य, पर्याप्त मनुष्य, कर्मभूमिया मनुष्यों के, ये गुणस्थान कहे गये हैं -
- म्लेच्छ मनुष्यों के - २ गुणस्थान - पहला दूसरा, दूसरा गुणस्थान निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ही होता है।
- अन्तरद्वीपज मनुष्यों के - ४ गुण. पहले से चौथा, इनकी निर्वृत्य. में पहला दूसरा गुणस्थान।
- लब्ध्यपर्याप्तक (सम्मूर्च्छन) मनुष्यों के १ गुणस्थान-पहला इनके निर्वृत्य. अवस्था नहीं होती है।
- निर्वृत्यपर्याप्तक मनुष्यों के ५ गुणस्थान

पहला, दूसरा, चौथा, छठा, तेरहवाँ।

- भोगभूमिया जीवों के ४ गुण. - पहले से चौथा

  इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ३ गुण. - पहला, दूसरा, चौथा।

  म्लेच्छ खण्ड में रहते हुए पहला, निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में पहला-दूसरा तथा वे आर्यखण्ड में आ जावें तो सात गुणस्थान हो सकते हैं।

प्रश्न : **मनुष्यों के चौदह गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?**

उत्तर : मनुष्यों के चौदह गुणस्थानों में भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में-३१
- सासादन सम्यक्त्व में-२९
- सम्यग्मिथ्यादृष्टि में-२९
- अविरतसम्यक्त्व में-३३
- संयतासंयत में-३०
- प्रमत्तविरत में-३१
- अप्रमत्तविरत में-३१
- अपूर्वकरण में-२९
- अनिवृत्तिकरण में-२९
- सूक्ष्मसाम्पराय में-२३
- उपशांत कषाय में-२१
- क्षीणकषाय में-२०
- सयोगकेवली में-१४
- अयोगकेवली में-१३

प्रश्न : **मनुष्यों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?**

उत्तर : मनुष्यों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ४५ भाव होते हैं -

- क्षायिक के - ९
- क्षायोपशमिक के - १५-३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.
- औदयिक के - १८ गति, कषाय
- पारिणामिक के - ३ जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

प्रश्न : **इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था के गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?**

उत्तर : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था के गुणस्थानों में भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में २७ - **क्षायोपशमिक के** ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ लब्धि;

  औदयिक के १५ - १ ग. ४ कषा. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ अशुभलेश्या

  पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।
- सासादन सम्यक्त्व में - उपर्युक्त भावों में से मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव कम करने पर २५ भाव होते हैं।
- चौथे गुणस्थान में - ३०

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १५-१ ग. ४ क. १ लि. (पुरु.) १अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

- प्रमत्तसंयत के - २७

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १३-३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारित्र

औदयिक के ११-१ ग. ४ क. १ लि. (पुरुष) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

- सयोगकेवली में - १४

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शनादि

औदयिक के ३ - १ ग. १ असि. १ शुक्ल लेश्या

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि मनुष्य के कितने भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि मनुष्य के ५ भाव नहीं होते हैं -

३ अज्ञान - कुमति, कुश्रुत एवं कुअवधिज्ञान

मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व

अर्थात् सम्यग्दृष्टि मनुष्यों के ४५ भाव होते हैं, क्योंकि चौथे गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक सम्यग्दृष्टि मनुष्य पाये जाते हैं।

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि मनुष्यों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि मनुष्यों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३९ भाव होते हैं -

क्षायिक भाव के ९ - केवली समुद्घात की अपेक्षा

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारित्र (छठे गुणस्थान की अपेक्षा)

औदयिक के १५ - १ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले. (अशुभ लेश्याएँ नरक से आने वालों की अपेक्षा होती हैं)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

प्रश्न : क्या मनुष्यिनी (द्रव्य मनुष्य स्त्री) के भी मनुष्यगति के समान भाव होते हैं?

उत्तर : नहीं, द्रव्य स्त्रियों के मनुष्यगति में होने वाले ५० में से ३८ भाव होते हैं -

औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १६ - मन:पर्ययज्ञान एवं चारित्र नहीं हैं

औदयिक के १८ - ३ गति नहीं हैं।

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

प्रश्न : मनुष्यिनी के कितने गुणस्थान होते हैं ?

उत्तर : मनुष्यिनी के ५ गुणस्थान होते हैं -

मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अविरतसम्यक्त्व, संयमासंयम इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में २ गुणस्थान होते हैं -

मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व। इनके भाव मनुष्यों के समान ही होते हैं।

प्रश्न : इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में २७ भाव होते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के ९-२ अज्ञान २ दर्शन ५ लब्धि
- औदयिक के १५-१ ग. ४ कषाय ३ लिङ्ग १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या (अशुभ)
- पारिणामिक के ३-जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

प्रश्न : क्या भोगभूमिया स्त्रियों के भी क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव हो सकता है?

उत्तर : नहीं, भोगभूमिया स्त्रियों के क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव नहीं हो सकता है, क्योंकि-

१. भोगभूमि में क्षायिक सम्यक्त्व का प्रतिष्ठापन नहीं होता, क्योंकि क्षायिक सम्यक्त्व का प्रतिष्ठापक कर्मभूमिया मनुष्य ही होता है।

२. कोई जीव सम्यक्त्व के साथ स्त्री पर्याय में उत्पन्न नहीं होता।

शेष सम्यक्त्व रूप भाव वहाँ उत्पन्न हो सकते हैं इसलिए वहाँ की स्त्रियों में उपशम एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव हो सकता है।

प्रश्न : मनुष्यिनी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में सम्यक्त्व रूप भाव क्यों नहीं होता है?

उत्तर : मनुष्यिनी के अर्थात् द्रव्य या भाव किसी भी स्त्रीवेदी मनुष्य के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था

में कोई भी सम्यक्त्व रूप भाव नहीं पाया जाता है क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव मरकर स्त्री एवं नपुंसक वेदी (नरक को छोड़कर) में उत्पन्न नहीं होता है। कहा भी है-

सम्यग्दर्शनशुद्धा नारक तिर्यङ् नपुंसक स्त्रीत्वानि

दुष्कुल विकृताल्पायु र्दरिद्रतां च ब्रजन्ति-नाप्यव्रतिकाः **(र.क.श्रा. ३५)**

प्रश्न : मनुष्यिनी के सबसे ज्यादा क्षायोपशमिक भाव किस गुणस्थान में पाये जाते हैं?

उत्तर : मनुष्यिनी के सबसे ज्यादा क्षायोपशमिक भाव पंचम गुणस्थान में पाये जाते हैं -

३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संयमा.

यहाँ इनके १३ क्षायोपशमिक भाव पाये जाते हैं।

नोट : मनुष्यिनी के उपर्युक्त सभी भावों में तिर्यःगति एवं देवगति और जोड़ देने पर द्रव्य स्त्री के भाव हो जाते हैं।

देवगति

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	औपशमिक	१	सम्यक्त्व	
२.	क्षायिक	१	सम्यक्त्व	वैमानिक देवों के ही होता है।
३.	क्षायोपशमिक	१५	३ ज्ञान-मति श्रुत अवधि	
			३ अज्ञान-कुमति कुश्रुत कुअवधि.	पहले दूसरे गुण. में ही होते हैं।
			३ दर्शन-चक्षु. अच. अव.	
			५ लब्धि-दान लाभ भोग उपभोग वीर्य	
			१ - सम्यक्त्व	केवल चौथे गुणस्थान में ही होता है।
४.	औदयिक	१७	१ गति- देव	
			४ कषाय - क्रो.मा. माया लोभ	
			२ लिङ्ग - स्त्री पुरुष	
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			६ लेश्या कृ.नी.का.पी.प.शु.	अशुभ लेश्या भवनत्रिक के अपर्याप्त अवस्था में ही होती है।
५.	पारिणामिक	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	सभी गुणस्थानों में होता है।
			अभव्यत्व	

प्रश्न : देव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : देव चार प्रकार के होते हैं -

(१) भवनवासी (२) व्यंतर (३) ज्योतिष्क (४) वैमानिक

- भवनवासी - भवन में रहना जिनका स्वभाव है, वे भवनवासी देव हैं।
- व्यंतर - जिनका नाना देशों में निवास है, वे व्यन्तर हैं।
- ज्योतिष्क - जो ज्योतिर्मय होते हैं, वे ज्योतिष्क देव हैं।
- वैमानिक - जो विमानों में रहते हैं, वे वैमानिक देव हैं।

प्रश्न : इन्हें देव क्यों कहते हैं?

उत्तर : ये दिव्य स्वरूप अणिमादि आठ गुणों के द्वारा निरन्तर क्रीड़ा करते हैं और इनका शरीर प्रकाशमान तथा दिव्य है इसलिए इन्हें देव कहते हैं।

प्रश्न : देवगति में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : देवगति में ३७ भाव होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के १७ - १ ग. ४ क. २ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में विभंगावधिज्ञान नहीं होता है इसलिए ३६ भाव होंगे।

प्रश्न : वैमानिक देवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : वैमानिक देवों के ३४ भाव होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के १४ - १ ग. ४ क. २ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

- भवनत्रिक देवों के उपर्युक्त भावों में से क्षायिक सम्यक्त्व, पद्मलेश्या, शुक्लेश्या भाव नहीं होते हैं और ३ अशुभ लेश्याएँ होती हैं इसलिए उनके भी ३४ भाव होते हैं।
- वैमानिक देवियों के ३ अशुभ लेश्याएँ भी नहीं होती हैं इसलिए उनके ३१ भाव ही होते हैं।
- भवनत्रिक के देव एवं देवियों के भावों में कोई अन्तर नहीं है।

प्रश्न : देवों के तो शुभ लेश्या ही होती है उनके अशुभ लेश्या कैसे कही गई है?

उत्तर : यद्यपि देवों के पर्याप्त अवस्था में शुभ लेश्याएँ ही होती हैं, लेकिन भवनत्रिक देवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था एवं कार्मण काययोग में तीन अशुभ लेश्याएँ होती हैं, कहा भी है -

आदितस्त्रिषुपीतान्त लेश्याः (त.सू.४/२)

आदि के तीन निकायों में पीतान्त अर्थात् कृष्ण, नील कापोत, पीत लेश्या होती है तथा पर्याप्त अवस्था में एक पीत लेश्या होती है। **(ध.२/५४५)**

प्रश्न : क्या सभी कल्पोपपन्न देवों के बराबर भाव होते हैं?

उत्तर : नहीं, सभी कल्पोपपन्न देवों के बराबर भाव नहीं होते हैं। इनके भावों में लेश्या की अपेक्षा अन्तर है - सौधर्म-ईशान, ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, लान्तव-कापिष्ट, शुक्र-महाशुक्र तथा आनत-प्राणत, आरण-अच्युत इन बारह स्वर्गों में एक-एक ही लेश्या रूप भाव है अर्थात् सौधर्म-ऐशान में पीत लेश्या, ब्रह्मादि छह स्वर्गों में पद्म लेश्या तथा आनतादि चार स्वर्गों में एक शुक्ल लेश्या ही होती है। इसलिए इनके ३२ भाव हैं -

औपशमिक का १, क्षायिक का १, क्षायोपशमिक के १५, औदयिक के १२ तथा पारिणामिक के ३।

सानत्कुमार-माहेन्द्र तथा शतार-सहस्रार स्वर्ग में दो-दो लेश्या रूप भाव हैं अर्थात् सानत्कुमार-माहेन्द्र स्वर्ग में पीत-पद्म तथा शतार-सहस्रार स्वर्ग में पद्म-शुक्ल लेश्या रूप भाव है इसलिए उनके ३३ भाव होते हैं अर्थात् इनके एक लेश्या रूप भाव ज्यादा होता है।

इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में विभंगावधिज्ञान रूप भाव नहीं होने से ३१ और ३२ भाव होते हैं।

प्रश्न : कल्पातीत देवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : कल्पातीत देवों के ३१ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के ११ - १ ग. ४ क. १ लि. (पुरु.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले. (शु.)
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।
- इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में १ विभंगावधि ज्ञान नहीं होने से ३० भाव होते हैं।
- नव अनुदिश तथा पाँच अनुत्तर विमानों में उपर्युक्त भावों में से ५ भाव नहीं होते हैं- ३ अज्ञान, १ मिथ्यादर्शन १ अभव्यत्व, इसलिए इनके २६ भाव होते हैं।
- इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में भी इतने ही भाव होते हैं।
- इनके पर्याप्त अवस्था में औपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता है।

  वहाँ मिथ्यादृष्टि जीव उत्पन्न नहीं होते हैं इसलिए उनके ये भाव नहीं होते हैं।

प्रश्न : क्या नव अनुदिश व पाँच अनुत्तरों में पर्याप्त अवस्था में भी औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव होता है?

उत्तर : प्रथमोपशम सम्यक्त्व की प्राप्ति मिथ्यात्व पूर्वक होती है, ऐसा आगम वचन है और नव अनुदिश तथा अनुत्तर विमानवासी देव मिथ्यादृष्टि नहीं होते हैं। इसलिए वहाँ प्रथमोपशम सम्यक्त्व की प्राप्ति तो संभव नहीं है। अब रही द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की बात, तो यह वेदक सम्यक्त्व से उपशम श्रेणी के सम्मुख हुए मनुष्यों के ही सम्भव है अन्य गतियों में नहीं। तथा पूर्व पर्याय से आया हुआ द्वितीयोपशम सम्यक्त्व अपर्याप्तक अवस्था में ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि इसके काल से छह पर्याप्तियों के पूरा करने का काल अधिक होता है। इस प्रकार इतने कथन से यह निष्कर्ष निकला कि नौ अनुदिश और पाँच अनुत्तरों में मिथ्यात्व की प्राप्ति किसी प्रकार संभव नहीं। जो द्वितीयोपशम सम्यक्त्व वाले जीव वहाँ उत्पन्न होते हैं वे नियम से वेदक सम्यग्दृष्टि हो जाते हैं। अत: नव अनुदिश व पाँच अनुत्तरों में पर्याप्त अवस्था में औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव नहीं होता है। **(ध.२/५६९-७०)**

प्रश्न : देवांगनाओं के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : देवांगनाओं के ३३ भाव होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

- क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के १४ - १ ग. ४ क. १ लि. (स्त्री). १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ लेश्या (कृ.नी.का.पी.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व।

इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में २६ भाव होते हैं अर्थात् देवांगनाओं के ३३ भावों में से ७ भाव नहीं हैं -

(१) औपशमिक सम्यक्त्व (२) मतिज्ञान (३) श्रुतज्ञान (४) अवधिज्ञान

(५) विभंगावधिज्ञान (६) अवधिदर्शन (७) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व

नोट : पीत लेश्या वैमानिक देवियों की अपेक्षा होती है।

प्रश्न : किस-किस स्वर्ग में अभव्यत्व भाव नहीं पाया जाता है?

उत्तर : १४ स्वर्गों में अभव्यत्व भाव नहीं पाया जाता है -

९ अनुदिश - अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूप, अंक, स्फटिक तथा आदित्य **(ध.२/५६६-६७)**

५ अनुत्तर - विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित सर्वार्थसिद्धिविमान **(ध.२/५६७)**

क्योंकि वहाँ सम्यग्दृष्टि जीव ही जन्म लेते हैं।

प्रश्न : क्या लौकान्तिक देवों के भाव भी सर्वार्थसिद्धि के देवों के बराबर होते हैं?

उत्तर : हाँ, लौकान्तिक देवों के भाव भी सर्वार्थसिद्धि के देवों के बराबर होते हैं, क्योंकि वहाँ पर भी सम्यग्दृष्टि जीव ही उत्पन्न होते हैं। वहाँ भी शुक्ल लेश्या एवं पुरुष लिङ्ग ही होता है।

प्रश्न : भवनत्रिक देवों के क्षायिक भाव क्यों नहीं होते हैं?

उत्तर : नहीं, भवनवासी, वान व्यंतर, ज्योतिष्क देवों में सम्यग्दृष्टि जीवों की उत्पत्ति का अभाव है तथा मनुष्यगति के अतिरिक्त अन्य गतियों में दर्शनमोहनीय की क्षपणा का अभाव है इसलिए भवनत्रिक देवों के क्षायिक भाव नहीं होता है। इसी प्रकार द्वितीयादि छह पृथिवियों के नारकी, सर्व विकलेन्द्रिय, सर्व लब्ध्यपर्याप्तक तथा स्त्री वेदियों में भी जानना चाहिए। **(ध. ५/२१५)**

प्रश्न : क्या सम्यग्दृष्टि सभी वैमानिक देवों में उत्पन्न हो सकते हैं?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि पुरुष व्रत रहित होने पर भी (ज्योतिषी देवों में, भवनवासी देवों में, व्यंतर देवों में) वैमानिक देवों के किल्विषिक देवों में, प्रकीर्णक देवों में, आभियोग्य देवों में, वाहनादिक

बनने वाले हीन देवों में उत्पन्न नहीं होते, जहाँ पर निंदनीय भोगोपभोग की सामग्री मिलती है वहाँ कहीं भी उत्पन्न नहीं होते तथा कुभोगभूमि में भी उत्पन्न नहीं होते। इसी प्रकार स्त्री पर्याय में (देवांगना, मनुष्यिनी, तिर्यंचिनी) में उत्पन्न नहीं होते। **(मू.प्र. १६०९-१३)**

प्रश्न : भवनत्रिक देवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था की अपेक्षा वैमानिक देवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव अधिक होते हैं?

उत्तर : भवनत्रिक देवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था की अपेक्षा वैमानिक देवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ७ भाव अधिक होते हैं -

(१) द्वितीयोपशम सम्यक्त्व

(२) क्षायिक सम्यक्त्व

(३) मतिज्ञान (४) श्रुतज्ञान (५) अवधिज्ञान (६) अवधिदर्शन (७) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व।

वैमानिक देवों के शुभ लेश्याएँ तथा भवनत्रिक के ३ अशुभ लेश्याएँ होती हैं।

प्रश्न : देवगति में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : देवगति में चार गुणस्थान होते हैं -

मिथ्यात्व, सासादन, सम्यग्मिथ्यात्व और अविरतसम्यक्त्व।

इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ३ गुणस्थान होते हैं -

मिथ्यात्व, सासादन सम्यक्त्व, अविरत सम्यक्त्व **(ध.२/देवगति)**

भवनत्रिक एवं देवांगनाओं के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में दो गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन सम्यक्त्व

प्रश्न : उपर्युक्त गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : उपर्युक्त गुणस्थानों में भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में ३०

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १७ - १ ग. ४ क. २ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

- सासादन गुणस्थान में मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव नहीं होने से २८ भाव होते हैं।
- सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में - २५

  क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

  औदयिक के १३-१ ग. ४ क. २ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या (शुभ)

  पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व
- अविरत सम्यक्त्व में - २९

  औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायोपशमिक के १२-३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

  औदयिक के १३-१ ग. ४ क. २ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या (शुभ)

प्रश्न : कितने भाव सभी देवों के होते हैं ?

उत्तर : १६ भाव सभी देवों के होते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के ७ - २ दर्श. (चक्षु.अच.) ५ लब्धि
- औदयिक के ८-१ ग. ४ क. १ अज्ञा. १ असं. १ असि.
- पारिणामिक का १ - जीवत्व

नोट : कोई भी लेश्या ऐसी नहीं है जो सभी देवों के होती हो, लेकिन कोई एक लेश्या अवश्य होती है।

सामान्य से देवगति का कथन करते हैं तो कोई ऐसा लिङ्ग नहीं है जो सभी देवों के होता हो, लेकिन देवों से यदि पुरुषवेदी को ग्रहण करते हैं तो पुरुषवेद सभी देवों के होता है।

प्रश्न : कितने भाव केवल मिथ्यादृष्टि देवों के ही होते हैं?

उत्तर : केवल दो भाव मिथ्यादृष्टि देवों के ही होते हैं -

(१) मिथ्यादर्शन (२) अभव्यत्व

इसी प्रकार सभी देवों में जानना चाहिए।

तीन अज्ञान सासादन गुणस्थान में भी होते हैं।

प्रश्न : देवों के तीसरे गुणस्थान में अशुभ लेश्या रूप भाव क्यों नहीं होते हैं?

उत्तर : देवों के अशुभ लेश्याएँ मात्र निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ही होती हैं। तीसरा गुणस्थान किसी के भी अपर्याप्त (निर्वृ.) अवस्था में नहीं होता है इसलिए देवों के तीसरे गुणस्थान में अशुभ लेश्याएँ नहीं होती हैं।

प्रश्न : देवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था के गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : देवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में गुणस्थानों में भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में २९ - क्षायोपशमिक के ९ औदयिक के १७ पारिणामिक के ३
- सासादन गुणस्थान में २७ - क्षायोपशमिक के ९ औदयिक के १६ पारिणामिक के २
- चौथे गुणस्थान में २८ भाव - औप. का १ क्षायि. १ क्षायो. १२ औद. १२ पारि. २ यह गुणस्थान केवल वैमानिक देवों के ही होता है।

१) देवांगनाओं के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में आदि की ४ लेश्या होती हैं इसलिए उनके पहले दूसरे गुणस्थान में क्रमश: २७ एवं २५ भाव होते हैं।

२) वैमानिक देवियों के केवल एक पीतलेश्या होती है इसलिए उनके पहले-दूसरे गुण. में २४ एवं २२ भाव होते हैं।

३) भवनत्रिक एवं देवियों के निर्वृ. में अशुभ लेश्या ही होती है इसलिए उनके पहले-दूसरे गुणस्थान में २६ और २४ भाव होते हैं।

४) वैमानिक देवों की निर्वृ. में ३ शुभ लेश्या होती हैं इसलिए उनके पहले-दूसरे गुणस्थान में २६ एवं २४ भाव होते हैं।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न : किस-किस गति में बराबर औदयिक भाव होते हैं?

उत्तर : तिर्य:ा एवं मनुष्यगति में बराबर औदयिक भाव होते हैं। इन दोनों गतियों में १८-१८ औदयिक भाव होते हैं। इनके मात्र तीन गति रूप भाव नहीं हैं।

प्रश्न : नारकियों एवं तिर्य:ाों के औदयिक भावों में क्या अन्तर है?

उत्तर : नारकियों एवं तिर्य:ाों के औदयिक भावों में अन्तर -

नारकी	**तिर्य:ा**
नरकगति	तिर्य:ागति
नपुंसक लिङ्ग	तीनों लिङ्ग
तीन अशुभ लेश्या	छहों लेश्या

अर्थात् नारकियों की अपेक्षा तिर्य:ाों के २ लिङ्ग एवं ३ शुभ लेश्या रूप औदयिक भाव ज्यादा हैं।

प्रश्न : कौन-कौन सी गति में क्षायोपशमिक एवं क्षायिक दोनों लब्धियाँ पाई जाती हैं?

उत्तर : सामान्य रूप से केवल मनुष्यगति में ही क्षायोपशमिक एवं क्षायिक दोनों लब्धियाँ पाई जाती हैं। विशेष रूप से क्षायिक सम्यग्दर्शन रूप एक क्षायिक लब्धि एवं क्षायोपशमिक लब्धियाँ चारों ही गतियों में पाई जाती हैं।

प्रश्न : कर्मभूमिया एवं भोगभूमिया जीवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में क्या विशेषता है?

उत्तर : कर्मभूमिया से भोगभूमिया जीवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में १३ भाव कम होते हैं-

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना (केवली समुद्घात की अपेक्षा)

क्षायोपशमिक का १ - चारित्र (छठे गुणस्थान की अपेक्षा)

औदयिक के ४ - ३ लेश्या (पीत पद्म शुक्ल) चौथे और छठे गुणस्थान की अपेक्षा

१ नपुंसक लिङ्ग (पहले दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा)

प्रश्न : सातवें नरक के नारकियों के और सर्वार्थसिद्धि के देवों के भावों में क्या अन्तर है?

उत्तर : सातवें नरक के नारकियों के और सर्वार्थसिद्धि के देवों के भावों में संख्या की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं है। दोनों के २९-२९ भाव होते हैं लेकिन नामों में अन्तर है-

सातवाँ नरक	**सर्वार्थसिद्धि**
१) पर्याप्तावस्था में प्रथमोपशम सम्यक्त्व है	नहीं है
२) निर्वृत्यपर्याप्तावस्था में सम्यक्त्व नहीं है	निर्वृ. में द्वितीयोपशम एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व है। **(ध.२/५७०)**
३) क्षायिक सम्यक्त्व नहीं है	क्षायिक सम्यक्त्व है।
४) तीन अज्ञान हैं	नहीं हैं।
५) निर्वृ. में ३ ज्ञा. एवं अवधिदर्शन नहीं हैं	हैं।
६) नरकगति है	देवगति है।
७) मिथ्यादर्शन है	नहीं है।
८) कृष्ण लेश्या है	शुक्ल लेश्या है।
९) अभव्यत्व भाव है	नहीं है।
१०) नपुंसक वेद है	पुरुष वेद है

इसी प्रकार नव अनुदिश एवं चार अनुत्तर विमानवासी देवों में और द्वितीयादि नरकों में भी जानना चाहिए।

प्रश्न : किस-किस गति की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में अशुभ लेश्या रूप भाव ही होते हैं?

उत्तर : निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में अशुभ लेश्या वाली गतियाँ - नरक एवं तिर्यःा गति।

देवगति में भवनत्रिक देवों की अपेक्षा एवं मनुष्यों के प्रथम द्वितीय गुणस्थान की अपेक्षा। **(ध.२/५०८-४७)**

भोगभूमिया जीवों के और नरक से आने वाले सम्यग्दृष्टि जीवों के भी निर्वृ. अवस्था में अशुभ लेश्या रूप भाव ही होते हैं। **(ध.२/६५८)**

प्रश्न : कितने भावों में तिर्यःा गति है लेकिन नरकगति नहीं है ?

उत्तर : सात भावों में तिर्यःागति है लेकिन नरकगति नहीं है -

क्षायोपशमिक का १ - संयमासंयम

औदयिक के ६ - १ ग. (तिर्यःा) १ स्त्रीवेद, १ पुरुषवेद, पीत-पद्म-शुक्ल लेश्या

प्रश्न : कर्मभूमिया एवं भोगभूमिया जीवों के भावों में क्या अन्तर है?

उत्तर : कर्मभूमिया एवं भोगभूमिया जीवों के भावों में अन्तर -

कर्मभूमिया	**भोगभूमिया**
औपशमिक चारित्र भी है	औपशमिक सम्यक्त्व ही है
सभी क्षायिक भाव हैं	केवल क्षायिक सम्यक्त्व है।
सभी क्षायोपशमिक भाव हैं	मन:पर्ययज्ञान, चारित्र और संयमासंयम नहीं हैं।
नपुंसक वेद भी होता है	दो ही वेद होते हैं।

प्रश्न : कितने भाव सम्यग्दृष्टि मनुष्य एवं तिर्यःा दोनों के होते हैं?

उत्तर : ३३ भाव सम्यग्दृष्टि मनुष्य एवं तिर्यःा दोनों के होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संयमा.
- औदयिक के १६ - ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं, १ असि. ६ लेश्या।
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : कितनी गतियों के मिथ्यादृष्टि जीवों के नियम से विभंगावधिज्ञान रूप भाव होता है ?

उत्तर : दो गतियों (देव और नरक) में मिथ्यादृष्टि जीवों के नियम से विभंगावधिज्ञान रूप भाव होता है। इन दोनों गतियों के जीवों के पर्याप्त होने के अन्तर्मुहूर्त पश्चात् नियम से विभंगावधिज्ञान उत्पन्न हो जाता है।

इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि को अवधिज्ञान एवं अवधिदर्शन हो जाता है लेकिन इतनी विशेषता है कि ये दोनों भाव विग्रहगति एवं निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में भी हो सकते हैं, क्योंकि अवधिज्ञान अनुगामी भी होता है। अवधिज्ञान के साथ अवधिदर्शन रहता है।

– प्रश्न पत्र –

१. उपयुक्त विकल्प पर (✓) का निशान लगाइये-

(i) **सातवें नरक में कितने औदयिक भाव होते हैं?**

(अ) १४ (ब) ११
(स) १० (द) कोई नहीं

(ii) **मनुष्यगति में सबसे ज्यादा भाव किस गुणस्थान में होते हैं?**

(अ) चौथे (ब) बारहवें
(स) पहले (द) तीसरे

(iii) **सर्वार्थसिद्धि के देवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने उपशम भाव होते हैं?**

(अ) १ (ब) २
(स) ९ (द) कोई नहीं

(iv) **चारों गति के जीव कौन सा क्षायोपशमिक भाव प्राप्त कर सकते हैं?**

(अ) ५ लब्धि (ब) ३ अज्ञान
(स) सम्यक्त्व (द) संयमासंयम

(v) तिर्यःा गति कौनसा भाव है?

(अ) क्षायिक (ब) क्षायोपशमिक
(स) औपशमिक (द) कोई नहीं

२. हाँ या ना में उत्तर दो-

(i) पहले एवं तीसरे नरक में ३३ भाव होते हैं?

(ii) सम्मूर्च्छन मनुष्यों एवं सम्मूर्च्छन तिर्यःोंं के बराबर भाव होते हैं।

(iii) नव ग्रैवेयक में अभव्यत्व भाव नहीं होता है?

(iv) चारों ही गतियों में एक गति रूप स्थान होता है?

(v) मनुष्यगति में केवल तीन भाव नहीं होते हैं।

३. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) सबसे कम भाव कौनसी गति में हो सकते हैं?

(ii) भोगभूमिया मनुष्यों के कितने भाव नहीं होते हैं?

(iii) सम्मूर्च्छन तिर्यःोंं के कितने औपशमिक भाव होते हैं?

(iv) कितने नरकों में क्षायिक भाव नहीं होते हैं?

(v) नव अनुदिश में कितने पारिणामिक भाव होते हैं?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति करो-

(i) नरकगति में सासादन गुणस्थान में .... औदयिक एवं .... पारिणामिक भाव होते हैं।

(ii) भोगभूमिया जीवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में .... क्षायोपशमिक एवं .... दर्शन रूप भाव होते हैं।

(iii) गर्भस्थ तिर्यःोंं के .... अज्ञान एवं .... औदयिक भाव होते हैं।

(iv) भवनत्रिक देवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में .... क्षायोपशमिक एवं .... क्षायिक भाव नहीं होते हैं।

(v) देवांगनाओं के .... लेश्या रूप एवं .... औपशमिक भाव होते हैं।

५. सही जोड़ियाँ बनाइये -

	अ		ब
(i)	५० भाव	-	दो गति
(ii)	३३ भाव	-	संयमासंयम
(iii)	दो गति	-	औपशमिक सम्यक्त्व
(iv)	तीन गति	-	मनुष्यगति
(v)	चार गति	-	क्षायिक चारित्र

(vi) गत्यातीत - नरक गति

(vii) द्वितीयोपशम सम्यक्त्व - सिद्धगति

(viii) १४ भाव - नपुंसकलिङ्ग

– उत्तरमाला –

१. (i) ब (ii) अ (iii) अ (iv) स (v) द।

२. (i) ना (ii) ना (iii) ना (iv) हाँ (v) हाँ।

३. (i) मनुष्यगति (ii) १३ (iii) एक भी नहीं (iv) छह (v) दो

४. (i) १२, २ (ii) १४,३ (iii) २, १८ (iv) ६, १ (V) ४, १

५. (i) मनुष्यगति (ii) नरकगति (iii) संयमासंयम
(iv) नपुंसकलिङ्ग (v) औपशमिक सम्यक्त्व (vi) सिद्धगति
(vii) दो गति (viii) क्षायिक चारित्र

इन्द्रिय मार्गणा

प्रश्न : इन्द्रिय किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो प्रत्यक्ष में व्यापार करती है उसे इन्द्रिय कहते हैं। **(ध.१/१३६)**

- क्षयोपशम से उत्पन्न उपयोग को इन्द्रिय कहते हैं। **(ध.१/२५१)**
- इन्दन अर्थात् ऐश्वर्यशाली होने से इंद्र शब्द का अर्थ आत्मा है और इस इन्द्र के लिङ्ग चिह्न को इन्द्रिय कहते हैं अथवा जो इन्द्र अर्थात् नामकर्म से रची जावे, उसे इन्द्रिय कहते हैं। **(ध.१/२३३)**

  जैसे - नव ग्रैवेयक आदि में उत्पन्न हुए अहमिन्द्र देव स्वामी-सेवक आदि के भेद से रहित ''मैं ही इन्द्र हूँ'' इस प्रकार मानते हुए एक-एक होकर आज्ञा आदि की पराधीनता से रहित होते हुए अपने को स्वामी मानते हैं; उसी प्रकार स्पर्शन आदि इन्द्रियाँ भी अपने-अपने स्पर्श आदि विषयों में ज्ञान उत्पन्न करने के लिए अन्य इन्द्रियों की अपेक्षा न करते हुए स्वयं समर्थ होती हैं इस प्रकार अहमिन्द्रों के समान इन्द्रियाँ हैं। **(गो.जी. १६४)**
- इन्द्र अर्थात् आत्मा का जो चिह्न है वह इन्द्रिय है। **(त.सा.२/३४)**
- जो अपने-अपने विषय में निरत हों, वे इन्द्रियाँ हैं। **(ध.७/६)**

प्रश्न : इन्द्रियाँ कितने प्रकार की होती हैं?

उत्तर : इन्द्रियाँ दो प्रकार की होती हैं - (१) द्रव्येन्द्रिय (२) भावेन्द्रिय

द्रव्येन्द्रिय - पुद्गल द्रव्य रूप इन्द्रिय द्रव्येन्द्रिय है अथवा निर्वृत्ति और उपकरण को द्रव्येन्द्रिय कहते हैं?

भावेन्द्रिय - लब्धि और उपयोग को भावेन्द्रिय कहते हैं। **(ध.१ /२३३-३८)**

प्रश्न : निर्वृत्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : जो निर्वृत्त होती है अर्थात् कर्म के द्वारा रची जाती है, उसे निर्वृत्ति कहते हैं। **(ध.१/२३२)** ज्ञानोत्पत्ति में कार्यकारी जो इन्द्रिय का अंश रचा गया हो, वह निर्वृत्ति है। **(त.सा.२/४०)**

प्रश्न : निर्वृत्ति कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : निर्वृत्ति दो प्रकार की होती है -

(१) बाह्य निर्वृत्ति (२) आभ्यन्तर निर्वृत्ति **(ध.१/२३३)**

प्रश्न : बाह्य निर्वृत्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : चक्षु आदि में मसूर आदि के आकार रूप बाह्य निर्वृत्ति है। **(सु.बो. ९४)**

इन्द्रिय नाम वाले आत्म-प्रदेशों में प्रतिनियत आकार रूप और नामकर्म के उदय से विशेष अवस्था को प्राप्त जो पुद्‌गल प्रचय होती है, उसे बाह्य निर्वृत्ति कहते हैं। **(ध.१/२३६)**

इन्द्रियाकार धारण करने वाले अन्तरंग इन्द्रिय नामक आत्मप्रदेशों के साथ उन आत्मप्रदेशों को अवलम्बन देने वाले जो शरीरावयव इकट्ठे होते हैं उसे बाह्य निर्वृत्ति कहते हैं। **(त.सा.२/४२)**

प्रश्न : अभ्यन्तर निर्वृत्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : प्रतिनियत चक्षु आदि इन्द्रियों के आकार रूप से परिणत हुए लोक प्रमाण अथवा उत्सेधांगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण विशुद्ध आत्मप्रदेशों की रचना को अभ्यन्तर निर्वृत्ति कहते हैं। **(ध.१/२३३)**

जो कुछ आत्मप्रदेशों की रचना नेत्रादि इन्द्रियों के आकार को धारण करके उत्पन्न होती है, वे आत्मप्रदेश इतर आत्मप्रदेशों से अधिक विशुद्ध होते हैं। **(त.सा.२/४१)**

उत्सेधांगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण विशुद्ध आत्मप्रदेशों की चक्षुरादि के आकार रूप से रचना होना अभ्यन्तर निर्वृत्ति है। **(रा.वा.२)**

प्रश्न : उपकरण किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसके द्वारा उपकार किया जाता है अर्थात् जो निर्वृत्ति का उपकार करता है उसे उपकरण कहते हैं। **(ध.१/२३७)** निर्वृत्ति (मुख्यांश) की रक्षा करने वाला अवयव उपकरण कहलाता है। **(त.सा. २/४०)**

प्रश्न : उपकरण कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : उपकरण दो प्रकार के होते हैं -

(१) बाह्य उपकरण (२) अभ्यन्तर उपकरण। **(ध.१/२३७)**

बाह्य उपकरण - नेत्र सम्बन्धी पलक, दोनों बरौनी आदि बाह्य उपकरण हैं, इसी प्रकार सभी इन्द्रियों के उपकरण जानने चाहिए।

किसी इन्द्रिय के सबसे ऊपर की तरफ रहने वाला रक्षा का साधन बाह्य उपकरण कहलाता है। जैसे नेत्र के ऊपर दो बरौनी। **(त.सा.२/४३)**

अभ्यन्तर उपकरण - आँख में सफेद और काला मण्डल अभ्यन्तर उपकरण हैं। **(श्लो. ५/१३९)** जो भीतर रहकर निर्वृत्ति रूप इन्द्रिय की रक्षा करता है उसे अभ्यन्तर उपकरण कहते हैं। **(त.सा.२/४३)**

प्रश्न : लब्धि और उपयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसके सन्निधान से आत्मा द्रव्येन्द्रिय की रचना में व्यापार करता है, ऐसे ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम विशेष को **लब्धि** कहते हैं और उस पूर्वोक्त निमित्त के अवलम्बन से उत्पन्न होने वाले आत्मा के परिणाम को **उपयोग** कहते हैं। **(ध.१/२३८)**

प्रश्न : इन्द्रियाँ कितनी होती हैं?

उत्तर : इन्द्रियाँ पाँच होती हैं -

(१) स्पर्शन इन्द्रिय (२) रसना इन्द्रिय (३) घ्राण इन्द्रिय (४) चक्षुरिन्द्रिय (५) कर्ण इन्द्रिय **(त.सू.२/१५)**

प्रश्न : इन्द्रिय मार्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर : एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय आदि सत्व भूत और प्राणियों में जीवों की खोज करने को इन्द्रिय मार्गणा कहते हैं।

- **सत्त्व** - पृथ्वी आदि वायु पर्यन्त सत्त्व हैं।
- **भूत** - वनस्पतिकायिक भूत है।
- **प्राण** - विकलत्रय आदि प्राण हैं।
- **जीव** - पञ्चेन्द्रिय जीव हैं।

प्रश्न : इन्द्रिय मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : इन्द्रिय मार्गणा पाँच प्रकार की होती है -

(१) एकेन्द्रिय (२) द्वीन्द्रिय (३) त्रीन्द्रिय (४) चतुरिन्द्रिय (५) पञ्चेन्द्रिय **(वृ.द्र.सं.१३टी.)**

इन्द्रिय मार्गणा के अनुवाद से एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय तथा अनिन्द्रिय जीव होते हैं। **(ध.१/२३३)**

प्रश्न : यहाँ इन्द्रिय मार्गणा में कौनसी इन्द्रिय को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : यहाँ इन्द्रिय मार्गणा में भावेन्द्रिय को ग्रहण करना चाहिए।

प्रश्न : अनिन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : इन्द्रियमय शरीर के विनष्ट हो जाने पर इन्द्रियों का भी नियम से विनाश होता है अत: सिद्ध जीव अनिन्द्रिय कहलाते हैं। **(ध.७/६४)**

- जो नियम से इन्द्रियों के उन्मीलन आदि व्यापार से रहित हैं, क्योंकि वे अशरीरी हैं उनके इन्द्रिय व्यापार के कारण जाति नाम कर्म आदि कर्मों का अभाव है इसीसे अवग्रह आदि

क्षायोपशमिक ज्ञानों के द्वारा पदार्थों को ग्रहण नहीं करते हैं तथा इन्द्रिय और विषय के सम्बन्ध से होने वाले सुख से भी युक्त नहीं हैं वे जिन और सिद्ध नामधारी जीव अनिन्द्रिय, अनन्तज्ञान और सुख से युक्त होते हैं, क्योंकि उनका ज्ञान और सुख शुद्ध आत्मस्वरूप की उपलब्धि से उत्पन्न हुआ है। **(ध.१/२४८)**

- जिनके इन्द्रियाँ नहीं पायी जाती हैं उन्हें अनिन्द्रिय जीव कहते हैं। **(ध.१/२५०)**

प्रश्न : अनिन्द्रिय जीव कौन-कौन हैं?

उत्तर : तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान वाले तथा सिद्ध भगवान अनिन्द्रिय होते हैं। यद्यपि तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान वाले जीवों के द्रव्येन्द्रियाँ पाई जाती हैं परन्तु उनके भावेन्द्रिय नहीं पायी जाती है, क्योंकि उनके मतिज्ञानावरणादि कर्मों का अत्यन्त क्षय होने से मति आदि क्षायोपशमिक ज्ञान नहीं पाये जाते हैं।

- शरीर रहित सिद्ध भगवान अनिन्द्रिय हैं। **(ध.१/२५१)**

कर्म विवक्षा

क्र.	इन्द्रिय	कर्म अपेक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	एकेन्द्रिय	क्षायोपशमिक	मिथ्यात्व	औदयिक	दूसरा -
			सासादन सम्य.	पारिणामिक	गुणस्थान -
२.	द्वीन्द्रिय	क्षायोपशमिक	मिथ्यात्व	औदयिक	निर्वृत्यपर्याप्तक -
			सासादन सम्य.	पारिणामिक	अवस्था -
३.	त्रीन्द्रिय	क्षायोपशमिक	मिथ्यात्व	औदयिक	में ही -
			सासादन सम्य.	पारिणामिक	होता है -
४.	चतुरिन्द्रिय	क्षायोपशमिक	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन सम्य.	पारिणामिक	
५.	पःोन्द्रिय	क्षायोपशमिक	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन सम्य.	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	संज्ञी पःोन्द्रिय के ही होता है।
			अविरत सम्यक्त्व	औपशमिक	
				क्षायिक, क्षायोपशमिक	
			संयमा. से अप्रमत्त तक	क्षायोपशमिक	चारित्र मोह के क्षयोपशम से होता है।
			अपूर्वकरण से सूक्ष्म.	औप, क्षायि.	उपशम श्रेणी वालों के उपशम भाव होता है।
			उपशान्तकषाय.	औपशमिक	
			क्षीणकषायवीतराग:	क्षायिक	
६.	अनिन्द्रिय	क्षायिक	सयोगकेवली जिन	क्षायिक	
			अयोगकेवली जिन	क्षायिक	

प्रश्न : अनिन्द्रिय अर्थात् तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में तो औदयिक एवं पारिणामिक भाव भी होते हैं, फिर उसमें केवल क्षायिक भाव ही क्यों कहा है?

उत्तर : अनिन्द्रिय जीवों के यद्यपि औदयिक एवं पारिणामिक भाव भी होता है लेकिन गुणस्थानों की उत्पत्ति में मोहनीय कर्म के उदय, क्षय, उपशम एवं क्षयोपशम की विवक्षा है। तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान की उत्पत्ति का कारण मोहनीय कर्म का क्षय है अत: यहाँ औदयिक एवं पारिणामिक भाव होते हुए भी उनका ग्रहण नहीं किया है। इसी प्रकार सभी गुणस्थानों में जानना चाहिए।

प्रश्न : एकेन्द्रिय आदि को औदयिक कहना चाहिए, क्योंकि एकेन्द्रिय आदि नामकर्म के उदय से एकेन्द्रिय आदि भाव पाये जाते हैं.......?

उत्तर : उक्त शंका का परिहार करते हैं। एकेन्द्रियादि जीवों का भाव औदयिक तो होता ही है, क्योंकि एकेन्द्रिय जाति आदि नामकर्मों के उदय से उनकी उत्पत्ति देखी जाती है। .....यहाँ

सयोगी और अयोगी जिनों के यदि.....पाँच जातियों में क्रमशः पाँच इन्द्रियाँ सम्बद्ध हैं वे क्षायोपशमिक हैं। **(ध.७ /६७-६८)**

इसलिए उन्हें यहाँ क्षायोपशमिक कहा है।

यद्यपि एकेन्द्रिय जाति नाम कर्म के उदय से जीव एकेन्द्रियों में उत्पन्न होता है लेकिन एकेन्द्रियत्व अर्थात् स्पर्शन आदि इन्द्रियों में स्पर्श आदि की जानने की क्षमता मतिज्ञानावरणीय एवं वीर्यांतराय कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त होती है, इसलिए एकेन्द्रिय आदि को क्षायोपशमिकी कहा है और इस क्षयोपशम का अभाव हो जाने के कारण ही जीव अतिन्द्रिय कहलाता है।

नोट : इन्द्रिय मार्गणा में एक आदि इन्द्रिय के भंग रूप स्थान नहीं बनते हैं, क्योंकि पंचेन्द्रिय जीवों के पूरे भाव एवं पूरे गुणस्थान पाये जाते हैं।

प्रश्न : यदि इन्द्रिय मार्गणा क्षायोपशमिक है तो भगवान के पःोन्द्रियपना कैसे कहा जा सकता है ?

उत्तर : यहाँ सयोगी और अयोगी जिनों के यदि पःोन्द्रियपना कहना है तो वह केवल व्यवहार नय से ही कहा जा सकता है। वह इस प्रकार है- पाँच जातियों में जो क्रमशः पाँच इन्द्रियाँ सम्बद्ध हैं वे क्षायोपशमिक हैं। ऐसा मानकर उपचार से पाँचों जातियों को भी क्षायोपशमिक स्वीकार करके सयोगी और अयोगी जिनों के क्षायोपशमिक पंचेन्द्रियपना सिद्ध हो जाता है। अथवा आवरण के क्षीण होने पर भी पःोन्द्रियों के क्षयोपशम रूप होने पर क्षयोपशम से उत्पन्न और उपचार से क्षायोपशमिक संज्ञा को प्राप्त पाँचों बाह्येन्द्रियों का अस्तित्व पाये जाने से सयोगी और अयोगी जिनों के पःोन्द्रियपना सिद्ध कर लेना चाहिए। **(ध.७/६७-६८)**

- एकेन्द्रिय जाति आदि नामकर्मों के उदय से उनकी उत्पत्ति देखी जाती है और इसी से सयोगी व अयोगी जिनों का पंचेन्द्रियपना बन जाता है। **(ध.७/६७-६८)**

भावों में इन्द्रिय मार्गणा

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	पंचेन्द्रिय	-
	चारित्र	१	पंचेन्द्रिय	मुनिराज के ही होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१	पंचेन्द्रिय	केवली भगवान के भी होते हैं।
	चारित्र	१	पंचेन्द्रिय	
	ज्ञानादि सात	१	पंचेन्द्रिय	केवली भगवान के ही होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	तीन ज्ञान	१	पंचेन्द्रिय	
	मन:पर्ययज्ञान	१	पंचेन्द्रिय	ऋद्धिधारी मुनिराज के ही होता है।
	कुमति-कुश्रुत.	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पंचे.	
	विभंगावधिज्ञान	१	पःोन्द्रिय	संज्ञी पःोन्द्रिय के ही होता है
	चक्षुदर्शन	२	चतु. पःो.	
	अचक्षुदर्शन	५	एके. द्वी. त्री. चतु. पःो.	
	अवधिदर्शन	१	पःोन्द्रिय	कोई आचार्य तीसरे गुणस्थान में भी मानते है।
	५ लब्धि	५	एके. द्वी. त्री. चतु पंचे.	
	सम्यक्त्व	१	पःोन्द्रिय	
	चारित्र	१	पःोन्द्रिय	तिर्यःा एवं मनुष्य दो गतियों में होता है।
	संयमासंयम	१	पंचेन्द्रिय	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	पःोन्द्रिय	
	तिर्यःागति	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पञ्चे.	
	मनुष्यगति	१	पःोन्द्रिय	
	देवगति	१	पःोन्द्रिय	
	४ कषाय	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पःो.	
	स्त्री लिङ्ग	१	पःोन्द्रिय	असंज्ञी पःोन्द्रिय के भी होता है।
	पुरुष लिङ्ग	१	पःोन्द्रिय	असंज्ञी पःोन्द्रिय के भी होता है।
	नपुंसकलिङ्ग	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पःो.	
	मिथ्यादर्शन	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पःो.	
	अज्ञान	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पःो.	
	असंयत	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पःो.	
	असिद्धत्व	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पःो.	
	पीतादि ३	१	पःोन्द्रिय	
	कृष्णादि ३	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पःो.	चारों गतियों में होती हैं।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पःो.	
	भव्यत्व	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पःो.	मिथ्यादृष्टि के भी होता है।
	अभव्यत्व	५	एके.द्वी.त्री.चतु.पःो.	

प्रश्न : कितने भावों में इन्द्रिय मार्गणा के दो भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : केवल एक (क्षायोपशमिक) भाव में इन्द्रिय मार्गणा के दो भेद पाये जाते हैं - चक्षुदर्शन, यह भाव चतुरिन्द्रिय एवं पंञ्चेन्द्रिय जीवों के होता है।

प्रश्न : कितने भावों में इन्द्रिय मार्गणा के सभी भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : २४ भावों में इन्द्रिय मार्गणा के सभी भेद पाये जाते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के ८-२ अज्ञान (कुमति कुश्रुत) १ दर्शन (अचक्षु) ५ लब्धियाँ
- औदयिक भाव के १३-१ ग. (तिर्यःा) ४ क., १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या (अशुभ)
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

प्रश्न : कितने भाव आदि के दो गुणस्थानवर्ती पःोन्द्रिय जीवों के ही होते हैं?

उत्तर : मात्र एक क्षायोपशमिक भाव आदि के दो गुणस्थानवर्ती पःोन्द्रिय जीवों के ही होता है-

विभंगावधिज्ञान -

यह संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवों के ही होता है।

प्रश्न : कितने भाव मिथ्यादृष्टि पःोन्द्रिय जीवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में भी पाये जाते हैं?

उत्तर : ३३ भाव मिथ्यादृष्टि पःोन्द्रिय जीवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में भी पाये जाते हैं -

- क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञान, २ दर्शन, ५ लब्धि
- औदयिक के २१-४ ग., ४ क., ३ लि., १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

नोट : तीन शुभ लेश्या रूप भाव वैमानिक देवों में जाते समय बन जायेंगे।

प्रश्न : कितने भाव मिथ्यादृष्टि पंचेन्द्रिय एवं सम्यग्दृष्टि दोनों के होते हैं?

उत्तर : २९ भाव मिथ्यादृष्टि पःोन्द्रिय एवं सम्यग्दृष्टि दोनों के होते हैं -

- क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्शन ५ लब्धि
- औदयिक के २० - मिथ्यादर्शन बिना २०
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

प्रश्न : कितने भाव मिथ्यादृष्टि पंचेन्द्रिय के होते हैं लेकिन एकेन्द्रिय के नहीं?

उत्तर : ९ भाव मिथ्यादृष्टि पःोन्द्रिय के होते हैं लेकिन एकेन्द्रिय के नहीं होते-

(१) विभंगज्ञान (२) चक्षुदर्शन (३) नरकगति (४) मनुष्यगति (५) स्त्रीलिङ्ग (६) पुरुषलिङ्ग (७) पीतलेश्या (८) पद्मलेश्या (९) शुक्ल लेश्या।

प्रश्न : कितने भाव मुनिराज के ही होते हैं?

उत्तर : चार भाव मुनिराज के ही होते हैं -

(१) औपशमिक चारित्र (२) क्षायिक चारित्र

(३) मन:पर्ययज्ञान (४) क्षायोपशमिक चारित्र

नोट : (१) क्षायिक ज्ञान आदि सात लब्धि रूप क्षायिक भाव केवली भगवान के ही होते हैं वे भी स्नातक मुनिराज होते हैं इस अपेक्षा ११ भाव भी कहे जा सकते हैं। कहा भी है **- पुलाकबकुशकुशील निर्ग्रन्थस्नातका: निर्ग्रन्था: (त.सू.९/४६)**

(२) सर्वावधि ज्ञान आदि भाव भी मुनिराजों के ही होते हैं लेकिन यहाँ उनका अलग से ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न : कितने क्षायोपशमिक भावों में इन्द्रिय मार्गणा के सभी भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : ८ क्षायोपशमिक भावों में इन्द्रिय मार्गणा के सभी भेद पाये जाते हैं -

- २ अज्ञान (कुमति, कुश्रुत)
- १ दर्शन (अचक्षुदर्शन)
- ५ लब्धि (दान लाभ भोग उपयोग वीर्य)

एकेन्द्रिय से त्रीन्द्रिय तक

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	क्षायोपशमिक	८	२ अज्ञान-कुमति कुश्रुत १ दर्शन - अचक्षुदर्शन ५ लब्धि-दान लाभ.....	एक समय में एक ज्ञान ही होता है।
२.	औदयिक	१३	१ गति. तिर्यःा ४ कषाय - क्रोध मान.... १ लिङ्ग - नपुंसक १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ३ लेश्या-कृ.नी.का.	द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय कर्मभूमि में ही होते हैं। निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में सासादन की अपेक्षा मिथ्यादर्शन से रहित भी होते हैं।
३.	पारिणामिक	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	 एक जीव के भव्य एवं अभव्य दोनों भाव नहीं हो सकते।

नोट : (१) चतुरिन्द्रिय जीवों के १ चक्षुदर्शन रूप भाव अधिक होता है।
(२) पःोन्द्रिय जीवों के सभी भाव होते हैं।

प्रश्न : एकेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके एक ही इन्द्रिय पाई जाती है उन्हें एकेन्द्रिय जीव कहते हैं। **(ध.१/२३८)**

प्रश्न : द्वीन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर : जिसके स्पर्शन एवं रसना इन्द्रिय होती है, उसे द्वीन्द्रिय जीव कहते हैं। **(ध.१/२४३)**

लट, सीप, शंख, जोंक, लीक आदि जीवों के स्पर्शन और रसना दो इन्द्रियाँ हैं इसलिए इन जीवों को द्वीन्द्रिय कहते हैं। **(मू.प्र. १४४७)**

प्रश्न : त्रीन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके स्पर्शन, रसना और घ्राण इन्द्रियाँ पाई जाती हैं, उन्हें त्रीन्द्रिय जीव कहते हैं। **(ध.१/२४४)**

कुंथु, बिच्छू, जूं, खटमल, चींटी, गोपानिका आदि जीवों के स्पर्शन रसना घ्राण, ये तीन इन्द्रियाँ हैं इसलिए इनको त्रीन्द्रिय कहते हैं। **(मू.प्र. १४४८)**

प्रश्न : चतुरिन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके स्पर्शन रसना घ्राण और चक्षु ये चार इन्द्रियाँ पाई जाती हैं उन्हें चतुरिन्द्रिय जीव कहते हैं। **(ध.१/२४६-४७)**

भौंरा, मच्छर, डाँस, पतंगा, मधुमक्खी, मक्खी तथा दीपक पर पड़ने वाले जीवों के स्पर्शन रसना घ्राण और चक्षु इन्द्रियाँ हैं इसलिए इनको चौइन्द्रिय कहते हैं **(मू.प्र. १४४९)**

प्रश्न : पञ्चेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पाँच इन्द्रियाँ पाई जाती हैं, उन्हें पञ्चेन्द्रिय जीव कहते हैं। **(ध.१/२४८)**

मगरमच्छ आदि जलचर, कबूतर आदि नभचर और गाय-भैंस आदि स्थलचर जीव पञ्चेन्द्रिय हैं। मनुष्य, देव तथा समस्त नारकी जीव भी पञ्चेन्द्रिय हैं ऐसा शास्त्रों में कहा है। **(मू.प्र.१४५०)**

प्रश्न : एकेन्द्रिय जीव के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय जीवों के २४ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक भाव के ८-२ अज्ञान (कुमति कुश्रुत) १ दर्शन (अचक्षु) ५ लब्धि।

औदयिक के १३-१ गति (तिर्यञ्च), ४ कषाय, १ लिङ्ग (नपुंसक), १ मिथ्या, १ अज्ञा. १ असं., १ असि., ३ लेश्या (अशुभ)

पारिणामिक के ३-जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

नोट : द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय जीवों के भी इतने ही भाव होते हैं।

एकेन्द्रिय जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में भी इतने ही भाव होते हैं, लेकिन वहाँ सासादन गुणस्थान भी होता है इसलिए उनके वहाँ मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव नहीं होता है।

इसी प्रकार सादि मिथ्यादृष्टि के भी अभव्यत्व भाव नहीं होता है।

प्रश्न : लब्ध्यपर्याप्तक एवं पर्याप्तक एकेन्द्रिय जीवों के भावों में क्या अन्तर है?

उत्तर : लब्ध्यपर्याप्तक एकेन्द्रिय एवं पर्याप्तक एकेन्द्रिय जीवों के भावों में कोई अन्तर नहीं है, इन दोनों के दूसरा गुणस्थान नहीं होता है क्योंकि सासादन सम्यक्त्व के काल से निर्वृत्यपर्याप्तक का काल अधिक होता है इसलिए इन दोनों के भावों में कोई अन्तर नहीं है।

प्रश्न : क्या ऐसे कोई पर्याप्त एकेन्द्रिय जीव हैं जिनके अभव्यत्व भाव नहीं होता है?

उत्तर : हाँ, एकेन्द्रियों में जो सादि मिथ्यादृष्टि जीव हैं उनके अभव्यत्व भाव नियम से नहीं होता है तथा जिनके भव्यत्व भाव है, उनके अभव्यत्व भाव नहीं होता है।

प्रश्न : सम्मूर्च्छन पञ्चेन्द्रिय जीवों के कितने भाव होते हैं ?

उत्तर : सम्मूर्च्छन प:ोन्द्रिय जीवों के ३३ भाव होते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के १३=२ ज्ञा. २ अज्ञा. २ दर्शन ५ लब्धि १ सम्य. १ संय.
- औदयिक के १७ = २ गति (मनु.ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असिद्धत्व, ६ लेश्या
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व।

नोट : जो आचार्य सम्मूर्च्छन जीवों के अवधिज्ञान, अवधिदर्शन एवं विभंग ज्ञान मानते हैं उनकी अपेक्षा ३६ भाव होंगे।

प्रश्न : इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में २५ भाव होते हैं -

- क्षायोपशमिक के ९=२ अज्ञान २ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के १३=१ गति (तिर्य.) ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या (अशुभ)
- पारिणामिक के ३-जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

नोट : (१) सम्यग्दृष्टि जीव सम्मूर्च्छन जन्म वालों में उत्पन्न नहीं होते हैं।

(२) सम्मूर्च्छन मनुष्यों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था नहीं होती है, क्योंकि वे लब्ध्यपर्याप्तक ही होते हैं।

प्रश्न : स्वयंभूरमण समुद्र में रहने वाले प:ोन्द्रिय जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : स्वयंभूरमण समुद्र में रहने वाले प:ोन्द्रिय जीवों के ३८ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १६ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संय.
- औदयिक के १८ - १ गति (तिर्य.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असिद्धत्व और ६ ले.
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ११ भाव नहीं होते हैं -

औपशमिक सम्यक्त्व, ३ ज्ञान, विभंगावधिज्ञान, अवधिदर्शन, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, संयमासंयम तथा ३ शुभलेश्या।

अत: इनके २७ भाव होते हैं।

इसी प्रकार स्वयंभूरमण द्वीप में रहने वाले जीवों के भी जानना चाहिए।

प्रश्न : यदि इनके औपशमिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व होते हैं तो इनके क्षायिक सम्यक्त्व भी होना चाहिए?

उत्तर : नहीं, वहाँ अर्थात् आधे स्वयंभूरमण द्वीप तथा स्वयंभूरमण समुद्र में कर्मभूमि है। वहाँ कर्मभूमिया तिर्यञ्च रहते हैं। क्षायिक सम्यक्त्व को लेकर कोई भी कर्मभूमिया तिर्यञ्च में उत्पन्न नहीं होता है। इसलिए वहाँ क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है।

नोट : वहाँ गर्भज जीव भी होते हैं इसलिए अवधिज्ञानादि भाव भी होते हैं।

प्रश्न : लब्ध्यपर्याप्तक पंचेन्द्रिय जीवों के कितने भाव होते हैं ?

उत्तर : लब्ध्यपर्याप्तक पंचेन्द्रिय जीवों के २६ भाव होते हैं-

- क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञान, २ दर्श. ५ ल.।
- औदयिक के १४ - २ गति, ४ कषाय, १ लि., १ मि. १ अज्ञा. १ असं., १ असिद्ध. ३ ले. (अशुभ)
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

प्रश्न : पञ्चेन्द्रिय जीवों में निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में शुभ लेश्या रूप भाव किस अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : पञ्चेन्द्रिय जीवों में निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में शुभ लेश्या वाले जीव -

(१) वैमानिक देव (२) देवगति से आने वाले सम्यग्दृष्टि जीव

(३) आहारकमिश्र काययोगी (४) १३ वें गुणस्थान में (समुद्घात की अपेक्षा)

प्रश्न : पञ्चेन्द्रिय जीवों के कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : पञ्चेन्द्रिय जीवों के चौदह गुणस्थान होते हैं। इनमें भाव गुणस्थान के समान जानने चाहिए। इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में पाँच गुणस्थान होते हैं - पहला, दूसरा, चौथा, छठा और तेरहवाँ।

इनमें भाव -

- पहले गुणस्थान में ३३ भाव -
  क्षायोपशमिक के ९, औदयिक के २१, पारिणामिक के ३।
- दूसरे गुणस्थान में ३० भाव -
  उपर्युक्त भावों में से नरकगति, मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव कम कर देना चाहिए।

- चौथे गुणस्थान में ३५ भाव -

  औपशमिक का १ (सम्य.), क्षायिक का १ (सम्य.), क्षायोपशमिक के १२, औदयिक के १९ (मिथ्या. तथा स्त्री लिङ्ग बिना) पारिणामिक के २।

- छठे गुणस्थान में २७ भाव -

  क्षायिक का १, क्षायोपशमिक के १३, औदयिक के ११, पारिणामिक के २।

- तेरहवें गुणस्थान में १४ भाव -

  क्षायिक के ९, औदयिक के ३, पारिणामिक के २।

प्रश्न : पञ्चेन्द्रिय जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : पञ्चेन्द्रिय जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ४९ भाव होते हैं -

इनके औपशमिक चारित्र, मनःपर्ययज्ञान, विभंगावधिज्ञान एवं संयमासंयम भाव नहीं होते हैं।

प्रश्न : जितने क्षायिक भाव हैं उतने क्षायोपशमिक भाव कितनी इन्द्रिय वालों के होते हैं?

उत्तर : जितने क्षायिक भाव के भेद हैं उतने क्षायोपशमिक भाव चार इन्द्रिय वालों के होते हैं-

२ अज्ञान (कुमति कुश्रुत) २ दर्शन (चक्षु-अचक्षु.)

५ लब्धि - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य।

प्रश्न : इन्द्रिय मार्गणा के कितने भेदों में औदयिक भाव के पूरे भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : इन्द्रिय मार्गणा के केवल एक भेद में औदयिक भाव के पूरे भेद पाये जाते हैं - पञ्चेन्द्रिय के।

– प्रश्न पत्र –

१. उपयुक्त विकल्प पर (✓) का निशान लगाइये-

(i) **कितनी इन्द्रियों वाले जीव के तीन अज्ञान होते हैं?**

(अ) पःोन्द्रिय (ब) चतुरिन्द्रिय

(स) इन्द्रियातीत (द) कोई नहीं

(ii) **कितनी इन्द्रियों वाले जीव के क्षायोपशमिक भाव का अभाव नहीं होता है?**

(अ) द्वीन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय (ब) एकेन्द्रिय से पःोन्द्रिय

(स) पःोन्द्रिय (द) अनीन्द्रिय

(iii) **एकेन्द्रिय जीवों में कौन-कौन आते हैं?**

(अ) विकलत्रय (ब) पाँच स्थावर

(स) असंज्ञी (द) नारकी

(iv) **पाँच क्षायोपशमिक लब्धि रूप भाव कितनी इन्द्रियों वाले जीवों के होते हैं?**

(अ) सभी के (ब) पःोन्द्रिय

(स) संज्ञी (द) विकलत्रय

(v) **क्षायिक लब्धि रूप भाव कितनी इन्द्रियों वाले जीवों के होते हैं?**

(अ) इन्द्रियातीत (ब) पःोन्द्रिय

(स) एकेन्द्रिय (द) समुद्घातगतकेवली

२. हाँ या ना में उत्तर दो-

(i) चतुरिन्द्रिय जीव के दूसरा गुणस्थान पारिणामिक भाव रूप भी होता है?

(ii) नरकगति रूप भाव एकेन्द्रिय जीव के भी होता है?

(iii) क्षायिकभाव की सात लब्धियाँ अनिन्द्रिय जीव के ही होती हैं?

(iv) पःोन्द्रिय जीवों के उपशम भाव का अभाव भी होता है?

(v) इन्द्रिय मार्गणा के सभी भेदों में भव्यत्व रूप पारिणामिक भाव पाया जाता है?

३. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) अनिन्द्रिय जीव किस गति में पाये जा सकते हैं?

(ii) एकेन्द्रिय जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने पारिणामिक भाव होते हैं?

(iii) चतुरिन्द्रिय जीव के मूल भावों में से कितने भाव पाये जाते हैं?

(iv) पःोन्द्रिय जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने क्षायिक भाव होते हैं?

(v) पःोन्द्रिय जीवों के कितने भाव होते हैं ?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति करो-

(i) एकेन्द्रिय जीव के .... भाव तो होता ही है क्योंकि .... आदि नाम कर्मों के उदय से उसकी उत्पत्ति देखी जाती है।

(ii) मिथ्यादृष्टि .... एवं .... पंचेन्द्रिय दोनों के .... भाव होते हैं।

(iii) एकेन्द्रियों में जो .... जीव हैं उनके .... भाव नियम से नहीं होता है।

(iv) स्वयम्भूरमण .... में रहने वाले .... जीवों के .... भाव होते हैं।

(v) द्वीन्द्रिय जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में .... तथा .... गुणस्थान होता है?

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	एकेन्द्रिय	-	५३ भाव
(ii)	क्षायिक भाव	-	१६ क्षायोपशमिक भाव
(iii)	८ क्षायोपशमिक	-	पञ्चेन्द्रिय
(iv)	चतुरिन्द्रिय	-	२४ भाव
(v)	पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च	-	२ गति रूप भाव
(vi)	लब्ध्यपर्याप्तक पञ्चेन्द्रिय	-	द्वीन्द्रिय
(vii)	१७ औदयिक	-	२५ भाव
(viii)	पञ्चेन्द्रिय	-	सम्मूर्च्छन पञ्चेन्द्रिय

– उत्तरमाला –

१. (i) अ (ii) द (iii) ब (iv) स (v) ब

२. (i) ना (ii) हाँ (iii) ना (iv) ना (v) हाँ

३. (i) तीन (ii) बत्तीस (iii) नौ (iv) एक (v) दो

४. (i) औदयिक, एकेन्द्रिय जाति (ii) पंचेन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, २९ (iii) सादिमिथ्यादृष्टि, अभव्यत्व (iv) समुद्र, पंचेन्द्रिय, ३८ (v) पहला, दूसरा

५. (i) २४ भाव (ii) पंचेन्द्रिय (iii) द्वीन्द्रिय
(iv) २५ भाव (v) १६ क्षायो.भाव (vi) २ गति रूप भाव (vii) सम्मूर्च्छन पंचेन्द्रिय
(viii) ५३ भाव

काय मार्गणा

प्रश्न : काय मार्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो संचित किया जाता है, वह काय है। **(ध.१/१३९)**

- जाति नामकर्म के उदय से अविनाभावी त्रस और स्थावर नामकर्म के उदय से उत्पन्न आत्मा की त्रस तथा स्थावर रूप पर्याय को काय कहते हैं। व्यवहारी पुरुषों के द्वारा त्रस-स्थावर इस प्रकार से जो कहा जाता है वह काय है।
- पुद्गल स्कन्धों के द्वारा जो पुष्टि को प्राप्त हो वह काय है। **(गो.जी. १८१)**
- आत्मा की प्रवृत्ति द्वारा उपचित किये गये पुद्गल पिण्ड को काय कहते हैं। **(ध.७/६)**

इस काय में जीवों की खोज करने को काय मार्गणा कहते हैं।

प्रश्न : काय मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : काय मार्गणा के अनुवाद से पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक वनस्पतिकायिक, त्रसकायिक तथा कायातीत जीव भी होते हैं। **(ध.१/२६४)**

काय मार्गणा छह प्रकार की होती है -

(१) पृथ्वीकायिक (२) जलकायिक (३) अग्निकायिक (४) वायुकायिक (५) वनस्पति कायिक (६) त्रसकायिक। **(बृ.द्र.सं.१३टी.)**

प्रश्न : अकाय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिस प्रकार सोलह ताव के द्वारा तपाये हुए सुवर्ण में बाह्य किट्टिका और अभ्यन्तर कालिमा इन दोनों ही प्रकार के मल का बिल्कुल अभाव हो जाने पर फिर किसी दूसरे मल का सम्बन्ध नहीं होता, उसी प्रकार महाव्रत और धर्मध्यानादि से सुसंस्कृत एवं सुतप्त आत्मा में से एक बार शुक्ल ध्यान रूपी अग्नि के द्वारा बाह्य मल काय और अन्तरंग मल कर्म के सम्बन्ध के सर्वथा छूट जाने पर फिर उसका बन्ध नहीं होता और वे सदा के लिए काय तथा कर्म से रहित सिद्ध हो जाते हैं। **(गो.जी.२०३)**

जो जीव बादर एवं सूक्ष्म शरीर के कारणभूत कर्म से छुटकारा पा जाने के कारण सदा के लिए काय/शरीर से रहित हो चुके हैं वे अकायिक निकल परमात्मा कहे जाते हैं। **(ध. १/२७७)**

कर्म विवक्षा

क्र.	काय	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	पृथ्वीकायिक	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन	पारिणामिक	निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ही होता है।
२.	जलकायिक	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन	पारिणामिक	
३.	अग्निकायिक	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	दूसरा गुणस्थान नहीं होता है।
४.	वायुकायिक	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
५.	वनस्पतिकायिक	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन	पारिणामिक	
६.	त्रसकायिक	उदय	१४	सामान्य वत्	
७.	कायातीत	क्षायिक	-	-	सिद्ध भगवान होते हैं।

प्रश्न : किस काय वाले के कितने गुणस्थान क्षायिकलब्धि रूप ही होते हैं?

उत्तर : त्रस काय वाले के तीन गुणस्थान क्षायिक लब्धि रूप ही होते हैं - बारहवाँ, तेरहवाँ और चौदहवाँ।

प्रश्न : कितने काय वालों के गुणस्थान केवल औदयिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : दो काय वालों के गुणस्थान केवल औदयिक भाव रूप ही होते हैं - अग्नि, वायुकायिक इन दोनों के एक पहला गुणस्थान ही होता है, वह औदयिक रूप ही होता है।

कहा भी है - एकेन्द्रियों में जाने वाले संख्यात वर्षायुष्क सासादन सम्यग्दृष्टि तिर्यःा, बादर पृथ्वीकायिक, बादर जलकायिक, बादर वनस्पति कायिक, प्रत्येक शरीर पर्याप्तकों में ही पाये जाते हैं अपर्याप्तकों में नहीं। **(ध.६/सू.१२१)**

इसी प्रकार देव और मनुष्यों के भी जानना चाहिए।

नारकी एकेन्द्रिय में जाते ही नहीं हैं।

इसी प्रकार सूक्ष्म पृथ्वीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, नित्यनिगोद एवं इतर निगोद में भी एक पहला गुणस्थान ही होता है लेकिन वे सब पृथ्वीकायिक आदि में ही गर्भित है इसलिए यहाँ ग्रहण नहीं किये हैं।

भावों में कायमार्गणा

क्र.	भाव	संख्या	काय	विवरण
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	त्रस कायिक	
	चारित्र	१	त्रस कायिक	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१	त्रस कायिक	पःोन्द्रिय के ही होता है।
	चारित्र	१	त्रस कायिक	मुनिराज के ही होता है।
	ज्ञानादिसात	१	त्रस कायिक	भगवान के होते हैं
३.	**क्षायोपशमिक**			
	चार ज्ञान	१	त्रस कायिक	
	कुमति, कुश्रुत	६	पृ.ज.अ.वायु.वन.त्रस.	
	विभंगावधिज्ञान	१	त्रस कायिक	
	चक्षुदर्शन	१	त्रस कायिक	चतुरिन्द्रिय एवं पःोन्द्रिय के होता है
	अचक्षुदर्शन	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस	बारहवें गुणस्थान तक होता है
	अवधिदर्शन	१	त्रस कायिक	
	५ लब्धि	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस	
	सम्यक्त्व	१	त्रस कायिक	
	चारित्र	१	त्रस कायिक	
	संयमासंयम	१	त्रस कायिक	पंचेन्द्रिय तिर्यःा एवं मनुष्यों के होता है
४.	**औदयिक**			
	तीन गति	१	त्रस कायिक	
	तिर्यःागति	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	
	४ कषाय	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	
	स्त्री एव पुरुष.	१	त्रसकायिक	संज्ञी एवं असंज्ञी पःोन्द्रिय के होते है।
	नपुंसकलिङ्ग	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	
	मिथ्यादर्शन	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	
	अज्ञान	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	
	असंयत	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	
	असिद्धत्व	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	
	३ अशुभ लेश्या	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	चारों गति के जीवों के होती है।
	३ शुभलेश्या	१	त्रसकायिक	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	
	भव्यत्व	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	
	अभव्यत्व	६	पृ.ज.अ.वा.वन.त्रस.	

प्रश्न : कितने भावों में त्रस काय के जीव ही होते हैं?

उत्तर : २९ भावों में त्रसकाय के जीव ही होते हैं -

- औपशमिक के २-सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायिक के ९-ज्ञान दर्शनादि
- क्षायोपशमिक के १०-४ ज्ञान १ अज्ञान (विभंगा.) २ दर्श. (चक्षु. अवधि) १ सम्य. १ चारित्र १ संयमा.
- औदयिक के ८-३गति (न.म.दे.) २ लिङ्ग (स्त्री, पुरु.) ३ लेश्या (शुभ)

प्रश्न : कितने भावों में त्रस एवं स्थावर दोनों जीव होते हैं?

उत्तर : २४ भावों में त्रस एवं स्थावर दोनों जीव होते हैं -

- क्षायोपशमिक के ८=२ अज्ञान (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.
- औदयिक के १३=१ ग. (ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ)
- पारिणामिक के ३=जीवत्व, भव्यत्व, अभत्यत्व।

प्रश्न : क्या विभंगावधि ज्ञान रूप भाव सभी त्रसों के होता है?

उत्तर : नहीं, विभंगज्ञान रूप भाव सभी त्रसों के नहीं होता है। यह ज्ञान मात्र संज्ञी पंचेन्द्रिय प्रथम एवं द्वितीय गुणस्थानवर्ती जीवों के ही होता है। कहा भी है - विभंगज्ञान मनवाले जीवों के ही उत्पन्न होता है।

प्रश्न : किन त्रस जीवों के कषाय रूप भाव का अभाव हो सकता है?

उत्तर : ग्यारहवें आदि गुणस्थानों में स्थित त्रस जीवों के कषाय रूप भाव नहीं पाये जाते हैं अर्थात् इनके कषायरूप भाव का अभाव हो जाता है।

विशेष - अनन्तानुबन्धी आदि उत्तर कषायों का अभाव नीचे के गुणस्थानों में भी हो जाता है। तीसरे गुणस्थान से अनन्तानुबन्धी कषाय का अभाव होता है। पाँचवें गुणस्थान से अप्रत्याख्यानावरण का, छठे गुणस्थान से प्रत्याख्यानावरण का, नवें गुणस्थान से हास्यादि छह नोकषाय का, दसवें गुणस्थान से ३ लिङ्ग एवं क्रोध मान माया कषाय का भी अभाव हो जाता है तथा ग्यारहवें से जीव कषायातीत हो जाते हैं।

पृथ्वीकायिकादि जीवों के भाव

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	क्षायोपशमिक	८	२ अज्ञान-कुमति कुश्रुत १ दर्शन-अचक्षु ५ लब्धि-दान लाभ.....	
२.	औदयिक	१३	१ गति-तिर्य:ा ४ कषाय-क्रो.मा.माया.लो. १ लिङ्ग-नपुंसक १ मिथ्यादर्शन १ अज्ञान १ असंयत १ असिद्धत्व ३ लेश्या-कृ.नी.का.	
३.	पारिणामिक	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	

प्रश्न : पृथ्वीकायिकादि जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : पृथ्वी ही जिसका शरीर है, उसे पृथ्वीकायिक जीव कहते हैं।

जिस जीव के पृथ्वी रूप काय विद्यमान है उसे पृथ्वीकायिक कहते हैं। (**सर्वा.**२/२८६)

इसी प्रकार जल ही जिनका शरीर है उन्हें जलकायिक, अग्नि ही जिनका शरीर है उन्हें अग्निकायिक, वायु ही जिनका शरीर है उन्हें वायुकायिक, वनस्पति ही जिनका शरीर है उन्हें वनस्पतिकायिक कहते हैं।

इन्हीं पाँचों को स्थावर कहते हैं।

प्रश्न : स्थावर किसे कहते हैं?

उत्तर : स्थावर नाम कर्म के उदय से जीव स्थावर कहलाते हैं।

स्थावर नाम कर्म के उदय से उत्पन्न हुई विशेषता के कारण ये पाँचों ही स्थावर हैं। **(ध.१/२६७)**

स्थावर जीव एक स्पर्शन इन्द्रिय के द्वारा ही जानता है, देखता है, खाता है, सेवन करता है, उसका स्वामीपना करता है इसलिए उसे एकेन्द्रिय स्थावर जीव कहा है। **(ध.१/२४१)**

प्रश्न : पृथ्वीकायिक जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : पृथ्वीकायिक जीवों के २४ भाव होते हैं -

- क्षायोपशमिक के ८=२ अज्ञा. १ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के १३=१ ग. ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ अशुभ लेश्या
- पारिणामिक के ३-जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

प्रश्न : पृथ्वीकायिकादि पाँच स्थावर जीवों के दानादि लब्धियाँ किस रूप में होती हैं?

उत्तर : पृथ्वीकायिकादि पाँच स्थावरों के दानादि लब्धियाँ -

- **दान** (देना) पृथ्वीकायिकादि पाँचों स्थावर कुछ-न कुछ-अवश्य देते हैं इसलिए उनके दान लब्धि सिद्ध होती है। जैसे-पृथ्वीकायिक जीव सोना, चाँदी, हीरा, पन्ना आदि वस्तुएँ देते हैं। मिट्टी से बीज अंकुरित होते हैं। अग्निकायिक अपनी उष्णता से दूसरे जीवों की शीत का निवारण करते हैं, उष्णता से भोजन का पाचन, फसल का पकना आदि कार्य देखे जाते हैं। जल अपनी निर्मलता से वस्तुओं की मलिनता दूर करता है, जीवों की प्यास बुझाता है, पानी से ही संसार में खाने-पीने आदि की वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं।

  हवा (ऑक्सीजन) से हम (जीव) जीवित रहते हैं, हवा से हमारी गर्मी शान्त होती है और भी अनेक कार्य वायु के माध्यम से होते हैं। फल, सब्जी, पत्ते, ईंधन आदि पदार्थ हमें वनस्पतिकायिक जीव ही देते हैं, अनेक प्रकार की बीमारियों की औषधियाँ, क्षुधा शान्त करने के लिए खाद्य पदार्थ हमें वनस्पति से ही मिलते हैं। इस प्रकार पृथ्वी आदि स्थावरों (एकेन्द्रिय) के दान लब्धि मानी जा सकती है।

- **लाभ** - (लाभ होना) पृथ्वीकायिकादि जीवों को भी अपना शरीर बनाने के लिए तथा बनाये रखने के लिए प्रकृति से कई प्रकार के प्रोटीन्स, विटामिन्स आदि की प्राप्ति होती है। कीड़ा आदि लग जाने पर औषधि आदि प्राप्त होती है। अग्नि को प्रज्वलित होने के लिए ईंधन का लाभ प्रत्यक्ष देखा जाता है। कई वनस्पतियों को सहज रूप से स्वाद, पानी धूप आदि मिल जाते हैं तथा कई वनस्पतियों को नहीं मिल पाते हैं। इस प्रकार लाभान्तराय कर्म के क्षयोपशम में अन्तर स्पष्ट रूप से समझ में आता है।

- **भोग** - जिनका ग्रहण करने के बाद पुन: उनका ग्रहण नहीं होता है ऐसे धूप पानी हवा आदि भोग सामग्रियों को पृथ्वीकायिक आदि ग्रहण करते ही हैं।

- **उपभोग** - एक ही स्थान पर रहना, उसी भूमि में से पुन: पुन: योग्य वस्तुओं को ग्रहण करके अपने शरीर की और आकांक्षाओं की पूर्ति करने रूप उपभोग माना जा सकता है।

- **वीर्य -** उपर्युक्त पदार्थों को ग्रहण करने, भोग-उपभोग करने आदि की शक्ति वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से होती है। शीत-उष्णता, धूप, पाला आदि को सहन करने की हीनाधिक शक्तियाँ आँखों से देखी जा सकती हैं।

  इस प्रकार स्पर्शन इन्द्रिय के आश्रय से इन सबको ग्रहण करने रूप वीर्य लब्धि भी इनमें पाई ही जाती है। उपर्युक्त अनुमानों से हम पृथ्वीकायिकादि पाँचों स्थावरों में दान लाभ आदि लब्धियों को समझ सकते हैं।

प्रश्न : पृथ्वीकायिकादि में कितने भावों का एक भी उत्तर भेद नहीं होता है?

उत्तर : पृथ्वीकायिकादि में दो भावों का एक भी उत्तर भेद नहीं होता है -

१. औपशमिक २. क्षायिक

क्योंकि ये दोनों भाव संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के ही होते हैं।

प्रश्न : पृथ्वीकायिकादि में कितने भावों के पूरे उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : पृथ्वीकायिकादि में केवल एक भाव के पूरे उत्तर भेद पाये जाते हैं - पारिणामिक भाव के, इस भाव के जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व तीनों भेद पाये जाते हैं।

प्रश्न : पृथ्वीकायिकादि के कितने गुणस्थान होते हैं ?

उत्तर : पृथ्वीकायिकादि के तीन भेदों में - पृथ्वीकायिक, जलकायिक एवं वनस्पतिकायिक के मिथ्यात्व एवं सासादन सम्यक्त्व - ये दो गुणस्थान होते हैं तथा अग्निकायिक वायुकायिक के केवल एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है।

प्रश्न : क्या सभी पृथ्वीकायिक आदि के दो गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : नहीं, सूक्ष्मपृथ्वीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक तथा सूक्ष्म वनस्पतिकायिक, नित्यनिगोदिया आदि जीवों के तथा बादर पृथ्वीकायिकादि के पर्याप्त अवस्था में भी दूसरा गुणस्थान नहीं पाया जाता है क्योंकि दूसरा गुणस्थान इनकी निवृत्यपर्याप्तक अवस्था में ही पाया जाता है। **(गो.जी.जी. ७०३)**

प्रश्न : कौन-कौन से सासादन सम्यग्दृष्टि पृथ्वीकायिकादि में उत्पन्न हो सकते हैं?

उत्तर : (१) भवनत्रिक एवं सौधर्म-ऐशान स्वर्ग के देव

(२) सभी देवांगनाएँ....

(३) कर्मभूमिया मनुष्य एवं तिर्यञ्च (संज्ञी पंचेन्द्रिय)

ये सासादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थान के साथ मरकर पृथ्वी आदि में उत्पन्न हो सकते हैं।

प्रश्न : पृथ्वीकायिकादि के पहले-दूसरे गुणस्थान में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : पृथ्वीकायिकादि के पहले गुणस्थान में २४ भाव होते है -

क्षायोपशमिक के ८=२ अज्ञान १ दर्श. ५ लब्धि

औदयिक के १३=१ ग. ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ)

पारिणामिक के ३=जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व।

इनमें से मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव कम करने पर २२ भाव दूसरे गुणस्थान में होते हैं।

नोट : त्रस काय में ५३ भाव एवं १४ गुणस्थान होते हैं। इनमें भाव गुणस्थानों के समान जानने चाहिए।

प्रश्न : त्रस जीवों के कितने भावों का अभाव भी होता है?

उत्तर : त्रस जीवों के ३९ भावों का अभाव भी होता है -

औपशमिक भाव के २ = सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायोपशमिक के १८=४ ज्ञान ३ अज्ञान...

औदयिक के १९= मनुष्यगति और असिद्धत्व को छोड़कर

नोट : भव्य जीवों के अभव्यत्व भाव की सत्ता ही नहीं होती है और अभव्य जीवों के एक भी भाव का अभाव नहीं हो सकता है।

प्रश्न : त्रस जीव कितने गुणस्थानों में कषाय रूप भावों से रहित ही होते हैं?

उत्तर : त्रस जीव चार गुणस्थानों में कषाय रूप भावों से रहित ही होते हैं -

ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान में।

प्रश्न : क्या ऐसे कोई त्रस जीव हैं जिनके मिथ्यात्व रूप भाव का अभाव नहीं हो सकता है?

उत्तर : हाँ, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय त्रस जीवों के मिथ्यात्व रूप भाव का अभाव नहीं होता है। संज्ञी पञ्चेन्द्रियों में भी अभव्यसम भव्य तथा अभव्य जीवों के भी मिथ्यात्व रूप भाव का अभाव नहीं हो सकता है।

नोट : द्वीन्द्रियादि जीव पर्याप्त अवस्था में मिथ्यात्व सहित ही होते हैं।

– प्रश्न पत्र –

१. उपयुक्त विकल्प पर (✓) का निशान लगाइये-

(i) **किस काय वाले के ५३ भाव होते हैं?**

(अ) वनस्पति कायिक (ब) कायातीत

(स) त्रसकाय (द) छहों काय

(ii) **पृथ्वीकायिक जीवों के किस भाव के पूरे उत्तर भेद पाये जाते हैं?**

(अ) औदयिक भाव (ब) पारिणामिक भाव

(स) क्षायोपशमिक भाव (द) कोई नहीं

(iii) **वनस्पति कायिक के कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?**

(अ) तीन (ब) नौ

(स) आठ (द) बारह

(iv) **कायातीत जीवों के कितने मूल भाव नहीं होते हैं?**

(अ) २ (ब) ४

(स) ३ (द) ५

(v) **कितने औदयिक भाव षट्कायिक जीवों के होते हैं?**

(अ) १४ (ब) २१

(स) १८ (द) कोई नहीं

२. हाँ या ना में उत्तर दो-

(i) कायातीत जीव चौदहवें गुणस्थान में होते हैं?

(ii) अग्निकायिक जीवों के क्षायिक भाव नहीं होते हैं?

(iii) जलकायिक जीव नरकगति रूप भाव में भी होते हैं?

(iv) स्थावर काय के १४ क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

(v) त्रसकायिक जीवों के चारों गति रूप भाव होते हैं?

३. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) त्रसकायिक जीवों के कितने मूल भाव होते हैं?

(ii) कायातीत जीवों के कितने औदयिक भाव होते हैं?

(iii) पीत लेश्या रूप भाव में कितनी काय के जीव होते हैं?

(iv) अज्ञान रूप भाव कितनी कायिक जीवों के होता है?

(v) त्रसकायिक जीवों के क्षायोपशमिक लब्धि होती है या क्षायिक?

३. रिक्तस्थान की पूर्ति करो-

(i) पृथ्वीकायिक जीवों के .... औदयिक .... क्षायोपशमिक एवं .... पारिणामिक भाव होते हैं।

(ii) अग्निकायिक जीवों के .... गति रूप .... लेश्या रूप तथा .... दर्शन रूप भाव होते हैं।

(iii) कायातीत जीवों के .... पारिणामिक .... औदयिक तथा .... क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

(iv) वायुकायिक जीवों के .... कषाय रूप .... सम्यक्त्व रूप तथा .... क्षायोपशमिक अज्ञान रूप भाव होते हैं।

(v) त्रसकायिक जीवों के .... क्षायिक .... गति रूप तथा .... क्षायोपशमिक लब्धि रूप भाव होते हैं।

५. सही जोड़ियाँ बनाइये -

	अ		ब
(i)	पृथ्वीकायिक के कम से कम	-	१५ क्षायोपशमिक भाव
(ii)	अग्निकायिक	-	२९ भाव
(iii)	त्रसकायिक	-	२ मूल भाव
(iv)	९ क्षायिक भाव	-	२२ भाव
(v)	क्षायोपशमिक के ८ भाव	-	२४ भाव
(vi)	कायातीत	-	तीन लिङ्ग रूप भाव
(vii)	केवल त्रस जीवों के	-	वनस्पति कायिक
(viii)	त्रस जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में	-	त्रस काय

– उत्तरमाला –

१. (i) स (ii) ब (iii) स (iv) स (v) द।

२. (i) ना (ii) हाँ (iii) ना (iv) ना (v) हाँ।

३. (i) ५ (ii) ० (iii) १ (iv) ६ (v) दोनों।

४. (i) १३,८,३ (ii) १,३,१ (iii) १,०,० (iv) ४,०,२ (v) ९,४,५

५. (i) २२ भाव (ii) २४ भाव (iii) तीन लिङ्ग रूप भाव (iv) त्रसकाय (v) वनस्पति कायिक (vi) २ मूल भाव (vii) १५ क्षायोपशमिक (viii) २९ भाव।

योग मार्गणा

प्रश्न : योग किसे कहते हैं?

उत्तर : जीवों के प्रदेशों का जो संकोच-विकोच और परिभ्रमण रूप परिस्पन्दन होता है वह योग कहलाता है। **(ध.१०/४३७)**

वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम होने पर जो आत्मप्रदेशों में चंचलता उत्पन्न होती है उसे योग कहते हैं। **(त.सा. २/६७)**

मन, वचन और काय वर्गणा के निमित्त से होने वाली क्रिया से युक्त आत्मा के जो वीर्य विशेष उत्पन्न होता है, उसे योग कहते हैं। **(ध.१/१४१)**

मन वचन काय के निमित्त आत्मप्रदेशों का परिस्पन्दन योग है। **(त.सू.६/१)**

आत्मा की प्रवृत्ति से उत्पन्न संकोच-विकोच का नाम योग है। **(ध.७/६)**

योग, वीर्य, थाम, शक्ति, उत्साह, पराक्रम, चेष्टा तथा सामर्थ्य, ये योग की पर्यायें हैं अर्थात् योग के पर्यायवाची हैं। **(श.चू.२-३)**

प्रश्न : योग कितने होते हैं?

उत्तर : योग दो प्रकार के होते हैं - (१) द्रव्य योग (२) भाव योग

योग तीन प्रकार के होते हैं - (१) मनोयोग (२) वचन योग (३) काययोग

योग के १५ भेद होते हैं - ४ मनोयोग ४ वचनयोग ७ काययोग

४ मनोयोग - (१) सत्यमनोयोग (२) असत्यमनोयोग (३) उभयमनोयोग (४) अनुभय मनोयोग।

४ वचनयोग - (१) सत्यवचनयोग (२) असत्यवचनयोग (३) उभय वचनयोग (४) अनुभय वचनयोग।

७ काययोग (१) औदारिककाययोग (२) औदारिकमिश्र काययोग (३) वैक्रियिककाययोग (४) वैक्रियिकमिश्र काययोग (५) आहारककाययोग (६) आहारकमिश्र काययोग (७) कार्मणकाययोग।

इन योगों में जीवों की खोज करने को योगमार्गणा कहते हैं।

प्रश्न : द्रव्य एवं भाव योग किसे कहते हैं ?

उत्तर : भाव योग रूप शक्ति से विशिष्ट आत्मप्रदेशों में जो कुछ हलन-चलन रूप परिस्पन्द होता है, वह द्रव्ययोग है। **(गो.जी.२१६)** पुद्‌गल विपाकी अंगोपांग नामकर्म और शरीर नामकर्म

के उदय से मन वचन काय रूप से परिणत तथा मनोवर्गणा वचनवर्गणा और कायवर्गणा का अवलम्बन करने वाले संसारी जीव के लोकमात्र प्रदेशों में रहने वाली जो शक्ति कर्मों को ग्रहण करने में कारण है वह भाव योग है। **(गो.जी. २१६)**

प्रश्न : मनोयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : मनो वर्गणा से निष्पन्न हुए द्रव्यमान के अवलम्बन से जो जीव का संकोच-विकोच होता है, उसे **मनोयोग** कहते हैं। **(ध.७/७६)**

भाव मन की उत्पत्ति के लिए जो प्रयत्न होता है, उसे मनोयोग कहते हैं। **(ध.१/२८१)**

अभ्यन्तर में वीर्यान्तराय और नोइन्द्रियावरण कर्म के क्षयोपशम रूप मनोलब्धि के सन्निकट होने पर और बाह्य निमित्त रूप मनोवर्गणा का अवलम्बन होने पर मन:परिणाम के प्रति अभिमुख हुए आत्मा के प्रदेशों का जो परिस्पन्दन होता है उसे मनोयोग कहते हैं। **(रा.वा.६/१०)** मन के द्वारा होने वाले योग को मनोयोग कहते हैं। **(ध.१/२८०)**

प्रश्न : वचन योग किसे कहते हैं?

उत्तर : भाषा वर्गणा सम्बन्धी पुद्गल स्कन्धों के अवलम्बन से जीवप्रदेशों का जो संकोच विकोच होता है, उसे वचन योग कहते हैं। **(ध.७/७६)**

शरीर नाम कर्म के उदय से प्राप्त हुई वचन वर्गणाओं का अवलम्बन लेने पर तथा वीर्यान्तराय का क्षयोपशम और मति अक्षरादि ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम आदि से अभ्यन्तर में वचन लब्धि का सान्निध्य होने पर वचन परिणाम के अभिमुख हुए आत्म प्रदेशों का जो परिस्पन्दन होता है, उसे वचन योग कहते हैं। **(सर्वा.६/१)**

वचन की उत्पत्ति के लिए जो प्रयत्न होता है, उसे वचन योग कहते हैं। **(ध.१/२८१)**

चार प्रकार के वचनों से आत्मा के प्रदेशों में जो हलन-चलन होता है, वह वचन योग कहलाता है। **(त.सा.२/७०)**

प्रश्न : काययोग किसे कहते हैं?

उत्तर : जो चतुर्विध शरीरों के अवलम्बन से जीव प्रदेशों का संकोच-विकोच होता है, उसे काययोग कहते हैं। **(ध.७/७६)**

वात-पित्त-कफ आदि के द्वारा उत्पन्न परिश्रम से जीव प्रदेशों का जो परिस्पन्द होता है उसे काययोग कहा जाता है। **(ध.१०/४३७)**

वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम होने पर औदारिक आदि सात प्रकार की काय वर्गणाओं में से किसी एक के अवलम्बन की अपेक्षा करके जो आत्मा के प्रदेशों में परिस्पन्दन होता है, उसे काययोग कहते हैं। **(सर्वा. ६/१)**

काय की क्रिया की उत्पत्ति के लिए जो प्रयत्न होता है, उसे काययोग कहते हैं। **(ध.१/२८१)**

प्रश्न : चतुर्विध शरीर कौन-कौन से हैं जिनके अवलम्बन से काययोग बनता है?

उत्तर : औदारिक, वैक्रियिक, आहारक और कार्मण शरीर के अवलम्बन से काययोग बनता है। तैजस शरीर के निमित्त से योग नहीं बनता है, इसलिए उसे ग्रहण नहीं किया है। **(सर्वा. २/४४)**

प्रश्न : योग मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : योग मार्गणा के अनुवाद से मनोयोगी वचनयोगी और काययोगी जीव होते हैं तथा अयोगी जीव होते हैं। **(ध.१/२७८)**

मनोयोग वचनयोग और काययोग के भेद से योग मार्गणा तीन प्रकार की है अथवा विस्तार से ४ मनोयोग, ४ वचन योग और सात काय योग मिलाकर १५ भेद भी होते हैं। **(वृ.द्र.सं.१३.टी)**

प्रश्न : योग मार्गणा में द्रव्य योग को ग्रहण करना चाहिए या भाव योग को ?

उत्तर : योग मार्गणा में भाव योग को ही ग्रहण करना चाहिए। सूत्र में ''इमानि'' पद से प्रत्यक्षी-भूत भाव मार्गणा स्थानों का ग्रहण करना चाहिए। द्रव्य मार्गणाओं का ग्रहण नहीं किया गया है, क्योंकि द्रव्य मार्गणाएँ देश काल और सम्भव की अपेक्षा दूरवर्ती हैं। अत एव अल्पज्ञानियों को उनका प्रत्यक्ष नहीं हो सकता है। **(ध.१/१३१)**

प्रश्न : योग रहित जीव कैसे होते हैं?

उत्तर : जिन आत्माओं के पुण्य-पाप रूप प्रशस्त और अप्रशस्त कर्मबन्ध के कारण मन वचन काय की क्रिया रूप शुभ और अशुभ योग नहीं हैं वे आत्माएँ चरम गुणस्थानवर्ती अयोग केवली और उसके अनन्तर गुणस्थान से रहित सिद्ध पर्याय रूप परिणत मुक्त जीव होते हैं। **(गो.जी. २४३)**

जो मन वचन काय वर्गणा के अवलम्बन से कर्मों के ग्रहण करने में कारण आत्मा के प्रदेशों का परिस्पन्दन रूप जो योग है उनसे रहित चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोगी जिन होते हैं। **(वृ.द्र.सं.टी.१३)**

कर्म विवक्षा

क्र.	योग	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	सत्य-अनुभय मन व वचनयोग	क्षायोपशमिक	मिथ्यात्व से सयोग.	गुणस्थान के समान	अनुभय वचनयोग द्वीन्द्रिय से होता है।
२.	असत्य-उभय मन-वचन योग	क्षायोपशमिक	मिथ्यात्व से क्षीणक.	गुणस्थान के समान	संज्ञी पंचेन्द्रिय के ही होते हैं।
३.	औदारिक काययोग	क्षायोपशमिक	मिथ्यात्व से सयोग	गुणस्थान के समान	
४.	औदारिकमिश्र.	क्षायोपशमिक	मिथ्यात्व सासादन सम्य. अविरत सम्य. सयोग केवली	औदयिक पारिणामिक क्षायिक,क्षायोप. क्षायिक	औपशमिक भाव नहीं होता है।
५.	वैक्रियिक.		मिथ्यात्व से अविरत.	गुणस्थान के समान	
६.	वैक्रियिकमिश्र		मिथ्यात्व सासादन सम्य. अविरति सम्य.	औदयिक पारिणामिक औप.क्षा.क्षायो.	
७.	आहारकद्विक		प्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	देवों की अपेक्षा औपशमिक भाव होता है।
८.	कार्मण		मिथ्यात्व सासादन सम्य. अविरत सम्य. सयोग केवली	औदयिक पारिणामिक औप.क्षा.क्षायो. क्षायिक	
९.	योगातीत	क्षय	अयोग केवली	क्षायिक	सिद्ध भगवान भी योगातीत होते हैं।

नोट : योग कथंचित् औदयिक, कथंचित् क्षायोपशमिक एवं कथंचित् पारिणामिक हैं अर्थात् तीनों ही मत मिलते हैं। **(ध.७/७५)**

प्रश्न : योग कौन सा भाव है?

उत्तर : सयोग यह कौनसा भाव है ? **उत्तर** 'सयोग' यह अनादि पारिणामिक भाव है। इसका कारण यह है कि योग न तो औपशमिक भाव है, क्योंकि मोहनीय कर्म का उपशम नहीं होने पर भी योग पाया जाता है।

न वह क्षायिक भाव है, क्योंकि आत्म स्वरूप से रहित योग की कर्म के क्षय से उत्पत्ति मानने में विरोध आता है।

योग घातिकर्मोदयजनित भी नहीं है, क्योंकि घाति कर्मोदय के नष्ट होने पर भी सयोग केवली में योग का सद्भाव पाया जाता है। न योग अघाति कर्मोदय जनित भी है, क्योंकि अघाति कर्मोदय के रहने पर भी अयोग केवली में योग नहीं पाया जाता है।

योग शरीर नाम कर्मोदय जनित भी नहीं है, क्योंकि पुद्गल विपाकी प्रकृतियों के जीव-परिस्पन्दन का कारण होने में विरोध.....। **(ध.५/२२५)**

योग क्षायोपशमिक है, क्योंकि जब शरीर नामकर्म के उदय से शरीर बनने के योग्य बहुत से पुद्गलों का संचय होता है और वीर्यान्तराय कर्म के सर्वघाती स्पर्धकों के उदयाभाव से व उन्हीं स्पर्धकों के सत्त्वोपशम से तथा देशघाती स्पर्धकों के उदय से उत्पन्न होने के कारण क्षायोपशमिक कहलाने वाला वीर्य बढ़ता है तब उस वीर्य को पाकर चूँकि जीव-प्रदेशों का संकोच-विकोच बढ़ता है, इसलिए योग क्षायोपशमिक कहा गया है। ऐसा भी नहीं कहना चाहिए कि अन्तराय कर्म का क्षय हो जाने से सिद्ध भगवान के योगों की बहुलता हो जायेगी, क्योंकि क्षायोपशमिक बल से क्षायिक बल भिन्न देखा जाता है। क्षायोपशमिक बल की वृद्धि-हानि को प्राप्त होने वाला जीवप्रदेशों का परिस्पन्दन क्षायिक बल से वृद्धि-हानि को प्राप्त नहीं होता, क्योंकि ऐसा मानने पर अतिप्रसंग दोष आता है। **(ध.७/७५)**

'योग' यह औदयिक भाव है, क्योंकि शरीर नामकर्म के उदय का विनाश होने के पश्चात् ही योग का विनाश पाया जाता है और ऐसा मानकर भव्यत्व भाव के साथ व्यभिचार भी नहीं आता है, क्योंकि कर्म सम्बन्ध के विरोधी भव्यत्व भाव को कर्म से उत्पत्ति मानने में विरोध आता है। **(ध.५/२२६)**

प्रश्न : यदि योग वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न होता है तो सयोगकेवली में योग के अभाव का प्रसंग आता है ?

उत्तर : नहीं आता, योग में क्षायोपशमिक भाव तो उपचार से है। असल में तो योग औदयिक भाव ही है और औदयिक योग का सयोग केवली के अभाव मानने में विरोध आता है।

प्रश्न : कितने योगों में चौथा गुणस्थान तीन भाव रूप होता है?

उत्तर : १२ योगों में चौथा गुणस्थान तीन भाव रूप होता है -

४ मनोयोग ४ वचन योग ४ काययोग -

(औदारिककाययोग, वैक्रियिकद्विक और कार्मण काययोग)

प्रश्न : कितने योगों में कितने गुणस्थान दो भाव रूप होते हैं?

उत्तर : नौ योगों में तीन गुणस्थान दो भाव रूप होते हैं -

४ मनोयोग ४ वचनयोग १ औदारिककाय योग

इनमें आठवाँ, नवाँ एवं दसवाँ गुणस्थान औपशमिक एवं क्षायिक इन दो भाव रूप होता है।

प्रश्न : कितने योगों का केवल एक गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होता है?

उत्तर : दो योगों का केवल एक गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होता है-

वैक्रियिक काय योग एवं वैक्रियिकमिश्र काययोग।

इन दोनों योगों का चौथा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होता है।

योगातीत अवस्था में चौदहवाँ गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होता है।

प्रश्न : कितने योगों के गुणस्थान पाँचों भाव रूप हो सकते हैं ?

उत्तर : १२ योगों के गुणस्थान पाँचों भाव रूप हो सकते हैं-

४ मनोयोग, ४ वचनयोग, ४ काययोग

(यहाँ औदारिक काययोग, वैक्रियिकद्विक एवं कार्मण काययोग का ग्रहण करना चाहिए)

इनमें - पहला गुणस्थान - औदयिक भाव रूप

दूसरा गुणस्थान - पारिणामिक भाव रूप

तीसरा गुणस्थान, क्षायोपशमिक भाव रूप

चौथा गुणस्थान - औप. क्षा. क्षायो. भाव रूप

वैक्रियिकमिश्र एवं कार्मण काययोग में तीसरा गुणस्थान नहीं होता है।

प्रश्न : कितने योगों के छह गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : पाँच योगों के छह गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं -

२ मनोयोग - सत्य एवं अनुभय

२ वचनयोग - सत्य एवं अनुभय

१ काययोग - औदारिक काययोग

इनमें - चौथा, आठवाँ, नवाँ, दसवाँ, बारहवाँ और तेरहवाँ गुणस्थान।

चौथा गुणस्थान सम्यक्त्व की अपेक्षा तथा शेष गुणस्थानों में चारित्र की अपेक्षा जानना चाहिए। पाँचवें आदि गुणस्थानों में भी क्षायिक सम्यक्त्व होता है लेकिन वहाँ (चारित्र मोहनीय की अपेक्षा होने से) क्षायिक भाव नहीं है।

प्रश्न : अयोग अवस्था को क्षायिक लब्धि रूप क्यों कहा है?

उत्तर : योग के कारणभूत शरीरादिक कर्मों के निर्मूल क्षय से उत्पन्न होने के कारण अयोगी जीव के क्षायिक लब्धि होती है। **(ध.७/७८)**

स्थान-विवेचन

प्रश्न : योग मार्गणा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : योग मार्गणा में मुख्य रूप से १२ स्थान होते हैं -

(१) १५ योग रूप (२) १३ योग रूप (३) १२ योग रूप (४) ११ योग रूप (५) १० योग रूप (६) ९ योग रूप (७) ७ योग रूप (८) ४ योग रूप (९) ३ योग रूप (१०) २ योग रूप (११) १ योग रूप (१२) योगातीत

प्रश्न : इन स्थानों में किन-किन योगों को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में योग -

१५ योग - ४ मनोयोग ४ वचनयोग ७ काययोग

१३ योग - ४ मनोयोग ४ वचनयोग ५ काययोग (वैक्रियिकद्विक या आहारकद्विक बिना)

१२ योग - ४ मनोयोग ४ वचनयोग ४ काययोग (औदा. वैक्रियिकद्विक एवं कार्म.)

११ योग - ४ मनोयोग ४ वचनयोग ३ काययोग (वैक्रियिकद्विक एवं कार्म.) या (औदारिकद्विक एवं कार्म.) औदारिक एवं आहारकद्विक, औदारिकमिश्र वैक्रियिक एवं कार्म.

१० योग - ४ मनोयोग ४ वचनयोग २ काययोग (औदारिक एवं वैक्रियिक)

९ योग - ४ मनोयोग ४ वचनयोग १ काययोग (औदारिक या वैक्रियिक)

७ योग - २ मनोयोग २ वचनयोग ३ काययोग

४ योग - १ वचनयोग ३ काययोग

३ योग - ३ काययोग

२ योग - २ काययोग

१ योग - काययोग (औदारिक काययोग)

योगातीत - सभी योगों से रहित

नोट : (१) स्वकीय योग की अपेक्षा भी एक योग हो सकता है।

(२) उपर्युक्त स्थान मुख्य रूप से बनाये गये हैं और भी अनेक स्थान बन सकते हैं उन्हें प्राज्ञजन बना लेवें।

प्रश्न : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

१५ योग रूप स्थान में २५ भाव-

क्षायिक भाव का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२-३ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १०-४क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

१३ योग रूप स्थान में ११ भाव -

क्षायोपशमिक भाव के २ - कुमति कुश्रुतज्ञान

औदयिक के ८ - १ ग. (म.) २ लि. १ मि. १ असं. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

१२ योग रूप स्थान में १ भाव

औपशमिक सम्यक्त्व

११ योग रूप स्थान में ५ भाव

क्षायिक भाव का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक का १ - चारित्र

औदयिक के ३ - नरकगति तिर्यःगगति देवगति

९ योग रूप स्थान में ३ भाव -

औपशमिक भाव का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के २ - मन:पर्ययज्ञान और संयमासंयम

१० योग रूप स्थान में १ भाव

विभंगावधिज्ञान

७ योग रूप स्थान में ७ भाव -

क्षायिकभाव के - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य।

शेष ४, ३, २ और १ योग रूप स्थानों में एक भी भाव नहीं है अर्थात् ऐसा कोई भाव नहीं है जिसमें केवल ४ योग रूप........स्थान ही पाया जाता हो।

प्रश्न : इन योग स्थानों के स्वामी कौन-कौन हैं?

उत्तर : इन योगस्थानों के स्वामी -

- १३ योग रूप स्थान के - मनुष्यगति एवं प्रथम द्वितीय एवं चतुर्थ गुणस्थानवर्ती
- ११ योग रूप स्थान के - देवगति, नरकगति, तिर्यञ्चगति एवं छठे गुणस्थानवर्ती
- १० योग रूप स्थान के - तृतीयगुणस्थानवर्ती जीव
- ९ योग रूप स्थान के - पंचम एवं सातवें से बारहवें गुणस्थानवर्ती
- ७ योग रूप स्थान के - तेरहवें गुणस्थानवर्ती भगवान
- योगातीत स्थान के - चौदहवें गुणस्थानवर्ती भगवान

विशेष :

- १५ योग रूप स्थान के - पःोन्द्रिय त्रस आदि।
- १२ योग रूप स्थान के - चतुर्थ गुणस्थानवर्ती - उपशम सम्यग्दृष्टि आदि
- ४ योग रूप स्थान के - द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पःोन्द्रिय आदि
- ३ योग रूप स्थान के - एकेन्द्रिय आदि
- २ योग रूप स्थान के - लब्ध्यपर्याप्तक
- १ योग रूप स्थान के - तीसरे शुक्ल ध्यान में स्थित भगवान

प्रश्न : १३ योग रूप स्थान कितने औदयिक भावों में पाया जाता है?

उत्तर : १३ योग रूप स्थान ८ औदयिक भावों में पाया जाता है -

- १ गति - मनुष्य
- २ लिङ्ग - स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग
- १ - मिथ्यादर्शन
- १ - असंयत
- ३ लेश्या - कृष्ण, नील, कापोत

प्रश्न : कितने योगस्थानों में केवल एक गति रूप भाव होता है?

उत्तर : ४ योगस्थानों में केवल एक गति रूप भाव होता है-

- १३ योग रूप स्थान में - मनुष्य गति
- ७ योग रूप स्थान में - मनुष्य गति
- १ योग रूप स्थान में - मनुष्य गति
- योगातीत स्थान में - मनुष्यगति

विशेष : ४ एवं ३ योग रूप स्थान भी केवल तिर्यःागति में ही होते हैं।

४ म. ४ व. ३ का. (आहारकद्विक एवं औदारिक) रूप स्थान भी केवल मनुष्यगति में ही होता है।

प्रश्न : कितने योगस्थान में केवल एक भाव पाया जाता है?

उत्तर : दो योगस्थानों में केवल एक-एक भाव पाया जाता है -

- १२ योग रूप स्थान में - औपशमिक सम्यक्त्व
- १० योग रूप स्थान में - विभंगावधि ज्ञान

प्रश्न : कितने योग स्थानों के भाव संयमी, असंयमी और केवली भगवान के भी होते हैं?

उत्तर : २ योगस्थानों के भाव संयमी, असंयमी और केवली भगवान के भी होते हैं -

- १३ योग रूप स्थान के भावों में से १ - मनुष्यगति
- १५ योग रूप स्थान के भावों में से ५ - क्षायिक सम्यक्त्व, असिद्धत्व, शुक्ल लेश्या जीवत्व, भव्यत्व।

ये छह भाव संयमी, असंयमी और केवली भगवान तीनों के होते हैं।

प्रश्न : कितने योगस्थानों में पाँचों मूल भाव होते हैं?

उत्तर : केवल एक योगस्थान में पाँचों मूल भाव होते हैं -

- ११ योग रूप स्थान में - औपशमिक भाव का - सम्यक्त्व
  क्षायिक का - सम्यक्त्व
  क्षायोपशमिक का - चारित्र
  औदयिक की - १ गति ४ क.......
  पारिणामिक के - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

प्रश्न : कितने योग स्थान पर्याप्त अवस्था में होने वाले भावों के साथ ही होते हैं?

उत्तर : दो योगस्थान पर्याप्तक अवस्था में होने वाले भावों के साथ ही होते हैं -

- १० योग रूप स्थान - विभंगावधिज्ञान
- ९ योग रूप स्थान - औपशमिक चारित्र, मन:पर्ययज्ञान और संयमासंयम

प्रश्न : कितने योगस्थान वालों के क्षायिक भाव भी होता है?

उत्तर : ६ योगस्थान वालों के क्षायिक भाव भी होता है -

१५ योग रूप स्थान - क्षायिकसम्यक्त्व

१३ योग रूप स्थान - क्षायिकसम्यक्त्व

११ योग रूप स्थान - क्षायिक सम्यक्त्व चारित्र

९ योग रूप स्थान - क्षायिक सम्यक्त्व चारित्र (गुणस्थानों की अपेक्षा)

७ योग रूप स्थान - क्षायिक ज्ञान दर्शन आदि ९

१ योग रूप स्थान - क्षायिक ज्ञान दर्शन आदि ९

प्रश्न : कितने योग स्थानों में सम्यक्त्व के साथ होने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : चार योगस्थानों में सम्यक्त्व के साथ होने वाले भाव होते हैं -

- १२ योगरूप स्थान में - औपशमिक सम्यक्त्व (द्वितीयोपशम)
- ९ योगरूप स्थान में - मन:पर्ययज्ञान, संयमासंयम तथा क्षायोपशमिक चारित्र
- ७ एवं एक योग रूप स्थान में - क्षायिक ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, सम्यक्त्व एवं चारित्र

प्रश्न : किस मार्गणा के किस उत्तरभेद में १५ योग रूप स्थान हो सकता है?

उत्तर : वे मार्गणाएँ जिनके उत्तर भेद में १५ योग रूप स्थान हो सकता है -

इन्द्रिय मार्गणा - पञ्चेन्द्रिय

काय मार्गणा - त्रस काय

वेद मार्गणा - पुरुषवेद

कषाय मार्गणा - ७ नोकषाय

ज्ञान मार्गणा - मति-श्रुत अवधिज्ञान

दर्शन मार्गणा - चक्षु अचक्षु अवधिदर्शन

लेश्या मार्गणा - पीत पद्म शुक्ल लेश्या

भव्य मार्गणा - भव्यत्व

सम्यक्त्व मार्गणा - क्षायिक और क्षायोपशमिक

संज्ञी मार्गणा - संज्ञी

भावों में योगस्थान

क्र.	भाव	स्थान संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	४	१२ योग. ११ यो. १० यो. ९ यो.	
	चारित्र	१	९ योगरूप	आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान तक होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	६	१३ यो.११यो.९यो.७यो.१यो.योगा.	
	चारित्र	४	९ यो. ७ यो. १ यो. योगा.	९ योग का स्थान ८ वें से १२ वें गुण. तक बनता है।
	ज्ञानादि सात	३	७ यो. १ यो. योगा.	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	३	१३ यो. ११ यो. ९ यो.	
	मन:पर्ययज्ञान	१	९ योगरूप	
	२ अज्ञान	२	१३ यो. ११ यो.	११ योग रूप स्थान तीन गति की अपेक्षा होता है।
	चक्षु-अचक्षु.	४	१३ यो. ११ यो. १० यो. ९ यो.	
	अवधिदर्शन	३	१३ यो. ११ यो. ९ यो.	
	५ लब्धि	४	१३ यो. ११ यो. १० यो. ९ यो.	
	सम्यक्त्व	३	१३ यो. ११ यो. ९ यो.	९ योग रूप स्थान केवल सातवें गुण. में होता है।
	चारित्र	२	११ यो. ९ यो.	
	संयमासंयम	१	९ योगरूप	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	२	११ यो. ९ यो.	
	तिर्यःगति	२	११ यो. ९ यो.	९ योग रूप स्थान तीसरे एवं पाँचवें गुण. में होता है।
	मनुष्यगति	६	१३ यो.११यो.९यो.७ यो.१यो.योगा.	
	देवगति	२	११ यो. ९ यो.	
	४ कषाय	४	१३ यो. ११ यो. १० यो. ९ यो.	
	स्त्रीलिङ्ग	४	१३ यो. ११ यो. १० यो. ९ यो.	
	पुरुष लिङ्ग	४	१३ यो. ११ यो. १० यो. ९ यो.	
	नपुंसकलिङ्ग	४	१३ यो. ११ यो. १० यो. ९ यो.	
	मिथ्यादर्शन	२	१३ यो. ११ यो.	
	अज्ञान	४	१३ यो. ११ यो. १० यो. ९ यो.	
	असंयत	३	१३ यो. ११ यो. १० यो.	१० यो. स्थान तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	असिद्धत्व	७	१३ यो.११यो.१०यो.९यो.७ यो. १ यो. योगा.	
	३ अशुभ लेश्या	३	१३ यो. ११ यो. १० यो.	१० योग रूप स्थान तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	पीत-पद्म लेश्या	४	१३ यो. ११ यो. १० यो. ९ यो.	
	शुक्ल लेश्या	६	१३ यो.११यो.१०यो.९यो.७यो.१यो.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	७	१३ यो.११यो.१०यो.९यो.७यो.१यो.योगा.	
	भव्यत्व	७	१३ यो.११यो.१०यो.९यो.७यो.१यो.योगा.	
	अभव्यत्व	२	१३ यो. ११ यो.	

प्रश्न : कितने भावों में ४,३ एवं २ योग रूप स्थान भी बन सकते हैं?

उत्तर : २३ भावों में ४,३ एवं २ योग रूप स्थान भी बन सकते हैं -

- क्षायोपशमिक के ७-२ दर्शन ५ लब्धि
- औदयिक के १३-१ गति (तिर्य.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या (अशुभ)
- पारिणामिक के ३- जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में केवल एक योग स्थान होता है?

उत्तर : चार भावों में केवल एक योग स्थान होता है -

(१) औपशमिक चारित्र (२) मन:पर्यय ज्ञान (३) संयमासंयम

इन तीन भावों में ४ म. ४ व १ का. (औदा.) रूप नौ योग का स्थान होता है।

(४) विभंगावधिज्ञान में - ४ म. ४ व. २ का. (औदा. वैकि.) रूप १० योग का स्थान होता है।

नोट : विभंगावधिज्ञान पर्याप्त अवस्था में ही होता है इसलिए किसी गति विशेष की अपेक्षा लेने पर ९ योग रूप स्थान होता है।

प्रश्न : गति रूप भावों में ९ योग रूप स्थान किस अपेक्षा बनता है?

उत्तर : गति रूप भावों में ९ योग रूप स्थान -

- नरकगति में - दूसरे एवं तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा।

  दूसरे आदि नरकों में चौथे गुणस्थान में भी ९ योग रूप स्थान ही बनता है, क्योंकि सम्यग्दृष्टि प्रथम नरक से आगे नहीं जाता है।
- तिर्य:गगति में - तीसरे एवं पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा
- मनुष्यगति में - तीसरे पाँचवें तथा सातवें गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा
- देवगति में - तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा

  भवनत्रिक तथा सभी देवांगनाओं के चौथे गुणस्थान में भी ९ योग.....

प्रश्न : अवधिदर्शन रूप भाव में ९ योग रूप स्थान कितने गुणस्थानों में बनता है?

उत्तर : अवधिदर्शन रूप भाव में ९ योग रूप स्थान ७ गुणस्थानों में बनता है -

संयतासंयत, अप्रमत्तविरत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय, उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय।

द्वितीयादि नरक में जहाँ जीव सम्यग्दर्शन लेकर नहीं जा सकता वहाँ चौथे गुणस्थान में भी ९ योग रूप स्थान होता है।

प्रश्न : कितने भावों में १० योग रूप स्थान होता है?

उत्तर : २६ भावों में १० योग रूप स्थान होता है -

- क्षायोपशमिक के ८-१ अज्ञा. (विभंगा.) २ दर्श. (च. अच.) ५ लब्धि
- औदयिक के १६-४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या
- पारिणामिक के २- जीवत्व भव्यत्व

नोट : १. प्रथमोपशम सम्यक्त्व में भी १० योग रूप स्थान होता है।

२. इन सब भावों में तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा १० योग रूप स्थान होता है।

३. यद्यपि चारों गतियों में भी तीसरा गुणस्थान होता है लेकिन वहाँ ९ योग रूप स्थान ही बनता है, क्योंकि किसी भी गति में औदारिक एवं वैक्रियिक दोनों योग नहीं हो सकते हैं।

प्रश्न : कितने भावों में १३ योग रूप स्थान नहीं होता है?

उत्तर : १७ भावों में १३ योग रूप स्थान नहीं होता है -

- औपशमिक के २- सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायिक के ८- सम्यक्त्व के बिना
- क्षायोपशमिक के ४-१ ज्ञा. (मन:पर्य.) १ अज्ञान (विभंग) १ चारित्र १ संयमा.
- औदयिक के ३-नरकगति तिर्यःगति देवगति

प्रश्न : औपशमिक एवं क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में योगस्थान किस-किस अपेक्षा से बनेंगे?

उत्तर : औपशमिक एवं क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में योगस्थान -

औपशमिक सम्यक्त्व में -

- १२ योग रूप स्थान - चतुर्थगुणस्थानवर्ती उपशम सम्यग्दृष्टि
- ११ योग रूप स्थान - चतुर्थगुणस्थानवर्ती द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि
- १० योग रूप स्थान - चतुर्थगुणस्थानवर्ती प्रथमोपशम सम्यग्दृष्टि
- ९ योग रूप स्थान - पाँचवें गुणस्थान से ग्यारहवें गुण. उपशमसम्यग्दृष्टि

क्षायिक सम्यक्त्व -

- १३ योग रूप स्थान - मनुष्यगति में
- ११ योग रूप स्थान - नरक तिर्यःा देवगति एवं छठे गुणस्थानवर्ती
- ९ योग रूप स्थान - पाँचवें और सातवें से बारहवें गुणस्थान तक
- ७ योग रूप स्थान - तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा
- १ योग रूप स्थान - तेरहवाँ गुणस्थान
- योगातीत स्थान - चौदहवें गुणस्थान तथा सिद्ध भगवान की अपेक्षा

प्रश्न : कितने भावों में ७ योगस्थान होते हैं?

उत्तर : केवल ३ भावों में ७ योगस्थान होते हैं -

(१) असिद्धत्व (२) जीवत्व (३) भव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में ९ योग रूप स्थान नहीं होता है?

उत्तर : १८ भावों में ९ योग रूप स्थान नहीं होता है -

- क्षायिक भाव के ७ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य
- क्षायोपशमिक के ३ - मत्यज्ञान श्रुताज्ञान विभंगज्ञान
- औदयिक के ७ - १ मिथ्यादर्शन १ असंयत ५ लेश्या (शुक्ल लेश्या बिना)
- पारिणामिक के १ - अभव्यत्व

भावों में योग

क्र.	भाव	संख्या	योग	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१२	४ म. ४ व. ४ का.	आहारकद्विक एवं औदारिकमिश्र नहीं है।
	चारित्र	९	४ म. ४ व. १ का.	औदारिक काययोग होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१५	४ म. ४ व. ७ का.	
	चारित्र	११	४ म. ४ व. ३ का.	
	ज्ञानादिसात	७	२ म. २ व. ३ का.	सत्य एवं अनुभय योग होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	१५	४ म. ४ व. ७ का.	
	मन:पर्ययज्ञान	९	४ म. ४ व. १ का.	औदारिक काययोग होता है।
	२ अज्ञान	१३	४ म. ४ व. ५ का.	आहारकद्विक काययोग नहीं है।
	विभंगावधिज्ञान	१०	४ म. ४ व. २ का.	औदारिक एवं वैक्रियिक काययोग होता है।
	३ दर्शन	१५	४ म. ४ व. ७ का.	
	५ लब्धि	१५	४ म. ४ व. ७ का.	
	सम्यक्त्व	१५	४ म. ४ व. ७ का.	
	चारित्र	११	४ म. ४ व. ३ का.	औदारिक एवं आहारकद्विक योग होता है।
	संयमासंयम	९	४ म. ४ व. १ का.	औदारिक काययोग होता है।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	११	४ म. ४ व. ३ का.	
	तिर्यंचगति	११	४ म. ४ व. ३ का.	औदारिकद्विक एवं कार्मण काययोग होता है।
	देवगति	११	४ म. ४ व. ३ का.	
	मनुष्यगति	१३	४ म. ४ व. ५ का.	वैक्रियिकद्विक योग नहीं होते हैं।
	चार कषाय	१५	४ म. ४ व. ७ का.	
	स्त्रीलिङ्ग	१३	४ म. ४ व. ५ का.	
	पुरुषलिङ्ग	१५	४ म. ४ व. ७ का.	
	नपुंसकलिङ्ग	१३	४ म. ४ व. ५ का.	आहारकद्विक योग नहीं है।
	मिथ्यादर्शन	१३	४ म. ४ व. ५ का.	
	अज्ञान	१५	४ म. ४ व. ७ का.	
	असंयत	१३	४ म. ४ व. ५ का.	
	असिद्धत्व	१५	४ म. ४ व. ७ का.	योगातीत जीवों के भी होता है।
	३ अशुभ लेश्या	१३	४ म. ४ व. ५ का.	
	३ शुभ लेश्या	१५	४ म. ४ व. ७ का.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	१५	४ म. ४ व. ७ का.	सिद्ध भगवान के भी होता है।
	भव्यत्व	१५	४ म. ४ व. ७ का.	
	अभव्यत्व	१३	४ म. ४ व. ५ का.	आहारकद्विक योग नहीं है।

प्रश्न : कितने भावों में १३ योग होते हैं?

उत्तर : ११ भावों में १३ योग होते हैं -

क्षायोपशमिक भाव के २ - मत्यज्ञान, श्रुताज्ञान

औदयिक के ८ - मनुष्यगति स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग मिथ्या. असं. कृष्ण. नील. कापो. लेश्या

पारिणामिक के १ - अभव्यत्व

इनमें आहारकद्विक बिना तेरह योग होते हैं।

प्रश्न : कितने भावों में वैक्रियिकद्विक काय योग नहीं होता है?

उत्तर : १५ भावों में वैक्रियिकद्विक काययोग नहीं होता है -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना

क्षायोपशमिक के ४ - विभंगावधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान, चारित्र, संयमासंयम

औदयिक के २ - तिर्यःगति, मनुष्यगति

नोट : १. प्रथमोपशम सम्यक्त्व में वैक्रियिक काययोग तथा द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में वैक्रियिकमिश्र काययोग होता है इसलिए उपशम सम्यक्त्व रूप भाव में दोनों योग बन जाते हैं।

२. विभंगावधिज्ञान में वैक्रियिक मिश्र काययोग नहीं है इसलिए उसका ग्रहण किया है।

प्रश्न : कितने भावों में १० योग होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव में १० योग होते हैं - विभंगावधिज्ञान।

इसमें ४ मनोयोग ४ वचनयोग तथा औदारिक एवं वैक्रियिक ये दो काययोग होते हैं।

प्रथमोपशम सम्यक्त्व में भी ये ही १० योग होते हैं, लेकिन प्रथमोपशम सम्यक्त्व कोई अलग से भाव नहीं है इसलिए उसका यहाँ ग्रहण नहीं किया है। इन दोनों में मरण नहीं होता है।

प्रश्न : कितने भावों में आहारकद्विक एवं औदारिकमिश्र ये तीनों काययोग नहीं होते हैं?

उत्तर : सात भावों में आहारकद्विक एवं औदारिकमिश्र, ये तीनों काययोग नहीं होते हैं -

औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व और चारित्र

क्षायोपशमिक के ३ - विभंगावधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान तथा संयमासंयम

औदयिक के २ - नरकगति एवं देवगति

क्षायोपशमिक चारित्र रूप भाव में आहारकद्विक काययोग है परन्तु औदारिक मिश्र काययोग नहीं है।

शेष भावों में औदारिकमिश्र काययोग है लेकिन आहारकद्विककाययोग नहीं है।

प्रश्न : क्षायिक भाव के कितने भेदों में ११ योग होते हैं?

उत्तर : क्षायिक भाव के एक भेद में ११ योग होते हैं -

क्षायिक चारित्र, इसमें ४ मनोयोग ४ वचनयोग और औदारिकद्विक एवं कार्मण, ये तीन काययोग होते हैं। औदारिकमिश्र तथा कार्मण काययोग केवली समुद्घात की अपेक्षा होते हैं।

प्रश्न : औदयिक भाव के कितने भेदों में १५ योग होते हैं?

उत्तर : औदयिक भाव के दस भेदों में १५ योग होते हैं -

४ कषाय - क्रोध मान माया लोभ,

१ लिङ्ग (पुरु.) १ अज्ञान १ असिद्धत्व ३ लेश्या - पीत पद्म शुक्ल

प्रश्न : कितने भावों में २ मनोयोग एवं २ वचनयोग होते हैं?

उत्तर : सात क्षायिक भावों में २ मनोयोग एवं २ वचनयोग होते हैं -

क्षायिक ज्ञान क्षायिक दर्शन क्षायिक दान क्षायिक लाभ क्षायिक भोग क्षायिक उपभोग तथा क्षायिक वीर्य।

इन सात भावों में सत्य एवं अनुभय मनोयोग तथा सत्य एवं अनुभय वचन योग होते हैं।

प्रश्न : कितने भावों में ३ काययोग होते हैं?

उत्तर : १२ भावों में ३ काययोग होते हैं -

- क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व के बिना (औदारिकद्विक एवं कार्मण)
- क्षायोपशमिक का १ - चारित्र (आहारकद्विक एवं औदारिक)
- औदयिक के ३ - नरकगति, देवगति (वैक्रियिकद्विक एवं कार्मण) तिर्यःागति (औदारिकद्विक एवं कार्मण)

नोट : द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में भी औदारिक, वैक्रियिकमिश्र एवं कार्मण, ये तीन काययोग होते हैं, लेकिन द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का भावों में अलग से ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न : कितने भावों में कार्मण काययोग नहीं होता है?

उत्तर : पाँच भावों में कार्मण काययोग नहीं होता है -

- औपशमिक भाव का १ - चारित्र
- क्षायोपशमिक भाव के ४ - विभंगावधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान, चारित्र एवं संयमासंयम

प्रथमोपशम सम्यक्त्व में भी कार्मण काययोग नहीं होता है, क्योंकि इसमें मरण नहीं होता है।

प्रश्न : क्या कोई ऐसे भाव हैं जिनमें योगों का अभाव भी हो सकता है?

उत्तर : हाँ, १३ भावों में योगों का अभाव भी हो सकता है -

- क्षायिक भाव के ९ - ज्ञान दर्शन.......
- औदयिक के २ - मनुष्यगति असिद्धत्व
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में सातों काय योग होते हैं?

उत्तर : २५ भावों में सातों काययोग होते हैं -

- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के - १२ - ३ ज्ञान, ३ दर्शन, ५ लब्धि, १ सम्यक्त्व
- औदयिक के - १० - ४ क. १ लिंग (पु.) १ अज्ञान १ असिद्ध ३ शुभलेश्या
- पारिणामिक के २ जीवत्व, भव्यत्व

सत्यादि चार योग

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व	चौथे गुण. से ग्यारहवें गुण. तक होता है।
			चारित्र	
२.	**क्षायिक**	९	ज्ञान दर्शन....	
३.	**क्षायोपशमिक**	१८	४ ज्ञा. म. श्रु. अव. मनः.	
			३ अज्ञान-मत्यज्ञान श्रुताज्ञान विभंगावधि	
			३ दर्शन - चक्षु. अच. अव.	
			५ लब्धि - दान लाभ....	पहले गुण. से बारहवें गुण. तक होता है।
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - चारित्र	छठे सातवें गुणस्थान में होता है।
			१ - संयमासंयम	
४.	**औदयिक**	२१	४ गति - नरक......	
			४ कषाय. क्रोध-मान....	
			३ लिङ्ग - स्त्री. पु. नपुं.	
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	पहले से चौथे गुण. तक होता है।
			१ - असिद्धत्व	
			६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	

प्रश्न : यहाँ किन-किन योगों को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : • सत्य मनोयोग • अनुभय मनोयोग

• सत्य वचन योग • अनुभय वचन योग

यहाँ इन चार योगों को ग्रहण करना चाहिए।

प्रश्न : सत्यादि चार योगों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सत्यादि चार योगों में ५३ भाव होते हैं -

औपशमिक के २, क्षायिक के ९, क्षायोपशमिक के १८, औदयिक के २१, पारिणामिक के ३।

नोट : असत्य मनोयोग, उभयमनोयोग, असत्य वचनयोग, उभय वचनयोग, इन चार योगों में मात्र क्षायिक के सात भाव (सम्यक्त्व, चारित्र बिना) नहीं होते हैं अर्थात् इनमें ४६ भाव होते हैं।

प्रश्न : सत्यमनोयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : सत्य, अवितथ और अमोघ ये एकार्थवाची शब्द हैं। सत्य के विषय में होने वाले मन को सत्य मन कहते हैं और उसके द्वारा जो योग होता है उसे सत्य मनोयोग कहते हैं। **(ध.१/२८२)**

सत्य वचन निमित्तक मन के निमित्त से होने वाले योग को सत्य मनोयोग कहते हैं। **(ध.१/२८३)** सद्भाव अर्थात् सत्यार्थ को विषय करने वाले मन को सत्य मन कहते हैं और उससे जो योग होता है उसे सत्य मनोयोग कहते हैं। **(ध.१/२८३)**

प्रश्न : अनुभय मनोयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : सत्य मनोयोग और मृषा मनोयोग से व्यतिरिक्त योग को असत्यमृषा अनुभय मनोयोग कहते हैं। **(ध.१/२८१)**

जो मन सत्य और असत्य से युक्त नहीं होता, वह असत्यमृषा मन है अर्थात् अनुभय अर्थ के ज्ञान को उत्पन्न करने की शक्ति रूप भाव मन से उत्पन्न प्रयत्न विशेष अनुभय मनोयोग है। **(गो.जी. २१९)**

प्रश्न : सत्य वचन योग किसे कहते हैं?

उत्तर : दस प्रकार के सत्य वचन में वचन वर्गणा के निमित्त से जो योग होता है उसे सत्य वचन योग कहते हैं। **(ध. १/२८८)** सत्य अर्थ का वाचक वचन सत्य वचन है। स्वर नाम कर्म के उदय से प्राप्त भाषा पर्याप्ति से उत्पन्न भाषा वर्गणा के आलम्बन से आत्मप्रदेशों में शक्ति रूप जो भाव वचन से उत्पन्न योग अर्थात् प्रयत्न विशेष है वह सत्य वचन योग है।

प्रश्न : अनुभय वचन योग किसे कहते हैं?

उत्तर : जो न सत्य रूप है और न मृषा रूप ही है उसे असत्यमृषा/अनुभय वचन योग कहते हैं।

असंज्ञी जीवों की भाषा और संज्ञी जीवों की आमन्त्रणी....आदि भाषायें इसके उदाहरण हैं। **(ध. १/२८८-८९)**

जो सत्य और असत्य अर्थ को विषय नहीं करता वह असत्यमृषा अर्थ को विषय करने वाला वचन व्यापार रूप प्रयत्न विशेष अनुभय वचन योग है। दो इन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्यन्त जीवों की जो अनक्षरात्मक भाषा है तथा संज्ञी पंचेन्द्रियों की जो आमंत्रण आदि रूप अक्षरात्मक भाषा है। जैसे - देवदत्त ! आओ, यह मुझे दो, क्या करूँ, आदि सब अनुभय वचन योग कहे जाते हैं। **(गो.जी. २२१)**

प्रश्न : सत्यादि चार योगों का कारण क्या है?

उत्तर : सत्य तथा अनुभय मन वचन योग का मूल, प्रधान कारण पर्याप्त नामकर्म और शरीर नामकर्म का उदय है। **(गो.जी. २२७)**

प्रश्न : अनुभय मनोयोगी चक्षुदर्शनी के किस-किस भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : अनुभय मनोयोगी चक्षुदर्शनी के चार भावों के सभी उत्तर भेद होते हैं -

औपशमिक, क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक

क्षायिक भाव के सम्यक्त्व एवं चारित्र को छोड़कर शेष भाव नहीं होते हैं, क्योंकि शेष भाव केवलदर्शन वालों के होते हैं।

प्रश्न : अनुभय वचन योगी द्वीन्द्रिय जीवों के कितने औदयिक भाव होते हैं?

उत्तर : अनुभय वचन योगी द्वीन्द्रिय जीवों के १३ औदयिक भाव होते हैं -

१ गति - तिर्यःगति

४ कषाय - को.मा.माया लोभ

१ लिंग - नपुंसक

१ मिथ्यादर्शन १ अज्ञान १ असंयत १ असिद्धत्व

३ लेश्या - कृष्ण नील कापोत।

इसी प्रकार अनुभय वचन योगी, त्रीन्द्रिय आदि जीवों के जानना चाहिए।

प्रश्न : अनुभय वचन योगी के औदयिक अज्ञान के साथ ज्ञान मार्गणा के कितने भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : अनुभय वचन योगी के औदयिक अज्ञान के साथ ज्ञान मार्गणा के सात भेद पाये जाते हैं-

४ ज्ञान - मति श्रुत अवधि एवं मन:पर्ययज्ञान

३ अज्ञान - मत्यज्ञान श्रुताज्ञान विभंगावधिज्ञान

नोट : केवलज्ञान नहीं होता है, क्योंकि केवलज्ञान के साथ अनुभयवचन योग तो होता है लेकिन उनके अज्ञान भाव नहीं होता है।

प्रश्न : सत्य मनोयोगी के असिद्धत्व भाव के साथ कितने पारिणामिक भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : सत्य मनोयोगी के असिद्धत्व भाव के साथ तीनों पारिणामिक भाव पाये जाते हैं, क्योंकि सत्य मनोयोग मिथ्यादृष्टि से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक पाया जाता है।

प्रश्न : सत्य मनोयोग में कम-से-कम कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सत्य मनोयोग में कम-से-कम १४ भाव होते हैं -

क्षायिक के ९, औदयिक के ३ - १ गति १ असिद्धत्व १ लेश्या (शुक्ल), पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

ये भाव १३ वें गुणस्थान की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : असत्य मनोयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : असत्य अर्थ को विषय करने वाले ज्ञान को उत्पन्न करने की शक्ति रूप भाव मन से उत्पन्न प्रयत्न विशेष मृषा अर्थात् असत्य मनोयोग है। जैसे-मरीचिका में जलज्ञान का विषय जल असत्य है, क्योंकि उसमें स्नान-पान आदि अर्थक्रिया का अभाव है। **(गो.जी. २१८)**

असत्य वचन निमित्तक मन से होने वाले योग को असत्य मनोयोग कहते हैं। **(ध.१/२८३)**

असत्य, वितथ ये एकार्थवाची शब्द हैं। असत्य के विषय में होने वाले मन को असत्य मन कहते हैं और उसके द्वारा जो योग होता है उसे असत्य मनोयोग कहते हैं। **(ध.१/२८२)**

प्रश्न : उभय मनोयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : सत्य और मृषा (असत्य) इन दोनों रूप वचन निमित्तक मन से होने वाले योग को उभय मनोयोग कहते हैं। **(ध.१/२८३)**

जो योग सत्य और मृषा इन दोनों के संयोग से उत्पन्न होता है उसे सत्य मृषा/उभय मनोयोग कहते हैं। **(ध.१/२८२)**

प्रश्न : असत्य वचन योग किसे कहते हैं?

उत्तर : असत्य अर्थ का वाचक वचन असत्य वचन व्यापार रूप प्रयत्न असत्य वचन योग है। **(गो.जी. २२०)**

प्रश्न : उभय वचन योग किसे कहते हैं?

उत्तर : सत्यमृषा रूप वचन योग को उभय वचन योग कहते हैं। **(ध.१/२८८)**

कमण्डलु में घट व्यवहार की तरह सत्य और असत्य अर्थ विधायक वचन व्यापार रूप

प्रयत्न उभय वचन योग है। **(गो.जी. २२०)**

प्रश्न : उभय मनोयोगी के औदयिक भाव के चार भेद कितने गुणस्थानों में होते हैं?

उत्तर : उभय मनोयोगी के औदयिक भाव के चार भेद मात्र दो गुणस्थानों में होते हैं -

ग्यारहवें, बारहवें में; इसमें मनुष्यगति अज्ञान असिद्धत्व और शुक्ल लेश्या। इसी प्रकार तीनों मनोयोग और चारों वचन योग एवं औदयिक काययोग में जानना चाहिए।

प्रश्न : जिस उभय वचन योगी के क्षायोपशमिक अज्ञान नहीं है उसके कम-से-कम कितनी कषाय रूप भाव होते हैं?

उत्तर : जिस उभय वचन योगी के क्षायोपशमिक अज्ञान नहीं है, उसके कम-से-कम एक लोभ कषाय रूप भाव दसवें गुणस्थान में होता है।

क्षायोपशमिक अज्ञान भाव से रहित उभय वचन योगी ११ वें १२ वें गुणस्थान में कषाय रूप भाव से रहित भी होते हैं। १३ वें १४ वें गुणस्थान में भी कषाय रूप भाव नहीं है लेकिन वहाँ उभय वचन योग भी नहीं होता है।

प्रश्न : उभय मनोयोगी उपशम सम्यग्दृष्टि के कितने क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : उभय मनोयोगी उपशम सम्यग्दृष्टि के ५ क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं -

मन:पर्ययज्ञान, कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान और क्षायोपशमिक सम्यक्त्व

नोट : उभय मनोयोगी द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टि के ४ भाव नहीं होते हैं उनके मन:पर्ययज्ञान रूप भाव हो जाता है।

प्रश्न : सत्यादि आठ योगों में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : सत्य मनोयोग, अनुभय मनोयोग, सत्य वचन योग तथा अनुभय वचन योग आदि के १३ गुणस्थान होते हैं।

असत्य मनोयोग, उभय मनोयोग, असत्यवचन योग तथा उभय वचनयोग में आदि के १२ गुणस्थान होते हैं।

नोट : इनमें पहले से पाँचवें गुणस्थान के भाव पःेन्द्रिय के समान तथा छठे से तेरहवें गुणस्थान तक के भाव मनुष्यों के समान जानना चाहिए।

प्रश्न : अनुभय वचन मनोयोग....आदि में अनुभयपना कैसे है?

उत्तर : जैसे-अशोकवन, चंपक वन आदि में अन्य वृक्षों के विद्यमान होने पर भी अशोकवन चंपक वन आदि ही हैं। ऐसा ज्ञान या व्यवहार उसके बलाधान या कारणभूत है। यह योग भी उसी प्रकार उस व्यपदेश का भागी होता है। **(श.चू. २-३)**

औदारिक काययोग

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व	
			चारित्र	मुनिराज के ही होता है।
२.	**क्षायिक**	९	ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग	
			उपभोग वीर्य सम्यक्त्व चारित्र	
३.	**क्षायोपशमिक**	१८	४ ज्ञान - मति श्रुत अवधि मनःपर्यय	
			३ अज्ञान-मत्यज्ञान श्रुताज्ञान विभंगावधि	
			३ दर्शन - चक्षु.अचक्षु.अवधि.	
			५ लब्धि-दान लाभ भोग उपभोग...	
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - चारित्र	
			१ - संयमासंयम	
४.	**औदयिक**	१९	२ गति - तिर्यःा. मनुष्य.	
			४ कषाय. क्रोध मान माया लोभ	कषायातीत भी होते हैं।
			३ लिङ्ग - स्त्री. पुरुष. नपु.	
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	योगातीत जीवों के भी होता है।
			६ लेश्या. कृ.नी.का.पी.प.शु.	
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	

प्रश्न : औदारिक काययोग किसे कहते हैं?

उत्तर : औदारिक शरीर द्वारा (औदारिक वर्गणा से) उत्पन्न हुई शक्ति से जीव के प्रदेशों में परिस्पन्द का कारणभूत जो प्रयत्न होता है उसे औदारिक काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९१-९२)**

औदारिक काय के साथ जो योग है, वह औदारिक काययोग है। **(श.चू.३)**

पुरु महत् उदार और उदाल ये एकार्थवाची हैं। उदार में जो होता है, उसे औदारिक कहते हैं और उसके निमित्त से होने वाले योग को औदारिक काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९३)**

औदारिककायार्था या आत्मप्रदेशस्य कर्म-नोकर्मकर्षणशक्तिः स एव काययोगः। **(गो.जी.म.२३०)**

प्रश्न : औदारिक काययोग में उदारपना कैसे है?

उत्तर : प्रदेश की अपेक्षा असंख्य गुणा हीन होकर भी अवगाहन की अपेक्षा से असंख्यात गुणा अधिक है इसी अपेक्षा इसमें उदारपना कहा गया है। **(श.चू. ३)**

प्रश्न : औदारिक काययोग में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : औदारिक काययोग में ५१ भाव होते हैं -

औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन.......

क्षायोपशमिक के १८ - ४ ज्ञान........

औदयिक के १९ - नरक एवं देवगति बिना

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

प्रश्न : औदारिक काययोग वालों के क्षायिक भाव कितने गुणस्थानों में होते हैं?

उत्तर : औदारिक काययोग वालों के क्षायिक भाव दस गुणस्थानों में होते हैं -

चौथे से तेरहवें गुणस्थान तक

नोट : चौदहवें गुणस्थान में भी क्षायिक भाव होते हैं, लेकिन वहाँ कोई भी योग नहीं पाया जाता है।

प्रश्न : औदारिक काययोग वालों के चक्षुदर्शन रूप क्षायोपशमिक भाव कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : औदारिक काययोग वालों के चक्षुदर्शन रूप भाव चतुरिन्द्रिय से लेकर बारहवें गुणस्थान तक पाया जाता है।

प्रश्न : औदारिक काययोग में कितने भाव दोनों गतियों में होते हैं?

उत्तर : औदारिक काययोग में ३८ भाव दोनों गतियों में होते हैं -

औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १६ - ३ ज्ञा. (मति.श्रु.अव.) ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संय.

औदयिक के १७ - ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

प्रश्न : क्या ऐसे कोई औदारिक काययोगी है जिनके क्षायोपशमिक लब्धियाँ नहीं होती हैं?

उत्तर : हाँ, तेरहवें गुणस्थान वाले औदारिक काययोगी के ५ क्षायोपशमिक लब्धियाँ नहीं होती हैं, क्योंकि वहाँ घातिया कर्मों का अभाव हो जाने से क्षायोपशमिक भाव नहीं पाये जाते हैं।

यद्यपि चौदहवें गुणस्थान में भी ये लब्धियाँ नहीं हैं लेकिन वहाँ औदारिक काययोग नहीं होता है।

प्रश्न : औदारिक काययोगी अवेदी जीवों के अधिक-से-अधिक कितने भाव होते हैं?

उत्तर : औदारिक काययोगी अवेदी जीवों के अधिक-से-अधिक ३३ भाव होते हैं -

औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व (द्वितीयोपशम की अपेक्षा) चारित्र

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ८ - १ ग. (मनु.) ४ क. १ अज्ञा. १ असि. १ लेश्या (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : औदारिक काययोग में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : औदारिक काययोग में १३ गुणस्थान होते हैं -

पहले से तेरहवें तक।

इनमें भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में ३२

  क्षायोपशमिक भाव के १० - ३ अज्ञान २ दर्शन ५ लब्धि

  औदयिक के १९ - नरकगति एवं देवगति बिना

  पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

- सासादन गुणस्थान में मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव नहीं होता है, इसलिए इनके ३० भाव होते हैं।

- सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में भी इसी प्रकार जानना चाहिए।

- अविरतसम्यक्त्व में - ३४

  औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व

  क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

  औदयिक के १८ - २ग. ४क. ३लि. १अज्ञा. १असं. १असि. ६ले.

  पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

- संयमासंयम में - ३१

  औप. का - १ क्षायिक का १ क्षायोपशमिक के १३ औदयिक के १४ पारिणामिक के २, शेष गुणस्थानों का कथन मनुष्यों के समान जानना चाहिए।

नोट : इस योग में निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था नहीं होती है।

औदारिकमिश्र काययोग

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**क्षायिक**	९	सम्यक्त्व	मनुष्य तिर्यःा दोनों के होता है।
			ज्ञान दर्शन......	
२.	**क्षायोपशमिक**	१४	३ ज्ञान-मति श्रुत अवधि.	
			२ अज्ञान-मत्यज्ञान श्रुताज्ञान	
			३ दर्शन - चक्षु. अचक्षु.	
			अवधिदर्शन	सम्यग्दृष्टि के होता है।
			५ लब्धि-दान लाभ भोग......	
			१ - सम्यक्त्व	केवल चौथे गुणस्थान में ही होता है।
३.	**औदयिक**	१९	२ गति - तिर्यःा. मनुष्य	
			४ कषाय - क्रो. मा. माया-लो.	
			३ लिङ्ग - स्त्री. पुं. नपुं.	
			१ - मिथ्यादर्शन	पहले गुणस्थान में ही होता है।
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	चारों ही गुणस्थान में होता है।
			६ लेश्या. कृ.नी.का.पी.प.शु.	पहले दूसरे और चौथे गुण. में छहों लेश्याएँ होती हैं।
४.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	

नोट : इस योग में औपशमिक भाव नहीं होता है।

प्रश्न : औदारिकमिश्र काययोग किसे कहते हैं?

उत्तर : औदारिक और कार्मण वर्गणाओं के द्वारा उत्पन्न हुए वीर्य से जीव के प्रदेशों में परिस्पन्द के लिए जो प्रयत्न होता है, उसे औदारिक मिश्र काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९२)**

औदारिक शरीर जब तक पूर्ण नहीं होता है तब तक मिश्र कहलाता है और उसके द्वारा होने वाले संप्रयोग को औदारिक मिश्र काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९३)**

जो अपर्याप्त अवस्था में होता है उसे औदारिक मिश्र काययोग कहते हैं। **(पं.सं.सं.१/१७२)**

औदारिकमिश्र वर्गणाओं को ग्रहण करने के निमित्त से औदारिक मिश्र काययोग होता है। **(मू.आ.)**

प्रश्न : औदारिकमिश्र काययोग कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : औदारिकमिश्र काययोग

(१) प्रथम-द्वितीय गुणस्थानवर्ती मनुष्य तथा तिर्यःगों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में।

(२) चतुर्थ गुणस्थानवर्ती मनुष्य तथा भोगभूमिया सम्यग्दृष्टि तिर्यःग की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में।

(३) केवली भगवान के समुद्घात अवस्था में। इनके दो कपाट के समय होता है।

प्रश्न : औदारिक मिश्र काययोगी के कितने भाव केवल एक गुणस्थान में पाये जाते हैं?

उत्तर : औदारिक मिश्र काययोगी के १७ भाव एक गुणस्थान में पाये जाते हैं -

क्षायिक भाव के सम्यक्त्व के बिना आठ भाव - तेरहवें गुणस्थान में

क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञान - चौथे गुणस्थान में

अवधिदर्शन - चौथे गुणस्थान में, सम्यक्त्व - चौथे गुणस्थान में

औदयिक के ३ भाव - मिथ्यादर्शन - पहले गुणस्थान में

पीत-पद्म लेश्या - चौथे गुणस्थान में

पारिणामिक का १ भाव अभव्यत्व - पहले गुणस्थान में

प्रश्न : औदारिकमिश्र काययोग में कौन से भाव केवल पहले एवं दूसरे गुणस्थान में ही पाये जाते हैं?

उत्तर : औदारिकमिश्र काययोग में ४ भाव मात्र पहले-दूसरे गुणस्थान में ही पाये जाते हैं -
क्षायोपशमिक भाव के २ - मत्यज्ञान, श्रुताज्ञान
औदयिक के २ - स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग

प्रश्न : औदारिकमिश्र काययोग में लिङ्ग रूप भावों की विवेचना किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : औदारिकमिश्र काययोग में लिङ्ग विवेचना -

- प्रथम गुणस्थानवर्ती - म्लेच्छ खण्ड वाले मनुष्य - तिर्य:ाों के - स्त्री एवं पुरुष लिङ्ग
  लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्य-तिर्य:ाों के - नपुंसक लिङ्ग
- प्रथम - द्वितीय गुणस्थानवर्ती - कर्मभूमिया मनुष्य तिर्य:ाों के - तीनों लिङ्ग
  भोगभूमिया मनुष्य तिर्यञ्चों के - स्त्री एवं पुरुष लिङ्ग
  सम्मूर्च्छन तिर्य:ाों के - नपुंसकलिङ्ग
- चतुर्थ गुणस्थानवर्ती मनुष्य - तिर्य:ा के - पुरुष लिङ्ग

तेरहवें गुणस्थानवर्ती सयोगकेवली भगवान वेदातीत ही होते हैं।

प्रश्न : औदारिक मिश्र काययोग की मिश्र संज्ञा कैसे है?

उत्तर : जैसे गुड़ से मिला हुआ अन्न द्रव्य गुड़ व्यपदेश को नहीं पाता, न अन्न संज्ञा को चूँकि गुड़ से इतर द्रव्य से वह मिला हुआ है। निखालिस (शुद्ध) नहीं है। इसी प्रकार औदारिक और कार्मण शरीर द्रव्य का मिश्रण होने से मिश्र संज्ञा होती है।

अथवा - शरीर के कार्य प्रयोजन को नहीं करने से मिश्र योग होता है। जैसे कि अपरिपूर्ण घड़ा। जिस प्रकार अपूर्ण बना घड़ा जल-धारण आदि कार्यों में असमर्थ है, घड़ा इस संज्ञा को प्राप्त नहीं होता है; उसी प्रकार इस मिश्र विषय में भी अपूर्ण होने से अपरिनिष्ठ है इसलिए मिश्र कहलाता है।

इसी प्रकार सर्वत्र मिश्र योग की विधि समझना चाहिए। **(श.चू.३)**

प्रश्न : औदारिक मिश्र काययोग में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : औदारिक मिश्र काययोग में ४ गुणस्थान होते हैं -
पहला, दूसरा, चौथा, तेरहवाँ।

प्रश्न : इन गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : इन गुणस्थानों में भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में २८ भाव - क्षायोपशमिक के ९-२ अज्ञान २ दर्शन ५ लब्धि
  औदयिक के १६-२ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले.
  पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व
- सासादन गुणस्थान में मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव नहीं होने से २६ भाव होते हैं।
- असंयत गुणस्थान में ३१ भाव - क्षायिक का एक - सम्यक्त्व
  क्षायोपशमिक के १२-३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
  औदयिक के १६ - २ ग. ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या
  पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व
- सयोग केवली गुणस्थान में १४ भाव - क्षायिक भाव के ९ - ज्ञान दर्शन......।
  औदयिक के ३-१ गति (मनु.) १ असि. १ ले. (शुक्ल)
  पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : औदारिकमिश्र काययोग में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : औदारिकमिश्र काययोग में ४५ भाव होते हैं -

- क्षायिक भाव के ९ - ज्ञान दर्शन.....
- क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के १९ - नरकगति और देवगति के बिना
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न : औदारिक मिश्र काययोग में छहों लेश्या क्यों कही गई हैं?

उत्तर : यहाँ पर (औदारिक मिश्र काययोग में) भाव से छहों लेश्याओं के होने का कारण यह है कि जिस प्रकार तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याओं में वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि देव तिर्यःा और मनुष्यों में उत्पन्न होते समय नष्टलेश्या हो करके अर्थात् अपनी-अपनी पूर्व शुभ लेश्याओं को छोड़कर उत्पन्न होने के प्रथम समय में ही कृष्ण नील और कापोत लेश्यारूप से परिणत हो जाते हैं, उस प्रकार से सम्यग्दृष्टि देव अशुभ लेश्यारूप से नहीं परिणत होते हैं, किन्तु उत्पन्न होने के प्रथम समय से लगाकर अन्तर्मुहूर्त्त तक पूर्व भव की लेश्याओं के साथ रहकर पीछे अन्य लेश्याओं को प्राप्त होते हैं, अतएव यहाँ पर छहों लेश्याएँ बन जाती हैं। **(ध.२/६५८)**

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि देव मरण के समय शुभ लेश्याओं को क्यों नहीं छोड़ते हैं?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि देव मरण के समय शुभ लेश्याओं को नहीं छोड़ते हैं, इसका कारण यह है कि बुद्धि में स्थित है पंचपरमेष्ठी जिनके अर्थात् पाँच परमेष्ठी के स्वरूप चिन्तन में जिनकी बुद्धि लगी हुई है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवों के मरणकाल में मिथ्यादृष्टि देवों के समान संक्लेश नहीं पाया जाता है; इसलिए अपर्याप्तकाल में उनकी पहले की शुभलेश्याएँ ज्यों की त्यों बनी रहती हैं। **(ध.२/६५९)**

वैक्रियिकद्विक काययोग

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	वैमानिक देवों के ही होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१५	३ ज्ञान.मति.श्रुत.अवधि.	
			३ अज्ञान-मत्यज्ञान.श्रुताज्ञान.विभंगावधि	वैक्रियिकमिश्र में कुअवधिज्ञान नहीं है।
			३ दर्शन-चक्षु.अचक्षु. अवधि	
			१ सम्यक्त्व	सभी देव नारकियों के हो सकता है।
			५ लब्धि-दान लाभ......	
४.	**औदयिक**	१९	२ गति-नरक एवं देव.	
			४ कषाय - क्रो.मा.माया.लो.	
			३ लिङ्ग - स्त्री. पुरु. नपुं.	नपुंसक वेद नरकगति में होता है।
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	देवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था की अपेक्षा ही अशुभ लेश्याएँ होती हैं।
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	

प्रश्न : वैक्रियिक काययोग किसे कहते हैं?

उत्तर : वैक्रियिक शरीर के आलम्बन से उत्पन्न हुए परिस्पन्द द्वारा जो प्रयत्न होता है उसे वैक्रियिक काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९३)**

नाना प्रकार के गुण और ऋद्धियों से युक्त शरीर को वैगूर्विक अथवा वैक्रियिक शरीर कहते हैं और इसके द्वारा होने वाले योग को वैगूर्विक (वैक्रियिक) काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९४)**

प्रश्न : वैक्रियिकमिश्र काययोग किसे कहते हैं?

उत्तर : जब तक वैक्रियिक शरीर पूर्ण नहीं होता है तब तक मिश्र कहलाता है और उसके द्वारा जो संप्रयोग होता है उसे वैक्रियिकमिश्र काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९४)**

कार्मण और वैक्रियिक वर्गणाओं के निमित्त से उत्पन्न हुई शक्ति से जो परिस्पन्द के लिए प्रयत्न होता है उसे वैक्रियिकमिश्र काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९३)**

वैक्रियिकमिश्र वर्गणाओं को ग्रहण करने के निमित्त से जो योग होता है उसे वैक्रियिकमिश्र काययोग कहते हैं।

प्रश्न : वैक्रियिकद्विक काययोग में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : वैक्रियिकद्विक काययोग में ३९ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञान ३ दर्शन ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १९ - २ गति (नर.देव.) ४ क............

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

वैक्रियिकमिश्र काययोग में विभंगावधिज्ञान नहीं होने से ३८ भाव होते हैं।

प्रश्न : वैक्रियिक काययोगी के कितने भाव नियम से होते हैं?

उत्तर : वैक्रियिक काययोगी के १५ भाव नियम से होते हैं -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्शन ५ लब्धि

औदयिक के ७ - ४ क. १ अज्ञा. १ असं. १ असि.

पारिणामिक का १ - जीवत्व

नोट : ज्ञान और अज्ञान में से कोई अवश्य रहेगा। कोई एक गति एक लेश्या भी अवश्य रहेगी लेकिन कौन सी रहेगी? यह निश्चित नहीं है इसलिए यहाँ उनका ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न : कितने भाव वैक्रियिकद्विक काययोगी देवों के ही होते हैं?

उत्तर : ६ भाव वैक्रियिकद्विक काययोगी देवों के ही होते हैं -

१ गति (देवगति) २ लिङ्ग (स्त्री एवं पुरुष)

३ शुभ लेश्या - पीत पद्म शुक्ल

प्रश्न : वैक्रियिक काययोगी के कम-से-कम कितने भाव होते हैं?

उत्तर : वैक्रियिक काययोगी के कम-से-कम २१ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक भाव के ९-२ अज्ञान (मत्यज्ञान श्रुताज्ञान) २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १० - १ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ लेश्या

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व या अभव्यत्व

नोट : (१) विभंगावधिज्ञान जन्म के अन्तर्मुहूर्त्त तक नहीं होता है इसलिए यहाँ ग्रहण नहीं किया है। (२) कोई एक गति, एक लिङ्ग एवं एक लेश्या अवश्य होती है।

प्रश्न : वैक्रियिक काययोगी देव और नारकियों के भावों में क्या अन्तर है?

उत्तर : वैक्रियिक काययोगी देव और नारकियों के भावों में अन्तर -

देव	नारकी
(१) स्त्री एवं पुरुष लिङ्ग रूप भाव।	नपुंसक वेद ही होता है।
(२) छहों लेश्या होती हैं।	३ अशुभ लेश्या ही होती हैं।
(३) देवगति होती है।	नरकगति होती है।

प्रश्न : वैक्रियिक काययोग में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : वैक्रियिक काययोग में चार गुणस्थान होते हैं -

मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अविरत सम्यक्त्व।

इन गुणस्थानों में भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में ३२ भाव

  क्षायोपशमिक भाव के १० - ३ अज्ञान २ दर्शन ५ ल.

  औदयिक के १९ - तिर्यःा एवं मनुष्यगति बिना सब

  पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व
- दूसरे गुणस्थान में मिथ्यादर्शन और अभव्यत्व भाव नहीं होने से ३० भाव होते हैं।
- तीसरे सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में भी इसी प्रकार ३० भाव जानने चाहिए।
- अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान में ३४ भाव

  औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १८ - २ ग. ४ क. ३ लिं. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

उपर्युक्त गुणस्थान के पहले-दूसरे गुणस्थान के भावों में से विभंगावधिज्ञान कम कर देने पर वैक्रियिकमिश्र काययोग के पहले-दूसरे गुणस्थान के भाव हो जाते हैं अर्थात् वैक्रियिकमिश्र काययोग के पहले गुणस्थान में ३१ दूसरे में २९ तथा चौथे गुणस्थान में कृष्ण एवं नील लेश्या नहीं होने से ३२ भाव होते हैं।

प्रश्न : वैक्रियिक काययोग के कितने भाव चारों गुणस्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : वैक्रियिक काययोग के २७ भाव चारों गुणस्थानों में पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक भाव के ७ - २ दर्श. - चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन ५ लब्धि

औदयिक के १८-२ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : वैक्रियिक काययोग वाले देवों के किस गुणस्थान में शुभ लेश्या रूप भाव ही होते हैं?

उत्तर : वैक्रियिक काययोग वाले देवों के चारों ही गुणस्थान में शुभ लेश्या रूप भाव ही होते हैं, क्योंकि देवों के मात्र निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ही अशुभ लेश्या रूप भाव होते हैं पर्याप्त अवस्था में तो शुभ लेश्या रूप भाव ही होते हैं और वैक्रियिक काययोग पर्याप्त अवस्था में ही होता है।

चतुर्थ गुणस्थान निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी होता है लेकिन वह वैमानिक देवों के ही होता है और वैमानिक देवों के पर्याप्त एवं निर्वृत्यपर्याप्त दोनों अवस्थाओं में शुभ लेश्या रूप भाव ही होते हैं।

आहारकद्विक - काय योग

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	
२.	**क्षायोपशमिक**	१३	३ ज्ञान - मति श्रुत अवधि.	मन:पर्ययज्ञान नहीं होता है।
			३ दर्शन - चक्षु.अच.अव.	
			५ लब्धि - दान लाभ भोग....	
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - चारित्र	
३.	**औदयिक**	११	१ गति - मनुष्य	
			४ क. - क्रो.मा.माया.लो.	संज्वलन क्रोधादि होते हैं।
			१ लिङ्ग - पुरुष	
			१ - अज्ञान	
			१ - असिद्धत्व	
			३ लेश्या - पी.प.शु.	अशुभ लेश्याएँ नहीं होती हैं।
४.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व	
			भव्यत्व	

प्रश्न : आहारक काययोग किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसके द्वारा आत्मा सूक्ष्म पदार्थों को ग्रहण करता है अर्थात् आत्मसात् करता है उसे आहारक शरीर कहते हैं और उस आहारक शरीर से जो योग होता है उसे आहारक काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९४)**

छठे गुणस्थानवर्ती मुनि अपने को संदेह होने पर जिस शरीर के द्वारा केवली भगवान के पास जाकर सूक्ष्म पदार्थों का आहरण करता है उसे आहारक शरीर कहते हैं और उसके द्वारा होने वाले योग को आहारक काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९५)**

प्रश्न : आहारकमिश्र काययोग किसे कहते हैं?

उत्तर : आहारक और कार्मण की वर्गणाओं से उत्पन्न हुए वीर्य के द्वारा जो योग होता है उसे आहारक मिश्र काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९५)**

आहारक शरीर जब तक पूर्ण नहीं होता है तब तक उसको आहारकमिश्र कहते हैं और उसके द्वारा जो संप्रयोग होता है उसे आहारकमिश्र काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९६)**

आहारकमिश्र वर्गणाओं को ग्रहण करने के निमित्त से जो योग होता है उसे आहारकमिश्र काययोग कहते हैं। **(मू. आ.)**

प्रश्न : आहारकद्विक काययोग में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : आहारकद्विक काययोग में २७ भाव होते हैं -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के ११ - १ ग. ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

आहारक एवं आहारकमिश्र काययोग के भावों में कोई अन्तर नहीं है।

प्रश्न : आहारकद्विक काययोग में कितने भाव निश्चित रूप से होते हैं?

उत्तर : आहारकद्विक काययोग में २३ भाव निश्चित रूप से होते हैं -

- क्षायोपशमिक के १० - २ ज्ञान (मति श्रुत) २ दर्शन ५ ल. १ चारि.
- औदयिक के ११ - १ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

उपर्युक्त २३ भाव तथा कोई एक सम्यक्त्व, इस प्रकार २४ भाव होते हैं।

नोट : (१) क्षायिक और क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में से एक सम्यक्त्व अवश्य होता है।

(२) तीन लेश्याओं में से एक लेश्या अवश्य होती है।

(३) चारों कषायों में से एक कषाय होती है।

यह कथन एक जीव अथवा एक समय की अपेक्षा जानना चाहिए। नाना जीवों की अपेक्षा दोनों सम्यक्त्व, तीनों लेश्या तथा चारों कषायें हो सकती हैं।

प्रश्न : आहारकद्विक काययोग में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : आहारकद्विक काययोग में केवल एक गुणस्थान होता है - छठा।

प्रश्न : छठे गुणस्थान एवं आहारकद्विक काययोग के भावों में क्या अन्तर है?

उत्तर : छठे गुणस्थान में आहारकद्विक काययोग की अपेक्षा ४ भाव अधिक होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक का १ - मन:पर्ययज्ञान
- औदयिक के २ - स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग

कार्मण काययोग

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	औपशमिक	१	सम्यक्त्व	द्वितीयोपशम की अपेक्षा
२.	क्षायिक	९	ज्ञान दर्शन.....	सम्यक्त्व चारों गति में होता है।
३.	क्षायोपशमिक	१४	३ ज्ञान - मति श्रुत अवधि.	
			२ अज्ञान - मत्यज्ञान श्रुताज्ञान	पहले-दूसरे गुणस्थान में होता है।
			३ दर्शन - चक्षु. अचक्षु.अवधि.	
			५ लब्धि - दान लाभ.....	
			१ - सम्यक्त्व	कृतकृत्यवेदक की अपेक्षा नरक तिर्यःगति में भी होता है।
४.	औदयिक	२१	४ गति - नरक तिर्यःा मनु. देव	
			४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो.	
			३ लिङ्ग - स्त्री. पुरु. नपुं.	
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			६ लेश्या. कृ.नी.का.पी.प.शु.	
५.	पारिणामिक	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	

प्रश्न : कार्मण काययोग किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्मों का समूह या कर्म ही कार्मण शरीर है और इस शरीर के निमित्त से जो योग होता है उसे कार्मण काय योग कहते हैं।

औदारिक आदि शरीर वर्गणाओं के बिना केवल कर्म से उत्पन्न हुए वीर्य के निमित्त से आत्म प्रदेशों में परिस्पन्द रूप जो प्रयत्न होता है उसे कार्मण काययोग कहते हैं। **(ध.१/२९७)**

सम्पूर्ण कर्मों के प्ररोहण का उत्पादक और सुख-दुःख का बीजभूत कार्मण शरीर है, उसके द्वारा जो योग है वह कार्मण काययोग है। **(श.चू.३)**

प्रश्न : कार्मण काययोग में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : कार्मण काययोग में ४८ भाव होते हैं -

औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन दान......

क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ लब्धि. १ सम्य.

औदयिक के २१ - ४ गति......

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न : कार्मण काययोगी के उपशम सम्यक्त्व रूप भाव किस गति में पाया जाता है?

उत्तर : कार्मण काययोगी के उपशम सम्यक्त्व रूप भाव केवल एक गति में पाया जाता है, क्योंकि प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ तो मरण नहीं होता है तथा द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ मरता है तो वैमानिक देवों में ही जाता है, क्योंकि जिसके देवायु के अलावा अन्य आयु का बन्ध हो गया है उसके द्वितीयोपशम सम्यक्त्व नहीं होता है। उसका भी कारण यह है कि द्वितीयोपशम सम्यक्त्व उपशम श्रेणी के सम्मुख मुनिराज के ही होता है। **(गो.जी.जी.प्र. ६९६)**

प्रश्न : कार्मण काययोगी के कौनसा क्षायिक भाव चारों गति में पाया जाता है?

उत्तर : कार्मण काययोगी के एक क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव चारों गति में पाया जाता है -

- नरकगति में - प्रथम नरक की अपेक्षा
- तिर्यःागति में - भोगभूमि की अपेक्षा
- मनुष्यगति में - चतुर्थ गुणस्थानवर्ती एवं समुद्घात केवली की अपेक्षा
- देवगति में - वैमानिक देवों की अपेक्षा

प्रश्न : कार्मण काययोगी के क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव मनुष्यगति में कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : कार्मण काययोगी मनुष्यों के क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव -

(१) देव-नारकियों से मनुष्यगति में आते समय।

(२) बद्धायुष्क मनुष्य जब भोगभूमि में मनुष्य बनता है।

(३) सयोग केवली गुणस्थान में समुद्घात के समय।

प्रश्न : कार्मण काययोगी के कापोत लेश्या रूप भाव कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : कार्मण काययोगी में कापोत लेश्या रूप भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में - भवनत्रिक देव, भोगभूमिया एवं कर्म भूमिया मनुष्य-तिर्यःा और पहले से तीसरे नरक तक।

- सासादन गुणस्थान में - नारकियों को छोड़कर उपर्युक्त जीवों में।
- अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान में - भोगभूमिया मनुष्य-तिर्यंच, प्रथम नरक का नारकी और कर्मभूमिया मनुष्य जो पहले-दूसरे तीसरे नरक से सम्यक्त्व लेकर आते हैं।

प्रश्न : कार्मण काययोग में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : कार्मण काययोग में चार गुणस्थान होते हैं -

मिथ्यात्व, सासादन सम्यक्त्व, अविरत सम्यक्त्व, सयोगकेवली।

प्रश्न : इन गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : इन गुणस्थानों में भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में - क्षायोपशमिक के ९, औदयिक के २१, पारिणामिक ३ = ३३
- सासादन गुणस्थान में - क्षायो. के ९ औदयिक के १९ (मिथ्या. नरकगति बिना) पारि. २=३०
- अविरत सम्यक्त्व में - औप. का १ क्षायिक १ क्षायो.१२ (३ ज्ञा. ३द. ५ ल. १ स.) औद. १९ पारि. २=३५
- सयोग केवली भगवान के - क्षायि. ९ औद. ३ पारि. २ = १४

प्रश्न : कार्मण काययोगी के नरकगति रूप भाव में कौन सा गुणस्थान नहीं होता है?

उत्तर : कार्मण काययोगी के नरकगति रूप भाव में दूसरा गुणस्थान नहीं होता है, क्योंकि जिनके नरक आयु का बन्ध हो गया है उसका सासादन गुणस्थान में मरण नहीं होता है। **(ध.१/ ३२५-२६)**

नोट : तीसरा गुणस्थान किसी के भी कार्मण काययोग में नहीं होता है इसलिए यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न : कार्मण काययोगी के क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव कितने गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : कार्मण काययोगी के क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव दो गुणस्थानों में होता है -

चौथे और तेरहवें में।

प्रश्न : कार्मण काययोग सम्बन्धी कितने भाव चारों गुणस्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : कार्मण काय योग सम्बन्धी ५ भाव चारों गुणस्थानों में पाये जाते हैं -

- औदयिक सम्बन्धी ३ - मनुष्यगति असिद्धत्व शुक्ल लेश्या
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : कार्मण काययोग में होने वाले कितने भाव तेरहवें गुणस्थान में भी होते हैं?

उत्तर : कार्मण काययोग में होने वाले ६ भाव तेरहवें गुणस्थान में भी होते हैं -

- क्षायिक भाव का १ - सम्यक्त्व।
- औदयिक के ३ - मनुष्यगति, असिद्धत्व, शुक्ल लेश्या।
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न : कितने योगों में सभी भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : मूल भाव की अपेक्षा १३ योगों में सभी भाव पाये जाते हैं -

४ मनो. ४ वच. ५ काय. (आहारकद्विक बिना)

उत्तर भावों की अपेक्षा ४ योगों में सभी भाव पाये जाते हैं -

२ मनोयोग - सत्य तथा अनुभय

२ वचनयोग - सत्य तथा अनुभय

प्रश्न : कितने काययोगों में बराबर क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

उत्तर : तीन काययोगों में बराबर क्षायोपशमिक भाव होते हैं -

औदारिकमिश्र वैक्रियिकमिश्र तथा कार्मण काययोग

इन तीनों में १४ क्षायोपशमिक भाव होते हैं -

३ ज्ञान - मति श्रुत अवधि.

२ अज्ञान - मत्यज्ञान श्रुताज्ञान

३ दर्शन - चक्षु. अचक्षु. अवधि.

५ लब्धि - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

१ - सम्यक्त्व

प्रश्न : कितने काययोगों में पूरे औदयिक भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : केवल एक काययोग में पूरे औदयिक भाव पाये जाते हैं -

कार्मण काययोग (पहले गुणस्थान की अपेक्षा)

प्रश्न : कितने योगों में अभव्यत्व भाव नहीं होता है?

उत्तर : दो योगों में अभव्यत्व भाव नहीं होता है -

आहारककाय योग, आहारकमिश्र काययोग

क्योंकि ये छठे गुणस्थानवर्ती मुनिराज के ही होते हैं। अभव्यत्व भाव पहले गुणस्थान से आगे नहीं होता है।

प्रश्न : औदारिकमिश्र एवं वैक्रियिकमिश्र काययोग के भावों में क्या अन्तर है?

उत्तर : औदारिकमिश्र एवं वैक्रियिकमिश्र काययोग के भावों में अन्तर -

(१) औदारिकमिश्र काययोग में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व रूप भाव नहीं है और वैक्रियिक मिश्र काययोग में है।

(२) औदारिकमिश्र काययोग में क्षायिक के पूरे उत्तर भेद हैं और वैक्रियिकमिश्र में केवल सम्यक्त्व है।

(३) औदारिकमिश्र काययोग मनुष्य-तिर्यंचों के होता है और वैक्रियिकमिश्र देव-नारकियों के होता है।

प्रश्न : योग मार्गणा में औदयिक भावों की विवेचना किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : योग मार्गणा में औदयिक भावों की विवेचना -

योग	**औदयिक भाव**
४ मनोयोग	२१
४ वचनयोग	२१
औदारिकद्विक	१९ (नर.देव.गति बिना)
वैक्रियिकद्विक	१९ (ति.मनु. गति बिना)
आहारकद्विक	११
कार्मण काययोग	२१

प्रश्न : कितने योगों में क्षायोपशमिक भाव के पूरे भेद होते हैं?

उत्तर : ९ योगों में क्षायोपशमिक भाव के पूरे भेद होते हैं -

४ मनोयोग ४ वचनयोग १ काययोग (औदारिक)

प्रश्न : कितने योगों में अज्ञान रूप भाव का अभाव भी होता है?

उत्तर : सात योगों में अज्ञान रूप भाव का अभाव भी होता है -

२ मनोयोग - सत्य एवं अनुभय

२ वचनयोग - सत्य एवं अनुभय

३ काययोग - औदारिकद्विक एवं कार्मण

ये सातों योग तेरहवें गुणस्थान में भी होते हैं।

प्रश्न : कितने योगों में औपशमिक भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : तीन योगों में औपशमिक भाव नहीं होते हैं?

औदारिकमिश्र काययोग, आहारककाययोग, आहारकमिश्र काययोग।

नोट : वैक्रियिकमिश्र एवं कार्मण काययोग में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व रूप की अपेक्षा औपशमिक भाव बन जायेगा।

प्रश्न : कितने योगों में कषाय रूप भाव का अभाव नहीं हो सकता है?

उत्तर : मात्र चार योगों में कषाय रूप भाव का अभाव नहीं हो सकता है -

वैक्रियिक काययोग, वैक्रियिकमिश्र काययोग,

आहारक काययोग, आहारकमिश्र काययोग

प्रश्न : कितने योगों में संयमासंयम रूप भाव भी पाया जाता है?

उत्तर : नौ योगों में संयमासंयम रूप भाव भी पाया जाता है -

४ मनोयोग ४ वचनयोग १ औदारिक काययोग

प्रश्न : कितने भावों में सभी योग पाये जाते हैं?

उत्तर : २५ भावों में सभी योग पाये जाते हैं -

क्षायिक भाव का १ - सम्यक्त्व (इनमें योगातीत जीव भी होते हैं)

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १० - ४ कषाय १ लिङ्ग (पुरु.) १ अज्ञान १ असिद्धत्व ३ लेश्या (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : औदारिक काययोग कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : औदारिक काययोग दो प्रकार का होता है -

(१) औदारिककाययोग, यह मनुष्य तिर्यःगों के होता है। परम औदारिककाय योग - यह केवली भगवान के (१३ वें गुण.) होता है।

(२) औदारिकमिश्र काययोग अपर्याप्तक जीवों के होता है। **(ध.१/३०७)**

– प्रश्न पत्र –

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये-

(i) **अनुभय वचनयोगी द्वीन्द्रिय जीवों के कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?**
(अ) ५ (ब) १०
(स) ८ (द) १८

(ii) **वैक्रियिक मिश्र काययोग में कितनी गति रूप भाव होते हैं?**
(अ) नरक-तिर्यंःगति (ब) नरक-देवगति
(स) मनुष्य-तिर्यंःगति (द) देव-मनुष्यगति

(iii) **अनुभय मनोयोग में कितने योगस्थान होते हैं?**
(अ) ९ (ब) २
(स) १ (द) ७

(iv) **कितने योगों में पुरुष लिङ्ग रूप भाव होता है?**
(अ) १५ (ब) १३
(स) ११ (द) कोई नहीं

(v) **उभय वचन योग में कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?**
(अ) १४ (ब) ४६
(स) १३ (द) १८

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) वैक्रियिक मिश्र काययोग में कितने औपशमिक भाव होते हैं?
(ii) कितने योगों में पूरे क्षायिक भाव होते हैं?
(iii) कितने योगों में भव्यत्व भाव भी होता है?
(iv) अनुभय मनोयोग में होने वाले कितने गुणस्थान भगवान के ही होते हैं?
(v) १५ योग रूप स्थान किस काय वाले के होता है?

३. हाँ या ना में उत्तर दो-

(i) चारों मनोयोग में ९ क्षायिक भाव होते हैं?
(ii) औदारिकमिश्र काययोग में भी औपशमिक भाव होता है?
(iii) अनुभय मनोयोग में औदयिक भाव के २१ भेद होते हैं?
(iv) योग से रहित जीवों के भी सभी क्षायिक भाव होते हैं?
(v) कार्मण काययोगी के चारों गति में क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव होता है?

३. रिक्तस्थान की पूर्ति करो-

(i) आहारक काययोग में .... उभय मनोयोग में .... तथा असत्य मनोयोग में .... भाव होते हैं।

(ii) औदारिक मिश्र काययोग में .... गुणस्थान .... गति रूप भाव तथा .... क्षायिक भाव होते हैं।

(iii) स्त्री लिङ्ग रूप भाव में .... योग तथा .... योग नहीं होता है।

(iv) उभय वचन योग में .... लेश्या रूप .... कषाय रूप .... क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

(v) योगातीत जीवों के .... पारिणामिक .... औदयिक तथा .... क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

५. सही जोड़ियाँ बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	आहारकद्विक काययोग	-	दो गति रूप भाव
(ii)	२ मनोयोग	-	कार्मण काययोग
(iii)	उभय वचन योग	-	अयोगकेवली
(iv)	४८ भाव	-	२७ भाव
(v)	वैक्रियिकद्विक काययोग	-	९ क्षायिकभाव
(vi)	१३ भाव	-	९ योग
(vii)	मन:पर्ययज्ञान	-	४६ भाव
(viii)	१० योग रूप स्थान	-	सम्यग्मिथ्यात्व

– उत्तरमाला –

१. (i) स (ii) ब (iii) स (iv) अ (v) द।

२. (i) १ (ii) ७ (iii) १३ (iv) १ (v) त्रस।

३. (i) ना (ii) ना (iii) हाँ (iv) हाँ (v) हाँ

४. (i) २७,४६,४६ (ii) ४,२,९ (iii) आहारक, आहारकमिश्र (iv) ६,४,१८ (V) २,२,०

५. (i) २७ (ii) ९ क्षायिक (iii) ४६ भाव
(iv) कार्मणकाययोग (v) दो गति रूप भाव (vi) अयोगकेवली
(vii) ९ योग (viii) सम्यग्मिथ्यात्व

वेद मार्गणा

प्रश्न : वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : वेद कर्म के उदय से होने वाले भाव को वेद कहते हैं। **(ध.१/१४१-४२)**

आत्मप्रवृत्ति से मैथुन रूप सम्मोह के उत्पन्न होने को वेद कहते हैं। **(ध.७/७)**

वेद कर्म की उदीरणा से यह जीव नाना प्रकार के बाल भाव को, चांचल्य को प्राप्त होता है और स्त्री भाव, पुरुष भाव तथा नपुंसक भाव का वेदन करता है। इसीलिए उस वेद कर्मोदय से प्राप्त होने वाले भाव को वेद कहते हैं। वेद कर्मों के उदय से स्त्री पुरुष तथा नपुंसक, ये तीन जाति के परिणाम उत्पन्न होते हैं। **(ध.१/१४३)**

इन्हीं को वेद कहते हैं। **(त.सा.२/७९)**

जो वेदा जावे, अनुभव किया जावे उसे वेद कहते हैं।

इन वेदों में जीवों की खोज करना वेद मार्गणा है।

प्रश्न : वेद मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : वेद मार्गणा तीन प्रकार की होती है -

(१) स्त्रीवेद (२) पुरुषवेद (३) नपुंसक वेद। **(वृ.द्र.सं.१३टी.)**

वेद मार्गणा के अनुवाद से स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसक वेद और अपगतवेद वाले जीव होते हैं। **(ध.१/३४०)**

अथवा - वेद दो प्रकार के होते हैं -

(१) द्रव्य वेद (२) भाव वेद

प्रश्न : स्त्रीवेद किसे कहते हैं?

उत्तर : स्त्रीवेद कर्म के उदय से स्त्री वेद रूप भाव होता है। **(ध.१४/११)**

जिसके उदय से जीव पुरुष में अभिलाषा रूप मैथुन संज्ञा से आक्रान्त होता है वह स्त्रीवेद है, जिसके उदय से पुरुष के साथ रमने के भाव हों, वह स्त्री वेद है। **(गो.जी.२७१)**

प्रश्न : पुरुष वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : पुरुष वेद के उदय से पुरुष वेद रूप भाव होता है। **(ध.१४/११)**

जिसके उदय से जीव स्त्री में अभिलाषा रूप मैथुन संज्ञा से आक्रान्त होता है वह पुरुष वेद है। जिसके उदय से स्त्री के साथ रमने के भाव हों वह पुरुष वेद है। **(गो.जी.२७१)**

प्रश्न : नपुंसक वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : नपुंसक वेद कर्म के उदय से नपुंसक वेद भाव होता है। **(ध.१४/११)**

जिसके उदय से जीव के स्त्री और पुरुष की अभिलाषा रूप तीव्र काम वेदना उत्पन्न होती है, वह नपुंसक वेद है। जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों के साथ रमने के भाव हों, वह नपुंसक वेद है।

जिन कर्म स्कन्धों के उदय से ईंटों के अवा की अग्नि के समान स्त्री और पुरुष इन दोनों पर भी आकांक्षा उत्पन्न होती है उनकी नपुंसक वेद संज्ञा है। **(ध.६/४७)**

जिस इच्छा में न पुरुष की ही विशिष्ट इच्छा हो और न स्त्री की ही, इस वेद को नपुंसक वेद कहते हैं। **(पं.सं. १/१९३)**

प्रश्न : द्रव्य वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : जो योनि, मेहन आदि नाम कर्म के उदय से रचा जाता है वह द्रव्य वेद है। **(सर्वा. २/५२)**

शरीर में जो स्त्री-पुरुष तथा नपुंसकता के सूचक योनि आदि शरीरावयव होते हैं इन्हीं को द्रव्यवेद कहते हैं। **(त.सा.२/८०)**

नाम कर्म के उदय से हुई शरीर रचना को द्रव्य वेद कहते हैं। **(पं.सं.१/१९०)**

प्रश्न : भाव वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : भाव वेद आत्म परिणाम स्वरूप है। वह स्त्री, पुरुष व नपुंसक इन तीनों में एक-दूसरे की अभिलाषा लक्षण वाला है और वह चारित्रमोह के विकल्प रूप स्त्री-पुरुष तथा नपुंसक वेद नाम के नोकषाय के उदय से होता है। **(रा.वा.२/६)**

प्रश्न : अपगत वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके तीनों प्रकार के वेदों से उत्पन्न होने वाला संताप (अंतरंग दाह) दूर हो गया है उन्हें अपगत वेद वाले जीव कहते हैं। **(ध.१/३४४)**

जो अपनी आत्मा से उत्पन्न हुए अनन्त और उत्कृष्ट सुख के भोक्ता हैं उन्हें वेद रहित जीव कहते हैं। **(ध.१/३४४)**

प्रश्न : वेद मार्गणा में किस वेद को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : वेद मार्गणा में भाव वेद को ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि यदि यहाँ द्रव्य वेद से प्रयोजन होता तो अपगत वेद स्थान नहीं बन सकता, क्योंकि द्रव्य वेद चौदहवें गुणस्थान के अंत तक पाया जाता है परन्तु अपगत वेद भी होता है। इस प्रकार का वचन निर्देश नवें गुणस्थान के अवेद भाग से किया गया है। **(ध.२/५१५-५१६)**

जिससे प्रतीत होता है कि यहाँ भाववेद से प्रयोजन है द्रव्यवेद से नहीं।

प्रश्न : लिङ्ग (वेद) औदयिक भाव क्यों है?

उत्तर : स्त्री आदि की अभिलाषा चूँकि चारित्र मोह के विकल्प नोकषाय के भेद स्त्री, पुरुष एवं नपुंसक वेद के उदय से होती है इसलिए वेद औदयिक भाव है। **(रा.वा.२/६)**

प्रश्न : किस प्रमाण से जाना जाता है कि द्रव्य से पुरुषवेदी के भाव स्त्री वेद पाया जाता है?

उत्तर : यहाँ भाव वेद से ही प्रयोजन है, क्योंकि द्रव्य वेद का ग्रहण करने पर द्रव्य स्त्री वेद के साथ भी नारकियों की उत्कृष्ट आयु के बन्ध का प्रसंग आता है परन्तु उनके साथ नारकियों की उत्कृष्ट आयु का बन्ध होता नहीं है, क्योंकि पाँचवीं पृथ्वी तक सिंह और छठी पृथ्वी तक स्त्रियाँ जाती हैं। इस सूत्र के साथ विरोध आता है। देवों की भी उत्कृष्ट आयु द्रव्य स्त्री वेद के साथ नहीं बँधती, क्योंकि अन्यथा (अच्युत कल्प से ऊपर) नियमत: निर्ग्रन्थ लिङ्ग से ही उत्पन्न होते हैं इस सूत्र के साथ विरोध आता है और द्रव्य स्त्रियों के निर्ग्रन्थता संभव नहीं है। **(ध.११/११४)**

अत: यह सिद्ध है कि द्रव्य से पुरुष वेदी के भाव स्त्री वेद पाया जाता है।

प्रश्न : किन-किन जीवों के द्रव्य एवं भाव वेद समान या असमान होते हैं?

उत्तर : द्रव्य एवं भाव दोनों वेद प्राय: प्रचुर रूप से देव-नारकियों में तथा सर्वही भोगभूमिज मनुष्य-तिर्यःाों में समान ही होते हैं परन्तु क्वचित् कर्मभूमिज मनुष्य एवं तिर्यःा इन दोनों गतियों में विषम या विसदृश भी होते हैं। इस प्रकार की विषमता होने से वहाँ द्रव्य और भाव वेद का कोई नियम नहीं है, क्योंकि आगम में नवें गुणस्थान के सवेद भाग पर्यन्त द्रव्य से पुरुष वेद एवं भाव से तीनों वेद हैं, ऐसा कथन किया है। **(गो.जी.जी. २७१)**

कर्म विवक्षा

क्र.	वेद	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	विशेष	भाव	विवरण
१.	स्त्रीवेद	उदय	९	मिथ्यात्व गुण. से अनिवृत्ति गुण. तक होते हैं।	गुणस्थानों के समान	छठे गुणस्थान से भाव-स्त्री एवं नपुंसक वेद जानना चाहिए।
२.	पुरुष वेद	उदय	९	,,	,,	
३.	नपुंसकवेद	उदय	९	,,	,,	
४.	वेदातीत (अपगत वेद)	उपशम	३	अनिवृत्तिकरण	औपशमिक	अवेद भाग से....
				सूक्ष्मसाम्पराय	,,	
				उपशांत कषाय	,,	
		क्षय	६	अनिवृत्तिकरण.	क्षायिक	अवेद भाग से ग्रहण करना चाहिए।
				सूक्ष्मसाम्पराय	,,	
				उपशांत कषाय.	,,	
				क्षीण कषाय	,,	
				सयोग केवली	,,	
				अयोग केवली	,,	

प्रश्न : स्त्रीवेद के कितने गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : स्त्रीवेद के चार गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं -

सम्यग्मिथ्यात्व, संयमासंयम, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्त संयत।

इसी प्रकार पुरुष एवं नपुंसक वेद में जानना चाहिए।

प्रश्न : वेदातीत अवस्था के कितने गुणस्थान औपशमिक भाव रूप भी हो सकते हैं?

उत्तर : वेदातीत अवस्था के दो गुणस्थान औपशमिक भाव रूप भी हो सकते हैं -

अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय।

ग्यारहवाँ गुणस्थान औपशमिक भाव रूप ही होता है।

प्रश्न : वेद मार्गणा में कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : वेद मार्गणा के तीन गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं -

बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ - वेदातीत स्थान की अपेक्षा।

आठवाँ, नवाँ गुणस्थान - तीनों वेदों की अपेक्षा।

नवें गुणस्थान के अवेद भाग से दसवें गुणस्थान तक - वेदातीत स्थान की अपेक्षा ये गुणस्थान क्षपक श्रेणी की अपेक्षा क्षायिक भाव रूप ही होते हैं।

प्रश्न : वेद मार्गणा की उत्पत्ति का कारण क्या है?

उत्तर : **तीन वेद -** चारित्र मोहनीय कर्म के उदय की अपेक्षा उत्पन्न होते हैं। **(ध.७/७९)**

अपगत वेद - चारित्र मोहनीय कर्म के उपशम एवं क्षय से उत्पन्न होता है। **(ध.७/८१)**

अर्थात् - उपशम श्रेणी की अपेक्षा नवाँ, दसवाँ और ग्यारहवाँ गुणस्थान उपशम से और क्षपक श्रेणी की अपेक्षा नवाँ, दसवाँ और बारहवाँ गुणस्थान क्षय से उत्पन्न होता है। तेरहवाँ चौदहवाँ गुणस्थान भी क्षय से ही उत्पन्न होते हैं।

स्थान-विवेचन

प्रश्न : वेद मार्गणा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : वेद मार्गणा में चार स्थान होते हैं -

(१) एक वेद रूप (२) दो वेद रूप (३) तीन वेद रूप (४) वेदातीत (अपगतवेद)

प्रश्न : इन स्थानों में किस-किस वेद को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में वेद -

१ वेद रूप स्थान में - स्त्रीवेद या पुरुषवेद या नपुंसकवेद

२ वेद रूप स्थान में - स्त्रीवेद एवं पुरुषवेद

३ वेद रूप स्थान में - स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसक वेद

प्रश्न : इन स्थानों में कौन-कौनसा भाव होता है?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

- एक वेद रूप स्थान में ५ भाव -

  क्षायोपशमिक भाव का १ मन:पर्ययज्ञान - पुरुषवेद

  औदयिक के ४ - नरकगति, स्त्रीलिङ्ग, पुरुषलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग

- दो वेदरूप स्थान में १ भाव -

  देवगति

- तीनवेद रूप स्थान में - ४०

  औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र

  क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

  क्षायोपशमिक के १७ - मन:पर्ययज्ञान के बिना

औदयिक के १६-२ गति (मनु.तिर्य.) ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

- वेदातीत स्थान में ७ भाव -

क्षायिक ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य।

प्रश्न : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

- एक वेद रूप स्थान के - नरकगति
- दो वेद रूप स्थान के - देवगति
- तीन वेद रूप स्थान के - मिथ्यात्व से अनिवृत्तिकरण गुणस्थान के सवेद भाग तक।
- वेदातीत रूप स्थान के - अनिवृत्तिकरण गुणस्थान के अवेद भाग से चौदहवें गुणस्थान तक तथा सिद्ध भगवान।

विशेष - एक वेद रूप स्थान के - सम्मूर्च्छन जीव, नवें गुणस्थान में जब दो वेद की व्युच्छित्ति हो जाती है तथा कल्पातीत देव आदि की अपेक्षा और भी स्वामी बन सकते हैं।

दो वेद रूप स्थान के - भोगभूमिया जीव, नवें गुणस्थान में जब एक वेद की व्युच्छित्ति हो जाती है म्लेच्छ मनुष्य आदि की अपेक्षा **(आ.समु.३४)**

तीन वेद रूप स्थान के - त्रस, पःोन्द्रिय आदि भी स्वामी बन सकते हैं।

वेदातीत स्थान के - त्रस, पःोन्द्रिय आदि भी स्वामी बन सकते हैं।

प्रश्न : किस वेद रूप स्थान में कितने भावों के दो-दो उत्तरभेद पाये जाते हैं?

उत्तर : तीन वेद रूप स्थान में दो भावों के दो-दो उत्तरभेद पाये जाते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

प्रश्न : किस वेदस्थान में किस भाव के पूरे भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : ३ वेद रूप स्थान में २ भाव के पूरे उत्तर भेद पाये जाते हैं -

- औपशमिक के - सम्यक्त्व, चारित्र
- पारिणामिक के - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

वेदातीत स्थान में क्षायिक भाव के ज्ञान, दर्शन......।

प्रश्न : किस वेद रूप स्थान में किस भाव का केवल एक उत्तरभेद पाया जाता है?

उत्तर : एक वेद रूप स्थान में १ - क्षायोपशमिक का - मन:पर्ययज्ञान - इसमें केवल पुरुष वेद होता है।

औदयिक का - नरकगति - इसमें केवल नपुंसक वेद होता है।

प्रश्न : कितने वेदस्थान के कितने भाव चारों गतियों में पाये जाते हैं?

उत्तर : मात्र एक वेद स्थान के ३० भाव चारों गतियों में पाये जाते हैं -

तीन वेद रूप स्थान के -

- औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १५-३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के १०-४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (अशु.)
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न : कितने वेदस्थानों में (मार्गणा में होने वाले) ज्ञान रूप भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : ३ वेद स्थानों में ज्ञान रूप भाव पाये जाते हैं।

एक पुरुष वेद रूप स्थान में	-	मन:पर्यय ज्ञान
तीन वेद रूप स्थान में	-	३ ज्ञान - मति, श्रुत, अवधि
		३ अज्ञान - कुमति, कुश्रुत, विभंग
वेदातीत स्थान में	-	क्षायिक (केवल) ज्ञान

भावों में वेद स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	४	३ वे. २ वे. १ वे. वेदातीत	
	चारित्र	२	३ वे. वेदा.	नवें गुणस्थान की अपेक्षा २ एवं १ वेद रूप स्थान भी होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	३	३ वे. १ वे. वेदातीत	
	चारित्र	२	३ वे. वेदातीत	नवें गुणस्थान की अपेक्षा २ एवं १ वेद रूप स्थान भी होता है।
	ज्ञान दर्शनादि सात भाव	१	वेदातीत	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	४	३ वे. २ वे. १ वे. वेदातीत	
	मन:पर्ययज्ञान	२	१ वे. वेदातीत	पुरुषवेद रूप स्थान होता है।
	३ अज्ञान	३	३ वे. २ वे. १ वे.	
	३ दर्शन	४	३,२,१, वेदातीत	
	५ लब्धि	४	३ वे. २ वे. १ वे. वेदातीत	
	सम्यक्त्व	३	३ वे. २ वे. १ वे.	देवगति की अपेक्षा २वेदरूप तथा नरकगति आदि की अपेक्षा १ वेद रूप स्थान होता है।
	चारित्र	१	३ वेद रूप	
	संयमासंयम	१	३ वेद रूप	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	१ वेद रूप	
	तिर्यःागति	१	३ वेद रूप	
	मनुष्यगति	२	३ वे. वेदातीत	
	देवगति	१	२ वेदरूप	
	४ कषाय	४	३ वे. २ वे. १ वे. वेदातीत	लोभ कषाय में वेदातीत स्थान ९ वें १० वें दोनों गुणस्थान में होता है।
	३ लिङ्ग	१	स्वकीय वेद रूप	
	मिथ्यादर्शन	३	३ वे. २ वे. १ वेद.	
	अज्ञान	४	३ वे. २ वे. १ वे. वेदातीत	
	असंयत	३	३ वे. २ वे. १ वे.	१ वेद रूप स्थान नरकगति की अपेक्षा होता है।
	असिद्धत्व	४	३ वे. २ वे. १ वे. वेदातीत	
	३ अशुभ लेश्या	३	३ वे. २ वे. १ वे.	२ वेद रूप स्थान देवगति की अपेक्षा होता है।
	पीत	२	३ वे. २ वे.	
	पद्म	२	३ वे. १ वे.	
	शुक्ल लेश्या	३	३ वे. १ वे. वेदा.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	४	३ वे. २ वे. १ वे. वेदातीत	
	भव्यत्व	४	३ वे. २ वे. १ वे. वेदातीत	
	अभव्यत्व	३	३ वे. २ वे. १ वे.	वेदातीत स्थान नहीं होता है।

प्रश्न : कितने भावों के वेदातीत स्थान में ४ गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : १३ भावों के वेदातीत स्थान में ४ गुणस्थान होते हैं -

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ लब्धि

औदयिक का १ - अज्ञान

इन भावों की वेदातीत अवस्था में ९ वाँ (अवेद भाग से) १० वाँ, ११ वाँ एवं १२ वाँ गुणस्थान होता है।

प्रश्न : कितने भावों में दो अपेक्षा से दो एवं एक वेद रूप स्थान होता है?

उत्तर : २२ भावों में दो अपेक्षा से दो एवं एक वेद रूप स्थान होता है -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ७ - ४ क. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल.)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट : मार्गणाओं के उत्तर भेदों की अपेक्षा और भी भाव हो सकते हैं।

१. तीन वेद एवं अपगत वेद की अपेक्षा दो स्थान होते हैं।

२. नरक गति की अपेक्षा एक वेद रूप स्थान होता है।

प्रश्न : कितने भावों में केवल एक स्थान होता है?

उत्तर : १५ भावों में केवल एक स्थान होता है -

क्षायिक के ७ - ज्ञान दर्शन..... - वेदातीत

क्षायोपशमिक के २ - चारित्र संयमासंयम - तीन वेद रूप

औदयिक के ६ - नरकगति - १ वेद रूप

तिर्यःगति - ३ वेद रूप

देवगति - २ वेद रूप

३ लिङ्ग - १ वेद रूप (स्वकीय वेद होने से)

प्रश्न : कितने भावों में नवें गुणस्थान में होने वाले तीन दो आदि वेद रूप स्थान भी बन सकते हैं?

उत्तर : २५ भावों में नवें गुणस्थान में होने वाले तीन-दो आदि वेद रूप स्थान भी बन सकते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्य.चारित्र
- क्षायिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा., ३ दर्श, ५ ल.
- औदयिक के ८ - १ ग. (मनु.) ४ कषाय १ अज्ञान, १ असि. १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में १ वेद रूप स्थान किसी भी अपेक्षा नहीं हो सकता है?

उत्तर : ९ भावों में १ वेद रूप स्थान किसी भी अपेक्षा नहीं हो सकता है -

- क्षायिक भाव का ७ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य
- क्षायोपशमिक के २ - चारित्र एवं संयमासंयम

नोट : (१) संयमासंयम में सम्मूर्च्छन जीवों की अपेक्षा १ वेद रूप स्थान बन सकता है लेकिन उसका यहाँ ग्रहण नहीं किया गया है। (२) क्षायोपशमिक चारित्र में मन:पर्ययज्ञान आदि की अपेक्षा एकवेद रूप स्थान बन सकता है।

प्रश्न : कितने भावों में २ वेद रूप स्थान नहीं हो सकता है?

उत्तर : १८ भावों में २ वेद रूप स्थान नहीं हो सकता है -

- क्षायिक के ७ - सम्यक्त्व बिना
- क्षायोपशमिक के ३ - मन:पर्ययज्ञान चारित्र संयमासंयम
- औदयिक के ८ - ३ गति (नर.ति.म.) ३ लिङ्ग २ लेश्या (पी.प.)

नोट : औपशमिक एवं क्षायिकसम्यक्त्व और चारित्र में नवें गुणस्थान की अपेक्षा दो वेद रूप स्थान बन सकता है।

प्रश्न : छह लेश्याओं में वेद स्थान किस प्रकार लगाना चाहिए?

उत्तर : छह लेश्याओं में वेद स्थान -

- ३ अशुभ लेश्याओं में - ३ वेद स्थान होते हैं -

  ३ वेद रूप, २ वेद रूप, १ वेद रूप

- ३ वेद रूप स्थान - कर्मभूमिया मनुष्य-तिर्यंच की अपेक्षा

- २ वेद रूप स्थान - देवगति (भवनत्रिक की अपेक्षा)
- १ वेद रूप स्थान - नरकगति की अपेक्षा
- पीत लेश्या में दो स्थान हैं - ३ वेद रूप एवं २ वेद रूप
- ३ वेद रूप स्थान - कर्मभूमिया मनुष्य-तिर्यःा की अपेक्षा
- २ वेद रूप स्थान - देवगति की अपेक्षा
- १ वेद रूप स्थान नहीं बनता है, क्योंकि नरकगति में शुभ लेश्या नहीं होती है। सम्मूर्च्छन जीवों की अपेक्षा बनता है लेकिन यहाँ उनकी विवक्षा नहीं है।
- पद्म लेश्या में दो स्थान हैं - ३ वेद रूप १ वेद रूप
- ३ वेद रूप स्थान - कर्मभूमिया मनुष्य तिर्यःा की अपेक्षा
- १ वेद रूप स्थान - देवगति अपेक्षा, क्योंकि देवियों के पद्म लेश्या नहीं पाई जाती है। कहा भी है कि सभी देवियों के पीत लेश्या ही होती है।
- पीत लेश्या में एक वेद रूप स्थान तथा पद्म लेश्या में दो वेद रूप स्थान नवें गुणस्थान की अपेक्षा भी नहीं बनते हैं, क्योंकि आठवें गुणस्थान से शुक्ल लेश्या ही होती है।
- शुक्ल लेश्या में तीन स्थान हैं - ३ वेद रूप १ वेद रूप एवं वेदातीत
- ३ वेद रूप स्थान - कर्म भूमिया मनुष्य - तिर्यःाों की अपेक्षा
- १ वेद रूप स्थान - देवगति की अपेक्षा, उसका कारण पद्म लेश्या के समान जानना चाहिए।
- वेदातीत स्थान - नवें गुणस्थान के अवेद भाग से तेरहवें गुणस्थान तक बनता है। इसमें नवें गुणस्थान की अपेक्षा २ वेद रूप स्थान भी बनता है। एक वेद रूप स्थान नवें गुणस्थान की अपेक्षा भी जानना चाहिए।

नोट : दो वेद रूप स्थान भोगभूमि की अपेक्षा भी बनता है लेकिन उसका यहाँ ग्रहण नहीं है।

प्रश्न : कितने भाव तीन वेद रूप स्थान में भी होते हैं और वेदातीत जीवों के भी होते हैं?

उत्तर : २५ भाव तीन वेद रूप स्थान में भी होते हैं और वेदातीत जीवों के भी होते हैं -

- औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ८ - १ ग. ४ क. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न : क्षायिक सम्यक्त्व में वेद रूप स्थानों की विवेचना किस प्रकार करनी चाहिए?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व में वेद मार्गणा के तीन स्थान होते हैं -

३ वेद रूप, १ वेद रूप, वेदातीत

- ३ वेद रूप स्थान - कर्मभूमिया मनुष्यों की अपेक्षा
- १ वेद रूप स्थान - (१) देव गति की अपेक्षा, क्योंकि सम्यग्दृष्टि स्त्री (नपुंसक) वेदी में उत्पन्न नहीं होता है इसलिए देवों में केवल एक पुरुष वेद रूप स्थान ही होता है, दो वेद रूप स्थान नहीं होता। इसी प्रकार भोगभूमि में भी जानना चाहिए।

  (२) नरकगति की अपेक्षा।
- वेदातीत - नवें गुणस्थान से अवेद भाग में चौदहवें गुणस्थान तक तथा सिद्धों के भी होता है।

  इसमें (क्षायिक सम्यक्त्व) नवें गुणस्थान में वेद व्युच्छित्ति की अपेक्षा दो एवं एक वेद रूप स्थान भी बनता है।

प्रश्न : क्या तिर्यंचगति में किसी अपेक्षा दो एवं एक वेद रूप स्थान नहीं बन सकता है?

उत्तर : हाँ, गुणस्थान एवं गति सामान्य की अपेक्षा तिर्यंचगति में दो एवं एक वेद रूप स्थान नहीं बन सकता है, लेकिन विशेष कथन करने पर भोगभूमियाँ तिर्यंचों की अपेक्षा दो वेद (स्त्री एवं पुरुष) रूप स्थान तथा सम्मूर्च्छन तिर्यंचों की अपेक्षा एक नपुंसक वेद रूप स्थान बन सकता है।

नोट : इसी प्रकार उत्तर भेदों में दो एवं एक वेद रूप स्थान बन सकते हैं।

भावों में वेद

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद अपगत.	द्रव्य से भी तीनों वेद हो सकते हैं।
	चारित्र	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद अपगत.	अपगत वेदी जीव भी होते हैं।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	नपुं. वेद द्रव्य स्त्रीवेदी के नहीं होता है।
	चारित्र	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	नपुं. वेद द्रव्य से पुरुषवेदी के ही होता है।
	ज्ञानादिसात	०	अपगत वेदी के ही होते हैं।	तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेदी भी होते हैं।
	मन:पर्ययज्ञान	१	पुरुषवेद	अपगत वेदी भी होते हैं।
	३ अज्ञान	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	मनुष्य-तिर्यःों की अपेक्षा तीनों वेद होते है।
	३ दर्शन	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेदी भी होते हैं
	५ लब्धि	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेदी भी होते हैं
	सम्यक्त्व	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेद अवस्था नहीं हो सकती है।
	चारित्र	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेद अवस्था नहीं हो सकती है।
	संयमासंयम	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेद अवस्था नहीं हो सकती है।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	नपुंसकवेद	
	तिर्यःगति	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	
	मनुष्यगति	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेदी भी होते हैं।
	देवगति	२	स्त्रीवेद पुरुषवेद	
	चार कषाय	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेदी भी होते हैं।
	स्त्रीलिङ्ग	१	स्वकीय	स्त्रीवेद
	पुरुषलिङ्ग	१	स्वकीय	पुरुषवेद
	नपुंसकलिङ्ग	१	स्वकीय	नपुंसकवेद
	मिथ्यादर्शन	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	
	अज्ञान	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगतवेदी भी होते हैं।
	असंयत	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	
	असिद्धत्व	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेदी भी होते हैं। तेरहवे-चौदहवें गुणस्थान में भी होता है।
	कृष्णादि ५ लेश्या	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	
	शुक्ल लेश्या	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेदी भी होते हैं।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगत वेदी एवं सिद्ध भगवान के भी होता है।
	भव्यत्व	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	अपगतवेदी जीव भी होते हैं।
	अभव्यत्व	३	स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद	

प्रश्न : कितने भावों में तीनों वेद होते हैं?

उत्तर : ४० भावों में तीनों वेद होते हैं -

- औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के १७ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा. १ संयमा.
- औदयिक के १६ - २ गति (तिर्य. मनु.) ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में अपगतवेदी जीव ही होते हैं?

उत्तर : सात भावों में अपगतवेदी जीव ही होते हैं -

क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिकदान, क्षायिक लाभ, क्षायिक भोग, क्षायिक उपभोग, क्षायिक वीर्य।

प्रश्न : कितने भावों में अपगतवेदी जीव भी होते हैं?

उत्तर : २६ भावों में अपगतवेदी जीव भी होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ लब्धि
- औदयिक के ८ - १ गति. ४ कषाय १ अज्ञा. १ असि. १ लेश्या (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में केवल एक वेद ही पाया जाता है?

उत्तर : पाँच भावों में केवल एक वेद ही पाया जाता है -

- क्षायोपशमिक का १ - मन:पर्ययज्ञान - पुरुषवेद
- औदयिक के ४ - नरकगति - नपुंसकवेद
  स्त्रीलिङ्ग - स्त्रीलिङ्ग
  पुरुषलिङ्ग - पुरुषलिङ्ग
  नपुंसकलिङ्ग - नपुंसकलिङ्ग

नोट : (१) आहारक ऋद्धि वाले, परिहारविशुद्धि संयमी तथा शलाका पुरुषों के भी एक पुरुष वेद ही होता है। ये सब मनुष्यगति रूप भाव में संगृहीत हो जाते हैं।

(२) सम्मूर्च्छन जीवों के भी एक नपुंसक वेद ही होता है, इनका ग्रहण तिर्यःा एवं मनुष्यगति रूप भाव में हो जाता है।

प्रश्न : कितने भाव तीनों वेदों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में पाये जाते हैं?

उत्तर : २५ भाव तीनों वेदों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक भाव के ९ - २ अज्ञान मत्यज्ञान श्रुताज्ञान, २ दर्शन (च.अच.) ५ लब्धि (दान लाभ....)

औदयिक के १३ - २ गति (ति.मनु.) ४ कषाय १ मिथ्या. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (कृ.नी.का.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में दो वेद होते हैं?

उत्तर : मात्र देवगति रूप औदयिक भाव में दो वेद होते हैं -

- भोगभूमिया मनुष्य-तिर्यःा तथा म्लेच्छ खण्ड में भी दो (स्त्री-पुरुष) वेद होते हैं। लेकिन ये कोई अलग से भाव नहीं हैं।
- एक वेद की व्युच्छित्ति होने पर नवें गुणस्थान में भी वेद होते हैं।

प्रश्न : कितने भाव नपुंसक वेदी की अनाहारक अवस्था में होते हैं लेकिन स्त्रीवेदी की अनाहारक अवस्था में नहीं?

उत्तर : ८ भाव नपुंसक वेदी के अनाहारक अवस्था में होते हैं लेकिन स्त्रीवेदी की अनाहारक अवस्था में नहीं -

- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ५-३ ज्ञान, १ अवधिदर्शन, १ सम्य. (कृतकृत्य की अपेक्षा)
- औदयिक के २ - नरकगति, नपुंसकवेद

स्त्री एवं नपुंसक वेद

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व	
			चारित्र	द्रव्य से पुरुषवेदी के ही होता है।
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व	
			चारित्र	वेदातीत जीवों के भी होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**	१७	३ ज्ञान - मति श्रुत अवधि	
			३ अज्ञान-मत्यज्ञान श्रुताज्ञान विभंगावधि.	
			३ दर्शन - चक्षु. अच. अवधि.	
			५ लब्धि - दान लाभ भोग....	
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - चारित्र	भाव वेद की अपेक्षा ही होता है।
			१ - संयमासंयम	
४.	**औदयिक**	१८	३ गति - तिर्य. मनु. देव.	
			४ कषाय - क्रोध मा.मा. लोभ.	
			१ लिङ्ग - स्वकीय	स्त्रीलिङ्ग में स्त्रीलिङ्ग.....
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	

प्रश्न : स्त्री वेदी के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : स्त्री वेदी के ४२ भाव होते हैं -

- औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के १७ - ३ ज्ञा ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि १ संयमा.
- औदयिक के १८ - ३ गति ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व अभव्यत्व

इसी प्रकार नपुंसक वेदी के भी ४२ भाव होते हैं लेकिन वहाँ देवगति के स्थान पर नरकगति तथा स्त्रीलिङ्ग के स्थान पर नपुंसकलिङ्ग लेना चाहिए।

प्रश्न : स्त्री वेद के साथ ३ अज्ञान रूप भाव कितनी गतियों में पाये जाते हैं?

उत्तर : स्त्रीवेद के साथ ३ अज्ञान रूप भाव तीन गतियों में पाये जाते हैं -

(१) तिर्यःागति (२) मनुष्यगति (३) देवगति।

नोट : यहाँ गर्भ जन्म वाले मनुष्य-तिर्यःा तथा देवगति में देवांगनाओं को ग्रहण करना चाहिए।

प्रश्न : किन-किन नपुंसकवेदी जीवों के विभंगावधिज्ञान रूप भाव नहीं होता है?

उत्तर : वे नपुंसक वेदी जिनके विभंगावधिज्ञान रूप भाव नहीं होता है -

(१) विग्रहगति में (२) निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में

(३) पर्याप्त होने के बाद जब तक विभंगावधिज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता।

(४) एकेन्द्रिय से असंज्ञी पःोन्द्रिय पर्यन्त

(५) तीसरे से नवें गुणस्थान तक (६) सम्मूर्च्छन जन्म वालों के, आदि

नोट : (१) उपर्युक्त स्थानों में विभंगावधिज्ञान का अस्तित्व ही संभव नहीं है, क्योंकि यह अनुगामी नहीं होता इसलिए विग्रहगति में एवं निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में तथा पर्याप्त होने पर भी कुछ अन्तर्मुहूर्त तक विभंगावधि ज्ञान उत्पन्न नहीं होता है इसलिए निषेध किया है। यह ज्ञान संज्ञी पंचेन्द्रिय के दूसरे गुणस्थान तक ही होता है.....

(२) जो आचार्य सम्मूर्च्छन जीवों के भी अवधिज्ञान मानते हैं उनकी अपेक्षा विभंगावधि भी हो सकती है।

प्रश्न : स्त्रीवेद के रहते हुए कितने औदयिक भावों का अभाव हो सकता है?

उत्तर : स्त्रीवेद के रहते हुए सात औदयिक भावों का अभाव हो सकता है -

(१) मिथ्यादर्शन (२) असंयत (३) कृष्ण लेश्या (४) नील लेश्या (५) कापोत लेश्या (६) पीत लेश्या (७) पद्म लेश्या

अर्थात् नवें गुणस्थान के आगे ये औदयिक भाव नहीं पाये जाते हैं।

अथवा - सम्यग्दर्शन होने पर मिथ्यादर्शन का, संयमासंयम या संयम हो जाने पर असंयत का और तीन अशुभलेश्या तथा श्रेणी चढ़ने पर पीत एवं पद्म लेश्या रूप भाव का अभाव हो जाता है।

प्रश्न : स्त्रीवेदियों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : स्त्रीवेदियों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में १४ भाव नहीं होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व और चारित्र

- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व और चारित्र
- क्षायोपशमिक के ८ - ३ ज्ञान १ अज्ञान (विभंगा.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ संयमा. १ चारित्र
- औदयिक के २ - पद्‌मलेश्या शुक्ल लेश्या

अर्थात् इनके ४२ भावों में से १४ भाव नहीं होते हैं अत: २८ भाव ही होते हैं।

नोट : (१) सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियों में उत्पन्न नहीं होते हैं इसलिए औपशमिक सम्य.क्षायि.सम्य. ३ ज्ञा. १ दर्शन तथा क्षायो. सम्य. नहीं होता है।

(२) औप. चारित्र, क्षा.चा., विभंगा. तथा संयमासंयम रूप भाव पर्याप्त अवस्था में ही होते हैं।

(३) क्षायो. चा. आहारकमिश्र की अपेक्षा निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में होता है लेकिन स्त्रीवेद में आहारक ऋद्धि नहीं होती है।

(४) पीत लेश्या वैमानिक देवियों की अपेक्षा हो जाती है।

(५) यद्यपि क्षा.चा. में भी निर्वृ. अवस्था होती है लेकिन वहाँ वेदातीत अवस्था ही होती है।

प्रश्न : क्या नपुंसक वेदियों के भी इसी प्रकार जानना चाहिए?

उत्तर : नहीं, नपुंसक वेदियों के -

क्षायिक सम्यक्त्व ३ ज्ञान १ दर्शन तथा क्षायोपशमिक सम्यक्त्व (कृतकृत्य वेदक अपेक्षा) रूप भाव प्रथम नरक की अपेक्षा बन जाते हैं, क्योंकि ये भाव बद्धायुष्क सम्यग्दृष्टि के नरक गति में जाते समय बनते हैं, वहाँ केवल नपुंसकवेद ही होता है। अत: नपुंसक वेद के साथ ९ भाव नहीं होते हैं -

(१) औपशमिक सम्यक्त्व (२) औपशमिक चारित्र (३) क्षायिक चारित्र (४) विभंगावधिज्ञान

(५) क्षायोपशमिक चारित्र (६) संयमासंयम (७) पीत लेश्या (८) पद्‌म लेश्या (९) शुक्ल लेश्या।

अर्थात् नपुंसक वेद में होने वाले ४२ भावों में से ये ९ भाव नहीं होते हैं इसलिए वहाँ इनके ३३ भाव होते हैं।

प्रश्न : नपुंसक वेद वालों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में शुभ लेश्याएँ क्यों नहीं होती हैं?

उत्तर : प्रथम एवं द्वितीय गुणस्थानवर्ती मनुष्य-तिर्यंचों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में अशुभ लेश्याएँ ही होती हैं। सम्यग्दृष्टि जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में शुभ लेश्या होती है लेकिन

सम्यग्दृष्टि जीव स्त्री एवं नपुंसक वेद में उत्पन्न नहीं होता है। प्रथम नरक में उत्पन्न होता है तब उसके शुभ लेश्याएँ नहीं होती हैं, क्योंकि वहाँ अशुभ लेश्याएँ ही होती हैं। इसलिए नपुंसक वेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में शुभ लेश्याएँ नहीं होती हैं।

प्रश्न : नपुंसक वेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : स्त्री वेदी के दो ही गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन

नपुंसक वेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में तीन गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन (३) अविरत सम्यक्त्व (सम्यग्दृष्टि)

प्रश्न : उपर्युक्त गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : उपर्युक्त गुणस्थानों में भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में २७ - क्षायोपशमिक के ९-२ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

  औदयिक के १५ - ३ ग. ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले.(अशुभ)

  पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

- सासादन गुणस्थान में २४ - उपर्युक्त भावों में से नरकगति, मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व कम करना चाहिए।

- अविरत सम्यक्त्व में २५ - क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

  औदयिक के १० - १ ग. (नर.) ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले. (कापोत)

  पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट : स्त्री वेदी के मिथ्यात्व गुणस्थान में एक पीत लेश्या और मिला देने पर २८ भाव होते हैं। सासादन गुणस्थान में मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव घटाने पर २६ भाव होते हैं। दोनों में नपुंसक वेद के स्थान पर स्त्री वेद तथा नरकगति के स्थान पर देवगति को ग्रहण करना चाहिए।

प्रश्न : स्त्री एवं नपुंसक वेदी के कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : स्त्री एवं नपुंसक वेदी के ९ गुणस्थान होते हैं -

मिथ्यात्व से अनिवृत्तिकरण गुणस्थान के सवेद भाग तक।

प्रश्न : इन गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : इन गुणस्थानों में भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में ३१ - क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श ५ ल.।
  औदयिक के १८ - ३ ग. ४ क. १ लि. (स्वकीय) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि.।
  पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।
- सासादन गुणस्थान में उपर्युक्त भावों में से मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व को कम करने से २९ भाव होते हैं।
- सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में भी इसी प्रकार जानना चाहिए।
- अविरतसम्यक्त्व गुणस्थान में ३३ - औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
  क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
  क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा - ३ दर्श - ५ ल. १ सम्य.
  औदयिक के १७ - ३ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञान १ असं १ असि. ६ ले.
  पारिणामिक के २ जीवत्व भव्यत्व।
- संयमासंयम गुणस्थान में २९ - औपशमिक का १ सम्यक्त्व
  क्षायिक का १ सम्यक्त्व।
  क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संयमासंयम
  औदयिक के १२ - २ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले.
  पारिणामिक के २ जीवत्व भव्यत्व।

नोट : (१) शेष गुणस्थानों में गुणस्थानों के समान जानना चाहिए। विशेष यह है कि मन:पर्ययज्ञान को ग्रहण नहीं करना चाहिए क्योंकि स्त्री एवं नपुंसक वेद के साथ मन:पर्ययज्ञान नहीं होता है।

(२) स्त्रीवेद में नरकगति के स्थान पर देवगति तथा नपुंसकवेद के स्थान पर स्त्रीवेद ग्रहण करना चाहिए।

(३) स्त्रीवेदी में क्षायिक सम्यक्त्व केवल मनुष्यगति की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : नपुंसकवेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में गति रूप भाव की विवेचना किस प्रकार करनी चाहिए?

उत्तर : नपुंसकवेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में गति रूप भाव-

- मिथ्यात्व गुणस्थान - नरकगति तिर्यञ्चगति तथा मनुष्यगति की अपेक्षा
- सासादन गुणस्थान - मनुष्यगति तिर्यञ्चगति की अपेक्षा।
- अविरतसम्यक्त्व गुणस्थान - नरकगति की अपेक्षा।

पुरुष वेद

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	तिर्य:गति में भोगभूमि में ही होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१८	४ ज्ञान - मति श्रुत ..... ३ अज्ञान-मत्यज्ञान श्रुताज्ञान विभंगावधि ३ दर्शन - चक्षु. अच. अवधि. ५ लब्धि - दान लाभ.... १ - सम्यक्त्व १ - चारित्र १ - संयमासंयम	संज्ञी पंचेन्द्रिय के ही होता है।
४.	**औदयिक**	१८	३ गति - तिर्य. मनु. देव. ४ कषाय - क्रोध मा.मा. लोभ. १ लिङ्ग - पुरुष १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	नरकगति नहीं होती है।
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	

प्रश्न : पुरुषवेद में कितने भाव होते हैं ?

उत्तर : पुरुषवेद में ४३ भाव होते हैं-

औपशमिक के २, क्षायिक के २, क्षायोपशमिक के १८, औदयिक के १८ (नरकगति एवं दो लिङ्ग बिना), पारिणामिक के ३।

प्रश्न : पुरुष वेदी सम्यग्दृष्टि के कितने भाव होते हैं ?

उत्तर : पुरुषवेदी सम्यग्दृष्टि के ३८ भाव होते हैं-

औपशमिक के २ - सम्य. चारित्र (उपशम श्रेणी की अपेक्षा)

क्षायिक के ४२ सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोशमिक के १५ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारित्र १ संयमा.।

औदयिक के १७ - ३ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असं १. असिद्ध. ६ ले.।

पारिणामिक के २ जीवत्व भव्यत्व।

ये भाव भावपुरुष की अपेक्षा कहे गये हैं। द्रव्य पुरुष वेद की अपेक्षा क्षायिक के शेष ७ भाव भी हो जायेंगे, क्योंकि द्रव्य पुरुषवेद चौदहवें गुणस्थान तक पाया जाता है। कहा भी है- द्रव्य वेद चौदहवें गुणस्थान के अन्ततक होता है। **(ध.२/५१३)**

प्रश्न : पुरुषवेदी के कितने गुणस्थान होते हैं ?

उत्तर : पुरुषवेदी जीवों के ९ गुणस्थान होते हैं-

मिथ्यात्व से अनिवृत्तिकरण गुणस्थान के सवेद भाग तक।

प्रश्न : इन गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं ?

उत्तर : इन गुणस्थानों में भावों का कथन नपुंसक वेदी के समान जानना चाहिए। विशेष इतना है कि (१) नरकगति के स्थान पर देवगति तथा नपुंसक लि. के स्थान पर पुरुष लिङ्ग को ग्रहण करना चाहिए। (२) छठे गुणस्थान से मन:पर्यय ज्ञान को भी ग्रहण करना चाहिए।

प्रश्न : पुरुष वेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव होते हैं ?

उत्तर : पुरुषवेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ३८ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ सम्यक्त्व।

क्षायिक का १ सम्यक्त्व।

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारित्र।

औदयिक के १८ - ३ ग. ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असि. १ असं. ६ लेश्या।

पारिणामिक के ३ जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व।

प्रश्न : पुरुषवेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : पुरुषवेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ४ गुणस्थान होते हैं -

- मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, अविरतसम्यक्त्व, प्रमत्तसंयत।

इनमें भाव -

- मिथ्यात्व गुणस्थान में ३० क्षायोपशमिक के ९-२ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

  औदयिक के १८-३ ग. ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या

  पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

  इनमें से मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व कम करने पर सासादन सम्यक्त्व में २८ भाव होते हैं।

- अविरतसम्यक्त्व गुणस्थान में - ३३

  औपशमिक का १ - सम्यक्त्व (देवगति की अपेक्षा)

  क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

  औदयिक के १७ - ३ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

  पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

- प्रमत्तसंयत गुणस्थान में २७

  क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

  क्षायोपशमिक के १३-३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारित्र

  औदयिक के ११-१ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ लेश्या (शुभ)

  पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : पुरुषवेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में छहों लेश्या रूप भाव किस अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : पुरुषवेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में लेश्या रूप भाव -

- कृष्ण नील कापोत लेश्या - मिथ्यात्व एवं सासादन गुणस्थानवर्ती देव, मनुष्य एवं तिर्यञ्चों के।
- पीत पद्म शुक्ल लेश्या - मिथ्यात्व, सासादन तथा अविरत सम्यग्दृष्टि वैमानिक देवों के, अविरतसम्यग्दृष्टि कर्मभूमिया मनुष्यों के तथा प्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती मुनिराजों के।
- कापोत लेश्या, अविरतसम्यग्दृष्टि भोगभूमिया जीवों के भी होती है।
- कृष्णादि अशुभ लेश्या नरकों से आने वाले सम्यग्दृष्टि जीवों की अपेक्षा कर्मभूमिया (सम्यग्दृष्टि) मनुष्यों के भी होती है। कहा भी है - नारकी सम्यग्दृष्टि तो अपनी पुरानी चिरन्तन लेश्याओं के साथ ही मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं। **(ध.२/६५८)**

प्रश्न : नारकी सम्यग्दृष्टि जीव मरते समय अपनी पुरानी कृष्णादि लेश्याओं को क्यों नहीं छोड़ते हैं?

उत्तर : इसका कारण यह है कि नारकी जीवों के जाति विशेष से ही अर्थात् स्वभावत: संक्लेश की अधिकता होती है, इस कारण मरणकाल में भी वे उन्हें नहीं छोड़ सकते हैं। **(ध.२/६५९)**

अपगत वेद

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व, चारित्र	नवें गुणस्थान के अवेद भाग से ग्यारहवें गुणस्थान तक होते हैं।
२.	**क्षायिक**	९	सम्यक्त्व, चारित्र, ज्ञानादि सात	तेरहवें चौदहवें एवं सिद्धभगवान के भी होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	४ ज्ञान-मति.श्रुत.अवधि.मनः ३ दर्शन-चक्षु.अचक्षु.अवधि ५ लब्धि-दान लाभ.....	
४.	**औदयिक**	८	१ गति-मनुष्य ४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो. १ - अज्ञान १ - असिद्धत्व १ लेश्या - शुक्ल	 लोभ दो गुणस्थानों में होता है। छहों गुणस्थानों में होता है। पाँच गुणस्थानों में होती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : अपगत वेद में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अपगत वेद में ३३ भाव होते हैं -
औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन·········
क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
औदयिक के ८ - १ ग. (मनुष्य) ४ क. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : अपगतवेदी जीवों के कम-से-कम कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अपगतवेदी जीवों के छद्मस्थों की अपेक्षा कम-से-कम १७ भाव होते हैं -
क्षायिक के २, क्षायोपशमिक के ९-२ ज्ञा. २ दर्श. ५ लब्धि
औदयिक के ४ - १ ग. १ अज्ञा. १ असि. १ ले.
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

- ये भाव क्षीणकषाय गुणस्थानवर्ती जीवों के जानना चाहिए।
- वीतराग भगवान की अपेक्षा १३ भाव -

  क्षायिक के ९, औदयिक के २ (१ ग. १ असि.) पारिणामिक के २ (जीवत्व भव्यत्व)

  अथवा सिद्ध भगवान की अपेक्षा १० भाव ही होते हैं।

  क्षायिक के ९, पारिणामिक का १ (जीवत्व)

प्रश्न : अपगत वेद में क्षायोपशमिक एवं क्षायिक दोनों ज्ञान किस अपेक्षा पाये जाते हैं?

उत्तर : अपगत वेद में क्षायोपशमिक मति श्रुत अवधि एवं मन:पर्यय ज्ञान नवें गुणस्थान के अवेद भाग से १२ वें गुणस्थान तक पाये जाते हैं तथा क्षायिक केवलज्ञान तेरहवें-चौदहवें गुणस्थानवर्ती एवं सिद्धों के भी पाया जाता है।

इसी प्रकार दर्शन एवं लब्धियों में जानना चाहिए।

प्रश्न : अपगत वेद में चार कषाय रूप भाव कहाँ-कहाँ पाये जाते हैं?

उत्तन : अपगत वेद में तीन कषाय रूप भाव केवल नवें गुणस्थान के अवेद भाग में तथा लोभ कषाय रूप भाव नवें गुणस्थान के अवेद भाग से दसवें गुणस्थान तक पाया जाता है। क्योंकि पहले वेदों का अभाव होता है बाद में कषायों का।

प्रश्न : अपगतवेदी जीवों के लेश्या रूप भाव का अभाव भी हो सकता है?

उत्तर : हाँ, चौदहवें गुणस्थानवर्ती अपगत वेदी जीवों के लेश्या रूप भाव का अभाव भी होता है अर्थात् चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव लेश्यातीत ही होते हैं।

सिद्ध भगवान भी अपगतवेदी होते हैं। उनके भी लेश्या नहीं पाई जाती है।

प्रश्न : अपगतवेद में क्षायिक एवं औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : अपगत वेद में क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव -

- उपशम श्रेणी में स्थित नवें गुणस्थान के अवेद भाग में दसवें तथा ग्यारहवें गुणस्थान में पाया जाता है।
- क्षपक श्रेणी की अपेक्षा नवें गुणस्थान के अवेद भाग में, दसवें बारहवें गुणस्थान में तथा तेरहवें। चौदहवें गुणस्थानवर्ती भगवन्तों के और सिद्ध भगवान के भी पाया जाता है।

  औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव -

- उपशम श्रेणी के नवें गुणस्थान के अवेद भाग में, दसवें तथा ग्यारहवें गुणस्थान में होता है। इसमें क्षपक श्रेणी नहीं होती है।

प्रश्न : अपगत वेदी के वेद का अभाव द्रव्य की अपेक्षा होता है या भाव की अपेक्षा?

उत्तर : (यद्यपि पाँचवें गुणस्थान से आगे भी द्रव्य वेद (पुरुषवेद) का सद्भाव पाया जाता है परन्तु केवल द्रव्यवेद से ही विकार उत्पन्न नहीं होता है) यहाँ पर तो भाव वेद का अधिकार है इसलिए भाववेद के अभाव से ही उन जीवों को अपगत वेदी जानना चाहिए, द्रव्य वेद के अभाव से नहीं। **(ध.१/३४५)**

प्रश्न : योनि, लिङ्ग आदि से संयुक्त शरीर वेद कहलाता है सो अपगतवेदियों के इस प्रकार वेद का विनाश नहीं होता है। इसी प्रकार अपगत वेदियों के भाव वेद का विनाश भी नहीं है, क्योंकि जब तक शरीर का नाश नहीं होता तब तक शरीर के धर्म का विनाश मानने में विरोध आता है इसलिए अपगतवेदता युक्तिसंगत नहीं है?

उत्तर : न तो शरीर स्त्री या पुरुष वेद है, क्योंकि नामकर्म से उत्पन्न होने वाले शरीर के मोहनीयपने का विरोध है और न शरीर मोहनीय कर्म से ही उत्पन्न होता है, क्योंकि जीवविपाकी मोहनीय कर्म के पुद्गल विपाकी होने का विरोध है और न शरीर का धर्म ही वेद है, क्योंकि शरीर से पृथग्भूत वेद पाया जाता है। **अथवा** मोहनीय कर्म से उत्पन्न होने वाले जीव के परिणाम का और मोहकर्म स्कन्ध का अभाव होने से अपगतवेदी होता है इसलिए अपगत वेदता मानना युक्ति-युक्त है। **(ध.५/२२२)**

प्रश्न : अपगत वेद में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : अपगत वेद में ६ गुणस्थान होते हैं -

- अनिवृत्तिकरण (अवेद भाग से), सूक्ष्मसाम्पराय, उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ, क्षीणकषायवीतराग छद्मस्थ, सयोगकेवलीजिन, अयोगकेवलीजिन।
- सिद्ध भगवान भी अपगत वेदी में आते हैं।

  इन गुणस्थानों में भाव गुणस्थान के समान ही जानना चाहिए।
- इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में एक गुणस्थान ही होता है-

  सयोगकेवली जिन।
- इसमें पर्याप्त अवस्था के समान ही १४ भाव होते हैं।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न : कितने भाव सवेद एवं अवेद दोनों अवस्थाओं में होते हैं?

उत्तर : २६ भाव सवेद एवं अवेद दोनों अवस्थाओं में होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र

- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ८ - १ ग. ४ क. १ अज्ञान १ असि. १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : क्षायोपशमिक भाव के १७ भेद कितने वेदों में पाये जाते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक भाव के १७ भेद दो वेदों में पाये जाते हैं - स्त्रीवेद और नपुंसकवेद।

- इनमें मन:पर्ययज्ञान रूप भाव नहीं होता है।

प्रश्न : क्या सवेदी जीवों के भी क्षायिक भाव के दो भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : हाँ, सवेदी जीवों के भी क्षायिक भाव के सम्यक्त्व एवं चारित्र रूप दो भेद पाये जाते हैं-

- क्षायिक सम्यक्त्व - चौथे से नवें के सवेद भाग तक
- क्षायिक चारित्र - क्षपक श्रेणी में स्थित आठवें तथा नवें गुणस्थान के सवेद भाग तक।

प्रश्न : क्या द्रव्य स्त्रीवेदी एवं भाव स्त्रीवेदी के बराबर भाव होते हैं?

उत्तर : नहीं, द्रव्य स्त्री वेदी की अपेक्षा भाव स्त्री वेदी के चार भाव विशेष होते हैं -

(१) औपशमिकचारित्र (२) क्षायिक सम्यक्त्व
(३) क्षायिक चारित्र (४) क्षायोपशमिक चारित्र

– प्रश्न पत्र –

१. उपयुक्त विकल्प पर (✓) का निशान लगाइये-

(i) **क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव के साथ कितने वेद नहीं होते हैं?**

(अ) पुरुषवेद (ब) नपुंसकवेद
(स) पुरुष नपुंसक (द) कोई नहीं

(ii) **पुरुषवेदी के कितने पारिणामिक भाव होते हैं?**

(अ) ३ (ब) २
(स) १ (द) कोई नहीं

(iii) **स्त्रीवेदी की अपेक्षा पुरुषवेदी के कितने भाव ज्यादा होते हैं?**

(अ) १ (ब) २
(स) एक भी नहीं (द) पाँच

(iv) **नपुंसकवेदी के कितनी गति रूप भाव होते हैं?**

(अ) ३ (ब) २
(स) ४ (द) ५

(v) **स्त्रीवेद के रहते हुए कितनी लेश्या रूप भाव का अभाव हो सकता है?**

(अ) ३ (ब) ६
(स) ४ (द) ५

२. हाँ या ना में उत्तर दीजिए-

(i) असिद्धत्व भाव पुरुषवेद के अभाव में भी होता है?
(ii) स्त्रीवेदी के विभंगावधि रूप भाव नहीं होता है?
(iii) अज्ञान रूप भाव का अभाव होने पर एक भी वेद नहीं रह सकता है?
(iv) स्त्रीवेदी के कम-से-कम १ कषाय रूप भाव होता है?
(v) पुरुषवेदी के अवधिज्ञान रूप भाव के साथ दो पारिणामिक भाव होते हैं?

३. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) स्त्रीवेद के साथ क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव कितने योगों में होता है?
(ii) पुरुषवेदी जीव के अनाहारक अवस्था में कितने क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं?
(iii) वेदातीत नवें गुणस्थान वालों के कितने भाव होते हैं?
(iv) आठवें गुणस्थानवर्ती जीवों के कितने वेद रूप भाव होते हैं?
(v) ७ क्षायिक लब्धि रूप भाव में कितने वेद रूप भाव नहीं होते हैं?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए -

(i) स्त्री वेद के ……………. ज्ञान रूप ……………. लेश्या रूप तथा ……………. लिङ्ग रूप भाव होता है।

(ii) पुरुषवेदी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ……………. अज्ञान रूप ……………. दर्शन रूप तथा ……………. गति रूप भाव होते हैं।

(iii) अवधिज्ञान रूप भाव में ……………. वेदी ……………. वेदी ……………. वेदी तथा ……………. जीव भी होते हैं।

(iv) वेदातीत जीवों के .... सम्यक्त्व रूप .... चारित्र रूप तथा .... कषाय रूप भाव होते हैं।

(v) .... वेदरूप .... वेद रूप तथा .... ज्ञान रूप भाव आहारक काययोगी के नहीं होते हैं।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	स्त्रीवेद	-	देवगति
(ii)	मन:पर्ययज्ञान	-	६ गुणस्थान
(iii)	मनुष्यगति	-	नवा गुणस्थान
(iv)	दो वेद रूप स्थान	-	दो वेद
(v)	वेदातीत	-	तीन वेद
(vi)	नरकगति	-	नपुंसक वेद
(vii)	सवेद एवं अवेद अवस्था	-	४२ भाव
(viii)	भोगभूमिया	-	पुरुषवेद

– उत्तरमाला –

१. (i) द (ii) अ (iii) अ (iv) अ (v) द।

२. (i) हाँ (ii) ना (iii) हाँ (iv) ना (v) हाँ।

३. (i) ९ (ii) ४ (iii) २६ (iv) ३ (v) ३

४. (i) ३, ६, १ (ii) २,३,३ (iii) स्त्री, पुरुष, नपुंसक, अवेद
(iv) २, २, ४ (v) स्त्रीवेद नपुंसकवेद मन:पर्ययज्ञान

५. (i) ४२ भाव (ii) पुरुषवेद (iii) तीन वेद
(iv) देवगति (v) ६ गुणस्थान (vi) नपुंसक वेद
(vii) नवाँ गुण. (viii) दो वेद

कषाय मार्गणा

प्रश्न : कषाय मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : जो तत्त्वार्थ श्रद्धान रूप सम्यक्त्व, अणुव्रत रूप देश चारित्र, महाव्रत रूप सकल चारित्र और यथाख्यात चारित्र रूप आत्मा के विशुद्ध परिणामों को कषती अर्थात् घातती है, उसे कषाय कहते हैं। **(गो.जी. २८२-८३)**

- जो क्रोधादिक जीव के सुख दुःख रूप बहुत प्रकार के धान्य को उत्पन्न करने वाले कर्म रूप खेत को कर्षण करते हैं अर्थात् जोतते हैं वे कषाय हैं। **(ध.७/७)**
- जिनके लिए संसार की चारों गतियाँ मर्यादा या मेढ़ रूप हैं इसलिए उन्हें कषाय कहते हैं। **(पं.सं.प्रा.१/१०९)**
- कषाय वेदनीय कर्म के उदय से होने वाली क्रोधादि रूप कलुषता कषाय कहलाती है, क्योंकि यह आत्मा के स्वाभाविक रूप को कष देती है अर्थात् उसकी हिंसा करती है। **(रा.वा. २/६)**
- चारित्र के परिणाम को कषने के कारण या घातने के कारण, ये कषाय कहलाती हैं। **(रा.वा.९/७)**
- चारित्र परिणामों का कर्षण अर्थात् हिंसन कषायों से होता है इसलिए उन्हें कषाय कहते हैं। **(तत्त्व.सा. २/८२)**
- क्रोधादि कषायों में अथवा कषाय और अकषाय में जीवों की खोज करने को कषाय मार्गणा कहते हैं।

प्रश्न : कषाय मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : कषाय मार्गणा के अनुवाद से क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी और अकषायी जीव होते हैं। **(ध.१/३४८)**

- कषायों से रहित शुद्ध आत्मा के स्वभाव से प्रतिकूल क्रोध, मान, माया तथा लोभ इन भेदों से चार प्रकार की कषायमार्गणा है और विस्तार से कषाय और नोकषाय के भेद से पच्चीस प्रकार की होती है। **(वृ.द्र.सं. १३ टी.)**
- अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ; अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ; प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ; संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ रूप १६ कषाय तथा हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद रूप नौ नोकषाय, इस प्रकार कषाय मार्गणा के १६+९=२५ भेद होते हैं।

प्रश्न : नोकषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : ईषत् कषाय को नोकषाय कहते हैं। यहाँ ईषत् अर्थात् किंचित् अर्थ में नञ् का प्रयोग होने से हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद तथा नपुंसकवेद भाव क्रोधादि के समान चारित्र गुण का पूर्ण घात नहीं कर पाते इसलिए इन्हें नोकषाय कहा है। **(सर्वा.८/९)**

- जिस प्रकार कुत्ता स्वामी का इशारा पाकर बलवंत हो जाता है और जीवों को मारने के लिए प्रवृत्ति करता है तथा स्वामी के इशारों से वापिस आ जाता है, उसी प्रकार क्रोध आदि कषायों के बल पर ही ईषत् प्रतिषेध होने पर हास्यादि नोकषायों की प्रवृत्ति होती है। क्रोध आदि कषायों के अभाव में ये निर्बल रहती हैं इसलिए हास्यादि को ईषत् कषाय, नोकषाय कहते हैं। **(रा.वा.८/९)**

प्रश्न : क्रोध किसे कहते हैं?

उत्तर : रोष, आमर्ष और संरम्भ इन सबको क्रोध कहते हैं। **(ध.१ /३५१)**

- युक्तायुक्त विचार से रहित दूसरे के घात की वृत्ति, शरीर में कंपन, दाह, नेत्रों में लालिमा तथा मुख की विवर्णता लक्षण वाला क्रोध है।
- अपने या पर के अपराध से अपना या दूसरों का नाश होना या नाश करना क्रोध है। **(य.ति. च.८/४६७)**
- जिसके उदय से अपने और पर के घात करने के परिणाम हों तथा पर के उपकार करने के अभाव रूप भाव अर्थात् पर का उपकार करने के भाव न होना वा क्रूर भाव हो सो क्रोध कषाय है।
- हृदय-दाह, अंग कम्पन, नेत्र रक्तता और इन्द्रियों की अपटुता आदि के निमित्तभूत जीव के परिणाम को क्रोध कहा जाता है। **(ध.१२/२८३)**

प्रश्न : मान कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : रोष से अथवा विद्या, तप और जाति आदि के मद से अन्य के प्रति नम्र न होने को मान कषाय कहते हैं। **(ध.१/३७१)**

- जाति आदि के मद से दूसरे के तिरस्कार रूप भाव को मान कषाय कहते हैं। युक्ति दिखा देने पर भी दुराग्रह नहीं छोड़ना मान है। **(रा.वा. ८/९)**
- कवित्व कौशल के कारण समस्त जनों द्वारा पूजनीयपने से, कुल जाति की विशुद्धि से, निरुपम बल से, सम्पत्ति की वृद्धि के विलास से, सात ऋद्धियों से अथवा शरीर लावण्य रस के विस्तार से होने वाला जो आत्म अहंकार है वह मान कहलाता है। **(नि.सा.ता.११२)**

- विज्ञान, ऐश्वर्य, जाति, कुल, तप और विद्या इनके निमित्त से उत्पन्न उद्धतता रूप जीव का परिणाम मान कहलाता है। **(ध.१२/२८३)**

प्रश्न : माया कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : आत्मा का कुटिल भाव माया है, इसका दूसरा नाम निकृति या वंचना है। **(सर्वा.६/१६)**

- निकृति/वंचना-पंचेन्द्रिय के विषयों के अभिलाषी मनुष्य को फँसाने के चातुर्य को निकृति कहते हैं।
- अपने हृदय के विचारों को छिपाने की जो चेष्टा की जाती है उसे माया कहते हैं। **(ध.१२/२८३)**
- दूसरों को ठगने के लिए जो छल-कपट और कुटिल भाव होता है वह माया है। **(रा.वा.८/९)**
- नाना प्रकार के प्रतारण के उपायों द्वारा ठगने के लिए आकुलित मति और विनय, विश्वासघात से चित्त को हरण करने के लिए बनी आकृति माया है।

प्रश्न : लोभ कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : गृद्धि या आकांक्षा को लोभ कहते हैं। **(ध.१/३५१)**

- धन आदि की तीव्र आकांक्षा या गृद्धि लोभ है। **(रा.वा.८/९)**
- बाह्य पदार्थों में जो 'यह मेरा है' इस प्रकार की अनुराग रूप बुद्धि होती है वह लोभ कषाय है। **(ध.१२/२८३)**
- योग्य स्थान पर धनव्यय का अभाव भी लोभ है। निश्चय से समस्त परिग्रह का परित्याग जिसका लक्षण है ऐसे निरंजन निज परमात्म तत्त्व के परिग्रह से अन्य परमाणु मात्र द्रव्य को स्वीकार करना वह लोभ है। **(नि.सा.ता.११२)**

प्रश्न : अकषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : सम्पूर्ण कषायों के अभाव को अकषाय कहते हैं। **(ध.१/३५३)**

- जिनके स्वयं अपने को, दूसरे को तथा दोनों को बाधा देने, बन्ध करने और असंयम करने में निमित्तभूत क्रोधादि कषाय नहीं हैं, जो बाह्य और आभ्यन्तर मल से रहित हैं ऐसे जीवों को अकषाय जीव कहते हैं। **(ध.१/३५३)**
- जिस जीव के समस्त कषायों का अभाव हो चुका है वह अकषाय या अकषायी कहा जाता है। **(प्रा.पं.सं. १/११६)**

- चारित्र मोहनीय के उपशम अथवा क्षय से जो लब्ध सामर्थ्य विशेष होता है उससे जीव के अकषायत्व, विगत कषायता होती है। शेष किसी भी कर्म के क्षय से अथवा उपशम से अकषायत्व नहीं होता है। **(ध.७/८३)**

प्रश्न : कषाय को औदयिक भाव क्यों कहा है?

उत्तर : कषाय नामक चारित्र मोह के उदय से होने वाली क्रोधादि रूप कलुषता कषाय कहलाती है। यह आत्मा को कष देती है। क्रोध, मान, माया, लोभ ये चारों कषायें और इनके उत्तरभेद चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से होते हैं इसलिए इन्हें औदयिक कहते हैं। **(रा.वा.२/६)**

कर्म विवक्षा

क्र.	कषाय	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	अनन्तानुबन्धी चतुष्क	उदय	मिथ्यात्व सासादन	औदयिक पारिणामिक	एकेन्द्रिय से संज्ञी पःेन्द्रिय तक जीवों के होता है।
२.	अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क	उदय	मिथ्यात्व सासादन सम्यग्मिथ्यात्व अविरत सम्य.	औदयिक पारिणामिक क्षायोपशमिक औप.क्षायि.क्षायो.	इस गुण. से आगे के सभी गुण. पंचेन्द्रिय संज्ञी के ही होते हैं।
३.	प्रत्याख्यानावरण चतुष्क	उदय	पहले से चौथे तक पूर्ववत् तथा संयमासंयम	क्षायोपशमिक	
४.	संज्वलनत्रिक	उदय	पहले से पाँचवें तक पूर्ववत् तथा प्रमत्त-अप्रमत्त अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण	क्षायोपशमिक औप.क्षायि. औप. क्षायि.	
५.	संज्वलन लोभ	उदय	पहले से नवें गुण-स्थान तक पूर्ववत् तथा सूक्ष्मसाम्पराय.	औप.क्षायि.	
६.	हास्यादि छह नोक.	उदय	पहले से आठवें गुणस्थान तक पूर्ववत्		चौथे गुण. तक चारों गतियों में होती है।
७.	३ वेद	उदय	पहले से नवें गुणस्थान तक पूर्ववत्		छठे गुणस्थान से केवल मनुष्यगति में ही होते हैं।
८.	कषायातीत (अकषाय)	उपशम क्षय	उपशान्तकषाय क्षीणकषाय सयोगकेवली अयोगकेवली	औपशमिक क्षायिक क्षायिक क्षायिक	क्षायिकसम्यग्दृष्टि के भी होता है।

प्रश्न : कितनी कषायों का कोई भी गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप नहीं होता है?

उत्तर : चार कषायों का कोई भी गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप नहीं होता है - अनन्तानुबन्धी क्रोध-मान-माया-लोभ।

- इन चार कषायों में पहला एवं दूसरा गुणस्थान ही होता है इसलिए इन कषायों का कोई भी गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप नहीं होता है।
- कषायातीत जीवों का भी कोई गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप नहीं होता है।

प्रश्न : कितनी कषायों के दो गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : हास्यादि ६ नोकषायों के दो गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं -

हास्य-रति-अरति-शोक-

भय-जुगुप्सा - चौथा एवं आठवाँ गुणस्थान

- चौथे गुणस्थान में दर्शनमोह की विवक्षा होने से क्षायिक भाव बन जाता है।

प्रश्न : संज्वलन कषाय के कितने गुणस्थान औपशमिक भाव रूप नहीं होते हैं?

उत्तर : संज्वलन कषाय के ६ गुणस्थान औपशमिक भाव रूप नहीं होते हैं - पहले से तीसरा, पाँचवें से सातवाँ गुणस्थान।

- क्षपक श्रेणी में आठवें से १० वाँ गुणस्थान भी औपशमिक भाव रूप नहीं होता है।

प्रश्न : कषायातीत जीवों के गुणस्थान किस-किस भाव रूप होते हैं?

उत्तर : कषायातीत जीवों का १ गुणस्थान औपशमिक भाव रूप होता है-

उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ

तथा तीन गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं,

क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ, सयोगकेवलीजिन, अयोगकेवली जिन

प्रश्न : कितनी कषायों के गुणस्थान पाँचों भाव रूप होते हैं?

उत्तर : २१ कषायों के गुणस्थान पाँचों भाव रूप होते हैं -

- इनका पहला गुणस्थान - औदयिक भाव रूप
- दूसरा गुणस्थान - पारिणामिक भाव रूप
- तीसरा गुणस्थान - क्षायोपशमिक भाव रूप
- चौथा गुणस्थान - औप. क्षायि. क्षायो. भाव रूप

आगे के गुणस्थान भी याथायोग्य जानने चाहिए। यहाँ अनन्तानुबन्धी के बिना २१ कषाय जानना चाहिए।

प्रश्न : कितनी कषायों के गुणस्थान अनिवृत्तिकरण रूप भी होते हैं?

उत्तर : ७ कषायों के गुणस्थान अनिवृत्तिकरण (नवम गुणस्थान) रूप भी होते हैं -

संज्वलन क्रोध-मान-माया-लोभ

३ नोकषाय - स्त्रीवेद-पुरुषवेद-नपुंसक वेद

स्थान एवं भाव

प्रश्न : कषाय मार्गणा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : कषाय मार्गणा में अनेक स्थान होते हैं -

(१) २५ कषाय रूप (२) २४ कषाय रूप (३) २३ कषाय रूप (४) २१ कषाय रूप (५) १७ कषाय रूप (६) १३ कषाय रूप (७) ७ कषाय रूप (८) १ कषाय रूप (९) अकषाय (कषायातीत) रूप।

इनके अलावा २०,१९,१५,११,५,४,३,२ आदि रूप भी कषायस्थान हो सकते हैं।

प्रश्न : इन स्थानों में किस-किस कषाय को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में कषायें -

- २५ कषाय रूप स्थान में - ४ अनन्तानुबन्धी ४ अप्रत्याख्यानावरण ४ प्रत्याख्यानावरण ४ संज्वलन तथा हास्यादि ९ नोकषाय
- २४ कषाय रूप स्थान में - १६ कषाय ८ नोकषाय (नपुंसक बिना)
- २३ कषाय रूप स्थान में - १६ कषाय ७ नोकषाय (स्त्री एवं पुरुषवेद बिना)
- २१ कषाय रूप स्थान में - १२ कषाय ९ नोक. (अनन्तानु-बिना)
- १७ कषाय रूप स्थान में - ८ क. ९ नोक. (दो चौकड़ी बिना)
- १३ कषाय रूप स्थान में - ४ क. ९ नोक. (तीन चौकड़ी बिना)
- ७ कषाय रूप स्थान में - ४ क. ३ वेद
- १ कषाय रूप स्थान में - संज्वलन लोभ
- अकषाय स्थान - कषायें नहीं होती हैं।

प्रश्न : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

- २५ कषाय रूप स्थान में २९ भाव -

- क्षायोपशमिक भाव के १० - ३ अज्ञान २ दर्शन ५ ल.
- औदयिक भाव के १६ - २ग. (ति.म.) ४क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या
- पारिणामिक भाव के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

- २४ कषाय रूप स्थान में १ भाव - देवगति
- २३ कषाय रूप स्थान में ४ भाव - नरकगति, स्त्रीलिङ्ग, पुरुषलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग
- २१ कषाय रूप स्थान में ७ भाव - औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) सम्यक्त्व

- १७ कषाय रूप स्थान में १ भाव - संयमासंयम
- १३ कषाय रूप स्थान में ३ भाव - औपशमिक भाव का १ - चारित्र
  क्षायिक का १ - चारित्र
  क्षायोपशमिक का १ - चारित्र
- ११ कषाय रूप स्थान में १ भाव - मन:पर्ययज्ञान
- अकषाय रूप स्थान में ७ भाव - क्षायिक ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोग-उपभोग-वीर्य।

प्रश्न : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

- २५ कषाय रूप स्थान के - मिथ्यादृष्टि जीव
- २४ कषाय रूप स्थान के - देवगति के जीव
- २३ कषाय रूप स्थान के - नरकगति के जीव
- २१ कषाय रूप स्थान के - तीसरे-चौथे गुणस्थानवर्ती जीव
- १७ कषाय रूप स्थान के - पंचमगुणस्थानवर्ती जीव
- १३ कषाय रूप स्थान के - छठे से आठवें गुणस्थानवर्ती जीव

- ७ कषाय रूप स्थान के - नवें गुणस्थानवर्ती जीव
- १ कषाय रूप स्थान के - दसवें गुणस्थानवर्ती जीव
- अकषाय स्थान के - ग्यारहवें से चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव तथा सिद्ध भगवान

विशेष -

- २० कषाय रूप स्थान के - तृतीय चतुर्थ गुणस्थानवर्ती देव, भोगभूमिया जीव आदि
- १९ कषाय रूप स्थान के - तृतीय चतुर्थ गुणस्थानवर्ती नारकी, सम्मूर्च्छन जीव आदि
- १५ कषाय रूप स्थान के - पंचम गुणस्थानवर्ती सम्मूर्च्छन जीव आदि।
- ११ कषाय रूप स्थान के - मन:पर्ययज्ञानी तथा ऋद्धिधारी मुनिराज
- ६ कषाय रूप स्थान के - नवें गुणस्थानवर्ती जिनके एक वेद की व्युच्छित्ति हो गई है।
- ५ कषाय रूप स्थान के - नवें गुणस्थानवर्ती जिनके दो वेद की व्युच्छित्ति हो गई है।
- ४ कषाय रूप स्थान के - नवें गुणस्थानवर्ती जिनके तीनों वेद की व्युच्छित्ति हो गई है।
- ३ कषाय रूप स्थान के - नवें गुणस्थानवर्ती जिनके क्रोध कषाय की व्युच्छित्ति हो गई है।
- २ कषाय रूप स्थान के - नवें गुणस्थानवर्ती जिनके मान कषाय की व्युच्छित्ति हो गई है।
- १ कषाय रूप स्थान के-नवें गुणस्थानवर्ती जिनके माया कषाय की व्युच्छित्ति हो गई है।

प्रश्न : कितने कषायस्थानों में केवल एक-एक भाव पाया जाता है?

उत्तर : तीन कषायस्थानों में केवल एक-एक भाव पाया जाता है -

- २४ कषाय रूप स्थान - देवगति
- १७ कषाय रूप स्थान - संयमासंयम
- ११ कषाय रूप स्थान - मन:पर्ययज्ञान

प्रश्न : कितने कषायस्थानों में तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : मात्र एक कषायस्थान में तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं -

२५ कषाय रूप स्थान में - क्षायोपशमिक, औदयिक एवं पारिणामिक।

प्रश्न : कितने स्थानों में केवल औदयिक भाव के ही उत्तरभेद पाये जाते हैं?

उत्तर : दो स्थानों में केवल औदयिक भाव के ही उत्तर भेद होते हैं -

- २४ कषाय रूप स्थान में - देवगति
- २३ कषाय रूप स्थान में - नरकगति एवं ३ लिङ्ग

प्रश्न : कितने कषायस्थानों में तीन लिङ्गों में से एक लिङ्ग रूप भाव होता है?

उत्तर : • २३ कषाय रूप स्थान - नपुंसक लिङ्ग

- १९ कषाय रूप स्थान - नपुंसक लिङ्ग
- १५ कषाय रूप स्थान - नपुंसक लिङ्ग
- ११ कषाय रूप स्थान - पुरुष लिङ्ग
- ५ कषाय रूप स्थान - १ लिङ्ग (दो लिङ्ग की व्युच्छित्ति होने पर)

प्रश्न : कितने कषाय स्थानों में केवल एक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : पाँच कषाय स्थानों में एक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

- २४ कषाय रूप स्थान में - औदयिक भाव
- २३ कषाय रूप स्थान में - औदयिक भाव
- १७ कषाय रूप स्थान में - क्षायोपशमिक
- ११ कषाय रूप स्थान में - क्षायोपशमिक
- अकषाय रूप स्थान में - क्षायिक

प्रश्न : कितने कषायस्थानों में चारों गति रूप भाव होते हैं?

उत्तर : २ कषायस्थानों में चारों गति रूप भाव होते हैं -

- २३ कषाय रूप स्थान में - मिथ्यादृष्टि एवं सासादन सम्यग्दृष्टि नारकी के, सम्मूर्च्छन तिर्य:ों के, सम्मूर्च्छन मनुष्यों के, नव ग्रैवेयक के देवों की अपेक्षा अथवा देव या देवांगना का अलग-अलग कथन करने पर भी २३ कषाय का स्थान बनता है।
- १९ कषाय रूप स्थान में - **नरक में -** तीसरे चौथे गुणस्थानवर्ती नारकी, • तिर्य:ों में- सम्मूर्च्छन सम्यग्दृष्टि तिर्य:ों के, भोगभूमिया क्षायिक सम्यग्दृष्टि एवं कृतकृत्यवेदक तिर्य:ा
- **मनुष्यों में -** जो सम्यग्दर्शन को लेकर आया है उन सम्यग्दृष्टि मनुष्यों के (क्योंकि सम्यग्दृष्टि पुरुष वेदी में ही उत्पन्न होता है)

  अथवा - भोगभूमिया कृतकृत्य एवं क्षायिक सम्यग्दृष्टि के

  अथवा - भोगभूमि में वेद वैषम्य नहीं होता इसलिए किसी भी सम्यग्दृष्टि मनुष्य (तिर्य:ा)के।
- **देवों में -** क्षायिक या कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि देवों के, कल्पातीत सम्यग्दृष्टि देवों के होता है।

भावों में कषाय स्थान

क्र.	भाव	स्थान सं.	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	८	२१क.२०क.१९क.१७क.१३क. ७क.१क.अक.	
	चारित्र	४	१३ क. ७ क. १ क. अक.	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	७	२१क. १९क.१७क.१३क.७क. १ क. अक.	देवों में भी १९ कषाय रूप स्थान ही होता है।
	चारित्र	४	१३क. ७क. १क. अक.	
	ज्ञानादि सात	१	अकषाय	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	मति-श्रुतज्ञान	८	२१क.२०क.१९क.१७क.१३क. ७क. १क. अक.	
	अवधिज्ञान	८	२१क.२०क.१९क.१७क.१३क. ७क. १क. अक.	
	मन:पर्ययज्ञान	४	११ क. ५ क. १ क. अक.	
	२ अज्ञान	३	२५ क. २४ क. २३ क.	
	विभंगावधिज्ञान	३	२५क. २४ क. २३ क.	पर्याप्त अवस्था में ही होता है।
	चक्षु.अच.दर्शन	९	२५क. २४क. २३ क. २१क. १७ क. १३क. ७क. १क. अक.	
	अवधिदर्शन		अवधिज्ञानवत्	
	५ लब्धि	९	२५क. २४क. २३क. २१क. १७क. १३क. ७क. १क. अक.	
	सम्यक्त्व	५	२१क. २०क. १९क. १७क. १३क.	७वें गुण. तक ही होता है इसलिए ७ आदि का स्थान नहीं है।
	चारित्र	१	१३ क.	
	संयमासंयम	१	१७ क.	सम्मूर्च्छन तिर्यःा की अपेक्षा १५ क. का स्थान भी बन सकता है।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	२	२३ क. १९ क.	
	तिर्यःागति	३	२५ क. २१ क. १७ क.	ये स्थान तीन लिङ्ग वालों की अपेक्षा कहे गये हैं।
	मनुष्यगति	७	२५क. २१क. १७क. १३क. ७क. १क. अक.	
	देवगति	२	२४ क. २० क.	
	३ कषाय	५	१३क. १२क. ११क. १०क. ४क.	

	लोभ	६	१३क. १२क. ११क. १०क. ४क.१क.	१ कषाय रूप स्थान नवें-दसवें दोनों गुणस्थान में बनता है।
	३ लिङ्ग	५	२३क. १९क. १५क. ११क. ५क.	
	मिथ्यादर्शन	३	२५ क. २४ क. २३ क.	
	अज्ञान	९	२५क. २४ क. २३क.२१क. १७क. १३क. ७क. १क. अक.	
	असंयत	४	२५क. २४क. २३क. २१क.	
	असिद्धत्व	९	अज्ञान के समान	
	कृष्ण-नील लेश्या	४	२५क. २४क. २३क.२१क.	
	कापोत लेश्या	४	२५क. २४क. २३क. २१ क.	
	पीत-पद्मलेश्या	५	२५क. २४क. २१क. १७क. १३क.	सम्मूर्च्छन जीवों के २३ का स्थान होता है।
	शुक्ल लेश्या	८	२५क. २४क. २१क. १७क. १३क. ७क. १ क. अक.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	९	२५क.२४क.२३क.२१क.१७क. १३क.७क.१क.अक.	
	भव्यत्व	९	२५क.२४क.२३क.२१क.१७क. १३क.७क.१क.अक.	
	अभव्यत्व	३	२५क. २४क. २३क.	

विशेष :

(१) उपशम सम्यक्त्व में १९ कषाय रूप स्थान नारकियों की अपेक्षा जानना चाहिए क्योंकि सम्मूर्च्छन जीवों के उपशम सम्यक्त्व नहीं होता है।

(२) उपशम सम्यक्त्व में ११ कषाय रूप स्थान द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ मन:पर्ययज्ञान की अपेक्षा होते हैं।

(३) ३ ज्ञान में ११ कषाय का स्थान आहारकऋद्धि, परिहारविशुद्धि आदि की अपेक्षा बनेगा, मन:पर्ययज्ञान की अपेक्षा नहीं, क्योंकि एक समय में एक ही ज्ञान होता है।

(४) क्षायिक सम्यक्त्व में २१, १७ कषाय का स्थान केवल कर्मभूमिया मनुष्यों के तथा १९ कषाय का स्थान नरकों में बनता है।

(५) अवधिज्ञान, अवधिदर्शन एवं विभंगावधिज्ञान में १५ कषाय रूप स्थान नहीं होता, क्योंकि सम्मूर्च्छन जीवों के अवधिज्ञान आदि नहीं होते हैं। जो आचार्य इनके अवधिज्ञान मानते हैं उनकी अपेक्षा इनके भी १५ कषाय का स्थान बन जाता है।

(६) देवों में क्षायिक सम्यक्त्व पुरुषवेदी के ही होता है इस अपेक्षा उनके भी १९ कषाय रूप स्थान होता है।

(७) मिथ्यादर्शन में अनन्तानुबंधी की विसंयोजना करके आये हुए जीवों की अपेक्षा एक आवली काल तक २१ कषाय रूप स्थान भी बनता है।

प्रश्न : कितने भावों में केवल एक कषायस्थान होता है?

उत्तर : ९ भावों में केवल एक कषायस्थान होता है -

- क्षायोपशमिक के २ - चारित्र - १३ कषाय रूप
  संयमासंयम - १७ कषाय रूप
- क्षायिक के ७ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य-अकषाय स्थान

प्रश्न : कितने भावों में अकषाय स्थान भी होता है?

उत्तर : २२ भावों में अकषाय स्थान भी होता है -

- औपशमिक का २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक का २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ४ - १ ग. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में २५ कषाय रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : २५ भावों में २५ कषाय रूप स्थान भी होता है -

- क्षायोपशमिक भाव के १०-३ अज्ञा. २ दर्श. (च.अच.) ५ लब्धि
- औदयिक के १२-२ ग. (मनु.तिर्य.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में केवल एक गुणस्थान में पाये जाने वाले कषायस्थान होते हैं?

उत्तर : ३ भावों में केवल एक गुणस्थान में पाये जाने वाले कषायस्थान होते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव का १ - संयमासंयम पंचम गुणस्थान १७ कषाय रूप स्थान
- औदयिक भाव का १ - मिथ्यादर्शन प्रथम गुणस्थान २५,२४,२३ कषाय रूप
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व प्रथम गुणस्थान २५,२४,२३ कषाय रूप

प्रश्न : कितने भावों में ९ कषायस्थान होते हैं?

उत्तर : ११ भावों में ९ कषायस्थान होते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के ७-२ दर्शन (च.अच.) ५ लब्धि
- औदयिक के २-१ अज्ञान १ असिद्धत्व
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

इनमें २५, २४, २३, २१, १७, १३, ७, १ कषाय रूप तथा अकषाय ये ९ कषायस्थान होते हैं, क्योंकि ये भाव पहले गुणस्थान से बारहवें एवं चौदहवें गुणस्थान तक पाये जाते हैं।

प्रश्न : क्या शुक्ल लेश्या में किसी भी अपेक्षा २३ कषाय का स्थान नहीं बन सकता?

उत्तर : हाँ, गुणस्थान एवं गति की अपेक्षा तो शुक्ल लेश्या में २३ कषाय का स्थान नहीं बन सकता है लेकिन उत्तर भेदों में बन सकता है। जैसे -

(१) देवगति में कल्पातीत देवों में २३ कषाय का स्थान ही होता है, क्योंकि वहाँ देवांगनाएँ नहीं होती हैं।

(२) भोगभूमिया क्षायिक सम्यग्दृष्टि (पर्याप्त जिनके शुक्ल लेश्या होती है) जीव इनके भी २३ कषाय का स्थान ही होता है, क्योंकि वहाँ क्षायिक सम्यग्दृष्टि पुरुषवेदी ही होते हैं।

(३) सम्मूर्च्छन तिर्यःगों (पर्याप्तक) के भी २३ कषायस्थान हैं, क्योंकि उनके छहों लेश्याएँ हो सकती हैं। और भी अनेक स्थानों में २३ कषाय का स्थान बन सकता है।

प्रश्न : कितने भावों में मिथ्यादर्शन के समान ३ ही कषाय स्थान होते हैं?

उत्तर : ४ भावों में मिथ्यादर्शन के समान ३ ही कषायस्थान होते हैं -

(१) मत्यज्ञान (२) श्रुताज्ञान (३) विभंगावधिज्ञान (४) अभव्यत्व

- इनमें २५, २४ तथा २३ कषाय रूप तीन स्थान होते हैं।

प्रश्न : ४ कषाय रूप भावों में कषाय स्थानों का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : ४ कषाय रूप भावों में कषाय स्थान -

क्रोध कषाय में • १३ कषाय रूप स्थान - ४ क्रोध (अनन्ता.अप्र.प्रत्या.सं.) ९ नोकषाय (पहला, दूसरा गुणस्थान)

- १२ कषाय रूप स्थान - ३ क्रोध (अप्र.प्रत्या.सं.) ९ नोकषाय (तीस.चौथे गुण. में)
- ११ कषाय रूप स्थान - २ क्रोध ९ नोक. (पाँचवें गुण. में)
- १० कषाय रूप स्थान - १ क्रोध ९ नोकषाय (छठे से आठवें तक)
- ४ कषाय रूप स्थान - १ क्रोध ३ वेद (नवें गुणस्थान)

विशेष : नवें गुणस्थान में ही एक वेद की व्युच्छित्ति होने पर ३ कषाय (१ क्रोध, २ वेद) रूप, दो वेद की व्युच्छित्ति होने पर, २ कषाय रूप, तीनों वेदों की व्युच्छित्ति होने पर १ क्रोध कषाय रूप स्थान होता है।

इसी प्रकार मान माया लोभ में जानना चाहिए। विशेष यह है कि ४ क्रोध के स्थान पर ४ मान ४ माया ४ लोभ को ग्रहण करना चाहिए और लोभ कषाय में १ कषाय का स्थान दसवें गुणस्थान में भी होता है।

प्रश्न : कितने भावों में २० कषाय रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : सात भावों में २० कषाय रूप स्थान भी होता है।

औपशमिक का - १ सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के - ३ ज्ञान (म.श्रु.अ.) १ दर्श. (अव.) १ (सम्यक्त्व)

औदयिक के - १ ग. (देव.)

प्रश्न : कितने भावों में अभव्यत्व भाव के समान तीन स्थान पाये जाते हैं?

उत्तर : २ भावों में अभव्यत्व भाव के समान तीन कषाय स्थान पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक का - १ विभंगावधिज्ञान

औदयिक का - १ मिथ्यादर्शन

इनमें अभव्यत्व के समान २५ कषाय रूप, २४ कषाय रूप तथा २३ कषाय रूप व तीन स्थान पाये जाते हैं।

भावों में कषाय

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	२१	४ अप्र. ४ प्रत्य. ४ सं. ९ नोक.	अनन्तानुबन्धी कषाय नहीं होती है।
	चारित्र	१३	४ संज्वलन ९ नोक.	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	२१	४ अप्र. ४ प्रत्या. ४ संज्व. ९ नोक.	
	चारित्र	१३	४ संज्व. ९ नोक.	संज्वलनत्रिक छठे से नवें गुणस्थान तक होती है।
	ज्ञानादि सात	०	कषायातीत जीव ही होते हैं।	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	२१	४ अप्र. ४ प्रत्या. ४ सं. ९ नोक.	
	मन:पर्ययज्ञान	११	४ संज्व. ७ नोक.	स्त्री एवं नपुंसक वेद नहीं होता है।
	३ अज्ञान	२५	४ अन. ४अप्र. ४प्र. ४सं. ९नोक.	
	चक्षु अचक्षु दर्शन	२५	४ अन. ४अप्र. ४प्र. ४सं. ९नोक.	
	अवधिदर्शन	२१	४ अप्र. ४प्रत्या. ४सं. ९नोक.	
	५ लब्धि	२५	४ अन. ४अप्र. ४प्र. ४सं. ९नोक.	
	सम्यक्त्व	२१	४ अप्र. ४प्रत्य. ४सं. ९नोक.	
	चारित्र	१३	४ सं. ९ नोक.	छठे सातवें गुणस्थान में होती हैं।
	संयमासंयम	१७	४ प्रत्या. ४ संज्व. ९ नोक.	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	२३	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४सं. ७नो.	स्त्री एवं पुरुष वेद नहीं होता है।
	तिर्यःागति	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४सं. ९नो.	
	मनुष्यगति	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४सं. ९नो.	
	देवगति	२४	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४सं. ८नो.	नपुंसकवेद नहीं होता है।
	४ कषाय	१३	४ संज्व. क्रोध ९ नोक	
	३ लिङ्ग	२३	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ७नो.	एक लिङ्ग के साथ दूसरा लिङ्ग नहीं होता।
	मिथ्यादर्शन	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ९नो.	
	अज्ञान	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ९नो.	
	असंयत	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ९नो.	
	असिद्धत्व	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ९नो.	
	कृष्णदि ३ ले.	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ९नो.	मनुष्य, तिर्यःाों की अपेक्षा ही २५ कषाय होती हैं।
	पीत पद्म ले.	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ९नो.	
	शुक्ल लेश्या	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ९नो.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ९नो.	
	भव्यत्व	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ९नो.	
	अभव्यत्व	२५	४अन. ४अप्र. ४प्रत्या. ४संज्व. ९नो.	

प्रश्न : हास्यादि ६ नोकषाय भी औदयिक हैं, उनका यहाँ ग्रहण क्यों नहीं किया है?

उत्तर : लिङ्ग के सहचारी होने से हास्य रति आदि ६ नोकषायों का अन्तर्भाव लिङ्ग में हो जाता है, क्योंकि जैसे सहचर होने से नारद का ग्रहण करने से पर्वत का ग्रहण हो जाता है। (नारद के बिना पर्वत नहीं रहता) उसी प्रकार जहाँ लिङ्ग रहता है वहाँ हास्यादि रहते ही हैं, क्योंकि लिङ्ग नवें गुणस्थान तक रहता है तथा हास्यादि आठवें गुणस्थान तक ही रहती हैं। **(रा.वा. २/६)**

प्रश्न : कितने भावों में कषायवान एवं कषायातीत दोनों जीव पाये जाते हैं?

उत्तर : २२ भावों में कषायवान एवं कषायातीत दोनों जीव पाये जाते हैं -

- औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ४ - १ ग. (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न : कितने भाव हास्यादि कषायों का अभाव होने पर नहीं रह सकते?

उत्तर : १७ भाव हास्यादि कषायों का अभाव होने पर नहीं रहते हैं -

- क्षायोपशमिक के ६ - ३ अज्ञा. १ सम्य. १ चारि. १ संय.
- औदयिक के १० - ३ गति (मनुष्य बिना) १ मि. १ असं. ५ लेश्या (शुक्ल. बिना)
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में पूरी नोकषाय नहीं होती है?

उत्तर : १३ भावों में पूरी नोकषाय नहीं होती है -

- क्षायिक के ७ भावों में नोकषाय होती ही नहीं है।
- क्षायोपशमिक के १ - १ ज्ञान (मनः)
- औदयिक के ५ - (१) नरकगति (२) देवगति (३) स्त्रीलिङ्ग (४) पुरुषलिङ्ग (५) नपुंसक लिङ्ग

प्रश्न : कितने भावों में कषायवान जीव ही होते हैं?

उत्तर : २४ भावों में कषायवान जीव ही होते हैं -

- क्षायोपशमिक के ६-३ अज्ञान १ सम्य. १ चारि. १ संय.
- औदयिक के १७-३ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ असं. ५ ले. (शुक्ल बिना)
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न : कितने भाव अनन्तानुबन्धी कषाय के साथ ही होते हैं?

उत्तर : ५ भाव अनन्तानुबन्धी कषाय के साथ ही होते हैं -

- क्षायोपशमिक के ३ - मत्यज्ञान, श्रुताज्ञान, विभंगावधिज्ञान
- औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

नोट : ये पाँच भाव अनन्तानुबन्धी चतुष्क के साथ ही होते हैं लेकिन अनन्तानुबन्धी कषाय के साथ इनके रहने का कोई नियम नहीं है, क्योंकि दूसरे गुणस्थान में अनन्तानुबन्धी के रहने पर भी मिथ्यादर्शन और अभव्यत्व भाव नहीं रहते है ।

प्रश्न : कितने भावों में १७ कषायें पायी जाती हैं?

उत्तर : मात्र एक संयमासंयम रूप क्षायोपशमिक भाव में १७ कषायें पायी जाती हैं।

- ४ प्रत्याख्यानावरण - क्रोध मान माया लोभ।
- ४ संज्वलन - क्रोध मान माया लोभ।
- ९ नोकषाय - हास्य रति अरति शोक भय जुगुप्सा स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद

प्रश्न : कितने भाव हास्यादि छह नोकषायों के साथ नहीं होते हैं?

उत्तर : केवल सात भाव हास्यादि छह नोकषायों के साथ नहीं होते हैं -

- क्षायिक ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य।

अनन्तानुबन्धी चतुष्क

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**क्षायोपशमिक**	१०	३ अज्ञान-कुमति कुश्रुत कुअवधि २ दर्शन-चक्षु. अचक्षु. ५ लब्धि-दान लाभ भोग उपभोग वीर्य	कुअवधिज्ञान संज्ञी पःोन्द्रिय पर्याप्तक के ही होता है।
२.	**औदयिक**	२१	४ गति-नरक तिर्य. मनु. देव. ४ कषाय-क्रो.मा.मा.लो. ३ लिङ्ग-स्त्री.पुरु.नपुं. १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या. कृ.नी.का.पी.प.शु.	एकेन्द्रिय आदि सभी तिर्यःों को ग्रहण करना चाहिए। पहले गुणस्थान में ही होता है।
३.	पारिणामिक	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	पहले गुणस्थान में ही होता है।

प्रश्न : अनन्तानुबन्धी कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : अनन्त भवों को बाँधना ही जिनका स्वभाव है वे अनन्तानुबन्धी कषाय कहलाती हैं। **(ध.६/४१)** जो क्रोध मान माया और लोभ सम्यग्दर्शन व सम्यग्चारित्र का विनाश करते हैं तथा जो अनन्त भव अनुबन्धन स्वभाव वाले होते हैं, वे अनन्तानुबन्धी कहलाते हैं। **अथवा** अनन्त भवों में जिनका अनुबन्ध चला जाता है उनको अनन्तानुबन्धी कषाय कहते हैं। **(ध.१३/३६०)** अनन्त संसार परिभ्रमण के कारण सर्वाधिक कषाय को अनन्तानुबन्धी कहते हैं। **(त.सा.२/१९)**

प्रश्न : अनन्तानुबन्धी कषाय वाले के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी कषाय वाले के ३४ भाव होते हैं -

- **क्षायोपशमिक** भाव के १०-३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के २१ - ४ गति ४ कषाय ३ लि, १ मिथ्या १ अज्ञान १ असंयत १ असिद्ध. ६ ले.
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

नोट : स्वकीय कषाय को ग्रहण करने पर ३१-३१ भाव ही होते हैं क्योंकि एक समय में एक ही कषाय का उदय रहता है। जैसे-क्रोध का उदय होने पर मानादि का उदय नहीं रहता

है इसलिए क्रोध में मानादि तीन कषाय नहीं होने से ३१ भाव होते हैं। इसी प्रकार मानादि कषाय एवं अप्रत्याख्यानावरणादि कषायों में भी जानना चाहिए।

प्रश्न : अनन्तानुबन्धी कषाय वाले कार्मण काययोगी के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी कषाय वाले कार्मण काययोगी के कम-से-कम २२ भाव होते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के ८-२ अज्ञा. १ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के १२-१ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

ये २२ भाव एकेन्द्रिय जीव के दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा जानने चाहिए तथा अधिक-से-अधिक ३३ भाव होते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के ९-२ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के २१ - ४ गति, ४ कषाय, ३ लि, १ मिथ्या १ अज्ञान १ असं. १ असिद्ध, ६ ले.
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट : अनन्तानुबन्धी चतुष्क में शुभ लेश्याएँ मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि वैमानिक देवों की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : अनन्तानुबन्धी कषाय के साथ मिथ्यादर्शन रूप भाव का अभाव किस-किस के नहीं हो सकता है?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी कषाय के साथ मिथ्यादर्शन रूप भाव का अभाव अभव्य जीवों के और अभव्यसम भव्य जीवों के नहीं हो सकता है, क्योंकि इनके मात्र प्रथम गुणस्थान ही होता है।

नोट : अनादि मिथ्यादृष्टि जीव भी यदि निकट भव्य, दूर भव्य है तो भविष्य में मिथ्यादर्शन रूप भाव का अभाव हो जायेगा।

प्रश्न : अनन्तानुबन्धी कषाय वाले पःोन्द्रिय जीव के कम-से-कम कितने भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी कषाय वाले पःोन्द्रिय जीव के कम-से-कम २१ भाव पाये जाते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के ९-२ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के १०-१ ग. ४ क. १ लि. (नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ लेश्या
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट : ये भाव जिस नरक में एक लेश्या रूप भाव है वहाँ द्वितीय गुणस्थानवर्ती जीवों के जानना चाहिए।

प्रश्न : अनन्तानुबन्धी कषाय के साथ ज्ञानावरण कर्म की अपेक्षा होने वाले कितने भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी कषाय के साथ ज्ञानावरण कर्म की अपेक्षा होने वाले चार भाव पाये जाते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के - ३ अज्ञान - कुमति, कुश्रुत, कुअवधि
- औदयिक का १ - अज्ञान

प्रश्न : अनन्तानुबन्धी कषाय के साथ होने वाले कितने भाव इन्द्रिय मार्गणा के सभी उत्तर भेदों में पाये जाते हैं?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी कषाय के साथ होने वाले २४ भाव इन्द्रिय मार्गणा के सभी उत्तर भेदों में पाये जाते हैं -

- क्षायोपशमिक के ८-२ अज्ञा. १ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के १३-१ गति (तिर्य.) ४ कषा. १ लिङ्ग (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या (अशुभ)
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न : अनन्तानुबन्धी कषाय में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी कषाय वालों के दो गुणस्थान होते हैं - मिथ्यात्व, सासादन

इनमें भाव ● मिथ्यात्व गुणस्थान में ३४ - क्षायोपशमिक के १० औदयिक के २१ पारिणामिक के ३ ● सासादन गुणस्थान में ३२ - मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व के बिना

इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में विभंगावधिज्ञान नहीं होने से ३३ भाव होते हैं तथा सासादन गुणस्थान में एक नरकगति भी नहीं होती है इसलिए ३० भाव होते हैं अर्थात् यहाँ क्षायोपशमिक के ९, औदयिक के १९ तथा पारिणामिक के २ = ३० भाव होते हैं।

अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	गर्भज जीवों के ही होता है।
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	तिर्यःगों में भोगभूमि की अपेक्षा जानना चाहिए।
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	३ ज्ञान-मति श्रुत अवधि ३ दर्शन-चक्षु. अच. अवधि. ५ लब्धि-दान लाभ.... १ सम्यक्त्व	 केवल चौथे गुणस्थान में ही होता है।
४.	**औदयिक**	२०	४ गति-नर. तिर्य.मनु.देव. ४ कषाय - क्रोध मान माया, लोभ ३ लिङ्ग-स्त्री.पुरु.नपुं. १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या-कृ.नी.का.पी.प.शु.	 तीसरे चौथे दोनों गुण. में होता है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : अप्रत्याख्यानावरण कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : ईषत् प्रत्याख्यानं अप्रत्याख्यानम्, इस व्युत्पत्ति के अनुसार अणुव्रतों की अप्रत्याख्यान संज्ञा है। अप्रत्याख्यान का आवरण करने वाला कर्म अप्रत्याख्यानावरणीय कर्म है। **(ध.१३/३६०)**

- अप्रत्याख्यान संयमासंयम का नाम है। उस अप्रत्याख्यान का जो आवरण करता है उसे अप्रत्याख्यानावरणीय कहते हैं। **(ध.६/४४)**
- एकदेश प्रत्याख्यान चारित्र को घातने वाली कषाय अप्रत्याख्यानावरण कहलाती है। **(त.सा.२/२२)**

प्रश्न : अप्रत्याख्यानावरण कषाय वालों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अप्रत्याख्यानावरण कषाय वालों के ३६ भाव होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १२-३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

- औदयिक के २०-४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : अप्रत्याख्यानावरण कषाय वालों के कितने भावों का एक-एक उत्तरभेद नहीं पाया जाता है?

उत्तर : अप्रत्याख्यानावरण कषाय वालों के तीन भावों का एक-एक उत्तर भेद नहीं पाया जाता है-

- औपशमिक का - चारित्र
- औदयिक का - मिथ्यादर्शन
- पारिणामिक का - अभव्यत्व

प्रश्न : अप्रत्याख्यानावरण कषाय वालों के असंयत भाव कितने गुणस्थानों में पाया जाता है?

उत्तर : अप्रत्याख्यानावरण कषाय वालों के असंयत भाव सामान्य रूप से पहले से चौथे गुणस्थान तक पाया जाता है, क्योंकि इनका उदय चौथे गुणस्थान तक पाया जाता है?

विशेष रूप से अर्थात् अनन्तानुबन्धी से रहित अप्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय दो गुणस्थानों में पाया जाता है -

सम्यग्मिथ्यात्व और अविरतसम्यग्दृष्टि।

यहाँ इन दो गुणस्थानों की अपेक्षा कथन किया गया है।

प्रश्न : अप्रत्याख्यानावरण कषाय में योग मार्गणा के किस उत्तर भेद में औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव नहीं होता है?

उत्तर : अप्रत्याख्यानावरण कषाय में योग मार्गणा के केवल एक उत्तर भेद में औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव नहीं होता है - औदारिक मिश्र

नोट : आहारकद्विक अप्रत्याख्यानावरण कषाय के साथ होता ही नहीं है, क्योंकि ये दोनों छठे गुणस्थान में होते हैं, वहाँ इस कषाय का उदय नहीं होता है।

प्रश्न : अप्रत्याख्यानावरण कषाय में कितने गुणस्थान एवं भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : अप्रत्याख्यानावरण कषाय में दो गुणस्थान होते हैं - सम्यग्मिथ्यात्व, अविरत सम्यक्त्व

सम्यग्मिथ्यात्व में ३२ भाव होते हैं -

- क्षायोपशमिक के १० - ३ मिश्रज्ञान २ दर्शन ५ लब्धि

- औदयिक के २० - मिथ्यादर्शन बिना
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

अविरत सम्यग्दृष्टि के ३६ भाव होते हैं -

- औपशमिक का - १ सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के २० (मिथ्यादर्शन बिना), पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : अप्रत्याख्यानावरण कषाय वालों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अप्रत्याख्यानावरण कषाय वालों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में केवल चौथा गुणस्थान होता है। वहाँ उपर्युक्त भावों में से स्त्रीवेद रूप भाव नहीं होता है, क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव मरकर स्त्रीवेदियों में उत्पन्न नहीं होता है। यद्यपि यह नपुंसक भी नहीं बनता है लेकिन बद्धायुष्क जीव के नरकगति में जाते समय नपुंसकवेद बन जाता है।

कृष्ण एवं नील लेश्या तीसरे आदि नरक से आते समय मनुष्यों के बन जाती है। (सम्यग्दृष्टि नारकी मरकर मनुष्य ही बनता है।)

प्रत्याख्यानावरण चतुष्क

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	केवल मनुष्यगति में ही होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१३	३ ज्ञान-मति श्रुत. अवधि ३ दर्शन-चक्षु. अचक्षु. अवधि ५ लब्धि-दान लाभ भोग उप.वीर्य १ - सम्यक्त्व १ - संयमासंयम	 सम्मूर्च्छन तिर्यःाों के भी होता है।
४.	**औदयिक**	१५	२ गति - तिर्य. मनु. ४ कषाय-क्रोध मान माया लोभ ३ लिङ्ग - स्त्री, पुरु. नपुं. १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ३ लेश्या - पीत पद्म शुक्ल	कर्मभूमिया मनुष्य तिर्यःाों को ही ग्रहण करना चाहिए। कृ.नी.का. लेश्या नहीं होती हैं।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : प्रत्याख्यानावरण कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : सकल चारित्र को घातने वाली कषाय प्रत्याख्यानावरण कहलाती है। **(त.सा.२/२३)**

- प्रत्याख्यान, संयम और महाव्रत ये तीनों एक अर्थ वाले नाम हैं और जो प्रत्याख्यान को आवरण करते हैं वे प्रत्याख्यानावरणीय क्रोध मान माया लोभ कहलाते हैं। **(ध.६/४४)**
- प्रत्याख्यान का अर्थ महाव्रत है उनका आवरण करने वाली प्रत्याख्यानावरणी कषाय है।
- जो कषाय न तो सम्यग्दर्शन को रोकती है और न देशचारित्र को रोकती है किन्तु संयम को रोकती है उन्हें प्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं। **(य.ति.च. ८/८९४)**

प्रश्न : प्रत्याख्यानावरणीय कषाय वालों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : प्रत्याख्यानावरणीय कषाय वालों के ३१ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १३ -३ ज्ञा. ३ दर्शं. ५ ल. १ सम्य. १ संय.
- औदयिक के १४-२ गति ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न : प्रत्याख्यानावरण कषाय के साथ तिर्यःागति रूप भाव कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : प्रत्याख्यानावरण कषाय के साथ तिर्यःागति रूप भाव -

(१) आधे स्वयंभूरमण द्वीप तथा (पूरे) समुद्र में, (२) ढाई द्वीप के ५ भरत, ५ ऐरावत एवं ५ विदेहों तथा दो (लवण एवं कालोदधि) समुद्रों में।

नोट : गर्भज तिर्यःाों के उपशम एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ संयमासंयम होता है। सम्मूर्च्छन तिर्यःाों के क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव के साथ ही संयमासंयम होता है।

प्रश्न : प्रत्याख्यानावरण कषाय के साथ कितने मूल भाव होते हैं?

उत्तर : प्रत्याख्यानावरण कषाय के साथ तिर्यःाों के चार मूल भाव होते हैं -

(१) औपशमिक (२) क्षायोपशमिक (३) औदयिक (४) पारिणामिक

तथा मनुष्यों के पाँचों भाव होते हैं -

(१) औपशमिक (२) क्षायोपशमिक (३) क्षायिक (४) औदयिक (५) पारिणामिक

प्रश्न : प्रत्याख्यानावरण कषाय के साथ तिर्यःाों के क्षायिक भाव क्यों नहीं होता है?

उत्तर : जिस बद्धायुष्क (जिसने तिर्यःा आयु को बाँध लिया है) मनुष्य ने क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त किया है अथवा कृतकृत्य वेदक अवस्था में स्थित है वह मरकर भोगभूमिया तिर्यःा ही बनता है। यदि उसने किसी भी आयु का बन्ध नहीं किया है तो वह देवगति में ही जाता है, क्योंकि सम्यग्दृष्टि तिर्यःा-मनुष्यों के देव आयु को छोड़कर किसी भी आयु का बन्ध नहीं हो सकता है। भोगभूमि में संयमासंयम रूप भाव नहीं होता है इसलिए प्रत्याख्यानावरण कषाय के साथ तिर्यःाों के क्षायिक भाव नहीं होता है।

प्रश्न : प्रत्याख्यानावरण कषाय के साथ अवधिज्ञान किस-किस को होता है?

उत्तर : प्रत्याख्यानावरण कषाय के साथ अवधिज्ञान -

(१) मनुष्यों के (२) गर्भज संज्ञी पर्याप्त तिर्यःाों के। सम्मूर्च्छन पःोन्द्रिय तिर्यःाों के अवधिज्ञान नहीं पाया जाता है। संज्ञी सम्मूर्च्छिम पर्याप्तकों में संयमासंयम के समान अवधिज्ञान और उपशम सम्यक्त्व की संभवता का अभाव है। (अर्थात् उनके संयमासंयम तो पाया जाता है लेकिन अवधिज्ञान और उपशम सम्यक्त्व नहीं पाया जाता है) इसका भी कारण यह है कि अवधिज्ञान को उत्पन्न करा के अन्तर के प्ररूपण करने वाले आचार्यों का अभाव है। **(ध.५/११८)**

नोट : इसी प्रकार इनके अवधिदर्शन एवं विभंगावधि ज्ञान भी नहीं होता होगा। किन्हीं आचार्यों की अपेक्षा इनके अवधिज्ञान पाया भी जाता है।

संज्वलनत्रिक

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व, चारित्र	
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व, चारित्र	छठे से नवें गुणस्थान तक होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१४		
			४ ज्ञान-मति श्रुत अव. मन:पर्यय	मन:पर्ययज्ञान छठे से नवें गुणस्थान तक होता है।
			३ दर्शन-चक्षु.अच. अव.	
			५ लब्धि-दान, लाभ भोग...	
			१-सम्यक्त्व	
			१-चारित्र	छठे सातवें गुणस्थान में होता है।
४.	**औदयिक**	१०	१ गति-मनुष्य	
			३ कषाय-क्रोध मान माया	क्रोध में क्रोध...
			३ लिङ्ग-स्त्री पुरु.नपुं.	
			१-अज्ञान	
			१-असिद्धत्व	
			३ लेश्या-पीत पद्म शुक्ल	आठवें नवें गुणस्थान में शुक्ल लेश्या ही होती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व	
			भव्यत्व	

प्रश्न : संज्वलन कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : • जो सम्यक् अर्थात् शोभन रूप से ज्वलति अर्थात् प्रकाशित होती है, वह संज्वलन कषाय है। **(ध.१३/३६१)**

- जो सम्यक् प्रकार से जलती है उसे संज्वलन कषाय कहते हैं। **(ध.६/४४)**
- जो यथाख्यात चारित्र को प्रकट न होने दे, उसे संज्वलन कषाय कहते हैं। **(त.सा.२/८२)**
- रत्नत्रय का विरोधी न होने से इसमें सम्यक्पना बना रहता है। **(ध.१३/३६१)**

प्रश्न : संज्वलनत्रिक में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : संज्वलनत्रिक में ३२ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायोपशमिक के १४ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
- औदयिक के १२ - १ ग. ३ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ लेश्या (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट : (१) यहाँ संज्वलन क्रोध मान, माया आदि का अलग-अलग कथन करने पर प्रत्येक में ३०-३० भाव होते हैं।

(२) यहाँ तीन चौकड़ी से रहित संज्वलनत्रिक को ग्रहण करना चाहिए।

(३) जो आचार्य मुनिराज के भी छहों लेश्याएँ मानते हैं उनकी अपेक्षा ३२+३=३५ भाव हो जाएंगे।

प्रश्न : संज्वलनत्रिक में कहाँ-कहाँ किस-किस सम्यक्त्व रूप भाव होते हैं?

उत्तर : संज्वलनत्रिक में छठे-सातवें गुणस्थान में ३ - औपशमिक क्षायिक क्षायोपशमिक।

आठवें नवें गुणस्थान में २ - औपशमिक-क्षायिक (उपशम श्रेणी की अपेक्षा)

तथा क्षपक श्रेणी की अपेक्षा १ - क्षायिक

प्रश्न : संज्वलनत्रिक में कहाँ-किस लेश्या रूप भाव पाया जाता है?

उत्तर : संज्वलनत्रिक में छठे-सातवें गुणस्थान में तीनों लेश्या रूप तथा आठवें-नवें गुणस्थान में १ शुक्ल लेश्या रूप।

प्रश्न : संज्वलन क्रोधी नवें गुणस्थानवर्ती मुनिराज के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : संज्वलन क्रोधी नवें गुणस्थानवर्ती मुनिराज के २६ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के १२-४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ८-१ ग (मनु.) १ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

इनके उपशम श्रेणी में क्षायिक चारित्र नहीं होता है इसलिए २५ भाव होते हैं।

क्षपक श्रेणी में औपशमिक सम्यक्त्व एवं औपशमिक चारित्र नहीं होता है इसलिए २४ भाव होते हैं। एक-एक लिङ्ग की क्रमशः व्युच्छित्ति होने पर २३,२२,२१ भाव होते हैं।

इसी प्रकार मान माया लोभ में भी जानना चाहिए।

प्रश्न : संज्वलनमानी उपशम सम्यग्दृष्टि के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : संज्वलनमानी उपशम सम्यग्दृष्टि के २७ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायोपशमिक के १३ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ चारि.
- औदयिक के १० - १ ग. १ क. (मान) ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले.
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

नोट : इनके छठे-सातवें गुणस्थान में उपशम चारित्र नहीं होने से २६ भाव होते हैं।

- इनके आठवें-नवें गुणस्थान में क्षायोपशमिक चारित्र, पीत तथा पद्म लेश्या नहीं होने से २४ भाव होते हैं।
- इनके नवें गुणस्थान में एक-एक लिङ्ग का अभाव होने पर २३,२२,२१ भाव होते हैं। यहाँ मन:पर्ययज्ञान द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : संज्वलन माया वालों के कितने क्षायोपशमिक भाव निश्चित रूप से पाये जाते हैं?

उत्तर : संज्वलन माया वालों के ९ क्षायोपशमिक भाव निश्चित रूप से पाये जाते हैं -

- २ ज्ञान-मतिज्ञान श्रुतज्ञान
- २ दर्शन-चक्षु अचक्षुदर्शन
- ५ लब्धि-दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

नोट : अवधिज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान तथा अवधिदर्शन प्राप्त किये बिना भी मोक्ष हो सकता है। कहा भी है - कम से कम मतिज्ञान पूर्वक केवलज्ञान हो सकता है। **(सर्वा.)**

आठवें नवें गुणस्थान में क्षायोपशमिक सम्यक्त्व एवं चारित्र नहीं होता है।

प्रश्न : संज्वलनत्रिक में कितने गुणस्थान हो सकते हैं?

उत्तर : संज्वलनत्रिक में चार गुणस्थान हो सकते हैं -

प्रमत्तसंयत, अप्रमत्त संयत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण।

इन गुणस्थानों में भाव -

- प्रमत्तसंयत में - २८ • अप्रमत्तसंयत में २८ • अपूर्वकरण में २६ तथा अनिवृत्तिकरण में २६
- अनिवृत्तिकरण में तीन लिङ्ग का अभाव होने पर २३ भाव ही बचते हैं।
- इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में केवल एक गुणस्थान होता है प्रमत्तसंयत। इसमें २६ भाव होते हैं - क्षायिक का १, क्षायोपशमिक १३ औदयिक के १०, पारिणामिक के २

संज्वलन लोभ

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	उपशम श्रेणी की अपेक्षा होते हैं।
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	सम्यक्त्व उपशम श्रेणी में भी होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१४	४ ज्ञान-मति श्रुत अवधि मन: ३ दर्शन-चक्षु.अचक्षु.अवधि. ५ लब्धि-दान लाभ.... १ - सम्यक्त्व १ - चारित्र	 छठे सातवें गुणस्थान में ही होता है।
४.	**औदयिक**	१०	१ गति - मनुष्य १ कषाय - लोभ ३ लिङ्ग-स्त्री पुरु.नपुं. १ - अज्ञान १ - असिद्धत्व ३ लेश्या - पी.प.शु.	 वेदातीत भी होते हैं। केवल शुक्ल लेश्या वाले भी होते हैं।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : संज्वलन लोभ में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : संज्वलन लोभ में ३० भाव होते हैं -

- औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायोपशमिक के १४-४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
- औदयिक के १०-१ ग. १ क. (लोभ) ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न : संज्वलन लोभी के कम-से-कम कितने भाव होते हैं?

उत्तर : संज्वलन लोभी के कम-से-कम १८ भाव होते हैं -

- क्षायिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायोपशमिक के ९ - २ ज्ञान २ दर्शन ५ ल.
- औदयिक के ५ - १ ग. १ क. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

नोट : ये भाव क्षपक श्रेणी में दसवें गुणस्थानवर्ती के जानने चाहिए।

प्रश्न : संज्वलन लोभी के किस गुणस्थान में औपशमिकादि तीनों सम्यक्त्व रूप भाव होते हैं?

उत्तर : संज्वलन लोभी के मात्र दो गुणस्थानों छठे एवं सातवें में औपशमिक आदि तीनों सम्यक्त्व रूप भाव होते हैं।

प्रश्न : संज्वलन लोभी के औदयिक भाव के दस भेद किस गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : संज्वलन लोभी के औदयिक भाव के दस भेद छठे-सातवें गुणस्थान में होते हैं। उसके आगे पीत, पद्म लेश्या नहीं होने से आठ भाव ही होते हैं।

प्रश्न : संज्वलन लोभी आहारक काययोगी के कितने औदयिक भाव होते हैं?

उत्तर : संज्वलन लोभी आहारक काययोगी के ८ औदयिक भाव होते हैं -

१ गति	-	मनुष्य,	१ अज्ञान
१ कषाय	-	लोभ,	१ असिद्धत्व
१ लिङ्ग	-	पुरुष,	३ लेश्या - पी.प.शु.

इसी प्रकार प्रमत्तविरत जिनके केवल पुरुषवेद होता है ऐसे मन: पर्ययज्ञानी परिहारविशुद्धि आदि वालों के जानना चाहिए।

प्रश्न : ३ लिङ्ग रूप भाव से रहित भी संज्वलन लोभ कषाय वाले होते हैं?

उत्तर : हाँ, ३ लिङ्ग रूप भाव से रहित भी संज्वलन लोभ कषाय वाले होते हैं -

(१) नवें गुणस्थान के अवेद भाग में।

(२) दशम गुणस्थानवर्ती मुनिराज में।

प्रश्न : संज्वलन लोभ कषाय में अज्ञान रूप भाव के साथ कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : संज्वलन लोभ कषाय में अज्ञान रूप भाव के साथ पाँच गुणस्थान होते हैं -

छठा, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ, दसवाँ।

क्योंकि संज्वलन लोभ का उदय तीन चौकड़ी कषाय से रहित भी छठे से दसवें गुणस्थान तक होता है।

प्रश्न : संज्वलन लोभी अभव्य जीव के कितने क्षायिक भाव होते हैं?

उत्तर : संज्वलन लोभी अभव्य जीव के एक भी क्षायिक भाव नहीं होता है, क्योंकि अभव्य जीव प्रथम गुणस्थान में ही होता है।

यद्यपि संज्वलन लोभ का स्वतंत्र उदय अभव्य जीवों के नहीं होता है, क्योंकि संज्वलन लोभ का उदय छठे गुणस्थान से प्रारम्भ होता है लेकिन उसके (पहले गुणस्थान में) अनन्तानुबंधी आदि कषायों के साथ संज्वलन कषाय का उदय होता है।

प्रश्न : संज्वलन लोभ कषाय में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : संज्वलन लोभ कषाय में पाँच गुणस्थान होते हैं -

छठा, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ, दसवाँ।

इन गुणस्थानों में क्रमशः २८,२८,२६,२६ एवं २३ भाव होते हैं।

इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में एक ही गुणस्थान होता है - प्रमत्तविरत।

इस गुणस्थान में २४ भाव होते हैं -

- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १३-३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
- औदयिक के ८ - १ ग. १ कषा. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

हास्यादि छह नोकषाय

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	सम्यक्त्व चौथे से आठवें गुणस्थान तक होता है।
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	चारित्र केवल आठवें गुणस्थान में होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१८	४ ज्ञान-मति. श्रुत... ३ अज्ञान-मत्यज्ञान श्रुताज्ञान विभंगा ३ दर्शन-चक्षु.अच.अव ५ लब्धि-दान लाभ... १ - सम्यक्त्व १ - चारित्र १ - संयमासंयम	 चौथे से सातवें गुणस्थान तक होता है।
४.	**औदयिक**	२१	४ गति - नरक तिर्यः... ४ कषाय - क्रोध. मान... ३ लिङ्ग - स्त्री.पुरु.नपुं. १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या-कृ.नी.का.पी.प.शु.	 पहले से आठवें गुणस्थान तक होता है।
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	

प्रश्न : हास्य-रति कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : • जिस कर्म के उदय से अनेक प्रकार का परिहास उत्पन्न होता है वह हास्य कर्म है। **(ध.१३/३६१)**

- जिसके उदय से हँसी आती है वह हास्य कर्म है। **(सर्वा. ८/९)**
- जिस कर्म स्कन्ध के निमित्त से द्रव्य क्षेत्र काल और भावों में राग उत्पन्न होता है उसकी रति संज्ञा है। **(ध.६/४७)**
- जिसके उदय से देशादि में उत्सुकता होती है वह रति है। **(सर्वा. ८/९)**
- मनोहर वस्तुओं में परम प्रीति को रति कहते हैं। **(नि.सा.ता. ६)**

प्रश्न : अरति-शोक नोकषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : • जिसके उदय से आत्मा की देश आदि में उत्सुकता उत्पन्न नहीं होती है वह अरति कषाय है। **(सर्वा.८/९)**

- नाती, पुत्र एवं स्त्री आदि में रमण का नाम रति है, इसकी प्रतिपक्षभूत अरति कही जाती है। **(ध.१२/२८५)**
- उपकार करने वाले से सम्बन्ध के टूट जाने पर जो विकलता होती है, वह शोक है। **(सर्वा.६/११)**
- जिसके उदय से शोक होता है, वह शोक है। **(सर्वा. ८/९)**

प्रश्न : भय-जुगुप्सा नोकषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : • पर-चक्र के आगमनादि का नाम भय है। **(ध.१३/३३६)**

- जिसके उदय से उद्वेग होता है वह भय है। **(सर्वा. ८/९)**
- जिस कर्म के उदय से जीव के सात प्रकार का भय उत्पन्न होता है वह भय कर्म है। **(ध.१३/३६१)**
- जिसके उदय से अपने दोषों का संवरण (ढकना) और पर के दोषों का आविष्करण होता है वह जुगुप्सा है। **(सर्वा.८/९)**
- जिस कर्म के उदय से ग्लानि होती है उसकी जुगुप्सा यह संज्ञा है। **(ध.६/४८)**

प्रश्न : हास्यादि छह नोकषायों में किस भाव के सभी उत्तर भेद नहीं होते हैं?

उत्तर : हास्यादि छह नोकषायों में क्षायिक भाव के सभी उत्तर भेद नहीं होते हैं -

क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिकदान, क्षायिक लाभ, क्षायिक भोग, क्षायिक उपभोग, क्षायिक वीर्य। क्योंकि ये भाव १३ वें १४ वें गुणस्थान में पाये जाते हैं और ये गुणस्थान कषायातीत जीवों के ही होते हैं।

प्रश्न : हास्यादि छह नोकषायों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : हास्यादि छह नोकषायों में ४६ भाव होते हैं -

- औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के १८-४ ज्ञा. ३ अज्ञा. आदि
- औदयिक के २१-४ गति. ४ क. आदि
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

नोट : यहाँ क्षायिक भाव के ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य नहीं होते हैं क्योंकि ये भाव तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में होते हैं।

प्रश्न : हास्यादि नोकषायों में पाये जाने वाले किस भाव में केवल एक गुणस्थान होता है?

उत्तर : हास्यादि नोकषायों में पाये जाने वाले भावों में से पाँच भावों में केवल एक गुणस्थान होता है -

(१) औपशमिक चारित्र	-	आठवाँ गुणस्थान
(२) क्षायिक चारित्र	-	आठवाँ गुणस्थान
(३) क्षायोपशमिक संयमासंयम	-	पाँचवाँ गुणस्थान
(४) मिथ्यादर्शन (औदयिक)	-	पहला गुणस्थान
(५) अभव्यत्व (पारिणामिक)	-	पहला गुणस्थान

प्रश्न : हास्यादि छह नोकषायों में कम-से-कम कितने भाव होते हैं?

उत्तर : हास्यादि छह नोकषायों में कम-से-कम २२ भाव होते हैं -

- क्षायोपशमिक के ८-२ अज्ञा. १ दर्श ५ ल.
- औदयिक के १२-१ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

ये भाव एकेन्द्रियादि जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में जब दूसरा गुणस्थान होता है तब होते हैं। एकेन्द्रियादि जीवों के भी हास्यादि नोकषायें पाई जाती हैं क्योंकि इनको भी अनुकूल द्रव्य क्षेत्र काल आदि मिलने पर प्रसन्नता और प्रतिकूल द्रव्यादि मिलने पर अप्रसन्नता देखी जाती है। इसलिए इनके हास्यादि कषाय (उदय) होने में कोई विरोध नहीं है। कहा भी है एकेन्द्रिय जीवों के ८० प्रकृतियों का उदय होता है। इनमें हास्यादि छह प्रकृतियाँ आती हैं। **(गो.क. ३०६)**

प्रश्न : हास्यादि छह नोकषायों में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : हास्यादि छह नोकषायों में ८ गुणस्थान होते हैं -

पहले से आठवें तक।

इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ४ गुणस्थान होते हैं -

पहला, दूसरा, चौथा एवं छठा

इन सबके भाव यथायोग्य जानना चाहिए।

अकषायी (कषायातीत)

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	केवल ग्यारहवें गुणस्थान में ही होते हैं।
२.	**क्षायिक**	९	ज्ञान दर्शनादि	सम्यक्त्व ग्यारहवें से चौदहवें गुणस्थान तक होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	४ ज्ञान-मति श्रुत अवधि-मन:	ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान में होते हैं।
			३ दर्शन-चक्षु-अच. अवधि.	,, ,, ,, ,,
			५ लब्धि-दान लाभ....	,, ,, ,, ,,
४.	**औदयिक**	४	१ गति-मनुष्य	
			१ - अज्ञान	ग्यारहवें बारहवें गुणस्थान में होता है।
			१ - असिद्धत्व	
			१ लेश्या - शुक्ल	लेश्या से रहित स्थान भी होता है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व	
			भव्यत्व	

प्रश्न : अकषायी जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अकषायी जीवों के २९ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ४ - १ ग. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

इनके कम-से-कम १३ भाव होते हैं -

क्षायिक के ९ , औदयिक के २, पारिणामिक के २।

ये १३ भाव चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोगकेवली भगवान के होते हैं।

प्रश्न : अकषायी जीव क्या पुन: कषाय रूप भाव से युक्त हो सकते हैं ?

उत्तर : हाँ, उपशम श्रेणी वाले जीव ग्यारहवें गुणस्थान में अकषायी हो जाते हैं। वे जब वहाँ से गिरकर दसवें आदि गुणस्थानों में आते हैं तब पुन: कषाय रूप भाव से युक्त हो जाते हैं।

प्रश्न : अकषायी जीवों के कितने दर्शन रूप भाव होते हैं?

उत्तर : अकषायी जीवों के चार दर्शन रूप भाव होते हैं -

ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा ३ - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन

तेरहवें - चौदहवें गुणस्थान की अपेक्षा १ - केवलदर्शन

सिद्ध भगवान भी अकषायी जीव हैं, उनके भी केवलदर्शन होता है।

प्रश्न : अकषायी जीवों के औदयिक भाव किस-किस अपेक्षा पाये जाते हैं?

उत्तर : अकषायी जीवों के औदयिक भावों में अपेक्षा -

- मनुष्यगति - ग्यारहवें से चौदहवें गुणस्थान तक
- अज्ञान - ग्यारहवें - बारहवें गुणस्थान में
- असिद्धत्व - ग्यारहवें से चौदहवें गुणस्थान तक
- शुक्ल लेश्या - ग्यारहवें से तेरहवें गुणस्थान तक

प्रश्न : अकषायी जीवों के कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : अकषायी जीवों के चार गुणस्थान होते हैं -

उपशान्तकषायवीतराग छद्मस्थ, क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ

सयोगकेवलीजिन, अयोगकेवली जिन।

इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में केवल एक गुणस्थान होता है -

सयोगकेवली जिन

इन सबके भाव गुणस्थान के समान जानने चाहिए।

प्रश्न : ग्यारहवें गुणस्थान में अकषायी जीव कैसे हो सकते हैं क्योंकि उनके द्रव्य कषाय का सद्भाव पाया जाता है?

उत्तर : ग्यारहवें गुणस्थान वालों को अकषायी कहने का कारण उनके कषाय के उदय का अभाव कहा गया है।

सत्ता में तो उनके कषाय रहती ही है। कहा भी है -

ग्यारहवें गुणस्थान में ६३ प्रकृतियाँ अनुदय रूप होती हैं (इनमें कषायें भी आ जाती हैं) **(गो.क. २६३)**

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न : कितनी कषायों में औपशमिक एवं क्षायिक भाव नहीं होता है?

उत्तर : मात्र चार अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ कषायों में औपशमिक एवं क्षायिक भाव नहीं होता है, क्योंकि इन चार कषायों में पहला-दूसरा गुणस्थान ही होता है जबकि ये भाव चौथे गुणस्थान से शुरू होते हैं।

प्रश्न : कितनी कषायों में क्षायोपशमिक भाव के पूरे उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : सात नोकषायों में क्षायोपशमिक भाव के पूरे उत्तर भेद होते हैं -

हास्य, रति, अरति, शोक, भय जुगुप्सा और पुरुषवेद।

प्रश्न : कौन-कौन सी कषायों में चारों गति रूप भाव होते हैं?

उत्तर : चौदह कषायों में चारों गति रूप भाव होते हैं -

- अनन्तानुबन्धी चार - क्रोध, मान, माया, लोभ
- अप्रत्याख्यानावरण चार - क्रोध, मान, माया, लोभ
- हास्यादि छह नोकषाय - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा
- तीन वेद रूप नोकषायों में - एक वेद के साथ दो लिङ्ग रूप भाव नहीं हो सकते हैं।

संज्वलन चतुष्क में ३ लिङ्ग रूप भाव का अभाव भी हो सकता है, नवें गुणस्थान के अवेदभाग में तथा संज्वलन लोभ में दसवें गुणस्थान में भी वेदातीत होते हैं।

प्रश्न : क्रोध कषाय में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : क्रोध कषाय में ४३ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यकत्व, चारित्र
- क्षायोपशमिक के १८ - ४ ज्ञान....
- औदयिक के १८ - ४ गति, १ कषा. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा....
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

इसमें कम-से-कम १८ भाव होते हैं -

क्षपक श्रेणी में - क्षायिक के २, क्षायोपशमिक के ९, औदयिक के ५, पारिणामिक २।

ये भाव नवें गुणस्थान के अवेद भाग की अपेक्षा जानना चाहिए।

इसी प्रकार मान, माया, लोभ में भी जानना चाहिए।

लोभ कषाय में दसवें गुणस्थान की अपेक्षा भी होते हैं।

प्रश्न : कषाय मार्गणा के कितने भेदों में चार भावों के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : कषाय मार्गणा के छह भेदों में चार भावों के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं -

(१) औपशमिक (२) क्षायोपशमिक (३) औदयिक (४) पारिणामिक

– प्रश्न पत्र –

१. उपयुक्त विकल्प पर (✓) का निशान लगाइये-

(i) **कितने क्षायोपशमिक भावों में २५ कषायें होती हैं?**

(अ) ७ (ब) १०
(स) १८ (द) ३

(ii) **अनन्तानुबन्धी कषाय में कितने भाव होते हैं?**

(अ) ३४ (ब) ३६
(स) ३१ (द) कोई नहीं

(iii) **संज्वलन लोभ कषाय में कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?**

(अ) २० (ब) १४
(स) १८ (द) कोई नहीं

(iv) **कितनी कषायों में ४६ भाव होते हैं?**

(अ) ९ (ब) ७
(स) ६ (द) ३

(v) **अकषायी जीवों के कितने स्थान होते हैं?**

(अ) ३ (ब) १
(स) ५ (द) कोई नहीं

२. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) कषाय मार्गणा के किसी भी भेद में ५३ भाव नहीं होते हैं?

(ii) अनन्तानुबन्धी कषाय में क्षायोपशमिक भाव का एक भी भेद नहीं पाया जाता है?

(iii) संज्वलन चतुष्क में पाँचों मूल भाव पाये जाते हैं?

(iv) हास्य-रति में क्रोध कषाय रूप भाव नहीं होता है?

(v) स्त्रीवेद में भी औपशमिक भाव के दोनों उत्तर भेद पाये जाते हैं?

३. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) अकषायी जीवों के ग्यारहवें गुणस्थान में कितने भाव होते हैं?

(ii) २५ कषाय रूप स्थान में कितनी गति रूप भाव होते हैं?

(iii) अभव्य भाव में कषाय मार्गणा के कितने भेद होते हैं?

(iv) कितनी कषायों में पारिणामिक भाव के सभी भेद होते हैं?

(v) कितनी कषायों में औपशमिक चारित्र रूप भाव होता है?

३. रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए -

(i) अनन्तानुबन्धी क्रोध में .... औदयिक .... पारिणामिक तथा .... क्षायिक भाव होते हैं।

(ii) संज्वलन लोभ में .... क्षायिक .... गति रूप तथा .... कषाय रूप भाव होते हैं।

(iii) प्रत्याख्यानावरण कषाय में .... लेश्या रूप .... ज्ञान रूप तथा .... लिङ्ग रूप भाव होते हैं।

(iv) अरति शोक कषाय में .... क्षायिक .... पारिणामिक तथा .... लब्धि रूप भाव होते हैं।

(v) २५ कषाय रूप स्थान में .... क्षायोपशमिक .... औदयिक तथा .... पारिणामिक भाव होते हैं।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	२४ कषाय	-	दसवाँ गुणस्थान
(ii)	प्रत्याख्यानावरण कषाय	-	१२ क्षायोपशमिक भाव
(iii)	९ नोकषाय	-	अकषायी

(iv)	अकषायी	-	देवगति रूप भाव
(v)	२९ भाव	-	१४ औदयिकभाव
(vi)	अनन्तानुबन्धी चतुष्क	-	२ क्षायिकभाव
(vii)	१ कषाय रूप स्थान	-	१३ कषाय
(viii)	औपशमिक चारित्र	-	३४ भाव

– उत्तरमाला –

१. (i) ब (ii) अ (iii) ब (iv) स (v) ब।

२. (i) हाँ (ii) ना (iii) हाँ (iv) ना (v) हाँ।

३. (i) २१ (ii) २ (iii) २५ (iv) २५ (v) १३

४. (i) १८,३,० (ii) २,१,१ (iii) ३,३,३ (iv) २,३,५ (v) १० १६, ३

५. (i) देवगति रूप भाव (ii) १४ औदयिक भाव (iii) २ क्षायिकभाव
(iv) १२ क्षायोपशमिक भाव (v) अकषायी (vi) ३४ भाव
(vii) दसवाँ गुणस्थान (viii) १३ कषाय

ज्ञान मार्गणा

प्रश्न : ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जानता है वह ज्ञान है। जिसके द्वारा जाना जाता है वह ज्ञान है। जानना मात्र ज्ञान है। **(सर्वा.)**

- तत्त्वार्थों के वास्तविक बोध को ज्ञान कहते हैं। **(त.सा. २/८३)**
- जिसके द्वारा जीव त्रिकाल विषयक भूत-भविष्यत्-वर्तमान काल सम्बन्धी समस्त द्रव्य और उनके गुण तथा उनकी अनेक प्रकार की पर्यायों को प्रत्यक्ष या परोक्ष जाने उसको ज्ञान कहते हैं। **(ध.१/१४५)**
- जिसके द्वारा यह आत्मा जानता है, जानता था अथवा जानेगा ऐसे ज्ञानावरण कर्म के एकदेश क्षय से अथवा सम्पूर्ण क्षय से उत्पन्न हुए आत्मा के परिणाम को ज्ञान कहते हैं। **(ध.१/३५५)**
- जो यथार्थ वस्तु का प्रकाशक है अथवा जो तत्त्वार्थ को प्राप्त कराने वाला है, वह ज्ञान है। **(ध.७/७)**
- जिसमें तीन काल के गोचर अनन्त गुण पर्याय संयुक्त पदार्थ अतिशयता के साथ प्रतिभासित होते हैं उसको ज्ञानी पुरुषों ने ज्ञान कहा है। **(ज्ञा.७/१)**
- सत्यार्थ का प्रकाश करने वाली शक्ति विशेष को ज्ञान कहते हैं। **(ध.१/१४३)**

प्रश्न : ज्ञान कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : ज्ञान दो प्रकार का होता है -

(१) प्रत्यक्ष ज्ञान (२) परोक्ष ज्ञान। **(ध.१/३५६)**

(१) सम्यग्ज्ञान (२) मिथ्याज्ञान। **(द्र.सं.५)**

(१) ज्ञान (२) अज्ञान

(१) ज्ञान (२) कुज्ञान

- सामान्य से ज्ञान एक प्रकार का है। प्रत्यक्ष एवं परोक्ष के भेद से दो प्रकार का है। द्रव्य, गुण, पर्याय रूप विषय भेद से तीन प्रकार का है। नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव निक्षेपों की अपेक्षा चार प्रकार का है।
- मति...आदि की अपेक्षा पाँच प्रकार का है। इस प्रकार ज्ञेयाकार परिणति के भेद से संख्यात, असंख्यात और अनन्त विकल्प होते हैं।

प्रश्न : सम्यग्ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : नौ पदार्थों का या सात तत्त्वों का अधिगम सम्यग्ज्ञान है। **(पं.का. १०७)**

- जिस-जिस प्रकार से जीवादि पदार्थ अवस्थित हैं उस-उस प्रकार से उनका जानना सम्यग्ज्ञान है। **(सर्वा.१)**
- नय व प्रमाण के विकल्पपूर्वक जीवादि पदार्थों का यथार्थ ज्ञान सम्यग्ज्ञान है। **(न.च.वृ.३२६)** जिन प्रणीत हेयोपादेय तत्त्वों का ज्ञान ही सम्यग्ज्ञान है। **(नि.सा.ता.५१)**
- जो ज्ञान वस्तु के स्वरूप को न्यूनता रहित तथा अधिकता रहित, विपरीतता रहित, जैसा का तैसा, संदेह रहित जानता है उसको आगम के ज्ञाता पुरुष सम्यग्ज्ञान कहते हैं। **(र.क.श्रा.४२)**
- जीवादि पदार्थों के ज्ञान स्वभाव रूप ज्ञान का परिणमन करना सम्यग्ज्ञान है। **(स.सा.आ.१५५)**

प्रश्न : मिथ्याज्ञान/अज्ञान/कुज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : जो वस्तु के स्वभाव को नहीं पहचानता है अथवा उल्टा पहिचानता है या निरपेक्ष पहिचानता है वह मिथ्याज्ञान है। **(न.च.वृ.२३८)**

- बौद्ध, नैयायिक, सांख्य, मीमांसक, चार्वाक और वैशेषिक आदि दर्शनों की रुचि से सम्बद्ध ज्ञान मिथ्याज्ञान कहलाता है। **(ध.१२/२८६)**
- मिथ्याज्ञान के उदय के साथ विद्यमान ज्ञान को भी अज्ञान कहा जाता है। **(रा.वा.२/६)**
- अर्हंत मार्ग से प्रतिकूल मार्ग में कही हुई अवस्तु में वस्तु बुद्धि वह मिथ्याज्ञान है। **अथवा** निजात्मा के परिज्ञान से विमुखता वही मिथ्याज्ञान है। **(नि.सा.ता.९१)**
- ज्ञानावरण कर्म के उदय से वस्तु के स्वरूप का ज्ञान न होने को भी अज्ञान कहते हैं। **(सर्वा.२/६)**
- मिथ्यात्व के उदय से कलुषित ज्ञान को अज्ञान कहते हैं। **(त.सा.२/८३)**

प्रश्न : प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : ''विशदं प्रत्यक्षं'' विशद ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं।

- इन्द्रिय आदि की सहायता के बिना सिर्फ आत्मा से होने वाले ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं। **(रा.वा.१/१२)**
- जो मात्र आत्मा के द्वारा ही जाना जाये उसे प्रत्यक्ष कहते हैं। **(प्र.सा.५८)**
- जो केवल आत्मा से होता है, वह प्रत्यक्षज्ञान कहलाता है। **(सर्वा.१/१२)**

प्रश्न : प्रत्यक्ष ज्ञान कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : प्रत्यक्ष ज्ञान दो प्रकार का होता है -

(१) सकल प्रत्यक्ष - केवलज्ञान

(२) विकल प्रत्यक्ष - अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान, विभंगावधि ज्ञान **(वृ.द्र.सं.५)**

प्रश्न : परोक्षज्ञान किसे कहते हैं, इसके कितने भेद होते हैं?

उत्तर : जो अविशद ज्ञान है, वह परोक्ष है। **(परीक्षामुख २/४)**

- पर की प्रधानता से होने वाला ज्ञान परोक्ष है। उपात्त-इन्द्रियाँ और मन, अनुपात्त-प्रकाश, उपदेश आदि पर हैं। **(रा.वा.१/११)**

इसके चार भेद हैं अर्थात् चार ज्ञान परोक्ष हैं -

- कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान। **(वृ.द्र.सं.५)**

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : जो ज्ञान मिथ्यात्व एवं अनन्तानुबन्धी के सम्बन्ध से मिथ्यापने को प्राप्त होता है और इनके अभाव में सम्यक्पने को प्राप्त होता है उन ज्ञानों में जीवों की खोज करना ज्ञान मार्गणा है।

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : ज्ञान मार्गणा आठ प्रकार की होती है -

(१) मतिअज्ञानी (२) श्रुत अज्ञानी (३) विभंगज्ञानी (४) आभिनिबोधिकज्ञानी (५) श्रुतज्ञानी (६) अवधिज्ञानी (७) मन:पर्ययज्ञानी (८) केवलज्ञानी। **(ध.१/३५५)**

(१) कुमतिज्ञान (२) कुश्रुतज्ञान (३) कुअवधिज्ञान (४) मतिज्ञान (५) श्रुतज्ञान (६) अवधिज्ञान (७) मन:पर्ययज्ञान और (८) केवलज्ञान।

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा में अज्ञान/कुज्ञान का ग्रहण कैसे हो सकता है?

उत्तर : हो सकता है, क्योंकि मिथ्यात्व सहित ज्ञान को ही ज्ञान का कार्य नहीं करने से अज्ञान कहा है। जैसे - पुत्रोचित कार्य को नहीं करने वाले पुत्र को ही अपुत्र कहा जाता है। **अथवा** जिस प्रकार आम्रवन के भीतर रहने वाले नीम के वृक्षों को आम्रवन यह संज्ञा प्राप्त हो जाती है उसी प्रकार अज्ञान/कुज्ञान को भी ज्ञान यह संज्ञा देना उचित ही है। **(ध.१/२५५)**

कर्मविवक्षा

क्र.	ज्ञान	कर्म	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	कुमति	**क्षयोपशम**	मिथ्यात्व	औदयिक	मिथ्यात्व एवं अनन्तानुबन्धी
२.	कुश्रुत		सासादन	पारिणामिक	के उदय से ये तीनों मिथ्या होते हैं।
३.	कुअवधि.				
४.	मतिज्ञान		अविरतसम्य.	औप.क्षा.क्षायो.	
५.	श्रुतज्ञान	**क्षयोपशम**	संयमासंयम	क्षायोपशमिक	
६.	अवधिज्ञान		प्रमत्तविरत	क्षायोपशमिक	
			अप्रमत्तविरत	,, ,,	
			अपूर्वकरण	औप. क्षायिक	सर्वावधि एवं परमावधि ज्ञानियों के आठवें
			अनिवृत्तिकरण	,, ,,	आदि गुणस्थानों में औपशमिक भाव नहीं
			सूक्ष्म साम्पराय	,, ,,	होता है।
			उपशान्तकषाय.	औपशमिक	
			क्षीणकषाय	क्षायिक	
७.	मन:पर्यय	**क्षयोपशम**	प्रमत्त. अप्रमत्त	क्षायोपशमिक	
			अपूर्व.अनि.	औप. क्षायिक	विपुलमति मन:पर्ययज्ञान में क्षायिक भाव
			सूक्ष्मसाम्पराय	,, ,,	ही होता है।
			उपशान्तकषाय	औपशमिक	
			क्षीणकषाय	क्षायिक	
८.	केवलज्ञान	**क्षय**	सयोग केवली	क्षायिक	
			अयोगकेवली	,, ,,	

विशेष : तीसरे गुणस्थान में होने वाले मिश्र ज्ञान भी क्षयोपशम से ही उत्पन्न होते हैं, मात्र सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से मिश्र रूप हो जाते हैं।

प्रश्न : कितने ज्ञानों के साथ कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होते हैं?

उत्तर : तीन (मति, श्रुत, अवधि) ज्ञानों के साथ चार गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होते हैं- चौथा, आठवाँ, नवाँ, दसवाँ।

तथा मन:पर्ययज्ञान के साथ तीन गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होते हैं - आठवाँ नवाँ दसवाँ।

विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान में ये गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं, क्योंकि यह वर्धमान चारित्र वालों के ही होता है। कहा भी है -

अप्रतिपात की अपेक्षा भी विपुलमति मन:पर्ययज्ञान विशिष्ट है क्योंकि इसके स्वामियों के प्रवर्धमान चारित्र पाया जाता है। **(सर्वा१/२४)**

प्रश्न : किस ज्ञान में कितने गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : मति, श्रुत, अवधिज्ञान में चार गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं-
अविरतसम्यक्त्व, संयमासंयम, प्रमत्तविरत, अप्रमत्तविरत

- मन:पर्यय ज्ञान में दो गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं -
प्रमत्तविरत एवं अप्रमत्तविरत

तीन मिश्र ज्ञानों में होने वाला तीसरा गुणस्थान भी क्षायोपशमिक भाव रूप होता है।

प्रश्न : कितने ज्ञानों में होने वाले दोनों गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : मात्र एक केवलज्ञान में होने वाले दोनों गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं -
सयोगकेवली, अयोगकेवली।

इस ज्ञान में सिद्ध भगवान के भी क्षायिक भाव ही होता है।

प्रश्न : कितने ज्ञानों के गुणस्थान तीन भाव रूप भी होते हैं?

उत्तर : तीन ज्ञानों का केवल एक गुणस्थान तीन भाव रूप भी होता है -

मति, श्रुत, अवधिज्ञान का चौथा गुणस्थान औपशमिक, क्षायिक एवं क्षायोपशमिक भाव रूप होता है।

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में होने वाले गुणस्थान केवल औदयिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : ज्ञान मार्गणा का एक भी भेद ऐसा नहीं है जिसमें होने वाले गुणस्थान केवल औदयिक भाव रूप हों, क्योंकि कुमति आदि तीन अज्ञान भी औदयिक एवं पारिणामिक दोभाव रूप होते हैं।

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में होने वाले गुणस्थान चारों गतियों में एक समान होते हैं?

उत्तर : ज्ञान मार्गणा के छह भेदों में होने वाले गुणस्थान चारों गतियों में एक समान होते हैं -

- कुमति, कुश्रुत, कुअवधिज्ञान में होने वाला पहला एवं दूसरा गुणस्थान।
- मति, श्रुत, अवधिज्ञान में होने वाला चौथा गुणस्थान।
- इनमें अर्थात् पहले आदि गुणस्थानों में क्रमश: औदयिक, पारिणामिक एवं औपशमिकादि तीनों भाव रूप होते हैं।
- मिश्र ज्ञानों में तीसरा गुणस्थान होता है वह भी चारों गतियों में समान ही होता है।

स्थान-विवेचन

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा में कितने स्थान बनते हैं?

उत्तर : ज्ञान मार्गणा में ७ स्थान बनते हैं -

(१) १ ज्ञान रूप (२) तीन ज्ञान रूप (३) चार ज्ञान रूप (४) पाँच ज्ञान रूप (५) छह ज्ञान रूप (६) सात ज्ञान रूप (७) आठ ज्ञान रूप।

(१) मति, श्रुत और मन:पर्यय ज्ञान रूप भी तीन ज्ञान का स्थान बन सकता है।

(२) कुमति, कुश्रुत या मतिश्रुतज्ञान का स्थान भी बन सकता है लेकिन इन भंगों में कोई विशेष गति या विशेष गुणस्थान नहीं होता है इसलिए उनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

(३) मतिश्रुत आदि पाँच ज्ञान क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र में होते हैं उनको गति और गुणस्थान नहीं होने पर भी विशेष होने से ग्रहण किया है।

विशेष :

(४) एक समय में उपयोगात्मक एक ज्ञान ही होता है इसलिए कुमति आदि ज्ञानों में स्वकीय ज्ञान के स्वामी बनाकर एक ज्ञान रूप स्थान बनाया जा सकता है।

(५) एक समय में एक ही ज्ञान होता है लेकिन लब्धि रूप से एक जीव के एक समय में अनेक ज्ञान पाये जा सकते हैं इसलिए तीन आदि ज्ञानों के स्थान बनाये गये हैं।

(६) ५ ज्ञान किसी भी जीव के एक समय में लब्धि रूप से भी नहीं रह सकते हैं लेकिन तद्भव मोक्षगामी जीव के अपने जीवनकाल में हो सकते हैं इसलिए यह स्थान बनाया गया है।

(७) ७ ज्ञान का स्थान किसी भी मनुष्य के अपने जीवन काल में पहले गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक हो सकते हैं।

(८) जिनको अवधिज्ञान नहीं हुआ है उनके या विभंगावधिज्ञान नहीं हुआ है उनके मति श्रुतज्ञान रूप या कुमति-कुश्रुतज्ञान रूप दो ज्ञान का स्थान भी बन सकता है।

इसी प्रकार और भी स्थान बना लेने चाहिए।

प्रश्न : इन स्थानों में किस-किस ज्ञान को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में ज्ञान -

- १ ज्ञान रूप स्थान में - केवलज्ञान या मतिज्ञान या श्रुतज्ञान......कोई भी स्वकीयज्ञान
- ३ ज्ञान रूप स्थान में - कुमतिज्ञान कुश्रुतज्ञान कुअवधिज्ञान या मति-श्रुत-अवधिज्ञान या मति श्रुत मन:पर्ययज्ञान।

- ४ ज्ञान रूप स्थान में - मति-श्रुत-अवधि एवं मन:पर्ययज्ञान।
- ५ ज्ञान रूप स्थान में - मति श्रुत अवधि मन:पर्ययज्ञान एवं केवलज्ञान।
- ६ ज्ञान रूप स्थान में - ३ ज्ञान और ३ अज्ञान।
- ७ ज्ञान रूप स्थान में - ४ ज्ञान और ३ अज्ञान।
- ८ ज्ञान रूप स्थान में - ५ ज्ञान और ३ अज्ञान।

प्रश्न : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

- १ ज्ञान रूप स्थान में १४ - क्षायिक के ७ (सम्यक्त्व एवं चारित्र बिना), क्षायोपशमिक के ४ ज्ञा. ३ अज्ञा.
- ३ ज्ञान रूप स्थान में ३ - अभव्यत्व, मिथ्यादर्शन, संयमासंयम
- ४ ज्ञान रूप स्थान में ५ - औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र; क्षायोपशमिक के ३- १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ चारि.
- ५ ज्ञान रूप स्थान में २ - क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र।
- ६ ज्ञान रूप स्थान में ९ - ३ गति (मनुष्य बिना) २ लिङ्ग (स्त्री. नपुं.) १ असंयत ३ लेश्या (अशुभ.)
- ७ ज्ञान रूप स्थान में १५-क्षायोपशमिक के -२ दर्श. ५ लब्धि; औदयिक के - ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. २ ले. (पीत. पद्म)
- ८ ज्ञान रूप स्थान में ५ - औदयिक के ३-१ ग. (मनु.) १ असि. १ ले. (शुक्ल)। पारिणामिक के - जीवत्व भव्यत्व।

प्रश्न : इन स्थानों के स्वामी कौन होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

- १ ज्ञान रूप स्थान के - तेरहवें चौदहवें गुणस्थानवर्ती
- ३ ज्ञान रूप स्थान के - पहले दूसरे चौथे पाँचवें गुणस्थानवर्ती
- ४ ज्ञान रूप स्थान के - छठे से बारहवें गुणस्थानवर्ती
- ५ ज्ञान रूप स्थान के - क्षायिक सम्यग्दृष्टि मनुष्य या क्षायिक चारित्र वाले
- ६ ज्ञान रूप स्थान के - नरक तिर्यःा देवगति
- ७ ज्ञान रूप स्थान के - छद्मस्थ मनुष्य
- ८ ज्ञान रूप स्थान के - मनुष्यगति

प्रश्न : कितने स्थानों में होने वाले भाव सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं?

उत्तर : २ स्थानों में होने वाले भाव सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं -

(१) ४ ज्ञान रूप स्थान (२) ५ ज्ञान रूप स्थान

प्रश्न : कितने स्थानों में दो भावों के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : चार स्थानों में दो भावों के उत्तर भेद होते हैं -

- १ ज्ञान रूप स्थान में - क्षायिक एवं क्षायोपशमिक
- ४ ज्ञान रूप स्थान में - औपशमिक एवं क्षायोपशमिक
- ७ ज्ञान रूप स्थान में - क्षायोपशमिक एवं औदयिक
- ८ ज्ञान रूप स्थान में - औदयिक एवं पारिणामिक

प्रश्न : कितने स्थानों में केवल औदयिक भाव के ही भेद होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान में औदयिक भाव के ही उत्तर भेद होते हैं - ६ ज्ञानरूप स्थान में।

प्रश्न : कितने स्थानों में १२ वें गुणस्थान तक होने वाले भाव भी होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान में १२ वें गुणस्थान तक होने वाले भाव भी होते हैं -

- ७ ज्ञान रूप स्थान में ८ भाव

५ लब्धि-दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

२ दर्शन-चक्षु-अचक्षु

१ - अज्ञान

प्रश्न : कौन से स्थान में केवल एक गुणस्थान में होने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : ३ ज्ञान रूप स्थान में केवल एक गुणस्थान में होने वाले भाव होते हैं -

- संयमासंयम - पाँचवें गुणस्थान में (मति श्रुत अवधिज्ञान रूप स्थान)
- मिथ्यादर्शन - पहले गुणस्थान में (कुमति कुश्रुत कुअवधिज्ञान रूप स्थान)
- अभव्यत्व - पहले गुणस्थान में (कुमति कुश्रुत कुअवधिज्ञान रूप स्थान)

प्रश्न : किस स्थान में सबसे ज्यादा गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : तीन ज्ञान रूप स्थान में सबसे ज्यादा गुणस्थान होते हैं -

मति श्रुत अवधिज्ञान में - चौथे से बारहवाँ गुणस्थान

कुमति कुश्रुत कुअवधिज्ञान में पहला दूसरा। इस प्रकार इसमें ११ गुणस्थान होते हैं।

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	स्थान	विवरण
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	२	३ ज्ञा. ४ ज्ञा.	
	चारित्र	१	४ ज्ञान.	मन:पर्ययज्ञान से रहित जीवों के तीन ज्ञान रूप स्थान भी हो सकता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	४	१ ज्ञा. ३ ज्ञा. ४ ज्ञा. ५ ज्ञा.	
	चारित्र	३	१ ज्ञा. ४ ज्ञा. ५ ज्ञा.	
	ज्ञानादि ७	१	१ ज्ञान	केवलज्ञान रूप स्थान होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	४ ज्ञान	१	१ ज्ञान	स्वकीयज्ञान होता है
	३ अज्ञान	१	१ ज्ञान	
	चक्षु-अचक्षु	४	३ ज्ञा. ४ ज्ञा. ६ ज्ञा. ७ ज्ञा.	
	अवधिदर्शन	२	३ ज्ञा. ४ ज्ञा.	तीन ज्ञान रूप स्थान चौथे-पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	दानादि पाँच लब्धि	४	३ ज्ञा. ४ ज्ञा. ६ ज्ञा. ७ ज्ञा.	
	सम्यक्त्व	२	३ ज्ञा. ४ ज्ञा.	
	चारित्र	१	४ ज्ञा.	
	संयमासंयम	१	३ ज्ञा.	मति श्रुत अवधिज्ञान रूप स्थान होता है।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	२	३ ज्ञा. ६ ज्ञा.	६ ज्ञान रूप स्थान गति की अपेक्षा होता है।
	तिर्यःागति	२	३ ज्ञा. ६ ज्ञा.	,, ,, ,, ,,
	मनुष्यगति	५	१ ज्ञा. ३ ज्ञा. ४ ज्ञा. ७ज्ञा. ८ज्ञा.	
	देवगति	२	३ ज्ञा. ६ ज्ञा.	
	४ कषाय	४	३ ज्ञा. ४ ज्ञा. ६ ज्ञा. ७ ज्ञा.	
	स्त्रीलिङ्ग	२	३ ज्ञा. ६ ज्ञा.	
	पुरुष लिङ्ग	४	३ ज्ञा. ४ ज्ञा. ६ ज्ञा. ७ ज्ञा.	
	नपुंसकलिङ्ग	२	३ ज्ञा. ६ ज्ञा.	
	मिथ्यादर्शन	१	३ ज्ञा.	कुमति कुश्रुत कुअवधिज्ञान रूप....
	अज्ञान	४	३ ज्ञा. ४ ज्ञा. ६ ज्ञा. ७ ज्ञा.	
	असंयत	२	३ ज्ञा. ६ ज्ञा.	
	असिद्धत्व	६	१ज्ञा. ३ज्ञा. ४ज्ञा. ६ज्ञा. ७ज्ञा. ८ज्ञा.	
	३ अशुभ लेश्या	२	३ ज्ञा. ६ ज्ञा.	
	पीत-पद्म लेश्या	४	३ ज्ञा. ४ ज्ञा. ६ ज्ञा. ७ ज्ञा.	६ ज्ञान का स्थान नरकगति की अपेक्षा नहीं होता है।
	शुक्ल लेश्या	६	१ ज्ञा. ३ ज्ञा. ४ ज्ञा. ६ ज्ञा. ७. ज्ञा. ८ ज्ञा.	१ ज्ञान का स्थान केवलज्ञान की अपेक्षा जानना चाहिए।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	६	१ ज्ञा. ३ ज्ञा. ४ ज्ञा. ६ ज्ञा. ७ ज्ञा. ८ ज्ञा.	६ ज्ञान का स्थान चारों गति की अपेक्षा बनता है।
	भव्यत्व	६	१ ज्ञा. ३ज्ञा. ४ज्ञा. ६ज्ञा. ७ज्ञा. ८ज्ञा.	
	अभव्यत्व	१	३ ज्ञान	कुमति कुश्रुत कुअवधिज्ञान की अपेक्षा तीन ज्ञान रूप स्थान होता है।

प्रश्न : कितने भावों में दो अपेक्षा तीन ज्ञान रूप स्थान पाया जाता है।

उत्तर : २९ भावों में दो अपेक्षा तीन ज्ञान रूप स्थान पाया जाता है -

- क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.
- औदयिक के २० - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

इन भावों में कुमति कुश्रुत कुअवधिज्ञान रूप तीन ज्ञान का स्थान पहले-दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा एवं मतिश्रुत अवधिज्ञान रूप तीन ज्ञान का स्थान यथायोग्य जानना चाहिए।

प्रश्न : कितने भावों में एक ज्ञान रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : ७ भावों में एक ज्ञान रूप स्थान भी होता है -

- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- औदयिक के ३-१ ग. (मनु.) १ असिद्धत्व १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में केवल एक स्थान पाया जाता है?

उत्तर : १९ भावों में केवल एक स्थान पाया जाता है -

- औपशमिक भाव का १ - चारित्र (४ ज्ञान रूप)
- क्षायिक के ७ - ज्ञानादि (१ केवलज्ञान रूप)
- क्षायोपशमिक के ९ - ४ ज्ञान ३ अज्ञान (एक स्वकीय ज्ञान रूप)
  चारित्र (४ ज्ञान.)
  संयमासंयम (मति आदि तीन ज्ञान रूप)
- औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन (३ मिथ्याज्ञान रूप)
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व (३ मिथ्याज्ञान रूप)

प्रश्न : कितने भावों में ४ ज्ञान रूप स्थान ही होता है?

उत्तर : २ भावों में ४ ज्ञान रूप स्थान ही होता है -

औपशमिक चारित्र, क्षायोपशमिक चारित्र

प्रश्न : कितने भावों में दो स्थान होते हैं?

उत्तर : १२ भावों में दो स्थान होते हैं -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व इसमें ३ एवं ४ ज्ञान रूप स्थान।
- क्षायोपशमिक के २ - अवधिदर्शन एवं सम्यक्त्व - ३ ज्ञा. एवं ४ ज्ञा. रूप
- औदयिक के ९ - ३ ग. २ लि (स्त्री.नपुं.) १ असं. ३ ले. (अशुभ), ३ ज्ञान एवं ६ ज्ञान रूप।

प्रश्न : कितने भावों में ४ ज्ञान रूप स्थान नहीं होता है?

उत्तर : २६ भावों में ४ ज्ञान रूप स्थान नहीं होता है -

- क्षायिक भाव के ७ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य
- क्षायोपशमिक के ८ - ४ ज्ञा. ३ अज्ञा. १ संयमासंयम
- औदयिक के १० - ३ ग. (मनु.बिना) २ लि. (स्त्री.नपु.) १ मि. १ असं. ३ ले. (अशुभ)
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न : चक्षु और अचक्षुदर्शन में ज्ञान स्थानों की विवेचना किस प्रकार करनी चाहिए?

उत्तर : चक्षु और अचक्षुदर्शन में ज्ञान स्थानों की विवेचना -

- ३ ज्ञान रूप स्थान - मिथ्यात्व एवं सासादन गुणस्थान में - कुमति कुश्रुत कुअवधिज्ञान रूप, अविरत सम्यक्त्व एवं संयमासंयम गुणस्थान में - मति. श्रुत अवधि ज्ञान रूप
- ४ ज्ञान रूप स्थान - छठे से बारहवें गुणस्थान तक
- ६ ज्ञान रूप स्थान - नरक तिर्यःा एवं देवगति में
- ७ ज्ञान रूप स्थान - मनुष्यगति की अपेक्षा

प्रश्न : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव के स्थानों में क्या विवक्षा है?

उत्तर : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव के स्थानों में विवक्षा -

- ३ ज्ञान रूप स्थान-मति श्रुत अवधिज्ञान रूप स्थान चौथे पाँचवें गुणस्थान में। मतिश्रुत मन:पर्यय ज्ञान रूप स्थान - छठे-सातवें गुणस्थान में।
- ४ ज्ञान रूप स्थान - छठे-सातवें गुणस्थान में।

प्रश्न : कितने भावों में मति श्रुत एवं मन:पर्यय ज्ञान रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : २६ भावों में मति श्रुत एवं मन:पर्यय ज्ञान रूप स्थान भी होता है -

- औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायोपशमिक के ९ - २ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
- औदयिक के ११ - १ ग. ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ लेश्या (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

भावों में ज्ञान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	४	मति-श्रुत-अवधि-मन:	मन:पर्ययज्ञान द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की
	चारित्र	४	मति-श्रुत-अवधि-मन:	अपेक्षा जानना चाहिए।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	५	मति श्रुत अवधि मन: केवल.	
	चारित्र	५	मति श्रुत अवधि मन: केवल.	
	ज्ञानादि सात	१	केवलज्ञान	तेरहवें चौदहवें गुण. में तथा सिद्ध भगवान के भी होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	४ ज्ञान	१	स्वकीय	मतिज्ञान में मतिज्ञान......
	३ अज्ञान	१	स्वकीय	
	चक्षु. अचक्षु.	७	४ ज्ञा. ३ अज्ञान.	अज्ञान पहले-दूसरे गुण. में होते हैं।
	अवधिदर्शन	४	मति-श्रुत. अवधि. मन:	
	५ लब्धि	७	४ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	सम्यक्त्व	४	मति. श्रुत. अवधि. मन:	
	चारित्र	४	,, ,, ,, ,,	
	संयमासंयम	३	मति. श्रुत. अवधि.	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	६	३ ज्ञा. ३ अज्ञा.	तीन ज्ञान चौथे गुणस्थान में होते हैं।
	तिर्यःगति	६	३ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	मनुष्यगति	८	५ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	देवगति	६	३ ज्ञा.३ अज्ञा.	मन:पर्ययज्ञान नहीं होता है।
	४ कषाय	७	४ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	स्त्रीलिङ्ग	६	३ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	पुरुषलिङ्ग	७	४ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	नपुंसकलिङ्ग	६	३ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	मिथ्यादर्शन	३	मति अज्ञा. श्रुत अज्ञा. विभंगा.	केवल पहला गुणस्थान ही होता है।
	अज्ञान	७	४ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	असंयत	६	३ ज्ञा. ३ अज्ञा.	तीन ज्ञान केवल चौथे गुण. में होते हैं।
	असिद्धत्व	८	५ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	३ अशुभ लेश्या	६	३ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	पीत-पद्म लेश्या	७	४ ज्ञा. ३ अज्ञा.	मन:पर्ययज्ञान छठे-सातवें गुण. में है।
	शुक्ल लेश्या	८	५ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	८	५ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	भव्यत्व	८	५ ज्ञा. ३ अज्ञा.	
	अभव्यत्व	३	मति अज्ञान श्रुत अज्ञान विभंगा.	केवल पहले गुणस्थान में ही होते हैं।

प्रश्न : कितनी गति रूप भाव में ज्ञान मार्गणा के बराबर भेद होते हैं?

उत्तर : तीन गति रूप भाव में ज्ञान मार्गणा के बराबर भेद होते हैं -

नरकगति, तिर्यःगति, देवगति में - मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान कुमति अज्ञान, कुश्रुत अज्ञान, विभंगावधिज्ञान।

इन गतियों में मन:पर्यय ज्ञान एवं केवलज्ञान नहीं हैं, क्योंकि इनके संयम नहीं होता है।

प्रश्न : कितने भावों के सभी उत्तरभेदों में कुमति आदि तीन ज्ञान होते हैं?

उत्तर : दो भावों के सभी उत्तर भेदों में कुमति आदि तीन ज्ञान होते हैं -

औदयिक एवं पारिणामिक

प्रश्न : कितने क्षायोपशमिक भावों में ज्ञान मार्गणा के चार ज्ञान होते हैं?

उत्तर : मात्र तीन क्षायोपशमिक भावों में ज्ञान मार्गणा के चार भेद होते हैं -

(१) अवधिदर्शन (२) सम्यक्त्व (३) चारित्र।

इनमें मति, श्रुत, अवधि एवं मन:पर्ययज्ञान होता है।

प्रश्न : कितने भावों में मन:पर्यय ज्ञान पाया जाता है?

उत्तर : २८ भावों में मन:पर्यय ज्ञान पाया जाता है -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के ११ - १ ज्ञा. (स्वकीय) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
- औदयिक के ११ - १ ग. ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

प्रश्न : कितने औदयिक भावों में ज्ञान मार्गणा के सभी भेद होते हैं?

उत्तर : ३ औदयिक भावों में ज्ञान मार्गणा के सभी भेद होते हैं -

(१) मनुष्यगति (२) असिद्धत्व (३) शुक्ल लेश्या

प्रश्न : कितने उत्तर भावों में ज्ञान मार्गणा के तीन भेद होते हैं?

उत्तर : तीन उत्तर भावों में ज्ञान मार्गणा के तीन भेद होते हैं -

- संयमासंयम - मति श्रुत अवधिज्ञान
- मिथ्यादर्शन - मति अज्ञा. श्रुत अज्ञा. विभंगावधिज्ञान
- अभव्यत्व - मति अज्ञा. भंश्रुत अज्ञा. विभंगावधिज्ञान

नोट : प्रथमोपशम सम्यक्त्व रूप भाव में भी मति श्रुत अवधि ये तीन ज्ञान ही होते हैं।

प्रश्न : कितने उत्तर भावों में ज्ञान मार्गणा का केवल एक भेद पाया जाता है?

उत्तर : १४ उत्तर भावों में ज्ञान मार्गणा का केवल एक भेद पाया जाता है -

- क्षायोपशमिक के ७ - मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मन:पर्ययज्ञान मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान विभंगावधिज्ञान।
- क्षायिक के ७ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य।

प्रश्न : कितने उत्तर भाव ज्ञान, अज्ञान एवं केवलज्ञान तीनों में पाये जाते हैं?

उत्तर : ५ उत्तर भाव ज्ञान, अज्ञान एवं केवलज्ञान तीनों में पाये जाते हैं -

- औदयिक भाव के ३ - मनुष्यगति, असिद्धत्व, शुक्ल लेश्या
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न : लेश्या रूप भावों में ज्ञान मार्गणा का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : लेश्या रूप भावों में ज्ञान मार्गणा का विवेचन -

- छहों लेश्याओं के साथ - ३ अज्ञान - पहले दूसरे गुणस्थान में।
- छहों लेश्याओं के साथ - ३ मिश्रज्ञान - तीसरे गुणस्थान में।
- छहों लेश्याओं के साथ - मति आदि तीन ज्ञान - चौथे गुणस्थान में।
- तीन शुभ लेश्या के साथ - मति आदि तीन ज्ञान - पाँचवें गुणस्थान में।
- तीन शुभ लेश्या के साथ - मति आदि चार ज्ञान - छठे-सातवें गुणस्थान में।
- शुक्ल लेश्या के साथ - मति आदि चार ज्ञान - आठवें से बारहवें गुणस्थान तक।
- शुक्ल लेश्या के साथ - केवलज्ञान - तेरहवें गुणस्थान में।
- लेश्यातीत चौदहवें गुणस्थान में एवं सिद्ध भगवान के भी केवलज्ञान होता है।
- सामान्य से ३ अशुभ लेश्याओं में ज्ञान मार्गणा के ६ भेद होते हैं - ३ ज्ञान ३ अज्ञान।
- पीत-पद्म लेश्या में ७ भेद होते हैं - ४ ज्ञान ३ अज्ञान।
- शुक्ल लेश्या में ८ भेद होते हैं - ५ ज्ञा. ३ अज्ञान।

प्रश्न : कितने भावों में ५ ज्ञान होते हैं?

उत्तर : केवल दो भावों में ५ ज्ञान होते हैं -
क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र।

प्रश्न : कितने भावों में केवल अज्ञान ही होते हैं?

उत्तर : केवल दो भावों में केवल अज्ञान ही होते हैं -
(१) मिथ्यादर्शन (२) अभव्यत्व

कुमति आदि तीन अज्ञान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	क्षायोपशमिक	८	१ अज्ञान - स्वकीय २ दर्शन - चक्षु अच. ५ लब्धि - दान, लाभ...	कुमति में कुमति......
२.	औदयिक	२१	४ गति - नर. तिर्य. मनु. देव. ४ कषाय को.मा.मा.लो. ३ लिङ्ग. स्त्री. पुरु. नपुं. १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या. कृ.नी.का.पी.प.शु.	विभंगावधि संज्ञी पर्याप्तकों के ही होता है। पहल-दूसरे गुणस्थान में ही होते हैं।
३.	पारिणामिक	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	

प्रश्न : कुमति ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : • इन्द्रियों से उत्पन्न होने वाले मिथ्यात्व समवेत ज्ञान को मत्यज्ञान कहते हैं, **अथवा** दूसरों के उपदेश के बिना विष, यंत्र, कूट, पंजर तथा बन्ध आदि के विषय में जो बुद्धि की प्रवृत्ति होती है उसको मत्यज्ञान कहते हैं। **(ध.१/३६०)**

- मिथ्यादर्शन के उदय के साथ आभिनिबोधिक ज्ञान ही कुमतिज्ञान है। **(पं.का.आ.४१)**
- **विष**-जिसको खाने से जीव मर जाये, उस द्रव्य को विष कहते हैं।
- **यंत्र**-भीतर पैर रखते ही जिसके किवाड़ बन्द हो जाये और जिसके भीतर बकरी आदि को बाँधकर पकड़ा जाता है उसको यंत्र कहते हैं।
- **कूट**-जिससे चूहे आदि पकड़े जाते हैं उसे कूट कहते हैं।
- **पंजर**-रस्सी में गाँठ लगाकर जो जाल बनाया जाता है, उसे पंजर कहते हैं।
- **बन्ध**-हाथी आदि को पकड़ने के लिए जो गड्ढ़े आदि बनाये जाते हैं उनको बन्ध कहते हैं। **(गो.जी. ३०३)**

प्रश्न : कुश्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : • शब्द के निमित्त से जो एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ का मिथ्यासमवेत ज्ञान होता है उसे श्रुताज्ञान कहते हैं। **(ध.१/३६०)**

- चौर शास्त्र, हिंसा शास्त्र, भारत और रामायण आदि के तुच्छ और साधन करने के अयोग्य उपदेशों को श्रुताज्ञान कहते हैं। **(ध.१/३६०)**
- मिथ्यात्व कर्म के उदय से युक्त श्रुत ज्ञानावरणीय कर्म के देशघाति स्पर्द्धकों के उदय से उत्पन्न ज्ञान वाले जीव क्षायोपशमिक श्रुताज्ञानी कहलाते हैं। **(ध.१४/२०)**
- मिथ्यादर्शन के उदय से सहचरित श्रुतज्ञान को कुश्रुतज्ञान कहते हैं। **(पं.का.आ.४१)**

प्रश्न : कुअवधिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : • मिथ्यादर्शन समवेत अवधिज्ञान की विभंगज्ञान संज्ञा है। **(ध.१/३६०)** सर्वज्ञों के द्वारा आगम में क्षयोपशमजन्य और मिथ्यात्वादि कर्म के कारण रूप विपरीत अवधिज्ञान को विभंगज्ञान कहा है। **(ध.१/३६०-६१)**

- अवधि ज्ञानावरण तथा वीर्यान्तराय कर्मों के क्षयोपशम से द्रव्य क्षेत्र काल भाव की मर्यादा युक्त मिथ्यादृष्टि जीवों के ज्ञान को विभंगावधिज्ञान कहते हैं। यही कुअवधिज्ञान है।

  मिथ्यात्व के सर्वघाती स्पर्धकों का उदय होने से ज्ञानावरणीय के देशघाति स्पर्धकों का उदय होने से उसी के सर्वघाति स्पर्धकों का उदयक्षय होने से उत्पन्न ज्ञान वाले जीव क्षायोपशमिक मत्यज्ञानी कहलाते हैं। **(ध.१४/२०)**

प्रश्न : इन ज्ञानों को अज्ञान क्यों कहा है?

उत्तर : तत्त्वार्थ में रुचि निश्चय श्रद्धा और चारित्र का धारण करना ज्ञान का कार्य है, यह कार्य मिथ्यादृष्टि जीव में नहीं पाया जाता है इसलिए उसके ज्ञान को अज्ञान कहा है। **(ध.१/३५५)**

- रुचि - इच्छा प्रकट करना।
- निश्चय - स्वरूप का निर्णय करना।
- श्रद्धा - निर्णय से चलायमान न होना।
- अपने द्वारा वस्तु में विपरीत श्रद्धा करने वाले मिथ्यात्वोदय के बल से जिस पदार्थ के विषय में जीव में श्रद्धान उत्पन्न नहीं होता, उस पदार्थ के विषय में जो ज्ञान होता है वह अज्ञान कहलाता है, क्योंकि उसमें ज्ञान का फल नहीं पाया जाता है। **(ध.७/८५-८६)**

प्रश्न : कुमति आदि तीन कुज्ञानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : कुमति आदि तीन ज्ञानों में ३२ भाव होते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के ८-१ अज्ञा. (स्वकीय) २ दर्श. (चक्षु अच.) ५ लब्धि।
- औदयिक के २१ - ४ ग - ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि ६ ले.।
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

प्रश्न : कुमति ज्ञान में कम-से-कम कितने औदयिक भाव होते हैं?

उत्तर : कुमतिज्ञान में कम-से-कम १० औदयिक भाव होते हैं -

- १ गति - नरकगति
- ४ कषाय - क्रोध मान माया लोभ
- १ लिङ्ग - नपुंसक
- १ अज्ञान
- १ असंयत
- १ असिद्धत्व
- १ लेश्या

ये दस भाव तीसरे और पाँचवें नरक को छोड़कर शेष नरकों में सासादन सम्यग्दृष्टि के जानने चाहिए।

इसी प्रकार कुश्रुत एवं विभंगावधिज्ञान में जानना चाहिए।

प्रश्न : क्या ऐसे कोई कुमतिज्ञानी हैं जिनके नरकगति रूप भाव नहीं पाया जाता है?

उत्तर : हाँ, विग्रहगति एवं निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में स्थित सासादन गुणस्थानवर्ती कुमतिज्ञानी के नरकगति रूप भाव नहीं पाया जाता है, क्योंकि सासादन सम्यग्दृष्टि मरकर नरक में नहीं जाता है।

इसी प्रकार कुश्रुतज्ञानी के भी जानना चाहिए।

विभंगावधिज्ञान में ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि विभंगावधिज्ञान पर्याप्त जीवों के ही होता है।

प्रश्न : कुमति-कुश्रुतज्ञान में छह लेश्या रूप भाव कितनी गतियों में होता है?

उत्तर : कुमति कुश्रुतज्ञान में छहों लेश्या रूप भाव तीन गतियों में होते हैं -

(१) मनुष्यगति (२) तिर्यःागति (३) देवगति

विभंगावधिज्ञान में देवगति नहीं होती है, क्योंकि देवगति में भवनत्रिक देवों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ही अशुभ लेश्याएँ होती हैं और वहाँ विभंगावधिज्ञान नहीं होता है। विभंगावधिज्ञान पर्याप्त जीवों के ही होता है।

मति आदि तीन ज्ञान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक होता है।
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	चौथे से बारहवें गुणस्थान तक होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	ज्ञान-स्वकीय ३ दर्शन-चक्षु.अच.अव. ५ लब्धि-दान लाभ भोग... १ - सम्यक्त्व १ - चारित्र १ - संयमासंयम	
४.	**औदयिक**	२०	४ गति-नर. तिर्य. मनु. देव. ४ कषाय-क्रो. मा.मा.लो. ३ लिङ्ग-स्त्री.पुरु.नपुं. १ - अज्ञान १ - असिद्धत्व १ - असंयत ६ लेश्या-कृ.नी.का.पी.प.शु.	मनुष्यतिर्यःा की अपेक्षा तीनों लिङ्ग होते हैं। केवल चौथे गुणस्थान में होता है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : इन्द्रिय एवं अनिन्द्रिय की सहायता से अभिमुख और नियमित पदार्थ के जानने वाले ज्ञान को आभिनिबोधिक (मतिज्ञान) कहते हैं। **(क.प्र.३७)**

- पाँच इन्द्रिय और मन से जो पदार्थों का ग्रहण होता है उसे मतिज्ञान कहते हैं। **(ध.१/३५६)**
- इन्द्रिय और मन के निमित्त से शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गंधादि विषयों में अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा रूप जो ज्ञान होता है उसे मतिज्ञान कहते हैं। **(ज.ध.१/३८)**
- तीन प्रकारों में से किसी भी सम्यक्त्व से युक्त मतिज्ञानावरणीय कर्म के देशघातिस्पर्धकों के उदय से उत्पन्न ज्ञानवाले जीव क्षायोपशमिक आभिनिबोधिकज्ञानी कहलाते हैं।

  इस प्रकार श्रुत, अवधि एवं मन:पर्यय ज्ञानी का भी कथन करना चाहिए। **(ध.१४/२१)**

प्रश्न : श्रुत ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : मतिज्ञान से जाने हुए पदार्थ के अवलम्बन से तत्सम्बन्धी दूसरे पदार्थ के ज्ञान को श्रुतज्ञान कहते हैं। यह ज्ञान नियम से मतिज्ञान पूर्वक होता है। **(ध.१/३६१)**

- आभिनिबोधिकज्ञान के विषयभूत पदार्थ से भिन्न पदार्थ के जानने को श्रुतज्ञान कहते हैं। **(क.प्र.३८)**
- जो ज्ञान मतिज्ञान पूर्वक होता है और मतिज्ञान के द्वारा विषय किये गये अर्थ से पृथग्भूत अर्थ को विषय करता है वह श्रुतज्ञान है। **(ज.ध.१/३८)**

अर्थों में श्रुतज्ञान के अनुसार जो ज्ञान उत्पन्न होता है वह श्रुतज्ञान है। **(श.चू.३)**

प्रश्न : अवधिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : महास्कन्ध से लेकर परमाणु पर्यन्त समस्त पुद्गल द्रव्यों को असंख्यात लोकप्रमाण क्षेत्र काल और भावों को तथा कर्म के सम्बन्ध से पुद्गल भाव को प्राप्त हुए जीवों को जो प्रत्यक्ष रूप से जानता है, उसे अवधिज्ञान कहते हैं। **(ज.ध.१/३८)**

द्रव्य क्षेत्र काल भाव की अपेक्षा जिस ज्ञान के विषय की सीमा हो उसे अवधिज्ञान कहते हैं। इसीलिए परमागम में इसे सीमाज्ञान कहा है। **(ध.१/३६१)**

इन्द्रिय और मन से निरपेक्ष आवरण रहित जीव प्रदेश में क्षयोपशम के निमित्त से होने वाला साक्षात् ज्ञेय को ग्रहण करने वाला अवधिज्ञान है। जैसे-प्रदीप का ज्वाला और कटक के अन्तर्गत से निकले हुए प्रकाश आदि प्रकाश। **(श.चू.)**

अधिकतर नीचे के विषय को जानने वाला होने से तथा परिमित विषय वाला होने से अवधिज्ञान कहलाता है। **(सर्वा.१/९)**

प्रश्न : मति आदि तीन ज्ञानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : मति आदि तीन ज्ञानों में ३८ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के १२ - १ ज्ञान (स्वकीय) ३ दर्श ५ ल. १ सम्य. १ चारि. १ संयमा.
- औदयिक के २० - मिथ्यादर्शन बिना
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : मति आदि तीन ज्ञानों में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : मति आदि तीन ज्ञानों में ९ गुणस्थान होते हैं -

चौथे से बारहवें तक

- इनकी निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में दो गुणस्थान होते हैं -

  अविरतसम्यक्त्व, प्रमत्तसंयत।

- अविरतसम्यक्त्व की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में - औपशमिक का १ क्षायिक का १ क्षायो. १० औदयिक १९ पारिणामिक के २=३३

- प्रमत्तसंयत की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में - क्षायिक का १, क्षायो. ११, औद. ११, पारिणामिक के २=२५

- सामान्य रूप से मतिश्रुतज्ञानी के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ३४ भाव होते हैं।

  औप. का १, क्षा. का १, क्षायो. के ११, औद. के १९, पारि. के २ = ३४

प्रश्न : मतिज्ञानी क्षायिक सम्यक् दृष्टि के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : मतिज्ञानी क्षायिक सम्यक् दृष्टि के ३६ भाव होते हैं -

औपशमिक का - १ - चारित्र

क्षायिक के - २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायोपशमिक के - ११ - १ ज्ञान (मति.), ३ दर्श., ५ ल., १ चारित्र, १ संयमासंयम

औदयिक के - २० (मिथ्यादर्शन बिना)

पारिणामिक के - २ जीवत्व, भव्यत्व

मन:पर्ययज्ञान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा सम्य. होता है।
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	
३.	**क्षायोपशमिक**	११	१ ज्ञान-मन:पर्यय ३ दर्शन-चक्षु. अचक्षु. अवधि. ५ लब्धि-दान लाभ भोग.... १ - सम्यक्त्व १ - चारित्र	 छठे सातवें गुणस्थान में ही होता है।
४.	**औदयिक**	११	१ गति - मनुष्य ४ कषाय - क्रोध मान माया लोभ १ लिङ्ग - पुरुष १ - अज्ञान १ - असिद्धत्व ३ लेश्या - पीत पद्म शुक्ल	 संज्वलन क्रोधादि ही होते हैं। छठे सातवें में तीनों लेश्या होती हैं।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : • जो दूसरों के मनोगत मूर्त्तिक द्रव्यों को उस मन के साथ प्रत्यक्ष जानता है उसे मन:पर्ययज्ञान कहते हैं। **(ध.१/९५)**

- परकीय मन में स्थित पदार्थ मन कहलाता है। उसकी पर्यायों अर्थात् विशेषों को मन:पर्यय कहते हैं। उनको जो ज्ञान जानता है वह मन:पर्ययज्ञान है। **(ध.६/२८)**
- मन:पर्यय ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशमादि रूप सामग्री के निमित्त से परकीय मनोगत अर्थ को जानना मन:पर्ययज्ञान है। **(रा.वा.१/९)**
- मन रूप से ग्रहण करके पुद्‌गल के विषय को जीव जिनसे जानता है वो मन है, उन पुद्‌गलों की पर्यायें मन:पर्यायें हैं उनके विषय में जो ज्ञान होता है वह मन:पर्यय ज्ञान है। **(श.चू.३)**

प्रश्न : मन:पर्यय ज्ञान कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : मन:पर्यय ज्ञान दो प्रकार का होता है -

(१) ऋजुमति मन:पर्ययज्ञान (२) विपुलमति मन:पर्ययज्ञान

- **ऋजुमति मन:पर्ययज्ञान -** ऋजु का अर्थ निवर्तित और प्रगुण है। दूसरे के मन को प्राप्त हुए वचन काय मनस्कृत अर्थ के विज्ञान से निवर्तित जिसकी मति ऋजु है वह ऋजुमति कहलाता है। **(सर्वा. १/२३)**
- **विपुलमति मन:पर्ययज्ञान -** सरल या वक्र मन-वचन-काय के द्वारा किया गया कोई अर्थ उसके चिंतन युक्त किसी अन्य जीव के मन को जानने से निष्पन्न या अनिष्पन्न मति को विपुल कहते हैं। ऐसी विपुल या कुटिल मति है जिसकी सो विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान है। **(गो.जी. ४४०)**
- जो ऋजु मन-वचन-कायगत को तथा अनृजुमन-वचन-कायगत को जानता है उसे विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान कहते हैं। **(ध.१३/३४४)**

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञान किसको प्राप्त होता है?

उत्तर : मन:पर्ययज्ञान प्रमत्तसंयत से लेकर क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थान तक अर्थात् छठे से बारहवें गुणस्थान तक होता है।

- मन:पर्यय ज्ञान मनुष्यों में ही उत्पन्न होता है, नरक तिर्य:ादि में नहीं। मनुष्यों में भी पर्याप्त मनुष्यों में ही होता है सम्मूर्च्छनों में नहीं। कर्मभूमिज गर्भज मनुष्यों में ही होता है, भोगभूमिज मनुष्यों में नहीं। कर्मभूमियों में भी पर्याप्त मनुष्यों में ही होता है **निर्वृत्यपर्याप्तकों में नहीं।** पर्याप्तकों में भी सम्यग्दृष्टि संयमी मनुष्यों को ही होता है मिथ्यादृष्टि आदि पंचम गुणस्थान तक के जीवों को नहीं। प्रमत्तसंयत से लेकर बारहवें गुणस्थान तक के संयमियों को होता है ऊपर के गुणस्थानों में नहीं। जो संयमी प्रवर्द्धमान चारित्र वाले हैं उनको ही होता है। जिनका चारित्र हीयमान है वे मन:पर्ययज्ञान के पात्र नहीं हैं। प्रवर्द्धमान चारित्र वाले संयमियों में सात ऋद्धियों में से किसी एक ऋद्धिप्राप्त मुनि के ही मन:पर्ययज्ञान होता है, सर्व संयमियों के नहीं। ऋद्धि प्राप्त मुनियों में भी सर्व ऋद्धिधारी मुनियों के नहीं होता, विशिष्ट संयमियों के ही होता है। **(रा.वा.१/२५)**

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञान में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : मन:पर्ययज्ञान में २८ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के ११ - १ ज्ञान (मन:) ३ दर्शन ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
- औदयिक के ११ - १ ग. (मनु.) ४ क. १ लि (पु.) १ अज्ञा. १ असि., ३ शुभ लेश्या
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : जब मन:पर्यय ज्ञान उत्पन्न होता है तब कितने भाव होते हैं?

उत्तर : जब मन:पर्यय ज्ञान उत्पन्न होता है तब २७ भाव होते हैं -

- क्षायिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञान (म.श्रु.अव.) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
- औदयिक के ११ - १ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले.
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

ये भाव सातवें गुणस्थान की अपेक्षा जानने चाहिए, क्योंकि मन:पर्ययज्ञान की उत्पत्ति सातवें गुणस्थान में ही होती है। कहा भी है- ऋजुमति एवं विपुलमति दोनों मन:पर्ययज्ञान उपेक्षा संयमरूप संयम लब्धि होने पर ही होते हैं और वह भी विशुद्ध परिणामों में तथा वीतराग आत्मतत्त्व के सम्यक् श्रद्धान ज्ञान व चारित्र की भावना सहित, पन्द्रह प्रकार के प्रमाद से रहित अप्रमत्त मुनि के ही उत्पन्न होते हैं। यहाँ अप्रमत्तपने का नियम उत्पत्ति काल में ही है, पीछे प्रमत्त अवस्था में भी सम्भव है। **(पं.का./ता.वृ.प्रक्षे.४३-४)** उपशम सम्यग्दर्शन के साथ मन:पर्ययज्ञान नहीं होता है। कहा भी है -

- मन:पर्ययज्ञान परिहारविशुद्धि संयम, प्रथमोपशमसम्यक्त्व और दोनों आहारक अर्थात् आहारक शरीर एवं आहारक शरीर अंगोपांग, इन चारों में से किसी एक के होने पर, शेष तीन मार्गणाएँ नहीं होतीं, ऐसा जानना चाहिए। **(पं.सं.प्रा.१/१९४)**
- मन:पर्ययज्ञानी मुनिराज जब श्रेणी के सम्मुख होते हैं उस समय यदि उपशम सम्यक्त्व प्राप्त करते हैं उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं। वह क्षायोपशमिक सम्यक्त्व पूर्वक होता है इसलिए यहाँ औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव को ग्रहण नहीं किया है। अथवा द्वितीयोपशम सम्यक्त्व प्राप्त होने के पहले समय में भी मन:पर्यय ज्ञान उत्पन्न हो सकता है। **(ध.२/७२९)**

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञान में पाये जाने वाले कितने भाव आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान तक पाये जाते हैं?

उत्तर : मन:पर्ययज्ञान में पाये जाने वाला केवल एक भाव आठवें गुण. से ग्यारहवें गुणस्थान तक पाया जाता है - औपशमिक चारित्र।

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञान के साथ कितने क्षायोपशमिक भाव नियम से पाये जाते हैं?

उत्तर : मन:पर्ययज्ञान के साथ सात क्षायोपशमिक भाव नियम से पाये जाते हैं -

- २ दर्शन - चक्षु एवं अचक्षु
- ५ लब्धि - दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञान में कितने भावों के दो-दो उत्तरभेद पाये जाते हैं?

उत्तर : मन:पर्ययज्ञान में तीन भावों के दो-दो उत्तर भेद पाये जाते हैं-,

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञान में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : मन:पर्ययज्ञान में ७ गुणस्थान होते हैं - छठे से बारहवें तक। इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था नहीं होती है।

प्रश्न : उपर्युक्त गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : उपर्युक्त गुणस्थानों में भाव -

- छठे - सातवें गुणस्थान में २६ - औपशमिक का १ क्षायिक का १ क्षायो. के ११ औदयिक के ११ तथा पारिणामिक के २।
- आठवें अपूर्वकरण गुणस्थान में २४ - औपशमिक के २ क्षायिक के २ क्षायोपशमिक के ९ (१ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.) औदयिक के ९ (१ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले.) तथा पारिणामिक के २।
- नवें अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में - उपर्युक्त २४, लिङ्ग का अभाव होने पर २३, क्रोध का अभाव होने पर २२, मान का अभाव होने पर २१ तथा माया का अभाव होने पर २० भाव होते हैं।
- दसवें सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में २० - उपर्युक्त
- ग्यारहवें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ में १८ - औप. के २ क्षायिक का १ क्षायो. के ९ औदयिक के ४ तथा पारि. के २।
- बारहवें क्षीण कषाय वीतराग छद्मस्थ में १७-क्षायिक के २ क्षायो. के ९ औदयिक के ४ तथा पारि. के २।

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञानी के श्रेणी में कितने भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : मन:पर्ययज्ञानी के उपशम श्रेणी में २३ भाव पाये जाते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

- क्षायोपशमिक के ९ - १ ज्ञा. ३ दर्श ५ लब्धि
- औदयिक के ९ - १ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नवें गुणस्थान में लिङ्ग आदि की व्युच्छित्ति हो जाने पर २२, २१, २०, १९ तथा दसवें गुणस्थान में १८ भाव होते हैं। क्षपक श्रेणी में औपशमिक सम्यक्त्व एवं औपशमिक चारित्र के बिना शेष भाव होते हैं।

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञानी के किस गुणस्थान में क्षायिक भाव का केवल एक भेद पाया जाता है?

उत्तर : मन:पर्ययज्ञानी के छठे-सातवें गुणस्थान में क्षायिक भाव का केवल एक सम्यक्त्व रूप भाव पाया जाता है। क्षायिक सम्यक्त्व के साथ उपशम श्रेणी चढ़ने की अपेक्षा आठवें गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान तक भी केवल क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव पाया जाता है।

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञानी के कितने गुणस्थानों में २४ भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : मन:पर्ययज्ञानी के दो गुणस्थानों में २४ भाव पाये जाते हैं -

आठवें तथा नवें गुणस्थान के सवेद भाग में।

केवलज्ञान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**क्षायिक**	९	ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य सम्यक्त्व चारित्र	तेरहवें-चौदहवें गुण. में तथा सिद्ध भगवान के भी होते हैं।
२.	**औदयिक**	३	१ गति - मनुष्य १ - असिद्धत्व १ लेश्या - शुक्ल	केवल तेरहवें गुणस्थान में ही होती है।
४.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : केवलज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : जो अतीत, अनागत और वर्तमान पर्यायों सहित सम्पूर्ण द्रव्यों को प्रत्यक्ष जानता है उसे केवलज्ञान कहते हैं। **(ध.१/९६)** केवल ज्ञानावरण कर्म के क्षय से जो उत्पन्न होता है उसे केवलज्ञान कहते हैं। केवल शब्द असहायवाची है इसीलिए असहायज्ञान को केवलज्ञान कहते हैं।

अथवा - अर्थीजन जिसके लिए बाह्य और अभ्यन्तर तप के द्वारा मार्ग का केवन अर्थात् सेवन करते हैं वह केवलज्ञान कहलाता है। **(सर्वा.१/९)**

- घाति कर्म का पूर्ण क्षय हो जाने पर सर्व विषयों को जानने वाला जो ज्ञान प्रगट होता है उसके साथ अन्य ज्ञान कोई भी नहीं रह सकते, इसलिए इसे केवलज्ञान कहते हैं। **(त.सा.१/३०)**
- ज्ञानावरणीय कर्म के अत्यन्त क्षय होने से जो तीन लोक तीन काल की सम्पूर्ण द्रव्य गुण पर्यायों को एक साथ प्रत्यक्ष रूप से जानता है, उसे केवलज्ञान कहते हैं।

प्रश्न : केवलज्ञान में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : केवलज्ञान में १४ भाव होते हैं -

- क्षायिक भाव के ९ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य सम्यक्त्व चारित्र
- औदयिक के ३ - मनुष्यगति असिद्धत्व शुक्ल लेश्या
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : सिद्ध भगवान के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सिद्ध भगवान के १० भाव होते हैं -

- क्षायिक भाव के ९

- पारिणामिक का १ - शुद्ध जीवत्व

अथवा - सिद्ध भगवान के चार भाव होते हैं -

अथवा - कहा भी है - अन्यत्रकेवलसम्यक्त्व ज्ञान दर्शनसिद्धत्वेभ्यः **(त.सू. १०/४)** (१) केवलसम्यक्त्व (२) केवलज्ञान (३) केवलदर्शन (४) सिद्धत्व।

प्रश्न : केवलज्ञान में कम-से-कम कितने औदयिक भाव होते हैं -

उत्तर : केवलज्ञान में कम-से-कम दो औदयिक भाव होते हैं -

मनुष्यगति और असिद्धत्व

ये भाव चौदहवें गुणस्थान में जानने चाहिए।

अथवा - सिद्ध भगवान के भी केवलज्ञान होता है उनके एक भी औदयिक भाव नहीं होता है।

प्रश्न : केवलज्ञान के साथ किस गुणस्थान में लेश्या का अभाव नहीं हो सकता है?

उत्तर : केवलज्ञान में तेरहवें गुणस्थान में कभी भी लेश्या रूप भाव का अभाव नहीं हो सकता है, क्योंकि वहाँ लेश्या योग निमित्तक होती है। तेरहवें गुणस्थान के अंतिम समय तक योगों का सद्भाव पाया जाता है। इसलिए उनके लेश्या का अभाव नहीं हो सकता है।

चौदहवें गुणस्थान में तथा सिद्ध भगवान के लेश्या का सद्भाव ही नहीं होता है।

प्रश्न : केवलज्ञान में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : केवलज्ञान में दो गुणस्थान होते हैं -

(१) सयोगकेवली जिन (२) अयोगकेवली जिन

इनकी निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में एक तेरहवाँ गुणस्थान होता है - इसमें १४ भाव होते हैं।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में असंयत रूप भाव भी होता है?

उत्तर : ज्ञान मार्गणा के तीन भेदों में असंयत रूप भाव भी होता है-

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान।

इनमें चौथे गुणस्थान की अपेक्षा असंयत भाव होता है।

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में संयमासंयम भाव नहीं होता है?

उत्तर : ज्ञान मार्गणा के ५ भेदों में संयमासंयम भाव नहीं होता है -

कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान, केवलज्ञान।

प्रश्न : मतिज्ञान से कुमतिज्ञान के भावों में कितना अन्तर है?

उत्तर : मतिज्ञान से कुमति ज्ञान के भावों में अन्तर -

१) मतिज्ञान में पाँचों मूल भाव होते हैं। कुमति ज्ञान में क्षायोपशमिक, औदयिक एवं पारिणामिक ये तीन भाव ही होते हैं।

२) मतिज्ञान में अवधिदर्शन, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व चारित्र एवं संयमासंयम रूप भाव भी होते हैं।

३) मतिज्ञान में औदयिक भाव में से मिथ्यादर्शन भाव नहीं होता है।

४) मतिज्ञान में पारिणामिक भाव में से अभव्यत्व भाव नहीं होता है।

५) मतिज्ञान में ३८ भाव होते हैं, कुमतिज्ञान में ३२ भाव ही होते हैं।

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में तीन मूल भाव होते हैं?

उत्तर : ज्ञान मार्गणा के ४ भेदों में तीन मूल भाव होते हैं -

- कुमति कुश्रुत कुअवधिज्ञान में - क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक
- केवलज्ञान में - क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक

प्रश्न : मन:पर्ययज्ञान में होने वाले भावों में से कितने भाव कुमतिज्ञान में भी होते हैं?

उत्तर : मन:पर्ययज्ञान में होने वाले भावों में से २० भाव कुमतिज्ञान में भी होते हैं -

- क्षायोपशमिक भाव के ७ - २ दर्शन (चक्षु. अच.) ५ लब्धि
- औदयिक के ११ - १ गति (मनु.) ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ लेश्या (शुभ)

- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

  अर्थात् औपशमिक के २, क्षायिक के २, क्षायोपशमिक के ४; ये भाव मन:पर्ययज्ञान में होते हैं लेकिन कुमतिज्ञान में नहीं होते हैं।

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में कितने भावों के सभी उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ज्ञान मार्गणा के तीन भेदों में दो भाव तथा पाँच भेदों में एक-एक भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं -

- कुमति कुश्रुत कुअवधिज्ञान में - औदयिक एवं पारिणामिक
- मति श्रुत अवधि मन:पर्यय ज्ञान में - औपशमिक
- केवलज्ञान में - क्षायिक

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में उपशम भाव नहीं होता है?

उत्तर : ज्ञान मार्गणा के चार भेदों में उपशम भाव नहीं होता है-

(१) कुमतिज्ञान (२) कुश्रुतज्ञान (३) कुअवधिज्ञान (४) केवलज्ञान

- विपुलमति मन:पर्ययज्ञान के साथ भी उपशम भाव नहीं होता है, क्योंकि विपुलमति मन:पर्ययज्ञान वर्धमान चारित्र वालों के ही होता है इसलिए वह उपशम श्रेणी नहीं चढ़ता है।

प्रश्न : ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में अज्ञान भाव पाया जाता है?

उत्तर : ज्ञान मार्गणा के सात भेदों में अज्ञान भाव पाया जाता है -

(१) कुमतिज्ञान (२) कुश्रुतज्ञान (३) कुअवधिज्ञान (४) मतिज्ञान (५) श्रुतज्ञान (६) अवधिज्ञान (७) मन:पर्ययज्ञान।

- सम्यग्ज्ञानों में भी अज्ञान भाव पाया जाता है, क्योंकि वह ज्ञानावरण कर्म के उदय से उत्पन्न होता है, उस ज्ञानावरण कर्म का उदय बारहवें गुणस्थान तक पाया जाता है।

प्रश्न : मिथ्यादृष्टि के ज्ञान को अज्ञानपना कैसे कहा है?

उत्तर : क्योंकि मिथ्यादृष्टि का ज्ञान, ज्ञान का कार्य नहीं करता है। जाने हुए पदार्थ का श्रद्धान करना ज्ञान का कार्य है किन्तु यह ज्ञान कार्य मिथ्यादृष्टि जीवों के नहीं पाया जाता है इसलिए उनका ज्ञान ही अज्ञान है। **(ध.५/२२४)**

प्रश्न : कितने ज्ञानों की पर्याप्त एवं निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में बराबर भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : मात्र एक ज्ञान केवलज्ञान की पर्याप्त एवं निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में बराबर भाव पाये जाते हैं। यहाँ निवृत्यपर्याप्तावस्था समुद्घात की अपेक्षा जानना चाहिए।

– प्रश्न पत्र –

१. उपयुक्त विकल्प पर (✓) का निशान लगाइये-

(i) **ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में औदयिक भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं?**

(अ) ३ (ब) २
(स) ८ (द) कोई नहीं

(ii) **ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में औपशमिक भाव नहीं होता है?**

(अ) ४ (ब) ३
(स) २ (द) ८

(iii) **केवलज्ञान में कितने औदयिक भाव होते हैं?**

(अ) ४ (ब) ५
(स) ३ (द) ६

(iv) **मन:पर्ययज्ञान में कितने भावों का एक भेद भी नहीं होता है?**

(अ) ३ (ब) ४
(स) ६ (द) कोई नहीं

(v) **केवलज्ञान की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने क्षायिक भाव होते हैं?**

(अ) २ (ब) ५
(स) ९ (द) १

२. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) क्या कुमतिज्ञान में भी असिद्धत्व भाव होता है?
(ii) मन:पर्ययज्ञानी के १० वें गुणस्थान में ११ क्षायोपशमिक भाव होते हैं?
(iii) मतिज्ञानी के औदयिक भाव के २० उत्तर भेद होते हैं?
(iv) अवधिज्ञानी के चार ज्ञान रूप भाव नहीं होते हैं?
(v) ज्ञान मार्गणा के पाँच भेदों में मिथ्यादर्शन रूप भाव नहीं होता है।

३. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) मन:पर्ययज्ञान के साथ क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव कितने गुणस्थान में होता है?
(ii) अवधिज्ञान में कितने औदयिक भाव नहीं होते हैं?
(iii) कुमतिज्ञान में कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?
(iv) कितने क्षायिक भाव मति आदि पाँचों ज्ञानों में होते हैं?
(v) मति श्रुतज्ञान के बराबर भाव किस ज्ञान रूप भाव में होते हैं?

४. रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए -

(i) मतिज्ञान में ……………… लेश्या ……………… औपशमिक तथा ……………… क्षायिक भाव होते हैं।

(ii) मन:पर्ययज्ञान में ……………… क्षायोपशमिकज्ञान ……………… अज्ञान तथा ……………… गति रूप भाव नहीं होते हैं।

(iii) कुमति-कुश्रुत ज्ञान में ……………… औदयिक ……………… पारिणामिक तथा ……………… लिङ्ग रूप भाव होते हैं।

(iv) केवलज्ञान में ……………… क्षायिक ……………… औदयिक तथा ……………… पारिणामिक भाव होते हैं।

(v) ज्ञान मार्गणा के सभी भेदों में ……………… औदयिक ……………… क्षायोपशमिक तथा ……………… औपशमिक भाव होते हैं।

५. सही जोड़ियाँ बनाइये -

	अ		ब
(i)	मतिज्ञान		३ ज्ञान
(ii)	१२ क्षायोपशमिक भाव	-	औदयिक के २१ भाव
(iii)	३ औदयिक भाव	-	२८ भाव
(iv)	३ कुज्ञान	-	१४ भाव
(v)	केवलज्ञान	-	३८ भाव
(vi)	७ ज्ञान रूप स्थान	-	अवधिज्ञान
(vii)	प्रथमोपशम औपशमिक सम्यक्त्व	-	१५ भाव
(viii)	मन:पर्ययज्ञान	-	केवलज्ञान

– उत्तरमाला –

१. (i) अ (ii) अ (iii) स (iv) द (v) स।

२. (i) हाँ (ii) ना (iii) हाँ (iv) हाँ (v) हाँ

३. (i) ७ (ii) १ (iii) आठ (iv) दो (v) अवधिज्ञान (रूप भाव में)।

४. (i) ६ २ २ (ii) ३ ३ ३ (iii) २१ ३ ३ (iv) ९ ३ २ (v) ३ ० ०

५. (i) ३८ भाव (ii) अवधिज्ञान (iii) केवलज्ञान
(iv) औदयिक भाव के २१ (v) १४ भाव (vi) १५ भाव
(vii) ३ ज्ञान (viii) २८ भाव

संयम मार्गणा

प्रश्न : संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : • सम्यक् प्रकार के यम को संयम कहते हैं। **(ध.७/७)** • संयमन करने को संयम कहते हैं। **(ध.१/१४५)**

- व्रतों का धारण करना, समिति का पालन, कषायों का निग्रह, दण्डों का त्याग तथा पंचेन्द्रिय पर जय प्राप्त करना संयम है। **(गो.जी. ४६५)**
- चारित्र मोहनीय कर्म का उपशम, क्षय या क्षयोपशम होने पर संयम होता है। **(त.सा.२/८४)**
- इन्द्रियों के विषय से वैराग्य होना प्राणियों की हिंसा से बचना-बचाना तथा समिति रूप प्रवर्तना यह संयम है। **(त.सा. ६/१८)**

प्रश्न : संयम कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : संयम **दो** प्रकार का होता है -

(१) देश संयम (२) सकल संयम।

(१) इन्द्रिय संयम (२) प्राणी संयम।

(१) अपहृत संयम (२) उपेक्षा संयम।

अथवा - संयम (चारित्र) **तीन** प्रकार का है -

(१) औपशमिक (२) क्षायिक (३) क्षायोपशमिक। **(ध.६/२८१)**

संयम **पाँच** प्रकार का है -

(१) सामायिक संयम (२) छेदोपस्थापना संयम (३) परिहार विशुद्धि संयम (४) सूक्ष्म साम्पराय संयम (५) यथाख्यात संयम।

- विविध निर्वृत्ति रूप परिणामों की दृष्टि से संख्यात, असंख्यात और अनन्त विकल्प रूप संयम होता है। **(रा.वा.९)**

प्रश्न : देश संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : हिंसा असत्य चोरी कुशील और परिग्रह इन पाँच पापों का एकदेश त्याग करना देशसंयम है। **(र.क.श्रा.५०)** गृहस्थों का चारित्र उपासकाध्ययन आदि ग्रन्थों में कथित मार्ग से पंचम गुणस्थान के योग्य दान शील पूजा उपवास आदि रूप होता है अथवा दार्शनिक आदि ग्यारह स्थानों रूप होता है। **(पं.का.ता.१६०)**

प्रश्न : सकल संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : समस्त प्रकार के परिग्रह से रहित मुनियों का सकल चारित्र है। **(र.क.श्रा.५०)** मुनियों का चारित्र आचारांग आदि चारित्र विषयक ग्रन्थों में कथित मार्ग से प्रमत्त और अप्रमत्त इन दो गुणस्थानों के योग्य पंच महाव्रत, पंचसमिति, त्रिगुप्ति, छह आवश्यक आदि रूप होता है यही सकल संयम है। **(पं.का.ता.१६०)**

प्रश्न : उपेक्षा संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : देश और काल के विधान को समझने वाले स्वाभाविक रूप से शरीर-विरक्त और तीन गुप्तियों के धारक व्यक्ति के राग और द्वेष रूप चित्तवृत्ति का न होना उपेक्षा संयम है। **(रा.वा.९/६)**

प्रश्न : अपहृत संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : उत्कृष्ट मध्यम एवं जघन्य के भेद से यह (अपहृत संयम) तीन प्रकार का है-

- **उत्कृष्ट** - प्रासुक वसति और आहारमात्र है बाह्य साधन जिनके तथा स्वाधीन है ज्ञान और चारित्र रूप करण जिनके ऐसे साधु का व्याप्त जंतुओं के आने पर उनसे अपने को बचाकर संयम पालन करना उत्कृष्ट अपहृत संयम है।
- **मध्यम** - मृदु उपकरण से जन्तुओं का परिहार करना मध्यम अपहृत संयम है।
- **जघन्य** - अन्य उपकरणों की इच्छा रखने वाले के जघन्य अपहृत संयम है। **(रा.वा.९/६)**

प्रश्न : इन्द्रिय और प्राणी संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : शब्द रस आदि जो इन्द्रिय के विषय हैं उनमें राग का अभाव होना इन्द्रिय संयम है। एकेन्द्रिय आदि प्राणियों की पीड़ा का परिहार करना प्राणी संयम है। **(रा.वा.९/६)**

प्रश्न : संयम मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : संयम में जीवों की खोज करना संयम मार्गणा है। इसके सात भेद हैं -
(१) सामायिक संयम (२) छेदोपस्थापना संयम (३) परिहारविशुद्धि संयम (४) सूक्ष्म साम्पराय संयम (५) यथाख्यात (६) संयमासंयम (७) असंयम

प्रश्न : संयम मार्गणा में संयम, संयमासंयम और असंयम तीनों का ग्रहण है इसलिए इस मार्गणा का नाम संयम मार्गणा कहना युक्त नहीं है।

उत्तर : नहीं, क्योंकि आम्रवन या निम्बवन इन नामों के समान प्राधान्य पद का आश्रय लेकर संयमानुवाद से अर्थात् संयम मार्गणा यह व्यपदेश करना युक्तियुक्त हो जाता है। **(ध.४/२८७)** संयमी के अतिरिक्त असंयम स्वभाव के धारक जीव भी होते हैं। प्रत्येक मार्गणा में संसार के जीवों की गणना हो जानी चाहिए। ऐसा मार्गणा के उपदेशक भगवान का अभिप्राय है इसलिए संयम विरुद्ध असंयम स्वभाव का भी ग्रहण संयम मार्गणा में कहना युक्त है। **(त.सा.२/८५)**

कर्म विवक्षा

क्र.	संयम	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	**सामायिक**	उपशम	प्रमत्तविरत	क्षायोपशमिक	
२.	**छेदोपस्थापन**	क्षय	अप्रमत्तविरत	क्षायोपशमिक	
		क्षयोपशम	अपूर्वकरण	औपशमिक क्षायिक	उपशम सम्यग्दृष्टि के उपशम भाव ही
			अनिवृत्तिकरण	,, ,,	होता है।
३.	**परिहारविशुद्धि**	क्षयोपशम	प्रमत्तसंयम	क्षायोपशमिक	उपशम सम्यग्दृष्टि नहीं होते हैं।
			अप्रमत्तसंयम	क्षायोपशमिक	
४.	**सूक्ष्मसाम्पराय**	उपशम	सूक्ष्मसाम्पराय	औपशमिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा दोनों
		क्षय		क्षायिक	भाव होते हैं।
५.	**यथाख्यात**	उपशम	उपशान्तकषाय	औपशमिक	
		क्षय	क्षीणकषाय वीत.	क्षायिक	
			सयोग केवली	क्षायिक	
			अयोग केवली	क्षायिक	
६.	**संयमासंयम**	क्षयोपशम	संयमासंयम	क्षायोपशमिक	मनुष्य एवं तिर्यःा दोनों गति में होता है।
७.	**असंयम**	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	
			अविरति सम्यक्त्व	औप.क्षायि.	तिर्यःागति में क्षायिक भाव भोगभूमि की
				क्षायोपशमिक	अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : कितने संयमों के सभी गुणस्थान केवल एक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : दो संयमों के सभी गुणस्थान केवल एक भाव रूप होते हैं -

(१) परिहारविशुद्धि संयम (२) संयमासंयम

इन दोनों संयमों के सभी गुणस्थान केवल क्षयोपशम रूप ही होते हैं।

प्रश्न : संयम मार्गणा के किस भेद का कौनसा गुणस्थान तीन भाव रूप होता है?

उत्तर : संयम मार्गणा के असंयम का चौथा गुणस्थान तीन भाव रूप होता है -

इसमें औपशमिक क्षायिक एवं क्षायोपशमिक ये तीन भाव होते हैं।

प्रश्न : संयम मार्गणा के कितने भेदों के सभी गुणस्थान अलग-अलग भाव रूप होते हैं?

उत्तर : संयम मार्गणा के केवल एक भेद के सभी गुणस्थान अलग-अलग भाव रूप होते हैं-

- असंयम का मिथ्यात्व गुणस्थान - औदयिक भाव रूप
- सासादनसम्यक्त्व गुणस्थान - पारिणामिक भाव रूप

- सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान - क्षायोपशमिक भाव रूप
- अविरतसम्यक्त्व गुणस्थान - औपशमिक क्षायिक क्षायोपशमिक भाव रूप
- अविरतसम्यक्त्व गुणस्थान में औपशमिक एवं क्षायिक भाव की अपेक्षा भिन्नता पाई जाती है।

प्रश्न : किस संयम में एक ही गुणस्थान है लेकिन वह दो भाव रूप होता है?

उत्तर : सूक्ष्मसाम्पराय संयम में केवल सूक्ष्मसाम्पराय नामका दसवाँ गुणस्थान होता है वह औपशमिक एवं क्षायिक दो भाव रूप होता है।

प्रश्न : संयम मार्गणा के कितने भेदों के गुणस्थान तीन भाव रूप होते हैं?

उत्तर : संयम मार्गणा के तीन भेदों के गुणस्थान तीन भाव रूप होते हैं - सामायिक संयम, छेदोपस्थापना संयम, असंयम।

सामायिक-छेदोपस्थापना संयम छठे-सातवें गुणस्थान की अपेक्षा क्षायोपशमिक भाव रूप एवं आठवें नवें गुणस्थान की अपेक्षा औपशमिक एवं क्षायिक भाव रूप है।

प्रश्न : सामायिक-छेदोपस्थापना शुद्धि संयतों के क्षयोपशम लब्धि भले ही हो, किन्तु उनके औपशमिक और क्षायिक लब्धि नहीं हो सकती, क्योंकि अनिवृत्तिकरण गुणस्थान से ऊपर इन सयंतों का अभाव पाया जाता है और नीचे के गुणस्थानों में चारित्र मोहनीय की उपशामना एवं क्षपणा नहीं होती है?

उत्तर : नहीं, क्योंकि क्षपण व उपशमन सम्बन्धी अनिवृत्तिकरण गुणस्थानों में भी लोभ संज्वलन से अतिरिक्त अशेष चारित्र मोहनीय के क्षपण व उपशमन के देखे जाने से वहाँ क्षायिक व औपशमिक लब्धियों की उपलब्धि संभव है। अथवा क्षपक और उपशामक सम्बन्धी अपूर्वकरण के प्रथम समय से लेकर ऊपर सर्वत्र क्षायिक और औपशमिक संयम लब्धियाँ हैं ही, क्योंकि उक्त गुणस्थान के प्रारम्भ होने के प्रथम समय से लेकर थोड़े-थोड़े क्षपण और उपशमन रूप कार्य की निष्पत्ति देखी जाती है। यदि प्रत्येक समय कार्य की निष्पत्ति न हो तो अन्तिम समय में भी कार्य पूरा होता हुआ नहीं पाया जा सकता। **(ध.७/९३)**

प्रश्न : एक ही चारित्र के औपशमिकादि तीन भाव कैसे होते है?

उत्तर : जिस प्रकार एक चित्र पतंग अर्थात् बहुवर्ण पक्षी के बहुत से वर्ण देखे जाते हैं, उसी प्रकार एक ही चारित्र नाना भावों से युक्त हो सकता है। **(ध.७/९४)**

प्रश्न : दर्शन मोहनीय कर्म के उपशम क्षय और क्षयोपशम का आश्रय करके संयतासंयतादि-कों के औपशमिकादि भाव क्यों नहीं बताये गये हैं?

उत्तर : नहीं, क्योंकि, दर्शनमोहनीय कर्म के उपशमादिक से संयमासंयमादि भावों की उत्पत्ति नहीं होती। दूसरे, यहाँ पर सम्यक्त्व विषयक पृच्छा भी नहीं है, जिससे कि दर्शनमोहनीय निमित्तक औपशमिकादि भावों की अपेक्षा संयतासंयतादिक के औपशमिकादि भावों का व्यपदेश हो सके। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि उस प्रकार की व्यवस्था नहीं पाई जाती है।

(ध.५/२०३-४)

स्थान विवेचन

प्रश्न : संयम मार्गणा के कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : संयम मार्गणा के ७ स्थान होते हैं -

(१) १ संयम रूप (२) २ संयम रूप (३) ३ संयम रूप (४) ४ संयम रूप (५) ५ संयम रूप (६) ६ संयम रूप (७) ७ संयम रूप।

प्रश्न : इन स्थानों में किस-किस संयम को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में संयम -

१ संयम रूप स्थान में - सूक्ष्म साम्पराय या यथाख्यातसंयम या संयमासंयम या असंयम

२ संयम रूप स्थान में - सामायिक - छेदोपस्थापना या संयमासंयम और असंयम

३ संयम रूप स्थान में - सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि

५ संयम रूप स्थान में - सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात

७ संयम रूप स्थान में - सामा., छेदो., परि., सूक्ष्म सांपराय, यथा., संयमासंयम, असंयम।

प्रश्न : उपर्युक्त स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : उपर्युक्त स्थानों में भाव -

- **१ संयम रूप स्थान में -** १९ भाव

  क्षायिक के ७ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

  क्षायोपशमिक के ४ - ३ अज्ञान १ संयमासंयम

  औदयिक के ७ - २ गति (नरक देव) १ मिथ्या. १ असं. ३ ले. (अशुभ)

  पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

- २ संयमरूप स्थान में - १ भाव तिर्यःगति

- ३ संयम रूप स्थान में - १ भाव क्षायोपशमिक चारित्र
- ४ संयम रूप स्थान में ५ भाव - औपशमिक चारित्र, क्षायिक चारित्र, मन:पर्ययज्ञान २ लि. (स्त्री.नपुं.)
- ५ संयम रूप स्थान में ७ भाव - क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, ३ कषाय (को.मा.मा.) १ लि. (पुरु.) २ ले. (पीत पद्म)
- ६ संयम रूप स्थान में २ भाव - औपशमिक सम्यक्त्व, लोभ कषाय (यथाख्यात संयम बिना)
- ७ संयम रूप स्थान में १८ भाव - क्षायिक सम्यक्त्व, ३ ज्ञान (म.श्रु.अव.) ३ दर्श. ५ ल. १ गति (मनु.) १ असि. १ ले. (शु.) जीवत्व, भव्यत्व।

नोट : यहाँ १,२,३,५ एवं ७ संयम रूप स्थानों की अपेक्षा कथन किया जायेगा।

प्रश्न : इन संयम स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन संयम स्थानों के स्वामी -

- १ संयम रूप स्थान के - क्रमश: सूक्ष्मसाम्परायगुणस्थानवर्ती, उपशान्तकषायवीतराग छद्मस्थ से लेकर अयोगकेवलीजिन, संयमासंयम गुणस्थानवर्ती जीव, मिथ्यात्व से अविरतगुणस्थान पर्यन्त समस्त जीव
- २ संयम रूप स्थान के - क्रमश: अपूर्वकरण एवं अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती तथा तिर्यःागति के जीव
- ३ संयम रूप स्थान के - छठे-सातवें गुणस्थानवर्ती
- ५ संयम रूप स्थान के - मुनिराज
- ७ संयम रूप स्थान के - मनुष्यगति के जीव

विशेष :

(१) मन:पर्ययज्ञानी के सामायिक-छेदो संयम रूप स्थान छठे-सातवें गुणस्थान में भी बनता है।

(२) आहारक ऋद्धि आदि ऋद्धिधारी मुनिराज तथा विशेष मुनिराजों के जिनके केवल पुरुषवेद ही होता है। उनकी अपेक्षा भी छठे-सातवें गुणस्थान में सामा. छेदो. संयम रूप दो संयम का स्थान बनता है।

(३) क्षायोपशमिक चारित्र में स्त्री एवं नपुंसकवेदी की अपेक्षा सामायिक-छेदोपस्थापना रूप दो संयम का स्थान भी बन सकता है।

(४) ३ कषायों में सामा. छेदो. परि. संय. असं. रूप पाँच संयम का स्थान भी बन सकता है।

(५) उपशमसम्यक्त्व लोभ कषाय में यथाख्यातसंयम बिना ६ संयम रूप स्थान बन सकता है।

(६) ४ संयम रूप स्थान में - सामा. छेदो. सूक्ष्म. यथा. रूप स्थान उपशम एवं क्षपकश्रेणी की अपेक्षा बनता है।

(७) सामा. छेदो. संयमा. असं. रूप स्थान स्त्रीवेदी एवं नपुंसकवेदी की अपेक्षा बन सकते हैं।

(८) सामा. छेदो. परि. संय. असं. रूप भी ५ संयम का स्थान बनता है। इसके स्वामी पुरुषवेदी होते हैं।

(९) सामा. छेदो. सूक्ष्म. यथा. संय. और असंय. रूप तथा सामा. छेदो. परि. सूक्ष्म. संय. असं. रूप छह संयम का स्थान भी होता है।

जिनको उपशम श्रेणी चढ़ते समय दसवें गुणस्थान में मरण हो जाता है उनके यथाख्यात संयम नहीं होने से छहसंयम रूप स्थान बनता है।

और भी उत्तर मार्गणाओं की अपेक्षा स्थान बना लेना चाहिए।

प्रश्न : कितने स्थानों में चार भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : संयम मार्गणा के दो स्थानों में चार भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

- १ संयम रूप स्थान में
- यथाख्यात संयम में-क्षायिक भाव
- संयमासंयम में-क्षायोपशमिक भाव
- असंयम में-औदयिक और पारिणामिक

- ७ संयम रूप स्थान में -
- क्षायिक भाव का १-सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ११-३ ज्ञा. ३दर्श. ५ल.
- औदयिक के ४-१ग. १ अज्ञान १असि. १लेश्या
- पारिणामिक के २-जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : कितने स्थानों में औदयिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : ६ स्थानों में औदयिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

- १ संयम रूप स्थान में ७-२ गति (नर.दे.) १ मिथ्या. १असं. ३ले. (अशु.)
- २ संयमरूप स्थान में १ - तिर्यःगति
- ४ संयम रूप स्थान में २ - स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग
- ५ संयम रूप स्थान में ६ - ३ कषाय (लोभ बिना) १ लिङ्ग (पुरु.) २ लेश्या (पी.प.)
- ६ संयम रूप स्थान में १ - लोभ
- ७ संयम रूप स्थान में ४ - १ गति (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

प्रश्न : कितने स्थानों में लेश्या रूप भाव होता है?

उत्तर : तीन स्थानों में लेश्या रूप भाव होता है -

- १ संयम रूप स्थान में - कृष्ण नील कापोत लेश्या
- ५ संयम रूप स्थान में - पीत एवं पद्म लेश्या
- ७ संयम रूप स्थान में - शुक्ल लेश्या

प्रश्न : ६ संयम रूप स्थान में कितने भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : ६ संयम रूप स्थान में दो भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

(१) औपशमिक (२) औदयिक

प्रश्न : कितने संयम स्थानों में ज्ञानावरणकर्म की अपेक्षा से होने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : तीन संयम स्थानों में ज्ञानावरण कर्म की अपेक्षा से होने वाले भाव होते हैं -

- १ संयम रूप स्थान में - १ क्षायिक ज्ञान एवं ३ अज्ञान (कुमति कुश्रुत कुअवधि ज्ञान)
- ४ संयम रूप स्थान में - १ मन:पर्ययज्ञान
- ७ संयम रूप स्थान में - ३ ज्ञान एवं १ अज्ञान (औदयिक)

प्रश्न : कितने संयमस्थान केवल दो गुणस्थानों में होते हैं?

उत्तर : २ संयमस्थान केवल दो गुणस्थानों में होते हैं -

- २ संयमरूप स्थान (सामायिक, छेदोपस्थापना) - आठवें-नवें गुणस्थान में
- ३ संयम रूप स्थान (सामा. छेदो. परि.) छठे सातवें गुणस्थान में

प्रश्न : कितने संयमस्थान केवल मनुष्यों के ही होते हैं?

उत्तर : ३ संयमस्थान केवल मनुष्यों के ही होते हैं -

(१) ३ संयम रूप स्थान (सामा. छेदो. परि.)

(२) ५ संयम रूप स्थान (सामायिकादि)

(३) ७ संयम रूप स्थान (सामायिकादि सभी)

- एक संयम रूप स्थान में-सूक्ष्मसाम्पराय संयम रूप और यथाख्यात संयम रूप स्थान तथा
- दो संयम रूप स्थान में-सामायिक और छेदोपस्थापन रूप स्थान भी मनुष्यों के ही होते हैं।

भावों में संयमस्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	२	१ संय. २ संय.	चारों ही प्रकार से १ संयम रूप स्थान होता है।
	चारित्र	२	१ संय. २ संय.	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	५	१ संय. २संय. ३संय. ५संय. ७संय.	
	चारित्र	२	१ संय. २ संय.	
	७ भाव	१	१ संय.	यथाख्यात संयम रूप स्थान होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	५	१ संय. २संय. ३संय. ५संय. ७संय.	
	मन:पर्ययज्ञान	२	१ संय. २ संय.	
	३ अज्ञान	१	१ संय.	असंयम रूप स्थान होता है।
	३ दर्शन	५	१ संय. २संय. ३संय. ५संय. ७संय.	
	५ लब्धि	५	१ संय. २संय. ३संय. ५संय. ७संय.	
	सम्यक्त्व	३	१ संय. २ संय. ३ संय.	
	चारित्र	१	३ संय.	
	संयमासंयम	१	१ संय.	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	१ संय.	असंयम रूप स्थान होता है।
	तिर्यःगति	२	१ संय. २ संय.	संयमासंयम एवं असंयम रूप स्थान
			होता है।	
	मनुष्यगति	५	१संय.२संय.३संय.५संय.७संय.	
	देवगति	१	१ संय.	
	३ कषाय	३	१ संय. २ संय. ३ संय.	
	लोभ कषाय	३	१ संय. २ संय. ३ संय.	
	स्त्रीलिङ्ग	२	१ संय. २ संय.	
	पुरुषलिङ्ग	३	१ संय. २ संय. ३ संय.	
	नपुंसक लिङ्ग	२	१ संय. २ संय.	
	मिथ्यादर्शन	१	१ संय.	
	अज्ञान	५	१संय.२संय.३संय.५संय.७संय.	
	असंयत	१	१ संय.	
	असिद्धत्व	५	१संय.२संय.३संय.५संय.७संय.	

	३ अशुभलेश्या	१	१ संय.	
	पीत-पद्म लेश्या	३	१ संय. २ संय. ३ संय.	तिर्यःगति की अपेक्षा २ संय. रूप स्थान होता है।
	शुक्ल लेश्या	५	१संय.२संय.३संय.५संय.७संय.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	५	१संय.२संय.३संय.५संय.७संय.	
	भव्यत्व	५	१संय.२संय.३संय.५संय.७संय.	
	अभव्यत्व	१	१ संय.	असंयम रूप स्थान होता है।

प्रश्न : कितने भावों में एक संयम रूप स्थान नहीं होता है?

उत्तर : केवल एक भाव में एक संयम रूप स्थान नहीं होता है -
क्षायोपशमिक चारित्र

प्रश्न : कितने भावों में चारों अपेक्षा एक संयम रूप स्थान होता है?

उत्तर : १६ भावों में चारों अपेक्षा एक संयम रूप स्थान होता है -

- औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ८ - ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ४ - १ गति (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : कितने भावों में २ संयम रूप स्थान चार गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : २ भावों में २ संयम रूप स्थान चार गुणस्थानों में होता है -
(१) स्त्री लिङ्ग (२) नपुंसकलिङ्ग
इनमें छठे गुणस्थान से नवें गुणस्थान तक सामायिक-छेदोपस्थापना रूप दो संयम का स्थान होता है।

प्रश्न : कितने भावों में केवल एक संयम रूप स्थान होता है -

उत्तर : इन भावों में केवल एक संयम रूप स्थान होता है -

- क्षायिक के ७ - ज्ञान, दर्शन दान.....
- क्षायोपशमिक के ५-३ ज्ञान (१ संयमरूप) १ चारित्र (तीन संयम रूप) १ संयमासंयम (दो संयम रूप)
- औदयिक के ७-२ गति (नर.दे.) १ मिथ्या. १ असं. ३ ले. (अशु.) इन सबमें १ असंयम रूप स्थान होता है।
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व (१ संय.)

प्रश्न : मनुष्यगति रूप भाव में संयमस्थानों की प्ररूपणा किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : मनुष्यगति रूप भाव में संयमस्थानों की प्ररूपणा -

- कर्मभूमिया मनुष्यों के - सात संयम रूप स्थान
- निर्वृत्यपर्याप्तक मनुष्यों के - २ संयम रूप (सामा. छेदो.) छठे गुणस्थान की अपेक्षा, १ संयम रूप (असंयम या यथाख्यात संय.) यहाँ असंयम पहले दूसरे एवं चौथे गुणस्थान की अपेक्षा। यथाख्यात संयम तेरहवें गुणस्थान में समुद्घात की अपेक्षा, लब्ध्यपर्याप्त मनुष्यों के १ असंयम रूप स्थान ही होता है।

प्रश्न : कितने औदयिक भावों में ७ संयमरूप स्थान होते हैं?

उत्तर : ४ औदयिक भावों में ७ संयम रूप स्थान होते हैं -

- १ गति - मनुष्य
- १ असिद्धत्व
- १ - अज्ञान
- १ शुक्ल लेश्या

प्रश्न : कितने भावों में तीन संयम स्थान होते हैं?

उत्तर : ८ भावों में तीन संयम स्थान होते हैं -

- क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
- ४ कषाय (क्रो.मा.मा.लो.)
- १ लिङ्ग (पुरुष)
- २ लेश्या (पीत-पद्म)

प्रश्न : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में बराबर संयमस्थान होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव के सभी उत्तर भेदों में बराबर संयम स्थान होते हैं -

औपशमिक भाव

इसके दोनों ही उत्तर भेदों में १ एवं दो संयम रूप दो संयमस्थान होते हैं।

प्रश्न : कितने भावों में असंयम एवं संयमासंयम रूप दो संयम के स्थान ही होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव में असंयम एवं संयमासंयम रूप दो संयम के स्थान होते हैं -

(१) तिर्यःागति

प्रश्न : क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में ४ संयम रूप स्थान किस-किस अपेक्षा होता है?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में ४ संयम रूप स्थान दो अपेक्षा से होता है -

(१) सामायिक छेदोपस्थापना संयमासंयम असंयम

(२) सामायिक छेदोपस्थापना सूक्ष्मसाम्पराय यथाख्यात

भावों में संयम

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	६	सा. छे. सू. यथा. संय. असं.	परिहारविशुद्धि संयम नहीं है।
	चारित्र	४	सा. छेदो. सू. यथा.	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	७	सा. छे. परि. सूक्ष्म. यथा. संय. असं.	
	चारित्र	४	सा. छे. सूक्ष्म. यथा.	आठवें गुणस्थान से होता है।
	ज्ञानादि ७	१	यथाख्यातसंयम	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	७	सा. छे. परि. सू. यथा. संय. असं.	
	मन:पर्ययज्ञान	४	सा. छे. सू. यथा	परिहारविशुद्धि संयमा. एवं असंयम नहीं होता है।
	३ अज्ञान	१	असंयम	
	३ दर्शन	७	सा. छे. परि. सू. यथा. संय. असं.	
	५ लब्धि	७	सा. छे. परि. सू. यथा. संय. असं.	
	सम्यक्त्व	५	सा. छे. परि. संय. असं.	श्रेणी में नहीं होता है इसलिए सूक्ष्म. एवं यथा.संयम नहीं होते हैं।
	चारित्र	३	सा. छे. परि.	
	संयमासंयम	१	संयमासंयम	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	असंयम	
	तिर्यःागति	२	संयमासंयम असंयम	संयमासंयम कर्मभूमि की अपेक्षा होता है।
	मनुष्यगति	७	सा. छे. परि. सू. य. संय. असं.	
	देवगति	१	असंयम	
	क्रोध,मान,माया	५	सा. छे. परि. संय. असं.	
	लोभ	६	सा. छे. परि. सू. संय. असं.	दसवें गुणस्थान तक होने से सूक्ष्म.भी होता है।
	स्त्रीलिङ्ग	४	सा. छे. संय. असं.	नवें गुण. तक होता है इसलिए सूक्ष्म. एवं यथा.संय. नहीं है।
	पुरुषलिङ्ग	५	सा. छे. परि. संय. असं.	नवें गुण. तक होता है इसलिए सूक्ष्म. एवं यथा. संयम नहीं है।
	नपुंसकलिङ्ग	४	सा. छे. संय. असं.	नवें गुण. तक होता है इसलिए सूक्ष्म. एवं यथा. संयम नहीं है।
	मिथ्यादर्शन	१	असंयम	
	अज्ञान	७	सा. छे. परि. सू. यथा. संय. असं.	

	असंयत	१	असंयम	
	असिद्धत्व	७	सा. छे. परि. सू. यथा. संय. अंस.	
	३ अशुभलेश्या	१	असंयम	
	पीत-पद्म लेश्या	५	सा. छे. परि. संय. असं.	सातवें गुण. तक ही होती हैं इसलिए शेष संयम नहीं है।
	शुक्ल लेश्या	७	सा. छे. परि. सू. यथा. संय. असं.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	७	सा. छे. परि. सू. यथा. संय. असं.	
	भव्यत्व	७	सा. छे. परि. सू. यथा. संय. असं.	
	अभव्यत्व	१	असंयम	केवल पहले गुणस्थान में होता है।

प्रश्न : कितने क्षायोपशमिक भावों में सातों संयम होते हैं?

उत्तर : ११ क्षायोपशमिक भावों में सातों संयम होते हैं -

- ३ ज्ञान - मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान
- ३ दर्शन - चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन अवधिदर्शन
- ५ लब्धि - दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

प्रश्न : कितने भावों में संयम मार्गणा का केवल एक भेद होता है?

उत्तर : १९ भावों में संयम मार्गणा का केवल एक भेद होता है -

- क्षायिक के ७ - ज्ञान दर्शनादि - यथाख्यात संयम
- क्षायोपशमिक के ४ - मति अज्ञान, श्रुताज्ञान, विभंगावधिज्ञान-असंयम, संयमासंयम।
- औदयिक के ७ - नरकगति, देवगति, मिथ्यादर्शन, असंयत, ३ अशुभलेश्या- असंयम।
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व - असंयम

प्रश्न : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में यथाख्यात संयम होता है?

उत्तर : दो भावों के सभी उत्तर भेदों में यथाख्यात संयम होता है - औपशमिक, क्षायिक औपशमिक सम्यक्त्व में द्वितीयोपशम को ग्रहण करना चाहिए।

प्रश्न : कितने भावों में संयमासंयम भी होता है?

उत्तर : ३० उत्तर भावों में संयमासंयम भी होता है -

- औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

- क्षायोपशमिक के १२-३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के १४ - २ गति (म.ति.) ४ कषा. ३ लिङ्ग १ अज्ञा. १ असिद्ध. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : कितने उत्तर भावों में संयम मार्गणा के चार भेद होते हैं?

उत्तर : ५ उत्तर भावों में संयम मार्गणा के चार भेद होते हैं -

- औपशमिक भाव का १ - चारित्र (सा.छे.सू.यथा.)
- क्षायिक भाव का १ - चारित्र (सा.छे.सू.यथा.)
- क्षायोपशमिक का १ - मन:पर्ययज्ञान (सा.छे.सू.यथा.)
- औदयिक के २ - स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग (सा.छे.संय.असं.)

प्रश्न : कितने उत्तर भावों में परिहार विशुद्धि संयम नहीं होता है?

उत्तर : २६ उत्तर भावों में परिहार विशुद्धि संयम नहीं होता है -

- औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व के बिना
- क्षायोपशमिक के ५-१ ज्ञा. (मन:,) ३ अज्ञान १ संयमासंयम
- औदयिक के १०-३ गति (न.ति.दे.) २ लि. (स्त्री.नपुं.) १ मिथ्या. १ असं. ३ ले. (अशुभ)
- पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न : औदयिक भाव के कितने भेदों में संयममार्गणा के ५ भेद होते हैं?

उत्तर : औदयिक भाव के ६ भेदों में संयममार्गणा के ५ भेद होते हैं -

- ३ कषाय - को.मा.माया - सा.छे.परि.संय.असंयम
- १ लिङ्ग - पुरुषलिङ्ग - सा.छे.परि.संय.असंयम
- २ लेश्या - पीत. पद्म - सा.छे.परि.संय.असंयम

सामायिक-छेदोपस्थापना

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व	
			चारित्र	आठवें नवें गुणस्थान में ही होता है।
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व छठे गुण. से नवें
			चारित्र	गुण. तक होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१४	४ ज्ञान-मति.श्रुत.अवधि.मन.	
			३ दर्शन-चक्षु.अचक्षु.अवधि.	
			५ लब्धि-दान लाभ भोग उपभोग वीर्य	
			१ - सम्यक्त्व	छठे सातवें गुणस्थान में ही होता है।
			१ - चारित्र	
४.	**औदयिक**	१३	१ गति-मनुष्य	
			४ कषाय-क्रो.मा.मा.लो.	
			३ लिङ्ग-स्त्री. पुरुष.नपुंसक.	
			१ - अज्ञान	
			१ - असिद्धत्व	
			३ लेश्या - पीत पद्म शुक्ल	आठवें नवें गुणस्थान में शुक्ल लेश्या ही होती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व	
			भव्यत्व	

प्रश्न : सामायिक संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : • मैं सर्व सावद्य योग से विरत हूँ इस प्रकार से समस्त सावद्य योग से विरत होने का नाम सामायिक शुद्धि संयम है। **(ध.१/३७२)**

- सम शब्द का अर्थ अभेद है और अय का अर्थ बुद्धि की प्राप्ति है। जहाँ अभेद रूप से पाँचों पापों के त्याग की बुद्धि होती है वह सामायिक संयम है।
- जहाँ पर बुद्धिमान पुरुष मन वचन काय की शुद्धता पूर्वक समस्त सावद्य रूप योगों का सर्वथा त्याग कर देते हैं तथा निन्दा-स्तुति में, शत्रु-मित्र में, रत्न-पाषाण में और सुख-दुःख आदि के संयोग में समता धारण करते हैं उसको सामायिक संयम कहते हैं। **(मू.प्र.२९७१-७२)**

सभी पाप क्रियाओं का अभेद रूप से सदा के लिए अथवा जीवन भर के लिए त्याग करना सामायिक संयम है **(त.सा.६/४५)**

प्रश्न : छेदोपस्थापना संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : उस एक व्रत के छेद अर्थात् दो-तीन आदि के भेद उपस्थापन करने को अर्थात् व्रत के आरोपण करने को छेदोपस्थान शुद्धि संयम कहते हैं। **(ध.१/३७०)**

जहाँ पर हिंसा चोरी इत्यादि विशेष रूप से भेद पूर्वक पाप क्रिया का त्याग किया जाता है और व्रत भंग हो जाने पर उसकी शुद्धि की जाती है, उसे छेदोपस्थापना संयम कहते हैं। **(त.सा.२/४६)**

हिंसादि का त्याग कर जो आत्मा को स्थिर करता है उसे दूसरा छेदोपस्थापना संयम कहते हैं। **(यो.सा.१०१)**

पाँच महाव्रत पाँच समिति तीन गुप्ति और (पंचेन्द्रिय) विषयों में लगे दोष का छेद अर्थात् प्रायश्चित्त करना छेदोपस्थापना संयम है। **(द्र.सं.टी. प्रभा.)**

प्रश्न : सामायिक-छेदोपस्थापना संयम में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सामायिक छेदोपस्थापना संयम में ३३ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायोपशमिक के १४-४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
- औदयिक के १३-१ गति (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ लेश्या (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व।

प्रश्न : क्या ऐसे कोई सामायिक संयम वाले हैं जिनके ज्ञान मार्गणा के तीन भेद होते हैं?

उत्तर : हाँ, ऐसे सामायिक संयम वाले भी हैं, जिनके ज्ञान मार्गणा के तीन भेद होते हैं -

(१) स्त्रीवेद एवं नपुंसक वेद वाले (२) प्रथमोपशम सम्यग्दृष्टि (३) जिनको अवधिज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है (४) जिनको मन:पर्ययज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है (५) आहारकऋद्धि वाले मुनिराज

नोट : इनके मति, श्रुत, अवधिज्ञान होता है एवं जिनको अवधिज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है उनके मति श्रुत एवं मन:पर्ययज्ञान रूप तीन ज्ञान होते हैं।

प्रश्न : छेदोपस्थापना संयमी के औपशमिक भाव के साथ ज्ञान मार्गणा के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : छेदोपस्थापना संयमी के औपशमिक भाव के साथ ज्ञान मार्गणा के ४ भेद होते हैं -

- मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान।
- द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा मन:पर्ययज्ञान होता है।
- इसी प्रकार सामायिक संयम में भी जानना चाहिए।

प्रश्न : सामायिक-छेदोपस्थापना संयम में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : सामायिक छेदोपस्थापना संयम में चार गुणस्थान होते हैं -

१ प्रमत्तविरत २ अप्रमत्तविरत

३ अपूर्वकरण ४ अनिवृत्तिकरण

- इन गुणस्थानों में भावों का वर्णन प ोन्द्रिय के समान जानना चाहिए।

इनके निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में केवल एक छठा गुणस्थान होता है। इसमें २७ भाव होते हैं -

- क्षायिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १३-३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
- औदयिक के ११-१ गति (मनु.) ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व।

प्रश्न : सामायिक-छेदोपस्थापना संयम में कितने भाव मात्र दो गुणस्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : सामायिक छेदोपस्थापना संयम में ६ भाव मात्र दो गुणस्थानों में पाये जाते हैं -

- औपशमिक भाव का १ - चारित्र
- क्षायिक का १ - चारित्र
- क्षायोपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- औदयिक के २ - पीत-पद्म

प्रश्न : सामायिक संयम के साथ कौनसी कषाय रूप भाव सबसे ज्यादा गुणस्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : सामायिक संयम के साथ चारों कषाय रूप भाव चार गुणस्थानों में पाये जाते हैं। यद्यपि लोभ कषाय रूप भाव १० वें गुणस्थान में भी होता है लेकिन वहाँ सामायिक संयम नहीं होता है। इसी प्रकार छेदोपस्थापना संयम में जानना चाहिए।

परिहार विशुद्धि संयम

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	-	××	
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	
३.	**क्षायोपशमिक**	१३	३ ज्ञान-मति.श्रुत.अवधि. ३ दर्शन-चक्षु-अच.अव. ५ लब्धि-दान लाभ आदि १-सम्यक्त्व १-चारित्र	 विशिष्ट चारित्र वालों के ही होता है।
४.	**औदयिक**	११	१ गति-मनुष्य ४ कषाय-क्रोध मान माया लोभ १ लिङ्ग-पुरुष १ - अज्ञान १ - असिद्धत्व ३ लेश्या-पीत पद्म शुक्ल	कर्मभूमिया मनुष्यों के ही होता है। केवल संज्वलन कषाय होती है। कृष्ण नील कापोत लेश्या नहीं होती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : परिहारविशुद्धिसंयम किसे कहते हैं?

उत्तर : • जिनके हिंसा का परिहार ही प्रधान है, ऐसे शुद्धि प्राप्त संयतों के संयम को परिहार विशुद्धि संयम कहते हैं। **(ध.१/३७०)**

- मिथ्यात्वादि के परिहार से सम्यग्दर्शन की विशुद्धि होती है, उसे परिहार विशुद्धि कहते हैं। **(यो.सा.१०३)**
- मिथ्यात्व रागादि विकल्प मलों का प्रत्याख्यान अर्थात् त्याग करके विशेष रूप से जो आत्मशुद्धि अथवा निर्मलता उत्पन्न होती है, उसे परिहार विशुद्धि संयम कहते हैं। **(त.सा.६-४७)**

प्रश्न : परिहार विशुद्धि संयम में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : परिहार विशुद्धि संयम में २७ भाव होते हैं -

- क्षायिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १३-३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
- औदयिक के ११-१ ग. ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व।

प्रश्न : इस संयम में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इस संयम में दो गुणस्थान होते हैं - छठा, सातवाँ

इन दोनों में २७-२७ भाव होते हैं।

इसमें निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था नहीं होती है, क्योंकि छठे गुणस्थान में निर्वृत्यपर्याप्ति अवस्था आहारकमिश्र की अपेक्षा होती है लेकिन आहारक ऋद्धि एवं परिहार विशुद्धि संयम एक साथ नहीं होते इसलिए इसमें निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था नहीं पाई जाती है।

प्रश्न : क्या सभी छठे-सातवें गुणस्थान वालों के परिहारविशुद्धि संयम होता है?

उत्तर : नहीं, सभी छठे-सातवें गुणस्थान वालों के परिहारविशुद्धि संयम नहीं होता है, क्योंकि परिहारविशुद्धि संयम प्राप्त करने के लिए कुछ **विशेषताएँ** प्राप्त करना आवश्यक है -

१) जिसने तीस वर्ष तक घर में सुख पूर्वक जीवन व्यतीत किया हो,

२) उसके बाद दीक्षा लेकर वर्ष पृथक्त्व (३ से ९ वर्ष की अवधि तक) तीर्थंकर के पाद मूल में प्रत्याख्यान नामक पूर्व का अध्ययन किया हो।

३) जिसको जन्तुओं की उत्पत्ति-विनाश, स्थान, काल, परिमाण, जन्म योनि तथा द्रव्य के स्वभाव का ज्ञान हो।

४) जो अप्रमादी, महाशक्तिशाली परम निर्जरा करने वाला हो।

५) दुष्कर चर्या अनुष्ठान करने में तत्पर हो तथा

६) तीनों सन्ध्याकालों को छोड़कर प्रतिदिन दो कोस गमन करते हों, उन साधुओं के परिहार विशुद्धि संयम होता है। **(रा.वा.९/१८)**

नोट : परिहार विशुद्धि संयम का काल ३८ वर्ष कम एक पूर्वकोटि वर्ष कहा है। इससे लगता है कि वर्ष पृथक्त्व से आठ वर्ष लेना चाहिए।

कई आचार्य १६ वर्ष एवं २२ वर्षों से कम पूर्वकोटि वर्ष प्रमाण कहते हैं। **(ध.७/१६७)**

प्रश्न : परिहार विशुद्धि संयम में क्षायिक सम्यक्त्व के साथ कौन-कौन सा भाव नहीं होता है?

उत्तर : परिहार विशुद्धि संयम में क्षायिकसम्यक्त्व के साथ मात्र क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव नहीं होता है, क्योंकि एक समय में एक ही सम्यक्त्व होता है।

नोट : यह कथन छठे-सातवें गुणस्थान में परिहारविशुद्धि संयम के साथ पाये जाने वाले भावों की अपेक्षा जानना चाहिए, क्योंकि परिहार विशुद्धि संयम इन दो गुणस्थानों में ही होता है।

प्रश्न : परिहार विशुद्धि संयम एवं छठे गुणस्थान के भावों में क्या अन्तर है?

उत्तर : परिहार विशुद्धि संयम एवं छठे गुणस्थान के भावों में अन्तर

	परिहारविशुद्धि संयम	**छठा गुणस्थान**
• औपशमिकभाव	×	सम्यक्त्व
• क्षायोपशमिक	×	मन:पर्ययज्ञान
• औदयिक	पुरुषलिङ्ग	तीनों लिङ्ग

प्रश्न : क्या परिहारविशुद्धि संयम के साथ क्षायिक सम्यक्त्व हो तो उसी भव में मोक्ष जाता है?

उत्तर : नहीं, ऐसा कोई नियम नहीं है कि परिहारविशुद्धि संयम के साथ क्षायिक सम्यक्त्व हो तो वह उसी भव में मोक्ष जावे, क्योंकि क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव तीन-चार भव ले सकता है और परिहारविशुद्धि संयमी के भी उसी भव में मोक्ष जाने का नियम नहीं है।

प्रश्न : परिहार विशुद्धि संयम में उपशम सम्यक्त्व रूप भाव क्यों नहीं होता है?

उत्तर : परिहार विशुद्धि संयम में उपशम सम्यक्त्व रूप भाव नहीं होता है, क्योंकि तीस वर्ष के बिना परिहार विशुद्धि संयम का लेना संभव नहीं है और न उतने काल तक उपशम सम्यक्त्व रूप भाव का अवस्थान रहता है जिससे कि परिहार विशुद्धि संयम के साथ उपशम सम्यक्त्व रूप भाव उपलब्ध हो सके। दूसरी बात यह है कि परिहार विशुद्धि संयम को नहीं छोड़ने वाले जीव के उपशम श्रेणी पर चढ़ने के लिए दर्शन मोहनीय कर्म का उपशम होना भी संभव नहीं है जिससे कि उपशम श्रेणी में उपशम सम्यक्त्व रूप भाव और परिहार विशुद्धि संयम इन दोनों का संयोग बन सके। **(ध.५/३२७)**

सूक्ष्मसाम्पराय संयम

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	उपशम श्रेणी में ही होते हैं।
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	क्षपक श्रेणी में होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	४ ज्ञान-मति.श्रुत.अवधि.मनः. ३ दर्शन-चक्षु. अचक्षु.अवधि. ५ लब्धि-दान लाभ भोग....	
४.	**औदयिक**	५	१ गति-मनुष्य १ कषाय-लोभ १-अज्ञान १-असिद्धत्व १ लेश्या-शुक्ल	सूक्ष्म संज्वलन लोभ होता है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : सूक्ष्म साम्पराय संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : • साम्पराय कषाय को कहते हैं। जब अत्यन्त सूक्ष्म कषाय रह जाती है तब सामायिक या छेदोपस्थापना संयम की उस विशेष अवस्था का नाम सूक्ष्म साम्पराय शुद्धि संयम है। अथवा जिस संयम में कषाय अति सूक्ष्म हो वह सूक्ष्म साम्पराय संयम है। **(ध.१/३७१)** • सूक्ष्म लोभ में स्थित दसवें गुणस्थानवर्ती मुनिराज का जो आचरण है वह सूक्ष्मसाम्पराय संयम है। **(बृ.द्र.सं.१३ टी.)** • मोह कर्म का उपशमन या क्षपण करते हुए सूक्ष्म लोभ का वेदन करना सूक्ष्म साम्पराय संयम है।**(पं.सं.प्रा. १/१३२)** • सूक्ष्म अतीन्द्रिय निज शुद्धात्म अनुभव के बल से सूक्ष्म लोभ नामक साम्पराय कषाय का पूर्ण रूप से उपशमन या क्षपण जहाँ होता है सो सूक्ष्म साम्पराय संयम है। **(वृ.द्र.सं.टीका ३५)** • सम्पूर्ण कषायों को उपशांत अथवा क्षीण करते-करते जब थोड़ा सा सूक्ष्म लोभ उदय में शेष रह जाता है उस समय जो परिणामों में अधिक विशुद्धि प्राप्त होती है वह सूक्ष्म साम्पराय संयम है। **(त.सा. ६/४८)**

प्रश्न : सूक्ष्म साम्पराय संयम में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सूक्ष्म साम्पराय संयम में २३ भाव होते हैं -

- औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

- क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ५ - १ ग. १ कषा. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व अभव्यत्व

प्रश्न : सूक्ष्म साम्पराय संयमी के उपशम एवं क्षपक श्रेणी में भावों की अपेक्षा क्या अन्तर है?

उत्तर : सूक्ष्म साम्पराय संयमी के उपशम श्रेणी एवं क्षपक श्रेणी की अपेक्षा दो प्रकार से अन्तर है -

१) उपशम श्रेणी में औपशमिक एवं क्षायिक दोनों सम्यक्त्व रूप दोनों भाव हैं, क्षपक श्रेणी में क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव ही होता है।

२) उपशम श्रेणी में औपशमिक चारित्र और क्षपक श्रेणी में क्षायिक चारित्र रूप भाव होता है।

३) उपशम श्रेणी में २२ तथा क्षपक श्रेणी में २१ भाव होते हैं।

प्रश्न : क्या संज्वलन लोभ एवं सूक्ष्म साम्पराय संयमी के बराबर भाव होते हैं?

उत्तर : नहीं, संज्वलन लोभ एवं सूक्ष्म साम्पराय संयमी के बराबर भाव नहीं होते हैं क्योंकि संज्वलन लोभ कषाय छठे गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक होती है और सूक्ष्म साम्पराय संयम केवल दसवें गुणस्थान में ही पाया जाता है। सूक्ष्म साम्पराय संयम की अपेक्षा संज्वलन लोभकषाय में सात भाव अधिक होते हैं अर्थात् सूक्ष्म साम्पराय संयम में २३ भाव होते हैं जबकि संज्वलन लोभ कषाय में ३० भाव होते हैं।

संज्वलन लोभ में क्षायोपशमिक भाव के सम्यक्त्व एवं चारित्र तथा औदयिक भाव के ३ लिङ्ग एवं पीत-पद्म लेश्या रूप भाव भी होते हैं। सूक्ष्म साम्पराय संयम में ये भाव नहीं होते हैं।

प्रश्न : सूक्ष्म साम्पराय संयम में कषाय रूप भाव कैसा होता है?

उत्तर : इस संयम में अत्यन्त सूक्ष्म कषाय यानी दशम गुणस्थानवर्ती मुनिराज ने कषाय के विषांकुरों को खोंट दिया है। सूक्ष्म मोहनीय कर्म के बीज को भी नाश के मुख में धकेल दिया है ऐसा परम सूक्ष्म लोभ कषाय रूप भाव युक्त यह साधु है। यहाँ कषाय लोभाणुमात्र है। **(रा.वा. ९/१८)**

प्रश्न : सूक्ष्म साम्पराय संयम में कितने ज्ञान रूप भाव हो सकते हैं?

उत्तर : सूक्ष्म साम्पराय संयम में कम-से-कम २ ज्ञान रूप भाव हो सकते हैं -

(१) मतिज्ञान (२) श्रुतज्ञान

अधिक-से-अधिक ४ ज्ञान रूप भाव -

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान

प्रश्न : इस संयम में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इस संयम में केवल एक गुणस्थान होता है - सूक्ष्मसाम्पराय (दसवाँ)

इसमें निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।

प्रश्न : क्या ऐसे कोई सूक्ष्म साम्पराय संयमी हैं जिनके चार मूल भाव होते हैं?

उत्तर : हाँ, क्षपक श्रेणी वाले सूक्ष्म साम्पराय संयमी के चार मूल भाव होते हैं उनके औपशमिक भाव नहीं होता है, क्योंकि औपशमिक सम्यक्त्व के साथ क्षपक श्रेणी नहीं चढ़ सकता है।

जो औपशमिक सम्यग्दृष्टि उपशम श्रेणी चढ़ रहे हैं उनके क्षायिक भाव नहीं होने से चार ही मूल भाव होते हैं क्योंकि औपशमिक सम्यक्त्व के साथ क्षायिक चारित्र नहीं होता है।

यथाख्यात संयम

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व, चारित्र	केवल ग्यारहवें गुणस्थान में ही होता है।
२.	**क्षायिक**	९	ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य सम्यक्त्व चारित्र	ज्ञानादि सात भाव केवल तेरहवें/चौदहवें गुणस्थान में ही होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	४ ज्ञान-मति श्रुत अवधि. मन:... ३ दर्शन-चक्षु-अच. अव. ५ लब्धि	ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान में ही होते हैं।
४.	**औदयिक**	४	१ गति-मनुष्य	
			१ - अज्ञान	ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान में ही होता है।
			१ - असिद्धत्व	
			१ लेश्या-शुक्ल	ग्यारहवें से तेरहवें गुणस्थान तक होती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : यथाख्यात संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : चारित्र मोह कर्म का अत्यन्त क्षय या उपशम हो जाने पर आत्मा का स्वरूप जैसा बताया है वैसा स्वरूप ही यहाँ प्राप्त होता है, उसे यथाख्यात संयम कहते हैं। **(त.सा.६/४९)**

ग्यारहवें बारहवें तेरहवें चौदहवें गुणस्थानवर्ती मुनिराज का जो आचरण है वह यथाख्यात चारित्र है। **(वृ.द्र.सं.१३ टीका)**

प्रश्न : यथाख्यात संयम किसके होता है?

उत्तर : अशुभ मोहनीय कर्म के सर्वथा उपशम हो जाने से ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती जीवों के और सर्वथा क्षीण हो जाने से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीवों के तथा तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान वाले जीवों के यथाख्यात संयम होता है। **(गो.जी. ४७५)**

प्रश्न : यथाख्यात संयम में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : यथाख्यात संयम में २९ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव के २ - सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक भाव के ९ - ज्ञान दर्शन....
- क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ४ - १ ग. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : यथाख्यात संयम के साथ किस गुणस्थान में कितने मूल भाव होते हैं?

उत्तर : यथाख्यात संयम के साथ -

- ग्यारहवें गुणस्थान में ५ - औ.क्षा.क्षायो.औद.पारि.
- बारहवें गुणस्थान में ४ - क्षा.क्षायो.औद.पारि.
- तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में ३ - क्षायिक, औद.पारि.

प्रश्न : क्या यथाख्यात संयम में लेश्या रूप भाव का अभाव भी हो सकता है?

उत्तर : हाँ, यथाख्यात संयम में चौदहवें गुणस्थान में लेश्या रूप भाव का अभाव हो जाता है, क्योंकि वहाँ योग से भी रहित होते हैं।

प्रश्न : जिन यथाख्यात संयमी के अज्ञान भाव होता है उनके कितने भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : जिन यथाख्यात संयमी के अज्ञान भाव होता है, उनके ७ भाव नहीं होते हैं -

क्षायिक ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य।

क्योंकि ये भाव अज्ञान भाव का अभाव होने पर होते हैं अर्थात् ये भाव तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में होते हैं।

प्रश्न : यथाख्यात संयम में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : यथाख्यात संयम में चार गुणस्थान होते हैं -

- उपशांतकषायवीतराग छद्मस्थ
- क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ

- सयोगकेवली जिन
- अयोगकेवली जिन

- इनमें भाव गुणस्थान के समान जानने चाहिए।
- इसमें केवल एक गुणस्थान में निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था होती है।
- इसमें भाव तेरहवें गुणस्थान के समान ही होते हैं।

प्रश्न : यथाख्यात संयमी मतिज्ञानी के दर्शन रूप भाव अधिक हैं या यथाख्यात संयमी केवलज्ञानी के?

उत्तर : यथाख्यात संयमी केवलज्ञानी की अपेक्षा यथाख्यात संयमी मतिज्ञानी के दर्शन रूप भाव ज्यादा होते हैं। क्योंकि यथाख्यात संयमी मतिज्ञानी ११ वें १२ वें गुणस्थान में होते हैं यहाँ चक्षुदर्शन-अचक्षुदर्शन एवं अवधिदर्शन रूप भाव पाये जाते हैं।

संयमासंयम

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	मनुष्यगति की अपेक्षा होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१३	३ ज्ञान-मति श्रुत अवधि. ३ दर्शन-चक्षु. अच.अव. ५ लब्धि-दान लाभ.... १ - सम्यक्त्व १ - संयमासंयम	केवल पंचम गुणस्थान में होता है।
४.	**औदयिक**	१४	२ गति-तिर्यःा मनुष्य ४ कषाय-को.मा.मा.लोभ ३ लिङ्ग-स्त्री. पुरु.नपुं. १-अज्ञान १-असिद्धत्व ३ लेश्या-पी.प.शु.	तिर्यःामनुष्य दोनों के होती हैं।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न : संयमासंयम किसे कहते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक विरताविरत परिणाम को संयमासंयम कहते हैं। अथवा अनात्यन्तिकी विरक्तता को संयमासंयम कहते हैं। **(रा.वा.२/६)**

- अर्धविरत अवस्था को विरताविरत एवं संयमासंयम कहते हैं। **(त.सा.२/८५)**
- भावों में स्थावर वध और पाँचों इन्द्रियों के विषय सम्बन्धी दोषों से विरत नहीं होते किन्तु

त्रस वध से विरत होने को संयमासंयम कहते हैं। **(पं.सं.१/१३४)**

- जहाँ अल्प संयम हो व शेष असंयम हो उसे संयमासंयम कहते हैं। पाँच अणुव्रत तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रतों से संयुक्त होना विशिष्ट संयमासंयम है। **(प्रा.पं.सं.१/१३५)**
- जो एकदेशविरति में लगा हुआ है वह संयमासंयम वाला श्रावक है। **(पु.सि.४१)**
- दस प्रकार के त्रसों की हिंसा इसमें रुक जाती है परन्तु चारों स्थावरों की हिंसा रुक नहीं पाती है। इसलिए इस संयम में स्थावर सम्बन्धी संयम पूर्ण न पल सकने के कारण असंयम रूप परिणाम भी रहते हैं। इसको संयमासंयम कहते हैं। **(पं.सं. १/२४६)**

प्रश्न : संयमासंयम को किन-किन नामों से जाना जाता है?

उत्तर : संयमासंयम को-संयतासंयत, देशसंयम, अणुव्रत, देशव्रत, विरताविरत आदि अनेक नामों से जाना जाता है।

- **देशव्रत -** प्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय होने से पूर्ण संयम तो नहीं होता पर स्तोक व्रत होता है इसी को देशव्रत कहते हैं। **(गो.जी.३०)**
- **संयतासंयत** - जो संयत होते हुए भी असंयत होते हैं, उन्हें संयतासंयत कहते हैं। **(ध.१/१७३)**
- **देशसंयत -** अप्रत्याख्यानावरण कषायों के क्षयोपशम से जो जीव विरत एवं अविरत दशा को प्राप्त होते हैं उसे देशसंयत कहते हैं। **(त.सा.२/२२)**

प्रश्न : संयमासंयम में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : संयमासंयम में ३१ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १३-३ ज्ञान (मति श्रुत अवधि) ३ दर्शन, ५ ल., १ सम्य. १ संयमा.
- औदयिक के १४ - २ गति (ति.म.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : संयमासंयम के साथ तिर्यःगति रूप भाव कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : संयमासंयम के साथ तिर्यःगति रूप भाव -

- ढाई द्वीप में अर्थात् ५ भरत ५ ऐरावत एवं ५ विदेह क्षेत्रों में
- आधे स्वयंभूरमण द्वीप तथा स्वयंभूरमण समुद्र में।

- गर्भज तिर्यःाों के उपशम एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ संयमासंयम होता है।
- सम्मूर्च्छन तिर्यःाों के क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव के साथ ही संयमासंयम होता है, क्योंकि सम्मूर्च्छन जीवों के उपशम सम्यक्त्व रूप भाव नहीं होता और क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्यःाों के संयमासंयम नहीं होता है।

प्रश्न : संयमासंयमी तिर्यःाों के क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव क्यों नहीं होता है?

उत्तर : संयमासंयमी जीव कर्मभूमि में ही पाये जाते हैं। क्षायिक सम्यक्त्व तिर्यःागति की अपेक्षा भोगभूमि में ही पाया जाता है, क्योंकि बद्धायुष्क (तिर्यःा) क्षायिक या कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि मरण कर भोगभूमि में ही जाते हैं इसलिए क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्यःाों के संयमासंयम नहीं हो सकता अर्थात् संयमासंयमी तिर्यःाों के क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव नहीं पाया जाता है।

प्रश्न : संयमासंयमी तिर्यःाों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : संयमासंयमी तिर्यःाों के २९ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १३-३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संय.
- औदयिक के १३ - १ ग. (तिर्य.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : किन-किन संयमासंयमी जीवों के अवधिज्ञान रूप भाव होता है?

उत्तर : संयमासंयमी अवधिज्ञान रूप भाव के स्वामी -

(१) कर्मभूमिया मनुष्य (२) गर्भज संज्ञी पःोन्द्रिय तिर्यःा

- सम्मूर्च्छन पःोन्द्रिय तिर्यःाों के अवधिज्ञान नहीं पाया जाता है।
- संज्ञी सम्मूर्च्छिक पर्याप्तकों में संयमासंयम के समान अवधिज्ञान एवं उपशम सम्यक्त्व की संभवता का अभाव है अर्थात् उनके संयमासंयम तो पाया जाता है लेकिन अवधिज्ञान और उपशम सम्यक्त्व नहीं पाया जाता है। इसका भी कारण यह है कि अवधिज्ञान को उत्पन्न करा कर अन्तर के प्ररूपण करने वाले आचार्यों का अभाव है। **(ध.५/११८)**

  इसी प्रकार इनके अवधिदर्शन रूप भाव भी नहीं होता है।

  किन्हीं आचार्यों के मत में इनके अवधिज्ञान पाया जाता है।

प्रश्न : संयमासंयमी तिर्यःाों की अपेक्षा संयमासंयमी मनुष्यों के कितने भाव ज्यादा होते हैं?

उत्तर : संयमासंयमी तिर्य:ाों की अपेक्षा संयमासंयमी मनुष्यों के केवल एक भाव ज्यादा होता है- क्षायिक सम्यक्त्व।

प्रश्न : किन-किन संयमासंयमी जीवों के नपुंसकवेद रूप भाव भी होता है?

उत्तर : गर्भज मनुष्य-तिर्य:ाों के नपुंसकवेद रूप भाव भी होता है-

सम्मूर्च्छन तिर्य:ाों के नपुंसक लिङ्ग रूप भाव ही होता है इसलिए उनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न : जन्म के कितने समय बाद संयतासंयत भाव उत्पन्न हो सकता है?

उत्तर : तिर्य:ाों में जन्म के ३ अन्तर्मुहूर्त्त बाद तथा मनुष्यों में ८ वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त पश्चात् संयमासंयम उत्पन्न हो सकता है। **(ध.४/३५०)** पूर्व कोटि की आयु वाला जो सम्मूर्छिम तिर्य:ा उत्पन्न होने के अन्तर्मुहूर्त्त बाद वेदक सम्यक्त्व के साथ संयमासंयम को प्राप्त करता है....।

विशेष : और भी इसके विषय में अन्य मान्यताओं को ग्रहण करना चाहिए।

असंयम

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	केवल चतुर्थ गुणस्थान में होता है।
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	केवल चतुर्थ गुणस्थान में होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१५	३ ज्ञान-मति श्रुत.अवधि.	पहले-दूसरे गुणस्थान में होते हैं।
			३ अज्ञान-मत्यज्ञान.श्रुता.विभंगा.	
			३ दर्शन-चक्षु. अचक्षु.अवधि.	
			५ लब्धि-दान लाभ भोग...	चारों गुणस्थानों में होती हैं।
			१ - सम्यक्त्व	
४.	**औदयिक**	२१	४ गति-नर.तिर्य.मनु.देव.	
			४ कषाय-क्रो.मा.मा.लो.	
			३ लिङ्ग-स्त्री.पुरु.नपुं.	
			१ - मिथ्यादर्शन	पहले गुणस्थान में ही होता है।
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयम	
			१ - असिद्धत्व	
			६ लेश्या-कृ.नी.का.पी.प.शु.	
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	पहले गुणस्थान में ही होता है।

प्रश्न : असंयम किसे कहते हैं?

उत्तर : जहाँ प्राणि-घात की व इन्द्रियविषयों की कुछ भी मर्यादा नहीं रहती है उसे असंयम कहते हैं। **(त.सा.२/८५)**

- षट्काय के जीवों का घात करने तथा इन्द्रिय और मन के नियंत्रित न रखने का नाम असंयम है।
- चारित्र मोह के उदय से जिसके अविरत असंयम दशा उत्पन्न हुई है उसे असंयम कहते हैं। **(त.सा.२/२१)**
- संयम के घातिकर्मों के उदय से जीव असंयत होता है।

प्रश्न : असंयम में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : असंयम में ४१ भाव होते हैं -

- औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
- औदयिक के २१ - गति आदि
- पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न : असंयम के साथ कितने क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : असंयम के साथ ३ क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं -

(१) मन:पर्ययज्ञान (२) चारित्र (३) संयमासंयम

प्रश्न : असंयम के साथ कितने भाव सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं?

उत्तर : असंयम के साथ सात भाव सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं -

- औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञा. १ दर्श. (अवधि.) १ सम्य.

प्रश्न : कितने क्षायोपशमिक भाव असंयम के साथ ही पाये जाते हैं?

उत्तर : तीन क्षायोपशमिक भाव असंयम के साथ ही पाये जाते हैं -

(१) मतिअज्ञान (२) श्रुताज्ञान (३) विभंगज्ञान

प्रश्न : असंयम भाव औदयिक क्यों है?

उत्तर : चारित्र मोह के उदय से होने वाले हिंसादि पापों से एवं इन्द्रिय विषयों से अनिवृत्ति परिणाम असंयम है। चारित्र मोह कर्म के सर्वघाति स्पर्धकों का उदय होने से प्राणिघात तथा इन्द्रियों के विषय में द्वेष एवं अभिलाषा रूप परिणामों की निवृत्ति नहीं होना असंयम भाव है। यह चारित्र मोह के उदय से होता है इसलिए औदयिक है। **(रा.वा.२/६)**

– समुच्चय प्रश्नोत्तर –

प्रश्न : संयम मार्गणा के कितने भेदों में प्रथमोपशम एवं द्वितीयोपशम सम्यक्त्व रूप भाव होते हैं?

उत्तर : संयम मार्गणा के चार भेदों में प्रथमोपशम एवं द्वितीयोपशम सम्यक्त्व रूप भाव होते हैं-

(१) सामायिक (२) छेदोपस्थापना (३) संयमासंयम (४) असंयम।

असंयम चौथे गुणस्थान की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : कितने भाव यथाख्यात संयम एवं असंयम दोनों में होते हैं?

उत्तर : १९ भाव यथाख्यात संयम एवं असंयम दोनों में होते हैं -

- औपशमिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञान ३ दर्श. ५ ल.
- औदयिक के ४ - १ ग. (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न : संयम मार्गणा के कितने भेदों में क्षायोपशमिक लब्धियाँ भी होती हैं?

उत्तर : संयम मार्गणा के केवल एक भेद यथाख्यात संयम में क्षायोपशमिक लब्धियाँ भी होती हैं -

इसमें तेरहवें - चौदहवें गुणस्थान की अपेक्षा क्षायिक एवं ग्यारहवें बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा क्षायोपशमिक लब्धियाँ भी होती हैं -

प्रश्न : संयम मार्गणा के कितने भेदों में क्षायिक भाव का मात्र एक भेद पाया जाता है?

उत्तर : संयम मार्गणा के तीन भेदों में क्षायिक भाव का मात्र एक भेद पाया जाता है -

परिहारविशुद्धि, संयमासंयम, असंयम –

इनमें क्षायिक भाव का केवल एक सम्यक्त्व रूप भाव होता है।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि के (छठे सातवें गुणस्थान में) तथा उपशम श्रेणी चढ़ते समय सामायिक-छेदोपस्थापना सूक्ष्मसाम्पराय एवं यथाख्यात संयम में भी एक सम्यक्त्व रूप भाव ही होता है। इनके छठे-सातवें गुणस्थान के सामायिक-छेदोपस्थापना संयम में भी एक सम्यक्त्व रूप भाव होता है।

प्रश्न : संयम मार्गणा के किस भेद में क्षायोपशमिक ज्ञान रूप भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : संयम मार्गणा का ऐसा कोई भेद नहीं है जिसमें क्षायोपशमिक ज्ञान रूप भाव नहीं होते हों, क्योंकि ये (ज्ञान) चौथे गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक पाये जाते हैं।

असंयम में चौथे गुणस्थान की अपेक्षा ज्ञान रूप भाव होंगे।

प्रश्न : संयम मार्गणा के कितने भेदों में अज्ञान रूप औदयिक भाव का अभाव भी होता है?

उत्तर : संयम के मात्र एक भेद यथाख्यात संयम में अज्ञान रूप औदयिक भाव का अभाव भी होता है।

इसमें तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में अज्ञान रूप औदयिक भाव नहीं पाया जाता है।

प्रश्न : संयम मार्गणा में लेश्या रूप भावों की विवेचना किस प्रकार करनी चाहिए?

उत्तर : संयम मार्गणा में लेश्या रूप भावों की विवेचना -

- सामायिक-छेदोपस्थापना संयम-पीत-पद्म-शुक्ल लेश्या-छठे-सातवें गुणस्थान की अपेक्षा मात्र शुक्ल-आठवें नवें गुणस्थान की अपेक्षा
- परिहार विशुद्धि संयम - पीत पद्म शुक्ल लेश्या
- सूक्ष्म साम्पराय संयम - शुक्ल लेश्या
- यथाख्यात संयम - शुक्ल लेश्या तथा चौदहवें गुणस्थान में लेश्यातीत भी होते हैं।
- संयमासंयम - पीत पद्म शुक्ल लेश्या
- असंयम - कृष्ण नीलादि छहों लेश्या

नोट : मुनिराज एवं संयमासंयमी के अशुभ लेश्या मानने वालों की अपेक्षा यथायोग्य लेश्या समझनी चाहिए।

प्रश्न : कितने भावों में संयम मार्गणा के सभी भेद होते हैं?

उत्तर : १८ भावों में संयम मार्गणा के सभी भेद होते हैं -

- क्षायिक भाव का १ - सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञान ३ दर्शन ५ लब्धि
- औदयिक के ४ - १ गति (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)
- पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

– प्रश्न पत्र –

१. उपयुक्त विकल्प पर (✓) का निशान लगाइये-

(i) **कौन से संयम में ४६ भाव होते हैं?**

(अ) सामायिक (ब) यथाख्यात
(स) उपशम सम्यक्त्व (द) कोई नहीं

(ii) **संयम मार्गणा के कितने भेदों में मन:पर्ययज्ञान रूप भाव नहीं होता है?**

(अ) ३ (ब) २
(स) ६ (द) कोई नहीं

(iii) **संयम मार्गणा में कितने भाव होते हैं?**

(अ) ४६ (ब) ४४
(स) ४० (द) ५३

(iv) **संयम मार्गणा के कितने भेदों में औपशमिकादि पाँचों भाव पाये जाते हैं?**

(अ) ५ (ब) ३
(स) ७ (द) ६

(v) **संयमासंयम में तिर्य:ागति रूप भाव में से कौनसे तिर्य:ा होते हैं?**

(अ) गर्भज-सम्मूर्च्छनज (ब) गर्भज-लब्ध्यपर्याप्त
(स) भोगभूमिज-कर्मभूमिज (द) कोई नहीं

२. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) संयम मार्गणा में देव और नरकगति रूप भाव भी आते हैं?

(ii) सिद्ध भगवान भी संयम मार्गणा में आते हैं?

(iii) संयमासंयमी तिर्य:ा के औपशमिकादि पाँच भाव होते हैं?

(iv) यथाख्यात संयम में औपशमिक एवं क्षायिक भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं?

(v) संयम मार्गणा के केवल एक भेद में चारों गति रूप भाव होते हैं?

३. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) असंयत कौन से भाव का भेद है?

(ii) संयमासंयम में कितने लिङ्ग रूप भाव होते हैं?

(iii) यथाख्यात संयम में कितने क्षायोपशमिक ज्ञान रूप भाव होते हैं?

(iv) संयम मार्गणा के कितने भेदों में सम्यग्ज्ञान रूप भाव ही होते हैं?

(v) संयम मार्गणा के किस भेद में औपशमिक भाव नहीं होता है?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए -

(i) यथाख्यात संयम में .... क्षायिक भाव .... पारिणामिक तथा .... लिङ्ग रूप भाव होते हैं?

(ii) परिहार विशुद्धि संयम में .... गति रूप .... लेश्या रूप तथा .... ज्ञान रूप भाव होते हैं।

(iii) असंयम में .... औदयिक .... क्षायिक तथा .... औपशमिक भाव होते हैं।

(iv) सूक्ष्मसाम्पराय संयम में .... कषाय .... क्षायो.लब्धि .... दर्शन रूप भाव होते हैं।

(v) संयमासंयम में .... पारिणामिक .... क्षायोपशमिक .... कषाय रूप भाव होते हैं।

५. सही जोड़ी बनाइए -

	अ		**ब**
(i)	परिहारविशुद्धि संयम	-	संयमासंयम
(ii)	सूक्ष्म साम्पराय संयम	-	५ संयम
(iii)	२ संयम	-	१ भाव
(iv)	३१ भाव	-	४ औदयिक भाव
(v)	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	-	१३ क्षायोपशमिक भाव
(vi)	क्षायिक चारित्र	-	तिर्यःगति रूप भाव
(vii)	३ संयम रूप स्थान	-	१ कषाय रूप भाव
(viii)	यथाख्यात संयम	-	२ संयमस्थान

– उत्तरमाला –

१. (i) द (ii) अ (iii) द (iv) द (v) अ।

२. (i) हाँ (ii) ना (iii) ना (iv) हाँ (v) हाँ

३. (i) औदयिक (ii) ३ (iii) ४ (iv) ६ (v) परिहारविशुद्धि संयम

४. (i) ९,२,० (ii) १,३,३ (iii) २१,१,१ (iv) १,५,३ (v) २,१३,४

५. (i) १३ क्षायोपशमिक भाव (ii) १ कषाय रूप भाव (iii) तिर्यःगति रूप भाव
(iv) संयमासंयम (v) ५ संयम (vi) २ संयम स्थान
(vii) १ भाव (viii) ४ औदयिकभाव

■■■

पारिभाषिक शब्द सूची

स्थान विवेचन

प्रश्न : इन्द्रिय मार्गणा के कितने स्थान होते हैं ?

उत्तर : इन्द्रिय मार्गणा के ३ स्थान होते हैं –

(१) पाँचों इन्द्रिय रूप (२) दो इन्द्रिय रूप (३) एक इन्द्रिय रूप

प्रश्न : इन स्थानों में किस-किस इन्द्रिय को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में इन्द्रिय -

- पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान में - एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय
- दो इन्द्रिय रूप स्थान में - चतुरिन्द्रिय एवं पञ्चेन्द्रिय
- एक इन्द्रिय रूप स्थान में - पञ्चेन्द्रिय

नोट : दो इन्द्रिय रूप स्थान का यद्यपि कोई गति एवं गुणस्थान वाले स्वामी नहीं है फिर भी उसमें भाव पाया जाता है, इसलिए उसका यहाँ ग्रहण किया गया है।

प्रश्न : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव-पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान में - २४

- क्षायोपशमिक के ८-२ अज्ञा. (कुम. कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ लब्धि
- औदयिक के १३-१ गति (ति.) ४ क.१ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ)
- पारिणामिक के ३ जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

दो इन्द्रिय रूप स्थान में - १

क्षायोपशमिक का १ - चक्षुदर्शन

एक इन्द्रिय रूप स्थान में - २८

- औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
- क्षायिक के ९ - सम्य. चारि. ज्ञान, दर्श.दा.ला.भो.उप. वी.
- क्षायोपशमिक के ९-४ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ चा. १ संय.
- औदयिक के ८-३ गति (न.म.दे.) २ लि. (स्त्री पुरुष) ३ ले. (शुभ)

प्रश्न : इन स्थानों के स्वामी कौन होते हैं ?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

- पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान के - प्रथम द्वितीय गुणस्थानवर्ती एवं तिर्यञ्चगति वाले
- दो इन्द्रिय रूप स्थान के - चक्षुदर्शनी
- एक इन्द्रिय रूप स्थान के - तीन गति एवं तीसरे से चौदहवें गुणस्थानवर्ती

प्रश्न : किस स्थान में किस भाव के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान में एक भाव के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं - पारिणामिक भाव

एक इन्द्रिय रूप स्थान में दो भावों के सभी उत्तरभेद पाये जाते हैं- औपशमिक एवं क्षायिक भाव।

प्रश्न : औदयिक भाव के सबसे ज्यादा उत्तर भेद किस स्थान में पाये जाते हैं?

उत्तर : औदयिक भाव के सबसे ज्यादा उत्तर भेद पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान में पाये जाते हैं। यहाँ औदयिक भाव के तेरह उत्तर भेद होते हैं।

प्रश्न : किस भाव के उत्तर भेद सभी स्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव के उत्तर भेद सभी स्थानों में पाये जाते हैं- क्षायोपशमिक।
इसके आठ उत्तर भेद पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान में
एक उत्तर भेद दो इन्द्रिय रूप स्थान में
नौ उत्तर भेद एक इन्द्रिय रूप स्थान में

प्रश्न : औदयिक अज्ञान किस स्थान में पाया जाता है?

उत्तर : औदयिक अज्ञान पाँचों इन्द्रियरूप स्थान में पाया जाता है, क्योंकि यह एकेन्द्रिय से लेकर बारहवें गुणस्थान तक पाया जाता है।

प्रश्न : एक इन्द्रिय रूप स्थान में होने वाले कितने भाव ग्यारह गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : एक इन्द्रिय रूप स्थान में होने वाला केवल एक भाव ग्यारह गुणस्थान में होता है- क्षायिक सम्यक्त्व

भावों में इन्द्रिय स्थान

क्र.सं.	भाव	स्थान सं.	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	एक इन्द्रिय रूप	
	चारित्र	१	एक इन्द्रिय रूप	मनुष्यगति में ही होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१	एक इन्द्रिय रूप	चारों गति की अपेक्षा होता है।
	चारित्र	१	एक इन्द्रिय रूप	
	ज्ञानादि सात	१	एक इन्द्रिय रूप	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	१	एक इन्द्रिय रूप	
	मन:पर्ययज्ञान	१	एक इन्द्रियरूप	मनुष्यगति में ही होता है।
	कुम.कुश्रु	३	पाँचों. दो इन्द्रिय एक इन्द्रिय रूप	एक इन्द्रिय रूप स्थान चारों गति में होता है।
	विभंगज्ञान	१	एक इन्द्रिय रूप	
	चक्षुदर्शन	२	दो इन्द्रिय रूप, एक इन्द्रिय रूप	

	अचक्षुदर्शन	३	पाँचों. दो इन्द्रिय एक इन्द्रिय रूप	पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान तिर्यञ्चगति की अपेक्षा होता है।
	अवधिदर्शन	१	एक इन्द्रिय रूप	
	५ लब्धि	३	पाँचों. दो इन्द्रिय एक इन्द्रिय रूप	
	सम्यक्त्व	१	एक इन्द्रिय रूप	
	चारित्र	१	एक इन्द्रिय रूप	
	संयमासंयम	१	एक इन्द्रिय रूप	तिर्यञ्च एवं मनुष्यगति में होता है।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	एक इन्द्रिय रूप	
	तिर्यञ्चगति	३	पाँचों. दो इन्द्रिय एक इन्द्रिय रूप	
	मनुष्यगति	१	एक इन्द्रिय रूप	
	देवगति	१	एक इन्द्रिय रूप	
	कषाय	३	पाँचों. दो इन्द्रिय एक इन्द्रिय रूप	
	स्त्री-पुरुष लिंग	१	एक इन्द्रिय रूप	नरक गति में नहीं होता है।
	नपुंसकलिङ्ग	३	पाँचों. दो इन्द्रिय एक इन्द्रिय रूप	
	मिथ्यादर्शन	३	पाँचों. दो इन्द्रिय, एक इन्द्रिय रूप	
	अज्ञान	३	पाँचों. दो इन्द्रिय, एक इन्द्रिय रूप	एक इन्द्रिय रूप स्थान बारहवें गुणस्थान तक होता है।
	असंयत	३	पाँचों. दो इन्द्रिय, एक इन्द्रिय रूप	
	असिद्धत्व	३	पाँचों. दो इन्द्रिय, एक इन्द्रिय रूप	
	३ अशुभ लेश्या	३	पाँचों. दो इन्द्रिय, एक इन्द्रिय रूप	एक इन्द्रिय रूप स्थान
	३ शुभ लेश्या	१	एक इन्द्रिय रूप	चौथे गुणस्थान तक होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	३	पाँचों. दो इन्द्रिय, एक इन्द्रिय रूप	एक इन्द्रिय रूप स्थान चौदहवें गुणस्थान तक होता है।
	भव्यत्व	३	पाँचों. दो इन्द्रिय, एक इन्द्रिय रूप	एक इन्द्रिय रूप स्थान १४ वें गुणस्थान तक होता है।
	अभव्यत्व	३	पाँचों. दो इन्द्रिय, एक इन्द्रिय रूप	केवल मिथ्यात्व गुणस्थान में ही होते हैं।

प्रश्न : कितने भावों में दो गुणस्थानों की अपेक्षा पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान पाया जाता है?

उत्तर : २२ भावों में दो गुणस्थानों की अपेक्षा पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान पाया जाता है -

- क्षायोपशमिक के ८-२ अज्ञान (कुम. कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.
- औदयिक के १२-१ गति (तिर्य.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)
- पारिणामिक के २- जीवत्व, भव्यत्व

इनमें पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान के साथ पहला एवं दूसरा गुणस्थान पाया जाता है।

प्रश्न : कितने भावों में चारों गति की अपेक्षा एक इन्द्रिय रूप स्थान होता है?

उत्तर : ८ भावों में चारों गति की अपेक्षा एक इन्द्रिय रूप स्थान होता है-

- औपशमिक का १ सम्यक्त्व
- क्षायिक का १ सम्यक्त्व
- क्षायोपशमिक के ६-३ ज्ञा. (म.श्रु.अव.) १ अज्ञा. (विभं) १ दर्श.(अव.) १ सम्य.

नोट : यहाँ जिनमें केवल पञ्चेन्द्रिय रूप स्थान पाया जाता है उन्हीं का ग्रहण किया गया है।

प्रश्न : कितने भावों में दो इन्द्रिय रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : २५ भावों में दो इन्द्रिय रूप स्थान भी होता है -

- क्षायोपशमिक के ९-२ अज्ञा. (कुम. कुश्रु.) २ दर्श. (चक्षु. अच.) ५ ल.
- औदयिक के १३-१ गति (तिर्य.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)
- पारिणामिक के ३-जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

इनमें तिर्यञ्चगति एवं पहले-दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा दो इन्द्रिय रूप स्थान पाया जाता है।

प्रश्न : कितने स्थान केवल तिर्यञ्चगति में ही पाये जाते हैं?

उत्तर : दो स्थान केवल तिर्यञ्चगति में ही पाये जाते हैं-

- पाँचों इन्द्रिय रूप स्थान क्योंकि एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक तिर्यञ्चगति में ही होते हैं।
- दो इन्द्रिय रूप स्थान, चतुरिन्द्रिय जीव तिर्यञ्चगति में ही होते हैं।

प्रश्न : कितने भावों में एक इन्द्रिय रूप स्थान चार गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : सात भावों में एक इन्द्रियरूप स्थान चार गुणस्थानों में होता है-

- क्षायोपशमिक का १-सम्यक्त्व, इसमें चौथे से सातवें तक चार गुणस्थान होते हैं।
- औदयिक के ६-२गति (न.दे.) १ असं.-३ लेश्या (अशुभ)

इनमें पहले से चौथा गुणस्थान होता है।

स्थान विवेचन

प्रश्न : काय मार्गणा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : काय मार्गणा में २ स्थान होते हैं – (१) षट्कायिक रूप (२) एक कायिक रूप

प्रश्न : इन स्थानों में किस-किस कायिक को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में कायिक जीव-

- **षट्कायिक रूप स्थान में –** पृथ्वीकायिक जलकायिक अग्निकायिक वायुकायिक वनस्पति कायिक एवं त्रसकायिक।
- **एक कायिक रूप स्थान में –** त्रस कायिक (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पञ्चेन्द्रिय)

प्रश्न : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव-

षट्कायिक रूप स्थान में - २४

- क्षायोपशमिक के ८-२ अज्ञा. (कुम. कुश्रु.) १ दर्श (अच.) ५ लब्धि
- औदयिक के १३-१ गति (तिर्य.) ४ क. १ लि.(नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं, १ असि. ३ ले. (अशु.)
- पारिणामिक के ३-जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व।

एक कायिक रूप स्थान में - २९

- औपशमिक के २-सम्यक्त्व चारित्र
- क्षायिक के ९-सम्य. चा. ज्ञा. दर्श. दान. ....
- क्षायोपशमिक के १०-४ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.) २ दर्श. (च.अच.) १ सम्य. १ चारित्र १ संय.
- औदयिक के ८-३ ग. २ लि. (स्त्री पुरु.) ३ ले. (शुभ)

प्रश्न : कितने भावों के उत्तर भेद दोनों स्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : दो भावों के उत्तर भेद दोनों स्थानों में पाये जाते हैं- क्षायोपशमिक एवं औदयिक

प्रश्न : एक कायिक रूप स्थान में होने वाले कितने भाव असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय के भी होते हैं?

उत्तर : एक कायिक रूप स्थान में होने वाले ४ भाव असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय के भी होते हैं-

- क्षायोपशमिक का १ - चक्षुदर्शन
- औदयिक के ३ - २ लिङ्ग (स्त्री. पुरु.) १ लेश्या (पीत)

प्रश्न : षट्कायिक रूप स्थान में होने वाले कितने भाव आहारक काययोगी के भी होते हैं?

उत्तर : षट्कायिक रूप स्थान में होने वाले १४ भाव आहारक काययोगी के भी होते हैं।

- क्षायोपशमिक के ६ - १ दर्शन (अच.) ५ लब्धि
- औदयिक के ६ - ४ क. १ अज्ञा. १ असि. • पारिणामिक के २-जीवत्व भव्यत्व

भावों में काय स्थान

क्र.सं.	भाव	स्थान सं.	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	एक कायिक रूप	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय के ही होता है।
	चारित्र	१	एक कायिक रूप	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१	एक कायिक रूप	कायातीत जीवों के भी होता है।
	चारित्र	१	एक कायिक रूप	कायातीत जीवों के भी होता है।
	ज्ञानादि सात	१	एक कायिक रूप	कायातीत जीवों के भी होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	४ ज्ञान	१	एक कायिक रूप	
	कुमति कुश्रुत	२	षट्कायिक एककायिक	
	विभंगज्ञान	१	एक कायिक रूप	
	चक्षुदर्शन	१	एक कायिक रूप	
	अचक्षुदर्शन	२	षट्कायिक एककायिक रूप	
	अवधिदर्शन	१	एक कायिक रूप	
	५ लब्धि	२	षट्कायिक एककायिक	षट्कायिक रूप स्थान तिर्यञ्चगति में ही होता है।
	सम्यक्त्व	१	एक कायिक रूप	
	चारित्र	१	एक कायिक रूप	
	संयमासंयम	१	एक कायिक रूप	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	एक कायिक रूप	
	तिर्यञ्चगति	२	षट्कायिक एक कायिक	षट्कायिक रूप स्थान कर्मभूमि में ही होता है।
	मनुष्यगति	१	एक कायिक रूप	सभी गुणस्थानों में होता हे।
	देवगति	१	एक कायिक रूप	
	४ कषाय	२	षट्कायिक एककायिक	
	स्त्री-पुरु.लिङ्ग	१	एक कायिक रूप	
	नपुंसक लिङ्ग	२	षट्कायिक एककायिक	
	मिथ्यादर्शन	२	षट्कायिक एककायिक	एककायिक रूप स्थान तिर्यञ्चगति में भी होता है।
	अज्ञान	२	षट्कायिक एककायिक	

	असंयत	२	षट्कायिक एककायिक	
	असिद्धत्व	२	षट्कायिक एककायिक	
	३ अशुभलेश्या	२	षट्कायिक एककायिक	
	३ शुभ लेश्या	१	एक कायिक रूप	तीन गति की अपेक्षा जानना चाहिए।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	२	षट्कायिक एककायिक	षट्कायिकरूप स्थान दो गुणस्थानों में होता है।
	भव्यत्व	२	षट्कायिक एककायिक	षट्कायिकरूप स्थान दो गुणस्थानों में होता है।
	अभव्यत्व	२	षट्कायिक एककायिक	दोनों स्थान पहले गुणस्थान में ही होते हैं।

प्रश्न : कुमति-कुश्रुतज्ञान में एककायिक रूप स्थान किस अपेक्षा होता है ?

उत्तर : कुमति कुश्रुतज्ञान में एक कायिकरूप स्थान में अपेक्षा -

(१) नरकगति मनुष्यगति देवगति, क्योंकि यहाँ सभी त्रस ही होते हैं।

(२) तिर्यञ्चगति में भी भोगभूमिया तथा द्वीन्द्रियादि जीवों के एककायिक रूप स्थान ही होता है।

प्रश्न : भोगभूमिया जीवों के कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : भोगभूमिया जीवों के एक स्थान ही होता है – एककायिक रूप

विशेष : यद्यपि भोगभूमि में भी पाँचों स्थावर पाये जाते हैं। वहाँ भी बावड़ियाँ, कमल, बाग-बगीचे, पर्वत आदि अनेक प्रकार की सामग्रियाँ पायी जाती हैं लेकिन वे सब भोगभूमि में होती हैं भोगभूमियाँ नहीं होतीं क्योंकि भोगभूमिया जीव तो पञ्चेन्द्रिय ही होते हैं।

प्रश्न : छह लेश्याओं में स्थानों का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए ?

उत्तर : छह लेश्याओं में स्थानों का विवेचन-

- कृष्ण नील कापोत लेश्या में षट्कायिक स्थान-
  तिर्यञ्चगति एवं पहले गुणस्थान की अपेक्षा
- एक कायिक रूप स्थान - नरकगति में पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा
  तिर्यञ्चगति में पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा
  मनुष्यगति में पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा
  देवगति में पहले-दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा
- पीत पद्म शुक्ल लेश्या में एककायिक रूप स्थान
  तिर्यञ्चगति में पहले से पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा
  मनुष्यगति में पहले से सातवें गुणस्थान की अपेक्षा
  देवों में पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

विशेष : शुक्ल लेश्या के साथ मनुष्यगति में पहले से तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : कितने भावों में केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा स्थान होते हैं?

उत्तर : ३ भावों में केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा स्थान होते हैं-
क्षायोपशमिक का-१ संयमासंयम, इसमें केवल पाँचवाँ गुणस्थान होता है।
औदयिक का-१ मिथ्यादर्शन, इसके दोनों स्थानों में केवल पहला गुणस्थान होता है।
पारिणामिक का-१ अभव्यत्व, इसमें भी मिथ्यादर्शन के समान केवल पहला गुणस्थान ही होता है।

प्रश्न : तिर्यञ्चगति में एककायिक रूप स्थान किस अपेक्षा होता है?

उत्तर : तिर्यञ्चगति में एककायिक रूप स्थान में अपेक्षा
(१) पञ्चेन्द्रिय की अपेक्षा पहले से पाँचवें गुणस्थान तक (तीसरे से पाँचवें गुणस्थान तक केवल एककायिक रूप स्थान ही होता है।)
(२) द्वीन्द्रिय से संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तक
(३) भोगभूमि में चारों ही गुणस्थानों में

प्रश्न : कितने भाव एककायिक रूप स्थान में पाये जाने वाले होते हैं?

उत्तर : चौबीस भाव एककायिक रूप स्थान में पाये जाने वाले सभी त्रस जीवों के होते हैं-
- क्षायोपशमिक के ८-२ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श (अच.) ५ ल.
- औदयिक के १३ – १ ग.(ति.) ४ क. १ लि. (नपुं), १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ)
- पारिणामिक के ३- जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

ये भाव द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा पञ्चेन्द्रिय के पहले गुणस्थान की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : कितने भावों में एककायिक रूप स्थान मिथ्यादृष्टि के भी होता है?

उत्तर : ३२ भावों में एककायिक रूप स्थान मिथ्यादृष्टि के भी होता है-
क्षायोपशमिक के १०-३ अज्ञा. २ दर्श. (च. अच.) ५ लब्धि
औदयिक के २०-४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
पारिणामिक के २- जीवत्व भव्यत्व

नोट : ३ अज्ञान सासादन सम्यग्दृष्टि के भी होते हैं इसलिए यहाँ ग्रहण किये गये हैं।

प्रश्न : कुमति-कुश्रुतज्ञान में षट्कायिक रूप स्थान किस अपेक्षा होता है ?

उत्तर : कुमति-कुश्रुतज्ञान में षट्कायिक रूप स्थान केवल प्रथम गुणस्थान की अपेक्षा होता है। दूसरा गुणस्थान अग्निकायिक वायुकायिक जीवों के नहीं होता है, क्योंकि सासादन गुणस्थानवर्ती जीव अग्निकायिक वायुकायिक जीवों में उत्पन्न नहीं होते हैं।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

पञ्च भाव

प्रश्नोत्तर मञ्जूषा

द्वितीय खण्ड

प्रस्तुति

आर्यिका १०५ श्री विज्ञानमती माताजी

प्रकाशक

पिस्ता विमलप्रसाद जैन

हेमन्त-वन्दना, दीपक-नेहा जैन

सुहानी, यतीश, मंतव्य जैन

भीण्डर (राजस्थान)

पञ्च भाव प्रश्नोत्तर मञ्जूषा - द्वितीय खण्ड

प्रस्तुति : आर्यिका १०५ श्री विज्ञानमती माताजी

सम्पादन : डॉ. चेतनप्रकाश पाटनी, जोधपुर

अर्थसहयोग : पिस्ता विमलप्रसाद जैन परिवार
भीण्डर (राजस्थान)

प्राप्ति स्थान :
- ♦ श्रावक संस्कार साहित्य केन्द्र
श्री नन्दीश्वर द्वीप जिनालय
जैन नगर, लालघाटी, भोपाल (म.प्र.)
मोबाइल : ९४२५३७४८९७

- ♦ संजीव जैन (रामपुर)
पूजा परिधान, गुलाबगंज चौराहा
आरौन (गुना-म.प्र.)
फोन : ०७५४५-२५८४९७

- ♦ हेमन्त कुमार जैन, राज टैक्सटाईल
राधाकृष्णा टैक्सटाईल मार्केट, सूरत
मोबाइल : ०९३७७१२३१५८

संस्करण : प्रथम, १००० प्रतियाँ

प्रकाशन तिथि : पूज्य आर्यिकाश्री के ३१वें दीक्षा दिवस के अवसर पर
(२ फरवरी २०१६)

मूल्य : स्वाध्याय

संकल्पना एवं मुद्रण : निधि कम्प्यूटर्स, जोधपुर
☎ ०२९१-२४४०५७८

卐 सम्पादकीय 卐

भाव : भाव शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है- भवनं भवतीति वा भाव:, होना मात्र या जो होता है सो भाव है। **(रा.वा.१/५/२८/९)**

- **भवनं भाव:**, भूतिर्वा भाव इति भावसद्दस्स विउप्पत्ति **(ध.५/१,७,१/१८४/१०)**
- **भावो खलु परिणामो -** पदार्थों के परिणाम को भाव कहते हैं। **(ध.१/१/१/८/गा.१०३)**
- **भावो णाम.....दव्वपरिणामो**। द्रव्य के परिणाम को भाव कहते हैं। **(ध.५/१,७,१/१८७)**
- **परिणाम मात्रलक्षणो भाव: -** भाव का लक्षण परिणाम मात्र है। **(प्र.सा.त.प्र. १२९)**
- **भाव: चित्परिणाम:** - चेतन के परिणाम को भाव कहते हैं। **(गो.जी./जी.प्र.१६५/३९१/६)**
- **भावश्चित्तोत्थ उच्यते -** भाव अर्थात् चित्त का विकार **(प.प्र.टीका १/१२१/१११/८)**

इस प्रकार परिणाम - परिणमन ही भाव है। जड़-चेतन सभी द्रव्यों का स्वभाव परिणमनशील है अत: सभी भावयुक्त हैं।

जीव द्रव्य के पाँच भाव हैं –

कर्मों के उदय से होने वाले रागादि भाव **औदयिक।**

कर्मों के उपशम से होने वाले सम्यक्त्व व चारित्र **औपशमिक।**

कर्मों के क्षय से होने वाले केवलज्ञानादि **क्षायिक।**

कर्मों के क्षयोपशम से होने वाले मतिज्ञानादि **क्षायोपशमिक।**

कर्मों से सर्वथा निरपेक्ष चैतन्यादि भाव **पारिणामिक।**

एक समय में एक जीव के भिन्न-भिन्न गुणों की अपेक्षा भिन्न-भिन्न गुणस्थानों में यथायोग्य भाव होने सम्भव है, जिनके संयोगी भंगों को सान्निपातिक भाव कहते हैं।

पुद्गल द्रव्य में औदयिक, क्षायिक व पारिणामिक ये तीन भाव होते हैं।

शेष चार द्रव्यों - धर्म, अधर्म, आकाश और काल में केवल एक पारिणामिक भाव ही सम्भव है।

जैन धर्म भावप्रधान धर्म है। जीव के परिणाम ही उसके बन्ध-मोक्ष में कारण कहे गये हैं। **भाव पाहुड़** में **कुन्दकुन्दाचार्य** ने बताया है –

पावं हवइ असेसं पुण्णमसेसं च हवइ परिणामाद्।
परिणामादो बंधो मुक्खो जिणसासणे दिट्ठो॥११६॥

पढ़ना-सुनना भी भाव बिना कुछ नहीं है –

पढिएणवि किं कीरइ किं वा सुणिएण भावरहिएण।
भावो कारणभूदो सायारणयारभूदाणं।।६६।।

भाव रहित पढ़ने-सुनने से क्या होता है? अर्थात् कुछ भी कार्यकारी नहीं है इसलिए श्रावकत्व तथा मुनित्व इनका कारणभूत भाव ही है। अर्थात् पढ़कर सुनकर आपको ज्ञानस्वरूप जान कर अनुभव करे तब भाव जाना जाता है, इसलिए बार-बार भावना से भाव लगाने पर ही सिद्धि है।

गुणभद्राचार्य आत्मानुशासन में लिखते हैं –

परिणाममेव कारणमाहुः खलु पुण्यपापयोः प्राज्ञाः।
तस्मात् पापापचयः पुण्योपचयश्च सुविधेयः।।२३।।

प्राज्ञपुरुषों ने पुण्य-पाप का कारण परिणामों को ही कहा है अतः पाप का नाश और पुण्य का संचय भली प्रकार से करना ही योग्य है। पर का किया पुण्य-पाप नहीं होता- अपने ही परिणामों से पुण्यपाप होते हैं अतः अशुभ को छोड़ कर शुभ परिणाम करना चाहिए।

कल्याणमन्दिर स्तोत्र में भक्त भगवान से शिकायत करता है -

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात् क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः।।३८।।

''हे जगद्बन्धो ! मैंने आपको सुना भी है, पूजा भी की है और दर्शन भी किए हैं अर्थात् मैंने आपका नाम भी सुना है, उपदेश भी सुना है, बड़ी-बड़ी पूजाएँ भी की हैं और तीर्थों पर आपके दर्शन भी किये हैं फिर भी भक्तिपूर्वक चित्त में धारण नहीं करने से मैं आज तक दुःखों का ही पात्र बना हुआ हूँ।'' भक्त की इस शिकायत का कारण बताते हुए **आचार्य कुमुदचन्द्र** लिखते हैं कि **भाव रहित क्रियाएँ सफल नहीं होतीं।** यदि भाव से करता तो कभी दुःख नहीं उठाने पड़ते।

जब भावों की इतनी महत्ता है तो उनके सम्बन्ध में साधक को जानना अत्यावश्यक है। जैनागम में जीव के मूल पाँच भाव और उनके उत्तर भेद करके कुल ५३ भाव कहे गए हैं। कर्मों के बंध, उदय आदि के मूल स्रोत ये भाव ही हैं। प्रस्तुत कृति **पञ्च भाव प्रश्नोत्तर मंजूषा में आर्यिका विज्ञानमती माताजी** ने आगमाधार से इन्हीं भावों का विवेचन कर्म के उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम तथा गुणस्थानों एवं मार्गणास्थानों के परिप्रेक्ष्य में तालिकाओं और प्रश्नोत्तरों के माध्यम से किया है। विषय जटिल होते हुए भी रुचिशील जिज्ञासुओं के लिए उपयोग की एकाग्रता और कषायों की मन्दता में निमित्त बनेगा। करणानुयोग के अध्ययन की यही विशेषता है। गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान और संयम

इन आठ मार्गणाओं से सम्बंधित विवेचना में कुल तालिकाएँ ५८ हैं और प्रश्नोत्तरों की संख्या ८५० है; जो **पञ्च भाव प्रश्नोत्तर मञ्जूषा प्रथम खण्ड** के रूप में सन् २०१३ में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत **द्वितीय खण्ड** में दर्शन, लेश्या, भव्य, सम्यक्त्व, संज्ञी, आहार, गुणस्थान, जीव समास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा उपयोग, ध्यान, आस्रव के प्रत्यय, जाति और कुल इन सोलह स्थानों से सम्बन्धित विवेचना में अनेक तालिकाएँ हैं और प्रश्नोत्तरों की संख्या लगभग ११०० है।

प्रस्तुत कृति की उद्‌भावना और संयोजना के सम्बन्ध में **पू. आर्यिका विज्ञानमतीजी** ने अपने आलेख **'सृजन का स्रोत'** में विस्तार से प्रकाश डाला है और **पू. आर्यिका आदित्यमतीजी** ने अपने आलेख में कृति के अध्ययन-प्रभाव का उल्लेख किया है। निश्चय ही, पूज्य विज्ञानमतीजी की यह नवीन कृति पूर्ववर्ती कृतियों के समान ही स्वाध्यायियों की सराहना का विषय बनेगी। पूज्य माताजी अपनी अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी आराधना के फलस्वरूप आगम के गूढ़ रहस्यों को इसी प्रकार पाठकों के लिए सरल रूप में प्रस्तुत करती रहें- यही कामना करता हूँ।

आर्यिका श्री आदित्यमती माताजी ने अपने आलेख **'अप्रतिम व्यक्तित्व की धनी'** में पूज्य माताजी के जीवन पर संक्षेप में प्रकाश डाला है। संघस्थ आर्यिका वृन्द एवं ब्र. बहिनों ने स्रोतग्रन्थों के प्रमाण मिला कर कृति की प्रामाणिकता को पुष्ट किया है। मैं आप सबका आभारी हूँ और पूज्य माताजी व संघस्थ आर्यिका वृन्द के श्रीचरणों में सविनय वन्दामि निवेदन करता हूँ। ब्र. बहिनों को सादर वन्दना।

ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु **पिस्ता विमलचंद जैन परिवार, भीण्डर (राजस्थान) वालों** ने पूर्ण आर्थिक सहयोग प्रदान किया है, एतदर्थ मैं आपका आभारी हूँ।

तालिकाओं सहित इस कृति के सुन्दर एवं सुसंयोजित कम्प्यूटरीकरण एवं मुद्रण के लिए मैं **निधि कम्प्यूटर्स,** जोधपुर के **डॉ. क्षेमंकर** को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

ग्रन्थ प्रकाशन में सहयोगी सभी श्रुतप्रेमियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। अपने प्रमाद व अज्ञान से ग्रन्थ के सम्पादन-प्रकाशन में रही खामियों के लिए सविनय क्षमायाचना करता हूँ।

– **डॉ. चेतनप्रकाश पाटनी**

'अविरल', ५४-५५ इन्द्रा विहार
सेक्शन ७ विस्तार, न्यू पावर हाउस रोड
जोधपुर (राज.)

卐 सृजन का स्रोत 卐

संसार में मनुष्य प्रात:काल उठते ही सबसे पहले न्यूज पेपर में भाव देखता है, पढ़ता है। अथवा दूरदर्शन पर कोई भी कार्यक्रम देखे या नहीं देखे, भाव अवश्य देखता है, क्योंकि भावों के आधार से ही उसे लाभ-हानि होती है, अर्थात् यदि भाव गिर जाता है तो हानि और भाव बढ़ जाता है तो लाभ होता है। इसी प्रकार ज्ञानी जीव अथवा मोक्षमार्ग में स्थित साधक भी प्रतिपल अपने भावों को देखता रहता है। उसके जीवन में भी भावों में उतार-चढ़ाव आता रहता है। जब भावों में चढ़ाव आता है, अर्थात् परिणामों में निर्मलता आती है, विशुद्धि बढ़ती है, कषायों की मंदता होने से लेश्या की विशुद्धि होती है, तो उसके संयम लब्धि स्थान में वृद्धि होती है, पूर्वोपार्जित कर्मों की निर्जरा होती है और जब विशुद्धि कम होती है, पंचेन्द्रिय के विषय-भोगों के प्रति आकर्षण उत्पन्न होने लगता है तो वह तत्काल अपनी व अपने पापों की निन्दा-गर्हा करते हुए उनको नष्ट करने का प्रयास करता है। यही मोक्षमार्ग कहलाता है।

इस जीव के कितने भाव होते हैं, कितने भाव हो सकते हैं एवं बदलते हुए परिणामों में कब कौन सा भाव नष्ट होकर नया भाव उत्पन्न हो जाता है अर्थात् परिणामों के परिवर्तन से गुणस्थानों में परिवर्तन आता है और गुणस्थानों के परिवर्तन से भावों में भी परिवर्तन आता है। **आचार्य भगवन्त उमास्वामी महाराज** ने जैन धर्म के हार्द स्वरूप **तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ** के दूसरे अध्याय में पहले सूत्र से सातवें सूत्र तक जीव के भावों का वर्णन किया है। इसके पूर्व भी भावों का संकेत देते हुए उन्होंने प्रथम अध्याय के आठवें सूत्र में भी सामान्यत: भाव अनुयोग द्वार से सम्यग्दर्शन व जीव-अजीवादि तत्त्वों को जानने की प्रेरणा दी है। **आचार्य पूज्यपाद स्वामी** ने इसी तत्त्वार्थसूत्र की टीका करते हुए गुणस्थान एवं मार्गणाओं में कहाँ कैसा भाव होता है? इसका वर्णन किया है। **आचार्य वीरसेन स्वामी** ने भी **षट्खण्डागम** की टीका करते हुए भावानुगम में भावों का वर्णन किया है। इस प्रकार जीव के भावों का अनेक स्थानों पर अथवा सभी ग्रन्थों में कहीं विस्तार से तो कहीं संक्षेप से वर्णन अवश्य ही किया गया है, क्योंकि धर्म भाव-प्रधान होता है। मोक्षमार्ग भी भावों के आधार से ही बनता है। कर्मों के उदय, बंध आदि की आधार-शिला भी जीव के भाव ही हैं। इन्हीं भावों का वर्णन इस **पञ्च भाव प्रश्नोत्तर मञ्जूषा** में किया गया है।

'चउबीस-ठाणा' के समान इसमें भी २४ स्थानों में मूल एवं उत्तर भावों की संख्या बताई गई है। ताकि मार्गणाओं में भावों को पढ़ते समय सुविधा रहे। 'चउबीस-ठाणा' की अपेक्षा इसमें प्रत्येक स्थान का वर्णन करते समय सर्वप्रथम स्थान में होने वाले गुणस्थान किस कर्म के उदय, क्षय, क्षयोपशम, उपशम की अपेक्षा होते हैं, इसे 'कर्म-विवक्षा' के नाम से कहा गया है। उसके बाद उस गुणस्थान या मार्गणा में एक दो तीन आदि के समूह रूप कितने स्थान बन सकते हैं इसे **स्थान विवेचन** के नाम से कहा गया है। तदुपरांत त्रेपन भावों में कौनसे-कौनसे अथवा कितने स्थान हो सकते हैं, तत्पश्चात् भावों

में मार्गणा तथा गुणस्थान एवं मार्गणा के प्रत्येक भेद में भावों का कथन किया है। अंत में परीक्षा के लिए एक प्रश्नपत्र भी दिया है।

कई साधर्मी बन्धुओं ने कहा कि इतनी कठिन यह **पंच भाव प्रश्नोत्तर मंजूषा** आखिर कौन पढ़ेगा? आज किसके पास समय है कि वह इसके एक-दो पृष्ठों को पढ़ने में घण्टों लगा पावे। कौन ऐसा विद्वान है, जो अपना समय देकर जिज्ञासु को समझावे? यह तो बड़े विद्वानों और करणानुयोग के स्वाध्याय प्रेमियों के लिए ही उपयोगी है। यह सत्य है कि इसको चलते-फिरते, बातें करते हुए नहीं पढ़ा जा सकता है, क्योंकि यह करणानुयोग का विषय है फिर भी यदि कोई दो-चार व्यक्ति मिलकर इसका पठन-पाठन करें तो काफी विषय समझ में आ सकता है। इसका अध्ययन करते हुए दो-चार घंटे तो यूँ ही निकल जाते हैं। पढ़ने में उपयोग एकाग्र होता है, दुनिया भर के सब विकल्पों को भूलकर धर्म-ध्यान में लगने का सबसे अच्छा उपाय करणानुयोग ही है।

रावतभाटा वर्षायोग के समय **आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज** के शिष्य परम पूज्य श्री **प्रशान्तसागर जी महाराज** के द्वारा लिखित **'तिरेपन भाव चर्चा'** पुस्तक हमें देखने को मिली। उसे देखकर हम सभी का भाव हुआ कि हमें भी ५३ भावों के बारे में पढ़ना चाहिए। हम लोगों ने कक्षा प्रारम्भ कर दी। कक्षा में प्रश्न-उत्तर हुए, चर्चा हुई। उसी को आधार बनाकर गुणस्थान, मार्गणा आदि में भी उत्तरोत्तर प्रश्नोत्तर होते-होते एक दिन सबका भाव हुआ कि चउबीस-ठाणा के समान इसे भी प्रश्नोत्तर के रूप में संकलित कर दिया जाये तो संभव है हम जैसे अल्पज्ञ भी करणानुयोग के विषय में कुछ जान पावें। योजना बनी और वहीं से संकलन प्रारम्भ हुआ। संकलन करते-करते एक दिन धवला ग्रंथ में भावों का प्रकरण देखते-देखते कर्म विवक्षा एवं स्थानों का भी प्रकरण देखने को मिला, तो विचार किया, कि इसे भी इसमें संकलित कर दिया जाये तो नया विषय होगा। इस संदर्भ में भी लोगों की जिज्ञासा बढ़ेगी, ज्ञान वृद्धिंगत होगा। इसलिए इसे भी संकलित कर दिया गया।

प्रस्तुत कृति के संकलन का मुख्य उद्देश्य तो अपने समय को धर्मध्यान में व्यतीत करने का ही है तथा हमारे आचार्य गुरुवरों ने अपनी साधना के अमूल्य समय में से समय निकालकर हम जैसे अज्ञानियों के अज्ञान को दूर करने के लिए शास्त्रों की रचना की है। उनका उपकार हम क्या चुका सकते हैं! उन्हीं गुरुवर्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए यह सब कुछ किया है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी शक्ति के अनुसार आचार्यों की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें, ताकि हमारी जिनवाणी अजर-अमर रहे, उसके आधार से ही हम अपनी श्रद्धा को मजबूत बना सकते हैं, ज्ञान को वृद्धिंगत कर सकते हैं, चारित्र में निखार ला सकते हैं, चर्या को सुधार सकते हैं।

यह संकलन **सर्वार्थसिद्धि, तत्त्वार्थराजवार्तिक, धवलाग्रंथ २,५,७** आदि का आधार लेकर ही किया गया है। कार्य पूर्ण होने के बाद इसे कक्षा में भी पढ़ा, कुछ विद्वानों के साथ भी चर्चा की। फिर भी अल्पबुद्धि, उपयोग की चंचलता तथा प्रमाद से, अज्ञान से गलती रहना सम्भव है। आगम अगाध

है, उसमें प्रवेश पाना दुष्कर है। इसलिए इसमें जो गलती हो, उसके लिए जिनवाणी माँ मुझे क्षमा करें। प्राज्ञ पुरुष शुद्ध करके पढ़ें तथा सुधार का आवश्यक संकेत अवश्य दें।

ग्रन्थ तैयार होने के बाद, जितने ग्रंथों के प्रमाण इसमें दिये गये हैं, उन सबको ग्रंथों से २-३ बार मिलाने का कार्य संघस्थ सभी आर्यिकाओं एवं ब्र. बहिनों ने किया है। वास्तव में इन सभी ने अपना सभी कार्य छोड़कर ग्रंथ को पढ़ने-सुनने, शास्त्र इकट्ठे करके प्रमाण मिलाने के कार्य में एकजुट होकर मेरा पूरा-पूरा सहयोग किया है। इसी कारण से यह कार्य करने में मुझे श्रम महसूस नहीं हुआ। इन सभी को गुरुदेव का बहुत-बहुत शुभाशिष, मेरी शुभकामनाएँ। आर्यिका वृंद शीघ्र ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करें, बहिनें रत्नत्रय को धारण कर मानव भव को सार्थक करें। शास्त्र संकलन के फलस्वरूप मेरे दुःखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो, समाधिमरण हो एवं सिद्ध पद की प्राप्ति हो।

परोक्ष-प्रत्यक्ष में सहायता करने वाले सभी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। वे भी यथायोग्य व्रत-संयम को धारणकर अपना कल्याण करें, यही मेरी मनोकामना है।

डॉ. चेतनप्रकाश जी पाटनी, जोधपुर वालों ने अन्य कृतियों की भाँति प्रस्तुत कृति का भी सफल सम्पादन किया है। वृद्धावस्था में भी श्रुत की सेवा का जो महत् कार्य सुव्यवस्थित किया है, वह प्रशंसनीय है, उन्हें गुरुवर का शुभाशिष।

रावतभाटा में विराजमान पार्श्वनाथ भगवान, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, समाधिस्थ दीक्षागुरु आचार्य कल्प श्री विवेकसागर जी महाराज का शुभाशिष और जिनवाणी माँ की कृपा ही प्रस्तुत ग्रंथ के उद्भव में कारण है, यह सब उन्हीं का प्रसाद है, मेरा कुछ भी नहीं है। सभी के चरणारविन्द में कोटि-कोटि नमन-नमन-नमन। प्रथम भाग में प्रमादवश कुछ गलतियाँ रह गयी थीं जो छपने के बाद स्वाध्याय करने पर समझ में आयी थीं, इसलिए पाठक गण सुधार कर पढ़ें।

– आर्यिका विज्ञानमती

卐 अप्रतिम व्यक्तित्व की धनी 卐

फूल अपनी खुशबू फैलाने द्वार-द्वार नहीं जाता, न ही सूरज अपने उगने का संदेश देने घर-घर दस्तक देता है। सूरज के उगने पर सारा संसार अपने आप ही जाग जाता है। चांद अपनी चांदनी बिखेरने किसी के आंगन में नहीं जाता है वरन् चंद्रिका की शीतलता स्वयमेव सभी की तपन शांत करती है और गगन में देदीप्यमान हो चमकती रहती है। ऐसी ही नारी जगत् की देदीप्यमान चंद्रिका हैं हमारी रत्नत्रय-प्रदातृ गुरु माँ **पू. आर्यिकाश्री विज्ञानमती जी** जिनके असाधारण व्यक्तित्व की खुशबू सर्वत्र फैल रही है, जिनका साहित्य पढ़कर देश के कोने-कोने से लोग दर्शन करने चले आते हैं और आकर पाते हैं जैसा पढ़ा-सुना उससे कई अधिक गुना।

पू. आर्यिकाश्री के व्यक्तित्व पर जब हमारी दृष्टि जाती है तो पाते हैं अधरों पर खिली बालसुलभ मुस्कान, निर्विकल्प चेहरे पर मीठी सी जुबान, देखे तो कमल खिले, बोले तो कोयल कूके, चले तो धरती झूमे, हँसे तो फूल झरें। हित-मित-प्रिय आगमोक्त भाषा, संयमित सधी चाल, सुमेरु सी दृढ़ता, ज्ञान-ध्यान, तप में अहर्निश रत, अनुशासित व अनुशासन प्रिय, प्रभु के प्रति समर्पित, गुरुचरणों में अर्पित, महान् तार्किक शैली, सूक्ष्म सुष्ठु चिंतन, समता-साधना-सहजता की संगम, अद्वितीय मेधा की धनी, विद्वत्ता और सरलता, बुद्धिमत्ता और निश्छलता, कठोरता और कोमलता जैसे परस्पर विरोधी आयामों से समन्वित हैं पू. आर्यिकाश्री - ऐसे अप्रतिम व्यक्तित्व के सम्बन्ध में लिखने की सामर्थ्य मुझमें कहाँ है, फिर भी भक्तिवशात् अपने ही कल्याण की इच्छा से लेखनी को गति दे रही हूँ।

गौरवान्वित है उदयपुर जिले का वह भीण्डर नगर और वहाँ पर रहने वाले **बालूलाल जी** का परिवार। जिनका सन् १९६३ का कुँवार अर्थात् कड़वा माह भी मीठा मधुर माह बन गया। क्योंकि यह वही माह है जब आया था यह कन्या रत्न उनके आंगन में। जन्मते ही कन्या की किलकारी सुनकर दादा-दादी को कुछ अलग ही आनंद आया और कन्या ने भी अपनी बाल चेष्टाओं से उन्हें आकर्षित किया तभी तो उन्होंने नाम दिया लीला। बचपन से ही माँ ने धार्मिक संस्कारों से संस्कारित किया तो साधु-संतों के समागम ने उन्हें पुष्टता प्रदान की। लौकिक शिक्षा में पीछे रहकर भी लीला धार्मिक शिक्षा में अग्रणी रही। माँ के द्वारा प्रदत्त संस्कारों ने और अनन्तर आचार्य शिवसागर जी महाराज से प्राप्त संस्कारों ने वैराग्य का बीज वपन कर दिया, अत: अब मन में सिर्फ एक ही भावना कि मुझे बाल ब्रह्मचारिणी रहना है; आर्यिका दीक्षा लेकर स्त्री पर्याय का छेद करना है। अहर्निश भगवान से एक ही प्रार्थना मुझे मोक्षमार्ग पर चलना है। परंतु संकोचशील स्वभाव होने से किसी के सामने अपनी यह भावना अभिव्यक्त नहीं कर पायी।

जैसे ही किशोरावस्था लाँघकर कौमार्य से यौवन की ओर बढ़ने लगी तो माँ-बापू ने आपकी शादी करके अपना कर्त्तव्य पूरा कर लिया। जहाँ चाह हो वहाँ राह मिल ही जाती है। भगवान के सामने भायी गयी भावना सफल हुई। आपके भाग्य से ही आचार्यकल्प विवेकसागर जी महाराज का वर्षायोग

भीण्डर में हो गया। संघस्थ बहिनों ब्र. कुसुम दीदी, ब्र. कंचन दीदी को देखकर आपको ऐसा लगता कि मैं इनसे अपने मन की बात कहूँ तो ये मुझे गुरुवर के चरणों तक पहुँचा देंगी। और ऐसा ही हुआ, फिर क्या था, मिल गया उमड़ते वैराग्य के अंकुर को खाद-पानी। पानी पाते ही अंकुर ने पौधे का रूप लेने का पुरुषार्थ शुरू कर दिया, गुरु रूप माली ने उसे सींचना-सम्हालना भी प्रारंभ कर दिया। गुरु-आशिष का सहारा पाते ही पौधा लहलहाने लगा। फिर उसे शादी का बंधन, माता-पिता का बंधन, कोई भी नहीं रोक पाया। गुरु के चरणों में पहुँचकर संयम, रत्नत्रय को धारण करने की भावना बलवती हो उठी और उनकी भावनाओं को संबल, साहस दिया आर्यिका विशालमती जी ने, तो भावनाओं को साकार कर दिया पू. गुरुदेव ने २ फरवरी १९८५ को कूकनवाली गाँव में और अब **लीला हो गई आ. विज्ञानमती।** तभी से अनवरत अपनी साधना से, चर्चा व चर्या से, त्याग-तपस्या से, साहित्य-रचना से, अध्ययन-अध्यापन से जिनधर्म की प्रभावना करते हुए आत्मकल्याण को मुख्य बनाकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति का पुरुषार्थ कर रही हैं।

पू.आर्यिकाश्री के मानस रूपी मानसरोवर में विविध विधाओं की लहरें निरन्तर लहराती रहती हैं, उनमें से ही एक लहर है प्रस्तुत कृति **पंच भाव प्रश्नोत्तर मंजूषा** जिसमें पंच भावों का आगमोक्त संकलन है जिसे स्वयं का चिन्तन-मनन-मंथन करके विस्तार से भव्य जीवों को समझाया है। वैसे भी देखा जाये तो जैनधर्म भाव प्रधान धर्म है। वस्तुत: भावों की परिकल्पनाएँ ही व्यक्ति को जीवन के परम लक्ष्य का बोध कराती हैं। संसार के भयावह दृश्य का चित्रण ही व्यक्ति के मानस पटल को परिवर्तित करता है। तभी वह अपने आत्मकल्याण के बारे में विचार करता है। प्रसंगवशात् मुझे पू. आर्यिकाश्री का २००० का रहली प्रवास याद आ रहा है। उस समय पू. आर्यिकाश्री ने भावों का खेल बताते हुए चिलातीपुत्र की कथा सुनायी थी- कहाँ वह वासनाओं से आसक्त होकर शादी के मण्डप से दुल्हन को उठा लाया और जब 'वह उसे मिल नहीं सकती है,' ऐसा समझ में आया तो उसकी हत्या कर दी। वृक्ष के इस ओर उसने हत्या की और वृक्ष के उस ओर उसकी दृष्टि गयी, तो पाया दिगम्बर संत को। मुनिराज को देखते ही उसके भाव ऐसे परिवर्तित हुए कि तत्काल ब्रह्मचर्य महाव्रत अर्थात् मुनि बनने के भाव हो गये। उसकी भव्यता को जान कर मुनिराज ने उसे तत्काल दीक्षा भी दे दी। दीक्षा लेते ही ध्यान में खड़े हो गये और पूर्वोपार्जित पाप के उदय से उन पर घोर उपसर्ग हुआ। उपसर्ग में भेद-विज्ञान के माध्यम से (शरीर अलग है आत्मा अलग है) वे सर्वार्थसिद्धि पहुँच गये। एक भव अवतारी बन गये, मोक्ष निश्चित हो गया। यह भावों की महिमा है। तभी से मुझे भावों की महत्ता समझ में आयी। कई बार जब तत्त्वार्थ-सूत्र पढ़ते, टीकाएँ पढ़ते, तब बार-बार ५ भावों को समझते, लेकिन जब पू. आर्यिकाश्री ने कक्षा में सामूहिक रूप से पंचभावों को, इनके उत्तरभेदों को, गुणस्थानों में, मार्गणाओं में, कर्म विवक्षा के संदर्भ में, स्थान आदि में विस्तार से समझाया तो बहुत ही अच्छा लगा। जब हम सब पौष माह की सर्दी में भावों पर चर्चा करने बैठते तो सर्दी है, इस बात की अनुभूति भी नहीं होती। जेठ माह के आसमान से लंबे दिन कब व्यतीत हो जाते पता ही नहीं लगता। १५ किलोमीटर विहार करके भी जब पू. आर्यिकाश्री

पृच्छना रूप में भावों की चर्चा करने लग जाती तो किसी को याद ही नहीं रहता कि हम विहार करके भी आये हैं। मैं यह सब अपनी अनुभूति ही अभिव्यक्त कर रही हूँ। कोई अतिशयोक्ति नहीं कर रही हूँ। सच में करणानुयोग का विषय ऐसा ही है। आप भी अनुभव करके देखना, लगातार ४-५ घंटे तक भी हम आर्त्त-रौद्र ध्यान से बच सकते हैं। उपयोग को एकाग्र कर सकते हैं। पंचम काल में पल-पल पर होने वाले आर्त्त-रौद्र ध्यान से बचने का सशक्त उपाय है जिनागम का अध्ययन-अध्यापन। उस पर भी करणानुयोग का स्वाध्याय।

जैन दर्शन अथाह है, अगाध है। ज्ञान का भण्डार अपने अंदर समेटे हुए प्रतिदिन अपने गहन चिंतन के सागर से अनमोल मणियों को निकालकर ज्ञान-पिपासुओं की प्यास शांत करने में तत्पर पू.आर्यिका श्री निरंतर श्रुतज्ञान की परम्परा में संलग्न, प्रमाद से कोसों दूर, साहित्य-सृजन में अपनी लेखनी को विभिन्न विधाओं पर अविराम श्रम करवाने में निपुण हैं, कुशल हैं, दक्ष हैं।

ज्ञान-ध्यान ही साधक की साधना है, वैराग्य की पुष्टि है। समय का समुचित उपयोग है। सदैव स्वाध्याय में लीन रहकर आचार्यप्रणीत ग्रंथों का संघ में अध्ययन-अध्यापन व अनुशीलन निरंतर चलता रहता है। आपकी चारों अनुयोगों में दक्षता है। आपकी वाणी में आगम और अध्यात्म का सुमेल है। सहज ही जनमानस पापत्याग के लिए प्रेरित होता है। भाषाशैली पर पूर्ण नियंत्रण के साथ निज भावों को सम्हालते हुए सभी को अपने भावों को सम्भालने का ही उपदेश मुख्यत: देती हैं।

पू. आर्यिकाश्री ने न केवल सिद्धान्त ग्रन्थों को ही सरल किया है वरन् सामाजिक, पारिवारिक, वैयक्तिक और नैतिक बिन्दुओं पर भी जनमानस को झकझोर देने वाला साहित्य समाज को दिया है। जैसे- संस्कार-मंजूषा, विवेक-मंजूषा, शील-मंजूषा, अनर्थदण्ड क्या, बहू कैसी, समझदार बेटा, अच्छी सास, पलायन क्यों....आदि, इन कृतियों का अध्ययन कर अध्येता सुख-शांति से जिंदगी जीकर दुर्गतियों से बच सकता है। आपने भगवद् भक्ति में भी अपनी लेखनी को प्रवृत्त किया है। अनेक विधान, भक्तिपाठ, महाकाव्य, चम्पूकाव्यों का भी सृजन किया है। आपकी लेखनी सतत चलती रहती है, कभी थमती नहीं है, क्योंकि थकती नहीं है। मैं तो जिनेन्द्र देव से यही प्रार्थना करती हूँ कि हमारी गुरु माँ की लेखनी इसी प्रकार अनवरत चलती रहे ताकि हम जैसे अज्ञ प्राणी अपनी आत्मा को पापों से बचाने का मार्ग पाते रहें। आपका साहित्य हमें देता है सकारात्मक विचार-सही भी है क्योंकि सकारात्मक विचारधारा ही समाज में, व्यक्ति में परिवर्तन ला सकती है।

प्रस्तुत कृति भी हमें देगी वो आयाम जिससे संभाल सकेंगे हम अपने परिणामों को और परिणाम संभल गये तो समझना भव सुधर गया, मानव पर्याय पाना सार्थक हो गया। मुझे विश्वास है, पाठकगण प्रस्तुत कृति का स्वाध्याय करके अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने का पुरुषार्थ करने के लिए उद्यत होंगे। सभी की भावना निर्मल-निर्मलतर-निर्मलतम बने। इसी भावना से पू. आर्यिकाश्री के श्रीचरणों में वंदामि।

– आर्यिका आदित्यमती, संघस्थ

卐 आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी : जीवन-झाँकी 卐

पूर्वनाम	:	लीला
पिताश्री	:	बालूलाल जी (समाधिस्थ मुनि श्री यशसागर जी)
माता	:	श्रीमती कमला जी
जन्मतिथि	:	मिति आश्विन शुक्ला पंचमी, सन् १९६३
जन्मस्थान	:	भीण्डर (उदयपुर-राजस्थान)
लौकिक शिक्षा	:	हाई स्कूल
परिणय	:	भीण्डर में ही, १८ वर्ष की आयु में, सन् १९८१
गृह त्याग	:	परिणय के १८ माह बाद
प्रतिमा धारण	:	अलोध में ५ प्रतिमा, कुचामन में ९ प्रतिमा के व्रत
आर्यिका दीक्षातिथि	:	२ फरवरी १९८५, कूकनवाली (कुचामन सिटी-राजस्थान)
दीक्षागुरु	:	परम पूज्य आचार्यकल्प श्री विवेकसागर जी मुनिराज
रुचियाँ	:	स्वाध्याय, तप-त्याग, चिन्तन-मनन, लेखन
विशिष्टता	:	मधुर, गम्भीर पौराणिक शैली में प्रवचन
कृतियाँ	:	**पद्यात्मक :** तत्त्वार्थसूत्र विधान, सम्मेदशिखर विधान, चौंसठ ऋद्धि विधान, बड़े बाबा विधान, रक्षाबंधन विधान, भूषणद्वय महाकाव्य, भक्तिपुञ्ज मञ्जूषा, सम्मेदशिखर माहात्म्य पूजन मञ्जूषा, कल्पद्रुम मण्डल विधान, शान्ति विधान, वर्द्धमान महावीर विधान, अरनाथ विधान, पार्श्वनाथ विधान, धीवर की धी, सुदर्शन चरित्र, सती सीता चरित्र, सती मनोरमा चरित्र, सहस्रनाम विधान **गद्यात्मक :** तत्त्वार्थ मञ्जूषा १-२, चउबीस ठाणा प्रश्नोत्तरी, संस्कार मञ्जूषा १-२, शीलमञ्जूषा, सच्चे देव का स्वरूप, पलायन क्यों, भोगोपभोग परिमाण विधि, बाल संस्कार मञ्जूषा १-२, पंचभाव प्रश्नोत्तर मंजूषा १,२, अनर्थदण्ड क्या?, विवेक मंजूषा, बहू कैसी, अच्छी सास, समझदार बेटा, संस्कारित बेटी, प्रवचन मंजूषा १-२।

दीक्षित शिष्याएँ : आर्यिका वृषभमती, आर्यिका आदित्यमती, आर्यिका पवित्रमती, आर्यिका गरिमामती, आर्यिका सम्भवमती, आर्यिका वरदमती, आर्यिका शरदमती, आर्यिका चरणमती, आर्यिका करणमती, आर्यिका शरणमती, आर्यिका सुवीरमती, आर्यिका सुयशमती, आर्यिका उदितमती, आर्यिका रजतमती।

वर्षायोग स्थल :

१९८५ गुरुदेव के साथ मारोठ	*१९८६ मदनगंज-किशनगढ़
१९८७ अजमेर	१९८८ सिंगोली
१९८९ रामगंजमण्डी	१९९० शाहपुर
१९९१ रहली	१९९२ कटंगी
१९९३ हरदा	१९९४ नीमच,
१९९५ बिजौलिया	१९९६ केकड़ी
१९९७ नसीराबाद,	१९९८ नसीराबाद
१९९९ आष्टा	२००० केसली
२००१ सम्मेदशिखर,	२००२ आरौन
२००३ मालथौन	२००४ करमाला
२००५ पाण्डिचेरी	२००६ श्रीरामपुर
२००७ घुवारा	२००८ तेन्दूखेड़ा
२००९ बामौरकलाँ	२०१० रावतभाटा
२०११ किशनगढ़	२०१२ भीण्डर
२०१३ घाटोल	२०१४ बागीदौरा

२०१५ जैन नगर, श्री नन्दीश्वर द्वीप जिनालय, लालघाटी, भोपाल

---

* १९८६ से १९९६ तक आर्यिका विशालमती जी के साथ।

卐 हमारे हृदयोद्गार 卐

शुभ-अशुभ भावों के भँवर जाल से संसार-समुद्र की लहरों के साथ गोते खाते-खाते जिन्दगी का क्रम समय के साथ बीता जा रहा था। अचानक योग बना आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी ससंघ के वर्षायोग २०१२ भीण्डर (राजस्थान) चातुर्मास का। लहरें थमीं, साँस रुकी एवं आर्यिका संघ ने जीवनोत्थान रूपी आगमानुकूल साधुचर्या की मूल प्रति भींडर पर अंकित कर दी। इतिहास स्वयं पर गर्व करने लगा। इसी माटी पर जन्मी नन्ही मुन्नी बालिका ने जीवन उत्थान के इतने सोपान तय कर भगवान महावीर के अहिंसा-अनेकान्त के सप्तभंगी रूपी इन्द्रधनुषी सप्त रंग अपने प्राणों में बसा लिये। अरावली पर्वतमाला की प्राकृतिक छटाओं से घिरे उदयपुर जिले की भीण्डर नगरी को भारतवर्ष में धर्म-नगरी कहा जाता है। उसी भीण्डर की इस प्यारी दुलारी ने धर्म को आत्मसात् करके धर्मनगरी नाम सार्थक कर दिया।

प्यारी बिटिया ने लगभग २९ वर्ष पूर्व जन्म स्थान भीण्डर नगरी से विश्व का सबसे कठिनतम मार्ग 'मोक्षमार्ग' चुना था। अनवरत यात्रा तय करते-करते स्व कल्याण का रास्ता बनाने में आए सम्पूर्ण उपसर्ग, परिषह एवं संघर्ष को मोतियों की माला समझकर उत्साह पूर्वक स्वयं को साधा एवं साधक से साध्य की दूरी कम की। रास्ते की कठिनाइयों का स्वयं ने पान किया एवं हजारों लाखों साधकों, श्रावकों, बच्चों, युवाओं, वृद्धों को धर्मामृत पिलाती चली आ रही है। चिरप्रतीक्षित भीण्डर नगरी का भाग्य जगा तो अमृतवर्षा के बादल अरावली पर्वतमाला से उमड़-घुमड़ कर भीण्डर को ओतप्रोत कर गए।

जी हाँ, सज्जनो! यही वह क्षण था जब हमारी लाड़ली बहिन लीला स्व नगर में प्रकट हुई एक तपस्विनी आर्यिका विज्ञानमती माताजी के रूप में। जीवन के प्रत्येक क्षण को मानों ज्ञान, ध्यान, तप, आराधना में समर्पित करती हुई, आचार्य समन्तभद्र के कथन को साकार करती हुई।

विषयाशावशातीतो, निरारम्भोऽपरिग्रहः ज्ञानध्यानतपोरक्तस्तपस्वी सः प्रशस्यते ।।१०।।

विषयों की आशाओं के वश से रहित, आरम्भों से रहित, परिग्रहों से रहित और ज्ञान, ध्यान तथा तप में लवलीन हो वह साधु प्रशंसनीय है। उपर्युक्त कथन **रत्नकरण्ड श्रावकाचार** के सूत्र १० से यात्रा करते हुए आर्यिका संघ की चर्या के अंग-अंग में प्रतिपल उद्घाटित हो रहा था। भींडर नगरी का विवेकशील समाज आचार्य समन्तभद्र की वाणी का बहुमान करते हुए संघ को पलकों पर बिठा, धर्माराधना में संलग्न हो गया था।

नन्ही मुन्नी बालिका को इस दिशा में समर्थ बनाने वाले हमारे पूजनीय पिताजी श्री बालूलाल जी हर्षोल्लास से ओतप्रोत थे जब आर्यिका श्री ने २०१२ में भीण्डर की ओर कदम बढ़ाए एवं चातुर्मास हेतु प्रवेश किया। गृहस्थ अवस्था में श्रावक धर्म का पालन करते हुए धर्मपरायणा माँ कमलादेवी के साथ शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखरजी की १०८ वन्दनाएँ सम्पन्न कीं।

चातुर्मास - २०१२ में आपने भी प्रेरणा ली एवं जीवन को परिशोधित करते हुए २९ अप्रेल २०१५ को आचार्य श्री वर्धमान सागरजी म. से मुनिदीक्षा ग्रहण की। दुनिया के सबसे अद्‌भुत कार्य ''सल्लेखना-समाधि'' को ग्रहण कर ५ मई २०१५ को समता में स्थिर हो समाधिस्थ हो गए। अपने जीवन की साधना, सरलात, स्थिरता, दृढ़निश्चय, कष्टसहिष्णुता आदि गम्भीर गुणों के बल पर पिताश्री, पूज्य आचार्यश्री के कुशल मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद स्वरूप **मुनि १०८ श्री यश सागर जी महाराज** के रूप में समाधिस्थ हुए। उन्हें बारम्बार नमोस्तु करते हुए सकल परिवार अपनी विनयांजलि निवेदित करता है।

आर्यिकाश्री द्वारा सतत अध्ययन, अध्यापन, लेखन आदि से हमें ज्ञात हुआ कि अभी आर्यिकाश्री का जीव के विलक्षण ५३ भावों पर गहन अध्ययन-चिंतन, मनन, प्रश्नोत्तर, चर्चा आदि का कार्यक्रम चल रहा है। विषय की गंभीरता एवं उपयोगिता एकसाथ प्रकट हो रही थी पर हमारा क्षयोपशम उतना ग्रहण नहीं कर पा रहा था। उसी दौरान हमारे पुत्र - हेमंत और दीपक, जो व्यवसाय हेतु सूरत में रहते हैं, आर्यिकाश्री के दर्शनार्थ भीण्डर आये। पूरे परिवार का उत्साहपूर्वक भाव बना कि क्या **'पञ्च भाव प्रश्नोत्तर मञ्जूषा'** के प्रकाशन में अपना अर्थ (धन) उपयोग में आ सकता है? इसके साथ ही भावों का प्रकटीकरण एवं उन्हें मूर्त रूप में लाना हम सबका एक सुखद लक्ष्य बन गया। समय बीतता गया एवं आर्यिकाश्री का यह शोधपूर्ण संकलन कार्य चलता रहा, हम भी हमारे लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रयासरत रहे। समय ने साथ दिया, आर्यिकाश्री का शुभाशिष मिला एवं पुण्योदय से यह कार्य मूर्त रूप में प्रकट हुआ। पूज्य आर्यिकाश्री को कोटिश: वन्दामि। आपकी भावनाओं एवं प्रवचनों से स्व-पर उपकार हो रहा है, आपकी कृतियों के माध्यम से यह कार्य आगे भी होता रहेगा। धन्य हैं आप और हम सब ऋणी हैं आपके उपकार के।

'पञ्च भाव प्रश्नोत्तर मञ्जूषा' पूज्य **आर्यिका १०५ श्री विज्ञानमती माताजी** ससंघ के अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग के फलस्वरूप प्रसूत एक गम्भीर ग्रन्थ है।

पूज्य आर्यिका माँ ने सतत अभ्यास की मथनी से आगम को मथकर प्रश्नोत्तर रूप में नवनीत जमा किया है, इसका सेवन स्वाध्यायी पाठक को स्वयं की अनुभूति-पहचान-श्रद्धान-ज्ञान-आचरण आदि का प्रबल निमित्त बने, इसी भावना के साथ।

विनीत

पिस्ता विमलप्रसाद जैन
भीण्डर (राजस्थान)

卐 ग्रन्थ- सूची 卐

क्र.	संकेत	ग्रन्थ का नाम	ग्रंथकर्त्ता
१.	आ.सा.	आराधना सार/अधिकार सं./गाथा संख्या	आ. देवसेन स्वामी
२.	आ.समु.	आराधना सार समुच्चय/गा.सं.	आ. श्री रविचंद्र स्वामी
३.	क.प्र.	कर्म-प्रकृति/गाथा सं.	आ.श्री नेमिचंद्र
४.	का.अ.	कार्तिकेयानुप्रेक्षा गाथा सं.	आ.श्री कार्तिकेय स्वामी
५.	गो.जी.जी.	गोम्मटसार जीवकाण्ड/जीवप्रबोधिनी टीका	केशव वर्णी जी
६.	गो.क.जी.प्र.	गोम्मटसार कर्मकाण्ड/जीव प्रबोधिनी टीका	केशव वर्णी जी
७.	गो.जी.	गोम्मटसार जीवकाण्ड/ गा.सं.	आ.श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती
८.	गो.क.	गोम्मटसार कर्मकाण्ड/गा.सं.	आ.श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती
९.	चा.सा.	चारित्रसार	मुनि चामुण्डराय
१०.	ज.ध.	जय धवल/पुस्तक सं./पृ.सं.	आ. वीरसेन स्वामी
११.	त.सा.	तत्त्वार्थ सार/अधि.सं./गा.सं.	आ. अमृतचंद्र स्वामी
१२.	त.सू.	तत्त्वार्थ सूत्र/अध्याय सं./सू.सं.	आ.उमास्वामी
१३.	ति.प.	तिलोयपण्णत्ति/अधि.सं./गा.सं.	आ. यतिवृषभ महाराज
१४.	द्र.सं.	द्रव्य-संग्रह/गा.सं.	आ. श्री नेमिचंद्र
१५.	ध.	धवला/पुस्तक सं./पृ.सं.	आ. वीरसेन स्वामी
१६.	न.च.वृ.	नयचक्र वृत्ति/गा.सं.	आ.माइल्ल धवल
१७.	नि.सा.ता.	नियमसार/गाथा सं. तात्पर्य वृत्ति	आ. कुन्दकुन्द स्वामी (मुनि पद्मप्रभ मल्लधारी देव)
१८.	प.सा.	परमागम सार/गा.सं....	
१९.	पं. का.	पंचास्तिकाय/गा.सं.	आ. कुन्दकुन्द स्वामी
२०.	पं.सं.	पंच संग्रह/अधि.सं./गा.से.	अज्ञात
२१.	पं.सं.प्रा.	पंच संग्रह प्राकृत/अधि.सं./गा.सं.	अज्ञात
२२.	पं.सं.सं.	पंच संग्रह संस्कृत/अधि.सं./गा.सं.	आ. अमितगति
२३.	पं.का.स.	पंचास्तिकाय समय व्याख्या/गा.सं.	आ.अमृतचंद्र स्वामी
२४.	प.प्र.	परमात्म प्रकाश/अधि.सं./गा.सं.	आ.ब्रह्मदेव सूरि
२५.	प्र.सा.ता.	प्रवचनसार तात्पर्य वृत्ति/गा.सं.	आ. जयसेन स्वामी
२६.	पु.सि.	पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय/गा.सं.	आ.अमृतचंद्र स्वामी
२७.	वृ.द्र.सं.	वृहद् द्रव्य संग्रह टीका/गाथा संख्या	आ. ब्रह्मदेव सूरि

क्र.	संकेत	ग्रन्थ का नाम	ग्रंथकर्त्ता
२८.	भ.आ.	भगवती आराधना/गा.सं.	आ. शिवकोटि
२९.	म.पु.	महापुराण सर्ग सं./गा.सं.	आ. जिनसेन
३०.	मू.प्र.	मूलाचार प्रदीप/गा.सं.	आ. सकलकीर्ति
३१.	मू.आ.	मूलाचार आचार वृत्ति/गा.सं.	आ.वट्टकेर स्वामी
३२.	य.ति.च.	यशस्तिलक चम्पू काव्य/अधि.सं./गा.सं.	आ. सोमदेव सूरि
३३.	यो.सा.	योगसार अधि.सं./गा.सं.	आ.अमितगति
३४.	र.क.श्रा.	रत्नकरण्ड श्रावकाचार/गा.सं.	आ. समन्तभद्र स्वामी
३५.	रा.वा.	राजवार्तिक अध्याय सं./सूत्र सं.	आ. अकलंक देव
३६.	ल.सा.	लब्धिसार/गा.सं.	आ.नेमिचंद्र
३७.	स.सू.	सन्मति-सूत्र/अधि.सं./गा.सं.	सिद्धसेनाचार्य
३८.	सर्वा.	सर्वार्थसिद्धि/अध्याय सं./सू.सं.	आ. पूज्यपाद स्वामी
३९.	स.सा.आ.	समयसार आत्मख्याति/गा.सं.	आ.अमृतचंद्र
४०.	सु.बो.त.वृ.	सुखबोधा तत्त्वार्थ वृत्ति/पृष्ठ सं.	मुनि भास्करनंदी
४१.	श.चू.	शतक-चूर्णिका	आ. शिवशर्मा जी
४२.	श्लो.वा.	श्लोकवार्तिक/पुस्तक सं. /पृ.सं.	आ. विद्यानंद स्वामी
४३.	वी.व.चा.	वीरवर्द्धमान चारित्र/सर्ग सं./श्लोक सं.	आ. सकलकीर्ति
४४.	ज्ञा.	ज्ञानार्णव अधिकार सं./गा.सं.	शुभचंद्र आचार्य
४५.	सि.सा.दी.	सिद्धान्तसार दीपक अधिकार सं./गा.सं.	आ. सकलकीर्ति

卐 अनुक्रम 卐

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

卐 शास्त्रस्वाध्याय का प्रारम्भिक मंगलाचरण 卐

ॐ नमः सिद्धेभ्यः! ॐ नमः सिद्धेभ्यः! ॐ नमः सिद्धेभ्यः!

ओकारं बिन्दुसंयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमोनमः॥

अविरलशब्दघनौघ-प्रक्षालितसकल-भूतलकलङ्का।
मुनिभिरुपासिततीर्था, सरस्वती हरतु नो दुरितम्॥

अज्ञानतिमिरान्धानां, ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

❋

श्रीपरमगुरवे नमः, परम्पराचार्यगुरुभ्यो नमः। सकलकलुषविध्वंसकं, श्रेयसां परिवर्धकं, धर्मसम्बन्धकं, भव्यजीवमनःप्रतिबोधकारकं, पुण्यप्रकाशकं, पापप्रणाशकमिदं शास्त्रं **'पञ्चभाव प्रश्नोत्तर मञ्जूषा'** नामधेयं अस्य मूलग्रन्थकर्तारः श्रीसर्वज्ञदेवास्तदुत्तरग्रन्थकर्तारः श्रीगणधरदेवाः प्रतिगणधरदेवास्तेषां वचोऽनुसारतामासाद्य पूज्य **आर्यिकाश्रीविज्ञानमतीसंकलितं** विरचितं इदं शास्त्रं। श्रोतारः सावधानतया शृण्वन्तु।

❋

मङ्गलं भगवान् **वीरो,** मङ्गलं **गौतमो** गणी।
मङ्गलं **कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु** मङ्गलम्॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्॥

ॐ

।। श्रीवीतरागाय नमः ।।

卐 पञ्च भाव 卐

प्रश्नोत्तर मञ्जूषा

प्रश्न : भाव किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्मों के उपशम क्षय आदि के निमित्त से जीव के जो परिणाम विशेष होते हैं उन्हें **भाव** कहते हैं।

चेतन के परिणाम को भाव कहते हैं। **(गो.जी.जी. १६५)**

पदार्थों के परिणाम को भाव कहते हैं। **(ध. १/१५९)**

भाव नाम जीव के परिणाम का है, जो तीव्र-मंद निर्जरा भाव आदि के रूप से अनेक प्रकार का है। **(ध. ५/१८६)**

कर्म विशेष के उपशम आदि के आश्रय से जो जीव की परिणति होती है उसे भाव कहते हैं।

प्रश्न : जीव के कितने भाव होते हैं-

उत्तर : जीव के मुख्य रूप से पाँच भाव होते हैं -

(१) औपशमिक भाव (२) क्षायिक भाव (३) मिश्र भाव (४) औदयिक भाव (५) पारिणामिक भाव। **(पं. का. ५६ समयव्याख्या)**

जीव गुण पाँच हैं, उनमें उपाधि का चतुर्विधपना जिनका कारण है ऐसे चार हैं तथा स्वभाव जिसका कारण है ऐसा एक है। उपाधि के भेद से एवं स्वरूप के भेद से भेद करने पर उन्हें अनेक प्रकारों में विस्तृत किया जाता है। **(पं. का. ५६ स.)**

जीव के औपशमिकादि पाँचों भाव होते हैं एवं इन पाँच भावों के परस्पर संयोग से उत्पन्न हुआ **सान्निपातिक** नामका एक छठा भाव भी आचार्यों ने माना है। **(ज्ञा. ६/४२)**

प्रश्न : **औपशमिक भाव किसे कहते हैं ?**

उत्तर : कर्मों के उपशम से उत्पन्न होने वाला भाव औपशमिक भाव कहलाता है। **(ध. ५/२०५)**

कर्म जिन स्वभावों को बिगाड़ता है, वे स्वभाव जब तक कर्मोदय न होने से न बिगड़ें तब तक औपशमिक भाव कहलाते हैं। **(पं.सं.१/१४)** कर्मों का फलदान समर्थ रूप से अनुद्भव सो उपशम है। उपशम युक्त वह औपशमिक है। **(पं.का.५६ स.)** जैसे कतक फल या निर्मली के डालने से मैले पानी का मैल नीचे बैठ जाता है और जल निर्मल हो जाता है, उसी प्रकार परिणामों की विशुद्धि से कर्मों की शक्ति का अनुद्भूत रहना (प्रगट न होना) उपशम है तथा उपशम जिसका प्रयोजन है वह औपशमिक भाव है। **(रा.वा.२/१)**

जो कर्मों के उपशम से उत्पन्न होता है उसे **औपशमिक भाव** कहते हैं, क्योंकि गुणों के साहचर्य से आत्मा भी गुण संज्ञा को प्राप्त होता है। **(ध. १/१६२)**

प्रश्न : **क्षायिक भाव किसे कहते हैं?**

उत्तर : कर्मों का क्षय होने पर उत्पन्न होने वाला भाव क्षायिक भाव है तथा कर्मों के क्षय के लिए उत्पन्न हुआ क्षायिक भाव है, ऐसे दो प्रकार की शब्द व्युत्पत्ति ग्रहण करनी चाहिए। **(ध. ५/२०६)** कर्मों की अत्यन्त निवृत्ति को क्षय कहते हैं। जैसे-जिस जल का मैल नीचे बैठा हो उसे यदि दूसरे पवित्र पात्र में रख दिया जाता है तो उसमें अत्यन्त निर्मलता आ जाती है, उसी प्रकार आत्मा से कर्मों की अत्यन्त निर्वृत्ति अर्थात् नाश हो जाने से जो आत्यन्तिक विशुद्धि होती है, वह क्षय कहलाती है तथा कर्मों का क्षय जिसमें प्रयोजन भूत है वह **क्षायिक भाव** है। **(रा.वा. २/१)**

कर्म क्षय होने पर जो-जो स्वभाव प्रकट हों, वे क्षायिक भाव हैं। **(पं.सं.सं. १/१४)**

प्रश्न : **क्षायोपशमिक (मिश्र) भाव किसे कहते हैं?**

उत्तर : कर्मों के उदय के साथ चेतन गुणों का प्रगट होना क्षायोपशमिक भाव है। **(पर.सा. ९८)**

क्षीणाक्षीण मद शक्ति वाले कोदों के समान उभयात्मक परिणाम को मिश्र/क्षायोपशमिक भाव कहते हैं। जैसे जल से प्रक्षालन करने पर कोदों की मदशक्ति कुछ क्षीण हो जाती है और कुछ अक्षीण। उसी प्रकार यथोक्त क्षय के कारणों के सन्निधान होने पर कर्मों के एकदेश क्षय और एक-देश कर्मों की शक्ति का उपशम होने पर उभयात्मक मिश्र भाव होता है। क्षय और उपशम रूप प्रयोजन होने से क्षायोपशमिक भाव होता है। **(रा.वा.२/१)**

आत्मगुण स्वभाव को घातने वाला कर्म कुछ तो अनायास क्षीण हो गया हो और कुछ रहते हुए भी उदयगत न हुआ हो इस प्रकार दो दृष्टि से उस स्वभाव को प्रगट होने में मौका मिला हो तो उसे क्षायोपशमिक भाव कहते हैं। **(पं.सं. १/१४)**

कर्मों के उदय होते हुए भी जो जीव गुण का खण्ड (अंश) उपलब्ध रहता है वह क्षायोपशमिक भाव है। **(ध. ५/१८५)**

सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय तथा आगे उदय में आने वाले उन्हीं का सत्ता में उपशम तथा देशघाति स्पर्धकों का उदय होते हुए क्षायोपशमिक भाव होता है।

प्रश्न : क्षायोपशमिक भाव कैसे उत्पन्न होता है?

उत्तर : उदय प्राप्त सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय होने पर, अनुदय प्राप्त सर्वघाति स्पर्धकों का सदवस्थारूप उपशम होने पर तथा देशघाति स्पर्धकों का उदय होने पर क्षायोपशमिक भाव होता है। **(रा.वा. २/५)**

प्रश्न : उदयाभावी क्षय किसे कहते हैं?

उत्तर : जब सर्वघाति स्पर्धकों का उदय होता है, जब आत्मा के गुण की तनिक भी अभिव्यक्ति नहीं होती इसलिए उस उदय के अभाव को उदयाभावी क्षय कहते हैं। **(रा.वा.२/१)**

सर्वघाति स्पर्धक अनन्तगुणे हीन होकर और देशघाति स्पर्धकों में परिणत होकर उदय में आते हैं।

उन सर्वघाति स्पर्धकों का अनन्तगुण हीनत्व ही क्षय कहलाता है। **(ध.७/९२)**

प्रश्न : सदवस्था रूप उपशम किसे कहते हैं?

उत्तर : अनुदय प्राप्त सर्वघाति स्पर्धकों की सदवस्थाउपशम संज्ञा है, क्योंकि उनकी शक्ति अभी प्रगट नहीं है **(रा.वा. २/५)** सत्ता में स्थित आगामी सर्वघाति कर्म स्पर्धकों को असमय में उदय में नहीं आने देना सदवस्था रूप उपशम कहलाता है। **(सु.बो.त.वृ. ८१)**

प्रश्न : स्पर्धक किसे कहते हैं?

उत्तर : सर्व जीव राशि के अनन्तगुणे प्रमाण ऐसे सर्व जघन्य अविभागी प्रतिच्छेदों की राशि को एक वर्ग कहते हैं। वर्ग के समूह को वर्गणा कहते हैं और वर्गणा के समूह को स्पर्धक कहते हैं। **(रा.वा.२/४)**

प्रश्न : स्पर्धक कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : स्पर्धक दो प्रकार के होते हैं -

(१) सर्वघाती स्पर्धक (२) देशघाति स्पर्धक

सर्वघाती स्पर्धक जो आत्मा के गुणों का सर्व प्रकार से आच्छादन करने वाली कर्म शक्तियाँ हैं वे सर्वघाति स्पर्धक कहलाती हैं। **(वृ.द्र.सं.टी. ३४)** जैसे केवलज्ञानावरण कर्म के सर्वघाती स्पर्धकों का उदय रहने से किञ्चित् भी केवलज्ञान प्रकट नहीं होता है।

देशघाती स्पर्धक - विवक्षित एकदेश से जो आत्मा के गुणों का आच्छादन करने वाली कर्म शक्तियाँ हैं वे देशघातिस्पर्धक कहलाती हैं। **(वृ.द्र.सं.टी. ३४)** जैसे मतिज्ञानावरण कर्म के देशघाती स्पर्धकों का उदय रहते हुए मतिज्ञान प्रगट रहता है। **(रा.वा. २/५)**

प्रश्न : औदयिक भाव किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्म के उदय से उत्पन्न भाव औदयिक भाव कहे जाते हैं। **(ध. ५/१८५)**

द्रव्यादि के निमित्त से विपच्यमान कर्मों के फल देने को उदय कहते हैं और उदय ही जिसका प्रयोजन है वह औदयिक भाव है। **(त.सा. २/३)**

कर्म में फलदान अर्थात् फल देने का सामर्थ्य प्रगट होना उदय है, उदय में जो हो वह औदयिक भाव है। **(सु.बो.ता.वृ. ७७)**

प्रश्न : पारिणामिक भाव किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो कर्मों के उदय, उपशम, क्षय और क्षयोपशम की अपेक्षा बिना जीव के स्वभाव मात्र से उत्पन्न होता है, उसे पारिणामिक भाव कहते हैं। **(ध. १/१६२)**

जो क्षायिक उपशम आदि चारों भावों से व्यतिरिक्त जीव-अजीवगत भाव है वह पारिणामिक भाव है। **(ध. ५/१८५)**

अनन्तों भाव ऐसे हैं जिनका कर्म से सम्बन्ध नहीं है वे पारिणामिक भाव कहलाते हैं। **(पं.सं. १/१४)** जिसमें कर्मों का उपशम, क्षय, क्षयोपशम तथा उदय किसी की अपेक्षा नहीं होती है, वह पारिणामिक भाव है।

भावों में गुणस्थान

क्र.	भाव	गुणस्थान	विवरण
(१)	औपशमिक	८	चौथे से ग्यारहवें तक
(२)	क्षायिक	११	चौथे से चौदहवें तक
(३)	क्षायोपशमिक	१२	पहले से बारहवें तक
(४)	औदयिक	१४	पहले से चौदहवें तक
(५)	पारिणामिक	१४	पहले से चौदहवें तक

प्रश्न : तीन भाव किस-किस गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : तीन भाव पाँच गुणस्थानों में होते हैं -

पहले दूसरे तीसरे-क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक।

तेरहवें चौदहवें-क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक।

क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा चौथे गुणस्थान से सातवें गुणस्थान तक भी तीन भाव होते हैं - क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक।

प्रश्न : किस-किस भाव में बराबर गुणस्थान होते हैं ?

उत्तर : दो भावों में बराबर गुणस्थान होते हैं -

औदयिक एवं पारिणामिक

इन दोनों में पहले से चौदहवाँ गुणस्थान होता है।

प्रश्न : चार भाव किस-किस गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : चार भाव वाले गुणस्थान

सामान्य रूप से मात्र १२ वें गुणस्थान में चार भाव होते हैं-

यहाँ क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक तथा पारिणामिक।

विशेष - क्षायिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा -

चौथे से सातवें गुणस्थान में

क्षपक श्रेणी में - आठवें, नवें, दसवें गुणस्थान में।

उपर्युक्त स्थानों में औपशमिक भाव नहीं होता है

उपशम सम्यग्दृष्टि के चौथे गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान तक ८ गुणस्थानों में चार भाव होते हैं -

औपशमिक, क्षायोपशमिक, औदयिक और पारिणामिक।

प्रश्न : कितने भावों में बारह गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव में बारह गुणस्थान होते हैं -

क्षायोपशमिक भाव, इसमें पहले से बारहवाँ गुणस्थान होता है।

प्रश्न : किस भाव में सबसे कम गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : औपशमिक भाव में केवल ८ गुणस्थान होते हैं -

इसमें चौथे से ग्यारहवाँ गुणस्थान होता है।

प्रश्न : कितने भावों में पहला गुणस्थान भी होता है और बारहवाँ भी?

उत्तर : तीन भावों में पहला गुणस्थान भी होता है और बारहवाँ भी -

क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक।

गुणस्थानों में भाव

क्र.	गुणस्थान	भाव	विवरण
(१)	पहले से तीसरे तक	३	क्षायो.औद.पारि.
(२)	चौथे से ग्यारहवें तक	५	औ.क्षा.क्षायो.औद. पारि.
(३)	बारहवाँ	४	औपशमिक भाव नहीं है।
(४)	तेरहवाँ चौदहवाँ	३	क्षा.औद.पारि.
(५)	गुणस्थानातीत	२	क्षायिक और पारिणामिक

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में पाँचों भाव होते हैं?

उत्तर : आठ गुणस्थानों में पाँचों भाव होते हैं -

चौथे से ग्यारहवें तक।

आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व के साथ उपशम श्रेणी चढ़ने की अपेक्षा। यहाँ क्षायिक सम्यक्त्व एवं औपशमिक चारित्र रूप भाव होने से पाँचों भाव होते हैं।

चौथे से सातवें गुणस्थान तक औपशमिक सम्यक्त्व एवं क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में औपशमिक भाव नहीं पाया जाता है?

उत्तर : छह गुणस्थानों में औपशमिक भाव नहीं पाया जाता है -

पहला, दूसरा, तीसरा, बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ।

गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान के भी औपशमिक भाव नहीं होता है।

क्षपक श्रेणी वालों के तथा क्षायिक सम्यग्दृष्टि चौथे से सातवें गुणस्थान तक भी औपशमिक भाव नहीं है।

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ भी औपशमिक भाव नहीं होते हैं।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में औदयिक एवं क्षायिक दोनों भाव होते हैं?

उत्तर : ग्यारह गुणस्थानों में औदयिक एवं क्षायिक दोनों भाव होते हैं -

चौथे से चौदहवें गुणस्थान तक।

चौथे, पाँचवें, छठे, सातवें तथा ग्यारहवें गुणस्थान में औदयिक भाव के साथ क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव होता है।

आठवें, नवें, दसवें तथा बारहवें गुणस्थान में औदयिक भाव के साथ क्षायिक सम्यक्त्व एवं क्षायिक चारित्र रूप भाव होते हैं।

तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान में औदयिक भाव के साथ पूरे क्षायिक भाव होते हैं।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में क्षायोपशमिक भाव नहीं होता है?

उत्तर : केवल दो गुणस्थानों में क्षायोपशमिक भाव नहीं होता है -

तेरहवें, चौदहवें में।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में क्षायिक भाव होता है लेकिन औपशमिक भाव नहीं होता?

उत्तर : तीन गुणस्थानों में क्षायिक भाव तो होता है लेकिन औपशमिक भाव नहीं होता -

बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ।

गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान के भी क्षायिक भाव होता है लेकिन औपशमिक भाव नहीं होता। क्षपकश्रेणी एवं क्षायिक स. दृष्टि के ४वें, ५वें, ६वें, ७वें गुणस्थान में भी औपशमिक भाव नहीं है।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में औदयिक भाव होता है लेकिन क्षायिक भाव नहीं होता?

उत्तर : तीन गुणस्थानों में औदयिक भाव होता है लेकिन क्षायिक भाव नहीं होता-

पहला, दूसरा, तीसरा।

चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक उपशम सम्यग्दृष्टि के भी औदयिक भाव होता है लेकिन क्षायिक भाव नहीं होता, क्योंकि एक सम्यक्त्व के साथ दूसरा सम्यक्त्व नहीं होता तथा उपशम सम्यग्दृष्टि क्षपक श्रेणी नहीं चढ़ता इसलिए उसके आठवें आदि गुणस्थानों में भी क्षायिक भाव नहीं होता है।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में औपशमिक एवं क्षायिक दोनों भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : तीन गुणस्थानों में औपशमिक एवं क्षायिक दोनों भाव नहीं होते हैं, क्योंकि इन गुणस्थानों में मोहनीय कर्म का उपशम और क्षय नहीं होता है-

पहला, दूसरा, तीसरा।

क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा चौथे से सातवें गुणस्थान में भी ये दोनों भाव नहीं होते हैं।

प्रश्न : कितने गुणस्थानों में क्षायिक एवं औपशमिक दोनों भाव होते हैं?

उत्तर : आठ गुणस्थानों में क्षायिक एवं औपशमिक दोनों भाव होते हैं -

चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक।

चौथे से सातवें गुणस्थान में दोनों सम्यक्त्व रूप भाव की अपेक्षा जानना चाहिए (नाना जीवों की अपेक्षा) तथा आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान में क्षायिक सम्यग्दृष्टि के उपशम श्रेणी चढ़ने की अपेक्षा।

उत्तर भाव

प्रश्न : भावों के उत्तर भेद कितने होते हैं?

उत्तर : भावों के उत्तर भेद तिरेपन होते हैं -

औपशमिक के २, क्षायिक भाव के ९, क्षायोपशमिक (मिश्र) के १८, औदयिक भाव के २१, पारिणामिक के ३।

प्रश्न : औपशमिक भाव के दो भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर : औपशमिक भाव के भेद -

(१) औपशमिक सम्यक्त्व, (२) औपशमिक चारित्र।

औपशमिक सम्यक्त्व भी दो प्रकार का होता है -

(१) प्रथमोपशम सम्यक्त्व, (२) द्वितीयोपशम सम्यक्त्व।

अथवा - औपशमिक भाव अनेक प्रकार का है -

उपशान्त क्रोध, उपशांत मान, उपशांत माया, उपशांत लोभ, उपशांत राग, उपशांत द्वेष उपशांत मोह, उपशांत कषाय वीतरागछद्मस्थ, औपशमिक सम्यक्त्व, औपशमिक चारित्र.... आदि सभी औपशमिक भाव हैं।

ये उपर्युक्त भाव और दूसरे भी अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय और उपशांत कषाय गुणस्थानों में प्रत्येक समय में उत्पन्न होने वाले जो जीव के भाव हैं वे सब औपशमिक भाव हैं। **(ध. १४/१४-१५)**

यहाँ तिरेपन भावों में सम्यक्त्व और चारित्र दो ही भाव ग्रहण किये गये हैं।

प्रश्न : औपशमिक सम्यक्त्व और चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर : मोहनीय कर्म की सात प्रकृतियों (अनन्तानुबन्धी चतुष्क, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक् प्रकृति) का उपशम होने से **औपशमिक सम्यक्त्व** होता है।

औपशमिक चारित्र - जो चारित्र मोहनीय की देशोपशामना और सर्वोपशामना से उत्पन्न होता है उसे **औपशमिक चारित्र** कहते हैं। **(ध. १४/१५)**

समस्त मोहनीय कर्म के उपशम से **उपशम चारित्र** होता है। **(सर्वा. २/३)**

अनन्तानुबन्धी आदि १६ कषाय, हास्य-रति आदि नौ नोकषाय तथा दर्शनमोह की तीन इन २८ प्रकृतियों के उपशमन से आत्म परिणामों में जो निर्मलता होती है उसे **औपशमिक चारित्र** कहते हैं। **(रा.वा. २/३)**

प्रश्न : स्थान की अपेक्षा औपशमिक भाव कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : स्थान की अपेक्षा औपशमिक भाव दो प्रकार का होता है -

(१) औपशमिक सम्यक्त्व (२) औपशमिक चारित्र **(ध. ५/१९०)**

प्रश्न : क्षायिक भाव के नौ भेद कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर : क्षायिक भाव के नौ भेद -

(१) क्षायिक ज्ञान (२) क्षायिक दर्शन (३) क्षायिक दान (४) क्षायिक लाभ (५) क्षायिक भोग (६) क्षायिक उपभोग (७) क्षायिक वीर्य (८) क्षायिक सम्यक्त्व (९) क्षायिक चारित्र।

अथवा - क्षायिक क्रोध, क्षायिक मान, क्षायिक माया, क्षायिक लोभ, क्षायिक मोह, क्षायिक कषाय... आदि अनेक प्रकार के क्षायिक भाव होते हैं। **(ध. १४/१६)**

प्रश्न : क्षायिक ज्ञान एवं दर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर : क्षायिक ज्ञान - ज्ञानावरणीय कर्म के अत्यन्त क्षय होने से क्षायिक ज्ञान होता है।

क्षायिकदर्शन - दर्शनावरणीय कर्म के अत्यन्त क्षय होने से क्षायिक दर्शन होता है।

प्रश्न : क्षायिक दान किसे कहते हैं?

उत्तर : जो दानान्तराय कर्म के अत्यन्त क्षय से आविर्भूत त्रिकालगोचर अनन्त प्राणियों का हितकारक भगवान का अहिंसामय उपदेश होता है, जिससे जीवों को अभय मिलता है, भगवान का वह उपदेश क्षायिक दान है। **(रा.वा. २/४)**

जो दानान्तराय के निर्मूल क्षय से उत्पन्न होता है वह क्षायिक दान है। **(ध. १४/१६)**

प्रश्न : समवसरण में तो असंख्यात जीव ही होते हैं फिर भगवान अनन्त जीवों के हित का उपदेश कैसे दे सकते हैं?

उत्तर : यद्यपि भगवान के समवसरण में असंख्यात जीव ही होते हैं, क्योंकि संज्ञी जीव असंख्यात ही होते हैं, फिर भी भगवान व्रती-महाव्रतियों अथवा श्रावक एवं श्रमणों को अनन्तानन्त

जीवों की रक्षा का उपदेश देते हैं जिससे उन अनन्तानन्त जीवों के जीवन की रक्षा होती है। उनके जीवन-रक्षा रूप उपकार अवश्य होता ही है अत: भगवान अनन्त जीवों के हित का उपदेश देते हैं, ऐसा कहने में कोई बाधा नहीं है।

प्रश्न : अरिहंतों के दानान्तराय कर्म तो क्षय हो गया है फिर वे सब जीवों को इच्छित अर्थ क्यों नहीं देते हैं?

उत्तर : नहीं, क्योंकि उन जीवों के लाभान्तराय कर्म का सद्भाव पाया जाता है। **(ध. १४/१७)**

प्रश्न : क्षायिक लाभ किसे कहते हैं?

उत्तर : जो लाभान्तराय कर्म के क्षय से उत्पन्न होती है वह क्षायिक लाभ लब्धि है। **(ध. १४/१७)**

सकल लाभान्तराय कर्म के अत्यन्त नष्ट हो जाने पर कवलाहार न करने वाले केवली भगवान के शरीर की स्थिति में कारणभूत अन्य मनुष्यों में नहीं पाये जाने वाले असाधारण परम शुभ सूक्ष्म दिव्य अनन्त पुद्गल परमाणुओं का प्रति समय केवली के शरीर में सम्बन्धित होना क्षायिक लाभ है। **(रा.वा. ३)**

केवली भगवान ऐसी वर्गणाओं को ग्रहण करते हैं जिनसे कवलाहार (भोजन-पानी आदि) के बिना भी कुछ कम एक पूर्व कोटि काल तक शरीर की स्थिति बनी रहती है, यही क्षायिक लाभ है। **(प्र.सा. २१ ता.वृ.)**

प्रश्न : पूर्व कोटि वर्ष किसे कहते हैं?

उत्तर : ८४ लाख को ८४ लाख से गुणा करने पर एक पूर्व आता है। इसको एक करोड़ से गुणा करने पर एक पूर्व कोटि का प्रमाण प्राप्त होता है अर्थात् ७ नील ५ खरब ६० अरब को एक करोड़ से गुणा करने पर ७०५६०००००००००००००००० वर्ष होते हैं।

प्रश्न : अरहंतों के यदि लाभान्तराय कर्म का क्षय हो गया है तो उनको सब पदार्थों की प्राप्ति क्यों नहीं होती?

उत्तर : सत्य है, उन्हें सब पदार्थों की प्राप्ति होती है, क्योंकि उन्होंने अशेष भुवन (सम्पूर्ण लोक) को अपने अधीन कर लिया है। **(ध. १४/१७)** इसीलिए उन्हें त्रिलोकीनाथ भी कहते हैं।

प्रश्न : क्षायिक भोग किसे कहते हैं?

उत्तर : जो भोगान्तराय कर्म के क्षय से उत्पन्न होती है उसे क्षायिक भोग लब्धि कहते हैं। **(ध. १४/१७)** भोगान्तराय कर्म के क्षय से पुष्पवृष्टि, गन्धोदक वृष्टि, सुगन्धित धूप, सुगन्धित वायु आदि अतिशय भोगों की प्राप्ति होना क्षायिक भोग है। **(रा.वा.२/४)**

प्रश्न : क्षायिक उपभोग किसे कहते हैं ?

उत्तर : उपभोग/परिभोगान्तराय कर्म के क्षय से सिंहासन, चामर, अशोकवृक्ष..... आदि उपभोग की सामग्री का प्राप्त होना क्षायिक उपभोग है। **(रा.वा. २/४)**

परिभोगान्तराय कर्म के क्षय हो जाने पर भी वे सभी पदार्थों का परिभोग नहीं करते हैं, क्योंकि जो जीव क्षीणकषाय होते हैं उनको उपभोग परिभोग से प्रयोजन नहीं रहता है। **(ध. १४/१७)**

प्रश्न : क्षायिक वीर्य किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो वीर्यान्तराय कर्म के क्षय से उत्पन्न होती है वह क्षायिक वीर्य लब्धि है। **(ध. १४/१७)** समस्त पदार्थों को जानते हुए भी परिश्रम या खेद नहीं होना, यही अनन्त बल है और यही क्षायिक वीर्य है। **(रा.वा.)** केवलज्ञान के विषय में अनन्त पदार्थों को जानने की जो शक्ति है वही अनन्त/क्षायिक वीर्य है। **(प.प्र. १/६१)**

प्रश्न : क्षायिक सम्यक्त्व एवं चारित्र किसे कहते हैं ?

उत्तर : दर्शन मोहनीय के क्षय से जो भाव उत्पन्न होते हैं उन्हें **क्षायिक सम्यक्त्व** कहते हैं। **(ध. १४/१६)** जो चारित्र मोहनीय के क्षय से उत्पन्न होता है वह **क्षायिक चारित्र** है। **(ध. १४/१६)** मोहनीय कर्म की इक्कीस प्रकृतियों के अत्यन्त विनाश से क्षायिक चारित्र होता है। **(रा.वा. २/४)** २५ प्रकार के समस्त चारित्र मोहनीय कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाले चारित्र को **क्षायिक चारित्र** कहते हैं।

प्रश्न : सिद्धत्व भी क्षायिक भाव है, उसका यहाँ ग्रहण क्यों नहीं किया है ?

उत्तर : ऐसा नहीं है, क्योंकि विशेष का कथन कर देने पर सामान्य बिना कथन किये ही अपने आप सिद्ध हो जाता है। जैसे -पौरों के पृथक् निर्देश से अंगुलि सामान्य का कथन हो ही जाता है उसी प्रकार क्षायिक भावों में व्यापक सिद्धत्व का भी कथन उन विशेष क्षायिक भावों के कथन से हो ही जाता है। उसके पृथक् कथन की आवश्यकता नहीं है। **(रा.वा. २/४)**

प्रश्न : स्थान की अपेक्षा क्षायिक भाव कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर : स्थान की अपेक्षा क्षायिक भाव पाँच प्रकार का होता है-

१. क्षायिक दानादि पाँच लब्धि रूप (२.) क्षायिक सम्यक्त्व (३.) क्षायिक चारित्र (४.) क्षायिक ज्ञान और (५.) क्षायिक दर्शन। **(ध. ५/१९१)**

प्रश्न : क्षायोपशमिक भाव के १८ भेद कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : क्षायोपशमिक भाव के १८ भेद -

४ ज्ञान - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान।

३ अज्ञान - कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, विभंगज्ञान (कुअवधिज्ञान)।

३ दर्शन - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन।

५ लब्धि - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य।

१ - क्षायोपशमिक सम्यक्त्व।

१ - क्षायोपशमिक चारित्र।

१ - संयमासंयम।

अथवा - क्षायोपशमिक भाव अनेक प्रकार के होते हैं – क्षायोपशमिक एकेन्द्रिय, द्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय-लब्धि, मत्यज्ञानी, श्रुतज्ञानी आदि, क्षायोपशमिक आचारधर, क्षायो. प्रश्न व्याकरणधर, क्षायो. स्थान धर आदि। **(ध. १४/१८-१९)**

प्रश्न : क्षायोपशमिक ज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर : ज्ञानावरण के रहते हुए भी आवरणीय ज्ञान जहाँ पर एकदेश रूप उदय में पाया जाता है, वहाँ पर उसे क्षायोपशमिक नाम दिया गया है। **(ध. ७/८७)**

ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जो ज्ञान होता है वह क्षायोपशमिक ज्ञान है। **(ध. ७/८७ के आधार से)**

इसी में ज्ञान के साथ जो मिथ्यात्व का उदय होता है तो वे अज्ञान हो जाते हैं।

प्रश्न : मति आदि ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : मतिज्ञान-मतिज्ञानावरण के क्षयोपशम से जो होता है वह **मतिज्ञान** है।

श्रुतज्ञान-श्रुतज्ञानावरण के क्षयोपशम से जो होता है वह **श्रुतज्ञान** है।

अवधिज्ञान-अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जो होता है वह **अवधिज्ञान** है।

मन:पर्ययज्ञान-मन:पर्यय ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जो होता है वह **मन:पर्ययज्ञान** है।

प्रश्न : कुमतिज्ञान आदि किसे कहते हैं?

उत्तर : **कुमतिज्ञान-**मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के साथ मिथ्यात्व एवं अनंतानुबंधी के उदय में जो होता है वह कुमति ज्ञान है।

कुश्रुतज्ञान-श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के साथ मिथ्यात्व एवं अनंतानुबंधी के उदय में जो होता है वह कुश्रुत ज्ञान है।

कुअवधिज्ञान-अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के साथ मिथ्यात्व एवं अनंतानुबंधी के उदय में जो होता है वह कुअवधि ज्ञान है।

प्रश्न : चक्षुदर्शनादि किसे कहते हैं?

उत्तर : चक्षुदर्शन - चक्षु दर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से जो होता है वह **चक्षुदर्शन** है।

अचक्षुदर्शन - अचक्षुदर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से जो होता है वह **अचक्षुदर्शन** है।

अवधिदर्शन - अवधिदर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से जो होता है वह **अवधिदर्शन** है।

प्रश्न : दानादि लब्धियाँ किसे कहते हैं ?

उत्तर : दान-दानान्तराय कर्म के सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय, इन्हीं का सदवस्था रूप उपशम होने पर और देशघाति स्पर्धकों के उदय का सहभाव होने पर **क्षायोपशमिक दान लब्धि** होती है। **(रा.वा. ८)**

इसी प्रकार लाभान्तराय आदि के क्षयोपशम से क्षायोपशमिक लाभ आदि लब्धियाँ होती हैं।

प्रश्न : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व किसे कहते हैं ?

उत्तर : सम्यक्त्व प्रकृति के उदय से उत्पन्न क्षायोपशमिक सम्यक्त्व लब्धि कहलाती है। **(ध. १४/२१)**

प्रश्न : क्षायोपशमिक चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर : क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाला प्रमाद युक्त संयम/चारित्र क्षायोपशमिक चारित्र है। **(ध. ५/२२०)**

अनन्तानुबन्धी आदि तीन चौकड़ी कषायों का उदयाभावी क्षय होने से और इन्हीं का सदवस्था रूप उपशम होने से तथा चार संज्वलन कषायों में से किसी एक के देशघाती स्पर्धक के उदय होने पर और नौ नोकषायों का यथासम्भव उदय होने पर जो संसार से पूर्ण निवृत्ति रूप परिणाम होता है, वह क्षायोपशमिक चारित्र है। **(सर्वा. २६३)**

प्रश्न : संयमासंयम किसे कहते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक विरताविरत परिणाम को संयमासंयम कहते हैं। **(रा.वा. ५/८)**

प्रश्न : स्थान की अपेक्षा क्षायोपशमिक भाव के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : स्थान की अपेक्षा क्षायोपशमिक भाव के सात भेद होते हैं -

(१) ज्ञान (२) अज्ञान (३) दर्शन (४) लब्धि (५) चारित्र (६) संयमासंयम (७) सम्यक्त्व। **(ध.५/१९१)**

प्रश्न : औदयिक भाव के २१ भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर : औदयिक भाव के २१ भेद -

४ गति - नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति।

४ कषाय - क्रोध, मान, माया, लोभ।

३ लिङ्ग - स्त्री लिङ्ग, पुरुष लिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग।

१ - मिथ्यादर्शन

१ - अज्ञान

१ - असंयत

१ - असिद्धत्व

६ लेश्या - कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म और शुक्ल।

प्रश्न : नरक गति आदि और क्रोध आदि कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : नरकगति - नरकगति नाम कर्म के उदय से नरकगति होती है।

इसी प्रकार तिर्यंच गति आदि नाम कर्म के उदय से तिर्यंच गति आदि होती है।

क्रोध - क्रोध कषाय के उदय से क्रोध उत्पन्न होता है।

इसी प्रकार मान आदि के उदय से मान आदि कषायें होती हैं।

प्रश्न : लिङ्ग एवं मिथ्यात्व आदि किसे कहते हैं?

उत्तर : स्त्रीलिङ्ग - स्त्रीवेद नोकषाय के उदय से स्त्री लिङ्ग होता है।

पुरुषलिङ्ग - पुरुषवेद नोकषाय के उदय से पुरुषलिङ्ग होता है।

नपुंसकलिङ्ग - नपुंसकवेद नोकषाय के उदय से नपुंसकलिङ्ग होता है।

यहाँ इस सूत्र में आत्मा के भावों का प्रकरण है, इसलिए नामकर्म के उदय से होने वाले द्रव्यादि की विवक्षा नहीं है। **(रा.वा. २/६)**

मिथ्यादर्शन - मिथ्यात्व के उदय से मिथ्यादर्शन होता है।

प्रश्न : औदयिक अज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर : ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से अज्ञान होता है। जैसे - प्रकाशमान सूर्य का तेज सघन मेघों के द्वारा तिरोहित हो जाने पर अभिव्यक्त नहीं होता है, उसी प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से 'ज्ञ' स्वभावी आत्मा के ज्ञान गुण की अनभिव्यक्ति होती है वह **औदयिक अज्ञान** है। **(रा.वा. २/६)**

वह अज्ञान भाव ज्ञानावरण कर्म के उदय से होता है, इसलिए औदयिक है।

(सर्वा.२/६)

प्रश्न : असंयत एवं असिद्धत्व भाव किसे कहते हैं?

उत्तर : संयम के घाती कर्मों के उदय से जीव **असंयत** होता है।

असिद्धत्व - प्रत्येक जन्म में ज्ञानादि गुणों का अन्य-अन्य रूप होते रहना असिद्धत्व है। **(म.पु. ४२/९३)**

कर्मोदय सामान्य की अपेक्षा असिद्धत्व भाव होता है। **(सर्वा. २/६)** अनादि कर्मबन्ध संज्ञान के कारण परतंत्र हुए आत्मा के सामान्यत: सभी कर्मों का उदय होने पर असिद्धत्व पर्याय होती है। **(रा.वा. २/६)**

प्रश्न : असिद्धत्व भाव कितने भेद वाला है?

उत्तर : असिद्धत्व भाव दो भेद वाला है -

(१) अनादि-अनन्त असिद्धत्व भाव (२) अनादिसान्त असिद्धत्व भाव

अभव्य जीवों की अपेक्षा असिद्धत्व भाव अनादि-अनन्त है।

भव्य जीवों की अपेक्षा असिद्धत्व भाव अनादि सान्त है। **(ध. १४/१३-१४)**

प्रश्न : लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : जो आत्मा को कर्म से लिम्पन करती है उसे लेश्या कहते हैं। **(ध. १/१४९)**

कृष्णलेश्या - तीव्रतम कषाय के उदय से कृष्णलेश्या होती है।

नीललेश्या - तीव्रतर कषाय के उदय से नील लेश्या होती है।

कापोतलेश्या - तीव्र कषाय के उदय से कापोत लेश्या होती है।

पीतलेश्या - मन्द कषाय के उदय से पीत लेश्या होती है।

पद्मलेश्या - मन्दतर कषाय के उदय से पद्म लेश्या होती है

शुक्ललेश्या - मन्दतम कषाय के उदय से शुक्ल लेश्या होती है। **(ध. ७/१०४ के आधार से)**

प्रश्न : औदयिक भावों में गति आदि के समान जाति आदि को ग्रहण क्यों नहीं किया है ?

उत्तर : औदयिक भावों में गति अघाति कर्मोदय का उपलक्षण है। जैसे-कौओं से घृत की रक्षा करना इसमें 'काक' का ग्रहण उपघातक का उपलक्षण है। उसी प्रकार अघातिया नाम कर्म के उदय से होने वाले गति रूप औदयिक भाव से नामकर्म के उदय से होने वाली जाति आदि तथा आयु, गोत्र और वेदनीय कर्म के उदय से होने वाले जीव विपाकी सर्वभाव गृहीत हो जाते हैं।

इसी प्रकार मिथ्यादर्शन में दर्शनावरण कर्म के उदय से होने वाले अदर्शन, निद्रा-निद्रा आदि का अन्तर्भाव सामान्य दर्शन का आवरक होने से हो जाता है।

लिङ्ग के सहचारी होने से हास्य-रति आदि छह नोकषाय का अन्तर्भाव लिङ्ग में हो जाता है, क्योंकि सहचर होने से नारद का ग्रहण करने से पर्वत का ग्रहण हो जाता है। **(रा.वा. २/६)**

जाति, संस्थान, संहनन आदि का गति नामक औदयिक भाव में अंतर्भाव होता है, क्योंकि इन जाति संस्थान आदि का उदय गति नामकर्म के उदय का अविनाभावी है। इस व्यवस्था में लिंग कषाय आदि औदयिक भावों से भी व्यभिचार नहीं आता है, क्योंकि उन भावों में उस प्रकार की विवक्षा का अभाव है। **(ध. ५/१८८-८९)**

प्रश्न : **स्थान की अपेक्षा औदयिक भाव कितने प्रकार का है?**

उत्तर : स्थान की अपेक्षा औदयिक भाव आठ प्रकार का है -

(१) गति (२) कषाय (३) लिङ्ग (४) मिथ्यादर्शन (५) अज्ञान (६) असंयत (७) असिद्धत्व (८) लेश्या। **(ध. ५/१८९)**

प्रश्न : **पारिणामिक भाव के तीन भेद कौन-कौन से हैं?**

उत्तर : पारिणामिक भाव के तीन भेद -

(१) जीवत्व (२) भव्यत्व (३) अभव्यत्व।

प्रश्न : **स्थान की अपेक्षा पारिणामिक भाव कितने प्रकार का है ?**

उत्तर : पारिणामिक भाव में सामान्य से एक स्थान तथा जीवत्व आदि की अपेक्षा ३ स्थान कहे गये हैं-

(१) जीवत्व (२) भव्यत्व (३) अभव्यत्व **(ध. ५/१९२)**

प्रश्न : **आगम में दूसरे गुणस्थान में पारिणामिक भाव कहा है उसका यहाँ ग्रहण क्यों नहीं किया है?**

उत्तर : यहाँ पर दूसरे गुणस्थान वाले पारिणामिक भाव की विवक्षा नहीं है, क्योंकि सासादन गुणस्थान में अनन्तानुबन्धी का उदय होने पर भी मिथ्यात्व कर्म के उदय, क्षय, उपशम और क्षयोपशम की अपेक्षा नहीं है। इसलिए वहाँ पारिणामिक भाव कहा है। परन्तु यहाँ पर तो दूसरे गुणस्थान में अनन्तानुबन्धी का उदय होने से औदयिक भाव कहा है। **(रा.वा. २/७)**

प्रश्न : **अस्तित्वादिक भी पारिणामिक भाव हैं तो यहाँ उनका ग्रहण क्यों नहीं किया?**

उत्तर : अस्तित्वादिक भाव अन्य द्रव्यों में भी पाये जाते हैं इसलिए साधारण होने से सूत्र में इनका

ग्रहण नहीं किया है। जैसे अस्तित्व छह द्रव्यों में पाया जाता है। यद्यपि यह भाव कर्मों के उदय, क्षय और क्षयोपशम की अपेक्षा नहीं रखने वाला होने से पारिणामिक है परन्तु छहों द्रव्यों में पाये जाने से साधारण है। **(रा.वा. १३)**

यहाँ जीव के स्वतत्त्व का वर्णन होने से इनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

तत्त्वार्थ सूत्रकार ने 'च' से अस्तित्वादि भावों को भी गौण रूप से ग्रहण किया है। **(रा.वा.२/७)**

प्रश्न : जीवत्व किसे कहते हैं?

उत्तर : चैतन्य को जीवत्व कहते हैं। सुख-दु:ख का ज्ञान, हित का उपाय/उद्यम और अहित का भय ये चैतन्य विशेष हैं। **(पं.का.सं. १२५)**

प्रश्न : जीवत्व भाव आयु कर्म के उदय से होता है अत: वह पारिणामिक भाव नहीं है?

उत्तर : ऐसा नहीं है, क्योंकि पुद्गल द्रव्य का सम्बन्ध तो धर्म-अधर्म, आकाशादि अन्य द्रव्यों के साथ होने पर भी उनमें जीवत्व के सामर्थ्य का अभाव है। आयु पौद्गलिक द्रव्य है। यदि आयु नामक कर्म पौद्गलिक द्रव्य के सम्बन्ध से जीव का जीवत्व माना जायेगा तो उस कर्म पुद्गल का सम्बन्ध तो धर्मादि द्रव्यों से भी है अत: उनमें भी जीवत्व हो जायेगा। **(रा.वा. २/७)**

अथवा - यदि आयु कर्म के उदय से जीवत्व स्वीकार करेंगे तो सिद्धों में आयु कर्म का अभाव होने से जीवत्व के अभाव का प्रसंग आयेगा। सिद्धों में आयु के उदय की अपेक्षा बिना जीवत्व है इसलिए जीवत्व पारिणामिक भाव है। **(रा.वा. २/७)**

प्रश्न : ग्रन्थान्तरों में जीवत्व भाव को औदयिक कहा है, यहाँ पारिणामिक भाव कैसे कहा है ?

उत्तर : आयु आदि प्राणों का धारण करना जीवन है। वह अयोगी के अन्तिम समय से आगे नहीं पाया जाता, क्योंकि सिद्धों के प्राणों के कारणभूत आठ कर्मों का अभाव है। सिद्धों में प्राणों का अभाव अन्यथा बन नहीं सकता। इससे मालूम पड़ता है कि जीवत्व पारिणामिक नहीं है किन्तु वह कर्म के विपाक से उत्पन्न होता है, क्योंकि जो जिसके सद्भाव और असद्भाव का अविनाभावी होता है वह उसका है यह सिद्ध होता है। यहाँ इस सूत्र में जो जीवत्व को पारिणामिक भाव कहा है वह प्राणों के धारण करने की अपेक्षा नहीं कहा है किन्तु चैतन्य गुण की अपेक्षा से कहा है। इसलिए यह कथन विरोध को प्राप्त नहीं होता है। **(ध. १४/१३)**

प्रश्न : भव्यत्व एवं अभव्यत्व भाव किसे कहते हैं ?

उत्तर : **भव्यत्व -** जिन जीवों के भविष्य काल में रत्नत्रय धर्म प्रकट होगा, वे जीव भव्य कहलाते हैं। यही भव्यत्व भाव है।

अभव्यत्व - जिन जीवों के कालान्तर में भी केवलज्ञान प्रगट नहीं होगा वे अभव्य कहलाते हैं। यही अभव्यत्व भाव है।

प्रश्न : छहों द्रव्यों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : छहों द्रव्यों में भाव -

जीव द्रव्य में ५ - औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक। **पुद्गल** द्रव्य में २ - औदयिक और पारिणामिक।

शेष **धर्मादि ४ द्रव्यों** में १ - पारिणामिक भाव। **(ध. ५/१८६)**

नोट - उत्तर भावों में गुणस्थान एवं गुणस्थानों में उत्तर भाव हेतु देखें - गुणस्थान (१५ वाँ स्थान)

चौबीस स्थान परिचय

प्रश्न : चौबीस स्थान कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : चौबीस स्थानों के नाम -

चौदह मार्गणाएँ - (१) गति (२) इन्द्रिय (३) काय (४) योग (५) वेद (६) कषाय (७) ज्ञान (८) संयम (९) दर्शन (१०) लेश्या (११) भव्यत्व (१२) सम्यक्त्व (१३) संज्ञी (१४) आहार। (१५) गुणस्थान (१६) जीवसमास (१७) पर्याप्ति (१८) प्राण (१९) संज्ञा (२०) उपयोग (२१) ध्यान (२२) आस्रव के प्रत्यय (२३) जाति (२४) कुल।

प्रश्न : मार्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर : अवग्रह के द्वारा ग्रहण किये अर्थ के विशेष का जिसके द्वारा मार्गण अर्थात् अन्वेषण किया जाता है उसे मार्गणा कहते हैं। **(ध. १३/२४२)**

प्रवचन में बताये गये अनेक प्रकार से स्थित जीवों का जिन भावों के द्वारा अथवा जिन पर्यायों में विचार किया जाए उन्हीं को सूक्ष्म स्वरूप व परोक्ष स्वरूप देखने में चतुर आचार्यों ने मार्गणा कहा है। सत् संख्या आदि अनुयोग द्वारों से युक्त १४ जीवसमास जिसमें या जिसके द्वारा खोजे जाते **(पं.सं. १/१३१)** हैं - उसे मार्गणा कहते हैं **अथवा** श्रुतज्ञान अर्थात् द्रव्य श्रुत परमागम में जीव आदि पदार्थ जिस प्रकार देखे गये हैं उसी प्रकार वे जिन नारकत्वादि पर्यायों के द्वारा या पर्यायों में खोजे जाते हैं, उन्हें मार्गणा कहते हैं। **(ध. १/१३२-३३)**

प्रश्न : मार्गणाएँ कितनी होती हैं?

उत्तर : मार्गणाएँ १४ होती हैं -

(१) गति (२) इन्द्रिय (३) काय (४) योग (५) वेद (६) कषाय (७) ज्ञान (८) संयम (९) दर्शन (१०) लेश्या (११) भव्यत्व (१२) सम्यक्त्व (१३) संज्ञी (१४) आहार।

प्रश्न : मार्गणाओं के उत्तर भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर : मार्गणाओं के उत्तर भेद -

- **गति** मार्गणा के ४ - नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति।
- **इन्द्रिय** मार्गणा के ५ - एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय।
- **काय** मार्गणा के ६ - पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पति कायिक, त्रसकायिक।
- **योग** मार्गणा के १५ = ४ मनोयोग - सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग, अनुभयमनोयोग। ४ वचनयोग - सत्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, उभयवचनयोग, अनुभयवचनयोग। ७ काययोग - औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारककाययोग, आहारकमिश्र काययोग, कार्मणकाययोग।
- **वेद** मार्गणा के ३ - स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद।
- **कषाय** मार्गणा के २५ - अनन्तानुबन्धी चतुष्क, अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क, प्रत्याख्यानावरण चतुष्क, संज्वलन चतुष्क, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद।
- **ज्ञान** मार्गणा के ८ - कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान, केवलज्ञान।
- **संयम** मार्गणा के ७ - सामायिक संयम, छेदोपस्थापना संयम, परिहारविशुद्धि संयम, सूक्ष्मसाम्पराय संयम, यथाख्यातसंयम, संयमासंयम, असंयम।
- **दर्शन** मार्गणा के ४ - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन।
- **लेश्या** मार्गणा के ६ - कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, पीतलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ल लेश्या।
- **भव्यत्व** मार्गणा के २ - भव्यत्व, अभव्यत्व।

- **सम्यक्त्व** मार्गणा के ६ - उपशमसम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, मिश्र (सम्यग्मिथ्यात्व), सासादनसम्यक्त्व, मिथ्यात्व।
- **संज्ञी** मार्गणा के २ - संज्ञी (सैनी), असंज्ञी (असैनी)।
- **आहार** मार्गणा के २ - आहारक, अनाहारक।

इन चौदह मार्गणाओं में निम्नलिखित १० भेद मिलाने पर चौबीस स्थान होते हैं-

- **गुणस्थान** के १४ - मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अविरतसम्यक्त्व, संयमासंयम, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय, उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, सयोगकेवली, अयोग केवली।
- **जीवसमास** के १९ - नित्यनिगोद सूक्ष्म, नित्यनिगोदबादर, इतरनिगोदसूक्ष्म, इतरनिगोदबादर, पृथ्वीकायिक सूक्ष्म, पृथ्वीकायिक बादर, जलकायिक सूक्ष्म, जलकायिक बादर, अग्नि कायिक सूक्ष्म, अग्निकायिक बादर, वायुकायिक सूक्ष्म, वायुकायिक बादर, सप्रतिष्ठित प्रत्येक, अप्रतिष्ठित प्रत्येक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय।
- **पर्याप्ति** के ६ - आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति, मन:पर्याप्ति।
- **प्राण** के १० - स्पर्शनइन्द्रिय प्राण, रसनाइन्द्रियप्राण, घ्राणइन्द्रिय प्राण, चक्षुइन्द्रिय प्राण, श्रोत्रइन्द्रियप्राण, मनोबलप्राण, वचनबलप्राण, कायबलप्राण, श्वासोच्छ्वासप्राण, आयुप्राण।
- **संज्ञा** के ४ - आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रह संज्ञा।
- **उपयोग** के १२ - ८ ज्ञानोपयोग-कुमतिज्ञानोपयोग कुश्रुतज्ञानोपयोग कुअवधि ज्ञानोपयोग मतिज्ञानोपयोग, श्रुतज्ञानोपयोग, अवधिज्ञानोपयोग, मन:पर्यय ज्ञानोपयोग केवल ज्ञानोपयोग।

  ४ दर्शनोपयोग - चक्षुदर्शनोपयोग, अचक्षुदर्शनोपयोग, अवधिदर्शनोपयोग, केवलदर्शनोपयोग।
- **ध्यान** के १६ - ४ आर्त्तध्यान - इष्टवियोग आर्त्तध्यान, अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान, वेदना आर्त्तध्यान, निदान आर्त्तध्यान। ४ रौद्रध्यान - हिंसानन्द रौद्रध्यान, मृषानन्द रौद्रध्यान, स्तेयानन्द रौद्रध्यान, परिग्रहानन्द रौद्रध्यान। ४ धर्मध्यान - आज्ञाविचय धर्मध्यान, अपायविचय धर्मध्यान, विपाकविचय धर्मध्यान, संस्थानविचय धर्मध्यान। ४ शुक्लध्यान- (१) पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान (२) एकत्ववितर्क अवीचार शुक्ल ध्यान (३) सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती शुक्लध्यान (४) व्युपरतक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान।
- **आस्रव** के प्रत्यय ५७ - ५ **मिथ्यात्व**-विपरीत, एकान्त, विनय, संशय, अज्ञान।

१२ **अविरति** - ५ इन्द्रिय और मन को वश में नहीं करना, ५ स्थावर और त्रस कायिक जीवों की रक्षा का संकल्प नहीं करना। २५ **कषाय** - अनन्तानुबन्धी आदि। १५ **योग** - ४ मनो., ४ वच., ७ काय.।

- **जाति** - ८४ लाख - इतर निगोद की ७ लाख, नित्यनिगोद की ७ लाख, पृथ्वीकायिक की ७ लाख, जलकायिक की ७ लाख, अग्निकायिक की ७ लाख, वायुकायिक की ७ लाख, वनस्पतिकायिक की १० लाख, द्वीन्द्रिय की २ लाख, त्रीन्द्रिय की २ लाख, चतुरिन्द्रिय की २ लाख, पंचेन्द्रिय तिर्यंच की ४ लाख, नरकगति ४ लाख, देवगति की ४ लाख, मनुष्यगति की १४ लाख।
- **कुल** १९९$^{१}/_{२}$ लाख करोड़ - पृथ्वीकायिक के २२ लाख करोड़, जलकायिक के ७ लाख करोड़, अग्निकायिक के ३ लाख करोड़, वायुकायिक के ७ लाख करोड़, वनस्पति कायिक के २८ लाख करोड़, द्वीन्द्रिय के ७ लाख करोड़, त्रीन्द्रिय के ८ लाख करोड़, चतुरिन्द्रिय के ९ लाख करोड़, पंचेन्द्रिय में जलचरों के १२$^{१}/_{२}$ लाख करोड़, थलचरों के १९ लाख करोड़, नभश्चरों के १२ लाख करोड़, नारकियों के - २५ लाख करोड़, देवों के २६ लाख करोड़, मनुष्यों के १४ लाख करोड़, **अथवा** १२ लाख करोड़ **(गो.जी.)**

प्रश्न : गति आदि चौदह भेदों को मार्गणा क्यों कहते हैं?

उत्तर : गति आदि चौदह स्थानों में जीवों की मार्गणा/गवेषणा अर्थात् खोज की जाती है इसलिए इनका नाम मार्गणा है। **(ध.७/७)**

प्रश्न : मार्गणाओं को जानने से क्या लाभ है?

उत्तर : मार्गणाओं को जानने से ज्ञान की वृद्धि होती है तथा सम्यग्दर्शन की विशुद्धि में वृद्धि होती है। इसलिए विद्वानों को मार्गणाओं को जानकर अपने ज्ञान की वृद्धि के लिए तथा सम्यग्दर्शन की विशुद्धि के लिए चारों गतियों में रहने वाले संसारी जीवों का इन के द्वारा शीघ्र यत्न से मार्गण/अन्वेषण करना चाहिए। **(वी.व.चा. १६/५७)**

सामान्य से विशेष बलवान होता है, अर्थात् सामान्य से गुणस्थानों में जीव तत्त्व की गवेषणा करने से यद्यपि प्राज्ञजनों को उनका ज्ञान हो जाता है, लेकिन मंद एवं मध्यम बुद्धि वाले प्राणी इतने मात्र से जीव को जानकर अपना उपयोग धर्मध्यान में नहीं लगा पाते हैं, उनको भिन्न-भिन्न मार्गणा, पर्याप्ति, प्राण आदि २० प्ररूपणाओं में तथा चौबीस स्थानों में जीवों को खोजने की भी एक विधा है। मार्गणाओं में मार्गणाओं के उत्तरोत्तर भेदों में जीवों की खोज करने में अधिक से अधिक समय लगाया जा सकता है, इनमें जीवों की खोज करने पर समझ में आता है कि मनुष्य पर्याय, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति, बोधि-रत्नत्रय को प्राप्त

करना कितना दुष्कर। दुर्लभ ही नहीं अति दुर्लभ है। ऐसी मनुष्य पर्याय को हमने प्राप्त कर लिया है इसका उपयोग हमें किस प्रकार करना चाहिए।

कहा भी है – दया-दया सबहि कहे दया न जाने कोय।
जीवस्थान जाने बिना, दया कहाँ से होय॥

प्रश्न : मार्गणाओं के चौदह, लेश्या के छह और भव्य मार्गणा के दो आदि भेद ही क्यों किये हैं ? मार्गणाओं के १५ आदि रूप भेद क्यों नहीं किये हैं?

उत्तर : धर्म वाद अर्थात् वस्तु में अनन्त धर्म हैं; यह निर्दोष रीति से प्रतिपादित करने वाला आगम दो प्रकार का है -

(१) हेतुवाद (२) अहेतुवाद

- **हेतुवाद -** जिसमें पदार्थ को परीक्षा करके जाना जा सकता है वह हेतुवाद है। जैसे - सर्वज्ञ की सत्ता स्थापित करना, मुक्ति को उपलब्ध जीव का संसार में लौटकर पुन: न आना आदि कथन सुनिश्चित व असंभव बाधक रूप हेतु होने से हेतुवाद का विषय हैं।

  सम्यग्दर्शन - ज्ञान - चारित्र को प्राप्त करने वाले भव्य जीव हैं। वे नियम से दु:खों का अंत करने वाले हैं, यह हेतुवाद का लक्षण है क्योंकि सम्यग्दर्शन आदि हेतुओं से भव्य जीव को जाना जा सकता है।

- **अहेतुवाद -** जो तत्त्व केवल आगम में कहा गया है, जिसमें हेतुवाद नहीं चल सकता है वह अहेतुवाद है। जैसे - जीव के असंख्यात प्रदेश होते हैं।

  जीव के भव्य-अभव्य भेद क्यों किये गये? इस सम्बन्ध में चिंतन करने के लिए हेतुवाद को अवकाश नहीं है। जो विषय हेतुवाद का है उसे हेतुवाद से जानने वाला ही स्वसमय जैनधर्म का प्ररूपक कहा गया है। इसी प्रकार जो विषय आगमवाद (अहेतुवाद) का है, उसे भी श्रद्धापूर्वक आगम से जानने वाला स्वसमय है किन्तु जो आगमवाद में हेतुवाद और हेतुवाद में आगमवाद का प्रतिपादन करता है वह व्यक्ति अनेकांत सिद्धान्त की विराधना करने वाला है। **(स.सू. ३/४३-४५)**

  उपर्युक्त कथन से सिद्ध है कि मार्गणा चौदह ही क्यों होती है, लेश्या छह ही क्यों होती है, इस प्रकार विकल्प नहीं करना चाहिए, क्योंकि आगम में इनका इसी प्रकार से प्ररूपण किया गया है। अत: श्रद्धा करने योग्य है। कहा भी है - **''सिद्धान्तोऽतर्कगोचर:''।**

प्रश्न : कितने भाव मार्गणाओं के उत्तर भेदों में गर्भित हो जाते हैं ?

उत्तर : ३७ भाव मार्गणाओं के उत्तर भेदों में गर्भित हो जाते हैं -

	उत्तर भाव	**मार्गणा**
(१)	औपशमिक सम्यक्त्व	सम्यक्त्व
(२)	क्षायिक सम्यक्त्व	सम्यक्त्व
(३)	क्षायिक ज्ञान	ज्ञान
(४)	क्षायिक दर्शन	दर्शन
(५-८)	मति आदि चार ज्ञान	ज्ञान
(९-११)	कुमति आदि तीन ज्ञान	ज्ञान
(१२-१४)	चक्षु आदि तीन दर्शन	दर्शन
(१५)	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	सम्यक्त्व
(१६)	संयमासंयम	संयम
(१७-२०)	४ गतियाँ	गति
(२१-२४)	४ कषाय	कषाय
(२५-२७)	३ लिङ्ग	वेद
(२८)	मिथ्यादर्शन	सम्यक्त्व
(२९)	असंयत	संयम
(३०-३५)	६ लेश्या	लेश्या
(३६-३७)	भव्य-अभव्य	भव्य

प्रश्न : कितने उत्तर भाव आस्रव के प्रत्ययों में भी आते हैं?

उत्तर : ९ भाव आस्रव के प्रत्ययों में भी आते हैं -

४ कषाय-क्रोध मान माया लोभ

३ लिंग-स्त्री, पुरुष, नपुंसकलिंग

१ - मिथ्यादर्शन

१ - असंयत (अविरति)

卐 २४ स्थानों में गुणस्थान एवं भाव 卐

गति मार्गणा

क्र.	गति	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	नरक गति	५	३३	४	केवल पहले नरक में ही पाँच भाव होते है।
(२)	तिर्यंच गति	५	३९	५	भोग भूमि की अपेक्षा क्षायिक भाव होता है।
(३)	मनुष्य गति	५	५०	१४	
(४)	देव गति	५	३७	४	वैमानिक देवों के ही क्षायिक भाव होता है।
(५)	सिद्ध गति	२	१०	×	

इन्द्रिय मार्गणा

क्र.	इन्द्रिय	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-३)	एके.द्वीन्द्रि.त्रीन्द्रि.	३	२४	२	क्षायो. औद. पारि. भाव होते हैं।
(४)	चतुरिन्द्रिय	३	२५	२	चक्षुदर्शन भी होता है।
(५)	पंचेन्द्रिय	५	५३	१४	संज्ञी पंचेन्द्रिय के ही पाँचों भाव होते हैं।
(६)	अनिन्द्रिय	३	१४	२	सिद्ध भगवान भी अनिन्द्रिय होते हैं।

काय मार्गणा

क्र.	काय	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-३)	पृथ्वी.जल.वन.	३	२४	२	पहला-दूसरा गुणस्थान
(४-५)	अग्नि वायु.	३	२४	१	पहला गुण.
(६)	त्रस कायिक	५	५३	१४	केवल पंचेन्द्रिय में ही पाँच भाव होते हैं।
(७)	कायातीत(अकायिक)	२	१०	-	

योग मार्गणा

क्र.	योग	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-४)	सत्य-अनुभय मन एवं वचन योग	५	५३	१३	
(५-८)	असत्य एवं उभय मन, वचन योग	५	४६	१२	क्षायिक के ज्ञानादि सात भाव नहीं होते हैं।
(९)	औदारिककाय योग	५	५१	१३	नरकगति एवं देवगति नहीं हैं।

(१०)	औदारिकमिश्र-काय योग	४	४५	४(प.दू. चौ.ते.)	औपशमिक भाव नहीं होता है।
(११)	वैक्रियिककाययोग	५	३९	४	
(१२)	वैक्रियिकमिश्र-काय योग	५	३८	३(प.दू. चौ.)	देवों की अपेक्षा औपशमिक भाव होता है।
(१३-१४)	आहारकद्विकयोग	४	२७	१(छठा)	औपशमिक भाव नहीं होता है।
(१५)	कार्मणकाययोग	५	४८	४(प.दू. चौ.ते.)	
(१६)	योगातीत	३	१३	१(चौद.)	सिद्ध भगवान भी योगातीत हैं।

वेद मार्गणा

क्र.	वेद	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	स्त्री वेद	५	४२	९	भाववेद की अपेक्षा ९ गुण. होते हैं।
(२)	पुरुष वेद	५	४३	९	मन:पर्ययज्ञान भी होता है।
(३)	नपुंसक वेद	५	४२	९	
(४)	वेदातीत	५	३३	६	नवें के अवेद भाग से चौदहवें गुणस्थान तक

कषाय मार्गणा

क्र.	कषाय	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-४)	अनन्तानुबंधी चतुष्क	३	३१	२	
(५-८)	अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क	५	३८	४	पहले से चौथा गुणस्थान होता है।
(९-१२)	प्रत्याख्यानावरण चतुष्क	५	३९	५	चौथे-पाँचवें गुण. में पाँचों भाव होते हैं।
(१३-१५)	संज्वलनत्रिक	५	४३	९	
(१६)	संज्वलन लोभ	५	४६	१०	
(१७-२२)	हास्यादि छह	५	४६	८	क्षायिकभाव के सात भेद नहीं होते हैं।
(२३-२५)	तीनों वेदों में मूलभावादि वेद मार्गणा के समान जानना चाहिए।				
(२६)	कषायातीत	५	२९	४(ग्यारह से चौदह)	

ज्ञान मार्गणा

क्र.	ज्ञान	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-२)	कुमति.कुश्रुत	३	३२	२	
(३)	विभंगज्ञान	३	३२	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय के ही होता है।
(४-६)	मति आदि तीनज्ञान	५	३८	९	चौथे से बारहवाँ गुणस्थान होता है।
(७)	मन:पर्ययज्ञान	५	२८	७	छठे से बारहवाँ गुणस्थान होता है।
(८)	केवलज्ञान	३	१४	२	तेरहवें गुण. की अपेक्षा १४ भाव होते हैं।

संयम मार्गणा

क्र.	संयम	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-२)	सामायिक छेदोपस्थापना	५	३३	४	
(३)	परिहार विशुद्धि	४	२७	२	औपशमिक भाव नहीं होता है।
(४)	सूक्ष्म साम्पराय	५	२३	१	उपशम श्रेणी में पाँच भाव होते हैं।
(५)	यथाख्यात	५	२९	४	ग्यारहवें गुण. की अपेक्षा ५ भाव होते हैं।
(६)	संयमासंयम	५	३१	१(पाँचवाँ)	
(७)	असंयम	५	४१	४	चौथे गुण. की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।

दर्शन मार्गणा

क्र.	दर्शन	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-२)	चक्षु-अचक्षु.	५	४४	१२	
(३)	अवधिदर्शन	५	३९	९	चौथे से बारहवें गुण. तक होता है।
(४)	केवलदर्शन	३	१४	२	तेरहवाँ चौदहवाँ गुणस्थान होता है।

लेश्या मार्गणा

क्र.	लेश्या	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-३)	कृष्ण नील कापोत	५	३६	४	चौथे गुण. की अपेक्षा ५ भाव होते हैं।
(४-५)	पीत-पद्म	५	३८	७	
(६)	शुक्ल	५	४७	१३	
(७)	अलेश्यक (लेश्यातीत)	३	१३	१	चौदहवाँ गुण. होता है।

भव्य मार्गणा

क्र.	भव्य	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	भव्यत्व	५	५२	१४	अभव्यत्व भाव नहीं होता है।
(२)	अभव्यत्व	३	३३	१	औप. एवं क्षायिक भाव नहीं होता है।
(३)	भव्य-अभव्य से रहित	२	१०	-	

सम्यक्त्व मार्गणा

क्र.	सम्यक्त्व	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	औपशमिक	४	३८	८	क्षायिक भाव नहीं होता है।
(२)	क्षायोपशमिक	३	३७	४	क्षायोपशमिक/औदयिक और पारिणा. भाव होते हैं।
(३)	क्षायिक	५	४६	११	औपशमिक चारित्र की अपेक्षा औपशमिक भाव होता है।
(४)	सासादन	३	३२	१	
(५)	सम्यग्मिथ्यात्व	३	३२	१	
(६)	मिथ्यात्व	३	३४	१	पहला गुणस्थान ही होता है।

संज्ञी मार्गणा

क्र.	संज्ञी	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	संज्ञी	५	४६	१२	क्षायिक ज्ञानादि ७ भाव नहीं हैं।
(२)	असंज्ञी	३	२८	२	कोई आचार्य पीत लेश्या भी मानते हैं।
(३)	संज्ञी-असंज्ञी से रहित	३	१४	२	

आहार मार्गणा

क्र.	आहारक	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१)	आहारक	५	५३	१३	
(२)	अनाहारक	५	४८	५	प. दू. चौथा तेरहवाँ चौ. गुणस्थान होता है।

गुणस्थान

क्र.	गुणस्थान	मूलभाव	उत्तरभाव	विवरण
(१)	मिथ्यात्व	३	३४	औपशमिक एवं क्षायिक भाव नहीं हैं।
	सासादन	३	३२	
	सम्यग्मिथ्यात्व	३	३२	
	अविरतसम्यक्त्व	५	३६	सम्यक्त्व की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।
	संयतासंयत	५	३१	सम्यक्त्व की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।
	प्रमत्तसंयत	५	३१	सम्यक्त्व की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।
	अप्रमत्तसंयत	५	३१	सम्यक्त्व की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।
	अपूर्वकरणसंयत	५	२९	उपशमसम्यग्दृष्टि के चार भाव ही होते हैं।
	अनिवृत्तिकरण संयत	५	२९	
	सूक्ष्मसाम्पराय संयत	५	२३	क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा पाँच भाव होते हैं।
	उपशान्तकषाय वीत.	५	२१	
	क्षीणकषायवीत.	४	२०	औपशमिक भाव नहीं होता है।
	सयोग केवलीजिन	३	१४	
	अयोगकेवली जिन	३	१३	शुक्ललेश्या भी नहीं होती है।
	गुणस्थानातीत	२	१०	

जीवसमास

क्र.	जीवसमास	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
(१-४)	• नित्यनिगोद सूक्ष्म बादर	३	२४	१	मिथ्यात्व गुणस्थान होता है।
	• इतर निगोद सूक्ष्म बादर	३	२४	१	
	• पृथ्वीकायिक सूक्ष्म	३	२४	१	क्षायो.औद.पारि. भाव होते हैं।
	• जलकायिक सूक्ष्म	३	२४	१	
	• अग्निकायिक सूक्ष्म-बादर	३	२४	१	

● वायुकायिक सूक्ष्म-बादर	३	२४	१	
● पृथ्वीकायिक बादर	३	२४	२	पहला-दूसरा गुणस्थान होता है।
● जलकायिक बादर	३	२४	२	दूसरा गुणस्थान
● सप्रतिष्ठित प्रत्येक वन.	३	२४	२	निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा होता है।
● अप्रतिष्ठित प्रत्येक वन.	३	२४	२	निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा होता है।
● द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय	३	२४	२	निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा होता है।
● चतुरिन्द्रिय	३	२५	२	निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा होता है।
● असंज्ञी पंचेन्द्रिय	३	२८	२	निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा होता है।
● संज्ञी पंचेन्द्रिय	५	४६	१२	तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी जीवसमास है।
● जीवसमासातीत	२	१०	-	

पर्याप्ति

पर्याप्ति	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
४ (आहार,शरीर,इन्द्रिय एवं श्वासोच्छ्वास)	३	२४	१	क्षायो.औद. एवं पारि. भाव होते हैं।
५ (मन: पर्याप्ति बिना)	३	२८	१	
६ (आ.श.इ.श्वा.) भा.मन:)	५	५३	१४	चौथे गुण. से ग्यारहवें गुण. तक पाँच भाव होते हैं।
पर्याप्ति से अतीत	२	१०	-	

प्राण

प्राण	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
१	३	१३	१ (चौदहवाँ)	क्षा.औद.पारि. भाव होते हैं।
२	३	१४	१ (तेरहवाँ)	क्षा.औद.पारि.भाव होते हैं।
३	३	३५	३ (पह.दूस.तेर.)	
४	३ (क्षायो.औद.पारि.) (क्षायि. औद.पारि.)	३५	३ (पह.,दू.तेर)	तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा वचनबल, कायबल, श्वासो., एवं आयु प्राण होते हैं।

५	३	२४	२(पहला-दूसरा)	
६	३	२५	२(पहला-दूसरा)	
७	५	४१	४(पहला-दूसरा-चौ.छ.)	
८	३	२५	१	पहला गुणस्थान ही होता है।
९	३	२८	१	असंज्ञी पंचेन्द्रिय के होते हैं।
१०	५	४६	१२ (पहले से बारहवाँ)	
प्राणातीत	२	१०	–	

संज्ञा

संज्ञा	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• आहार	५	४४	६	पहले से छठा गुण. होता है।
• भय	५	४६	८	क्षपक श्रेणी की अपेक्षा ४ भाव ही हैं।
• मैथुन	५	४६	९	उपशम श्रेणी की अपेक्षा ५ भाव हो सकते हैं।
• परिग्रह	५	४६	१०	
• संज्ञातीत	५	२९	४	ग्यारहवें से चौदहवें तक

उपयोग

उपयोग	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• कुमति आदि तीन ज्ञानो.	३	३२	२	स्वकीय ज्ञानो. होने से दो कुज्ञानो. निकल जाएंगे।
• मति आदि तीन ज्ञानो.	५	३८	९	मतिज्ञानो. में मतिज्ञानो.....ही ग्रहण करना चाहिए।
• मन:पर्यय ज्ञानो.	५	२८	७	
• केवलज्ञानोपयोग	३	१४	२	तेरहवाँ चौदहवाँ गुणस्थान होता है।
• चक्षु-अचक्षुदर्शनो.	५	४४	१२	
• अवधिदर्शनो.	५	३९	९	
• केवलदर्शनोप.	३	१४	२	क्षा. औद. एवं पारि. भाव होते हैं।

ध्यान

ध्यान	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• तीन आर्त्तध्यान	५	४४	६	औ. एवं क्षायि. भाव चौथे से छठे गुण. तक होते हैं।
• निदान आर्त्तध्यान	५	४२	५	

• ४ रौद्रध्यान	५	४२	५	रौद्रध्यान पाँचवें गुण. तक ही होता है।
• आज्ञाविचय धर्म.	५	३९	४	
• अपायविचय ,,	५	३९	४	
• विपाकविचय ,,	५	३९	४	
• संस्थान विचय	५	३१	२	
• पृथक्त्ववितर्क-	५	२९	५	
• वीचार शुक्ल.				
• एकत्ववितर्क- अवीचार शु.	५	२२	२	ग्यारहवें गुण. में भी दूसरा शुक्ल. मानने वालों की अपेक्षा पाँच भाव होंगे।
• सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती	३	१४	१	
• व्युपरतक्रिया निवृत्ति	३	१३	१	चौदहवें गुणस्थान में ही होता है।
ध्यानातीत	२	१०	-	

आस्रव के प्रत्यय

आस्रव प्रत्यय	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• पाँच मिथ्यात्व	३	३४	१	क्षायो.औद. एवं पारि. भाव होते हैं।
• बारह अविरति	५	४१	४	
• कषाय	५	४६	१०	
• योग	५	५३	१३	

जाति

जाति	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• २८ लाख (इतर-निगोद, नित्यनिगोद, अग्नि. व वायु.)	३	२४	१	क्षायो. औद. पारि. भाव होते है।
• २८ लाख (पृ. ज.वन.द्वी.त्री.)	३	२४	२	
• २ लाख चतुरि.	३	२५	२	चक्षुदर्शन रूप भाव भी होता है।
• ४ लाख पं.तिर्य.	५	३९	५	भोगभूमि की अपेक्षा क्षायिकभाव होता है।
• ४ लाख नारकी	५	३३	४	पहले नरक में ही क्षायिक भाव होता है।
• ४ लाख (देव)	५	३७	४	
• १४ लाख मनुष्य	५	५०	१४	

कुल

कुल	मूलभाव	उत्तरभाव	गुण.	विवरण
• १० लाख क. (अग्नि.वायु)	३	२४	१	क्षायो.औद. एवं पारि. भाव होते हैं।
• ७२ ला.क.(पृ. ज.वन.द्वी.त्री.)	३	२४	२	पहला, दूसरा गुण. होता है।
• ९ ला.क. (चतु.)	३	२५	२	चक्षुदर्शन रूप भाव भी होता है।
• ४३$^{१}/_{२}$ला.क. (पं.ति.)	५	३९	५	जलचर जीवों के क्षायिक भाव नहीं है।
• २५ ला.क. (नारकी)	५	३३	४	पहले नरक में पाँचों भाव होते हैं।
• २६ ला.क. (देव)	५	३७	४	
• १४ ला.क. (मनुष्य)	५	५०	१४	तीन गति रूप भाव नहीं होते हैं।

॥ श्रीवीतरागाय नमः॥

卐 मंगलाचरण 卐

वीर प्रभु को नमन हो, विवेक विद्या सिन्धु।
मंगल करने मैं नमूँ, जो हैं प्रज्ञा इन्दु॥१॥
शुभ से तो सद्गति मिले, अशुभ नरक के द्वार।
शुद्ध भाव से शिव मिले, जग में ये ही सार॥२॥
राग-द्वेष का नाश हो, बने उपेक्षा भाव।
इसी कामना से कहूँ, किसके कितने भाव॥३॥

दर्शन मार्गणा

प्रश्न १ : दर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर : विशेषता और विकल्प न करके पदार्थों का सामान्य से जो ग्रहण करना है, उसे परमागम में दर्शन कहा गया है। पदार्थों को यह शुक्ल है, यह कृष्ण है, यह छोटा है, यह घट है और यह पट है, आदि रूप से विशेषता न करके पदार्थों का जो सत्तावलोकन होता है वही दर्शन है। यह विकल्प रहित है। तात्पर्य यह है कि जब कोई भी किसी भी पदार्थ को देखता है तो वह देखने वाला जब तक विकल्प नहीं करे तब तक जो सत्तामात्र ग्रहण होता है उसको दर्शन कहते हैं। पश्चात् शुक्ल आदि का विकल्प हो जाने पर ज्ञान कहा जाता है। **(वृ.द्र.सं. ४३ टी.)** अन्तर्मुख चित्प्रकाश को दर्शन कहते हैं। **(ध.१/१४६)**

प्रश्न २ : दर्शन मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : चक्षु आदि दर्शनों में जीवों की खोज करना दर्शन मार्गणा है।

यह चार प्रकार की है -

(१) चक्षुदर्शन (२) अचक्षुदर्शन (३) अवधिदर्शन (४) केवलदर्शन

प्रश्न ३ : चक्षुदर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर : चक्षु दर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से तथा बहिरंग द्रव्येन्द्रिय के अवलम्बन से मूर्तिक पदार्थ के सत्ता सामान्य को एकदेश से विकल्परहित जो देखता है वह चक्षुदर्शन है। **(वृ.द्र.सं. ४ टी.)**

अपने आवरण के क्षयोपशम से और चक्षुइन्द्रिय के आलम्बन से मूर्त्त द्रव्य को निर्विकल्प रूप से जो सामान्यत: अवबोध करता है वह चक्षुदर्शन है। **(पं.का.ता. ४२)**

चक्षु इन्द्रिय के द्वारा होने वाले ज्ञान के पहले जो सामान्य अवलोकन होता है उसे चक्षुदर्शन कहते हैं **(ध.१/३८१)**

प्रश्न ४ : अचक्षुदर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर : स्पर्शन, रसना, घ्राण तथा कर्ण इन्द्रिय के आवरण के क्षयोपशम से और अपनी-अपनी बहिरंग द्रव्येन्द्रिय के आलम्बन से मूर्त्तिक सत्ता सामान्य को परोक्ष रूप एकदेश से जो विकल्प रहित देखता है वह अचक्षुदर्शन है और इसी प्रकार मन इन्द्रिय के आवरण के क्षयोपशम से तथा सहकारी कारण रूप जो आठ पाँखुड़ी के कमल के रूप से विकल्प रहित देखता है, वह मानस अचक्षुदर्शन है। **(वृ.द्र.सं. ४ टी.)**

चक्षु इन्द्रिय को छोड़कर शेष चार इन्द्रियों से और मन से जो सामान्य प्रतिभास होता है उसे अचक्षुदर्शन कहते हैं। **(ध. १/३८४)**

प्रश्न ५ : अवधिदर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर : अवधिदर्शनावरण के क्षयोपशम से मूर्त्त वस्तुगत सत्तासामान्य को एकदेश प्रत्यक्ष से विकल्प रहित जो देखता है वह अवधिदर्शन है। **(वृ.द्र.सं. ४ टी.)**

सर्व लघु परमाणु से आदि लेकर सर्व महान् अन्तिम स्कन्ध तक जितने मूर्त्त द्रव्य हैं उन्हें जो प्रत्यक्ष देखता है उसे अवधिदर्शन कहते हैं। **(ध.१/३८४)**

प्रश्न ६ : केवलदर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर : केवलदर्शनावरण के क्षय होने पर समस्त मूर्त्त-अमूर्त्त वस्तु के सत्ता सामान्य को सकल प्रत्यक्षरूप से एक समय में विकल्प रहित जो देखता है उसको उपादेय रूप क्षायिक केवल दर्शन जानना चाहिए। **(वृ.द्र.सं. ४ टी.)**

बहुत जाति के और बहुत प्रकार के सूर्य-चन्द्र आदि के उद्योत तो परिमित क्षेत्र में पाये जाते हैं, अर्थात् वे थोड़े ही पदार्थों को आप परिमाण प्रकाशित करते हैं, किन्तु जो केवलदर्शन है वह लोक और अलोक को भी प्रकाशित करता है। **(ध.१/३८४)**

अनन्तदर्शन जिसका विषय है ऐसा अविनाशी केवलदर्शन है। **(स.सू. २० टी.)**

कर्म विवक्षा

क्र.	दर्शन	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	चक्षुदर्शन	क्षयोपशम	पहले से बारहवाँ	गुणस्थान के समान	चक्षुदर्शन चतुरिन्द्रिय से प्रारम्भ होता है।
२.	अचक्षुदर्शन	क्षयोपशम	पहले से बारहवाँ	गुणस्थान के समान	एकेन्द्रिय से प्रारम्भ होता है।
३.	अवधिदर्शन	क्षयोपशम	अविरत सम्यक्त्व	औ.क्षा.क्षायो.	
			संयमासंयम	क्षायो.	
			प्रमत्त-अप्रमत्तसंयत	क्षायो.	
			अपूर्वकरण.	औ.क्षा.	औपशमिक सम्यक्त्व के साथ केवल औपशमिक भाव ही होता है।
			अनिवृत्तिकरण	औ.क्षा.	,, ,,
			सूक्ष्मसाम्पराय	औ.क्षा.	,, ,,
			उपशान्तकषायवीत.	औप.	
			क्षीणकषायवीत.	क्षायिक	
४.	केवलदर्शन	क्षय	सयोगकेवली	क्षायिक	
			अयोगकेवली	क्षायिक	

प्रश्न ७ : कितने दर्शनों का कोई भी गुणस्थान क्षायिक भाव रूप नहीं होता है?

उत्तर : ऐसा कोई दर्शन नहीं है जिसका कोई भी गुणस्थान क्षायिक भाव रूप नहीं होता हो, क्योंकि चक्षु-अचक्षुदर्शन पहले से बारहवें तथा अवधिदर्शन चौथे से बारहवें गुणस्थान तक होता है। (केवलदर्शन के दोनों गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं)

प्रश्न ८ : किस दर्शन के कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : चक्षु-अचक्षु तथा अवधि दर्शन के ५ गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं - अविरतसम्यक्त्व, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय एवं क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थ

आठवाँ आदि गुणस्थान क्षपक श्रेणी की अपेक्षा जानना चाहिए।

केवलदर्शन के दोनों गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं।

सिद्ध भगवान के भी केवलदर्शन होता है। वह भी क्षायिक भाव रूप ही होता है।

प्रश्न ९ : अवधिदर्शन के कितने गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप भी होते हैं?

उत्तर : अवधिदर्शन का केवल एक गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप भी होता है- अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान। यहाँ औपशमिक एवं क्षायिक भाव भी होता है। (इसी प्रकार चक्षु-अचक्षु दर्शन में भी जानना चाहिए।)

प्रश्न १० : चक्षु-अचक्षु दर्शन के कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : चक्षु-अचक्षु दर्शन का केवल एक गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होता है - क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ।

क्षपक श्रेणी की अपेक्षा ८वाँ, ९वाँ, १०वाँ गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप ही होता है। क्षायिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा चौथा गुणस्थान भी क्षायिकभाव रूप ही है। इसी प्रकार अवधिदर्शन में भी जानना चाहिए।

प्रश्न ११ : अवधिदर्शन के कितने गुणस्थान दो-दो भाव रूप होते हैं?

उत्तर : अवधिदर्शन के तीन गुणस्थान दो-दो भाव रूप होते हैं -

अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय

ये गुणस्थान औपशमिक और क्षायिक भाव रूप होते हैं।

प्रश्न १२ : किस दर्शन के कितने गुणस्थान केवल एक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : चक्षु-अचक्षुदर्शन के ८ गुणस्थान केवल एक भाव रूप होते हैं -

(१) मिथ्यात्व-औदयिक
(२) सासादनसम्यक्त्व-पारिणामिक
(३) सम्यग्मिथ्यात्व-क्षायोपशमिक
(४) संयमासंयम-क्षायोपशमिक
(५) प्रमत्तसंयत-क्षायोपशमिक
(६) अप्रमत्तसंयत-क्षायोपशमिक
(७) उपशान्तकषाय-औपशमिक
(८) क्षीणकषाय-क्षायिक

अवधिदर्शन के ५ गुणस्थान -

(१) संयमासंयम-क्षायोपशमिक
(२) प्रमत्तसंयत-क्षायोपशमिक
(३) अप्रमत्तसंयत-क्षायोपशमिक
(४) उपशान्तकषाय.-औपशमिक
(५) क्षीणकषायवीतराग.-क्षायिक

केवलदर्शन के २ गुणस्थान -

सयोगकेवली, अयोगकेवली

ये दोनों क्षायिक भाव रूप ही होते हैं।

प्रश्न १३ : कितने दर्शनों में उपशम श्रेणी के गुणस्थान दो भाव रूप होते हैं?

उत्तर : एक भी दर्शन में उपशम श्रेणी के गुणस्थान दो भाव रूप नहीं होते हैं, क्योंकि उपशम श्रेणी में तो एक औपशमिक भाव ही पाया जाता है। यद्यपि वहाँ क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा क्षायिक भाव भी पाया जाता है लेकिन पाँचवें गुणस्थान से चारित्रमोह की अपेक्षा ही गुणस्थानों की उत्पत्ति कही गई है इसलिए उपशम श्रेणी का कोई भी गुणस्थान क्षायिक भाव रूप नहीं हो सकता है। इसी प्रकार क्षपक श्रेणी में भी जानना चाहिए।

प्रश्न १४ : क्या कोई ऐसे जीव भी हैं जो दर्शनातीत हों?

उत्तर : नहीं, ऐसे कोई जीव नहीं हैं जो दर्शनातीत हों, क्योंकि दर्शन मार्गणा में कषायातीत, वेदातीत आदि के समान दर्शनातीत जीव नहीं पाये जाते हैं, क्योंकि ज्ञान और दर्शन जीव का लक्षण है। कहा भी है -

'उपयोगो लक्षणम्'। स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः। (त.सू.२/८-९)

लक्षण का अभाव नहीं होता है इसलिए दर्शन से रहित जीव नहीं हो सकते हैं।

स्थान-विवरण

प्रश्न १५ : दर्शन मार्गणा के कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : दर्शन मार्गणा के ४ स्थान होते हैं -

(१) चार दर्शन रूप (२) तीन दर्शन रूप

(३) दो दर्शन रूप (४) एक दर्शन रूप

प्रश्न १६ : इन स्थानों में कौन-कौनसा दर्शन लेना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में दर्शन -

चार दर्शन रूप स्थान में - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन

तीन दर्शन रूप स्थान में - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन

दो दर्शन रूप स्थान में - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन

एक दर्शन रूप स्थान में - केवलदर्शन अथवा स्वकीय दर्शन अथवा अचक्षुदर्शन

प्रश्न १७ : ये स्थान किसके पाये जाते हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

४ दर्शन रूप स्थान के - मनुष्यगति वाले

३ दर्शन रूप स्थान के - ३ गति तथा चौथे से १२वें गुणस्थानवर्ती जीव

२ दर्शन रूप स्थान के - पहले, दूसरे तीसरे गुणस्थानवर्ती जीव

१ दर्शन रूप स्थान के - तेरहवें, चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव

विशेष - १) अचक्षुदर्शन रूप भी एक दर्शन का स्थान एकेन्द्रिय आदि जीवों की अपेक्षा बन सकता है।

२) जिनको अवधिदर्शन नहीं है उनके चक्षु-अचक्षुदर्शन रूप दो दर्शन का स्थान पहले से बारहवें गुणस्थान तक बनता है।

३) दो दर्शन का स्थान चतुरिन्द्रिय जीव से ही प्रारम्भ हो जाता है।

४) अचक्षुदर्शन के समान चक्षुदर्शन एवं अवधिदर्शन रूप एक दर्शन का स्थान किसी भी जीव के नहीं बन सकता क्योंकि कोई ऐसा जीव नहीं है जिसके केवल चक्षुदर्शन या केवल अवधिदर्शन हो सकता हो। इन दोनों में से एक समय में एक ही दर्शन होता है। इस अपेक्षा ही एक दर्शन रूप स्थान होता है।

प्रश्न १८ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

चार दर्शन रूप स्थान में ७ भाव -

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

औदयिक के ३ - १ ग. (म.) १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

तीन दर्शन रूप स्थान में ३१ भाव -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ५ ल. १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक भाव के १७ - ३ ग. ४ कषा. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. ५ ले. (शुक्ल बिना)

दो दर्शन रूप स्थान में ५ भाव -

क्षायोपशमिक के ३ - मतिअज्ञान, श्रुताज्ञान, विभंगज्ञान

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

एक दर्शन रूप स्थान में १० भाव -

क्षायिक के ७ - ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

क्षायोपशमिक के ३ - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन

प्रश्न १९ : कितने स्थानों में क्षायिक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : दो स्थानों में क्षायिक भाव के उत्तर भेद होते हैं -

४ दर्शन रूप स्थान में - सम्यक्त्व चारित्र

१ दर्शन रूप स्थान में - ज्ञान दर्शन दान...

प्रश्न २० : कितने स्थानों में केवल एक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ऐसा कोई स्थान नहीं है जिसमें केवल एक भाव के उत्तर भेद हों, क्योंकि एक दर्शन रूप स्थान में भी क्षायिक एवं क्षायोपशमिक इन दोनों भावों के उत्तर भेद होते हैं। चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन में स्वकीय दर्शन होने से एक दर्शन रूप स्थान होता है।

प्रश्न २१ : इन स्थानों में लेश्या रूप भाव किस अपेक्षा पाये जाते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में लेश्या रूप भावों में अपेक्षा -

तीन दर्शन रूप स्थान में

कृष्ण-नील-कापोत लेश्या - चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

पीत पद्म लेश्या - चौथे से सातवें गुणस्थान की अपेक्षा

शुक्ल लेश्या - चौथे से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा

दो दर्शन रूप स्थान में-छहों लेश्याओं में आदि के तीन गुणस्थान होते हैं।

एक दर्शन रूप स्थान में (स्वकीय दर्शन की अपेक्षा)

- चक्षु अचक्षु दर्शन के साथ तीन अशुभ लेश्याएँ - पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

  तथा पीत-पद्म लेश्या - पहले से सातवें गुणस्थान की अपेक्षा

  शुक्ल लेश्या - पहले से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा

- अवधिदर्शन में कृष्ण नील-कापोत लेश्या - चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

  पीत-पद्म लेश्या - चौथे से सातवें गुणस्थान की अपेक्षा।

  शुक्ल लेश्या - चौथे से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा

- केवलदर्शन में शुक्ल लेश्या - तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा

चार दर्शन रूप स्थान में शुक्ल लेश्या किसी भी गुणस्थान की अपेक्षा नहीं होती है तथा शेष लेश्याएँ इस स्थान में नहीं होती हैं।

प्रश्न २२ : किस स्थान में सबसे कम भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : दो दर्शन रूप स्थान में सबसे कम भाव पाये जाते हैं। इसमें पाँच भाव होते हैं-

क्षायोपशमिक के ३ - मतिअज्ञान श्रुताज्ञान विभंगज्ञान

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न २३ : कितने स्थान सम्यग्दृष्टि जीवों के नहीं बन सकते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान सम्यग्दृष्टि जीवों के नहीं बन सकता है - २ दर्शन रूप स्थान

नोट - जिनके अवधिदर्शन नहीं है उनकी अपेक्षा सम्यग्दृष्टि जीवों के भी दो दर्शन रूप स्थान बन सकता है।

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	३ दर्शन रूप	जिनके अवधिदर्शन नहीं है उनके २ दर्शन रूप स्थान भी होता है।
	चारित्र	१	३ दर्शन रूप	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	३	४ दर्श. ३ दर्श. १ दर्श.	चार दर्शन रूप स्थान मनुष्यगति में होता है।
	चारित्र	३	४ दर्श. ३ दर्श. १ दर्श.	
	ज्ञानादि सात	१	१ दर्शन रूप	केवलदर्शन रूप स्थान होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	१	३ दर्शन रूप	
	मन:पर्ययज्ञान	१	३ दर्शन रूप	
	२ अज्ञान	१	२ दर्शन रूप	
	विभंगज्ञान	१	२ दर्शन रूप	केवल संज्ञी पञ्चेन्द्रिय के ही होता है।
	तीन दर्शन	१	१ दर्शन रूप	चक्षुदर्शन में चक्षुदर्शन.....
	५ लब्धि	२	३ दर्शन २ दर्शन	२ दर्शन रूप स्थान पहले से तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	सम्यक्त्व	१	३ दर्शन रूप	
	चारित्र	१	३ दर्शन रूप	
	संयमासंयम	१	३ दर्शन रूप	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	२	३ दर्श. २ दर्श.	तीन दर्शन रूप स्थान चौथे गुण. में होता है।
	तिर्यञ्चगति	२	३ दर्श. २ दर्श.	
	मनुष्यगति	४	४ दर्श. ३ दर्श. २ दर्श. १ दर्श.	गति की अपेक्षा ४ दर्शन रूप स्थान होता है।
	देवगति	२	३ दर्श. २ दर्श.	
	४ कषाय	२	३ दर्श. २ दर्श.	
	३ लिङ्ग	२	३ दर्श. २ दर्श.	
	मिथ्यादर्शन	१	२ दर्श. रूप	
	अज्ञान	२	३ दर्श. २ दर्श.	
	असंयत	२	३ दर्श. २ दर्श.	
	असिद्धत्व	४	४ दर्श. ३ दर्श. २ दर्श. १ दर्श.	मनुष्यगति की अपेक्षा ४ दर्शन रूप स्थान होता है।
	३ अशुभ लेश्या	२	३ दर्श. २ दर्श.	
	पीत-पद्म लेश्या	२	३ दर्श. २ दर्श.	तीन दर्शन रूप स्थान चौथे से सातवें गुण. तक होता है।
	शुक्ल लेश्या	४	४ दर्श. ३ दर्श. २ दर्श. १ दर्श.	एक दर्शन रूप स्थान तेरहवें गुणस्थान में होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	४	४ दर्श. ३ दर्श. २ दर्श. १ दर्श.	
	भव्यत्व	४	४ दर्श. ३ दर्श. २ दर्श. १ दर्श.	
	अभव्यत्व	१	२ दर्शन रूप	केवल मिथ्यात्व गुणस्थान की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न २४ : कितने भावों में चारों स्थान होते हैं?

उत्तर : पाँच भावों में चारों स्थान होते हैं -

औदयिक के ३ - मनुष्यगति असिद्धत्व शुक्ललेश्या

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २५ : कितने औदयिक भावों में दो स्थान होते हैं?

उत्तर : १७ औदयिक भावों में दो स्थान होते हैं - (२ दर्शन एवं ३ दर्शन रूप)

३ गति - नरकगति तिर्यञ्चगति देवगति

४ कषाय - क्रोध मान माया लोभ

३ लिङ्ग - स्त्रीलिङ्ग पुरुषलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग

१ अज्ञान। १ असंयत।

५ लेश्या - कृष्ण नील कापोत पीत पद्म।

प्रश्न २६ : कितने भावों में एक दर्शन रूप स्थान होता है लेकिन चार दर्शन रूप स्थान नहीं होता?

उत्तर: दस भावों में एक दर्शन रूप स्थान होता है लेकिन चार दर्शन रूप स्थान नहीं होता

क्षायिक भाव के ७ - ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य
इनमें केवलदर्शन रूप एक दर्शन का स्थान होता है।

क्षायोपशमिक के ३ - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन
इनमें अपना स्वकीय दर्शन रूप एक दर्शन का स्थान होता है।

प्रश्न २७ : कितने भावों में केवल दो दर्शन रूप स्थान ही होता है?

उत्तर : पाँच भावों में केवल दो दर्शन रूप स्थान ही होता है -

क्षायोपशमिक के ३ - मतिअज्ञान श्रुताज्ञान विभंगज्ञान

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न २८ : कितने भावों के चार गुणस्थानों में तीन दर्शन रूप स्थान होता है?

उत्तर : छह भावों के चार गुणस्थानों में तीन दर्शन रूप स्थान होता है -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व (प्रथमोपशम) - चौथे से सातवें गुणस्थान तक
- चारित्र - आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान तक

क्षायिक का १ - चारित्र - आठवाँ नवाँ, दसवाँ और बारहवाँ गुणस्थान

क्षायोपशमिक का १ - सम्यक्त्व - चौथे से सातवाँ गुणस्थान

औदयिक के २ - पीत-पद्म लेश्या - चौथे से सातवाँ गुणस्थान

प्रश्न २९ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में दो दर्शन रूप स्थान होता है?

उत्तर : दो भावों के सभी उत्तर भेदों में दो दर्शन रूप स्थान होता है -

औदयिक एवं पारिणामिक

क्योंकि ये दोनों भाव पहले गुणस्थान से (यथायोग्य) चौदहवें गुणस्थान तक पाये जाते हैं।

प्रश्न ३० : क्या क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में दो दर्शन रूप स्थान नहीं हो सकता है?

उत्तर : नहीं, क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में भी दो दर्शन रूप स्थान हो सकता है, क्योंकि जिनको अवधिदर्शन नहीं हुआ है ऐसे क्षायिक सम्यग्दृष्टि के चक्षु-अचक्षुदर्शन रूप दो दर्शन का स्थान होता है। इसी प्रकार चौथे गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक होने वाले सभी भावों में जानना चाहिए।

प्रश्न ३१ : कितने भावों में होने वाला २ दर्शन रूप स्थान केवल संज्ञी जीवों की अपेक्षा ही होता है?

उत्तर : छह भावों में होने वाला २ दर्शन रूप स्थान केवल संज्ञी जीवों की अपेक्षा ही होता है-

क्षायोपशमिक भाव का १ - विभंगज्ञान

औदयिक भाव के ५ - ३ गति (नरक, देव, मनुष्य) २ लेश्या (पद्म, शुक्ल)

प्रश्न ३२ : किस भाव का कौन सा स्थान केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होता है?

उत्तर : वह भाव एवं स्थान जो केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होता है-

क्षायोपशमिक भाव का	- १ संयमासंयम	- ३ दर्शन रूप स्थान	पाँचवें गुण. की अपेक्षा
औदयिक भाव के	- ८ नरक गति	- ३ दर्शन रूप स्थान	चौथे गुण. की अपेक्षा
देव गति		- ३ दर्शन रूप स्थान	चौथे गुण. की अपेक्षा
मिथ्यादर्शन		- २ दर्शन रूप स्थान	पहले गुण. की अपेक्षा
असंयत		- ३ दर्शन रूप स्थान	चौथे गुण. की अपेक्षा
३ अशुभ लेश्या		- ३ दर्शन रूप स्थान	चौथे गुण. की अपेक्षा
शुक्ल लेश्या		- १ दर्शन रूप स्थान	तेरहवें गुण. की अपेक्षा
पारिणामिक भाव के	- १ अभव्यत्व	- २ दर्शन रूप स्थान	पहले गुण. की अपेक्षा

भावों में दर्शन

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	तीनों दर्शन चारों गतियों में होते हैं।
	चारित्र	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	४	चक्षु. अचक्षु. अवधि. केवल.	केवलदर्शन तेरहवें चौदहवें गुणस्थान में होता है।
	चारित्र	४	चक्षु. अचक्षु. अवधि. केवल.	
	ज्ञानादि सात	१	केवलदर्शन	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	४ ज्ञान	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
	३ अज्ञान	२	चक्षु. अचक्षु.	पहले दूसरे गुणस्थान में होते हैं।
	३ दर्शन	१	स्वकीय	चक्षुदर्शन में चक्षुदर्शन
	५ लब्धि	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
	सम्यक्त्व	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
	चारित्र	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
	संयमासंयम	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	केवल पाँचवें गुणस्थान में होता है।
४.	**औदयिक**			
	तीन गति	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
	मनुष्यगति	४	चक्षु. अचक्षु. अवधि. केवल.	
	४ कषाय	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
	३ लिङ्ग	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
	मिथ्यादर्शन	२	चक्षु. अचक्षु.	
	अज्ञान	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	चक्षु. अचक्षुदर्शन पहले से बारहवें गुणस्थान तक होता है।
	असंयत	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
	असिद्धत्व	४	चक्षु. अचक्षु. अवधि. केवल.	
	३ अशुभ लेश्या	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
	पीत-पद्म लेश्या	३	चक्षु. अचक्षु. अवधि.	
	शुक्ल लेश्या	४	चक्षु. अचक्षु. अवधि. केवल.	केवलदर्शन केवल तेरहवें गुणस्थान में ही होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	४	चक्षु. अचक्षु. अवधि. केवल.	
	भव्यत्व	४	चक्षु. अचक्षु. अवधि. केवल.	
	अभव्यत्व	२	चक्षु. अचक्षु.	

नोट - जो आचार्य पहले गुणस्थान से अवधिदर्शन मानते हैं उनकी अपेक्षा कुमतिज्ञान आदि में भी चक्षु-अचक्षु तथा अवधि ये तीन दर्शन होंगे।

प्रश्न ३३ : कितने भावों में केवल एक दर्शन होता है?

उत्तर : दस भावों में केवल एक दर्शन होता है -

क्षायिक के ७ ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य, इनमें मात्र केवलदर्शन होता है।

क्षायोपशमिक के ३ - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, इनमें स्वकीय एक दर्शन होता है, क्योंकि एक समय में एक ही दर्शन होता है।

प्रश्न ३४ : कितने भावों के किसी भी उत्तर भेद में केवलदर्शन नहीं होता है?

उत्तर : दो भावों के किसी भी उत्तर भेद में केवलदर्शन नहीं होता है-

औपशमिक और क्षायोपशमिक

प्रश्न ३५ : कितने भावों में केवलदर्शन भी होता है?

उत्तर : सात भावों में केवलदर्शन भी होता है-

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

औदयिक के ३ - १ गति (मनु.) १ असिद्धत्व १ लेश्या (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३६ : कितने भावों में दो दर्शन होते हैं?

उत्तर : सामान्य से पाँच भावों में दो दर्शन होते हैं -

क्षायोपशमिक के ३ - मतिअज्ञान, श्रुताज्ञान, विभंगज्ञान

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न ३७ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में तीन दर्शन होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव के सभी उत्तर भेदों में तीन दर्शन होते हैं -

औपशमिक भाव

इसमें चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन एवं अवधिदर्शन होता है।

प्रश्न ३८ : कितने भावों के साथ मात्र एक गुणस्थान में केवलदर्शन होता है?

उत्तर : एक लेश्या रूप भाव के साथ मात्र एक गुणस्थान में केवलदर्शन होता है-

शुक्ल लेश्या में, इसमें केवल तेरहवें गुणस्थान में केवलदर्शन होता है।

प्रश्न ३९ : पुरुष लिङ्ग रूप भाव में कितने दर्शन होते हैं?

उत्तर : पुरुष लिङ्ग रूप भाव में तीन दर्शन होते हैं -
चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन
इसमें केवलदर्शन नहीं हो सकता है, क्योंकि केवलदर्शन वेदातीत जीवों के होता है। यद्यपि द्रव्यवेद (पुरुष) चौदहवें गुणस्थान तक पाया जाता है लेकिन यहाँ द्रव्य वेद से प्रयोजन नहीं है। भाव वेद नवें गुणस्थान के सवेद भाग तक ही पाया जाता है। इसलिए पुरुष लिङ्ग रूप भाव में भी तीन ही दर्शन होते है।

प्रश्न ४० : कितने औदयिक भावों में केवलदर्शन भी होता है और अचक्षुदर्शन भी?

उत्तर : केवल तीन औदयिक भावों में केवलदर्शन भी होता है और अचक्षुदर्शन भी
(१) मनुष्यगति (२) असिद्धत्व (३) शुक्ल लेश्या

प्रश्न ४१ : कितने भावों में चक्षुदर्शन चार गुणस्थानों की अपेक्षा होता है?

उत्तर : ९ भावों में चक्षुदर्शन चार गुणस्थानों की अपेक्षा होता है -
औपशमिक का १ - चारित्र आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान की अपेक्षा
क्षायिक का १ - चारित्र आठवें, नवें, दसवें और बारहवें गुण. की अपेक्षा
क्षायोपशमिक का १ - सम्यक्त्व चौथे से सातवें गुणस्थान की अपेक्षा
औदयिक के - ६ - २ गति, असंयत, ३ अशुभ लेश्या-इनमें पहले से चौथे गुण. की अपेक्षा

नोट - प्रथमोपशम सम्यक्त्व रूप भाव में भी चक्षुदर्शन चार गुणस्थानों (चौथे से सातवें की अपेक्षा) में होता है।

प्रश्न ४२ : कितने भावों में अवधिदर्शन (उसमें होने वाले) सभी गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : १० भावों में अवधिदर्शन (उसमें होने वाले) सभी गुणस्थानों में होता है -
औपशमिक के - २: सम्यक्त्व, चारित्र
क्षायोपशमिक के - ८:४ ज्ञान, १ दर्शन (अवधि.) १ सम्यक्त्व १ चारित्र १ संयमासंयम
इन भावों में जितने गुणस्थान होते हैं, उन सभी गुणस्थानों में अवधिदर्शन होता है।

चक्षु-अचक्षु दर्शन

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व, चारित्र	
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	चौथे से बारहवें गुणस्थान तक होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१६	४ ज्ञान-म. श्रु. अव. मन. ३ अज्ञान-कुम. कुश्रु. विभंग. १ दर्शन - स्वकीय ५ लब्धि-दा. ला. भो. उप. वी. १ - सम्यक्त्व १ - चारित्र १ - संयमासंयम	 चक्षुदर्शन में चक्षुदर्शन·······
४.	**औदयिक**	२१	४ गति-न. ति. म. दे. ४ कषाय-क्रो. मा. मा. लो. ३ लिङ्ग-स्त्री. पु. नपुं. १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	 कषायातीत जीव भी होते हैं वेदातीत जीव भी होते हैं।
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	पहले से बारहवें गुणस्थान तक होता है। पहले से बारहवें गुणस्थान तक होता है।

प्रश्न ४३ : चक्षु-अचक्षुदर्शन में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : चक्षु-अचक्षुदर्शन में ४४ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १६ - ४ ज्ञा. ३ अज्ञा. १ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि. १ संय.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ४४ : चक्षुदर्शन के साथ कितने गुणस्थानों में औपशमिक भाव नहीं पाया जाता है?

उत्तर : चक्षुदर्शन के साथ चार गुणस्थानों में औपशमिक भाव नहीं पाया जाता है - पहला दूसरा तीसरा तथा बारहवाँ

विशेष - १) चौथे से सातवें गुणस्थान तक क्षायिक एवं क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि के तथा क्षपक श्रेणी में भी चक्षुदर्शन के साथ औपशमिक भाव नहीं होता है।

२) तेरहवें - चौदहवें गुणस्थान में भी औपशमिक भाव नहीं है लेकिन वहाँ चक्षु-अचक्षुदर्शन नहीं होते हैं।

प्रश्न ४५ : क्या चक्षुदर्शन के साथ नपुंसक लिङ्ग रूप भाव से रहित जीव भी होते हैं?

उत्तर : हाँ, चक्षुदर्शन के साथ नपुंसक लिङ्ग रूप भाव से रहित जीव भी होते हैं -

१) जिनके स्त्री एवं पुरुष लिङ्ग पाया जाता है।

२) देवगति, शलाका पुरुष, ऋद्धिधारी मुनिराज, भोगभूमिया जीव आदि

३) नवें गुणस्थान के अवेद भाग से बारहवें गुणस्थान तक

४) जो सम्यग्दर्शन के साथ जन्म लेते (नारकियों को छोड़कर) हैं।

५) म्लेच्छ खण्ड में उत्पन्न मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्रिय **(मू. ११३१)**

नोट - तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में लिङ्ग रूप भाव भी नहीं होते हैं और चक्षुदर्शन भी नहीं होता है।

प्रश्न ४६ : चक्षुदर्शनी ९ प्राण वाले जीवों के कितने भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : चक्षुदर्शनी ९ प्राण वाले जीवों के २७ भाव पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, चक्षुदर्शन, ५ लब्धि

औदयिक के १६ - १ गति (तिर्य.) ४ कषा. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट - इनके औपशमिक एवं क्षायिक भाव नहीं होते हैं, क्योंकि चक्षुदर्शनी जीवों में नौ प्राण असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों के ही होते हैं।

प्रश्न ४७ : अचक्षुदर्शनी आर्त्तध्यानी के कितने भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : अचक्षुदर्शनी आर्त्तध्यानी के ११ भाव नहीं होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना ज्ञानादि

क्षायोपशमिक के २ - चक्षुदर्शन अवधिदर्शन (स्वकीय दर्शन होने से ये भाव नहीं होते हैं।)

ये भाव छठे गुण. के आगे ही होते हैं। आर्त्तध्यान छठे गुण. के आगे नहीं होता है। मन:पर्यय ज्ञान तथा क्षायोपशमिक चारित्र भी निदान आर्त्तध्यान में नहीं होते हैं।

प्रश्न ४८ : चक्षुदर्शनी कार्मण काययोगी के कितने भावों का केवल एक उत्तर भेद होता है?

उत्तर : चक्षु दर्शनी कार्मण काययोगी के दो भावों का केवल एक उत्तर भेद होता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व (द्वितीयोपशम की अपेक्षा)

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

प्रश्न ४९ : अचक्षुदर्शनी के ज्ञान मार्गणा के कितने भेदों में शुक्ल लेश्या रूप भाव हो सकता है?

उत्तर : अचक्षुदर्शनी के ज्ञान मार्गणा के सात भेदों में शुक्ल लेश्या रूप भाव हो सकता है- कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, विभंगज्ञान, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान। केवलज्ञान नहीं होता है, क्योंकि अचक्षुदर्शन के साथ केवलज्ञान नहीं हो सकता है केवलज्ञान तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में होता है और अचक्षुदर्शन बारहवें गुणस्थान तक ही होता है।

नोट - इसी प्रकार चक्षुदर्शन में भी जानना चाहिए।

प्रश्न ५० : किस गुणस्थान वाले अचक्षुदर्शनी के औपशमिक एवं क्षायिक दोनों भाव नहीं पाये जाते हैं?

उत्तर: आदि के तीन गुणस्थान वाले अचक्षुदर्शनी के औपशमिक एवं क्षायिक दोनों भाव नहीं पाये जाते हैं, क्योंकि ये दोनों भाव सम्यग्दृष्टि जीवों के ही होते हैं।

विशेष - क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि जीवों के भी ये दोनों भाव नहीं पाये जाते हैं।

प्रश्न ५१ : चक्षु आदि दर्शनों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : चक्षु-अचक्षुदर्शन की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३९ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. (मन:. बिना) २ अज्ञा. (कुम. कुश्रु.) १ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

अवधिदर्शन में ३२ भाव -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. १ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के १७ - ४ ग. ४ क. २ लि. (पु.न.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

केवलदर्शन में १४ - क्षायिक के ९, औदयिक के ३-१ ग (म.) १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न ५२ : चक्षु आदि दर्शनों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : चक्षु आदि दर्शनों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में गुणस्थान -

चक्षु एवं अचक्षुदर्शन में ४ - पहला, दूसरा, चौथा, छठा

अवधिदर्शन में २ - चौथा, छठा

केवलदर्शन में १ - तेरहवाँ

प्रश्न ५३ : इनमें कितने-कितने भाव होते हैं?

उत्तर : चक्षु-अचक्षुदर्शन के पहले गुणस्थान में - ३२

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (स्वकीय) ५ ल.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. ....

पारिणामिक के ३ - जीव. भव्य. अभव्य.

इनके दूसरे गुणस्थान में नरकगति, मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव न होने से २९ भाव होते हैं।

चौथे गुणस्थान में ३३ -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १० - ३ ज्ञा. १ दर्श. (स्वकीय) ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १९ - ४ ग. ४ क. २ लि. (पु.न.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

छठे गुणस्थान में २५ -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. १ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के ११ - १ ग. (मनु.) ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि.
३ ले. (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

अवधिदर्शन के चौथे गुणस्थान में (कृष्ण और नील) २ लेश्या कम करना चाहिए एवं छठे गुणस्थान में भाव चक्षु-अचक्षुदर्शन के समान ही जानने चाहिए। मात्र दर्शन के स्थान पर अवधि दर्शन कहना चाहिए।

केवल दर्शन में तेरहवें गुणस्थान में होने वाले चौदह भाव जानना चाहिए।

नोट - अवधिदर्शन का कथन अवधिज्ञान तथा केवलदर्शन का कथन केवलज्ञान के समान जानना चाहिए।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ५४ : चक्षु दर्शन में होने वाले कितने क्षायोपशमिक भाव अवधिदर्शन में नहीं होते हैं?

उत्तर : चक्षु दर्शन में होने वाले चार क्षायोपशमिक भाव अवधिदर्शन में नहीं होते हैं -
३ अज्ञान - कुमति. कुश्रुत. विभंग
१ - चक्षुदर्शन

प्रश्न ५५ : केवलदर्शन में होने वाले कितने भाव अवधिदर्शन में भी होते हैं?

उत्तर : केवलदर्शन में होने वाले सात भाव अवधिदर्शन में भी होते हैं -
क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
औदयिक के ३ - मनुष्यगति, असिद्धत्व, शुक्ल लेश्या
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५६ : अवधिदर्शन में होने वाले कितने मूल भाव केवलदर्शन में नहीं होते हैं?

उत्तर : अवधिदर्शन में होने वाले दो मूल भाव केवलदर्शन में नहीं होते हैं -
(१) औपशमिक (२) क्षायोपशमिक

प्रश्न ५७ : अवधिदर्शन की अपेक्षा चक्षुदर्शन में कितने भाव ज्यादा होते हैं?

उत्तर : अवधिदर्शन की अपेक्षा चक्षुदर्शन में ५ भाव ज्यादा होते हैं -
क्षायोपशमिक के ३ - कुमतिज्ञान कुश्रुतज्ञान विभंगज्ञान
औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन
पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न ५८ : कितने दर्शनों में पाँचों मूल भाव होते हैं?

उत्तर : तीन दर्शनों में पाँचों मूल भाव होते हैं -

चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन

इनमें पाँचों भाव चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न ५९ : कितने दर्शन में तीन भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : मात्र एक दर्शन में तीन भाव के उत्तर भेद होते हैं -

केवलदर्शन

इसमें क्षायिक, औदयिक एवं पारिणामिक भाव के उत्तर भेद होते हैं।

पहले दूसरे तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा चक्षु-अचक्षु दर्शन में भी तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं -

क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक

प्रश्न ६० : कितने दर्शन में बराबर मूल भाव होते हैं?

उत्तर : तीन दर्शन में बराबर मूल भाव होते हैं -

चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन

इन तीनों में पाँचों मूल भाव होते हैं।

प्रश्न ६१ : कितने दर्शनों में लिङ्ग रूप भाव का अभाव भी होता है?

उत्तर : तीन दर्शनों में लिङ्ग रूप भाव का अभाव भी होता है-

चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन

इन दर्शनों में नवें गुणस्थान के अवेद भाग से बारहवें गुणस्थान तक लिङ्ग रूपभाव नहीं पाये जाते हैं।

प्रश्न ६२ : कितने दर्शनों में उपशम भाव नहीं पाया जाता है?

उत्तर : मात्र एक केवल दर्शन में उपशम भाव नहीं पाया जाता है, क्योंकि औपशमिक भाव ग्यारहवें गुणस्थान से आगे नहीं पाया जाता है।

प्रश्न ६३ : क्या ऐसे कोई अचक्षुदर्शन वाले हैं जिनके क्षायिक भाव होता है लेकिन औपशमिक भाव नहीं होता है?

उत्तर : हाँ, ऐसे भी अचक्षुदर्शन वाले जीव हैं जिनके क्षायिक भाव होता है लेकिन औपशमिक भाव नहीं होता है -

(१) क्षपक श्रेणी वाले मुनिराज

(२) चौथे से सातवें गुणस्थान वाले क्षायिकसम्यग्दृष्टि

प्रश्न ६४ : कितने दर्शन रूप भाव में चार योग वाले जीव भी होते हैं?

उत्तर : दो दर्शन रूप भाव में चार योग वाले जीव भी होते हैं -

चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन

चक्षुदर्शन में - औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग तथा अनुभय वचनयोग

ये चार योग चतुरिन्द्रिय एवं असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय की अपेक्षा जानने चाहिए।

अचक्षुदर्शन में - औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग, अनुभयवचनयोग। ये चार योग द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों तक जानना चाहिए।

प्रश्न ६५ : चक्षुदर्शनी के औदारिक मिश्र काय योग सम्बन्धी आस्रव का प्रत्यय कितने भावों में हो सकता है?

उत्तर : चक्षुदर्शनी के औदारिक मिश्र काय योग सम्बन्धी आस्रव का प्रत्यय ३५ भावों में हो सकता है।

क्षायिक का - १ सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञान, २ अज्ञान १ दर्शन ५ लब्धि १ सम्यक्त्व

औदयिक के १९ - २ गति (तिर्य., मनु.) ४ कषाय, ३ लिंग, १ मिथ्यादर्शन, १ अज्ञान १ असंयत, १ असिद्धत्व, ६ लेश्या।

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

प्रश्न ६६ : चक्षुदर्शनी संज्ञातीत जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : चक्षुदर्शनी संज्ञातीत जीवों के २० भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायोपशमिक के १० - ४ ज्ञान १ दर्शन ५ लब्धि

औदयिक के ४ - १ मनुष्य गति १ अज्ञान १ असिद्धत्व १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **अचक्षुदर्शन में कितने गति रूप भाव होते हैं?**

(अ) ३ (ब) ४
(स) १ (द) ५

(ii) **केवलदर्शन में कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?**

(अ) १८ (ब) १४
(स) १५ (द) कोई नहीं

(iii) **कितने पारिणामिक भावों में सभी दर्शन होते हैं?**

(अ) ४ (ब) २
(स) ३ (द) १

(iv) **चक्षुदर्शन में कम-से-कम कितने औदयिक भाव होते हैं?**

(अ) ४ (ब) ३
(स) ५ (द) २१

(v) **कितने दर्शनों में बराबर क्षायोपशमिक भाव होते हैं?**

(अ) ३ (ब) २
(स) ४ (द) कोई नहीं

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) केवलदर्शन में कितने क्षायिक भाव पाये जाते हैं?
(ii) कितने दर्शनों में सोलह क्षायोपशमिक भाव होते हैं?
(iii) कितने पारिणामिक भावों में दो दर्शन होते हैं?
(iv) चक्षुदर्शन में कितने औपशमिक भाव होते हैं?
(v) अवधिदर्शन में कितने गति रूप भाव होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) चक्षुदर्शन एवं अवधिदर्शन में पाँचों मूल भाव होते हैं।
(ii) चक्षुदर्शनी के मन:पर्ययज्ञान रूप भाव नहीं होता हैं।
(iii) केवलदर्शनी के औदयिक भाव भी होते हैं।
(iv) दो गति रूप भाव में चारों दर्शन होते हैं।
(v) अवधिदर्शन में तीन लिङ्ग रूप भाव होते हैं?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए-

(i) चक्षुदर्शन में .... मूलभाव .... गति रूप तथा .... क्षायिक भाव होते हैं।

(ii) केवलदर्शन में .... औदयिक .... क्षायोपशमिक तथा .... पारिणामिक भाव होते हैं।

(iii) अवधिदर्शन में .... क्षायिक .... औपशमिक तथा .... कषाय रूप भाव नहीं होते हैं।

(iv) .... औदयिक भाव चारों दर्शनों में .... तीन दर्शनों में .... दो दर्शनों में होता है।

(v) क्षायोपशमिक अज्ञान में .... दर्शन .... ज्ञान रूप भाव में .... दर्शन होते है।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		ब
(i)	चक्षुदर्शन	-	केवलदर्शन
(ii)	तीन पारिणामिक भाव	-	१ औदयिक भाव
(iii)	केवलदर्शन	-	१६ क्षायोपशमिक भाव
(iv)	तीन औदयिक भाव	-	२० औदयिक भाव
(v)	२ दर्शन रूपस्थान	-	अवधिदर्शन
(vi)	अवधिदर्शन	-	७ भाव
(vii)	३९ भाव	-	औदयिक अज्ञान से रहित
(viii)	४ दर्शन रूप स्थान	-	अचक्षुदर्शन

- उत्तरमाला -

१. (i) ब (ii) द (iii) ब (iv) अ (v) ब

२. (i) ९ (ii) २ (iii) १ (iv) २ (v) ४

३. (i) हाँ (ii) ना (iii) हाँ (iv) ना (v) हाँ

४. (i) ५, ४, २ (ii) ३, ०, २ (iii) ७, ०, ० (iv) ३, १७, १ (v) २, ४, ३

५. (i) १६ क्षायोपशमिक भाव (ii) अचक्षुदर्शन (iii) औदयिक अज्ञान से रहित
(iv) केवलदर्शन (v) १ औदयिक भाव (vi) २० औदयिक भाव
(vii) अवधिदर्शन (viii) ७ भाव

लेश्या मार्गणा

प्रश्न १ : लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : आत्मप्रवृत्ति में संश्लेषण करने वाली लेश्या है। **(ध.७/७)**

जो कर्मस्कन्ध से आत्मा को लिप्त करती है उसे लेश्या कहते हैं। **(ध.१/३८८)**

स्फटिकादि पदार्थों में जैसे जपा पुष्पादि पदार्थों के सान्निध्य से जो स्वभाव प्रकट होता है वैसे ही जीव में कर्मयोग से लेश्या होती है। **''कषायानुरंजितयोगप्रवृत्तिः लेश्या''** कषाय के उदय से जो मन-वचन-काय की प्रवृत्ति होती है, जिससे आत्मा के प्रदेशों में कम्पन उत्पन्न होता है, वह लेश्या है। जिसके द्वारा जीव अपने आपको पुण्य-पाप से लिप्त करे, वह लेश्या है। **(गो.जी. ४८९)**

कषायों से अनुरक्त योगप्रवृत्ति को लेश्या कहते हैं। **(ध.१/१५०)**

प्रश्न २ : कषाय से अनुरंजित योगप्रवृत्ति को लेश्या क्यों कहा है?

उत्तर : कषायों से स्थिति और अनुभाग बन्ध होता है तथा योग से प्रकृति और प्रदेश बन्ध होता है अर्थात् जिनके माध्यम से चारों प्रकार का बन्ध होता है वही लेश्या है। अतः कषाय और योग दोनों को लेश्या कहा गया है। **(गो.जी. ४९०)**

प्रश्न ३ : लेश्याएँ कितनी होती हैं?

उत्तर : लेश्याएँ छह होती हैं -

(१) कृष्ण लेश्या	(२) नील लेश्या	(३) कापोत लेश्या
(४) पीत लेश्या	(५) पद्म लेश्या	(६) शुक्ल लेश्या

लेश्या दो प्रकार की होती है -

(१) अशुभ लेश्या - कृष्ण, नील, कापोत।

(२) शुभ लेश्या - पीत, पद्म, शुक्ल।

द्रव्य लेश्या - शरीर का वर्ण द्रव्य लेश्या है। जैसे - पार्श्वनाथ भगवान का वर्ण काला।

भाव लेश्या - जीव का कषाय और योग के निमित्त से होने वाला जो आत्मिक परिणाम है, वह भाव लेश्या है। **(ध.२/७८८)**

मिथ्यात्व आदि के जो तीव्र, तीव्रतर तथा तीव्रतम संस्कार हैं वे क्रमशः कापोत, नील एवं कृष्ण लेश्या हैं तथा मन्द, मन्दतर और मन्दतम संस्कार क्रमशः पीत, पद्म और शुक्ल लेश्या हैं। **(ध.१/३९० के आधार से)**

नैगम नय से लेश्या छह हैं और व्यवहार नय से असंख्यात लोक प्रमाण हैं। **(गो.जी.जी. ४९३)**

इन लेश्याओं में जीवों की खोज करना लेश्यामार्गणा है।

प्रश्न ४ : लेश्या मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : लेश्या मार्गणा के अनुवाद से कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, पीत लेश्या, पद्म लेश्या, शुक्ल लेश्या और अलेश्या वाले जीव हैं। **(ध.१/३८८)**

लेश्या मार्गणा भी छह प्रकार की होती है -

(१) कृष्ण लेश्या (२) नील लेश्या (३) कापोत लेश्या

(४) पीत लेश्या (५) पद्म लेश्या (६) शुक्ल लेश्या **(वृ.द्र.सं. १३)**

प्रश्न ५ : अलेश्य जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो कृष्णादि लेश्याओं से रहित हैं, पंच परावर्तन रूप संसार से पार हो गये हैं, जो अतीन्द्रिय और अनन्त सुख को प्राप्त हैं और जो आत्मोपलब्धि रूप सिद्धपुरी को प्राप्त हो गये हैं, उन्हें लेश्यातीत या अलेश्य जानना चाहिए। **(ध.१/३९२)**

लेश्या के कारणभूत कर्मों के क्षय से उत्पन्न हुए जीव परिणाम को क्षायिक लब्धि कहते हैं। उसी क्षायिक लब्धि से जीव अलेश्य होता है। **(ध.७/१०६)**

प्रश्न ६ : लेश्या को औदयिकी क्यों कहा गया है?

उत्तर : औदयिक भाव से जीव कृष्णादि लेश्या वाला होता है और छहों लेश्याएँ कषायों के उदय से होती हैं इसलिए औदयिकी हैं। **(ध.७/१०४)**

प्रश्न ७ : जब लेश्या को औदयिकी कहा है, तो ११ वें आदि गुणस्थानों में शुक्ल लेश्या है। ऐसा आगम है परंतु वहाँ पर कषाय का उदय नहीं है, इसलिए औदयिकपना नहीं बन सकता है?

उत्तर : यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि जो योग प्रवृत्ति कषाय के उदय से अनुरंजित है, वही यह है, इस प्रकार पूर्वभाव प्रज्ञापन नय की अपेक्षा ११वें आदि गुणस्थानों में भी लेश्या को औदयिक कहा है। किन्तु अयोग केवली के योग प्रवृत्ति नहीं है, इसलिए लेश्या रहित हैं, ऐसा निश्चय है। **(गो.जी.मू. ५३३ के आधार से)**

कर्म विवक्षा

क्र.	लेश्या	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	कृष्ण-नील कापोत	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	एकेन्द्रिय से पञ्चेन्द्रिय तक होता है।
			सासादन	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	देवगति में नहीं होता है।
			अविरतसम्यक्त्व	औप.क्षा.क्षायो.	देवगति में नहीं होता है।
२.	पीत-पद्म	उदय	मिथ्यात्वादि		
			चार गुणस्थान	पूर्ववत्	
			संयमासंयम	क्षायोपशमिक	
			प्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
			अप्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
३.	शुक्ल	उदय	मिथ्यात्वादि सात		
			गुणस्थान	पूर्ववत्	
			अपूर्वकरण संयत	औप.क्षा.	क्षायिकसम्यग्दृष्टि के दोनों भाव होते हैं।
			अनिवृत्तिकरणसंयत	औप.क्षा.	
			सूक्ष्मसाम्परायसंयत	औप.क्षा.	
			उपशान्तकषाय.	औपशमिक	
			क्षीणकषायवीत.	क्षायिक	
			सयोगकेवली.	क्षायिक	
४.	लेश्यातीत (अलेश्य)	क्षय	अयोगकेवली	क्षायिक	सिद्ध भगवान भी अलेश्य होते हैं। उनके भी क्षायिक भाव होता है।

प्रश्न ८ : क्षायिक लब्धि से जीव अलेश्यिक होता है, यह कैसे?

उत्तर : लेश्या के कारणभूत कर्मों के क्षय से उत्पन्न हुए जीव परिणाम को क्षायिक लब्धि कहते हैं, उसी क्षायिक लब्धि से जीव अलेश्यिक होता है; यह सूत्र का तात्पर्य है। शरीर नामकर्म की सत्ता होना क्षायिकत्व के विरुद्ध नहीं है क्योंकि क्षायिक भाव शरीर नामकर्म के आधीन नहीं है। **(ध. ७/१०६)**

प्रश्न ९ : कृष्णादि अशुभ लेश्याओं का कौनसा गुणस्थान किस गति में नहीं होता है?

उत्तर : कृष्ण आदि अशुभ लेश्याओं का अविरतसम्यक्त्व एवं सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान देवगति में नहीं होता है, क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव वैमानिक देवों में ही जाता है। वहाँ कृष्णादि अशुभ लेश्याएँ नहीं होती हैं।

सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान पर्याप्त अवस्था में ही होता है देवों की पर्याप्त अवस्था में अशुभ लेश्या नहीं है।

कृष्ण-नील लेश्या का चौथा गुणस्थान भोगभूमिया मनुष्य-तिर्यञ्च के नहीं होता है। देवों के समान भोगभूमिया जीवों के भी पर्याप्त अवस्था में अशुभ लेश्या के साथ चारों गुणस्थान नहीं होते हैं।

प्रश्न १० : कितनी लेश्या के चार गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : पीत पद्म शुक्ल, इन तीन लेश्याओं के चार गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं-

(१) सम्यग्मिथ्यात्व (२) संयमासंयम (३) प्रमत्तसंयत (४) अप्रमत्तसंयत

प्रश्न ११ : शुक्ल लेश्या का चौथा गुणस्थान कितनी गतियों में क्षायिक भाव रूप होता है?

उत्तर : शुक्ल लेश्या का चौथा गुणस्थान तीन गतियों में क्षायिक भाव रूप होता है -

(१) तिर्यञ्चगति (२) मनुष्यगति (३) देवगति

तिर्यञ्चगति में (भोगभूमि की अपेक्षा) क्षायिक सम्यक्त्व के साथ शुक्ल लेश्या पर्याप्तावस्था में ही होती है।

मनुष्यगति में भोगभूमि की अपेक्षा पर्याप्त अवस्था में तथा कर्मभूमि की अपेक्षा दोनों अवस्थाओं में होता है।

देवों में वैमानिक देवों की अपेक्षा जानना चाहिए।

इसी प्रकार पीत-पद्म लेश्या में भी समझना चाहिए।

प्रश्न १२ : किस लेश्या का कौनसा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होता है?

उत्तर : कृष्ण, नील, कापोत, पीत तथा पद्म, इन पाँच लेश्याओं में केवल एक गुणस्थान चौथा अविरतसम्यक्त्व तथा शुक्ल लेश्या में चार गुणस्थान -

चौथा, आठवाँ, नवाँ, दसवाँ

ये गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होते हैं।

शुक्ल लेश्या के साथ बारहवाँ, तेरहवाँ गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होता है।

प्रश्न १३ : क्या शुक्ल लेश्या में भी वह गुणस्थान होता है जो औदयिक कहा गया है?

उत्तर : हाँ, शुक्ल लेश्या में भी वह गुणस्थान होता है जो औदयिक कहा गया है, क्योंकि शुक्ल लेश्या पहले गुणस्थान से तेरहवें गुणस्थान तक होती है। केवल पहला गुणस्थान औदयिक है। नरकगति के बिना तीन गतियों में पहले गुणस्थान में शुक्ल लेश्या हो सकती है।

स्थान विवरण

प्रश्न १४ : लेश्या मार्गणा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : लेश्या मार्गणा में ४ स्थान होते हैं -

(१) ६ लेश्या रूप (२) ३ लेश्या रूप

(३) १ लेश्या रूप (४) लेश्यातीत

प्रश्न १५ : इन स्थानों में किस-किस लेश्या को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में लेश्या -

६ लेश्या रूप स्थान में - कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म शुक्ल

३ लेश्या रूप स्थान में - कृष्ण नील कापोत या पीत पद्म शुक्ल

१ लेश्या रूप स्थान में - शुक्ल लेश्या रूप अथवा स्वकीय लेश्या रूप

लेश्यातीत स्थान में - लेश्या का अभाव है।

प्रश्न १६ : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

छह लेश्या रूप स्थान के - तीन गति (नरक बिना) वाले जीव और पहले से चौथे गुणस्थानवर्ती जीव

तीन शुभ लेश्या रूप स्थान के - पाँचवें से सातवें गुणस्थानवर्ती जीव

तीन अशुभ लेश्या रूप स्थान के - नरकगति वाले जीव

एक लेश्या रूप स्थान के - आठवें से तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीव

लेश्यातीत स्थान के - चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोगकेवली भगवान और सिद्ध भगवान

विशेष - १) भवनत्रिक एवं असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों के कृष्ण नील कापोत एवं पीत लेश्या रूप ४ लेश्या का स्थान बन सकता है। **(गो.जी.)**

२) भोगभूमिया सम्यग्दृष्टि के भी कापोत पीत पद्म शुक्ल लेश्या रूप ४ लेश्या का स्थान हो सकता है।

३) वैमानिक देवों के ३ शुभ लेश्या रूप तीन लेश्या का स्थान होता है।

४) देव एवं नारकियों के जिन स्थानों में केवल एक लेश्या होती है उनके तथा वैमानिक देवियों के एक लेश्या रूप स्थान होता है।

५) तीसरे-पाँचवें नरक में तथा दूसरे, पाँचवें, छठे युगल (स्वर्गों) में दो लेश्या रूप स्थान हैं। इसी प्रकार और भी स्थान बनाये जा सकते हैं। **(रा.वा.)**

प्रश्न १७ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

६ लेश्या रूप स्थान में ३४ भाव -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १४ - ३ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

३ लेश्या रूप स्थान में ४ भाव -

क्षायोपशमिक के ३ - मन:पर्ययज्ञान चारित्र संयमासंयम

औदयिक का १ - नरकगति (अशुभ लेश्या)

१ लेश्या रूप स्थान में १५ भाव -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना

औदयिक के ६ - कृष्ण नील कापोत पीत पद्म शुक्ल

लेश्यातीत स्थान में एक भी भाव नहीं है।

प्रश्न १८ : किस लेश्या रूप स्थान में सात गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : ३ लेश्या रूप स्थान में सात गुणस्थान होते हैं -

तीन अशुभ लेश्या की अपेक्षा - पहले से चौथा गुणस्थान (नरकगति की अपेक्षा)

तीन शुभ लेश्या की अपेक्षा - पाँचवें से सातवाँ गुणस्थान

अर्थात् तीन लेश्या रूप स्थान में पहले से सातवाँ गुणस्थान होता है।

तीन शुभ लेश्या पहले से सातवें गुणस्थान तक होती है लेकिन पाँचवें से सातवें गुणस्थान तक तीन शुभ लेश्याएँ ही होती हैं।

कोई आचार्य मुनिराज के अशुभ लेश्या भी मानते हैं।

प्रश्न १९ : कितने स्थानों में तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान में तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं -

एक लेश्या रूप स्थान में, इसमें औपशमिक, क्षायिक एवं औदयिक

विशेष - लेश्यातीत स्थान में, इसमें क्षायिक औदयिक एवं पारिणामिक भावों के उत्तर भेद होते हैं।

प्रश्न २० : कितने स्थानों में केवल मनुष्यगति में पाये जाने वाले भाव भी होते हैं?

उत्तर : तीन स्थानों में केवल मनुष्यगति में पाये जाने वाले भाव भी होते हैं -

छह लेश्या रूप स्थान में १ - मनुष्यगति

तीन लेश्या रूप स्थान में २ - मन:पर्ययज्ञान तथा क्षायोपशमिक चारित्र

एक लेश्या रूप स्थान में ९ - औपशमिक चारित्र तथा सम्यक्त्व बिना आठ क्षायिक भाव

ये भाव केवल मनुष्य गति में ही पाये जाते हैं लेकिन इन स्थानों में अन्य भाव भी पाये जाते हैं।

प्रश्न २१ : कितने स्थानों में केवल संज्ञी जीवों के होने वाले भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : मात्र एक स्थान में केवल संज्ञी जीवों के होने वाले भाव पाये जाते हैं -

३ लेश्या रूप स्थान में होने वाले सभी भाव संज्ञी जीवों के ही पाये जाते हैं।

प्रश्न २२ : कितने स्थानों में औदयिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : तीन स्थानों में औदयिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

६ लेश्या रूप स्थान में - १४ ३ गति, ४ कषाय, ३ लिंग, मि. अज्ञान, असंयत, असिद्धत्व

३ लेश्या रूप स्थान में - १ नरक गति

१ लेश्या रूप स्थान में - ६ लेश्या

प्रश्न २३ : कितने स्थानों में नाम कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : ३ स्थानों में नाम कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भाव पाये जाते हैं -

६ लेश्या रूप स्थान में - ३ गति (तिर्यंच, देव, मनुष्य)

३ लेश्या रूप स्थान में - १ गति (नरक गति)

१ लेश्या रूप स्थान में - ६ लेश्या

प्रश्न २४ : कितने स्थानों में केवल एक गुणस्थान पाया जाता है?

उत्तर : मात्र एक स्थान में केवल एक गुणस्थान पाया जाता है -

लेश्यातीत स्थान

इसमें मात्र चौदहवाँ गुणस्थान होता है।

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	३	६ ले. ३ ले. १ ले.	१ लेश्या रूप स्थान ८ वें से ११ वें गुणस्थान तक होता है।
	चारित्र	१	१ लेश्या रूप	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	४	६ ले. ३ ले. १ ले. लेश्यातीत	६ ले. रूप स्थान चौथे गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	चारित्र	२	१ ले. लेश्यातीत	
	ज्ञानादि सात	२	१ ले. लेश्यातीत	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	३	६ ले. ३ ले. १ ले.	३ ले. रूप स्थान ५वें से ७ वें गुणस्थान तक होता है।
	मन:पर्ययज्ञान	२	३ ले. १ ले.	
	३ अज्ञान	२	६ ले. ३ ले.	३ ले. रूप स्थान नरकगति की अपेक्षा होता है।
	चक्षु. अचक्षु.	३	६ ले. ३ ले. १ ले.	
	अवधिदर्शन	३	६ ले. ३ ले. १ ले.	
	५ लब्धि	३	६ ले. ३ ले. १ ले.	
	सम्यक्त्व	२	६ ले. ३ ले.	
	चारित्र	१	३ लेश्या रूप	तीन शुभ लेश्या रूप स्थान होता है।
	संयमासंयम	१	३ लेश्या रूप	तीन शुभ लेश्या रूप स्थान होता है।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	३ लेश्या रूप	सामान्य से नरकगति की अपेक्षा जानना चाहिए।
	तिर्यञ्चगति	२	६ ले. ३ ले.	
	देवगति	२	६ ले. ३ ले.	३ लेश्या रूप स्थान तीसरे चौथे गुणस्थान की अपेक्षा जानना चाहिए।
	मनुष्यगति	४	६ ले. ३ ले. १ ले. लेश्यातीत	
	४ कषाय	३	६ ले. ३ ले. १ ले.	
	३ लिङ्ग	३	६ ले. ३ ले. १ ले.	
	मिथ्यादर्शन	२	६ ले. ३ ले.	
	अज्ञान	३	६ ले. ३ ले. १ ले.	
	असंयत	२	६ ले. ३ ले.	नरकगति की अपेक्षा ३ लेश्या रूप स्थान होता है।
	असिद्धत्व	४	६ ले. ३ ले. १ ले. लेश्यातीत	
	६ लेश्या	१	स्वकीय लेश्या रूप	कृष्ण लेश्या में कृष्ण लेश्या रूप……
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	४	६ ले. ३ ले. १ ले. लेश्यातीत	
	भव्यत्व	४	६ ले. ३ ले. १ ले. लेश्यातीत	
	अभव्यत्व	२	६ ले. ३ ले.	

प्रश्न २५ : कितने भावों में केवल नरकगति की अपेक्षा ३ लेश्या रूप स्थान बनता है?

उत्तर : ६ भावों में केवल नरकगति की अपेक्षा ३ लेश्या रूप स्थान बनता है -

क्षायोपशमिक के २ - मत्यज्ञान, श्रुताज्ञान

औदयिक के ३ - १ गति (नरक) १ मिथ्या. १ असं.

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

नोट - विभंगज्ञान में देवगति की अपेक्षा भी ३ ले. रूप स्थान बनता है, इसलिए उसका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न २६ : कितने भावों में छह लेश्या रूप स्थान भी होता है और एक लेश्या रूप स्थान भी?

उत्तर : २५ भावों में छह लेश्या रूप स्थान भी होता है और एक लेश्या रूप स्थान भी-

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अव.) ३ दर्श. ५ लब्धि

औदयिक के १० - १ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २७ : कितने भावों में केवल एक लेश्यास्थान होता है?

उत्तर : १० भावों में केवल एक लेश्या स्थान होता है -

औपशमिक का १ - चारित्र (१ लेश्या रूप)

क्षायोपशमिक के २ - चारित्र, संयमासंयम (३ शुभ लेश्यारूप)

औदयिक के ७ - १ ग. (नरक)-३ अशुभ लेश्यारूप, ६ लेश्या (स्वकीय लेश्यारूप)

प्रश्न २८ : कितने भावों के उत्तर भेदों में लेश्यातीत स्थान भी होता है?

उत्तर : तीन भावों के उत्तर भेदों में लेश्यातीत स्थान भी होता है -

क्षायिक के ९ - सभी भेदों में

औदयिक के २ - मनुष्यगति असिद्धत्व

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २९ : तीन लिङ्ग रूप भाव में लेश्या स्थानों का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : तीन लिङ्ग रूप भाव में लेश्या स्थानों का विवेचन -

स्त्रीलिङ्ग और पुरुषलिङ्ग में - ६ लेश्या रूप स्थान

तिर्यञ्च एवं मनुष्यगति में - पहले से चौथे गुणस्थान तक

देवगति में - पहले-दूसरे गुणस्थान में

३ लेश्या रूप स्थान - पाँचवें से सातवें गुणस्थान तक, देवगति में तीसरे चौथे गुणस्थान में

१ लेश्या रूप स्थान - आठवें से नवें गुणस्थान के सवेद भाग तक

नपुंसक लिङ्ग रूपभाव में -

६ लेश्या रूप स्थान - कर्मभूमिया मनुष्य-तिर्यञ्च के पहले से चौथे गुणस्थान तक

३ लेश्या रूप स्थान - पाँचवें से सातवें गुणस्थान तक (शुभ लेश्या रूप) नरकगति में सभी गुणस्थानों में (अशुभ लेश्या रूप)

१ लेश्या रूप स्थान - आठवें से नवें गुणस्थान के सवेद भाग तक

प्रश्न ३० : कितने भावों में मात्र एक अपेक्षा से तीन लेश्या रूप स्थान होता है?

उत्तर : १४ भावों में मात्र एक अपेक्षा से तीन लेश्या रूप स्थान होता है-

क्षायोपशमिक के ५ - १ ज्ञा. (मनः) २ अज्ञा. १ चारि. १ संय.

औदयिक के ८ - ४ ग. २ लि. (स्त्री-पुरु.) १ मि. १ असं.

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

इनमें से मनःपर्ययज्ञान एवं क्षायोपशमिक चारित्र में छठे-सातवें गुणस्थान की अपेक्षा- ३ शुभ लेश्या रूप स्थान

संयमासंयम एवं तिर्यञ्चगति में - पंचमगुणस्थान की अपेक्षा ३ शुभ लेश्या रूप स्थान

मनुष्यगति में - पाँचवें से सातवें गुणस्थान की अपेक्षा ३ शुभ लेश्या रूप स्थान

स्त्री एवं पुरुष लिङ्ग में - पाँचवें से सातवें गुणस्थान की अपेक्षा ३ शुभ लेश्या रूप स्थान

२ अज्ञान, नरकगति, मिथ्यात्व, असंयत एवं अभव्यत्व भाव में नरकगति की अपेक्षा ३ अशुभ लेश्या रूप स्थान होता है।

विशेष - इन भावों में से यथायोग्य देवगति में तीसरे-चौथे गुणस्थान की अपेक्षा ३ शुभ लेश्या रूप स्थान होता है।

प्रश्न ३१ : कितने भावों में शुभ लेश्या रूप स्थान ही होते हैं?

उत्तर : ७ भावों में शुभ लेश्या रूप स्थान ही होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र - १ शुक्ल लेश्या रूप

क्षायोपशमिक के ३ - १ ज्ञान (मनः) चारित्र संयमासंयम - ३ शुभ लेश्या रूप
औदयिक के ३ - पीत पद्म शुक्ल लेश्या

क्षायिक भाव के ज्ञानादि आठ भावों में भी शुभ लेश्या ही होती है लेकिन उनमें लेश्यातीत स्थान भी होता है इसलिए उनका यहाँ ग्रहण नहीं किया गया है।

प्रश्न ३२ : किस भाव का कौन सा स्थान एक गुणस्थान की अपेक्षा बनता है?

उत्तर : उन भावों के वे स्थान जो एक गुणस्थान की अपेक्षा बनते हैं -

औपशमिक का १ -

सम्यक्त्व रूप भाव में - ६ लेश्या रूप स्थान - चौथे गुण. की अपेक्षा

क्षायिक के ९ -

सम्यक्त्व रूप भाव में - ६ लेश्या रूप स्थान - चौथै गुण. की अपेक्षा
लेश्यातीत स्थान - चौदहवें गुण. की अपेक्षा
चारित्र रूप भाव में - लेश्यातीत स्थान - चौदहवें गुण. की अपेक्षा
ज्ञानादि सात भावों में - १ लेश्या रूप स्थान - तेरहवें गुण. की अपेक्षा
- लेश्यातीत स्थान - चौदहवें गुण. की अपेक्षा

क्षायोपशमिक के ६ -

३ ज्ञान १ दर्शन (अवधि.) - ६ लेश्या रूप स्थान - चौथे गुण. की अपेक्षा
१ सम्यक्त्व रूप भाव में - ६ लेश्या रूप स्थान - चौथे गुण. की अपेक्षा
१ संयमासंयम रूप भाव में - ३ लेश्या रूप स्थान - पाँचवें गुण. की अपेक्षा

औदयिक के ४ -

१ तिर्यंच गति रूप भाव में - ३ लेश्या रूप स्थान - पाँचवें गुण. की अपेक्षा
१ मनुष्य गति रूप भाव में - लेश्यातीत स्थान - चौदहवें गुण. की अपेक्षा
१ मिथ्यादर्शन रूप भाव में - ६ लेश्या रूप स्थान - पहले गुण. की अपेक्षा
१ असिद्धत्व रूप भाव में - लेश्यातीत स्थान - चौदहवें गुण. की अपेक्षा

पारिणामिक के ३ -

जीवत्व रूप भाव में - लेश्यातीत स्थान - चौदहवें गुण. की अपेक्षा
भव्यत्व रूप भाव में - लेश्यातीत स्थान - चौदहवें गुण. की अपेक्षा
अभव्यत्व भाव में - ६ लेश्या रूप स्थान - पहले गुण. की अपेक्षा

नोट - मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव में ३ लेश्या रूप स्थान नरक गति में एक गुणस्थान की अपेक्षा बनता है।

भावों में लेश्या

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	चारित्र	१	शुक्ल लेश्या	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	चारित्र	१	शुक्ल लेश्या	
	ज्ञानादि सात	१	शुक्ल लेश्या	केवल तेरहवें गुणस्थान में ही होती है।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	मन:पर्ययज्ञान	३	पी. प. शु.	
	२ अज्ञान	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	विभंगज्ञान	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	चक्षु-अचक्षु.	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	अवधिदर्शन	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	देवों में शुभ लेश्या ही होती हैं।
	५ लब्धि	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	सम्यक्त्व	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	चारित्र	३	पी. प. शु.	
	संयमासंयम	३	पी. प. शु.	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	३	कृ. नी. का.	
	तिर्यञ्चगति	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	भोग भूमि में भी छहों लेश्याएँ होती हैं।
	मनुष्यगति	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
	देवगति	६	कृ. नी. का पी. प. शु.	अशुभ लेश्या निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ही होती है।
	४ कषाय	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	३ लिङ्ग	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	मिथ्यादर्शन	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	अज्ञान	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	असंयत	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	चारों गुणस्थानों में छहों लेश्या होती हैं।
	असिद्धत्व	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	
	कृष्णादि छह ले.	१	स्वकीय	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	चौथे गुण. तक अशुभ लेश्या हो सकती है।
	भव्यत्व	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	चौथे गुण. तक अशुभ लेश्या हो सकती है।
	अभव्यत्व	६	कृ. नी. का. पी. प. शु.	केवल पहले गुणस्थान में ही होता है।

प्रश्न ३३ : क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में छहों लेश्याएँ कितनी गति की अपेक्षा होती हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में छहों लेश्याएँ केवल एक मनुष्य गति की अपेक्षा होती हैं। ये केवल कर्मभूमिया चतुर्थ गुणस्थानवर्ती मनुष्यों के ही हो सकती हैं।

प्रश्न ३४ : औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में अशुभ लेश्या कहाँ-कहाँ हो सकती हैं?

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में अशुभ लेश्या -

(१) नारकियों के (अशुभ लेश्या ही होती हैं)

(२) कर्मभूमिया मनुष्य-तिर्यञ्चों के उत्पत्ति के समय को छोड़कर शेष समय में चतुर्थ गुणस्थानवर्ती जीवों के अशुभ लेश्या हो सकती है।

कहा भी है - प्रथमोपशम सम्यक्त्व शुभ लेश्या में ही होता है। **(गो.जी. ६५२)**

श्रेणी से गिरने वालों के भी छहों लेश्याएँ हो सकती हैं।

प्रश्न ३५ : कितने भावों में केवल एक शुक्ल लेश्या ही होती है?

उत्तर : १० भावों में केवल एक शुक्ल लेश्या ही होती है -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना (लेश्यातीत भी होते हैं)

औदयिक का १ - शुक्ल लेश्या

प्रश्न ३६ : कितने भावों में अशुभ लेश्या ही होती है?

उत्तर: चार भावों में अशुभ लेश्या ही होती है -

नरकगति, कृष्ण लेश्या

नील लेश्या, कापोत लेश्या

प्रश्न ३७ : अवधिदर्शन रूप भाव में छहों लेश्याएँ कितनी गतियों में पाई जाती हैं?

उत्तर : अवधिदर्शन रूप भाव में छहों लेश्याएँ दो गतियों में पाई जाती हैं -

तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति

देवों में भी छहों लेश्याएँ होती हैं लेकिन अवधिदर्शन वाला सम्यग्दृष्टि होता है इसलिए वह भवनत्रिक में उत्पन्न नहीं होता है क्योंकि ऐसा सिद्धान्त है इसीलिए देवों के अवधिदर्शन के साथ छहों लेश्याएँ नहीं पायी जाती हैं।

प्रश्न ३८ : सम्यग्दृष्टि जीवों के क्षायोपशमिक भाव के कितने उत्तर भेदों में छहों लेश्याएँ होती हैं?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि जीवों के क्षायोपशमिक भाव के बारह उत्तर भेदों में छहों लेश्याएँ होती हैं-

३ ज्ञान - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान

३ दर्शन - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन

५ लब्धि - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

१ - सम्यक्त्व

प्रश्न ३९ : असिद्धत्व भाव में लेश्या की प्ररूपणा किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : असिद्धत्व भाव में लेश्या की प्ररूपणा -

पहले से चौथे गुणस्थान तक - ६ लेश्या

पाँचवें से सातवें गुणस्थान तक - ३ शुभ लेश्या

आठवें से तेरहवें गुणस्थान तक - १ शुक्ल लेश्या

चौदहवें गुणस्थान में - लेश्यातीत जीव होते हैं।

प्रश्न ४० : क्या मिथ्यादर्शन रूप भाव में भी शुभ लेश्या वाले जीव ही हो सकते हैं?

उत्तर : हाँ, मिथ्यादर्शन रूप भाव में भी शुभ लेश्या वाले जीव ही हो सकते हैं -

(१) पर्याप्त भवनत्रिक देव एवं सभी वैमानिक देव।

(२) भोगभूमिया मनुष्य - तिर्यञ्च पर्याप्त अवस्था में।

(३) प्रथमोपशम सम्यक्त्व को उत्पन्न करने के सम्मुख मिथ्यादृष्टि जीवों के (नारकियों को छोड़कर)। इनमें रहने वाले मिथ्यादृष्टि जीवों के भी शुभ लेश्याएँ ही होती हैं।

प्रश्न ४१ : कितने भावों में अशुभ लेश्याओं का अभाव हो सकता है?

उत्तर : २८ भावों में अशुभ लेश्याओं का अभाव हो सकता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १२ - ३ गति (देवों में भवनत्रिक की अपेक्षा) ४ कषाय ३ लिङ्ग १ अज्ञा. १ असि.

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

इन भावों में पंचम गुणस्थान से अशुभ लेश्याओं का अभाव होता है।

नोट : मिथ्यादर्शन, असंयत आदि भावों में भी वैमानिक देवों की अपेक्षा अशुभ लेश्या नहीं है फिर भी उसे देवगति की अपेक्षा नहीं कहा जा सकता है।

प्रश्न ४२ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में छहों लेश्याएँ होती हैं?

उत्तर : केवल एक भाव के सभी उत्तर भेदों में छहों लेश्याएँ होती हैं -

पारिणामिक भाव

कृष्णादि तीन लेश्या

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	केवल चौथे गुण. की अपेक्षा ही होती है।
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	कृष्ण और नील लेश्या केवल कर्मभूमिया मनुष्यों की अपेक्षा होती है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१५	३ ज्ञान - मति श्रुत. अवधि. ३ अज्ञान - मत्यज्ञान श्रुता. विभंग. ३ दर्शन - चक्षु. अच. अव. ५ लब्धि दा.ला....... १ सम्यक्त्व	तीन गति की अपेक्षा अशुभ लेश्या होती है।
४.	**औदयिक**	१६	४ गति - नर. तिर्य. म. दे. ४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो. ३ लि.- स्त्री. पुरु.नपुं. १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व १ लेश्या-स्वकीय	चारों गति की अपेक्षा होती है। कृष्ण लेश्या में कृष्ण.......
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	

प्रश्न ४३ : कृष्ण लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : स्पर्धकों का छठा भाग तीव्रतम कषाय अनुभाग का है और इस तीव्रतम उदय से उत्पन्न कषाय कृष्ण लेश्या है। **(ध.७/१०४)**

जो रौद्र है, बहुत वैर करने वाला है, कलहप्रिय है, निर्दय है तथा धर्म और दया से रहित परिणाम है वह कृष्ण लेश्या है। **(ध.१/३९०)** दुराग्रह, उपदेश-अवमानना, तीव्र वैर, अतिक्रोध, दुर्मुख, निर्दयता, क्लेश, ताप, हिंसा तथा असंतोष आदि परम तामस भाव कृष्ण लेश्या के लक्षण हैं। **(रा.वा.४/२२)**

प्रश्न ४४ : नील लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : मूर्खता, कार्य की अनिष्ठा, भीरुता, अति विषयाभिलाषा, अतिगृद्धि, माया, तृष्णा, अतिमान, वंचना, अनृत-भाषण, चपलता, अतिलोभ आदि भाव नील लेश्या के लक्षण हैं। **(रा.वा. ४/२२)**

आलस्ययुक्त, निर्बुद्धि, विषयलम्पट, मानी, मायी, कातर, निन्दक, वंचनपर और अतितृष्णापर नील लेश्या के लक्षण हैं। **(ध.१/३९१)**

स्पर्धकों का पाँचवाँ भाग तीव्रतर कषाय अनुभाग का है और तीव्रतर उदय से उत्पन्न कषाय नील लेश्या है। **(ध.७/१०४)**

प्रश्न ४५ : कापोत लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : जो सदा रुष्ट, परनिन्दक, अकार्य करने वाला है, शोक भय आकुलता सहित रहता है, पर का पराभव करने वाला है, आत्मप्रशंसक है, पर-प्रतीति रहित है, अपने समान दूसरे को मानता है, दूसरे के द्वारा स्तुति करने पर संतुष्ट होता है, हानि-वृद्धि को नहीं जानता है और संग्राम में मरने की प्रार्थना करता है वह कापोत लेश्या वाला है। **(ध.१/३९१)**

स्पर्धकों का चतुर्थ भाग तीव्र कषाय अनुभाग का है और उस तीव्र उदय से उत्पन्न कषाय कापोत लेश्या है। **(ध. ७/१०४)**

प्रश्न ४६ : कृष्णादि लेश्याओं में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : कृष्णादि लेश्याओं में ३६ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १६ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले. (स्वकीय)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ४७ : कृष्ण लेश्या वालों के तीन ज्ञान रूप भाव कितनी गतियों में पाये जाते हैं?

उत्तर : कृष्ण लेश्या वालों के तीन ज्ञान रूप भाव तीन गतियों में पाये जाते हैं -

नरकगति में - पाँचवें से सातवें नरक तक (पर्याप्तावस्था में)

तिर्यञ्चगति में - कर्मभूमिया संज्ञी पर्याप्तक जीवों के

मनुष्यगति में - कर्मभूमिया जीवों के (अवधिज्ञान रूप भाव पर्याप्तक जीवों के)

प्रश्न ४८ : कापोत लेश्या वालों के क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव कितने योगों में पाया जाता है?

उत्तर : कापोत लेश्या वालों के क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव तेरह योगों में पाया जाता है -

चार मनोयोग एवं चार वचनयोग में - कर्मभूमिया मनुष्य के एवं प्रथम नरक में

औदारिक काययोग में	- कर्मभूमिया मनुष्यों के
औदारिक मिश्र काययोग में	- भोगभूमिया मनुष्य-तिर्यञ्च तथा कर्म-भूमिया मनुष्यों के (नरकगति से आते समय)
वैक्रियिक काययोग	- प्रथम नरक में
वैक्रियिकमिश्र काययोग	- प्रथम नरक में
कार्मण काययोग	- नरक तिर्यञ्च मनुष्यों के

नोट - ये सब योग चतुर्थ गुणस्थान की अपेक्षा जानने चाहिए।

प्रश्न ४९ : अशुभ लेश्याओं के साथ विभंगज्ञान रूप भाव कितनी गतियों में होता है?

उत्तर: अशुभ लेश्याओं के साथ विभंगज्ञान रूप भाव तीन गतियों में होता है - नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति में।

देवगति में नहीं होता है, क्योंकि देवगति की पर्याप्तावस्था में अशुभ लेश्या नहीं होती है। देवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ही अशुभलेश्या होती है, वहाँ विभंगज्ञान नहीं हो सकता, क्योंकि विभंगज्ञान में मरण नहीं होता है अर्थात् विभंगज्ञान को लेकर अगले भव में नहीं जा सकता है।

प्रश्न ५० : औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव के साथ अशुभ लेश्या कितनी गतियों में होती है-

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव के साथ अशुभ लेश्या तीन गतियों में होती है - नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति में;

देवगति में अशुभ लेश्या के साथ औपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता है, क्योंकि देवों के अशुभ लेश्याएँ निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ही होती हैं वहाँ औपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता है। द्वितीयोपशम सम्यक्त्व निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में होता है लेकिन वहाँ शुभ लेश्याएँ ही होती हैं क्योंकि वह वैमानिक देवों में ही उत्पन्न होता है।

प्रश्न ५१ : कृष्ण-नील लेश्या की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : कृष्ण-नील लेश्या की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३१ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के १२	- २ ज्ञान २ अज्ञान २ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
औदयिक के १६	- ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले. (स्वकीय)
पारिणामिक के ३	- जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ५२ : कापोत लेश्या की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : कापोत लेश्या की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३४ भाव होते हैं -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १६ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले. (कापो.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ५३ : कृष्णादि अशुभ लेश्याओं की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : कृष्णादि अशुभ लेश्याओं की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में तीन गुणस्थान होते हैं - पहला, दूसरा, चौथा

इन गुणस्थानों में भाव - (कृष्ण और नील लेश्या के)

मिथ्यात्वगुणस्थान में - २८

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १६ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

सासादन गुणस्थान में - २५

उपर्युक्त भावों में से नरकगति, मिथ्यात्व तथा अभव्यत्व भाव नहीं होने से २५ भाव होते हैं।

अविरतसम्यक्त्व में - २२

क्षायोपशमिक के १० - २ ज्ञा. २ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १० - १ ग. (मनु.) ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ लेश्या

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

कापोत लेश्या में पहले-दूसरे गुणस्थान में कृष्ण और नील लेश्या के समान ही भाव होते हैं - विशेष यह है कि लेश्या के स्थान पर कापोत लेश्या को ग्रहण करना चाहिए।

अविरत सम्यक्त्व में - २८

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १३ - ३ ग. (देवगति बिना) ४ क. २ लि. (पु.न.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५४ : कृष्णादि अशुभ लेश्या वाले देवों के कितने भाव हो सकते हैं?

उत्तर : कृष्णादि अशुभ लेश्या वाले देवों के २४ भाव हो सकते हैं -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञान २ दर्शन ५ लब्धि

औदयिक के १२ - १ गति (देव.) ४ क. २ लिंग १ मि. १ अज्ञान, १ असं. १ असि. १ ले. (स्वकीय)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

प्रश्न ५५ : कृष्ण लेश्या वाले भव्य जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : कृष्ण लेश्या वाले भव्य जीवों के ३५ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५-३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन ५ लब्धि १ सम्य.

औदयिक के १६ - ४ गति ४ क. ३ लिंग १ मि. १ अज्ञान १ असं. १ असि. १ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

पीत पद्म लेश्या

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	भवनत्रिक देवों के नहीं होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१८	४ ज्ञान - मति. श्रुत. अव. मनः.	
			३ अज्ञान - मत्यज्ञा. श्रुता. विभं.	
			३ दर्शन - चक्षु. अचक्षु. अव.	
			५ लब्धि - दान.लाभ.भोग. उप. वीर्य	
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - चारित्र	
			१ - संयमासंयम	मनुष्य-तिर्यञ्च दोनों के होता है।
४.	**औदयिक**	१५	३ गति - ति. म. देव.	
			४ कषाय - क्रो. मा. माया लोभ	
			३ लिङ्ग - स्त्री. पुरु. नपुं.	नपुंसक लिङ्ग मनुष्य-तिर्यञ्चगति की अपेक्षा होता है।
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	चारों गुणस्थानों में होता है।
			१ - असिद्धत्व	
			१ लेश्या - स्वकीय	पीत में पीत लेश्या·····
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	सातवें गुणस्थान तक होता है।
			अभव्यत्व	

प्रश्न ५६ : पीत लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : जो अपने कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य और सेव्य-असेव्य को जानता हो, सबमें समदर्शी हो, दया और दान में रत हो, मृदु स्वभावी और ज्ञानी हो, ये सब तेजो लेश्या वाले के लक्षण हैं। **(पं.सं.प्रा. १/१५०)**

दृढ़ मित्रता, दयालुता, सत्यवादिता, दानशीलत्व, स्वकार्य पटुता, सर्वधर्म समदर्शित्व आदि तेजो लेश्या के लक्षण हैं। **(रा.वा. ४/१०)** स्पर्धकों का तृतीय भाग मंद कषाय अनुभाग का है और उसके उदय से उत्पन्न हुई कषाय तेजो/पीत लेश्या है। **(ध. ७/१०४)**

प्रश्न ५७ : पद्म लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : जो त्यागी हो, भद्र हो, चोखा (सच्चा) हो, उत्तम कार्य करने वाला हो, बहुत भी

अपराध या हानि होने पर क्षमा कर दे, साधुजनों के गुणों के पूजन में निरत हो, ये सब पद्मलेश्या के लक्षण हैं। **(पं.सं.प्रा. १/१५१)**

सत्यवाक्, क्षमा, सात्विकदान, पाण्डित्य, शास्त्र-गुरु-देव पूजन में रुचि आदि पद्म लेश्या के लक्षण हैं। **(रा.वा. ४/१०)** स्पर्धकों का द्वितीय भाग मंदतर कषाय अनुभाग का है और उसके उदय से उत्पन्न हुई कषाय पद्म लेश्या है। **(ध. ७/१०४)**

प्रश्न ५८ : पीत-पद्म लेश्या में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : पीत-पद्म लेश्या में ३८ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १८ - ४ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के १५ - ३ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि.१ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ५९ : पीत-पद्म लेश्या के साथ मन:पर्ययज्ञान रूप भाव कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : पीत-पद्म लेश्या के साथ मन:पर्ययज्ञान रूप भाव केवल दो गुणस्थानों में होता है- छठे, सातवें में

प्रश्न ६० : पीत-पद्म लेश्या के साथ नपुंसक लिङ्ग रूपभाव कितनी गतियों में होता है?

उत्तर : पीत-पद्म लेश्या के साथ नपुंसक लिङ्ग रूपभाव केवल दो गतियों में होता है- मनुष्यगति एवं तिर्यञ्चगति

कर्मभूमिया मनुष्य-तिर्यञ्च की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न ६१ : पीत-पद्म लेश्या के साथ असंयत भाव कितने गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : पीत-पद्म लेश्या के साथ असंयत भाव चार गुणस्थानों में होता है -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन सम्यग्दृष्टि

(३) सम्यग्मिथ्यात्व (४) अविरत सम्यक्त्व

प्रश्न ६२ : पीत-पद्म लेश्या के साथ असिद्धत्व भाव कहाँ नहीं होता है?

उत्तर : ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ पीत-पद्म लेश्या के साथ असिद्धत्व भाव नहीं होता हो, क्योंकि असिद्धत्व भाव सभी गुणस्थानों में सभी जीवों के होता है।

प्रश्न ६३ : पीत-पद्म लेश्या में क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव कितने गुणस्थानों में पाया जाता है?

उत्तर : पीत-पद्म लेश्या में क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव चार गुणस्थानों में पाया जाता है-

(१) अविरतसम्यक्त्व (२) संयमासंयम

(३) प्रमत्तसंयत (४) अप्रमत्तसंयत

प्रश्न ६४ : पद्म लेश्या वाले औदारिक मिश्र काययोगी के कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

उत्तर : पद्म लेश्या वाले औदारिक मिश्र काययोगी के १२ क्षायोपशमिक भाव होते हैं -

३ ज्ञान - मति. श्रुत. अवधि.

३ दर्शन - चक्षु. अचक्षु. अवधि.

५ लब्धि - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

१ सम्यक्त्व

नोट - इसी प्रकार पीत लेश्या में भी जानना चाहिए।

प्रश्न ६५ : पीत लेश्या वाले कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के कितने औदयिक भाव होते हैं?

उत्तर : पीत लेश्या वाले कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के १३ औदयिक भाव होते हैं -

२ गति - मनुष्य गति, देवगति

४ कषाय - क्रोध, मान, माया, लोभ

३ लिंग - स्त्री. पुरुष. नपुं.

१ अज्ञान १ असं. १ असि. १ ले.

नोट - मनुष्य गति की अपेक्षा ३ लिंग होते हैं।

इसी प्रकार पद्म लेश्या में भी जानना चाहिए।

प्रश्न ६६ : पीत लेश्या वालों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : पीत लेश्या वालों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ३३ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के १३ - २ ग. (मनु.दे.) ४ क. २ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

विशेष - पद्म लेश्या वालों की निर्वृत्यपर्याप्तअवस्था में स्त्रीलिंग रूप भाव नहीं होने से ३२ भाव ही होते हैं।

प्रश्न ६७ : इनकी निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनकी निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में चार गुणस्थान होते हैं -
पहला, दूसरा, चौथा, छठा

प्रश्न ६८ : इन गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं -

उत्तर : पीत लेश्या के पहले गुणस्थान में - २४

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १२ - १ ग. (दे.) ४ क. २ लि. (स्त्री.पु.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले. (पी.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

सासादन गुणस्थान में मिथ्यात्व एवं अभव्यत्व भाव नहीं होने से २२ भाव होते हैं।

चौथे गुणस्थान में - २७

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व (देवों की अपेक्षा)

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व (मनु. देवों की अपेक्षा)

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के ११ - २ ग. ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रमत्तसंयत गुणस्थान में उपर्युक्त चौथे गुणस्थान के भावों में से औपशमिक सम्यक्त्व, देवगति तथा असंयत भाव को कम करके क्षायोपशमिक चारित्र को मिलाने पर २५ भाव होते हैं।

नोट - पद्म लेश्या में भी इसी प्रकार जानना चाहिए लेकिन इनके निर्वृ. में स्त्री लिङ्ग नहीं होता है। इसलिए इनके पहले गुण. में २३ तथा दूसरे में २१ भाव होते हैं।

शुक्ल लेश्या

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व	चौथे गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान तक होता है।
			चारित्र	
२.	**क्षायिक**	९	सम्यक्त्व, चारित्र, ज्ञान, दर्शन, दान	
			लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य	ज्ञानादि तेरहवें गुण. में ही होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**	१८	४ ज्ञान.-मति.श्रुत.अवधि.मनः.	
			३ अज्ञान-मत्य.श्रुता.विभंग	
			३ दर्शन-चक्षु.अचक्षु.अवधि.	
			५ लब्धि-दा.ला.भो.उप.वी.	
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - चारित्र	
			१ - संयमासंयम	दोनों गतियों में होता है।
४.	**औदयिक**	१५	३ गति.-म.ति.दे.	नरकगति नहीं होती है।
			४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो.	
			३ लिङ्ग - स्त्री.पुरु.नपुं.	नपुंसक लिङ्ग मनुष्य-तिर्यञ्च की अपेक्षा होता है।
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	तेरहवें गुणस्थान तक ही होता है।
			१ लेश्या - शुक्ल.	
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	

प्रश्न ६९ : शुक्ल लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर: जो पक्षपात नहीं करता है, निदान नहीं बाँधता है, सबके साथ समान व्यवहार करता है, इष्ट और अनिष्ट पदार्थों के विषय में राग और द्वेष से रहित है तथा स्त्री पुत्र और मित्रादि में स्नेह रहित है, ये सब शुक्ल लेश्या वाले के लक्षण हैं। **(ध.१/३९२)**

स्पर्धकों का प्रथम भाग मंदतम होता है और उसके उदय से उत्पन्न हुई कषाय शुक्ल लेश्या है। **(ध. ७/१०४)**

प्रश्न ७० : शुक्ल लेश्या में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : शुक्ल लेश्या में ४७ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायिक के ९ - सम्य. चा. ज्ञा. दर्श.........

क्षायोपशमिक के १८ - ४ ज्ञा. ३ अज्ञा.............

औदयिक के १५ - ३ गति. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व, अभव्यत्व

प्रश्न ७१ : शुक्ल लेश्या के साथ मिथ्यादर्शन रूप भाव किन-किन देवों के पाया जाता है?

उत्तर : शुक्ल लेश्या के साथ मिथ्यादर्शन रूप भाव -

८ स्वर्ग - शुक्र-महाशुक्र, शतार-सहस्रार, आनत-प्राणत, आरण-अच्युत

नव ग्रैवेयक - सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुद्ध, यशोधर, सुभद्र सुविशाल, सुमनस, सौमनस, प्रीतिंकर

नोट - यद्यपि नव अनुदिश एवं पाँच अनुत्तर विमानों में तथा लौकान्तिक देवों के भी शुक्ल लेश्या होती है लेकिन वहाँ मिथ्यादर्शन रूप भाव नहीं होता है।

प्रश्न ७२ : किन-किन शुक्ल लेश्या वालों के संयम मार्गणा में से केवल असंयत रूप भाव ही होता है?

उत्तर : जिन शुक्ल लेश्या वालों के संयम मार्गणा में से केवल असंयत रूप भाव ही होता है वे हैं -

(१) वैमानिक देव, जिनके शुक्ल लेश्या होती है।

(२) म्लेच्छ खण्ड में रहने वाले म्लेच्छ जीवों के।

(३) भोगभूमिया मनुष्य-तिर्यञ्चों के।

(४) प्रथम गुणस्थान से चौथे गुणस्थान तक।

प्रश्न ७३ : शुक्ल लेश्या में होने वाले कितने भाव केवल एक गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : शुक्ल लेश्या में होने वाले १० भाव केवल एक गुणस्थान में होते हैं -

क्षायिक के ७ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य (तेरहवें में)

क्षायोपशमिक का १ - संयमासंयम (पाँचवें में)

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन (पहले में)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व (पहले में)

प्रश्न ७४ : शुक्ल लेश्या में होने वाले कितने भाव सभी गुणस्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : शुक्ल लेश्या में होने वाले पाँच भाव सभी गुणस्थानों में पाये जाते हैं -

औदयिक के ३ - मनुष्यगति असिद्धत्व शुक्ल लेश्या

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट - शुक्ल लेश्या तेरहवें गुणस्थान तक ही होती है लेकिन जहाँ तक शुक्ल लेश्या होती है वहाँ तक के सभी गुणस्थानों में वह पायी जाती है इसलिए उसका यहाँ ग्रहण किया है।

प्रश्न ७५ : शुक्ल लेश्या में कितने भावों के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : शुक्ल लेश्या में ४ भावों के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं -

(१) औपशमिक (२) क्षायिक

(३) क्षायोपशमिक (४) पारिणामिक

प्रश्न ७६ : शुक्ल लेश्या के साथ क्षायोपशमिक चारित्र रूप भाव कितने गुणस्थानों में नहीं होता है?

उत्तर : शुक्ल लेश्या के साथ क्षायोपशमिक चारित्र रूप भाव ११ गुणस्थानों में नहीं होता है-

मिथ्यात्व गुणस्थान से संयमासंयम गुणस्थान तक तथा अपूर्वकरण गुणस्थान से सयोग-केवली गुणस्थान तक। इन गुणस्थानों में तीन चौकड़ी कषाय का क्षयोपशम नहीं होता है इसलिए यहाँ यह चारित्र नहीं होता है लेकिन इन गुणस्थानों में शुक्ललेश्या पाई जाती है। अयोगकेवली जिन गुणस्थान में न शुक्ल लेश्या होती है और न क्षायोपशमिक चारित्र ही होता है।

प्रश्न ७७ : शुक्ल लेश्या वालों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : शुक्ल लेश्या वालों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ४० भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक के ९ - सम्यक्त्व चारित्र ज्ञान दर्शन.........

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. (मन:. बिना) २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के १२ - २ ग. (म.दे.) ४ क. १ लि. (पु.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ७८ : इनके कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनके पाँच गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन (३) अविरतसम्यक्त्व

(४) प्रमत्तविरत (५) सयोगकेवली जिन

प्रश्न ७९ : इन गुणस्थानों में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : इन गुणस्थानों में भाव -

मिथ्यात्व गुणस्थान में - २३

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञान (कुम.कुश्रु.) २ दर्शन (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के ११ - १ ग. (दे.) ४ क. १ लि. (पु.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

दूसरे गुणस्थान में मिथ्यादर्शन और अभव्यत्व भाव नहीं होने से २१ भाव होते हैं।

अविरतसम्यक्त्व गुणस्थान में - २७

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के ११ - २ ग. (म.दे.) ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रमत्तविरत गुणस्थान में - २५

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के ९ - १ ग. (म.) ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

तेरहवें गुणस्थान में १४ - क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन....

औदयिक के ३ - १ ग. (म.) १ असि. १ ले. (शुक्ल.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ८० : शुक्ल लेश्या वालों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में क्षायोपशमिक अज्ञान रूप भाव किस अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : शुक्ल लेश्या वालों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में क्षायोपशमिक अज्ञान रूप भाव मात्र देवगति की अपेक्षा बन सकते हैं। कोई शुक्ल लेश्या वाला देवों में उत्पन्न होता है तो उनके शुक्ल लेश्या के साथ मत्यज्ञान और श्रुताज्ञान रूप भाव होते हैं। शेष स्थानों पर जन्म लेने वाले मिथ्यादृष्टि एवं सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों के अशुभ लेश्याएँ ही होती हैं। तीन शुभ लेश्या में वर्तमान मिथ्यादृष्टि एवं सासादन सम्यग्दृष्टिदेव, तिर्यञ्च एवं मनुष्यों में उत्पन्न होते समय नष्ट लेश्या होकर अर्थात् अपनी पूर्व की लेश्या छोड़कर मनुष्य-तिर्यञ्चों में उत्पन्न होते हैं। **(ध.२/६५६)**
कहा भी है- पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु **(त.सू. ४/२२)** वैमानिक देवों के शुभलेश्या ही होती है।

प्रश्न ८१ : शुक्ल लेश्या वालों के स्त्री लिंग रूप भाव कितनी गतियों में होता है?

उत्तर : शुक्ल लेश्या वालों के स्त्री लिंग रूप भाव दो गतियों में होता है -
तिर्यंच गति और मनुष्य गति

नोट - देवगति में (पद्म) शुक्ल लेश्या वाली देवियाँ नहीं होती हैं, क्योंकि सभी देवियों का उत्पाद सौधर्म ऐशान स्वर्ग में ही होता है, इसलिए उनके मात्र पीत लेश्या ही होती है।

नोट - लेश्यातीत जीवों का कथन चौदहवें गुणस्थान के समान करना चाहिए।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ८२ : कितनी लेश्याओं में तीन गति रूप भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : तीन लेश्याओं में तीन गति रूप भाव पाये जाते हैं -
पीत लेश्या, पद्म लेश्या, शुक्ल लेश्या
इनमें मनुष्यगति, तिर्यञ्चगति एवं देवगति पाई जाती है।

प्रश्न ८३ : पीत लेश्या की अपेक्षा शुक्ल लेश्या में कितने भाव विशेष होते हैं?

उत्तर : पीत लेश्या की अपेक्षा शुक्ल लेश्या में ९ भाव विशेष होते हैं -
औपशमिक का १ - चारित्र
क्षायिक के ८ - चारित्र, ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

प्रश्न ८४ : पद्म लेश्या में होने वाले कितने भाव कृष्ण लेश्या में नहीं होते हैं?

उत्तर : पद्म लेश्या में होने वाले ४ भाव कृष्ण लेश्या में नहीं होते हैं -
क्षायोपशमिक के ३ - मन:पर्ययज्ञान, संयमासंयम, चारित्र
औदयिक का १ - पद्मलेश्या

प्रश्न ८५ : किस लेश्या में किस भाव के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर :

क्र.	लेश्या	भाव	विवरण
१.	कृष्णादि ३ लेश्या	१	पारिणामिक
२.	पीत-पद्‌म लेश्या	२	क्षायोपशमिक पारिणामिक
३.	शुक्ल लेश्या	४	औपशमिक क्षायिक क्षायोपशमिक पारिणामिक

प्रश्न ८६ : क्या ऐसे कोई जीव हैं जिनके जीवन में कभी अशुभ लेश्याएँ उत्पन्न नहीं होती हैं?

उत्तर : हाँ, ऐसे भी जीव हैं जिनके जीवन में कभी अशुभ लेश्याएँ उत्पन्न नहीं होती हैं -

१) भवनत्रिक देवों के पर्याप्त होने के बाद।

२) भोगभूमिया मनुष्य तिर्यञ्च, पर्याप्त होने के बाद।

३) पाँचवें गुणस्थान से तेरहवें गुणस्थान तक

४) तीर्थंकर, वर्धमान अवधिज्ञानी, सर्वावधिज्ञानी, परमावधिज्ञानी तथा विपुलमति मन:पर्ययज्ञानी आदि जीव कभी भी चारित्र से च्युत नहीं होते हैं इसलिए इनके अशुभ लेश्याएँ नहीं हो सकती हैं, क्योंकि चौथे गुणस्थान से आगे अशुभ लेश्या नहीं होती है। (यह बिन्दु भविष्य में भी कभी अशुभ लेश्या नहीं होने की अपेक्षा कहा गया है।)

५) वैमानिक देवों के भी कभी अशुभ लेश्या नहीं होती है।

प्रश्न ८७ : कितने भाव सभी लेश्याओं की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में पाये जाते हैं?

उत्तर: २६ भाव सभी लेश्याओं के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक के १२ - २ ज्ञा. (म.श्रु.) २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) २ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के ११ - २ ग. (म.दे.) ४ क. १ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट - कोई भी लेश्या किसी भी लेश्या की निर्वृ. में नहीं होती है। अत: इनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **कितने गति रूप भाव में अशुभ लेश्या भी होती है?**

(अ) ३ (ब) २

(स) १ (द) ४

(ii) **क्षायोपशमिक भाव के कितने भेदों में तीन लेश्या होती है?**

(अ) १८ (ब) १५

(स) ३ (द) १४

(iii) **शुक्ल लेश्या में कितने पारिणामिक भाव होते हैं?**

(अ) २ (ब) १

(स) ३ (द) कोई नहीं

(iv) **कृष्ण लेश्या में कितने क्षायिक भाव होते हैं?**

(अ) २ (ब) १

(स) ९ (द) ७

(v) **कितनी लेश्या में पाँचों मूल भाव होते हैं?**

(अ) ६ (ब) ३

(स) १ (द) ४

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) लेश्या मार्गणा के कितने स्थान होते हैं?

(ii) भोगभूमिया जीवों के कितनी लेश्या रूप भाव होते हैं?

(iii) औदयिक भाव के कितने उत्तर भेदों में केवल एक लेश्या होती है?

(iv) किस भाव के सभी उत्तर भेदों में छह लेश्या होती है?

(v) कृष्ण लेश्या के साथ तीन ज्ञान रूप भाव कितनी गतियों में होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) क्षायिक भाव के ७ भेद लेश्यातीत जीवों के ही होते हैं?

(ii) शुभ लेश्याओं में तीन भावों के सभी उत्तर भेद होते हैं?

(iii) छह लेश्याओं में देवगति रूप भाव भी होता है?

(iv) कापोत लेश्या के साथ क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में कर्मभूमिया मनुष्य नहीं होते हैं?

(v) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में कापोत लेश्या नरकगति की अपेक्षा भी होती है?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) कृष्ण लेश्या में .... पारिणामिक .... क्षायिक तथा .... क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

(ii) तीन शुभ लेश्या में .... गति रूप .... औदयिक तथा .... अज्ञान रूप भाव होते हैं।

(iii) .... औपशमिक .... कषाय रूप तथा .... लिङ्ग रूप भावों में छहों लेश्याएँ होती हैं।

(iv) .... औदयिक .... पारिणामिक भावों में लेश्यातीत जीव भी होते हैं।

(v) छह लेश्या रूप स्थान में .... क्षायिक तथा .... क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	३ अशुभ लेश्या	-	लेश्यातीत
(ii)	६ लेश्या	-	४ भाव
(iii)	१३ भाव	-	नरकगति रूप भाव
(iv)	शुक्ल लेश्या	-	चारों स्थान
(v)	३६ भाव	-	३ गति रूप भाव
(vi)	३ लेश्या रूप स्थान	-	पीत-पद्म लेश्या
(vii)	क्षायोपशमिक चारित्र रूप भाव	-	कापोत लेश्या
(viii)	५ भाव	-	४७ भाव

- उत्तरमाला -

१. (i) अ (ii) स (iii) स (iv) ब (v) अ

२. (i) ४ (ii) ६ (iii) ६ (iv) पारिणामिक (v) ३

३. (i) ना (ii) ना (iii) हाँ (iv) ना (v) हाँ

४. (i) ३, १, १५ (ii) ३, १५, ३ (iii) १, ४, ३ (iv) २, २ (v) १, १५

५. (i) नरकगति रूप भाव (ii) ३ गति रूप भाव (iii) लेश्यातीत
(iv) ४७ भाव (v) कापोत लेश्या (vi) ४ भाव
(vii) पीत-पद्म लेश्या (viii) चारों स्थान

भव्य मार्गणा

प्रश्न १ : भव्य मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसमें सम्यग्दर्शन आदि भाव प्रगट होने की योग्यता है, वह भव्य कहलाता है, अभव्य उसका उलटा है। **(सर्वा. २/७)** इन भव्य तथा अभव्य भावों में जीवों की खोज करना भव्य मार्गणा है।

प्रश्न २ : भव्य मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : भव्य मार्गणा दो प्रकार की होती है -

(१) भव्य (२) अभव्य

भव्यसिद्धिक जीव है, अभव्यसिद्धिक जीव है और भव्यसिद्धिक तथा अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पों से रहित भी स्थान होता है। **(ध.२/८०६)**

प्रश्न ३ : भव्य जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन जीवों के भविष्य काल में रत्नत्रय धर्म प्रगट होगा, वे जीव भव्य कहलाते हैं। **(त.सा.१९)**

जिसने निर्वाण को पुरस्कृत किया है अर्थात् जो सिद्धि पद प्राप्त करने के योग्य है उसको भव्य कहते हैं। **(ध. १/१५१)**

जिनका असिद्धत्व भाव अनादि-सान्त होवे वे भव्य जीव हैं। **(ध.१४/१३)**

जिन जीवों के दर्शन मोह के उपशम, क्षय, क्षयोपशम की प्राप्ति सम्भव है वे भव्य हैं और उनको मोक्ष होना अति निकट है। **(श्लो.)**

जो नियम से संख्यात, असंख्यात तथा अनन्त काल के द्वारा मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं वे भव्य जीव हैं। **(पं.सं.प्रा.१५५)**

प्रश्न ४ : भव्य जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : भव्य जीव दो प्रकार के होते हैं -

१) वे भव्य जो सिद्धि को प्राप्त करेंगे। २. वे भव्य जिनमें सिद्धि प्राप्त करने की योग्यता है। **(गो.जी.जी. ५५७)**

अथवा भव्य जीव तीन प्रकार के होते हैं -

१. आसन्न भव्य २. दूर भव्य ३. अभव्य सम भव्य। **(गो.जी.जी. ७०४)**

प्रश्न ५ : आसन्नादि भव्यों के क्या लक्षण हैं?

उत्तर : आसन्नादि भव्यों के लक्षण :-

आसन्न भव्य : जो विशुद्ध सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र रूपी लक्षण से युक्त

हैं वे आसन्न भव्य हैं। और उनकी आसन्न भव्यता आधुनिक पुरुषों के द्वारा भी जानी जा सकती है। **(हरि.पु. ३/१०२-३)**

दूर भव्य : जो बहुत काल में मुक्त होते हैं, वे दूर भव्य हैं। **(गो.जी.भा. ७०४)** दूर भव्यता सदा आप्त भगवान के वचनों से ही जानी जा सकती है, क्योंकि वह साधारण प्राणियों के हेतु का विषय नहीं है। **(हरि.पु. ३/१०३)**

अभव्य सम भव्य : जो अनंतकाल में भी सिद्ध नहीं होंगे, केवल मुक्त होने की योग्यता को ही धारण करते हैं वे अभव्यसम भव्य जीव हैं। **(गो.जी.भा. ७०४)**

प्रश्न ६ : **भव्य भाव कहाँ से प्रारम्भ होता है और कहाँ तक रहता है?**

उत्तर : **संस्कृत पंच संग्रह** में मिथ्यात्व गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तक भव्य कहा है और प्राकृत पंचसंग्रह में मिथ्यात्व गुणस्थान से लेकर चौदहवें अयोग केवली पर्यन्त कहा है।

भव्यसिद्ध जीव एकेन्द्रिय से लेकर अयोगकेवली गुणस्थान तक होते हैं। अभव्यसिद्धिक जीव एकेन्द्रिय से लेकर संज्ञी मिथ्यादृष्टि गुणस्थान तक होते हैं। **(ध. १/३९४)**

प्रश्न ७ : **इन दोनों प्रकार की मान्यताओं में कौनसी सत्य और कौनसी असत्य है?**

उत्तर : ये दोनों मान्यताएँ अपेक्षाकृत होने से सत्य हैं, क्योंकि मोक्ष प्राप्त करने की योग्यता का नाम 'भव्य' है। बारहवें के अन्त में तथा तेरहवें के प्रारम्भ में अनन्त चतुष्टय रूप एकदेश भावमोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। इस अपेक्षा बारहवें गुणस्थान पर्यंत भव्य भाव बताया है। पूर्ण द्रव्यमोक्ष और पूर्ण भावमोक्ष की प्राप्ति चौदहवें गुणस्थान के अन्त में होती है अत: इसकी अपेक्षा चौदहवें गुणस्थान तक भव्यभाव कहा है।

प्रश्न ८ : **आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने पञ्चास्तिकाय गाथा ३७ में 'भव्वमभव्वं च' पद के द्वारा सिद्धों में भव्य-अभव्य भाव का सद्भाव बताया है और दूसरे ग्रन्थों में अभाव, ये दोनों भाव विरुद्ध स्वभाव वाले होने से एक साथ नहीं रहते ऐसा कहा है तो यह अन्तर क्यों?**

उत्तर : यहाँ 'पञ्चास्तिकाय' में आचार्य महाराज ने द्रव्य के परिणामी और अपरिणामी धर्म की अपेक्षा कथन किया है। शुद्ध रूप में परिणमन कर रहे हैं इसलिए भव्य है और अशुद्ध रूप में परिणमन नहीं करेंगे इसलिए अभव्य हैं। जबकि अन्य ग्रन्थों में आचार्यों ने मोक्षमार्ग में प्रवेश और अप्रवेश की अपेक्षा रत्नत्रय को प्राप्त करने की योग्यता-अयोग्यता तथा पात्रता-अपात्रता बताने के लिए कथन किया है। अत: कोई विरोध नहीं है।

प्रश्न ९ : तत्त्वार्थसूत्र अध्याय १० वाँ सूत्र ३ में सिद्धों में भव्य पारिणामिक भाव का अभाव क्यों बताया है?

उत्तर : सिद्ध भगवन्तों के जो भव्य भाव का अभाव बताया है वह परम पारिणामिक भाव न मानकर अशुद्ध पारिणामिक भाव का अभाव बताया है अथवा असिद्धत्व औदयिक भाव के साथ भव्य भाव को भी औदयिक मानकर अभाव बताया है अथवा भव्यत्व भाव मोक्षप्राप्ति का साधन है साध्य नहीं है। साध्य के प्राप्त होने पर साधन की क्या जरूरत? फल के परिपक्व होने पर फूल अलग हो जाता है। इसी तरह साध्य-भूत मोक्षप्राप्ति के समय साधन रूप भव्य भाव अभाव को प्राप्त हो जाता है।

प्रश्न १० : दूरानुदूर भव्यों में और अभव्यों में भी शक्ति को व्यक्त करने की योग्यता नहीं है, फिर दोनों में क्या अन्तर है?

उत्तर : दूरानुदूर भव्यों में शक्ति को व्यक्त करने की शक्ति है किन्तु अन्तरंग-बहिरंग समर्थ कारण न मिलने से शक्ति व्यक्त नहीं होगी तथा अभव्यों में शक्ति को व्यक्त करने की योग्यता ही नहीं है। यही अन्तर है। जैसे विधवा और बाँझ। विधवा में या शीलवती स्त्री में सन्तानोत्पत्ति की योग्यता है पर ब्रह्मचर्य का संकल्प होने से सन्तान पैदा नहीं करेगी किन्तु बाँझ में योग्यता ही नहीं है।

प्रश्न ११ : अभव्य जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन्होंने निर्वाण को पुरस्कृत नहीं किया है वे अभव्य हैं। **(ध.१/१५१)**
जिनकी सिद्धावस्था कभी नहीं हो सके वे अभव्य जीव हैं। **(त.सा.२/९०)**

प्रश्न १२ : अतीत भव्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जो न भव्य हैं और न अभव्य हैं किन्तु जिन्होंने मुक्ति को प्राप्त कर लिया है और अतीतसंसार हैं उन जीवों को न भव्य न अभव्य जानना चाहिए अर्थात् वे अतीत-भव्य हैं। **(गो.जी. ५५९)** सयोगी और अयोगी न भव्य हैं न अभव्य। **(गो.जी.जी. ७०४)**

कर्म विवक्षा

क्र.	भव्य	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	भव्य	कर्म अपेक्षा से रहित	मिथ्यात्व	औदयिक	मिथ्यात्व के उदय से होता है।
			सासादनसम्यक्त्व	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	
			अविरतसम्यक्त्व	औप.क्षा.क्षायो.	
			संयमासंयम	क्षायोपशमिक	
			प्रमत्त.अप्रमत्त.	क्षायोपशमिक	
			अपूर्वक. से सूक्ष्म.	औप.क्षायिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि के दोनों भाव हो सकते हैं।
			उपशान्तकषाय.	औपशमिक	
			क्षीणकषाय.	क्षायिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होता है।
			सयोग.	क्षायिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होता है।
			अयोगकेवली.	क्षायिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होता है।
२.	अभव्य	कर्म अपेक्षा से रहित	मिथ्यात्व	औदयिक	चारों गति में हो सकता है।
३.	अतीतभव्य	क्षय	गुणस्थानातीत होते हैं	क्षायिक	

प्रश्न १३ : भव्यत्व एवं अभव्यत्व भाव को कर्मनिरपेक्ष क्यों कहा गया है?

उत्तर : भव्यसिद्धिक (भव्यत्व) एवं अभव्यसिद्धिक (अभव्यत्व) भाव पारिणामिक/कर्मनिरपेक्ष भाव हैं, क्योंकि ये कर्मों के उदय से, उपशम से, क्षय से तथा क्षयोपशम से उत्पन्न नहीं होते हैं। **(ध.५/२३०)**

प्रश्न १४ : तो क्या भव्य अभव्य एवं अभव्य भव्य नहीं बन सकता है?

उत्तर : हाँ, भव्य कभी अभव्य एवं अभव्य कभी भव्य नहीं बन सकता है, क्योंकि भव्य एवं अभव्य भाव एक-दूसरे के अत्यन्ताभाव को धारण करने वाले होने से एक ही जीव में क्रम से भी उनका अस्तित्व मानने में विरोध आता है। **(ध.७/१७७)**

प्रश्न १५ : भव्य जीवों के कितने गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : भव्य जीवों के चार गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं -

(१) सम्यग्मिथ्यात्व (२) संयतासंयत

(३) प्रमत्तसंयत (४) अप्रमत्तसंयत

प्रश्न १६ : तीन प्रकार के भव्यों में से किस-किस भव्य के औदयिक भाव रूप गुणस्थान ही होता है?

उत्तर : तीन प्रकार के भव्यों में से केवल एक भव्य के औदयिक भाव रूप गुणस्थान ही होता है- ''अभव्यसमभव्य'', क्योंकि यह अभव्य के समान कभी भी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता है।

प्रश्न १७ : आसन्न भव्य के किस-किस भाव रूप गुणस्थान हो सकता है?

उत्तर : आसन्न भव्य के केवल एक भाव रूप गुणस्थान हो सकता है -
क्षायिक भाव रूप; क्योंकि ये भव्य चौदहवें गुणस्थान में पाये जाते हैं।
चौदहवाँ गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होता है।

प्रश्न १८ : भव्य जीवों के कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : भव्य जीवों के तीन गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं -
क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ, सयोगकेवली जिन, अयोगकेवली जिन
क्षपक श्रेणी की अपेक्षा आठवाँ, नवाँ तथा दसवाँ गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप ही होता है। क्षायिकसम्यग्दृष्टि की अपेक्षा चौथा गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप ही होता है।

प्रश्न १९ : अभव्य जीवों के पहला गुणस्थान ही क्यों होता है?

उत्तर : अभव्य जीवों के केवल पहला गुणस्थान ही होता है। भले ही वे यहाँ पर ग्यारह अंगों के वेत्ता हों और दीर्घ काल से दीक्षित हों, उनके पहले के सिवाय अन्य गुणस्थान नहीं हो सकते हैं। जैसे काला साँप शक्कर मिश्रित दूध को पीता हुआ भी अपने विष को नहीं छोड़ता है; उसी प्रकार आगम रूप अमृत का पान करके भी अभव्य जीव मिथ्यात्व रूप विष को नहीं छोड़ता है। इसीलिए अभव्य जीव और दूर भव्य (दूरान्दूर) जीवों के पहला गुणस्थान ही होता है। **(वी.व. १६/६२-६४)**
जिसकी दृष्टि मिथ्यात्व से आच्छदित हो रही है, ऐसा दुर्बुद्धि अभव्य जीव राग रूपी पिशाच से गृहीत चित्त होने के कारण जिनप्रणीत धर्म की श्रद्धा नहीं करता है। **(भा.पा. १३९)**

स्थान विवरण

प्रश्न २० : भव्य मार्गणा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : भव्य मार्गणा में चार स्थान होते हैं -

(१) भव्यत्व रूप (२) अभव्यत्व रूप
(३) भव्याभव्यत्व रूप (४) न भव्यसिद्धिक न अभव्यसिद्धिक रूप

प्रश्न २१ : इन स्थानों में किस-किस को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में -

भव्यत्वरूप स्थान में - भव्य जीवों को

अभव्यत्व रूप स्थान में - अभव्य जीवों को

भव्याभव्यत्वरूप स्थान में - भव्य तथा अभव्य जीवों को

न भव्यसिद्धिक न अभव्यसिद्धिक स्थान में - जो भव्य भी नहीं है और अभव्य भी नहीं है ऐसे अतीतभव्य सिद्ध भगवान को ग्रहण करना चाहिए।

प्रश्न २२ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

भव्यत्व रूप स्थान में - २०

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन दान लाभ.......

क्षायोपशमिक के ८ - ४ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ चारि. १ संयमा.

पारिणामिक का १ - भव्यत्व

अभव्यत्व रूप स्थान में - १

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान में - ३२

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. (चक्षु. अच.) ५ लब्धि

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि...।

पारिणामिक का १ - जीवत्व

न भव्यसिद्धिक न अभव्यसिद्धिक रूप स्थान में एक भी भाव नहीं होता है।

प्रश्न २३ : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : भव्यत्व रूप स्थान के - दूसरे गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव

अभव्यत्व रूप स्थान के - अभव्य जीव

भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान के - मिथ्यात्व गुणस्थानवर्ती, चारों गति के जीव

न भव्यसिद्धिक न अभव्यसिद्धिक - गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान

प्रश्न २४ : कितने स्थानों में चार भावों के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान में चार भावों के उत्तर भेद होते हैं - भव्यत्व भाव रूप स्थान में।

इसमें औपशमिक क्षायिक क्षायोपशमिक तथा पारिणामिक भाव के उत्तर भेद होते हैं। यहाँ मात्र औदयिक भाव का कोई उत्तर भेद नहीं होता है।

प्रश्न २५ : किस स्थान में किस भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान में एक भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं - औदयिक भाव

तथा भव्यत्व रूप स्थान में दो भावों के सभी उत्तर भेद होते हैं -

(१) औपशमिक (२) क्षायिक

प्रश्न २६ : किस स्थान में किस भाव का केवल एक उत्तर भेद होता है?

उत्तर : ३ स्थानों में पारिणामिक भाव का केवल एक उत्तर भेद होता है -

भव्यत्व रूप स्थान में - भव्यत्व

अभव्यत्व रूप स्थान में - अभव्यत्व

भव्याभव्यत्व रूप स्थान में - जीवत्व

न भव्यसिद्धिक न अभव्यसिद्धिक के भी जीवत्व भाव होता है।

प्रश्न २७ : कितने स्थानों में सभी गुणस्थानों में होने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : २ स्थानों में सभी गुणस्थानों में होने वाले भाव होते हैं -

भव्यत्व रूप स्थान में - १ भव्यत्व भाव

भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान में -

औदयिक के २ - मनुष्य गति, असिद्धत्व

पारिणामिक का १ - जीवत्व

प्रश्न २८ : कितने स्थानों में मिथ्यादृष्टि के होने वाले भाव भी पाये जाते हैं?

उत्तर : तीन स्थानों में मिथ्यादृष्टि के होने वाले भाव भी पाये जाते हैं -

भव्यत्व रूप स्थान में - १ भव्यत्व

अभव्यत्व रूप स्थान में - १ अभव्यत्व

भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान में - ३१

क्षायोपशमिक के - १०, औदयिक के २० पारिणामिक के १ = ३१

प्रश्न २९ : कितने स्थानों में दर्शनावरणी कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : दो स्थानों में दर्शनावरणी कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भाव पाये जाते हैं -

भव्यत्व रूप स्थान में - क्षायिक का - केवल दर्शन

क्षायोपशमिक का - अवधि दर्शन

भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान में -

क्षायोपशमिक के - चक्षुदर्शन, अचक्षु दर्शन

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	भव्यत्व रूप	
	चारित्र	१	भव्यत्व रूप	आठवें से ग्यारहवें गुण. तक होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	२	भव्यत्व. अतीतभव्य	
	चारित्र	२	भव्यत्व. अतीतभव्य	
	ज्ञानादि सात	२	भव्यत्व. अतीतभव्य	भव्यत्व रूप स्थान तेरहवें चौदहवें गुणस्थान में होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	१	भव्यत्व रूप	चौथे गुण. से बारहवें गुण. तक होता है।
	मन:पर्ययज्ञान	१	भव्यत्व रूप	
	३ अज्ञान	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	
	चक्षु-अच.	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	
	अवधिदर्शन	१	भव्यत्व रूप	
	५ लब्धि	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	
	सम्यक्त्व	१	भव्यत्व रूप	
	चारित्र	१	भव्यत्व रूप	
	संयमासंयम	१	भव्यत्व रूप	
४.	**औदयिक**			
	४ गति	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	
	४ कषाय	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	लोभ कषाय में भव्यत्व रूप स्थान दूसरे से दसवें गुणस्थान तक होता है।
	३ लिङ्ग	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	
	मिथ्यादर्शन	१	भव्यत्वाभव्यत्वरूप	
	अज्ञान	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	
	असंयत	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	भव्यत्व रूप स्थान दूसरे से चौथे गुणस्थान तक होता है।
	असिद्धत्व	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	
	३ अशुभ लेश्या	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	
	२ शुभ लेश्या	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	भव्यत्व रूप स्थान दूसरे से सातवें गुणस्थान तक होता है।
	शुक्ल लेश्या	२	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	३	भव्यत्व. भव्यत्वाभव्य. अतीतभव्य.	शुद्ध जीवत्व की अपेक्षा अतीतभव्य स्थान होता है।
	भव्यत्व	१	भव्यत्व रूप	
	अभव्यत्व	१	अभव्यत्व रूप	

प्रश्न ३० : कितने भावों में केवल एक स्थान होता है?

उत्तर : १३ भावों में केवल एक स्थान होता है -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र - भव्यत्व रूप स्थान

क्षायोपशमिक के ८ - ४ ज्ञा. १ दर्श. (अवधि.) सम्य. चारि. संयमा.-भव्यत्व रूप स्थान

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन - भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान

पारिणामिक के २ - भव्यत्व - भव्यत्वरूप स्थान

अभव्यत्व - अभव्यत्वरूप स्थान

प्रश्न ३१ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में एक जैसे स्थान होते हैं?

उत्तर : दो भावों के सभी उत्तर भेदों में एक जैसे स्थान होते हैं -

औपशमिक भाव के - भव्यत्व रूप स्थान

क्षायिक भाव के - भव्यत्व रूप, अतीतभव्यत्व रूप

औदयिक के २० भेदों में भी दो-दो भव्यत्व रूप एवं भव्यत्वाभव्यत्वरूप स्थान होते हैं। केवल मिथ्यादर्शन में एक भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान ही होता है।

प्रश्न ३२ : क्षायोपशमिक भाव के कितने उत्तर भेदों का भव्यत्व रूप स्थान ९ गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : क्षायोपशमिक भाव के ४ उत्तर भेदों का भव्यत्व रूप स्थान ९ गुणस्थानों में होता है-

३ ज्ञान - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान

१ दर्शन - अवधिदर्शन

इनमें चौथे से बारहवें गुणस्थान रूप ९ गुणस्थान होते हैं।

प्रश्न ३३ : कितने भावों में दो स्थान होते हैं -

उत्तर : ३९ भावों में दो स्थान होते हैं -

क्षायिक के ९ - सम्यक्त्व चारित्र ज्ञान दर्शन दान....। इनमें भव्यत्व एवं अतीतभव्यत्व रूप स्थान होते हैं।

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल. - भव्यत्व एवं भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान होते है।

औदयिक के २० - ४ गति ४ कषाय..... (मिथ्यादर्शन बिना) इनमें भव्य. एवं भव्यत्वाभव्यत्व....।

प्रश्न ३४ : कितने भावों में होने वाला भव्यत्व रूप स्थान ११ गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : ९ भावों में होने वाला भव्यत्व रूप स्थान ११ गुणस्थानों में होता है -

क्षायिक का - १ सम्यक्त्व (इसमें चौथे से चौदहवें तक ११ गुणस्थान होते हैं।)

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक का १ - अज्ञान

इनमें दूसरे से बारहवें तक ११ गुणस्थान होते हैं।

प्रश्न ३५ : कितने भावों में तीन स्थान होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव में तीन स्थान होते हैं -

पारिणामिक का १ - जीवत्व

इसमें भव्यत्व रूप स्थान - दूसरे से चौदहवें गुणस्थान तक

भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान - पहले गुणस्थान में।

अतीतभव्य - सिद्ध भगवान के।

प्रश्न ३६ : कितने भावों का भव्यत्व रूप स्थान चारों गतियों में होता है?

उत्तर: २९ भावों का भव्यत्व रूप स्थान चारों गतियों में होता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १० - ४ क. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३७ : कितने भावों में अतीतभव्यत्व रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : १० भावों में अतीत भव्यत्व रूप स्थान भी होता है -

क्षायिक के ९ - ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग
वीर्य सम्यक्त्व चारित्र

पारिणामिक का १ - जीवत्व (शुद्ध जीवत्व की अपेक्षा)

भावों में भव्याभव्य

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	भव्य	
	चारित्र	१	भव्य	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१	भव्य	सिद्ध भगवान की अपेक्षा अतीतभव्य भी होते हैं।
	चारित्र	१	भव्य	
	ज्ञानादि सात	१	भव्य	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	४ ज्ञान	१	भव्य	
	३ अज्ञान	२	भव्य अभव्य	दोनों गुणस्थानों में भव्य जीव होते हैं।
	२ दर्शन	२	भव्य अभव्य	
	अवधिदर्शन	१	भव्य	
	५ लब्धि	२	भव्य अभव्य	पहले गुणस्थान में भी भव्य भाव होता है।
	सम्यक्त्व	१	भव्य	
	चारित्र	१	भव्य	
	संयमासंयम	१	भव्य	
४.	**औदयिक**			
	४ गति	२	भव्य अभव्य	
	३ कषाय	२	भव्य अभव्य	दूसरे से ९वें गुण. तक भव्य ही होते हैं।
	लोभ	२	भव्य अभव्य	
	३ लिङ्ग	२	भव्य अभव्य	
	मिथ्यादर्शन	२	भव्य अभव्य	पहले गुण. में ही भव्य और अभव्य दोनों होते है।
	अज्ञान	२	भव्य अभव्य	
	असंयत	२	भव्य अभव्य	
	असिद्धत्व	२	भव्य अभव्य	
	६ लेश्या	२	भव्य अभव्य	शुभ लेश्याओं में भी अभव्यत्व भाव हो सकता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	२	भव्य अभव्य	
	भव्यत्व	१	भव्य	पहले से चौदहवें गुणस्थान तक होता है।
	अभव्यत्व	१	अभव्य	

प्रश्न ३८ : क्या एकेन्द्रिय जीव भव्य और अभव्य दोनों होते हैं?

उत्तर : हाँ, एकेन्द्रिय जीव भव्य और अभव्य दोनों होते हैं -
पहले गुणस्थान में भव्य और अभव्य दोनों होते हैं।
सादि मिथ्यादृष्टि भव्य ही होते हैं, क्योंकि सम्यग्दर्शन प्राप्त करने वाले ही मिथ्यात्व गुणस्थान में आने पर सादि मिथ्यादृष्टि कहलाते हैं।
सासादन गुणस्थान वाले भव्य ही होते हैं, क्योंकि अभव्य जीव पहले गुणस्थान से आगे नहीं होते हैं।

प्रश्न ३९ : क्या मिथ्यादर्शन भाव वाले जीव भव्य भी होते हैं?

उत्तर : हाँ, मिथ्यादर्शन भाव वाले जीव भव्य भी होते हैं। कहा भी है- अतीत काल में ऐसे अनन्त सम्यग्दृष्टि जीव थे जो सम्यक्त्व खोकर अभी मिथ्यात्वी बन बैठे हैं। **(ज.ध. के आधार से)** ऐसे जीव मिथ्यादर्शन से युक्त होकर भी भव्य होते हैं, क्योंकि सम्यग्दर्शन भव्य जीवों को ही प्राप्त होता है। जिन्होंने अभी तक एक बार भी सम्यक्त्व प्राप्त नहीं किया। पर आगे कर सकते हैं ऐसे भी भव्य अनंत हैं।

प्रश्न ४० : पीत लेश्या रूप भाव के साथ अभव्य जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : पीत लेश्या रूप भाव के साथ अभव्य जीवों के २७ भाव होते हैं -
क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञान २ दर्श. ५ ल.
औदयिक के १५ - ३ गति (नरकबिना) ४ कषा. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले.
पारिणामिक के २ - जीवत्व अभव्यत्व

प्रश्न ४१ : कितने क्षायोपशमिक भावों में भव्य तथा अभव्य दोनों जीव होते हैं?

उत्तर : १० क्षायोपशमिक भावों में भव्य तथा अभव्य दोनों जीव होते हैं -
३ अज्ञान - कुमति कुश्रुत विभंग
२ दर्शन - चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन
५ लब्धि - दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

प्रश्न ४२ : कितने भावों में केवल भव्यत्व भाव होता है?

उत्तर : २० भावों में केवल भव्यत्व भाव होता है -
औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
क्षायिक के ९ - सम्यक्त्व........
क्षायोपशमिक के ८ - ४ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ चा. १ संय.
पारिणामिक का १ - भव्यत्व
क्षायिक भावों में भव्यत्व के साथ में अतीतभव्यत्व भाव भी पाया जाता है।

भव्य

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक होता है।
२.	**क्षायिक**	९	ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य सम्यक्त्व चारित्र	 चारित्र ग्यारहवें बिना आठवें से चौदहवें गुणस्थान तक होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१८	४ ज्ञान - म. श्रु. अव. मनः. ३ अज्ञान - कुम. कुश्रु. विभं. ३ दर्शन - चक्षु. अच. अव. ५ लब्धि - दान लाभ भोग उप. वीर्य १ - सम्यक्त्व १ - चारित्र १ - संयमासंयम	 बारहवें गुणस्थान तक होती हैं। तिर्यञ्च-मनुष्य दोनों गति में होता है।
४.	**औदयिक**	२१	४ गति - न. ति. म. दे. ४ कषाय - क्रो. मा. मा. लो. ३ लिङ्ग - स्त्री. पुरु. नपुं. १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	 चारों गुणस्थानों में होता है। सभी गुणस्थानों में होता है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न ४३ : भव्य जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : भव्य जीवों के ५२ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ क्षायिक के ९ क्षायोपशमिक के १८ औदयिक के २१ पारिणामिक के २ अर्थात् इसमें केवल अभव्यत्व भाव नहीं होता है।

प्रश्न ४४ : भव्य असंयमी के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : भव्य असंयमी के ४० भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ....
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४५ : भव्य जीवों के क्षायोपशमिक अज्ञान कितने गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : भव्य जीवों के क्षायोपशमिक अज्ञान दो गुणस्थानों में होते हैं-
(१) मिथ्यात्व (२) सासादन सम्यक्त्व

प्रश्न ४६ : भव्य पुरुषलिङ्गी के कितने भावों के सभी उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : भव्य पुरुषलिङ्गी के दो भावों के सभी उत्तर भेद होते हैं -
(१) औपशमिक (२) क्षायोपशमिक

विशेष - क्षायिक भाव के ज्ञानादि सात भाव द्रव्य से पुरुषलिङ्गी के होते हैं लेकिन भाव पुरुषलिङ्गी के नहीं हो सकते हैं, क्योंकि भाव वेद तो नवें गुणस्थान में ही नष्ट हो जाता है।

प्रश्न ४७ : जिस जीव का भव्यत्व भाव अनादि-अनन्त होता है उसके कितने भाव होते हैं?

उत्तर : जिस जीव का भव्यत्व भाव अनादि-अनन्त होता है उसके ३३ भाव होते हैं -
क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञान २ दर्श. (च.अ.) ५ लब्धि
औदयिक के २१ - ४ गति ४ कषा. ....
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

विशेष - कई विद्वानों का मत है कि जिस जीव का भव्यत्व भाव अनादि-अनन्त है अर्थात् जो दूरानुदूर भव्य जीव हैं वे नित्य-निगोद में ही रहते हैं, क्योंकि यदि वे व्यवहार राशि में आ जावेंगे तो उन्हें रत्नत्रय को प्रगट करने के बाह्य साधन सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का समागम मिल जाने से उनके रत्नत्रय प्रगट हो जायेगा। जिससे उनके दूरानुदूरपना नष्ट हो जावेगा। उनके अनुसार उन जीवों के २३ भाव ही होंगे -
क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम. कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.
औदयिक के १३ - १ ग. (ति.) ४ क. १ लि. (नपु.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नित्य निगोदिया जीव एकेन्द्रिय ही होते हैं इसलिए उनके विभंगज्ञान, चक्षुदर्शन, नरकादि तीन गतियाँ दो लिङ्ग एवं तीन शुभ लेश्या नहीं हो सकती है।

कई विद्वानों का कहना है कि दूरानुदूर भव्य जीव निगोद से निकलेगा तो उसे यहाँ सम्यक्त्व की उत्पत्ति के निमित्त मिल जाने से वह सम्यक्त्व प्राप्त कर लेगा तो वह दूरानुदूर भव्य कैसे कहलायेगा। ऐसी कोई बात नहीं है, क्योंकि दूरानुदूर भव्य होने से उसे ऐसे निमित्त कभी नहीं मिलेंगे, ये नियम है इसलिए उसका जन्म ही ऐसे स्थानों

पर होगा जहाँ सम्यग्दर्शनादि प्राप्त करने के साधन नहीं हों। जैसे - सुविधिनाथ भगवान से लेकर भगवान शांतिनाथ स्वामी के बीच-बीच में जब धर्म का विच्छेद हुआ, छठे काल अर्थात् दु:षमा-दु:षमा काल में अथवा जब भरत ऐरावत क्षेत्र में चक्रवर्ती नहीं हो उस समय ५ भरत एवं ५ ऐरावत क्षेत्र के २५-२५ म्लेच्छ खण्डों में जन्म अथवा ऐसी पर्यायों में जन्म लेता रहे, जिनमें सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की योग्यता ही नहीं है, जैसे-एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्यंत। अत: मेरे विचार से दूरानुदूर भव्य नित्य निगोद में ही रहे ऐसा नियम नहीं बनाया जा सकता है।

प्रश्न ४८ : भव्य जीवों के किस जीवसमास में पूरे भाव होते हैं?

उत्तर : भव्य जीवों के १९ जीवसमासों में से किसी भी जीव समास में पूरे भाव नहीं हो सकते हैं, क्योंकि क्षायिक ज्ञानादि ७ भाव संज्ञी-असंज्ञी विकल्प से रहित केवली भगवान के होते हैं। उनके पञ्चेन्द्रिय जीव समास होता है। इसलिए भव्य जीवों के किसी भी जीवसमास में पूरे भाव नहीं होते हैं।

नोट - गोम्मटसार जीव काण्ड के आलाप अधिकार में तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में भी सैनी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास माना है, उनकी अपेक्षा सैनी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास में ५२ भाव होते हैं।

प्रश्न ४९ : भव्य जीवों के अनिन्द्रिय अवस्था में कितने भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : भव्य जीवों के अनिन्द्रिय अवस्था में १४ भाव पाये जाते हैं -
क्षायिक के ९ औदयिक के ३ (मनुष्यगति असिद्धत्व शुक्ल लेश्या)
पारिणामिक के २ (जीवत्व भव्यत्व)

प्रश्न ५० : भव्य इतर निगोदिया जीव के कितने भावों के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : भव्य इतर निगोदिया जीव के किसी भी भाव के सभी उत्तर भेद नहीं पाये जाते हैं। इसी प्रकार इतर निगोदिया अभव्य, नित्यनिगोदिया भव्य अभव्य के भी जानना चाहिए।

प्रश्न ५१ : भव्य जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : भव्य जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ४८ भाव पाये जाते हैं -
औपशमिक का १ (सम्यक्त्व), क्षायिक के ९ (ज्ञान दर्शन....)
क्षायोपशमिक के १५ (३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.)
औदयिक के २१ (गति....) पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५२ : इनके कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनके ५ गुणस्थान होते हैं -

मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, अविरत सम्यक्त्व,

प्रमत्तसंयत, सयोगकेवलीजिन

इनमें भाव इन गुणस्थानों में होने वाली निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था के समान जानना चाहिए। मात्र मिथ्यात्व गुणस्थान में अभव्यत्व को कम करना चाहिए।

अभव्य

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**क्षायोपशमिक**	१०	३ अज्ञान - कुमति कुश्रुत विभंग.	पहले गुणस्थान में ही होते हैं।
			२ दर्शन. चक्षु. अचक्षु.	
			५ लब्धि. दान लाभ भोग उप. वीर्य	
२.	**औदयिक**	२१	४ गति - न. ति. म. दे.	
			४ कषाय - क्रो. मा. मा. लो.	
			३ लिङ्ग - स्त्री. पुरु. नपुं.	
			१ मिथ्यादर्शन	चारों गतियों की अपेक्षा होता है।
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			६ लेश्या-कृ.नी.का.पी.प.शु.	शुभ लेश्या तीनों गति की अपेक्षा होती है।
३.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व	
			अभव्यत्व	

प्रश्न ५३ : अभव्य जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अभव्य जीवों के ३३ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञान २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व अभव्यत्व

इनके कम-से-कम २३ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम-कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के १३ - १ ग (ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ लेश्या (अशु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व अभव्यत्व

नोट - ये भाव एकेन्द्रिय की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न ५४ : अभव्य जीवों के औपशमिक एवं क्षायिक भाव क्यों नहीं होते हैं?

उत्तर : अभव्य जीवों में मोक्ष प्राप्त करने की शक्ति नहीं होती है इसलिए उनके औपशमिक एवं क्षायिक भाव नहीं होते हैं क्योंकि जिसको एक बार भी औपशमिक भाव प्राप्त हो जाता है उसको कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन काल में मुक्ति प्राप्त हो जाती है। कहा भी है - मिथ्यादर्शन के विघट जाने पर असंयत सम्यग्दृष्टि जीव जिनदृष्ट संख्यात जन्मों से अधिक संसार में नहीं ठहरता है। **(श्लो. १/३४२)**

तथा क्षायिक सम्यक्त्व होने पर जीव अधिक से अधिक भी ४ भव ही ले सकता है। अर्थात् चौथे भव में नियम से मोक्ष चला जाता है। **(ल.सा. १६५)**

प्रश्न ५५ : अभव्य औदारिकमिश्र काय योगी के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अभव्य औदारिकमिश्र काय योगी के २७ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञान २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १६ - २ गति (ति.म.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, अभव्यत्व

प्रश्न ५६ : अभव्य जीवों के शुक्ल लेश्या के साथ कितने भावों के उत्तर भेद हो सकते हैं?

उत्तर : अभव्य जीवों के शुक्ल लेश्या के साथ तीन भावों के उत्तर भेद हो सकते हैं -

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञान २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १५ - ३ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व अभव्यत्व

स्त्री एवं नपुंसक लिङ्ग में तिर्यञ्च-मनुष्य की अपेक्षा शुक्ल लेश्या जानना चाहिए।

प्रश्न ५७ : क्या अभव्य जीवों के आहारक-अनाहारक अवस्था के भावों में कुछ अन्तर है?

उत्तर : हाँ, अभव्य जीवों के आहारक अवस्था में विभंग ज्ञान हो सकता है परन्तु अनाहारक अवस्था में नहीं होता है। शेष भाव आहारक-अनाहारक दोनों अवस्था में बन जाते हैं।

तीन शुभ लेश्याएँ वैमानिक देवों में उत्पन्न होने की अपेक्षा अनाहारक अवस्था में बन जाती हैं।

अभव्य जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में विभङ्गज्ञान के बिना ३२ भाव होते हैं। इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी केवल एक पहला गुणस्थान ही पाया जाता है।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ५८ : अभव्य चक्षुदर्शनी की अपेक्षा भव्य चक्षुदर्शनी के कितने भाव ज्यादा होते हैं?

उत्तर : अभव्य चक्षुदर्शनी की अपेक्षा भव्यचक्षुदर्शनी के ११ भाव ज्यादा होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के ७ - ४ ज्ञा. १ सम्य. १ चा. १ संयमा.

प्रश्न ५९ : कितने भाव मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि दोनों भव्यों के होते हैं?

उत्तर : २९ भाव मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि दोनों भव्यों के होते हैं -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के २० - मिथ्यादर्शन बिना

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ६० : कितने स्थानों में पाये जाने वाले भाव असंयत एवं संयत दोनों भव्यों के पाये जाते हैं?

उत्तर : दो स्थानों में पाये जाने वाले भाव असंयत एवं संयत दोनों भव्यों के पाये जाते हैं-

भव्यत्व रूप स्थान के ८

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अव.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य.

पारिणामिक का १ - भव्यत्व

भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान के - २१

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के १३ - १ ग. (म.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

पारिणामिक का १ - जीवत्व

प्रश्न ६१ : भव्य मार्गणा में ७ प्राण वालों के भावों का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : भव्य मार्गणा में ७ प्राण वालों के भावों का विवेचन -

७ प्राण वाले भव्य जीवों के - ४०

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि.......।

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

७ प्राण वाले अभव्य जीवों के - ३२

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि......।

पारिणामिक के २ - जीवत्व अभव्यत्व

ये प्राण संज्ञी पञ्चेन्द्रिय के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था की अपेक्षा जानना चाहिए।

सात प्राण वाले भव्य/अभव्य के कम से कम - २३

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के १३ - १ ग. (ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व एवं भव्यत्व अभव्यत्व में से एक

ये भाव त्रीन्द्रिय भव्य या अभव्य जीव के जानना चाहिए।

प्रश्न ६२ : अभव्य नारकी की अपेक्षा अभव्य देवों के कितने भाव अधिक होते हैं?

उत्तर : अभव्य नारकी की अपेक्षा अभव्य देवों के ४ भाव अधिक होते हैं -

औदयिक के - १ लिङ्ग (देवों के दो लिङ्ग हैं, नारकियों के १ लिङ्ग होता है)

३ लेश्या (देवों के छहों लेश्याएँ होती हैं।)

प्रश्न ६३ : कितने भाव ४ प्राण वाले भव्य जीवों के भी पाये जाते हैं?

उत्तर : ३४ भाव ४ प्राण वाले भव्य जीवों के भी पाये जाते हैं -

क्षायिक के ९ - ज्ञान, दर्शनादि......

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञान १ दर्शन ५ लब्धि

औदयिक के १५ - २ गति, ४ कषाय, १ लिंग १ मि. १ अज्ञान १ असं. १ असि. ४ लेश्या (पी.प.बिना)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **भव्य जीवों के कितने मूल भाव पाये जाते हैं?**

(अ) ५ (ब) ३

(स) ४ (द) २

(ii) **अभव्य जीवों के कितने औदयिक भाव होते हैं?**

(अ) २० (ब) १८

(स) २१ (द) १५

(iii) **अतीतभव्य जीव कितने गुणस्थान में होते हैं?**

(अ) २ (ब) १

(स) ४ (द) कोई नहीं

(iv) **वन्ध्या स्त्री का उदाहरण किसके लिए दिया गया है?**

(अ) अभव्य (ब) दूरानुदूर भव्य

(स) भव्य (द) निकट भव्य

(v) **भव्य जीवों के किस भाव के दो उत्तर भेद पाये जाते हैं?**

(अ) औदयिक (ब) पारिणामिक

(स) क्षायिक (द) क्षायोपशमिक

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) अभव्य जीव के कितने गुणस्थानों में ३ अज्ञान रूप भाव पाये जाते हैं?

(ii) भव्य जीवों के क्षायिक भाव के भेद कितने गुणस्थानों में होते हैं?

(iii) कितने औपशमिक भाव भव्य एवं अभव्य दोनों के होते हैं?

(iv) भव्य जीवों के कितने गुणस्थान औपशमिक भाव रूप ही होते हैं?

(v) भव्यत्वाभव्यत्व रूप स्थान में कितने भाव होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) भव्य जीव मोक्ष में भी पाये जाते हैं?

(ii) क्षायिक भाव भव्य तथा अतीतभव्य के भी पाये जाते हैं?

(iii) क्षायोपशमिक भावों में अभव्यत्व रूप स्थान भी होता है?

(iv) ५२ भावों में भव्यत्व मार्गणा के २ भेद पाये जाते हैं?

(v) अभव्य भाव में केवल एक ही पारिणामिक भाव पाया जाता है?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए-

(i) भव्य जीवों के .... क्षायोपशमिक .... औदयिक तथा .... पारिणामिक भाव होते हैं।

(ii) अभव्य जीवों के .... लेश्यारूप .... गति रूप तथा .... औपशमिक भाव होते हैं।

(iii) भव्यत्वाभव्यत्व स्थान में .... औदयिक .... क्षायोपशमिक .... पारिणामिक भाव होता है।

(iv) अतीतभव्य जीवों के .... क्षायिक .... क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

(v) जीवत्व भाव में .... भाव .... भाव तथा .... भव्य भाव भी होता है।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	भव्यसैनी	-	१० भाव
(ii)	४ गति	-	अतीतभव्य
(iii)	अभव्यत्व रूप स्थान	-	२५ भाव
(iv)	भव्य	-	४५ भाव
(v)	अभव्य	-	३३ भाव
(vi)	कर्म के क्षय से	-	भव्य-अभव्य
(vii)	अतीतभव्य	-	५२ भाव
(viii)	अभव्य नारकी	-	१ भाव

- उत्तरमाला -

१. (i) अ (ii) स (iii) द (iv) अ (v) ब

२. (i) १ (ii) ११ (iii) ० (iv) १ (v) ३२

३. (i) ना (ii) हाँ (iii) ना (iv) ना (v) ना

४. (i) १८,२१,२ (ii) ६,४,० (iii) २१,१०,१ (iv) ९,०
(v) भव्य, अभव्य, अतीत

५. (i) ४५ भाव (ii) भव्य-अभव्य (iii) १ भाव
(iv) ५२ भाव (v) ३३ भाव (vi) अतीतभव्य
(vii) १० भाव (viii) २५ भाव

सम्यक्त्व मार्गणा

प्रश्न १ : सम्यक्त्व मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनेन्द्र भगवान के द्वारा उपदिष्ट छह द्रव्य, पंचास्तिकाय और नव प्रकार के पदार्थों का आज्ञा अथवा अधिगम से श्रद्धान करना सम्यक्त्व है। **(गो.जी. ५६१)**

प्रशम-संवेग, आस्तिक्य और अनुकम्पा की प्रगटता जिसका लक्षण है उसको सम्यक्त्व कहते हैं। **(ध.१/१५२)** तत्त्वार्थ श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहते हैं। **(त.सू./१-२)**

क्षायिक आदि छह प्रकार के सम्यक्त्वों में जीवों की खोज करना सम्यक्त्व मार्गणा है।

प्रश्न २ : सम्यक्त्व मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा के अनुवाद से -

क्षायिक सम्यग्दृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि, उपशम सम्यग्दृष्टि

सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। **(ध.१/३९७)**

सम्यक्त्व मार्गणा के छह भेद हैं -

(१) क्षायिक सम्यक्त्व (२) वेदक (क्षायोपशमिक) सम्यक्त्व (३) उपशम सम्यक्त्व (४) सासादन सम्यक्त्व (५) सम्यग्मिथ्यात्व (६) मिथ्यात्व

प्रश्न ३ : क्षायिक सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : सात प्रकृतियों के क्षय से क्षायिक सम्यक्त्व होता है। वह मेरु की भाँति निष्प्रकम्प, निर्मल व अक्षय अनन्त है। **(ल.सा. १६४)**

सात प्रकृतियाँ-अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ, मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक् प्रकृति।

जैसे - पंक के दूर हो जाने पर शुद्ध स्फटिक के पात्र में अतिशुद्ध जल शोभित होता है वैसे ही मिथ्यात्व आदि सात कर्मों का सामग्री विशेष के द्वारा क्षय होने पर शुद्ध आत्मा में अति शुद्ध अविनाशी क्षायिक सम्यक्त्व सदा प्रदीप्त रहता है।

भयंकर रूपों से, हेतु और दृष्टान्तपूर्वक वचन विन्यास से क्षायिक सम्यक्त्व कभी भी डगमगाता नहीं है, निश्चल रहता है अर्थात् भयंकर रूप और युक्तितर्क के वाग्जाल भी उसकी श्रद्धा में हलचल पैदा करने में असमर्थ होते हैं। **(पं.सं. १/२९३)**

प्रश्न ४ : वेदक सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व मोहनीय प्रकृति के उदय से पदार्थों का जो चल मलिन और अगाढ़ रूप श्रद्धान होता है उसे वेदक सम्यग्-दर्शन कहते हैं। **(ध.१/३९८)**

सम्यक्त्व का एकदेश रूप से घात करने वाली सम्यक्त्व प्रकृति के उदय से उत्पन्न होने वाला सम्यक्त्व क्षायोपशमिक या वेदक सम्यग्दर्शन है। **(ध.१/१७३)**

जिसकी सम्यक्त्व संज्ञा है ऐसी दर्शन मोहनीय कर्म की भेद रूप प्रकृति के उदय से यह जीव वेदकसम्यग्दृष्टि कहलाता है। **(ध. १/१७२)**

प्रश्न ५ : उपशम सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर : सात प्रकृतियों के उपशम हो जाने से जो सम्यक्त्व उत्पन्न होता है उसे उपशम सम्यक्त्व कहते हैं। जिस प्रकार गन्दे (मलिन) जल में कतक फल डालने से उस जल की मलिनता नीचे बैठ जाती है और जल स्वच्छ हो जाता है उस गन्दगी के जल में रहते हुए भी जल में कोई विकार (मलिनता) नहीं होता, उसी तरह सातों प्रकृतियों के उपशम हो जाने से आत्मा के सम्यग्दर्शन नामक शुद्धि उत्पन्न हो जाती है वे उपशमित प्रकृतियाँ सम्यग्दर्शन को रोकने में असमर्थ हो जाती हैं अत: इसे उपशम सम्यग्दर्शन कहते हैं।

दर्शन मोहनीय के उपशम से कीचड़ के नीचे बैठ जाने से निर्मल जल के समान पदार्थों का जो निर्मल श्रद्धान होता है वह उपशम सम्यग्दर्शन है। **(ध.१/३९८)**

अनादिकाल से उत्पन्न मिथ्या कर्म की उपशांति से आदि का प्रथम उपशम सम्यक्त्व होता है। **(भा.सं. २९५)**

प्रश्न ६ : सासादन सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : स+असादन=सम्यक्त्व की विराधना को असादन कहते हैं और उस असादन कर जो सहित है वह सासादन कहलाता है। **(ध.१/१६४)**

जिसका वर्तन सम्यक्त्व की असादना में है उसे भाववेदी मुनि सासादन सम्यक्त्व कहते हैं। **(भा.सं. २९३)**

किसी एक अनंतानुबंधी कषाय के उदय से जिसका सम्यग्दर्शन नष्ट हो गया है, किन्तु मिथ्यात्व कर्म के उदय से उत्पन्न हुए मिथ्यात्व रूप परिणामों को प्राप्त नहीं हुआ है फिर भी मिथ्यात्व गुणस्थान के अभिमुख है उसे सासादन सम्यक्त्व कहते हैं। **(ध.१/१६४)**

प्रश्न ७ : सम्यग्मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : वर्तमान समय में मिथ्यात्व कर्म के सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय होने से सत्ता में रहने वाले उसी मिथ्यात्व कर्म के सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभाव लक्षण रूप उपशम होने से और सम्यग्मिथ्यात्व कर्म के सर्वघाति स्पर्धकों के उदय होने से प्राप्त होने वाले स्थान को सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान कहते हैं। **(ध.१/१६९)**

जिस प्रकार दही और गुड़ को मिला देने पर उसको अलग-अलग अनुभव नहीं किया जा सकता किन्तु मिले हुए दोनों रसों का मिश्र भाव प्राप्त हो जाता है उसी प्रकार एक काल में सम्यक्त्व और मिथ्यात्व रूप मिले हुए परिणामों को मिश्र गुणस्थान कहते हैं। **(ध.१/१७१)** सभी देव वन्दनीय हैं कोई निन्दनीय नहीं है इस प्रकार के मिश्र परिणाम वाला सम्यग्मिथ्यादृष्टि है। **(वृ.द्र.सं. १३)**

प्रश्न ८ : मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन जीवों की रुचि असत्य में होती है उन्हें मिथ्यादृष्टि कहते हैं। **(ध.१/१६३)** जिन जीवों की विपरीत आदि मिथ्यात्व कर्मोदय से उत्पन्न हुई मिथ्यारूप दृष्टि होती है उन्हें मिथ्यादृष्टि कहते हैं। **(ध.१/१६३)** जिस गुणस्थान में मिथ्यात्व कर्म के उदय से तत्त्वार्थ के विषय में जो अश्रद्धान उत्पन्न होता है, उसे मिथ्यात्व गुणस्थान कहते हैं।

कर्म विवक्षा

क्र.	सम्यक्त्व	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	क्षायिक	क्षय	अविरतसम्यक्त्व संयतासंयत, प्रमत्तविरत अप्रमत्त.	क्षायिक क्षायोपशमिक	
			अपूर्व. से सूक्ष्म. तक उपशान्तकषाय.	औप.क्षा. औपशमिक	चारित्रमोह की अपेक्षा क्षायिकसम्यग्दृष्टि के औपशमिक भाव भी होता है।
			क्षीणकषाय से अयोग केवली तक	क्षायिक	
२.	क्षायोपशमिक	क्षयोपशम	अविरतसम्यक्त्व	क्षायोपशमिक	दर्शनमोह की अपेक्षा क्षायो. भाव होता है।
			संयतासंयत से अप्रमत्त संयत तक	क्षायोपशमिक	
३.	औपशमिक	उपशम	अवरितसम्यक्त्व	औपशमिक	
			संयतासंयत-प्रमत्तविरत अप्रमत्त विरत.	क्षायोपशमिक	चारित्र मोह की अपेक्षा क्षायोपशमिक भाव होता है।
			अपूर्वकरण. से उपशांत कषाय तक	औपशमिक	
४.	सासादनसम्यक्त्व	कर्मनिरपेक्ष	सासादन सम्यक्त्व	पारिणामिक	सासादनसम्यक्त्व की उत्पत्ति अनन्तानुबन्धी में से किसी एक के उदय से होती है फिर भी पारिणामिक ही माना गया है।
५.	सम्यग्मिथ्यात्व	क्षयोपशम	सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	
६.	मिथ्यात्व	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	

प्रश्न ९ : सम्यक्त्व मार्गणा के कितने भेद कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न होते हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा के केवल दो भेद कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न होते हैं -
(१) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व (२) सम्यग्मिथ्यात्व

नोट - ये दोनों अनन्तानुबन्धी चतुष्क, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व एवं सम्यक् प्रकृति के यथायोग्य क्षयोपशम से उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न १० : सम्यक्त्व मार्गणा के कितने भेदों के सभी गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा के दो भेदों के सभी गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं -

१) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व-इसका चौथा गुणस्थान क्षायोपशमिक सम्यक्त्व की अपेक्षा तथा पाँचवाँ गुणस्थान संयमासंयम की अपेक्षा एवं छठा-सातवाँ गुणस्थान क्षायोपशमिक चारित्र की अपेक्षा क्षायोपशमिक भाव रूप होता है।

२) सम्यग्मिथ्यात्व इसमें तीसरा गुणस्थान ही होता है जो दर्शनमोहनीय की जात्यन्तर सर्वघाती सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति के क्षयोपशम से उत्पन्न होता है।

प्रश्न ११ : सम्यक्त्व मार्गणा के कितने भेदों में केवल एक गुणस्थान होता है?

उत्तर: सम्यक्त्व मार्गणा के तीन भेदों में केवल एक गुणस्थान होता है -

सासादनसम्यक्त्व - दूसरा गुणस्थान

सम्यग्मिथ्यात्व - तीसरा गुणस्थान

मिथ्यात्व - पहला गुणस्थान

प्रश्न १२ : कितने सम्यक्त्वों के गुणस्थान दो भाव रूप होते हैं?

उत्तर : केवल एक सम्यक्त्व के तीन गुणस्थान दो भाव रूप होते हैं -
क्षायिक सम्यक्त्व में होने वाले अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण एवं सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान औपशमिक एवं क्षायिक दोनों भाव रूप होते हैं, क्योंकि क्षायिक सम्यग्दृष्टि मुनिराज उपशम एवं क्षपक दोनों श्रेणी चढ़ सकते हैं। जब वे उपशम श्रेणी चढ़ते हैं तब औपशमिक भाव एवं जब क्षपक श्रेणी चढ़ते हैं तब उनके क्षायिक भाव होता है।

प्रश्न १३ : सम्यक्त्व मार्गणा के किस भेद के सभी गुणस्थान चारित्र मोह की अपेक्षा ही होते हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा का ऐसा कोई भेद नहीं है जिसके सभी गुणस्थान चारित्र मोह की अपेक्षा ही होते हों, क्योंकि सम्यक्त्व मार्गणा का कोई भी भेद पाँचवें गुणस्थान से प्रारम्भ नहीं होता है और मिथ्यात्वादि चार गुणस्थान दर्शनमोह की अपेक्षा होते हैं।

प्रश्न १४ : क्या क्षायिक सम्यक्त्व में ऐसा कोई गुणस्थान है जो केवल औपशमिक भाव रूप होता है?

उत्तर : हाँ, क्षायिक सम्यक्त्व में होने वाला एक गुणस्थान ऐसा है जो केवल औपशमिक भाव रूप ही होता है-

उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ। यह गुणस्थान चारित्रमोहनीय के उपशम से होता है।

प्रश्न १५ : क्या इसी प्रकार औपशमिक सम्यक्त्व का भी कोई गुणस्थान क्षायिक भाव रूप हो सकता है?

उत्तर : नहीं, औपशमिक सम्यक्त्व का कोई भी गुणस्थान क्षायिक भाव रूप नहीं हो सकता है, क्योंकि उपशम सम्यग्दृष्टि जीव कभी क्षपक श्रेणी नहीं चढ़ सकता है इसलिए उसके आठवें आदि गुणस्थान क्षायिक भाव रूप नहीं होते। दूसरी बात एक सम्यक्त्व के साथ दूसरा सम्यक्त्व नहीं हो सकता इसलिए चौथा गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप नहीं बनता है। तीसरी बात पाँचवें छठे सातवें गुणस्थान में क्षायिक चारित्र नहीं होता, इसलिए ये गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप नहीं बन सकते हैं।

प्रश्न १६ : सम्यक्त्व मार्गणा के कितने भेदों के गुणस्थान औपशमिक भाव रूप नहीं हो सकते हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा के चार भेदों के गुणस्थान औपशमिक भाव रूप नहीं हो सकते हैं-

(१) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व (२) सासादन सम्यक्त्व

(३) सम्यग्मिथ्यात्व (४) मिथ्यात्व

प्रश्न १७ : किस सम्यक्त्व के गुणस्थान क्षायिक आदि तीन भाव रूप होते हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व के गुणस्थान क्षायिक आदि तीन भाव रूप होते हैं-

क्षायिक भाव रूप औपशमिक भाव रूप एवं क्षायोपशमिक भाव रूप

इसके - चौथा, बारहवाँ, तेरहवाँ एवं चौदहवाँ गुणस्थान - क्षायिक भाव रूप

पाँचवाँ, छठा, सातवाँ गुणस्थान - क्षायोपशमिक भाव रूप

ग्यारहवाँ गुणस्थान - औपशमिक भाव रूप

इसके आठवाँ नवाँ दसवाँ गुणस्थान औपशमिक एवं क्षायिक दोनों भाव रूप होता है।

प्रश्न १८ : तीसरे गुणस्थान में सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति का उदय होने से उसे औदयिक भाव रूप कहना चाहिए?

उत्तर : नहीं, क्योंकि मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से जिस प्रकार सम्यक्त्व का निरन्वय नाश होता है उस प्रकार सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से सम्यक्त्व का निरन्वय नाश

नहीं पाया जाता है इसलिए तीसरे गुणस्थान को औदयिक भाव न कहकर क्षायोपशमिक भावरूप कहा है। **(ध.१/१६९)**

प्रश्न १९ : सासादन सम्यक्त्व अनन्तानुबन्धी चतुष्क में से किसी एक के उदय से होता है इसलिए इसे औदयिक कहना चाहिए?

उत्तर : नहीं, क्योंकि यह दर्शनमोहनीय के उदय, उपशम, क्षय व क्षयोपशम के बिना उत्पन्न होता है इसलिए सासादन गुणस्थान को पारिणामिक भाव स्वीकार किया है। (दूसरी बात) भले ही अनन्तानुबन्धी चतुष्क उभय मोहनीय (दर्शन एवं चारित्र मोहनीय) है किन्तु यहाँ वैसी विक्क्षा नहीं है। अनन्तानुबन्धी चारित्र मोहनीय ही है, इसी विवक्षा से सासादन गुणस्थान को पारिणामिक कहा है। **(ध.७/१०९-१०)**

प्रश्न २० : जीव सासादन सम्यग्दृष्टि किस भाव से होता है?

उत्तर : पारिणामिक भाव से जीव सासादन सम्यग्दृष्टि होता है। यह सासादन परिणाम क्षायिक नहीं होता, क्योंकि दर्शनमोहनीय के क्षय से उसकी उत्पत्ति नहीं होती है। सासादन परिणाम क्षायोपशमिक भी नहीं है, क्योंकि दर्शन मोहनीय के देशघाति स्पर्धकों के उदय से उसकी उत्पत्ति नहीं होती है। सासादन परिणाम औपशमिक भी नहीं है, क्योंकि दर्शनमोहनीय के उपशम से उसकी उत्पत्ति नहीं होती है। सासादन परिणाम औदयिक भी नहीं है, क्योंकि दर्शनमोहनीय के उदय से उसकी उत्पत्ति नहीं होती है। अतएव पारिशेष न्याय से पारिणामिक भाव से सासादन परिणाम होता है। **(ध.७/१०९)**

प्रश्न २१ : सम्यग्मिथ्यात्व नामक दर्शनमोहनीय प्रकृति के सर्वघाति-स्पर्धकों के उदय से जीव सम्यग्मिथ्यादृष्टि होता है इसलिए उसके क्षायोपशमिक भाव नहीं बनता है?

उत्तर : सम्यक्त्व की अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्व के स्पर्धकों में सर्वघातिपना भले ही हो किन्तु अशुद्ध नय की विवक्षा से सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति के स्पर्धकों में सर्वघातीपना नहीं होता, क्योंकि उनका उदय रहने पर भी मिथ्यात्व मिश्रित सम्यक्त्व का कण पाया जाता है। सर्वघाति स्पर्धक तो उन्हें कहते हैं जिनका उदय होने से मूल (प्रतिपक्षीगुण) घात हो जाता है। किन्तु सम्यग्मिथ्यात्व में तो हम सम्यक्त्व का निर्मूल विनाश नहीं देखते, क्योंकि यहाँ सद्भूत और असद्भूत पदार्थों में समान श्रद्धान होता देखा जाता है इसलिए सम्यग्मिथ्यात्व का क्षायोपशमिक भाव बन जाता है। **(ध.७/११०)**

प्रश्न २२ : वेदक सम्यक्त्व को क्षायोपशमिक क्यों कहा है?

उत्तर : सम्यक्त्व प्रकृति रूप देशघाति स्पर्धकों की अनन्तगुणी हानि होने से उदय में आये हुए अति अल्प देशघातिपने की अपेक्षा उपशान्त हुए उन (सम्यक्त्व प्रकृति के स्पर्धकों) का चूंकि क्षयोपशम नाम दिया गया है इसलिए उस क्षयोपशम से उत्पन्न जीव परिणाम को क्षयोपशम लब्धि कहते हैं उसी क्षयोपशम लब्धि से वेदक सम्यक्त्व होता है। **(ध.७/१०८)**

स्थान विवरण

प्रश्न २३ : सम्यक्त्व मार्गणा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा में चार स्थान होते हैं -

(१) १ सम्यक्त्व रूप (२) २ सम्यक्त्व रूप

(३) ३ सम्यक्त्व रूप (४) ६ सम्यक्त्व रूप

प्रश्न २४ : इन स्थानों में किस-किस सम्यक्त्व को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में सम्यक्त्व -

१ सम्यक्त्व रूप स्थान में चार भंग है -

(१) क्षायिक सम्यक्त्व (२) सासादन सम्यक्त्व

(३) सम्यग्मिथ्यात्व (४) मिथ्यात्व

अथवा - स्वकीय सम्यक्त्व की अपेक्षा छह स्थान हैं, क्योंकि एक समय में एक ही सम्यक्त्व होता है-

(१) क्षायिकसम्यक्त्व (२) औपशमिक सम्यक्त्व (३) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व

(४) सासादनसम्यक्त्व (५) सम्यग्मिथ्यात्व (६) मिथ्यात्व

२ सम्यक्त्व रूप स्थान में -

क्षायिक और औपशमिक अथवा - सासादनसम्यक्त्व और मिथ्यात्व

३ सम्यक्त्व रूप स्थान में -

क्षायिक सम्यक्त्व, औपशमिक सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व

६ सम्यक्त्व रूप स्थान में -

क्षायिक सम्यक्त्व, औपशमिक सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, सासादन सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, मिथ्यात्व

नोट - यद्यपि औपशमिक एवं क्षायोपशमिक इन एक-एक सम्यक्त्व रूप स्थान में तथा सासादन सम्यक्त्व और मिथ्यात्व इन दो सम्यक्त्वरूप स्थान में कोई गति एवं गुणस्थान नहीं है फिर भी इनमें उत्तर भाव पाये जाते हैं इसलिए इनका यहाँ ग्रहण किया है।

प्रश्न २५ : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

१ सम्यक्त्व रूप स्थान के

क्षायिक सम्यक्त्व रूप स्थान के - बारहवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान-वर्ती जीव

औपशमिक सम्यक्त्व रूप स्थान के - उपशम सम्यग्दृष्टि जीव

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप स्थान के - क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि

सासादन सम्यक्त्व रूप स्थान के - द्वितीय गुणस्थानवर्ती जीव

सम्यग्मिथ्यात्व रूप स्थान के - तृतीय गुणस्थानवर्ती जीव

मिथ्यात्व रूप स्थान के - प्रथम गुणस्थानवर्ती जीव

२ सम्यक्त्व रूप स्थान के - आठवें से ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती मुनिराज

३ सम्यक्त्व रूप स्थान के - चौथे से सातवें गुणस्थानवर्ती जीव

६ सम्यक्त्व रूप स्थान के - चारों गति के जीव

प्रश्न २६ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

१ सम्यक्त्व रूप स्थान में १३ भाव -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन....

क्षायोपशमिक का १ - सम्यक्त्व

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

२ सम्यक्त्व रूप स्थान में - ४

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के ३ - कुमति कुश्रुत विभंग.

३ सम्यक्त्व रूप स्थान में - ७

क्षायोपशमिक के - ४ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ चारि. १ संयमा.

६ सम्यक्त्व रूप स्थान में - २९

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ लब्धि

औदयिक के २० - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

विशेष - १) वंशा आदि नरक, कर्म भूमिया तिर्यञ्च, भवनत्रिक देव, सभी देवियाँ आदि के चौथे गुणस्थान में औपशमिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप दो सम्यक्त्व का स्थान होता है।

२) परिहारविशुद्धि, आहारकद्विक आदि के क्षायिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप दो सम्यक्त्व का स्थान होता है।

३) पंचमकाल में संयमासंयम, क्षायोपशमिक चारित्र आदि में भी औपशमिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप दो सम्यक्त्व का स्थान होता है क्योंकि वर्तमान में क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है।

४) औदारिकमिश्र काययोग तथा नपुंसक वेद के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था आदि में क्षायिक, क्षायोपशमिक, सासादन तथा मिथ्यात्व रूप चार सम्यक्त्व का स्थान होता है।

५) उपशम सम्यग्दृष्टि के उपशम श्रेणी तथा क्षायिक सम्यग्दृष्टि के श्रेणी की अपेक्षा एक सम्यक्त्व रूप स्थान होता है।

प्रश्न २७ : एक सम्यक्त्व रूप स्थान का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : एक सम्यक्त्व रूप स्थान का विवेचन -

औपशमिक सम्यक्त्व	-	स्वकीय अर्थात् औपशमिक सम्यग्दृष्टि जीवों के चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान की अपेक्षा
क्षायिक सम्यक्त्व	-	स्वकीय सम्यक्त्व की अपेक्षा-चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक तथा बारहवें से चौदहवें गुणस्थान तक क्षायिक सम्यक्त्व ही होता है।
क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	-	स्वकीय सम्यक्त्व की अपेक्षा चौथे से सातवें तक
सासादन सम्यक्त्व	-	दूसरा गुणस्थान
सम्यग्मिथ्यात्व	-	तीसरा गुणस्थान
मिथ्यात्व	-	पहला गुणस्थान

नोट - औपशमिक सम्यक्त्व एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में एक सम्यक्त्व रूप स्थान मार्गणाओं के उत्तर भेदों की अपेक्षा बनता है।

प्रश्न २८ : कितने स्थानों में पाँचों भावों के उत्तर भेद होते हैं -

उत्तर : केवल एक स्थान में पाँचों भावों के उत्तर भेद होते हैं -

एक सम्यक्त्व रूप स्थान में

क्षायिक सम्यक्त्व रूप स्थान में	-	९ क्षायिक भाव
औपशमिक सम्यक्त्व रूप स्थान में	-	औपशमिक सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप स्थान में	-	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
मिथ्यात्व रूप स्थान में	-	औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न २९ : किस स्थान में दो भावों का एक-एक उत्तर भेद नहीं होता है?

उत्तर : ६ सम्यक्त्व रूप स्थान में दो भावों का एक-एक उत्तर भेद नहीं होता है-
औदयिक का - मिथ्यादर्शन
पारिणामिक का - अभव्यत्व

प्रश्न ३० : कितने स्थानों में क्षायोपशमिक भाव के उत्त भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : चारों ही स्थानों में क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं -
१ सम्यक्त्व रूप स्थान में १ - क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
२ सम्यक्त्व रूप स्थान में ३ - कुमति. कुश्रुत. विभंग.
३ सम्यक्त्व रूप स्थान में ७ - ४ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ चारि. १ संयमा.
६ सम्यक्त्व रूप स्थान में ७ - २ दर्श. (च. अच.) ५ ल.

प्रश्न ३१ : किस स्थान में सबसे ज्यादा गुणस्थान होते हैं?

उत्तर: १ सम्यक्त्व रूप स्थान में सबसे ज्यादा गुणस्थान होते हैं -
सामान्य रूप से इस स्थान में सभी गुणस्थान होते हैं,
विशेष रूप से क्षायिक सम्यक्त्व रूप स्थान में ११ गुणस्थान होते हैं -
चौथे से चौदहवें गुणस्थान तक।

प्रश्न ३२ : किस स्थान में केवल एक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : तीन सम्यक्त्व रूप स्थान में केवल एक भाव के उत्तर भेद होते हैं - क्षायोपशमिक भाव। इस स्थान में क्षायिक, औपशमिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व होता है।

प्रश्न ३३ : कितने स्थानों में सम्यग्दृष्टि एवं मिथ्यादृष्टि दोनों के होने वाले भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : ३ स्थानों में सम्यग्दृष्टि एवं मिथ्यादृष्टि दोनों के होने वाले भाव पाये जाते हैं -
१ सम्यक्त्व रूप स्थान में - ११ भाव सम्यग्दृष्टि के और २ भाव मिथ्यादृष्टि के।
२ सम्यक्त्व रूप स्थान में - चारित्र - सम्यग्दृष्टि के
- ३ अज्ञान - मिथ्यादृष्टि के
६ सम्यक्त्व रूप स्थान के सभी भाव सम्यग्दृष्टि एवं मिथ्यादृष्टि दोनों के पाये जाते हैं।

प्रश्न ३४ : कितने स्थानों के स्वामी सभी गुणस्थान वाले हो सकते हैं?

उत्तर : मात्र एक स्थान के स्वामी सभी गुणस्थान वाले हो सकते हैं -

१ सम्यक्त्व रूप स्थान के -

क्षायिक सम्यक्त्व	- बारहवें से चौदहवें गुणस्थानवर्ती
औपशमिक सम्यक्त्व	- चौथे से ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती
क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	- चौथे से सातवें गुणस्थानवर्ती
सासादन सम्यक्त्व	- दूसरे मुणस्थानवर्ती
सम्यग्मिथ्यात्व	- तीसरे गुणस्थानवर्ती
मिथ्यात्व	- पहले गुणस्थानवर्ती

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	१ सम्यक्त्व रूप	औपशमिक सम्यक्त्व होता है।
	चारित्र	१	२ सम्य.	उपशमसम्यग्दृष्टि की अपेक्षा एक सम्यक्त्व ही होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१	१ सम्यक्त्व रूप	क्षायिक सम्यक्त्व होता है।
	चारित्र	१	१ सम्यक्त्व रूप	क्षायिक सम्यकत्व होता है।
	ज्ञानादि सात	१	१ सम्यक्त्व रूप	क्षायिक सम्यक्त्व होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	३	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य.	
	मन:पर्ययज्ञान	३	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य.	
	३ अज्ञान	२	१ सम्य. २ सम्य.	मिथ्यात्व एवं सासादन सम्यक्त्व रूप दो सम्यक्त्व का स्थान होता है।
	२ दर्शन	४	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	अवधिदर्शन	३	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य.	
	५ लब्धि	४	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	सम्यक्त्व	१	१ सम्यक्त्व रूप	स्वकीय सम्यक्त्व होता है।
	चारित्र	१	३ सम्यक्त्व रूप	
	संयमासंयम	१	३ सम्यक्त्व रूप	मनुष्यगति की अपेक्षा जानना चाहिए
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	३	१ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	तिर्यञ्चगति	३	१ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	पाँचवें गुण. में औपशमिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व की अपेक्षा २ सम्यक्त्व रूप स्थान होता है।
	मनुष्यगति	४	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	देवगति	३	१ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	अशुभ लेश्या के साथ तीन और छह सम्यक्त्व रूप स्थान नहीं होता है।
	४ कषाय	४	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	२ लिङ्ग	४	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	स्त्री लिङ्ग में ३ एवं ६ सम्यक्त्व रूप स्थान भाव वेद की अपेक्षा होता है।
	पुरुषलिङ्ग	४	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	मिथ्यादर्शन	१	१ सम्यक्त्व रूप	
	अज्ञान	४	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	असंयत	३	१ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	३ सम्यक्त्व रूप स्थान केवल चौथे गुणस्थान में होता है।
	असिद्धत्व	४	१ सम्य २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	३ अशुभ लेश्या	३	१ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	पीत-पद्म लेश्या	३	१ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	शुक्ल ले.	४	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	४	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	भव्यत्व	४	१ सम्य. २ सम्य. ३ सम्य. ६ सम्य.	
	अभव्यत्व	१	१ सम्यक्त्व रूप	मिथ्यात्व रूप १ सम्यक्त्व का स्थान होता है।

प्रश्न ३५ : कितने भावों में औपशमिक एवं क्षायिक रूप दो सम्यक्त्व का स्थान होता है?

उत्तर : २६ भावों में औपशमिक एवं क्षायिक रूप दो सम्यक्त्व का स्थान होता है-

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञान, ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ११ - १ गति (मनु.) ४ कषा. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट - सामान्य रूप से औपशमिक चारित्र में ही औपशमिक एवं क्षायिक रूप दो सम्यक्त्व का स्थान होता है, क्योंकि यह आठवें गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान तक होता है, लेकिन उपर्युक्त शेष २५ भावों में भी आठवें आदि गुणस्थानों की अपेक्षा दो सम्यक्त्व रूप स्थान बन जाता है।

प्रश्न ३६ : कितने भावों में तीन सम्यक्त्व रूप स्थान चार गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : २६ भावों में तीन सम्यक्त्व रूप स्थान चार गुणस्थानों में होता है-

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अव.) ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १३ - १ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ लेश्या (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३७ : लिङ्ग रूप भावों में तीन सम्यक्त्व का स्थान किस अपेक्षा पाया जाता है?

उत्तर: तीन लिङ्ग रूप भावों में से पुरुष लिङ्ग एवं नपुंसक लिङ्ग में द्रव्य एवं भाव दोनों अपेक्षा यह स्थान बन जाता है लेकिन स्त्री लिङ्ग में यह स्थान भाव लिङ्ग की अपेक्षा ही बनता है, क्योंकि द्रव्य स्त्री लिङ्ग में क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है। द्रव्य नपुंसक लिङ्ग में क्षायिक सम्यक्त्व नरकगति की अपेक्षा बन जाता है।

नोट - कोई आचार्य द्रव्य स्त्री वेदी के भी क्षायिक सम्यक्त्व मानते हैं, उनकी अपेक्षा स्त्रीलिंग रूप भाव में भी ३ सम्यक्त्व रूप स्थान बन सकता है।

प्रश्न ३८ : कितने भावों में केवल एक स्थान ही होता है?

उत्तर : १६ भावों में केवल एक स्थान ही होता है-

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, इसमें औपशमिक सम्यक्त्व रूप स्थान होता है। चारित्र, इसमें दो सम्यक्त्व रूप स्थान होता है।

क्षायिक के ९ - इनमें क्षायिक सम्यक्त्व रूप स्थान होता है।

क्षायोपशमिक के ३ - १ सम्यक्त्व - इसमें क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप स्थान
१ चारित्र - इसमें औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व रूप स्थान
१ संयमासंयम - इसमें औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व रूप स्थान

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन - इसमें मिथ्यात्व रूप एक सम्यक्त्व का स्थान

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व - इसमें मिथ्यात्व रूप एक सम्यक्त्व का स्थान

नोट - संयमासंयम में तिर्यञ्च गति की अपेक्षा २ सम्यक्त्व रूप स्थान बनता है, उसकी यहाँ विवक्षा नहीं की गई है।

प्रश्न ३९ : कितने भावों में चारों स्थान होते हैं -

उत्तर : २० भावों में चारों स्थान होते हैं -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ लब्धि

औदयिक के ११ - १ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४० : असंयत भाव में स्थानों की विवेचना किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर: असंयत भाव में स्थानों की विवेचना -

१ सम्यक्त्व रूप स्थान - पहले, दूसरे, तीसरे गुणस्थान में क्रमशः मिथ्यात्व, सासादन सम्यक्त्व एवं सम्यग्मिथ्यात्व

३ सम्यक्त्व रूप स्थान - चौथे गुणस्थान में औपशमिक, क्षायिक क्षायोपशमिक

६ सम्यक्त्व रूप स्थान - चारों गति की अपेक्षा

नोट - ६ सम्यक्त्वरूप स्थान किसी गुणस्थान की अपेक्षा नहीं बन सकता है, क्योंकि एक सम्यक्त्व के साथ दूसरा सम्यक्त्व नहीं होता है।

प्रश्न ४१ : गति रूप भावों में ६ सम्यक्त्व रूप स्थान किन-किन जीवों के बनता है?

उत्तर : गति रूप भावों में ६ सम्यक्त्व रूप स्थान -

नरकगति में - पहले नरक की अपेक्षा (दूसरे आदि नरकों में क्षायिक सम्यक्त्व नहीं है।)

तिर्यञ्चगति में - भोगभूमि की अपेक्षा (कर्मभूमि में क्षायिक सम्यक्त्व नहीं है।)

मनुष्यगति में - गर्भज मनुष्यों की अपेक्षा

देवगति में - सौधर्म स्वर्ग से नव ग्रैवेयक पर्यन्त

नोट - भवनत्रिक देव तथा देवांगनाओं में क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है। नव ग्रैवेयक के आगे सभी सम्यग्दृष्टि ही होते हैं। इसलिए उनके छह सम्यक्त्व रूप स्थान नहीं बनता है।

प्रश्न ४२ : कितने भावों में चार अपेक्षा से १ सम्यक्त्व रूप स्थान हो सकता है?

उत्तर: १३ भावों में चार अपेक्षा से १ सम्यक्त्व रूप स्थान हो सकता है -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ लब्धि

औदयिक के ४ - १ ग. (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

विशेष - क्षपक श्रेणी की अपेक्षा ४ कषाय एवं ३ लिङ्ग में भी एक क्षायिक सम्यक्त्व रूप तथा मिथ्यात्व, सासादन सम्यक्त्व एवं सम्यग्मिथ्यात्व की अपेक्षा १ सम्यक्त्व रूप स्थान होता है। अत: इनमें चार अपेक्षा १ सम्यक्त्व रूप स्थान बन जाता है।

प्रश्न ४३ : लेश्या रूप भावों में सम्यक्त्व स्थानों की विवेचना किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : लेश्या रूप भावों में सम्यक्त्व स्थानों की विवेचना -

कृष्ण - नील लेश्या में -

एक सम्यक्त्व रूप स्थान - पहले दूसरे तीसरे गुणस्थान में क्रमश: मिथ्यात्व सासादन एवं सम्यग्मिथ्यात्व

तीन सम्यक्त्व रूप स्थान - मनुष्यगति में चतुर्थ गुणस्थान की अपेक्षा

छह सम्यक्त्व रूप स्थान - मनुष्यगति की अपेक्षा

कापोत लेश्या में -

एक सम्यक्त्व रूप स्थान - पहले-दूसरे तीसरे गुणस्थान में क्रमश:.........।

तीन सम्यक्त्व रूप स्थान - नरकगति में प्रथम नरक एवं मनुष्यगति तथा तिर्यंच गति में चतुर्थ-गुणस्थान में

छह सम्यक्त्व रूप स्थान - नरकगति में प्रथम नरक एवं कर्मभूमिया मनुष्यों की अपेक्षा

पीत-पद्म लेश्या में -

एक सम्यक्त्व रूप स्थान - पहले दूसरे तीसरे गुणस्थानवर्ती तिर्यञ्च मनुष्य एवं देव की अपेक्षा

तीन सम्यक्त्व रूप स्थान - मनुष्यों में चौथे से सातवें गुणस्थान की अपेक्षा

तिर्यञ्चों में - चतुर्थ गुणस्थानवर्ती भोगभूमिया तिर्यञ्च की अपेक्षा

देवों में - सम्यग्दृष्टि वैमानिक देवों की अपेक्षा

छह सम्यक्त्व रूप स्थान - कर्मभूमिया मनुष्य तथा भोगभूमिया मनुष्य-तिर्यञ्च की अपेक्षा

शुक्ल लेश्या में -

१ सम्यक्त्व रूप स्थान - पहले दूसरे तीसरे गुणस्थानवर्ती मनुष्य-तिर्यञ्च देव तथा बारहवें-तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीव

दो सम्यक्त्व रूप स्थान - आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान तक। यहाँ औपशमिक एवं क्षायिक सम्यक्त्व होता है।

तीन सम्यक्त्व रूप स्थान - मनुष्य एवं भोगभूमिया सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च एवं वैमानिक देव

छह सम्यक्त्व रूप स्थान - मनुष्य एवं भोगभूमिया तिर्यञ्च एवं वैमानिक देव आहारकऋद्धिधारी, परिहारविशुद्धि संयमी आदि छठे-सातवें गुणस्थान में भी क्षायिक एवं क्षायोपशमिक रूप दो सम्यक्त्व का स्थान तीनों शुभ लेश्या में होता है।

प्रश्न ४४ : कापोत लेश्या वालों के तिर्यंचगति रूप भाव के साथ ३ सम्यक्त्व रूप स्थान किस अपेक्षा से बनता है?

उत्तर : कापोत लेश्या वालों के तिर्यंचगति रूप भाव के साथ ३ सम्यक्त्व रूप स्थान में अपेक्षा-

औपशमिक सम्यक्त्व - कर्मभूमिया तिर्यंचों के

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व - कर्मभूमिया तिर्यंचों के

(कृतकृत्य वेदक - भोगभूमिया निर्वृत्यपर्याप्तक तिर्यंचों के)

क्षायिक सम्यक्त्व - भोगभूमि की निर्वृत्यपर्याप्तक तिर्यंचों के

प्रश्न ४५ : कितने भावों में ६ सम्यक्त्व रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : २९ भावों में ६ सम्यक्त्व रूप स्थान भी होता है -

क्षायोपशमिक भाव के ७ - २ दर्शन, ५ लब्धि

औदयिक भाव के २० - मिथ्यादर्शन बिना

पारिणामिक भाव के २ - जीवत्व, भव्यत्व

भावों में सम्यक्त्व

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	औपशमिक	
	चारित्र	२	औप. क्षा.	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१	स्वकीय	क्षायिक सम्यक्त्व होता है।
	चारित्र	१	क्षायिक	
	ज्ञानादि सात	१	क्षायिक	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	३	औप. क्षा. क्षायो.	
	मन:पर्ययज्ञान	३	औप. क्षा. क्षायो.	द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा औपशमिक सम्यक्त्व होता है।
	३ अज्ञान	२	सासा. मिथ्या.	
	च. अच.	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	
	अवधि.	३	औप. क्षा. क्षायो.	
	५ लब्धि	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	
	सम्यक्त्व	१	स्वकीय	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व होता है।
	चारित्र	३	औप.क्षा.क्षायो.	
	संयमासंयम	३	औप.क्षा.क्षायो.	क्षायिक सम्यक्त्व मनुष्यों की अपेक्षा होता है।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	क्षायिक सम्यक्त्व पहले नरक की अपेक्षा होता है।
	तिर्यञ्चगति	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	क्षायिक सम्यक्त्व भोगभूमि की अपेक्षा होता है।
	मनुष्यगति	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	
	देवगति	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	
	४ कषाय	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	
	३ लिङ्ग	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	स्त्रीलिङ्ग में भाव वेद की अपेक्षा क्षायिक सम्यक्त्व होता है।
	मिथ्यादर्शन	१	मिथ्यात्व	
	अज्ञान	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	
	असंयत	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व चौथै गुण. की अपेक्षा होते हैं।
	असिद्धत्व	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	
	६ लेश्या	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	
	भव्यत्व	६	औप.क्षा.क्षायो.सासा.सम्य.मिथ्या.	चारों गति में छहों सम्यक्त्व होते हैं।
	अभव्यत्व	१	मिथ्यात्व	

प्रश्न ४६ : कितने भावों में सम्यक्त्व मार्गणा का केवल एक भेद होता है?

उत्तर : १३ भावों में सम्यक्त्व मार्गणा का केवल एक भेद होता है -

औपशमिक का १ सम्यक्त्व - औपशमिक सम्यक्त्व

क्षायिक के ९ - ज्ञानदर्शनादि - क्षायिक सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक का १ - सम्यक्त्व - क्षायोपशमिक सम्यक्त्व

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन - मिथ्यात्व

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व - मिथ्यात्व

सम्यक्त्व मार्गणा में मिथ्यात्व का भी ग्रहण है इसलिए मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव का भी ग्रहण किया जाता है।

प्रश्न ४७ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में एक सम्यक्त्व होता है?

उत्तर : केवल एक भाव के सभी उत्तर भेदों में एक सम्यक्त्व होता है -

क्षायिक भाव

इसमें केवल एक क्षायिक सम्यक्त्व होता है।

प्रश्न ४८ : कितने भावों में छहों सम्यक्त्व होते हैं?

उत्तर : २९ भावों में छहों सम्यक्त्व होते हैं -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्शन (च.अच.) ५ लब्धि

औदयिक के २० - मिथ्यादर्शन बिना

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४९ : कितने भावों में औपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता है?

उत्तर : १५ भावों में औपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता है -

क्षायिक भाव के ९ - ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायोपशमिक के ४ - ३ अज्ञान १ सम्यक्त्व

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न ५० : कितने भावों में सम्यक्त्व मार्गणा के दो भेद होते हैं?

उत्तर : चार भावों में सम्यक्त्व मार्गणा के दो भेद होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र, इसमें औपशमिक एवं क्षायिक सम्यक्त्व होता है।

क्षायोपशमिक के ३ - कुमति, कुश्रुत विभंग, इनमें सासादन एवं मिथ्यात्व ये दो सम्यक्त्व होते हैं।

प्रश्न ५१ : लेश्या रूप भावों में सम्यक्त्व मार्गणा के किस भेद में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : लेश्या रूप भावों में सम्यक्त्व मार्गणा में होने वाले गुणस्थान -

कृष्ण-नील-कापोत लेश्या में - औपशमिक क्षायिक क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में १ गुणस्थान - चौथा

पीत-पद्म लेश्या में - उपर्युक्त तीनों में ४ गुणस्थान - चौथे से सातवाँ

शुक्ल लेश्या में - औपशमिक सम्यक्त्व में ८ गुणस्थान - चौथे से ग्यारहवाँ

क्षायिक सम्यक्त्व में १० गुणस्थान - चौथे से तेरहवाँ

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में ४ गुणस्थान - चौथे से सातवाँ

छहों लेश्याओं में - सासादन सम्यक्त्व १ गुणस्थान - दूसरा

सम्यग्मिथ्यात्व १ गुणस्थान - तीसरा

मिथ्यात्व १ गुणस्थान - पहला

प्रश्न ५२ : अशुभ लेश्या रूप भावों के साथ क्षायिक सम्यक्त्व किस-किस गति में पाया जाता है?

उत्तर : अशुभ लेश्या रूप भावों के साथ क्षायिक सम्यक्त्व में गति -

कृष्ण-नील लेश्या में १ गति - मनुष्य (पर्याप्त)

कापोत लेश्या में ३ गति - नरकगति (पहले नरक की अपेक्षा)

तिर्यञ्चगति (भोगभूमि में जाते समय)

मनुष्यगति (भोगभूमि में जाते समय तथा कर्म भूमिया मनुष्यों की अपेक्षा)

प्रश्न ५३ : कितने भावों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में सम्यक्त्व मार्गणा के चार भेद होते हैं?

उत्तर : ४ भावों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में सम्यक्त्व मार्गणा के चार भेद होते हैं -

२ गति - तिर्यञ्च (भोगभूमि की अपेक्षा) मनुष्यगति

१ लिङ्ग - नपुंसक

१ लेश्या - कापोत

इनमें सम्यक्त्व मार्गणा के क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, सासादन सम्यक्त्व और मिथ्यात्व ये चार भेद पाये जाते हैं।

प्रश्न ५४ : कितने भावों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में एवं पर्याप्त अवस्था में सम्यक्त्व मार्गणा के एक जैसे भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : १९ भावों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में एवं पर्याप्त अवस्था में सम्यक्त्व मार्गणा के एक जैसे भेद पाये जाते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन दान.......

क्षायोपशमिक के ७ - ३ ज्ञा. (मन:पर्यय बिना) २ अज्ञा (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य.

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न ५५ : ५ लब्धि रूप भावों में सम्यक्त्व मार्गणा का कौन सा भेद किस गुणस्थान में पाया जाता है?

उत्तर : ५ लब्धि रूप भावों में सम्यक्त्व मार्गणा के भेद एवं उसमें होने वाले गुणस्थान -

प्रथमोपशम सम्यक्त्व - चौथे से सातवाँ गुणस्थान

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व - चौथे से ग्यारहवाँ गुणस्थान

क्षायिक सम्यक्त्व - चौथे से बारहवाँ गुणस्थान

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व - चौथे से सातवाँ गुणस्थान

सासादन सम्यक्त्व - दूसरा गुणस्थान

सम्यग्मिथ्यात्व - तीसरा गुणस्थान

मिथ्यात्व - पहला गुणस्थान

प्रश्न ५६ : संयमासंयम रूप भाव में होने वाले सम्यक्त्व किसके पाये जाते हैं?

उत्तर : संयमासंयम रूप भाव में होने वाले सम्यक्त्वों के स्वामी -

औपशमिक सम्यक्त्व - मनुष्य तथा तिर्यंचगति में गर्भजों के ही होता है।

क्षायिक सम्यक्त्व - मनुष्य

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व - मनुष्य-तिर्यंच

प्रश्न ५७ : कितने भावों में सम्यक्त्व मार्गणा का केवल मिथ्यात्व रूप भेद होता है?

उत्तर : केवल २ भावों में सम्यक्त्व मार्गणा का मात्र मिथ्यात्व रूप भेद होता है -

औदयिक का - १ मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का - १ अभव्यत्व

औपशमिक सम्यक्त्व

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	
२.	**क्षायिक**		-	
३.	**क्षायोपशमिक**	१४	४ ज्ञान-म.श्रु.अव.मनः	द्वितीयोपशमसम्यक्त्व की अपेक्षा मन:पर्ययज्ञान होता है।
			३ दर्शन-चक्षु.अच.अव.	
			५ लब्धि-दा.ला.भो.उप.वी.	
			१ - चारित्र	
			१ - संयमासंयम	तिर्यञ्च एवं मनुष्यगति, दोनों में होता है।
४.	**औदयिक**	२०	४ गति-नर.तिर्य.मनु.दे.	
			४ कषाय-क्रो.मा.मा.लो.	
			३ लिङ्ग-स्त्री. पुरु.नपुं.	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			६ लेश्या-कृ.नी.का.पी.प.शु.	सभी लेश्या तीन गति की अपेक्षा होती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व	
			भव्यत्व	

प्रश्न ५८ : औपशमिक सम्यक्त्व में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व में ३८ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायोपशमिक के १४ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ चारि. १ संय.

औदयिक के २० - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५९ : क्या दोनों ही औपशमिक सम्यक्त्वों में इतने ही भाव होते हैं?

उत्तर : नहीं, प्रथमोपशम सम्यक्त्व में इनमें से २ भाव नहीं होते हैं -

औपशमिक का - १ चारित्र, क्योंकि प्रथमोपशम सम्यग्दृष्टि श्रेणी नहीं चढ़ सकता है।

क्षायोपशमिक का - १ ज्ञान (मन:पर्यय)

तथा द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में भी २ भाव नहीं होते हैं -

औदयिक के - २ गति (नरक. ति.)

इसमें (द्वितीयोपशम) स्त्री एवं नपुंसक लिंग भाव वेद की अपेक्षा ही होते हैं, क्योंकि यह श्रेणी के सम्मुख मुनिराज के होता है।

इनके चौथे गुणस्थान की अपेक्षा छहों लेश्याएँ हो जायेंगी।

इनके देवगति निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था की अपेक्षा होती है।

अर्थात् प्रथमोपशम सम्यक्त्व एवं द्वितीयोपशम सम्यक्त्व दोनों में ३६-३६ भाव होते हैं।

प्रश्न ६० : औपशमिक सम्यग्दृष्टि के नवें गुणस्थान में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : औपशमिक सम्यग्दृष्टि के नवें गुणस्थान में २७ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञान, ३ दर्शन, ५ लब्धि

औदयिक के ११ - १ गति (म.) ४ कषाय, ३ लिंग, १ अज्ञान, १ असिद्धत्व १ ले. (शुक्ल.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

ये भाव नवें गुणस्थान की सवेद अवस्था में जानना चाहिए।

अवेद अवस्था में ३ वेद कम करने पर २४, क्रोध कषाय का अभाव होने पर २३, मान कषाय का अभाव होने पर २२ तथा माया कषाय का अभाव होने पर २१ भाव होते हैं।

प्रश्न ६१ : औपशमिक सम्यक्त्व के साथ केवल चौथा गुणस्थान कितनी गति रूप भाव में होता है?

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व के साथ केवल चौथा गुणस्थान दो गति रूप भाव में होता है- नरकगति, देवगति।

प्रश्न ६२ : औपशमिक सम्यक्त्व के साथ कितने भावों में चौथे से ग्यारहवाँ गुणस्थान होता है?

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व के साथ १८ भावों में चौथे से ग्यारहवाँ गुणस्थान होता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ४ - १ ग. (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ६३ : औपशमिक सम्यक्त्व में कितने भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व में चार भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

(१) औपशमिक (२) क्षायोपशमिक

(३) औदयिक (४) पारिणामिक

प्रश्न ६४ : औपशमिक सम्यक्त्व के साथ कितने भाव केवल चौथे गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व के साथ ६ भाव केवल चौथे गुणस्थान में होते हैं -

२ गति - नरक एवं देव

१ - असंयत

३ लेश्या - कृष्ण नील कापोत

प्रश्न ६५ : उपशम सम्यग्दृष्टि ७ प्राण वालों के कितनी गति रूप भाव होते हैं?

उत्तर : उपशम सम्यग्दृष्टि ७ प्राण वालों के केवल एक गति रूप भाव होता है। देवगति, क्योंकि देवगति की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ही उपशम सम्यक्त्व हो सकता है।

प्रश्न ६६ : क्या उपशम सम्यक्त्व की उत्पत्ति के समय भी छहों लेश्या रूप भाव होते हैं?

उत्तर : हाँ, उपशम सम्यक्त्व की उत्पत्ति के समय भी छहों लेश्या रूप भाव हो सकते हैं? सामान्य रूप से प्रथमोपशम सम्यक्त्व की उत्पत्ति के समय पीतादि शुभ लेश्याएँ ही होती हैं। लेकिन जहाँ अशुभ लेश्या ही होती हैं ऐसे नरकों में कृष्णादि अशुभ लेश्या में भी प्रथमोपशम सम्यक्त्व उत्पन्न होता है अर्थात् मनुष्य-तिर्यञ्चों में जब भी प्रथमोपशम सम्यक्त्व उत्पन्न होगा, पीतादि शुभ लेश्याएँ ही होगी। कहा भी है- प्रथमोपशम सम्यक्त्व चारों गति में से किसी भी गति वाला भव्य सैनी पर्याप्त, साकारोपयोगी, जागृत, शुभ लेश्या वाला..... द्वितीयोपशम सम्यक्त्व श्रेणी के सम्मुख क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि को होता है अत: यह भी शुभ लेश्या में ही होता है। **(गो.जी. ६५२)**

प्रश्न ६७ : औपशमिक सम्यक्त्व की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में २६ भाव होते हैं -

औपशमिक के १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १२ - १ ग. (देव) ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

इसमें एक गुणस्थान होता हैं - अविरत सम्यक्त्व इसमें २६ भाव ही होते हैं।

क्षायिक सम्यक्त्व

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	चारित्र	
२.	**क्षायिक**	९	ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग वीर्य सम्यक्त्व चारित्र	स्वकीय सम्यक्त्व होने से क्षायिक सम्यक्त्व को ग्रहण किया गया है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१४	४ ज्ञान - मति.श्रुत.अव.मनः	
			३ दर्शन - चक्षु. अच.अव.	चौथे से बारहवें गुणस्थान तक होते हैं।
			५ लब्धि - दा.ला.भो.उप.वी.	
			१ - चारित्र	
			१ - संयमासंयम	केवल मनुष्यों के ही होता है।
४.	**औदयिक**	२०	४ गति - नर.तिर्य.मनु.दे.	
			४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो.	
			३ लिङ्ग - स्त्री.पुरु. नपुं.	स्त्रीलिङ्ग भाव वेद की अपेक्षा होता है।
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	चौथे से चौदहवें गुणस्थान तक होता है।
			६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	अशुभ लेश्याएँ चौथे गुणस्थान में होती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न ६८ : क्षायिक सम्यक्त्व में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व में ४६ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन....

क्षायोपशमिक के १४ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ चारि. १ संय.

औदयिक के २० - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ६९ : क्षायिक सम्यक्त्व के साथ कितने क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व के साथ ४ क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं -

३ अज्ञान - कुमति. कुश्रुत. विभंग.

१ - सम्यक्त्व

नोट - एक सम्यक्त्व के साथ दूसरा सम्यक्त्व नहीं होता है।

प्रश्न ७० : क्षायिक सम्यक्त्व के साथ अज्ञान भाव कितने गुणस्थानों में पाया जाता है?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व के साथ अज्ञान भाव ९ गुणस्थानों में पाया जाता है - चौथे से बारहवें तक

प्रश्न ७१ : क्षायिक सम्यक्त्व के साथ नपुंसक वेद रूप भाव कितनी गतियों में पाया जाता है?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व के साथ नपुंसक वेद रूप भाव दो गतियों में पाया जाता है- नरकगति और मनुष्यगति

बद्धायुष्क क्षायिक सम्यग्दृष्टि यदि नरकगति में जाता है उसके वहाँ अन्य वेदों का अभाव होने से नपुंसक वेद ही होता है। भाव नपुंसक वेदी यदि क्षायिक सम्यक्त्व उत्पन्न करता है तो उसकी अपेक्षा मनुष्यों में नपुंसक वेद बन जाता है।

प्रश्न ७२ : क्षायिक सम्यग्दृष्टि के अशुभ लेश्या रूप भाव किस-किस गति में हो सकते हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यग्दृष्टि के अशुभ लेश्या रूप भाव तीन गतियों में हो सकते हैं -

कापोत लेश्या - नरकगति में पहले नरक की अपेक्षा - क्योंकि सम्यग्दृष्टि प्रथम नरक से आगे नहीं जाते हैं।

तिर्यञ्चगति में - भोगभूमि में जाते समय सम्यग्दृष्टि के कापोत लेश्या ही होती है।

मनुष्यगति में - सभी अवस्थाओं में (चौथे गुणस्थान की अपेक्षा) हो सकती है।

तथा कृष्ण एवं नील लेश्या केवल कर्मभूमिया पर्याप्त मनुष्यों के (चौथे गुणस्थान में) ही होती हैं।

प्रश्न ७३ : क्षायिक सम्यक्त्व के साथ कितने भाव केवल मनुष्यगति में होते हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व के साथ १६ भाव केवल मनुष्यगति में होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - ज्ञान दर्शनादि...

क्षायोपशमिक के ३ - १ ज्ञा. (मन:पर्यय) १ चारि. १ संय.

औदयिक के ४ - १ ग. (मनु.) १ लि. (स्त्री.) २ लेश्या (कृ.नी.)

नोट - स्त्री लिङ्ग भाव की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न ७४ : क्षायिक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ४० भाव होते हैं -

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन.......

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ चारि.

औदयिक के १७ - ४ ग. ४ क. २ लि. (पु. नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले. (कृ.नी.बिना)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ७५ : क्षायिक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३ गुणस्थान होते हैं -

(१) अविरत सम्यक्त्व (२) प्रमत्तसंयत (३) सयोगकेवली

इनमें भाव -

अविरत सम्यक्त्व में - ३१

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १७ - ४ ग. ४ क. २ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले. (कापोतादि)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रमत्त संयत में - २६

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ चारि.

औदयिक के ११ - १ ग. (म.) ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

सयोगकेवली जिन - १४

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन....

औदयिक के ३ - १ ग. (म.) १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**		-	
२.	**क्षायिक**		-	
३.	**क्षायोपशमिक**	१५	४ ज्ञान - म.श्रु. अ.मनः ३ दर्शन - च.अच. अव. ५ लब्धि - दा.ला.भो.उप.वी. १ - सम्यक्त्व १ - चारित्र १ - संयमासंयम	चारों गतियों में होता है।
४.	**औदयिक**	२०	४ गति - नर.तिर्य. मनु. देव. ४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो. ३ लिङ्ग - स्त्री.पुरु.नपुं. १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	पर्याप्त एवं अपर्याप्त दोनों अवस्था में होती है। स्त्रीलिङ्ग के साथ पर्याप्त अवस्था में ही होता है। अशुभ लेश्याएँ केवल चौथे गुणस्थान में ही होती हैं।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न ७६ : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में ३७ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के १५ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के २० - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ७७ : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में औपशमिक तथा क्षायिक भाव क्यों नहीं होते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में औपशमिक तथा क्षायिक भाव नहीं होने के कारण -

१) एक सम्यक्त्व के साथ दूसरा सम्यक्त्व नहीं होने से दोनों सम्यक्त्व नहीं होते।

२) औपशमिक तथा क्षायिक चारित्र आठवें गुणस्थान से तथा क्षायिक ज्ञानादि तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में होते हैं, और क्षायोपशमिक सम्यक्त्व चौथे गुणस्थान से सातवें गुणस्थान तक ही होता है इसलिए क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में ये भाव नहीं होते।

प्रश्न ७८ : क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि नपुंसक वेदी के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि नपुंसक वेदी के ३३ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अव.) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के १७ - ३ ग. (देव बिना) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

विशेष - छहों लेश्या तिर्यञ्च एवं मनुष्यों की अपेक्षा होती है।

प्रश्न ७९ : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में होने वाले कितने भाव चारों गुणस्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में होने वाले २७ भाव चारों गुणस्थानों में पाये जाते हैं-

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १३ - १ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ८० : क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि चक्षुदर्शनी के कितने क्षायिक भाव होते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि चक्षु दर्शनी के एक भी क्षायिक भाव नहीं होता है, क्योंकि इस सम्यक्त्व के साथ कोई क्षायिक भाव नहीं होता है। यद्यपि क्षायोपशमिक भावों के साथ क्षायिक सम्यक्त्व और क्षायिक चारित्र रूप भाव होते हैं लेकिन सम्यक्त्व के साथ एक भी भाव नहीं होता है।

प्रश्न ८१ : क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ३४ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के १९ - ४ ग. ४ क. २ लि. (पु.नपुं). १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

यहाँ क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि एवं कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि दोनों की अपेक्षा से कथन किया गया है।

प्रश्न ८२ : क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में नरक एवं तिर्यञ्च गति रूप भाव कैसे हो सकते हैं, क्योंकि सम्यग्दृष्टि तो दुर्गति में जाता ही नहीं है?

उत्तर : यह सत्य है कि सम्यग्दृष्टि दुर्गति में नहीं जाता है। क्षायिक सम्यग्दृष्टि बद्धायुष्क की अपेक्षा नरक एवं तिर्यञ्च गति में जाता है क्योंकि क्षायिक सम्यक्त्व कभी छूटता नहीं है। क्षायोपशमिक सम्यक्त्व होने के बाद छूट सकता है लेकिन कृतकृत्य वेदक रूप क्षायोपशमिक सम्यक्त्व कभी नहीं छूटता है, क्योंकि कृतकृत्य वेदक को नियम से क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त होता है। जब कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि का मरण हो जाता है तो वह पूर्व में बँधी हुई आयु के अनुसार चारों गतियों में जन्म ले सकता है इसी अपेक्षा क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में नरक एवं तिर्यञ्च गति रूप भाव बन जाते हैं।

इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में नपुंसक वेद रूप भाव भी नहीं होता है लेकिन नरकगति में पुरुष वेद का अभाव होने से अपवाद रूप नपुंसक वेद होता है। जहाँ पुरुष वेद होता वहाँ तो सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में पुरुषवेद रूप भाव ही होता है।

नोट - कृष्ण एवं नील लेश्या रूप भाव नरक से आने वाले सम्यग्दृष्टि के बन जाते हैं, क्योंकि नरक से आने वाले सम्यग्दृष्टि जीव अपनी पूर्व लेश्या को अन्तर्मुहूर्त्त तक नहीं छोड़ते हैं।

प्रश्न ८३ : इनके कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनके अर्थात् क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में दो गुणस्थान होते हैं -

(१) अविरत सम्यग्दृष्टि (२) प्रमत्तसंयत

इनके भाव

अविरत सम्यग्दृष्टि के ३३

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १९ - ४ ग. ४ क. २ लि. (पु.नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले. **(ध. २/ता.न. १२)**

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रमत्तसंयत के २६

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के ११ - १ ग. (म.) ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ८४ : कृतकृत्य वेदक किसे कहते हैं?

उत्तर : अनिवृत्तिकरण के अंतिम समय में सम्यक्त्व मोह की अंतिम फालि के द्रव्य को नीचे के निषेकों में क्षेपण करने वाला जीव अंतर्मुहूर्त काल तक कृतकरणीय कहलाता है। **(ल.सा. १४६)** क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त करने में करने योग्य कार्य कर चुका है, लेकिन अभी क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त नहीं हुआ है। उसे कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि कहते हैं।

प्रश्न ८५ : कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के ३५ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के १५ - ४ ज्ञान ३ दर्शन ५ लब्धि १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के १८ - ४ गति, ४ कषाय, ३ लिंग, १ अज्ञान, १ असं. १ असि. ४ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न ८६ : कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३१ भाव होते हैं -

क्षयोपशम के १२ - ३ ज्ञान ३ दर्शन ५ लब्धि १ सम्यक्त्व

औदयिक के १७ - ४ गति ४ कषाय २ लिंग १ अज्ञान १ असंयत १ असि. ४ लेश्या

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

इनके केवल चौथा गुणस्थान होता है इसमें ३१ भाव होते हैं।

प्रश्न ८७ : कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के चार गुणस्थान होते हैं -

अविरत सम्यक्त्व, संयमासंयम, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत।

इनमें भाव -

अविरत सम्यक्त्व में ३२ - क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
औदयिक के १८- ४ गति, ४ क., ३ लिंग, १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले.
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

संयमासंयम में २८ - क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञान, ३ दर्शन, ५ लब्धि १ सम्य. १ संय.
औदयिक के १३ - १ गति ४ कषा. ३ लिंग १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रमत्त संयत और अप्रमत्त संयत में २९	-	क्षायोपशमिक के १४-४ ज्ञान ३ दर्शन ५ लब्धि १ सम्य. १ चारित्र
औदयिक के १३	-	१ गति (मनु.) ४ कषा. ३ लिंग १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
		पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न ८८ : पीत लेश्या वाले कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के आस्रव के कितने प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : पीत लेश्या वाले कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के आस्रव के ४५ प्रत्यय होते हैं - १२ अविरति, २१ कषाय (४ अनंतानुबंधी बिना) १२ योग (औदा.मि. एवं आहा. द्विक बिना)

प्रश्न ८९ : कृतकृत्य वेदक के आहारक द्विक काययोग सम्बन्धी आस्रव के प्रत्यय क्यों नहीं होते हैं?

उत्तर : आहारकद्विक काययोग की उत्पत्ति तत्त्वों में शंका आदि कारणों से होती है। शंका का समाधान करने के लिए वह केवली-श्रुतकेवली के पादमूल में जाता है और क्षायिक सम्यक्त्व की उत्पत्ति भी केवली-श्रुतकेवली के पादमूल में ही होती है। वह केवली भगवान के चरणों में होगा तो उसे शंका आदि कोई विकल्प उत्पन्न नहीं हो सकता और शंका, तीर्थयात्रा आदि विकल्पों के बिना ये योग उत्पन्न नहीं हो सकते हैं। अत: कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि के आहारकद्विक काययोग सम्बन्धी आस्रव के प्रत्यय नहीं होते हैं।

क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि का पूरा कथन वेदक सम्यग्दृष्टि के समान जानना चाहिए मात्र निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था के भावों में अंतर है।

क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भाव - ३१

क्षायोपशम के १३ - ३ ज्ञान ३ दर्शन ५ लब्धि १ सम्य. १ चा.

औदयिक के - १६ - २ गति (देव, मनु.) ४ क. १ लिंग (पु.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में २ गुणस्थान होते हैं।

अविरत सम्यक्त्व और प्रमत्तसंयत

इनमें भाव - अविरत सम्यक्त्व - उपर्युक्त भावों में से क्षायो. चारित्र बिना ३० भाव होते हैं और प्रमत्त संयत गुणस्थान में देवगति, असंयत और ३ अशुभ लेश्या बिना २६ भाव होते हैं।

प्रश्न ९० : कृतकृत्य वेदक कब मरता है व कहाँ उत्पन्न होता है?

उत्तर : कृतकृत्य वेदक के काल के चार भाग किये गये हैं, चारों का काल एक-एक अंतर्मुहूर्त प्रमाण होता है। इसके प्रथम भाग में मरने वाला-देवगति में,

दूसरे भाग में मरने वाला - देव एवं मनुष्य गति में

तीसरे भाग में मरने वाला - देव, मनुष्य, तिर्यंचगति में

चौथे भाग में मरने वाला-देव, मनुष्य, तिर्यंच, नरकगति में

विशेष - प्रथम अंतर्मुहूर्त्त में मरने वाला देवगति में ही उत्पन्न क्यों होता है, इसका कारण बताते हुए कहा गया है कि इस काल के भीतर शेष गतियों में उत्पत्ति के कारणभूत लेश्या का परिवर्तन नहीं पाया जाता है। **(ज.ध.)**

सासादन सम्यक्त्व

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**		-	
२.	**क्षायिक**		-	
३.	**क्षायोपशमिक**	१०	३ अज्ञान - कुम. कुश्रु. विभंग. २ दर्शन - चक्षु. अच. ५ लब्धि - दा.ला.भो.उप.वी.	 अवधिदर्शन नहीं होता है।
४.	**औदयिक**	२०	४ गति - नर.तिर्य.म.दे. ४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो. ३ लिङ्ग - स्त्री पुरु. नपुं. १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	नारकियों के पर्याप्त अवस्था में ही होता है।
५.	पारिणामिक	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न ९१ : सासादन सम्यक्त्व में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सासादन सम्यक्त्व में ३२ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के २० - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञान १ असंयत १ असिद्धत्व ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ९२ : सासादन सम्यग्दृष्टि ४ प्राण वालों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सासादन सम्यग्दृष्टि ४ प्राण वालों के २२ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के १२ - १ ग. (ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

ये भाव सासादन सम्यग्दृष्टि द्वीन्द्रिय जीवों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में होते हैं।

प्रश्न ९३ : सासादन सम्यग्दृष्टि के होने वाले कितने भाव चारों गति के जीवों के होते हैं?

उत्तर : सासादन सम्यग्दृष्टि के होने वाले २२ भाव चारों गति के जीवों के होते हैं -

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के १० - ४ क. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ९४ : सासादन सम्यग्दृष्टि नपुंसक वेदी के कितने भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : सासादन सम्यग्दृष्टि नपुंसक वेदी के २९ भाव पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १७ - ३ ग. (देव बिना) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ९५ : सासादन सम्यग्दृष्टि वैक्रियिकमिश्र काययोगी के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सासादन सम्यग्दृष्टि वैक्रियिकमिश्र काययोगी के २७ भाव होते हैं-

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. (कुम. कुश्रु.) २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १६ - १ ग. (दे.) ४ क. २ लि. (स्त्री.पुरु.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट - इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में विभंगज्ञान एवं नरकगति रूप भाव नहीं होने से ऊपर दिये गये ३२ भावों में से ३० भाव होते हैं।

इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी दूसरा गुणस्थान ही होता है।

प्रश्न ९६ : कौनसे सासादन सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी शुभ लेश्या होती हैं?

उत्तर : जो सासादन सम्यग्दृष्टि मनुष्य-तिर्यञ्च मरणकर वैमानिक देवों में उत्पन्न होते हैं उनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी शुभ लेश्याएँ ही होती हैं, क्योंकि वैमानिक देवों के सदा शुभ लेश्याएँ ही होती हैं।

नोट - सम्यग्मिथ्यात्व में भी इसी प्रकार से कथन करना चाहिए। इसमें -

१) तीन-ज्ञान रूप भाव भी नहीं होते तथा अज्ञान रूप भाव भी नहीं होते हैं अपितु मिश्र रूप अर्थात् मिश्रमतिज्ञान, मिश्रश्रुतज्ञान तथा मिश्र अवधिज्ञान होता है।

२) इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था नहीं होती है, क्योंकि इस गुणस्थान में मरण नहीं होता है।

३) इसमें तीसरा गुणस्थान ही होता है।

विशेष - मिश्रमति आदि ज्ञानों को जात्यन्तर ज्ञान कहते हैं। जात्यन्तररूप कारण से उत्पन्न हुए तत्सम्बन्धी ज्ञान को जात्यन्तर ज्ञान कहते हैं। **(ध.१/३६६)**

मिथ्यात्व

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	-	-	-
२.	**क्षायिक**	-	-	-
३.	**क्षायोपशमिक**	१०	३ अज्ञान - कुम.कुश्रु.विभं.	विभंगज्ञान पर्याप्त अवस्था में ही होता है।
			२ दर्श. - चक्षु. अच.	
			५ ल. - दा. ला.भो.उप.वी.	
४.	**औदयिक**	२१	४ गति. - न.ति.म.दे.	
			४ कषाय. - क्रो.मा.मा.लो.	चारों गति में होती हैं।
			३ लिङ्ग - स्त्री.पुरु.नपुं.	
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान, १ असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			६ ले. - कृ.नी.का.पी.प.शु.	अशुभलेश्या चारों गति की अपेक्षा होती हैं।
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	पहले गुणस्थान में ही होता है।

प्रश्न ९७ : मिथ्यात्व में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : मिथ्यात्व में ३४ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ९८ : मिथ्यात्व के साथ पद्‌म लेश्या रूप भाव कितने योगों में पाया जाता है?

उत्तर : मिथ्यात्व के साथ पद्‌म लेश्या रूप भाव १२ योगों में पाया जाता है -

४ मनोयोग - सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग, अनुभयमनोयोग।

४ वचनयोग - सत्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, उभयवचनयोग, अनुभयवचनयोग।

४ काययोग - औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग

वैक्रियिकद्विक एवं कार्मण काययोग देवों की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न ९९ : मिथ्यात्व में होने वाले कितने भाव चारों गतियों में पाये जाते हैं?

उत्तर : मिथ्यात्व में होने वाले २४ भाव चारों गतियों में पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न १०० : मिथ्यात्व में होने वाले कितने भाव सभी मिथ्यादृष्टियों के होते हैं?

उत्तर : मिथ्यात्व में होने वाले १७ भाव सभी मिथ्यादृष्टियों के होते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के ८ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि.

पारिणामिक का १ - जीवत्व

(१) देवगति में भवनत्रिक की अपेक्षा अशुभ लेश्या बन जाती है, लेकिन सभी मिथ्यादृष्टि देवों के नहीं होती है इसलिए इनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

विशेष - एक समय में एक जीव के १ ज्ञान (कुम.कुश्रु.), एक कषाय तथा एक ही लेश्या हो सकती है।

प्रश्न १०१ : मिथ्यात्व में होने वाले कितने भाव केवल पर्याप्त अवस्था में ही पाये जाते हैं?

उत्तर : मिथ्यात्व में होने वाला केवल एक भाव पर्याप्त अवस्था में ही पाया जाता है - **विभंगज्ञान**

विशेष - इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में विभंगज्ञान नहीं होने से ३३ भाव होते हैं। इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी मिथ्यात्व गुणस्थान ही होता है।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न १०२ : सम्यक्त्व मार्गणा के भेदों में ज्ञान रूप भावों का विवरण किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा के भेदों में ज्ञान रूप भावों का विवरण -

१. औपशमिक सम्यक्त्व में ४ ज्ञान - मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मन:पर्ययज्ञान

२. क्षायिक सम्यक्त्व में ५ ज्ञान - मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मन:पर्ययज्ञान केवलज्ञान

३. क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में ४ ज्ञान - मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मन:पर्ययज्ञान

४. सासादन सम्यक्त्व में ३ अज्ञान - कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, विभंगज्ञान

५. सम्यग्मिथ्यात्व में ३ मिश्रज्ञान - मिश्रमतिज्ञान, मिश्रश्रुतज्ञान मिश्रविभंगज्ञान

६. मिथ्यात्व में - ३ अज्ञान - कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, विभंगज्ञान

नोट - सासादन सम्यक्त्व आदि में ज्ञान भाव नहीं पाये जाते हैं लेकिन ज्ञान मार्गणा में होने वाले ३ अज्ञान पाये जाते हैं।

प्रश्न १०३ : सम्यक्त्व मार्गणा में संयम रूप भावों का कथन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा में संयम रूप भाव -

औपशमिक सम्यक्त्व में ४	- औपशमिक चारित्र, क्षायोपशमिक चारित्र, संयमासंयम, असंयत
क्षायिक सम्यक्त्व में ५	- औपशमिक चारित्र, क्षायिक चारित्र, क्षायोपशमिक चारित्र, संयमासंयम, असंयत
क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में ३	- क्षायोपशमिक चारित्र, संयमासंयम, असंयत
सासादन सम्यक्त्व में १	- असंयत
सम्यग्मिथ्यात्व में १	- असंयत
मिथ्यात्व में १	- असंयत

नोट - यहाँ संयम मार्गणा की अपेक्षा कथन नहीं है इसलिए परिहारविशुद्धि आदि संयमों का ग्रहण नहीं किया है। यहाँ तो चारित्रमोहनीय कर्म की अपेक्षा होने वाले भावों का ग्रहण किया गया है।

प्रश्न १०४ : जिन भावों में केवल एक सम्यक्त्व रूप स्थान होता है उनमें कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

उत्तर : जिन भावों में केवल एक सम्यक्त्व रूप स्थान होता है उनमें क्षायोपशमिक भाव -

क्र.	**भाव**	**सम्यक्त्वरूपस्थान**	**क्षायोपशमिकभाव**	**विवरण**
१.	औपशमिक सम्यक्त्व	औपशमिक सम्यक्त्व रूप स्थान	१४ भाव	४ ज्ञान - म. श्रु. अ. मनः. ३ दर्शन - च. अच. अव. ५ लब्धि - दा. ला. भो. उप. वी. १ - चारित्र १ - संयमासंयम
२.	क्षायिक सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व रूप स्थान	१४ भाव	४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ चारि. १ संय.
३.	क्षायिक चारित्र	क्षायिक सम्यक्त्व रूप स्थान	१२ भाव	४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
४.	क्षायिकज्ञान आदि सात	क्षायिक सम्यक्त्व रूप स्थान	नहीं होते हैं	------------
५.	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप स्थान	१५ भाव	४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि. १ संयमा.
६.	मिथ्यादर्शन	मिथ्यात्व रूप स्थान	१०	३ अज्ञान-कुमति कुश्रुत विभंग. २ दर्शन - चक्षु-अचक्षु. ५ लब्धि - दा. ला. भो. उप. वीर्य.
७.	अभव्यत्व	मिथ्यात्व रूप स्थान	१० भाव	३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

प्रश्न १०५ : सम्यक्त्व मार्गणा के कितने भेदों में अभव्यत्व भाव नहीं होता है?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा के ५ भेदों में अभव्यत्व भाव नहीं होता है -

(१) औपशमिक सम्यक्त्व (२) क्षायिक सम्यक्त्व (३) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व (४) सासादन सम्यक्त्व (५) सम्यग्मिथ्यात्व

प्रश्न १०६ : सम्यक्त्व मार्गणा के कितने भेदों में तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा के चार भेदों में तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं -

(१) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व (२) सासादन सम्यक्त्व

(३) सम्यग्मिथ्यात्व (४) मिथ्यात्व

इनमें क्षायोपशमिक, औदयिक एवं पारिणामिक, इन तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं।

प्रश्न १०७ : कितने सम्यक्त्वों में क्षायिक एवं क्षायोपशमिक दोनों लब्धि रूप भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : केवल एक सम्यक्त्व में क्षायिक एवं क्षायोपशमिक दोनों लब्धि रूप भाव पाये जाते हैं - क्षायिक सम्यक्त्व में।

प्रश्न १०८ : सम्यक्त्व मार्गणा के जो भेद कर्मोदय से होते हैं उनमें कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा का केवल एक भेद कर्मोदय से होता है उसमें १० क्षायोपशमिक भाव होते हैं -

मिथ्यात्व - ३ अज्ञान - कुमति. कुश्रुत. विभंग

२ दर्शन - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन

५ लब्धि - दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

प्रश्न १०९ : कितने भाव केवल क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं?

उत्तर : ९ भाव केवल क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं -

क्षायिक सम्यक्त्व, क्षा. चारित्र, क्षा. ज्ञान, क्षा. दर्शन, क्षा. दान, क्षा. लाभ, क्षा. भोग, क्षा. उपभोग, क्षा. वीर्य।

प्रश्न ११० : कितने भाव क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में हो सकते हैं, लेकिन क्षायिक सम्यक्त्व में नहीं?

उत्तर : मात्र एक भाव क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में हो सकता है, लेकिन क्षायिक सम्यक्त्व में नहीं; क्षायोपशमिक का - १ सम्यक्त्व

प्रश्न १११ : जिन भावों में ६ सम्यक्त्व होते हैं उनमें किस-किस भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : जिन भावों में ६ सम्यक्त्व होते हैं उनमें भावों के सभी उत्तर भेद -

क्र.	भाव	मूल भाव	विवरण	विशेष
१.	चक्षु-अचक्षुदर्शन	३	औप. औद. पारि.	स्वकीय दर्शन होने से क्षायोपशमिक भाव के सभी उत्तर भेद नहीं होते हैं।
२.	५ लब्धि	४	औप. क्षायो. औद. पारि.	
३.	नरकादि तीन गति	१	पारिणामिक	
४.	मनुष्यगति	४	औप. क्षा. क्षायो. पारि.	
५.	४ कषाय	३	औप. क्षायो. पारि.	
६.	स्त्री-नपुंसकलिङ्ग	२	औप. पारि.	क्षायोपशमिक भावों में से मन:पर्ययज्ञान नहीं होने से यहाँ ग्रहण नहीं किया है।
७.	पुरुषलिङ्ग	३	औप. क्षायो. पारि.	
८.	अज्ञान	४	औप. क्षायो. औद. पारि.	
९.	असंयत	२	औद. पारि.	
१०.	असिद्धत्व	५	औप. क्षा. क्षायो. औद. पारि.	
११.	३ अशुभ लेश्या	१	पारिणामिक	स्वकीय लेश्या होने से औदयिक भाव का ग्रहण नहीं किया है।
१२.	पीत-पद्म लेश्या	२	क्षायो. पारि.	
१३.	शुक्ल लेश्या	४	औप. क्षा. क्षायो. पारि.	
१४.	जीवत्व	५	औप. क्षा. क्षायो. औद. पारि.	
१५.	भव्यत्व	४	औप. क्षा. क्षायो. औद.	अभव्यत्व भाव नहीं होने से पारिणामिक भाव को ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न ११२ : कितने भाव सम्यक्त्व मार्गणा के दो भेदों में होते हैं?

उत्तर : ४ भाव सम्यक्त्व मार्गणा के दो भेदों में होते हैं -

औपशमिक का १ चारित्र

क्षायोपशमिक के ३ अज्ञान (कुमति. कुश्रुत. विभंग.)

प्रश्न ११३ : कितने भाव मिथ्यात्व में भी होते हैं और क्षायिक सम्यक्त्व में भी?

उत्तर : २९ भाव मिथ्यात्व में भी होते हैं और क्षायिक सम्यक्त्व में भी -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्शन (चक्षु. अचक्षु.) ५ लब्धि

औदयिक के २० - मिथ्यादर्शन बिना

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **क्षायिक सम्यक्त्व में कितने भावों के उत्तर भेद होते हैं?**

(अ) ४ (ब) ५

(स) ३ (द) २

(ii) **सम्यक्त्व मार्गणा के कितने भेदों में औदयिक भाव के २० भेद होते हैं?**

(अ) ५ (ब) ६

(स) ४ (द) २

(iii) **औपशमिक सम्यक्त्व में कितने क्षायिक भाव होते हैं?**

(अ) २ (ब) १

(स) ० (द) कोई नहीं

(iv) **क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में कितने पारिणामिक भाव होते हैं?**

(अ) ३ (ब) २

(स) १ (द) कोई नहीं

(v) **सासादन सम्यक्त्व में कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?**

(अ) ४ (ब) २

(स) ३ (द) १०

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) सासादन सम्यक्त्व में कितने अशुभ लेश्या रूप भाव होते हैं?

(ii) औपशमिक चारित्र रूप भाव में कितने सम्यक्त्व हो सकते हैं?

(iii) भव्यत्व भाव में सम्यक्त्व मार्गणा के कितने स्थान होते हैं?

(iv) ३ अज्ञान रूप भावों में सम्यक्त्व मार्गणा के कितने भेद होते हैं?

(v) क्षायिक सम्यक्त्व में कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) मिथ्यात्व में पारिणामिक भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं

(ii) सम्यग्मिथ्यात्व देवगति रूप भाव में भी पाया जाता है।

(iii) औदयिक अज्ञान में सम्यक्त्व मार्गणा के सभी भेद होते हैं।

(iv) क्षायोपशमिक लब्धि में तीन सम्यक्त्व रूप स्थान नहीं होता है।

(v) क्षायिक सम्यक्त्व केवल मनुष्यगति रूप भाव में ही पाया जाता है।

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) क्षायिक चारित्र में .... क्षायोपशमिक चारित्र में .... तथा संयमासंयम में .... सम्यक्त्व होते हैं।

(ii) औपशमिक सम्यक्त्व में .... क्षायो. .... क्षायिक तथा .... पारिणामिक भाव होते हैं।

(iii) क्षायिक सम्यक्त्व में .... गति रूप .... लेश्या रूप तथा .... क्षायिक ज्ञान रूप भाव होता है।

(iv) सासादन सम्यक्त्व में .... औपशमिक .... क्षायिक एवं .... क्षायो. ज्ञान रूप भाव होते हैं।

(v) सम्यक्त्व मार्गणा का .... भेद .... कर्म के उदय से होता है।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		ब
(i)	निर्वृत्यपर्याप्तक में सासादन सम्यक्त्व	-	मिथ्यात्व
(ii)	३२ भाव	-	९ क्षायिक लब्धि
(iii)	मिथ्यात्व	-	सासादन सम्यक्त्व
(iv)	२ सम्यक्त्व रूप स्थान	-	क्षायिक सम्यक्त्व
(v)	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	-	१९ औदयिक भाव
(vi)	२१ औदयिक भाव	-	३ पारिणामिक भाव
(vii)	१ औपशमिक भाव	-	८ वें से ग्यारहवाँ गुणस्थान
(viii)	क्षायिकसम्यक्त्व	-	१५ क्षायोपशमिक भाव

- उत्तरमाला -

१. (i) ब (ii) अ (iii) स (iv) ब (v) द

२. (i) ३ (ii) २ (iii) ४ (iv) २ (v) १४

३. (i) हाँ (ii) हाँ (iii) हाँ (iv) ना (v) ना

४. (i) १, ३, ३ (ii) १४, ०, २ (iii) ४, ६, १ (iv) ०, ०, ० (v) १, मोहनीय

५. (i) १९ औदयिक भाव (ii) सासादन सम्यक्त्व
(iii) ३ पारिणामिक भाव (iv) ८ वें से ११ वाँ गुणस्थान
(v) १५ क्षायोपशमिक भाव (vi) मिथ्यात्व (vii) क्षायिकसम्यक्त्व
(viii) ९ क्षायिकलब्धि

संज्ञी मार्गणा

प्रश्न १ : संज्ञी मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : संज्ञी आदि भेदों में जीवों की खोज करना संज्ञी मार्गणा है।

प्रश्न २ : संज्ञी मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : संज्ञी मार्गणा के अनुवाद से संज्ञी और असंज्ञी जीव होते हैं। **(ध.१/४१०)** संज्ञी तथा असंज्ञी विकल्प रहित स्थान भी होता है। **(ध.२/६५६)** संज्ञी होते हैं असंज्ञी होते हैं तथा १३वें और १४वें गुण. की अपेक्षा संज्ञी-असंज्ञी विकल्परहित भी जीव होते हैं। **(ध.२/८२५-३६)**

संज्ञी मार्गणा दो प्रकार की होती है-

(१) संज्ञी (२) असंज्ञी **(ध.१/४१०)**

(१) सैनी (२) असैनी **(रा.वा. ९/७)**

प्रश्न ३ : संज्ञी जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जीव मन के अवलम्बन से शिक्षा, क्रिया, उपदेश और आलाप को ग्रहण करता है उसे संज्ञी कहते हैं। **(ध.१/१५३)** जो जीव यह विचार करता है कि मेरे इस प्रकार के कार्य करने पर इस प्रकार के कार्य की निष्पत्ति होगी, वह संज्ञी है। **(पं.सं. १७५)**

जो भली प्रकार जानता है उसको संज्ञ अर्थात् मन कहते हैं, वह मन जिसके पाया जाता है उसको संज्ञी कहते हैं। **(ध.१/१५३)** अथवा नोइन्द्रिय कर्म के क्षयोपशम से तज्जन्य ज्ञान को संज्ञा कहते हैं, वह जिसके हो उसको संज्ञी कहते हैं। **(गो.जी. ६६०)**

जो कार्य करने से पूर्व कार्य और अकार्य का, तत्त्व और अतत्त्व का विचार करता है और दूसरों के द्वारा दी गयी शिक्षाओं को सीखता भी है और नाम लेने पर आ जाता है वह समनस्क है। **(ध.१/४१०)**

प्रश्न ४ : असंज्ञी जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जीव शिक्षा आदि को ग्रहण नहीं कर सकता है उसको असंज्ञी कहते हैं। **(ध.१/१५३)**

जो भली प्रकार जानता है, उसको संज्ञा अर्थात् मन कहते हैं। (यह मन जिसके नहीं होता है वे असंज्ञी हैं) **(ध.१/१५३)**

गाय-साँप आदि कुछ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव भी हैं जो जालन्धर और मरु प्रदेश आदि स्थानों में देखे जाते हैं। **(वृ.द्र.सं.१२ टीका** प्रभाचंद्र आचार्य)

प्रश्न ५ : यदि एकेन्द्रियादि जीव अमनस्क हैं तो उनके पञ्चेन्द्रिय विषयों में प्रवृत्ति कैसे हो सकती है क्योंकि मनपूर्वक ही इन्द्रिय-विषयों में प्रवृत्ति होती है?

उत्तर : सभी जीवों के स्वभाव से ही आहार भय मैथुन एवं परिग्रह रूप चारों संज्ञाएँ पाई जाती हैं, ऐसा अनुभव में भी आता है। जैसे वृक्षों में पानी का सिंचन करने से वृद्धि होती है, कुल्हाड़ी आदि लेकर आते हुए को देखकर वृक्ष कम्पित होता है। (कई वनस्पतियाँ) स्त्री के पैर के ताड़न से पुष्पित होती हैं, वृक्ष की जड़ें धन के खजाने की तरफ बढ़ती हैं, उनकी ये सब प्रवृत्तियाँ मन के व्यापार से रहित ही होती हैं। उनके सर्वथा मन का अभाव नहीं है किन्तु उनके भी शक्ति रूप से मन पाया ही जाता है। पूर्वोपार्जित मतिज्ञानावरण कर्म के उदय से व्यक्ति रूप से मन नहीं होता है। यदि उनके सर्वथा मन का अभाव माना जावे तो अगले भव में मनुष्य-पर्याय प्राप्त करने पर भी असंज्ञी ही रहेंगे। ऐसा मान लेने पर सर्वज्ञ भगवान के वचनों में विरोध आता है, क्योंकि आगम में देव-मनुष्य एवं नारकियों को संज्ञी कहा गया है। तिर्यञ्च संज्ञी-असंज्ञी दोनों होते हैं इसलिए कर्मोदय के कारण व्यवहारनय अपेक्षा उनके असंज्ञीपना है, परमार्थ से नहीं। **(वृ.द्र.सं. १२ टी प्रभाचंद्र)**

प्रश्न ६ : संसारी जीव संज्ञी भी हैं और असंज्ञी भी, यह कैसे सिद्ध होता है?

उत्तर : कोई संसारी जीव संज्ञी हैं, क्योंकि शिक्षा, क्रिया, आलापग्रहण आदि ज्ञान रूप कार्य की सिद्धि अन्यथा नहीं हो सकती। संसार में कोई जीव असंज्ञी है क्योंकि शिक्षा आदि को ग्रहण नहीं करने वाले ज्ञान के होने स्वरूप कार्य की सिद्धि अन्यथा नहीं हो सकती है। दूसरी बात, इष्ट विशेष से भी दो प्रकार के जीवों की सिद्धि हो जाती है। प्रकरण में इष्ट पद से प्रकृष्ट वचन आगम लिया जाता है। सर्वज्ञ की आम्नाय से चले आये आगम का विशेष ही संज्ञी और असंज्ञी जीवों को कहने वाला शास्त्र है। **(श्लो. ५/११३-१४)**

कर्म विवक्षा

क्र.	संज्ञीमार्गणा	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	संज्ञी	क्षयोपशम	मिथ्यात्व	औदयिक	चारों गति में होता है।
			सासादन सम्यक्त्व	पारिणामिक	चारों गति में होता है।
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	चारों गति में होता है।
			अविरत सम्यक्त्व	औप.क्षा.क्षायो.	चारों गति में होता है।
			संयमासंयम	क्षायोपशमिक	
			प्रमत्त संयत (विरत)	क्षायोपशमिक	निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी होता है।
			अप्रमत्तसंयत (विरत)	क्षायोपशमिक	
			अपूर्वकरण	औप. क्षा.	
			अनिवृत्तिकरण	औप. क्षा.	
			सूक्ष्मसाम्पराय	औप. क्षा.	क्षपकश्रेणी की अपेक्षा क्षायिक भाव होता है।
			उपशान्त कषायवीतराग.	औपशमिक	
			क्षीणकषायवीतराग.	क्षायिक	
२.	असंज्ञी	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	केवल तिर्यञ्चगति में ही होते हैं।
			सासादनसम्यक्त्व	पारिणामिक	
	तदुभय व्यपदेश रहित (संज्ञी-असंज्ञी से रहित)	क्षय	सयोग केवली जिन	क्षायिक	
			अयोग केवली जिन	क्षायिक	

प्रश्न ७ : संज्ञी जीवों के कितने गुणस्थान औपशमिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : संज्ञी जीवों के केवल एक गुणस्थान औपशमिक भाव रूप ही होता है - उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ

विशेष - उपशम श्रेणी चढ़ने वालों के आठवाँ, नवाँ, दसवाँ गुणस्थान भी औपशमिक भाव रूप ही होता है। औपशमिक सम्यग्दृष्टि के चौथा गुणस्थान भी औपशमिक भाव रूप ही होता है, क्योंकि एक समय में एक सम्यक्त्व ही होता है।

प्रश्न ८ : क्या कोई ऐसे संज्ञी जीव हैं जिनका चौथा गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही हो?

उत्तर : हाँ, सम्मूर्च्छन जन्म वाले संज्ञी तिर्यञ्चों का चौथा गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होता है, क्योंकि उनके औपशमिक सम्यक्त्व उत्पन्न नहीं होता है और क्षायिक सम्यग्दृष्टि सम्मूर्च्छनों में उत्पन्न नहीं होते हैं।

विशेष - क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि के भी चौथा गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होता है।

प्रश्न ९ : किन जीवों के सभी गुणस्थान एक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : संज्ञी-असंज्ञित्व से रहित जीवों के सभी गुणस्थान केवल एक भाव रूप होते हैं- इसमें तेरहवाँ-चौदहवाँ गुणस्थान होता है। दोनों एक क्षायिक भाव रूप ही होते हैं।

प्रश्न १० : संज्ञित्व को क्षायोपशमिक भाव क्यों कहा है?

उत्तर : नोइन्द्रियावरण कर्म के सर्वघाती स्पर्धकों के अपनी जाति विशेष के प्रभाव से अनन्तगुणी हानिरूप घात के द्वारा देशघातित्व को प्राप्त होकर उपशान्त हुए पुन: उन्हीं के उदय से संज्ञित्व उत्पन्न होना देखा जाता है, इसलिए संज्ञित्व को क्षायोपशमिक कहा गया है। **(ध.७/१११)**

प्रश्न ११ : असंज्ञित्व को औदयिक भाव रूप क्यों कहा गया है?

उत्तर : नोइन्द्रियावरण कर्म के सर्वघाति स्पर्धकों के उदय से असंज्ञित्व भाव उत्पन्न होता है। नो इन्द्रियावरण कर्म असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि कर्म के अन्वय और व्यतिरेक के द्वारा कारण के अस्तित्व की सिद्धि हो जाती है। **(ध.७/११२)**

इसी प्रकार ज्ञानावरण कर्म के निर्मूल क्षय से जो नोइन्द्रियनिरपेक्ष लक्षणवाला जीवपरिणाम उत्पन्न होता है उसी को क्षायिक लब्धि कहते हैं। उसी क्षायिक लब्धि से जीव न संज्ञी न असंज्ञी होता है। **(ध.७/११२)**

स्थान विवरण

प्रश्न १२ : संज्ञी मार्गणा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : संज्ञी मार्गणा में ५ स्थान होते हैं -

(१) संज्ञित्व रूप (२) संज्ञी-असंज्ञित्व रूप (३) तदुभयव्यपदेशरहित रूप

(४) संज्ञित्व एवं तदुभय व्यपदेश रहित रूप (५) संज्ञित्व-असंज्ञित्व एवं तदुभयव्यपदेश-रहित रूप।

संज्ञित्व एवं तदुभयव्यपदेशरहितस्थान - जहाँ संज्ञी जीव भी पाये जाते हैं और तदुभयव्यपदेशरहित स्थान वाले केवली भगवान भी पाये जाते हैं उसे संज्ञित्व एवं तदुभयव्यपदेश रहित स्थान कहते हैं।

संज्ञित्व-असंज्ञित्व एवं तदुभयव्यपदेशरहितस्थान - जहाँ संज्ञी जीव भी पाये जाते हैं, असंज्ञी जीव भी पाये जाते हैं तथा तदुभयव्यपदेश रहित केवली भगवान भी पाये जाते हैं उसे संज्ञित्व-असंज्ञित्व एवं तदुभय व्यपदेशरहित स्थान कहते हैं।

नोट - १) असंज्ञित्व रूप स्थान भी बन सकता है लेकिन ऐसा कोई भाव नहीं है तथा न ही ऐसा कोई गुणस्थान या गति है जो केवल असंज्ञी जीवों के ही होती हो। इसलिए उसका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

२) पाँचवें स्थान में भी कोई गति और गुणस्थान नहीं है लेकिन वहाँ भाव पाये जाते हैं इसलिए उसका यहाँ ग्रहण किया गया है।

प्रश्न १३ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव

संज्ञित्व रूप स्थान में १४ -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायोपशमिक के ९ - ४ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभंग.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के ३ - २ गति (नर. दे.) १ लेश्या (पद्म)

संज्ञी - असंज्ञित्व रूप स्थान में २५ -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के १५ - १ ग. (तिर्यं.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. ४ ले. (कृ.नी.का.पी.)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

तदुभयव्यपदेश रहित स्थान में ७ -

क्षायिक के ७ - ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

संज्ञित्व एवं तदुभयव्यपदेश रहित स्थान में ४ -

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

औदयिक के २ - १ ग. (मनु.) १ ले. (शु.)

संज्ञी-असंज्ञित्व एवं तदुभय व्यपदेश रहित स्थान में ३ -

औदयिक का १ - असिद्धत्व

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न १४ : इन स्थानों के स्वामी कौन है?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

१) संज्ञित्व रूप स्थान के स्वामी - नरक एवं देव गति के तथा तीसरे गुणस्थान से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

२) संज्ञित्व-असंज्ञित्व रूप स्थान के - तिर्यञ्चगति एवं पहले-दूसरे गुणस्थानवर्ती जीव

३) तदुभयव्यपदेश रहित रूप स्थान के - तेरहवें-चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव एवं सिद्ध भगवान

४) संज्ञित्व एवं तदुभयव्यपदेश रहित स्थान के - मनुष्यगति के जीव

५) संज्ञित्व-असंज्ञित्व एवं तदुभयव्यपदेश रहित स्थान के - असिद्धत्व आदि भाव वाले

प्रश्न १५ : किस स्थान में किस भाव के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : केवल एक संज्ञित्व रूप स्थान में एक भाव के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं - औपशमिक भाव के।

प्रश्न १६ : कितने स्थानों में केवल एक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : मात्र एक स्थान में केवल एक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

(१) तदुभयव्यपदेश रहित स्थान में - क्षायिक भाव के

प्रश्न १७ : किस-किस स्थान में होने वाले कौन-कौन से भाव केवल मनुष्यों के ही होते हैं?

उत्तर : उन स्थानों के भाव जो केवल मनुष्यों के ही होते हैं -

संज्ञित्व स्थान में होने वाले ३ भाव -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के २ - मन:पर्ययज्ञान चारित्र

तदुभयव्यपदेश रहित स्थान में होने वाले ७ भाव

क्षायिक के - ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

संज्ञित्व और तदुभयव्यपदेश रहित स्थान में होने वाले २ भाव - क्षायिक-चारित्र, मनुष्यगति

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा के स्थानों में होने वाले केवल १२ भाव मनुष्यों के ही होते हैं।

प्रश्न १८ : कितने स्थानों में भगवान के होने वाले भाव भी पाये जाते हैं?

उत्तर : २ स्थानों में भगवान के होने वाले भाव भी पाये जाते हैं -

१) संज्ञी और तदुभयव्यपदेश रहित स्थान में - क्षायिक के २-सम्यक्त्व चारित्र, औदयिक के २ - १ ग. १ ले. (शुक्ल)

२) संज्ञी-असंज्ञित्व एवं तदुभयव्यपदेश रहित स्थान में - औदयिक का १-असिद्धत्व पारिणामिक के २-जीवत्व, भव्यत्व

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	स्थान	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	संज्ञित्व रूप	
	चारित्र	१	संज्ञित्व रूप	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	३	संज्ञि. तदुभय. संज्ञितदु.	तदुभयव्यपदेश रहित स्थान तेरहवें चौदहवें गुण. में होता है।
	चारित्र	३	संज्ञि. तदुभय. संज्ञितदु.	
	ज्ञानादि सात	१	तदुभयव्यपदेशरहित	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	४ ज्ञान	१	संज्ञित्व रूप	
	कुमति-कुश्रुत.	२	संज्ञित्व. संज्ञी-असंज्ञि.	संज्ञित्व रूप स्थान तीन गति की अपेक्षा जानना चाहिए
	विभंगज्ञान	१	संज्ञित्व रूप	
	चक्षुदर्शन	२	संज्ञित्व. संज्ञी-असंज्ञि.	
	अचक्षुदर्शन	२	संज्ञित्व. संज्ञी-असंज्ञि.	
	अवधिदर्शन	१	संज्ञित्व रूप	
	५ लब्धि	२	संज्ञित्व. संज्ञी-असंज्ञि.	संज्ञी-असंज्ञित्व रूप स्थान तिर्यञ्चगति की अपेक्षा जानना चाहिए
	सम्यक्त्व	१	संज्ञित्व रूप	
	चारित्र	१	संज्ञित्व रूप	
	संयमासंयम	१	संज्ञित्व रूप	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	संज्ञित्व रूप	
	तिर्यञ्चगति	२	संज्ञित्व. संज्ञी-असंज्ञि.	
	मनुष्यगति	३	संज्ञित्व. तदुभय. संज्ञितदु.	
	देवगति	१	संज्ञित्व रूप	
	कषाय	२	संज्ञित्व. संज्ञी-असंज्ञि.	संज्ञी-असंज्ञित्व रूप स्थान पहले-दूसरे गुण. वाले तिर्यञ्च की अपेक्षा होता है।
	३ लिङ्ग	२	संज्ञित्व. संज्ञी-असंज्ञि.	
	मिथ्यादर्शन	२	संज्ञित्व. संज्ञी-असंज्ञि.	
	अज्ञान	२	संज्ञित्व. संज्ञी-असंज्ञि.	
	असंयत	२	संज्ञित्व. संज्ञी-असंज्ञि.	
	असिद्धत्व	५	संज्ञि. संज्ञीअसं. तदु. संज्ञीतदु. संज्ञी-असंज्ञि.	
	३ अशुभ लेश्या	२	संज्ञि. संज्ञी-असंज्ञि.	
	पीत लेश्या	२	संज्ञित्व रूप संज्ञी-असंज्ञि.	
	पद्म लेश्या	१	संज्ञित्व रूप	
	शुक्ल लेश्या	३	संज्ञी. तदुभय. संज्ञीतदु.	तदुभयव्यपदेश रहित स्थान तेरहवें गुण. में होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	५	संज्ञी. संज्ञीअसं. तदु. संज्ञीतदु. संज्ञी-असंज्ञि.	
	भव्यत्व	५	संज्ञी. संज्ञीअसं. तदु. संज्ञीतदु. संज्ञी-असंज्ञि.	
	अभव्यत्व	२	संज्ञित्व, संज्ञी-असंज्ञि.	

प्रश्न १९ : क्या कोई ऐसा भाव है जिसके सभी उत्तर भेद तदुभयव्यपदेश रहित स्थान में ही होते हैं?

उत्तर : नहीं, ऐसा कोई भाव नहीं है जिसके सभी उत्तर भेद तदुभयव्यपदेश रहित स्थान में ही हों। यद्यपि क्षायिक भाव के सभी भेद तदुभयव्यपदेशरहित स्थान में पाये जाते हैं लेकिन क्षायिक सम्यक्त्व एवं क्षायिक चारित्र संज्ञित्व और संज्ञित्व तथा तदुभयव्यपदेश रहित स्थान भी पाये जाते हैं।

प्रश्न २० : कितने भावों में संज्ञित्व-असंज्ञित्व रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : २५ भावों में संज्ञित्व-असंज्ञित्व रूप स्थान भी होता है -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञान (कुम. कुश्रु.) २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के १५ - १ ग. (ति.) ४ कषा. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. ४ ले. (कृ.नी.का.पी.)

पारिणामिक के १ - अभव्यत्व

प्रश्न २१ : कितने भावों में तदुभयव्यपदेश रहित स्थान नहीं पाया जाता है?

उत्तर : ३९ भावों में तदुभयव्यपदेश रहित स्थान नहीं पाया जाता है।

औपशमिक के २, क्षायोपशमिक के १८

औदयिक के १८ - ३ ग. (मनु. बिना) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. ५ ले. (शुक्ल बिना)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न २२ : कितने भावों में केवल संज्ञित्व रूप स्थान ही पाया जाता है?

उत्तर : १४ भावों में केवल संज्ञित्व रूप स्थान ही पाया जाता है -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के ९ - ४ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ चारि. १ संय.

औदयिक के ३ - २ ग. (नर.दे.) १ लेश्या (पद्म)

प्रश्न २३ : कितने भावों में पाँचों स्थान पाये जाते हैं?

उत्तर : ३ भावों में पाँचों स्थान पाये जाते हैं -

औदयिक का १ - असिद्धत्व

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २४ : कितने भावों के संज्ञी असंज्ञित्व रूपस्थान में एकेन्द्रिय जीव भी पाये जाते हैं?

उत्तर : २४ भावों के संज्ञी असंज्ञित्व रूप स्थान में एकेन्द्रिय जीव भी पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ -

२ अज्ञान - कुम. कुश्रु. १ दर्शन - अचक्षुदर्शन

५ लब्धि - दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

औदयिक के १३ -

१ गति - तिर्यञ्चगति ४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो.

१ लिङ्ग - नपुंसक १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ.)

पारिणामिक का ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

प्रश्न २५ : कितने भावों में होने वाले स्थानों का संज्ञित्व १२ गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : १३ भावों में होने वाले स्थानों का संज्ञित्व १२ गुणस्थानों में होता है -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्शन (च.अच.) ५ लब्धि

औदयिक के ४ - १ ग. (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २६ : किस भाव का कौनसा स्थान दो गुणस्थानों की अपेक्षा बनता है?

उत्तर : उन भावों का वह स्थान जो दो गुणस्थानों की अपेक्षा बनता है -

क्षायिक के ९ - तदुभयव्यपदेश रहित स्थान - तेरहवें-चौदहवें गुणस्थानों की अपेक्षा

क्षायोपशमिक के ११ - कुमति, कुश्रुतज्ञान रूप भाव में

संज्ञित्व रूप और संज्ञी-असंज्ञित्व रूप स्थान

पहले-दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा

विभंगज्ञान - संज्ञित्व रूप स्थान - पहले-दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा

चक्षु-अचक्षुदर्शन और ५ लब्धि रूप भाव में

संज्ञी-असंज्ञित्व रूप स्थान -

पहले-दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा

चारित्र - संज्ञित्व रूप स्थान-छठे-सातवें गुणस्थान की अपेक्षा

औदयिक के १६ - १ गति (तिर्यं.) ४ कषाय, ३ लिंग, अज्ञान, असं., ४ लेश्या (पद्म. शुक्ल बिना)

इनमें संज्ञी - असंज्ञित्व रूप स्थान - पहले-दूसरे गुण. की अपेक्षा

असिद्धत्व में - संज्ञी-असंज्ञित्व रूप स्थान - पहले दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा

तदुभय व्यपदेश रहित स्थान - तेरहवें-चौदहवें गुण. की अपेक्षा

मनुष्य गति में - तदुभय व्यपदेश रहित स्थान-तेरहवें-चौदहवें गुण. की अपेक्षा

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व-संज्ञी-असंज्ञित्व रूप स्थान-पहले-दूसरे गुण. की अपेक्षा

तदुभय व्यपदेश रहित स्थान-तेरहवें-चौदहवें गुण. की अपेक्षा

भावों में संज्ञी/असंज्ञी

क्र.	भाव	संख्या	संज्ञी/असंज्ञी	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	संज्ञी	
	चारित्र	१	संज्ञी	केवल मनुष्यगति में ही होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१	संज्ञी	तदुभयव्यपदेश रहित जीव भी होते हैं।
	चारित्र	१	संज्ञी	
	ज्ञानादि सात	१	तदुभयव्यपदेशरहित	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	४ ज्ञान	१	संज्ञी	
	कुम. कुश्रु.	२	संज्ञी असंज्ञी	
	विभंगज्ञान	१	संज्ञी	
	चक्षुदर्शन	२	संज्ञी असंज्ञी	चतुरिन्द्रिय तथा असंज्ञीपञ्चेन्द्रिय की अपेक्षा असंज्ञी होते हैं।
	अचक्षुदर्शन	२	संज्ञी असंज्ञी	
	अवधिदर्शन	१	संज्ञी	
	५ लब्धि	२	संज्ञी असंज्ञी	
	सम्यक्त्व	१	संज्ञी	
	चारित्र	१	संज्ञी	
	संयमासंयम	१	संज्ञी	सम्मूर्च्छन तिर्यञ्चों के भी होता है।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	संज्ञी	
	तिर्यञ्चगति	२	संज्ञी असंज्ञी	
	मनुष्यगति	१	संज्ञी	तदुभयव्यपदेश रहित भी होते हैं।
	देवगति	१	संज्ञी	
	४ कषाय	२	संज्ञी असंज्ञी	
	३ लिङ्ग	२	संज्ञी असंज्ञी	
	मिथ्यादर्शन	२	संज्ञी असंज्ञी	
	अज्ञान	२	संज्ञी असंज्ञी	
	असंयत	२	संज्ञी असंज्ञी	
	असिद्धत्व	२	संज्ञी असंज्ञी	तदुभयव्यपदेश रहित भी होते हैं।
	४ लेश्या	२	संज्ञी असंज्ञी	पीत लेश्या में असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय की अपेक्षा असंज्ञी होते हैं।
	पद्म लेश्या	१	संज्ञी	
	शुक्ल लेश्या	१	संज्ञी	तेरहवें गुण. में तदुभयव्यपदेश रहित जीव भी होते हैं।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	२	संज्ञी असंज्ञी	तीसरे गुण. से बारहवें गुण. तक संज्ञी ही होते हैं।
	भव्यत्व	२	संज्ञी असंज्ञी	
	अभव्यत्व	२	संज्ञी असंज्ञी	

प्रश्न २७ : कितने भावों में संज्ञी जीव ही होते हैं?

उत्तर : १५ भावों में संज्ञी जीव ही होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के ८ - ४ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के ५ - ३ ग. (तिर्य. बिना) २ लेश्या (पद्म शुक्ल)

प्रश्न २८ : कितने भावों में जीव संज्ञी और असंज्ञी दोनों नहीं होते हैं?

उत्तर : ७ भावों में जीव संज्ञी और असंज्ञी दोनों नहीं होते हैं -

(१) क्षायिक ज्ञान (२) क्षायिक दर्शन (३) क्षायिक दान (४) क्षायिक लाभ (५) क्षायिक भोग (६) क्षायिक उपभोग (७) क्षायिक वीर्य

प्रश्न २९ : कितने भाव संज्ञी जीवों के भी पाये जाते हैं?

उत्तर : २८ भाव संज्ञी जीवों के भी पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १६ - १ ग. (तिर्य.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले. (कृ.नी.का.पी.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३० : कितने भाव वाले औदारिकमिश्र काययोगी संज्ञी ही होते हैं?

उत्तर : ६ भाव वाले औदारिकमिश्र काययोगी संज्ञी ही होते हैं -

क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अ.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य.

औदयिक का १ - पद्मलेश्या

क्षायिक सम्यक्त्व, मनुष्यगति तथा शुक्ल लेश्या में तदुभयव्यपदेश रहित जीव भी होते हैं। इसलिए इनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न ३१ : असंयत भाव वाले संज्ञी जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : असंयत भाव वाले संज्ञी जीवों के ४१ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३२ : असिद्धत्व भाव वाले असंज्ञी जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : असिद्धत्व भाव वाले असंज्ञी जीवों के २८ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १६ - १ ग. (तिर्य.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३३ : कितने भावों में संज्ञी जीव चार गुणस्थानों की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : ९ भावों में संज्ञी जीव चार गुणस्थानों की अपेक्षा होते हैं -

औपशमिक का १ चारित्र - आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान तक

क्षायिक का १ चारित्र - आठवाँ, नवाँ, दसवाँ, बारहवाँ गुणस्थान

क्षायोपशमिक का १ सम्यक्त्व - चौथे से सातवें गुणस्थान तक

औदयिक के ६ - नरक, देवगति - पहले से चौथे गुणस्थान तक

असंयत - पहले से चौथे गुणस्थान तक

३ अशुभ लेश्या - पहले से चौथे गुणस्थान तक

नोट - प्रथमोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में भी चौथे से सातवें तक चार गुणस्थान होते हैं।

प्रश्न ३४ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में संज्ञी-असंज्ञी दोनों होते हैं?

उत्तर : मात्र एक भाव के सभी उत्तर भेदों में संज्ञी-असंज्ञी दोनों होते हैं - पारिणामिक

प्रश्न ३५ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में केवल संज्ञी जीव ही होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव के सभी उत्तर भेदों में संज्ञी जीव ही होते हैं - औपशमिक।

नोट - जो आचार्य तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में भी संज्ञी मानते हैं, उनकी अपेक्षा क्षायिक भाव में भी केवल संज्ञी जीव ही होते हैं।

संज्ञी

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	संज्ञी-असंज्ञी से रहित जीव भी होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**	१८	४ ज्ञा. - म. श्रु. अव. मन: ३ अज्ञान - कुम. कुश्रु. विभं. ३ दर्शन - च. अच. अव. ५ लब्धि - दा. ला. भो. उप. वीर्य १ - सम्यक्त्व १ - चारित्र १ - संयमासंयम	 अवधिदर्शन संज्ञी जीवों के ही होता है। केवल मनुष्यों के ही होता है।
४.	**औदयिक**	२१	४ गति - न. ति. म. दे. ४ कषाय - क्रो. मा. मा. लो. ३ लिङ्ग - स्त्री. पुरु. नपु. १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	 मनुष्य-तिर्यञ्च की अपेक्षा तीनों लिङ्ग होते हैं। अशुभ लेश्या चारों गति की अपेक्षा होती है।
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	 पहले गुणस्थान में भी होता है।

प्रश्न ३६ : संज्ञी जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : संज्ञी जीवों के ४६ भाव होते हैं -

इनके केवल क्षायिक ज्ञानादि सात भाव नहीं होते है।

प्रश्न ३७ : कितने भाव सभी संज्ञी जीवों के पाये जाते हैं?

उत्तर : १० भाव सभी संज्ञी जीवों के पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के २ - १ अज्ञा. १ असि.

पारिणामिक के १ - जीवत्व

नोट - १) ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान में कषाय रूप भाव नहीं हैं, इसलिए उनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

२) ज्ञान और अज्ञान में से, चार गति में से, तीन लिङ्ग में से, छह लेश्या में से तथा मिथ्यादर्शन और सम्यक्त्व में से तथा भव्यत्व अभव्यत्व में से कोई एक तो अवश्य रहेगा। लेकिन कोई एक निश्चित नहीं होने से ग्रहण नहीं किया गया है।

प्रश्न ३८ : संज्ञी मिथ्यादृष्टि के कितने भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : संज्ञी मिथ्यादृष्टि के ३४ भाव पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३९ : उन सम्यग्दृष्टि संज्ञी जीवों के कितने भाव होते हैं जिनके ७ प्राण होते हैं?

उत्तर : उन सम्यग्दृष्टि संज्ञी जीवों के ३६ भाव होते हैं जिनके ७ प्राण होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व (देवगति की अपेक्षा)

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के १९ - ४ ग. ४ क. २ लि. (पु.न.) १ अज्ञा......

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४० : उन संज्ञी जीवों के कम-से-कम कितने भाव होते हैं जिनके परिग्रह संज्ञा होती है?

उत्तर : उन संज्ञी जीवों के कम से कम २० भाव होते हैं जिनके परिग्रह संज्ञा होती है -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के ९ - २ ज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ५ - १ ग. (मनु.) १ कषा. (लो.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट - क्षपक श्रेणी की अपेक्षा औपशमिक भाव नहीं होने से १८ भाव ही होते हैं।

प्रश्न ४१ : उन संज्ञी जीवों के कितने भाव होते हैं जिनके चार लाख जातियाँ होती हैं?

उत्तर : उन संज्ञी जीवों के ४१ भाव होते हैं जिनके चार लाख जातियाँ होती हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १६ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संय. (तिर्य. की अपेक्षा)

औदयिक के २० - ३ ग. (मनु. बिना) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट - यदि तिर्यंचगति को ग्रहण नहीं करेंगे तो संयमासंयम और तिर्यंचगति रूप भाव कम हो जायेंगे, क्योंकि तिर्यंचों में मात्र पंचेन्द्रिय तिर्यंच की ४ लाख जातियाँ होती हैं।

प्रश्न ४२ : संज्ञी निर्वृत्यपर्याप्तक जीवों के कितने भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : संज्ञी निर्वृत्यपर्याप्तक जीवों के ४१ भाव पाये जाते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व (देवों की अपेक्षा)

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अ.) २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ४३ : संज्ञी जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : संज्ञी जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ४ गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादनसम्यक्त्व

(३) अविरतसम्यक्त्व (४) प्रमत्तसंयत

इनमें भाव -

मिथ्यात्वगुणस्थान में ३३ भाव -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के २१ - ४ गति.....

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

उपर्युक्त भावों में से नरकगति, मिथ्यादर्शन तथा अभव्यत्व इन तीनों भावों को कम कर देने से दूसरे गुणस्थान में ३० भाव होते हैं।

अविरतसम्यक्त्व गुणस्थान में ३५ भाव -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
औदयिक के १९ - स्त्रीलिङ्ग एवं मिथ्यादर्शन बिना
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रमत्तसंयत गुणस्थान में २७ भाव -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. (मनः.बिना) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.
औदयिक के ११ - १ ग. (मनु.) ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४४ : संज्ञी जीवों के कितने भाव नौ गुणस्थान की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : संज्ञी जीवों के १० भाव नौ गुणस्थान की अपेक्षा होते हैं -

क्षायोपशमिक के ४ - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और अवधिदर्शन इनमें चौथे से बारहवें गुणस्थानतक

औदयिक के ६ - ३ कषाय (क्रोध, मान, माया)
३ लिंग (स्त्री, पुरुष, नपुंसक)
इनमें पहले से नवें गुणस्थान तक

असंज्ञी

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	-	-	-
२.	**क्षायिक**	-	-	-
३.	**क्षायोपशमिक**	९	२ अज्ञान - कुम. कुश्रु. २ दर्शन - चक्षु. अच. ५ लब्धि - दा.ला.भो.उप.वीर्य.	विभंगज्ञान नहीं होता है।
४.	**औदयिक**	१६	१ गति - तिर्यञ्च ४ कषाय - क्रो.मा.मा. लो. ३ लिङ्ग - स्त्री. पुरु. नपुं. १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ४ लेश्या - कृ.नी.का.पी.	भोगभूमि में असंज्ञी तिर्यञ्च नहीं होते हैं। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक नपुंसकलिङ्ग वाले ही होते हैं। पीत लेश्या असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय के ही होती है।
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	

प्रश्न ४५ : असंज्ञी जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : असंज्ञी जीवों के २८ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के १६ - १ ग. (ति.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट - सम्मूर्च्छन असंज्ञी जीवों के स्त्री एवं पुरुष लिङ्ग रूप भाव कम कर देने पर २६ भाव होते हैं।

प्रश्न ४६ : असंज्ञी जीवों के कम-से-कम कितने भाव होते हैं?

उत्तर : असंज्ञी जीवों के कम-से-कम २२ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के १२ - १ ग. (ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

यदि एक जीव के एक समय की अपेक्षा कथन करेंगे तो -

क्षायोपशमिक के ७ - १ अज्ञा. १ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ७ - १ ग. १ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

ये भाव एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय जीव की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में जब दूसरा गुणस्थान होता है तब होते हैं।

प्रश्न ४७ : असंज्ञी जीवों के मोहनीय कर्म के उदय से होने वाले कितने भाव होते हैं?

उत्तर : असंज्ञी जीवों के मोहनीय कर्म के उदय से होने वाले ९ भाव होते हैं -

४ कषाय - क्रोध, मान, माया, लोभ

३ लिङ्ग - स्त्रीलिङ्ग, पुरुषलिङ्ग नपुंसक लिङ्ग

१ - मिथ्यादर्शन

१ - असंयत

असिद्धत्व भाव में भी मोहनीय कर्म का उदय रहता है।

प्रश्न ४८ : असंज्ञी जीवों के किस कर्म के क्षयोपशम से होने वाले भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : असंज्ञी जीवों के केवल मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से होने वाला एक भी भाव नहीं होता है, क्योंकि मोहनीय कर्म का क्षयोपशम संज्ञी (सम्यग्दृष्टि) के ही होता है।

नोट - १) असंज्ञी जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी पर्याप्त अवस्था के समान २८ भाव ही होते हैं।

२) इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में दो गुणस्थान होते हैं। पहले गुणस्थान में उपर्युक्त २८ भाव तथा दूसरे गुणस्थान में मिथ्यादर्शन तथा अभव्यत्व कम कर देने पर २६ भाव होते हैं।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ४९ : कितने भाव संज्ञी जीवों के पाये जाते हैं लेकिन असंज्ञी जीवों के नहीं हो सकते हैं?

उत्तर : १८ भाव संज्ञी जीवों के पाये जाते हैं लेकिन असंज्ञी के नहीं हो सकते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के ९ - ४ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य.
१ चा. १ संय.

औदयिक के ५ - ३ ग (न.म.दे.) २ लेश्या (प.शु.)

प्रश्न ५० : कितने भाव संज्ञी असंज्ञी दोनों जीवों के होते हैं?

उत्तर : २८ भाव संज्ञी असंज्ञी दोनों जीवों के होते हैं -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १६ - १ ग. (तिर्य.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं.
१ असि. ४ ले. (कृ.नी.का.पी.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ५१ : संज्ञी मार्गणा में अंतराय कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भावों का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : संज्ञी मार्गणा में अंतराय कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भावों का विवेचन -

संज्ञी जीवों के ५ - क्षायोपशमिक दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

असंज्ञी जीवों के ५ - क्षायोपशमिक दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

तदुभयव्यपदेश रहित जीवों के ५ - क्षायिक दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

प्रश्न ५२ : किस कर्म के क्षायोपशमिक से होने वाले कौन से भाव संज्ञी-असंज्ञी दोनों के पाये जाते हैं?

उत्तर : ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होने वाले २ भाव - कुमति, कुश्रुत ज्ञान

दर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से होने वाले २ भाव - चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन

अंतराय कर्म के क्षयोपशम से होने वाले ५ भाव - दान लब्धि, लाभ लब्धि, भोग लब्धि, उपभोग लब्धि, वीर्य लब्धि

प्रश्न ५३ : कितने भाव वाले संज्ञी जीव तदुभयव्यपदेश रहित बन सकते है?

उत्तर : सामान्य से संज्ञी जीवों के होने वाले अभव्यत्व भाव को छोड़कर शेष सभी भाव वाले तदुभयव्यपदेश रहित बन सकते हैं, लेकिन केवल एक भाव ऐसा है, जिसको प्राप्त कर लेने पर उसी भव में नियम से तदुभयव्यपदेश रहित बन जाते हैं। वह क्षायिक चारित्र रूप भाव है।

विशेष - १) विपुलमति मन: पर्ययज्ञान, सर्वावधिज्ञान, परमावधिज्ञान प्राप्त करने पर भी जीव तदुभय-व्यपदेश रहित स्थान प्राप्त कर लेते हैं, क्योंकि ये भाव भी तद्भवमोक्षगामी को ही प्राप्त होते हैं।

२) क्षायिक ज्ञान आदि भाव तदुभयव्यपदेश रहित जीवों के ही होते हैं।

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **संज्ञी मार्गणा में कितने स्थान होते हैं?**

(अ) २ (ब) ५
(स) ३ (द) ४

(ii) **संज्ञी जीवों के कितने भाव नहीं होते हैं?**

(अ) १२ (ब) २
(स) ९ (द) ७

(iii) **कितने भाव असंज्ञी जीवों के ही होते हैं?**

(अ) २१ (ब) ५
(स) ११ (द) कोई नहीं

(iv) **किस स्थान में औपशमिक भाव के पूरे उत्तर भेद होते हैं?**

(अ) संज्ञित्व रूप (ब) संज्ञी-असंज्ञित्व रूप
(स) तदुभयव्यपदेश रहित (द) कोई नहीं

(v) **संज्ञी तिर्यञ्चों के कितने औदयिक भाव होते हैं?**

(अ) १८ (ब) २१
(स) १५ (द) १२

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) सम्मूर्च्छन संज्ञी जीवों के कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?
(ii) चतुर्थ गुणस्थानवर्ती गर्भज संज्ञी जीवों के कितनी गति रूप भाव होते हैं?
(iii) संज्ञी जीवों के कितने औदयिक अज्ञान हो सकते हैं?
(iv) संज्ञी जीवों के कितने भाव सभी गुणस्थानों में होते हैं?
(v) कितने औदयिक भाव संज्ञी-असंज्ञी दोनों के होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) संज्ञी जीवों के तीन भावों के सभी उत्तर भेद होते हैं।
(ii) कुमति-कुश्रुत ज्ञान में असंज्ञी जीव ही होते हैं।
(iii) संज्ञी जीवों के क्षायिक भाव भी पाया जाता है।
(iv) संज्ञित्व रूप स्थान में दो पारिणामिक भाव होते हैं।
(v) संज्ञी जीवों के औपशमिक सम्यक्त्वरूप भाव ८ गुणस्थानों में होता है।

४. **रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए-**

(i) संज्ञी जीवों के .... पारिणामिक .... ज्ञान रूप एवं .... क्षायिक भाव होते हैं।

(ii) तदुभयव्यपदेशरहित जीवों के .... औदयिक .... क्षायोपशमिक तथा .... ज्ञान रूप भाव होता है।

(iii) असंज्ञी जीवों के .... औपशमिक .... क्षायिक .... क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं।

(iv) .... क्षायो. .... औदयिक तथा .... पारि. भाव संज्ञी-असंज्ञी दोनों के होते हैं।

(v) संज्ञी मार्गणा में .... जीव .... जीव तथा .... रहित जीव भी होते हैं।

५. **सही जोड़ी बनाइये -**

	अ		ब
(i)	संज्ञी	-	२५ भाव
(ii)	असंज्ञी	-	४६ भाव
(iii)	तिर्यञ्चगति रूपभाव	-	२ गुणस्थान
(iv)	मन:पर्ययज्ञान	-	५ स्थान
(v)	मनुष्यगति रूप भाव	-	संज्ञी छठे से बारहवाँ गुणस्थान
(vi)	संज्ञी-असंज्ञी रूप स्थान	-	२८ भाव
(vii)	संज्ञी मार्गणा	-	२ स्थान
(viii)	तदुभयव्यपदेशरहित	-	३ स्थान

- उत्तरमाला -

१. (i) ब (ii) द (iii) द (iv) अ (v) अ

२. (i) १३ (ii) २ (iii) १ (iv) १३ (v) १६

३. (i) ना (ii) ना (iii) हाँ (iv) ना (v) हाँ

४. (i) ३, ४, २ (ii) ३,० क्षायिक (iii) २, ९, ९ (iv) ९, १६, ३
(v) संज्ञी, असंज्ञी, तदुभयव्यपदेशरहित

५. (i) ४६ भाव (ii) २८ भाव (iii) २ स्थान
(iv) संज्ञी छठे से बारहवाँ गुणस्थान (v) ३ स्थान
(vi) २५ भाव (vii) ५ स्थान (viii) २ गुणस्थान

आहार मार्गणा

प्रश्न १ : आहार किसे कहते हैं?

उत्तर : तीन शरीर और छह पर्याप्तियों के योग्य पुद्गलों को ग्रहण करना आहार है।

शरीर नामकर्म के उदय से औदारिक आदि तीन शरीरों में से यथासम्भव शरीर के योग्य वर्गणा का तथा वचन और द्रव्य मन के योग्य वर्गणाओं का जो ग्रहण होता है, उसको आहार कहते हैं। **(गो.जी. ६६४)**

शरीर बनाने के योग्य पुद्गल पिंड को ग्रहण करना ही आहार है। **(ध.७/७)**

प्रश्न २ : आहारक किसे कहते हैं?

उत्तर : औदारिक, वैक्रियिक, आहारक इन तीन शरीरों में से उदय को प्राप्त हुए किसी एक शरीर के योग्य तथा भाषा और मन के योग्य पुद्गल वर्गणाओं को जो नियम से ग्रहण करता है उसको आहारक कहते हैं। **(ध.१/१५३)**

औदारिक वैक्रियिक व आहारक शरीर नाम कर्म प्रकृतियों के उदय से जीव आहारक होता है। **(ध.७/११३)**

प्रश्न ३ : अनाहारक किसे कहते हैं?

उत्तर : औदारिकादि शरीर के योग्य पुद्गल पिण्ड के ग्रहण नहीं करने को अनाहारक कहते हैं। **(ध.१/१५४)** आहारक और अनाहारक में जीवों की खोज करना आहार मार्गणा है।

प्रश्न ४ : आहार मार्गणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : आहार मार्गणा दो प्रकार की होती है -

(१) आहारक (२) अनाहारक **(वृ.द्र.सं.टी. १३)**

आहारक मार्गणा के अनुवाद से आहारक और अनाहारक जीव होते हैं। **(ध.१/४११)**

प्रश्न ५ : जीव किस अवस्था में आहारक एवं किस अवस्था में अनाहारक होते हैं?

उत्तर : जीव निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था से लेकर जीवन भर आहारक ही रहते हैं। तथा तीन अवस्था में अनाहारक ही होते हैं -

१) विग्रह गति में (तीन मोड़ों के समय)

२) तेरहवें गुणस्थान में समुद्घात के समय जब कार्मण काययोग होता है।

३) चौदहवें गुणस्थान में।

कर्म विवक्षा

क्र.	मार्गणा	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विशेष
१.	आहारक	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन	पारिणामिक	चारों गतियों में होता है।
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	
			अविरतसम्यक्त्व	औ.क्षा.क्षायो.	
			संयतासंयत	क्षायोपशमिक	
			प्रमत्त-अप्रमत्त	क्षायोपशमिक	
			अपूर्वकरण से		उपशम श्रेणी में उपशम भाव होता है।
			सूक्ष्मसाम्पराय तक	औप. क्षा.	
			उपशान्त कषाय	औपशमिक	
			क्षीणकषाय	क्षायिक	
			सयोगकेवली	क्षायिक	
२.	अनाहारक	उदय तथा क्षय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादनसम्यक्त्व	पारिणामिक	नरकगति में नहीं होता है।
			अविरतसम्यक्त्व	औप.क्षा.क्षायो.	
			सयोगकेवली	क्षायिक	
			अयोगकेवली	क्षायिक	

प्रश्न ६ : आहारक अवस्था में होने वाले कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : आहारक अवस्था में होने वाले दो गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं - (१) क्षीणकषायवीतराग छद्मस्थ (२) सयोग केवली जिन

विशेष - क्षपक श्रेणी की अपेक्षा आठवाँ, नवाँ, दसवाँ गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप ही हैं। क्षायिक सम्यग्दृष्टि के चौथा गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप ही होता है।

प्रश्न ७ : आहारक अवस्था के कितने गुणस्थान केवल क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : आहारक अवस्था के ४ गुणस्थान केवल क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं -
(१) सम्यग्मिथ्यात्व (२) संयमासंयम
(३) प्रमत्तसंयत (४) अप्रमत्तसंयत

प्रश्न ८ : आहार मार्गणा का कौनसा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होता है?

उत्तर : आहार मार्गणा में से आहारक जीवों के ४ गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होते हैं-

(१) अविरत सम्यक्त्व (२) अपूर्वकरण
(३) अनिवृत्तिकरण (४) सूक्ष्मसाम्पराय

अपूर्वकरणादि तीन गुणस्थान औपशमिक भाव रूप भी होते हैं। अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान औपशमिक एवं क्षायोपशमिक भाव रूप भी होता है।

अनाहारक जीवों के केवल एक गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होता है - अविरतसम्यक्त्व

प्रश्न ९ : आहार मार्गणा के कितने गुणस्थान एक समान भाव वाले होते हैं?

उत्तर : आहार मार्गणा के २ गुणस्थान एक समान भाव वाले होते हैं -

(१) अविरत सम्यक्त्व (२) सयोग केवली

विशेष - इन दोनों गुणस्थानों की आहारक और अनाहारक दोनों अवस्थाओं में एक समान भाव होते हैं अर्थात् चौथे गुणस्थान की आहारक-अनाहारक दोनों अवस्थाएँ औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक भाव रूप तथा सयोग केवली की आहारक-अनाहारक दोनों अवस्थाएँ क्षायिक भाव रूप होती हैं। चौदहवाँ गुणस्थान अनाहारक अवस्था में होता है लेकिन आहारक अवस्था में नहीं होता है। पहला एवं दूसरा गुणस्थान दोनों अवस्थाओं में क्रमश: औदयिक एवं पारिणामिक भाव रूप होता है।

प्रश्न १० : आहारक जीवों का चौथा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप किस अपेक्षा होता है?

उत्तर : आहारक जीवों के चौथे गुणस्थान के क्षायिक भाव रूप होने में अपेक्षा -

(१) नरकगति - प्रथम नरक में (३) मनुष्यगति - कर्मभूमि एवं भोगभूमि में
(२) तिर्यञ्चगति - भोगभूमि में (४) देवगति - वैमानिक देवों में

स्थान-विवेचन

प्रश्न ११ : आहार मार्गणा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : आहार मार्गणा में ३ स्थान होते हैं -

(१) आहारक रूप (२) अनाहारक रूप (३) आहारक-अनाहारक रूप

प्रश्न १२ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

आहारक रूप स्थान में ५ भाव -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के ४ - १ ज्ञा. (मन:.) १ अज्ञान. (विभं.) १ चारि. १ संय.

आहारक-अनाहारक रूप स्थान में ४८ भाव -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन दान लाभ.....

क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट - यद्यपि ऐसा कोई भाव नहीं है जो केवल अनाहारक रूप स्थान में ही पाया जाता हो लेकिन १४वें गुणस्थान में केवल अनाहारकपना पाया जाता है, इसलिए यहाँ ग्रहण किया है।

प्रश्न १३ : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

आहारक रूप स्थान के - तीसरे एवं पाँचवें से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

अनाहारक रूप स्थान के - चौदहवें गुणस्थानवर्ती एवं सिद्ध जीव

आहारक-अनाहारक रूप स्थान के - पहले, दूसरे, चौथे तथा तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीव तथा चारों गति के जीव।

प्रश्न १४ : आहारक रूप स्थान में होने वाले कितने भाव केवल एक गति में पाये जाते हैं?

उत्तर : आहारक रूप स्थान में होने वाले ३ भाव केवल एक गति में पाये जाते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के २ - १ ज्ञान (मनः.) १ चारित्र

ये भाव केवल मनुष्यगति में ही पाये जाते हैं।

प्रश्न १५ : आहारक-अनाहारक रूप स्थान में होने वाले कितने भाव चारों गतियों में पाये जाते हैं?

उत्तर : आहारक-अनाहारक रूप स्थान में होने वाले २९ भाव चारों गतियों में पाये जाते हैं-

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अव.) २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट - औपशमिक सम्यक्त्व भी चारों गतियों में होता है, लेकिन चारों गति की अनाहारक अवस्था में नहीं होने से उसका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न १६ : आहारक-अनाहारक रूप स्थान में होने वाले कितने भाव केवल सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं?

उत्तर : आहारक-अनाहारक रूप स्थान में होने वाले १५ भाव केवल सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं-

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन दान लाभ....।

क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ सम्य.

प्रश्न १७ : कितने भाव अनाहारक रूप स्थान में भी होते हैं?

उत्तर : १३ भाव अनाहारक रूप स्थान में भी होते हैं -

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन....

औदयिक के २ - १ ग. (मनु.) १ असि.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट - यद्यपि अनाहारक रूप स्थान में एक भी भाव नहीं होता है लेकिन चौदहवें गुणस्थान में अनाहारक ही होते हैं। उनकी अपेक्षा इन्हें ग्रहण किया गया है।

प्रश्न १८ : आहारक-अनाहारक रूप स्थान में होने वाले कितने भाव केवल चौथे गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : आहारक-अनाहारक रूप स्थान में होने वाले ६ भाव केवल चौथे गुणस्थान में होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञान, १ दर्शन (अव.) १ सम्यक्त्व

प्रश्न १९ : आहारक-अनाहारक रूप स्थान में होने वाले कितने भाव दो गुणस्थानों की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : आहारक-अनाहारक रूप स्थान में होने वाले ५ भाव दो गुणस्थानों की अपेक्षा होते हैं -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व - चौथे और तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा

क्षायोपशमिक के २ - कुमति.-कुश्रुत. - पहले - दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा

औदयिक के २ - नरक गति - पहले चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

स्त्रीलिंग - पहले - दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	२	आहारक, आहारक-अनाहारक	आहा-अना.रूप स्थान देवगति की अपेक्षा होता है।
	चारित्र	१	आहारक रूप स्थान	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	३	आहा. अना. आहा-अना.	
	चारित्र	३	आहा. अना. आहा-अना.	आठवें नवें दसवें एवं बारहवें गुण. की अपेक्षा आहारक रूप स्थान होता है।
	ज्ञानादि सात	२	अना. आहा-अना.	चौदहवें गुण. की अपेक्षा अनाहारक रूप स्थान होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	२	आहा. आहा.-अना.	
	मन:पर्ययज्ञान	१	आहारक रूप स्थान	
	कुमति-कुश्रुत	१	आहा.-अना.	
	विभंगज्ञान	१	आहारक रूप स्थान	
	२ दर्शन	२	आहा. आहा.-अना.	तीन गुणस्थान की अपेक्षा आहा-अना. रूप स्थान होता है।
	अवधिदर्शन	२	आहा. आहा.-अना.	
	५ लब्धि	२	आहा. आहा.-अना.	
	सम्यक्त्व	२	आहा. आहा.-अना.	
	चारित्र	१	आहारक रूप स्थान	
	संयमासंयम	१	आहारक रूप स्थान	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	२	आहा. आहा.-अना.	दूसरे तीसरे गुण. की अपेक्षा आहारक ही होते हैं।
	तिर्यञ्चगति	२	आहा. आहा.-अना.	
	मनुष्यगति	३	आहा. अना. आहा.-अना.	चौदहवें गुण. की अपेक्षा अनाहारक रूप स्थान होता है।
	देवगति	२	आहा. आहा.-अना.	
	४ कषाय	२	आहा. आहा.-अना.	
	३ लिङ्ग	२	आहा. आहा.-अना.	
	मिथ्यादर्शन	१	आहा.-अना.	
	अज्ञान	२	आहा. आहा.-अना.	
	असंयत	२	आहा. आहा.-अना.	केवल तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा आहारक होते हैं।
	असिद्धत्व	३	आहा. अना. आहा-अना.	
	६ लेश्या	२	आहा. आहा:-अना.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	३	आहा. अना. आहा.-अना.	केवल चौदहवें गुणस्थान में अनाहारक रूप स्थान है।
	भव्यत्व	३	आहा. अना. आहा.-अना.	केवल चौदहवें गुणस्थान में अनाहारक रूप स्थान है।
	अभव्यत्व	१	आहा.-अना.	

प्रश्न २० : कितने भावों में एक गुणस्थान की अपेक्षा आहारक रूप स्थान होता है?

उत्तर : केवल १ भाव में एक गुणस्थान की अपेक्षा आहारक रूप स्थान होता है-

क्षायोपशमिक का १ - संयमासंयम

प्रश्न २१ : गति रूप भावों में स्थानों की विवेचना किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : गति रूप भावों में स्थानों की विवेचना -

नरकगति में - दूसरे तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा-आहारक-रूप स्थान

पहले तथा चौथे गुण. की अपेक्षा-आहारक-अनाहारक रूप स्थान

(चौथे गुणस्थान में केवल पहले नरक में आहारक-अनाहारक का भंग बनता है।)

तिर्यञ्चगति में - तीसरे और पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा - आहारक रूप स्थान

पहले दूसरे तथा चौथे गुण. की अपेक्षा - आहारक-अनाहारक रूप स्थान

चौथे गुणस्थान में भोगभूमि की अपेक्षा बनता है।

मनुष्यगति में - तीसरे और पाँचवें से १२वें गुण. की अपेक्षा-आहारक रूप स्थान

चौदहवें गुणस्थान की अपेक्षा - अनाहारक रूप स्थान

पहले दूसरे चौथे तथा तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा - आहारक-अनाहारक रूप स्थान

देवगति में - तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा - आहारक रूप स्थान

पहले दूसरे चौथे गुण. की अपेक्षा-आहारक-अनाहारक रूप स्थान

प्रश्न २२ : कितने भावों में केवल एक स्थान होता है?

उत्तर : ९ भावों में केवल एक स्थान होता है -

औपशमिक का १ - चारित्र - आहारक रूप

क्षायोपशमिक के ६ - कुमति-कुश्रुत - आहारक-अनाहारक रूप

विभंगज्ञान - आहारक रूप

मन:पर्ययज्ञान, संयमासंयम, चारित्र - आहारक रूप

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन - आहारक-अनाहारक रूप

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व - आहारक-अनाहारक रूप

प्रश्न २३ : कितने भावों में आहारक रूप स्थान ९ गुणस्थानों की अपेक्षा होता है?

उत्तर : १३ भावों में आहारक रूप स्थान ९ गुणस्थानों की अपेक्षा होता है-

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्शन (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के ४ - १ ग. (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

नोट - इनमें तीसरा तथा पाँचवें से बारहवें गुणस्थान तक इन ९ गुणस्थानों में आहारक रूप स्थान होता है।

प्रश्न २४ : कितने भावों में तीनों स्थान होते हैं?

उत्तर : ६ भावों में तीनों स्थान होते हैं

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

औदयिक के २ - १ ग. (मनु.) १ असि.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २५ : कितने भावों में केवल आहारक सम्बन्धी गुणस्थान ही होते हैं?

उत्तर : ४ भावों में केवल आहारक सम्बन्धी गुणस्थान ही होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र-आठवाँ आदि गुणस्थान

क्षायोपशमिक ३ - १ मन:पर्ययज्ञान-छठे से बारहवाँ, चारित्र-छठा, सातवाँ संयमासंयम-पाँचवाँ गुणस्थान

प्रश्न २६ : क्षायिक ज्ञानादि सात भावों में आहारक रूप स्थान क्यों नहीं कहा गया है?

उत्तर : क्षायिक ज्ञानादि सात भाव तेरहवें एवं चौदहवें गुणस्थान में होते हैं। तेरहवें गुणस्थान में आहारक-अनाहारक रूप तथा चौदहवें गुणस्थान में अनाहारक रूप स्थान होता है, अन्य गुणस्थानों में जहाँ आहारक रूप स्थान होता है वहाँ ये भाव नहीं होते हैं इसलिए इन भावों में आहारक रूप स्थान नहीं कहा गया है।

प्रश्न २७ : मोहनीय कर्म सम्बन्धी कितने भावों में आहारक-अनाहारक रूप स्थान पाया जाता है?

उत्तर : मोहनीय कर्म सम्बन्धी १३ भावों में आहारक-अनाहारक रूप स्थान पाया जाता है-

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व (चौथे गुण. की अपेक्षा)

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व (चौथे, तेरहवें गुण. की अपेक्षा)
चारित्र (तेरहवें गुण. की अपेक्षा)

क्षायोपशमिक का १ - सम्यक्त्व (चौथे गुण. की अपेक्षा)

औदयिक के ९ - ४ कषाय - (पहले-दूसरे-चौथे गुणस्थान की अपेक्षा)
स्त्रीलिंग - (पहले-दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा)
पुरुष, नपुंसकलिंग - (पहले, दूसरे चौथे गुणस्थान की अपेक्षा)
मिथ्यादर्शन - (पहले गुणस्थान की अपेक्षा)
असंयत - (पहले-दूसरे-चौथे गुणस्थान की अपेक्षा)

नोट - लेश्या को मोहनीय कर्म से मानने पर ५ लेश्या - (पहले-दूसरे-चौथे गुण. की अपेक्षा) शुक्ल लेश्या - (पहले-दूसरे-चौथे और तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा)

भावों में आहारक/अनाहारक

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	२	आहारक अनाहारक	अनाहारक अवस्था देवगति की अपेक्षा होती है।
	चारित्र	१	आहारक	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	२	आहारक अनाहारक	
	चारित्र	२	आहारक अनाहारक	
	ज्ञानादि सात भाव	२	आहारक अनाहारक	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	२	आहारक अनाहारक	
	मन:पर्ययज्ञान	१	आहारक	
	कुमति कुश्रुत.	२	आहारक अनाहारक	एकेन्द्रियादि सभी जीवों के दोनों अवस्था होती हैं।
	विभंगज्ञान	१	आहारक	
	चक्षु. अच. दर्शन	२	आहारक अनाहारक	
	अवधिदर्शन	२	आहारक अनाहारक	
	५ लब्धि	२	आहारक अनाहारक	
	सम्यक्त्व	२	आहारक अनाहारक	नरक और तिर्यञ्चों में अनाहारक अवस्था कृतकृत्यवेदक की अपेक्षा होती है।
	चारित्र	१	आहारक	
	संयमासंयम	१	आहारक	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	२	आहारक अनाहारक	
	तिर्यञ्चगति	२	आहारक अनाहारक	
	मनुष्यगति	२	आहारक अनाहारक	पाँचों गुणस्थान की अपेक्षा अनाहारक होते हैं।
	देवगति	२	आहारक अनाहारक	
	४ कषाय	२	आहारक अनाहारक	
	३ लिङ्ग	२	आहारक अनाहारक	
	१ मिथ्या.	२	आहारक अनाहारक	
	१ अज्ञान	२	आहारक अनाहारक	
	१ असंयत	२	आहारक अनाहारक	तीसरे गुणस्थान में आहारक ही होते हैं।
	१ असिद्धत्व	२	आहारक अनाहारक	
	३ अशुभ लेश्या	२	आहारक अनाहारक	चारों गति में आहारक अनाहारक दोनों होते हैं।
	३ शुभ लेश्या	२	आहारक अनाहारक	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	२	आहारक अनाहारक	
	भव्यत्व	२	आहारक अनाहारक	
	अभव्यत्व	२	आहारक अनाहारक	

प्रश्न २८ : कितने भावों में तीन गुणस्थान की अपेक्षा अनाहारक होते हैं?

उत्तर : २३ भावों में तीन गुणस्थान की अपेक्षा अनाहारक होते हैं -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व। चौथे, तेरहवें तथा चौदहवें गुण. की अपेक्षा

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल. - पहले दूसरे एवं चौथे गुण. की अपेक्षा

औदयिक के १५ - २ ग. (ति.दे.) ४ कषा. २ लि. (पु.नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. ५ ले. (कृष्णादि)

इनमें भी पहले, दूसरे और चौथे गुण. की अपेक्षा अनाहारक होते हैं।

प्रश्न २९ : कितने भावों में केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा अनाहारक होते हैं?

उत्तर : ८ भावों में केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा अनाहारक होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व - केवल चौथे गुण. की अपेक्षा

क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ सम्य. केवल चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन-केवल पहले गुणस्थान की अपेक्षा

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व-केवल पहले गुणस्थान की अपेक्षा

प्रश्न ३० : कितने भावों में चौथे गुणस्थान की अपेक्षा भी आहारक होते हैं?

उत्तर : ३६ भावों में चौथे गुणस्थान की अपेक्षा भी आहारक होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के २० - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३१ : आहारक जीवों के कितने भावों के साथ सभी भाव हो सकते हैं?

उत्तर : आहारक जीवों के २ भावों के साथ सभी भाव हो सकते हैं -

औदयिक का १ - असिद्धत्व

पारिणामिक का १ - जीवत्व

प्रश्न ३२ : उन आहारक जीवों के कितने भाव होते हैं, जिनके असंयत भाव नहीं होता है?

उत्तर : उन आहारक जीवों के १२ भाव होते हैं जिनके असंयत भाव नहीं होता है -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना

क्षायोपशमिक के ३ - १ ज्ञान (मन:पर्यय) १ चारित्र १ संयमासंयम

प्रश्न ३३ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में आहारक-अनाहारक दोनों होते हैं?

उत्तर : ३ भावों के सभी उत्तर भेदों में आहारक-अनाहारक दोनों होते हैं - (१) क्षायिक (२) औदयिक (३) पारिणामिक

प्रश्न ३४ : कितने भावों में आहारकपना चारों गति की अपेक्षा बनता है?

उत्तर : ३१ भावों में आहारकपना चारों गति की अपेक्षा बनता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

विशेष - देवों में निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३ अशुभ लेश्या हो सकती है निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में जीव आहारक ही होता है इसलिए ३ अशुभ लेश्या का ग्रहण किया गया है।

प्रश्न ३५ : लिङ्ग रूप भावों में कितने गुणस्थान की अपेक्षा अनाहारकपना पाया जाता है?

उत्तर : लिङ्ग रूप भावों में अनाहारक अवस्था में होने वाले गुणस्थान -

स्त्रीलिङ्ग में - पहला दूसरा-नरकगति बिना तीन गति की अपेक्षा

पुरुषलिङ्ग में - पहला दूसरा चौथा नरक गति बिना तीन गति की अपेक्षा

नपुंसकलिङ्ग में - पहला गुणस्थान-नरक तिर्यञ्च मनुष्यगति की अपेक्षा

दूसरा गुणस्थान - तिर्यञ्च एवं मनुष्यगति की अपेक्षा

चौथा गुणस्थान - नरकगति की अपेक्षा

प्रश्न ३६ : कितने भावों में केवल मनुष्यगति की अपेक्षा अनाहारक होते हैं?

उत्तर : ९ भावों में केवल मनुष्यगति की अपेक्षा अनाहारक होते हैं -

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना

औदयिक का १ - मनुष्यगति

प्रश्न ३७ : कितने भावों में पाँचों गुणस्थानों की अपेक्षा अनाहारक हो सकते हैं?

उत्तर : ४ भावों में पाँचों गुणस्थानों की अपेक्षा अनाहारक हो सकते हैं -

औदयिक के २ - मनुष्य गति, असिद्धत्व

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

विशेष - आहारक अवस्था में सभी भाव एवं १३ गुणस्थान होते हैं। इनका वर्णन भावों में गुणस्थान एवं गुणस्थानों में भाव के समान समझना चाहिए।

प्रश्न ३८ : आहारक जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : आहारक जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ४९ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन....

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३९ : आहारक जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : आहारक जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ५ गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन सम्यक्त्व (३) अविरतसम्यक्त्व (४) प्रमत्तसंयत (५) सयोगकेवली

मिथ्यात्व गुणस्थान में - ३३ भाव-क्षायो. ९ औद. २१ पारि. ३

सासादन गुणस्थान में - ३० भाव-क्षायो. ९ औद. १९ पारि. २

अविरत गुणस्थान में - ३५ भाव-औ. १ क्षा. १ क्षायो. १२ औद. १९ (स्त्री. मि. बिना) पारि. २

छठे गुणस्थान में - २७ भाव-क्षा. १ क्षायो. १३ औद. ११ पारि. २

तेरहवें गुणस्थान में - १४ भाव-क्षा. ९ औद. ३ पारि. २

अनाहारक

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	देवगति की अपेक्षा होता है।
२.	**क्षायिक**	९	सम्य.चारि.ज्ञा.दर्श.दान. लाभ भोग उपभोग वीर्य	चारित्रादि भाव तेरहवें गुण. में आहारक के भी होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**	१४	३ ज्ञा.-मति.श्रुत.अव. २ अज्ञान-कुम.कुश्रु. ३ दर्शन-च.अच.अव. ५ लब्धि-दा.ला.भो.उप.वी. १ - सम्यक्त्व	 अवधिदर्शन चौथे गुण. की अपेक्षा होता है।
४.	**औदयिक**	२१	४ गति. न.ति.म.दे. ४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो. ३ लिङ्ग - स्त्री.पुरु.नपुं. १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या. कृ.नी.का.पी.प.शु.	मनुष्यगति में पाँचों गुणस्थान की अपेक्षा अनाहारक होते हैं। पहले दूसरे और चौथे गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	पाँचों गुण. की अपेक्षा अनाहारक होते हैं। पाँचों गुण. की अपेक्षा अनाहारक होते हैं।

प्रश्न ४० : अनाहारक अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अनाहारक अवस्था में ४८ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक के ९ - सम्यक्त्व चारित्र ज्ञान......।

क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि.६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ४१ : अनाहारक अवस्था में होने वाले कितने भाव केवल एक गति में होते हैं?

उत्तर : अनाहारक अवस्था में होने वाले १३ भाव केवल एक गति में होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व (देवगति)

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना (मनुष्यगति)

औदयिक के ४ - नरकगति तिर्यञ्चगति मनुष्यगति देवगति

प्रश्न ४२ : अनाहारक अवस्था के होने वाले किस गुणस्थान में पाँचों भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : अनाहारक अवस्था के होने वाले चौथे गुणस्थान में पाँचों भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १९ - ४ ग. ४ क. २ लि. (पु.न.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४३ : अनाहारक अवस्था के साथ अज्ञान भाव कितने गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : अनाहारक अवस्था के साथ अज्ञान भाव तीन गुणस्थानों में होता है -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन सम्यक्त्व (३) अविरतसम्यक्त्व

प्रश्न ४४ : अनाहारक अवस्था के साथ कितने भाव सभी गुणस्थानों में होते हैं?

उत्तर : अनाहारक अवस्था के साथ ४ भाव सभी गुणस्थानों में होते हैं -

औदयिक के २ - १ ग. (मनु.) १ असि.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

विशेष - इसमें निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ४५ : क्या जो आहारक से आहारक ही बनता है अर्थात् ऋजुगति से जाता है उसके आहारक अवस्था में होने वाले भाव हो सकते हैं?

उत्तर : नहीं, चाहे कोई ऋजुगति से जाने के कारण आहारक ही बना रहे तो भी उसके आहारक अवस्था में होने वाले भाव नहीं हो सकते हैं, क्योंकि -

१) औपशमिक चारित्र, मन:पर्ययज्ञान, क्षायोपशमिक चारित्र, मनुष्यगति में; संयमासंयम, मनुष्य-तिर्यञ्चगति में ही होता है। इनको धारण करने वाला मरकर मनुष्यगति में नहीं

जाता है, क्योंकि जिसके नरकादि ३ आयु का बन्ध हो गया है उसके मन:पर्ययज्ञान एवं दोनों चारित्र नहीं हो सकते हैं।

इसी प्रकार संयमासंयम भी, जिसके नरकादि ३ आयु का बन्ध हो गया है, उसके नहीं होता है।

२) इन भावों वाला निश्चित रूप से देवगति में ही जाता है। देवगति में ये भाव नहीं होते हैं, क्योंकि वहाँ असंयम ही होता है, ऐसा सिद्धान्त है।

३) विभंग ज्ञान अनुगामी नहीं होने से अगले भव में नहीं जाता है।

प्रश्न ४६ : कितने भाव अनाहारक होते ही नियम से छूट जाते हैं?

उत्तर : ५ भाव अनाहारक होते ही नियम से छूट जाते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के ४ - १ ज्ञा. (मन:.) १ अज्ञा. (विभंग) १ चारि. १ संय.

प्रश्न ४७ : कितने भाव आहारक अवस्था में होने पर भी आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त के पहले नहीं हो सकते हैं?

उत्तर : १३ भाव आहारक अवस्था में होने पर भी आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त के पहले नहीं हो सकते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के ९ - सम्यक्त्व, चारित्र, ज्ञान, दर्शन, दान लाभ.....।

क्षायोपशमिक के ३ - १ ज्ञा. (मन:.) १ चारि. १ संयमा.

नोट - १) यह कथन कर्मभूमिया मनुष्यों की अपेक्षा जानना चाहिए।

मेरे विचार से क्षायोपशमिक सम्यक्त्व तो आठ वर्ष अंतर्मुहूर्त के पहले भी उत्पन्न हो सकता है।

२) आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त का नियम औपशमिक (एवं क्षायिक) सम्यक्त्व के लिए कहा गया है।

३) मेरे अनुमान से विभंगज्ञान भी आठ वर्ष अंतर्मुहूर्त के पहले नहीं होता होगा।

४) सम्यक्त्व को साथ लेकर जन्म लेने की अपेक्षा क्षायिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व आठ वर्ष के पहले भी रहता है।

प्रश्न ४८ : कितने भाव आहारक-अनाहारक दोनों के चौथे गुणस्थान में हो सकते हैं?

उत्तर : ३५ भाव आहारक-अनाहारक दोनों के चौथे गुणस्थान में हो सकते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १९ - ४ ग. ४ क. २ लि. (पु. नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४९ : कितने भावों के सभी उत्तर भेद आहारक-अनाहारक दोनों के होते हैं?

उत्तर : तीन भावों के सभी उत्तर भेद आहारक-अनाहारक दोनों के होते हैं -

१) क्षायिक के - सम्यक्त्व - चौथे एवं तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा

शेषभाव - तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा

चौदहवें गुणस्थान में आहारक-अनाहारक दोनों नहीं होते हैं इसलिए उसका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

२) औदयिक के - नरकगति - पहले एवं चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

तिर्यञ्चगति - पहले, दूसरे एवं चौथे गुण....

मनुष्यगति - पहले, दूसरे, चौथे एवं तेरहवें गुण....

देवगति - पहले, दूसरे एवं चौथे गुण....।

४ कषाय पुरुष एवं नपुंसक वेद - पहले, दूसरे एवं चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

स्त्रीलिङ्ग - पहले एवं दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा

मिथ्यादर्शन - पहले गुणस्थान की अपेक्षा

अज्ञान एवं असंयत - पहले दूसरे चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

असिद्धत्व एवं शुक्ल लेश्या - पहले दूसरे चौथे तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा

पाँच लेश्या - पहले दूसरे चौथे गुण. की अपेक्षा

३) पारिणामिक के जीवत्व भव्यत्व - पहले दूसरे चौथे तथा तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा

अभव्यत्व - पहले गुणस्थान की अपेक्षा

प्रश्न ५० : कितने भावों में ६ गुणस्थान की अपेक्षा आहारक ही होते हैं?

उत्तर : ६ भावों में ६ गुणस्थान की अपेक्षा आहारक ही होते हैं -

औदयिक के ३ कषायें - क्रोध, मान, माया,

३ लिंग - स्त्री. पु. नपुं.

इनमें पहले, दूसरे और चौथे गुणस्थान को छोड़कर तीसरे तथा पाँचवें से नवें गुणस्थान तक आहारक ही होते हैं।

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **आहारक जीवों के कौनसा गुणस्थान औदयिक भाव रूप होता है?**

(अ) तीसरा (ब) तेरहवाँ

(स) पहला (द) चौदहवाँ

(ii) **अनाहारक जीवों के कितने क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं?**

(अ) ४ (ब) ५

(स) १४ (द) १२

(iii) **अनाहारक जीवों के औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव कितनी गतियों में नहीं होता है?**

(अ) ४ (ब) ३

(स) १ (द) कोई नहीं

(iv) **कितने भाव आहारक-अनाहारक दोनों के होते हैं?**

(अ) ५० (ब) ४९

(स) ५३ (द) ४८

(v) **कितने भाव आहारक अवस्था में ही होते हैं?**

(अ) १० (ब) ५

(स) ९ (द) कोई नहीं

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) अनाहारक जीवों के कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं?

(ii) आहारक-अनाहारक रूप स्थान में कितने गुणस्थान होते हैं?

(iii) आहारक जीवों के कितनी जातियों में क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

(iv) अनाहारक जीवों के कितने भावों में कम-से-कम प्राण होते हैं?

(v) अनाहारक जीवों के कितने भाव होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) आहारक जीवों के संयम मार्गणा सम्बन्धी दो भाव होते हैं।

(ii) क्षायिक भाव आहारक-अनाहारक दोनों के होता है।

(iii) अनाहारक जीवों के ज्ञान मार्गणा में से ५ ज्ञान रूप भाव होते हैं।

(iv) आहारक मार्गणा में तीन स्थान होते हैं।

(v) आहारक जीवों के सिद्ध भगवान सम्बन्धी भाव भी होते हैं।

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए-

(i) आहारक जीवों के .... गति रूप .... लेश्या रूप .... पारिणामिक भाव होते हैं।

(ii) अनाहारक जीवों के कम-से-कम .... लेश्या रूप .... ज्ञान रूप .... अज्ञान रूप भाव होते हैं।

(iii) आहारक जीवों के चौथे गुणस्थान में .... लिङ्ग रूप .... दर्शन रूप .... सम्यक्त्व रूप भाव होते हैं।

(iv) आहारक रूप स्थान में .... क्षायोपशमिक .... क्षायिक एवं .... औदयिक भाव होते हैं।

(v) अनाहारक जीवों के दूसरे गुणस्थान में .... गति रूप .... कषाय रूप भाव होते हैं।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		ब
(i)	आहा. अना. रूप स्थान में	-	आहारक की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में
(ii)	५ भाव	-	४३ भाव
(iii)	सम्यग्ज्ञानी अनाहारक	-	आहारक रूप स्थान में
(iv)	मिथ्यादर्शन रूप भाव	-	८ क्षायिक भाव
(v)	औदयिक के १९ भेद	-	४ भाव
(vi)	अनाहारक के २ गुण.	-	मिथ्यादृष्टि आहारक अनाहारक
(vii)	४९ भाव	-	सासादनसम्यग्दृष्टि अनाहारक
(viii)	अनाहारक के सभी गुणस्थानों में	-	४८ भाव

- उत्तरमाला -

१. (i) स (ii) अ (iii) ब (iv) द (v) ब

२. (i) २ (ii) ४ (iii) ८४ लाख (iv) १३ (v) ४८

३. (i) हाँ (ii) हाँ (iii) ना (iv) हाँ (v) हाँ

४. (i) ४, ६, ३ (ii) १, १, २ (iii) ३, ३, ३ (iv) ४, ०, ० (v) ३, ४

५. (i) ४८ भाव (ii) आहारक रूप स्थान में (iii) ४३ भाव
(iv) मिथ्यादृष्टि आहारक-अनाहारक (v) सासादन सम्यग्दृष्टि अनाहारक
(vi) ८ क्षायिक भाव (vii) आहारक की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में
(viii) ४ भाव

गुणस्थान

प्रश्न १ : गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : दर्शन मोहनीय आदि कर्मों की उदय-उपशम आदि अवस्थाओं के होने पर उत्पन्न हुए परिणामों से युक्त जीव देखे जाते हैं, उन जीवों के उन परिणामों को सर्वज्ञदेव ने गुण संज्ञा कहा है अर्थात् उसे गुणस्थान कहते हैं। **(ध.१/१६२)**

प्रश्न २ : गुणस्थान कितने होते हैं?

उत्तर : गुणस्थान चौदह होते हैं -

(१) मिथ्यादृष्टि (२) सासादन सम्यक्त्व (३) सम्यग्मिथ्यात्व (४) असंयतसम्यग्दृष्टि (५) विरताविरत (६) प्रमत्तसंयत (७) अप्रमत्तसंयत (८) अपूर्वकरणप्रविष्ट शुद्ध जीव (९) अनिवृत्तिकरण (१०) सूक्ष्म साम्पराय (११) उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ (१२) क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ (१३) सयोगकेवली जिन (१४) अयोगकेवली जिन।

नोट - मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व देखें **- सम्यक्त्व मार्गणा।**

प्रश्न ३ : असंयतसम्यग्दृष्टि (अविरत सम्यक्त्व) गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : संयम का घात करने वाले कर्मों के उदय से उत्पन्न भाव असंयत भाव कहलाता है। **(ध.१४/१२)** देशविरत और सकलविरति के घातक कर्मों के उदय से उत्पन्न होने वाला भाव 'अविरत भाव' कहलाता है। **(ध.१४/१२)**

जिसकी दृष्टि-श्रद्धा समीचीन होती है उसे सम्यग्दृष्टि कहते हैं। **(ध.१/१७२)**

नोट - 'संयतासंयत' देखें संयम मार्गणा

प्रश्न ४ : प्रमत्तसंयत गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : जो परिणाम सम्यक्त्व व सकलव्रतों से सहित हों, किन्तु संज्वलन और नोकषाय के तीव्र उदय के होने से प्रमाद सहित हों, वह प्रमत्त गुणस्थान है। **(गो.जी ३२)**

जो व्यक्त और अव्यक्त ज्ञान द्वारा जानने योग्य प्रमाद में वास करता है, जो सम्यक्त्व ज्ञानादि सम्पूर्ण गुणों से और व्रतों के रक्षण करने में समर्थ ऐसे शीलों से युक्त है, जो महाव्रती है और जिसका आचरण प्रमाद मिश्रित है अथवा चित्रल सारंग को कहते हैं इसलिए जिसका आचरण सारंग के समान शबलित है अथवा चित्त में प्रमाद को उत्पन्न करने वाला जिसका आचरण है उसे प्रमत्तसंयत कहते हैं। **(ध.१/१७९)**

प्रश्न ५ : अप्रमत्तसंयत गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : सम्यग्दर्शन पूर्वक सकल संयम के होने पर संज्वलन और नोकषाय के मन्द उदय के समय प्रमाद रहित होने वाली अवस्था विशेष को अप्रमत्तविरत संयत गुणस्थान कहते हैं। **(गो.जी. ४५)**

जिसके व्यक्त एवं अव्यक्त सभी प्रकार के प्रमाद नष्ट हो गये हैं, जो व्रत गुण और शीलों से मण्डित है, जो निरन्तर आत्मा और शरीर के भेदविज्ञान से युक्त है जो उपशम और क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ नहीं हुआ है तथा ध्यान में लवलीन है उसे अप्रमत्त संयत कहते हैं। **(ध.१/१८०)** जिसका संयम प्रमादरहित होता है वह अप्रमत्तसंयत है। **(ध.१/१७९)**

प्रश्न ६ : अपूर्वकरण गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : अध:प्रवृत्तकरण सम्बन्धी अन्तर्मुहूर्त काल पूर्णकर प्रति समय अनन्त गुणी विशुद्धि को प्राप्त हुए परिणामों को अपूर्वकरण गुणस्थान कहते हैं। **(गो.जी. ५०)**

एकसमयवर्ती जीवों के परिणाम सदृश विसदृश दोनों प्रकार के होते हैं किन्तु भिन्न-समयवर्ती जीवों के परिणाम असमान ही होते हैं, उसे अपूर्वकरण गुणस्थान कहते हैं। **(गो.जी. ५२)** जिसमें जीवों के परिणाम अपूर्व-अपूर्व ही पाये जाते हैं उन्हें अपूर्वकरण गुणस्थान कहते हैं। **(ध.१/१८२)** करण-परिणाम, जो पूर्व में कभी प्राप्त नहीं हुए ऐसे अपूर्वकरण परिणामों में जिन जीवों की शुद्धि प्रविष्ट हो गई है उन्हें अपूर्वकरण प्रविष्ट शुद्ध जीव कहते हैं। **(ध.१/१८१)**

प्रश्न ७ : अनिवृत्तिकरण गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : अत्यन्त निर्मल ध्यान रूपी अग्निशिखाओं के द्वारा कर्मवन को दग्ध करने में समर्थ प्रत्येक समय में एक-एक सुनिश्चित वृद्धिंगत परिणामों को अनिवृत्तिकरण गुणस्थान कहते हैं। **(ध.१/१८७-८८)**

जहाँ भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम असमान ही हों और एकसमयवर्ती जीवों के परिणाम सदृश ही होते हैं उसे अनिवृत्तिकरण कहते हैं। **(गो.जी. ५८)**

'सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान' देखें - संयम मार्गणा

प्रश्न ८ : उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : निर्मली फल से युक्त निर्मल जल की तरह अथवा शरद् ऋतु में निर्मल होने वाले सरोवर के जल की तरह सम्पूर्ण मोहनीय कर्म के 'उपशम से उत्पन्न' होने वाले निर्मल परिणामों को उपशान्तकषाय गुणस्थान कहते हैं। **(ध.१/१९०)**

जिनकी कषायें उपशान्त हो गयी हैं उन्हें उपशान्त कषाय कहते हैं। जिनका राग नष्ट हो गया है उन्हें वीतराग कहते हैं। **(ध.१/१८९)**

ज्ञानावरण और दर्शनावरण को छद्म कहते हैं और जो उनमें स्थित हैं उन्हें छद्मस्थ कहते हैं। **(ध.१/१९०)**

प्रश्न ९ : क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थ गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनकी कषायें क्षीण हो गई हैं उन्हें क्षीणकषाय कहते हैं।

जो क्षीणकषाय होते हुए वीतराग होते हैं उन्हें क्षीणकषाय वीतराग कहते हैं। **(ध.१/१९१)**

जो क्षीणकषाय वीतराग होते हुए छद्मस्थ होते हैं उन्हें क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ कहते हैं। जिन्होंने सम्पूर्ण रूप से मोह का क्षय कर दिया है अतएव जिनका चित्त स्फटिक मणि के निर्मल भाजन में रखे हुए जल के समान निर्मल है। ऐसे निर्ग्रन्थ को वीतराग देव ने क्षीणकषायगुणस्थानवर्ती कहा है। **(ध.१/१९०)**

प्रश्न १० : सयोग केवली गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : घाती चतुष्क के क्षय से असहाय केवलज्ञानादि नवलब्धि सहित होने पर परमात्म संज्ञा प्राप्त जीव की योग सहित वीतराग दशा को सयोगकेवली गुणस्थान कहते हैं।

जिसका केवलज्ञान रूपी सूर्य की किरणों के समूह से अज्ञान रूपी अन्धकार सर्वथा नष्ट हो गया है और जिसने नव केवल लब्धियों के प्रगट होने से परमात्म संज्ञा को प्राप्त कर लिया है वह इन्द्रिय आदि की अपेक्षा न रखने वाले ऐसे असहाय ज्ञान और दर्शन से युक्त होने के कारण केवली और तीनों योगों से युक्त होने के कारण सयोगी कहा जाता है। **(ध.१/१९३)**

प्रश्न ११ : अयोगकेवली गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : योगरहित केवली का जो स्थान होता है वह अयोगकेवली गुणस्थान कहलाता है। **(गो.जी. ६५)**

सर्वशील सहित, नवीन कर्मबन्ध रहित जीव की योग रहित वीतराग सर्वज्ञ दशा को अयोगकेवली गुणस्थान कहते हैं। जो ८४ लाख गुणों के अधिपति हैं जिनके वाणी एवं योग के आस्रव पूर्ण रूप से नष्ट हो गये हैं वे अयोगकेवली जिन हैं। **(ध.१/२००)**

प्रश्न १२ : गुणस्थानातीत जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो ज्ञानावरणादि आठ कर्मों से सर्वथा मुक्त है, सर्व दु:खों से मुक्त होने से शान्ति-सुखमय है, निरंजन है, नित्य है, ज्ञान दर्शन सुख वीर्य-अव्याबाध-अवगाहन, सूक्ष्मत्व और अगुरुलघु इन आठ गुणों से युक्त है, कृतकृत्य है और लोक के अग्र भाग में निवास करते हैं उन्हें सिद्ध (गुणस्थानातीत) कहते हैं। **(ध.१/२०१)**

कर्मविवक्षा - किसी भी गुणस्थान में कोई भी अन्य गुणस्थान नहीं होता है। सभी गुणस्थान अपने-अपने भाव रूप होते हैं। सामान्य से पहला गुणस्थान औदयिक, दूसरा

पारिणामिक, तीसरा क्षायोपशमिक, चौथा औपशमिक क्षायिक क्षायोपशमिक, पाँचवें से सातवाँ क्षायोपशमिक, आठवाँ, नवाँ दसवाँ औपशमिक-क्षायिक, ग्यारहवाँ औपशमिक तथा बारहवाँ तेरहवाँ चौदहवाँ क्षायिक भाव रूप होता है।

स्थान विवेचन

प्रश्न १३ : गुणस्थान में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : गुणस्थान के १३ स्थान होते हैं -

(१) १ गुणस्थान रूप (२) २ गुणस्थान रूप (३) ४ गुणस्थान रूप (४) ५ गुणस्थान रूप (५) ६ गुणस्थान रूप (६) ७ गुणस्थान रूप (७) ८ गुणस्थान रूप (८) ९ गुणस्थान रूप (९) १० गुणस्थान रूप (१०) ११ गुणस्थान रूप (११) १२ गुणस्थान रूप (१२) १३ गुणस्थान रूप (१३) १४ गुणस्थान रूप

प्रश्न १४ : इन स्थानों में किस-किस गुणस्थान को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में गुणस्थान -

१ गुणस्थान रूप स्थान में	- स्वकीय गुणस्थान अर्थात् कोई भी एक गुणस्थान
२ गुणस्थान रूप स्थान में	- पहला-दूसरा अथवा छठा-सातवाँ अथवा तेरहवाँ चौदहवाँ गुणस्थान
४ गुणस्थान रूप स्थान में	- पहले से चौथा अथवा चौथे से सातवाँ अथवा आठवें से ग्यारहवाँ गुणस्थान
५ गुणस्थान रूप स्थान में	- पहले से पाँचवाँ गुणस्थान
६ गुणस्थान रूप स्थान में	- आठवें से दसवाँ तथा बारहवें से चौदहवाँ गुणस्थान
७ गुणस्थान रूप स्थान में	- पहले से सातवाँ गुण. अथवा छठे से बारहवाँ गुण.
८ गुणस्थान रूप स्थान में	- चौथे से ग्यारहवाँ गुणस्थान
९ गुणस्थान रूप स्थान में	- पहले से नवाँ गुण. अथवा चौथे से बारहवाँ गुण.
१० गुणस्थान रूप स्थान में	- पहले से दसवाँ गुणस्थान
११ गुणस्थान रूप स्थान में	- चौथे से चौदहवाँ गुणस्थान
१२ गुणस्थान रूप स्थान में	- पहले से बारहवाँ गुणस्थान
१३ गुणस्थान रूप स्थान में	- पहले से तेरहवाँ गुणस्थान
१४ गुणस्थान रूप स्थान में	- पहले से चौदहवाँ गुणस्थान

नोट - यद्यपि १, ४, ५ तथा चौदह गुणस्थान रूप स्थान को छोड़कर शेष किसी भी स्थान का स्वामी किसी गति या गुणस्थानवर्ती जीव नहीं है फिर भी इनमें भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं इसलिए इनका यहाँ ग्रहण किया गया है।

विशेष - १) क्षायिक सम्यक्त्व एवं क्षायिक चारित्र में केवली भगवान की अपेक्षा दो गुणस्थान रूप स्थान भी बन सकता है।

२) क्षायिक सम्यक्त्व में चौथे पाँचवें दो गुणस्थान रूप स्थान नहीं बनता है, क्योंकि तिर्यञ्चों के क्षायिक सम्यक्त्व के साथ पंचम गुणस्थान नहीं होता है।

३) वेदातीत और कषायातीत जीवों की अपेक्षा क्रमश: ६ गुणस्थान रूप तथा ४ गुण. रूप स्थान भी बन सकता है।

४) विपुलमति मन:पर्ययज्ञान वर्धमान चारित्र वालों के ही होता है इसलिए ११वें गुणस्थान बिना ६ गुणस्थान रूप स्थान बनता है।

५) प्रथमोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा ४ थे से सातवें तक ४ गुणस्थान रूप स्थान बनता है।

६) श्रेणी की अपेक्षा मतिज्ञानादि में ५ गुणस्थान रूप स्थान बन सकता है।

इसी प्रकार और भी स्थान बना लेना चाहिए।

प्रश्न १५ : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

१ गुणस्थान रूप स्थान के - स्वकीय गुणस्थानवर्ती जीव

४ गुणस्थान रूप स्थान के - नरक एवं देवगति के जीव

५ गुणस्थान रूप स्थान के - तिर्यञ्चगति के जीव

१४ गुणस्थान रूप स्थान के - मनुष्यगति के जीव

नोट - शेष स्थानों के स्वामी मार्गणाओं के उत्तर भेदों में से यथायोग्य जानना चाहिए।

प्रश्न १६ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

१ गुणस्थान रूप स्थान में - ३

क्षायोपशमिक का १ - संयमासंयम (पाँचवाँ गुणस्थान)

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन (प्रथम गुणस्थान)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व (प्रथम गुणस्थान)

२ गुणस्थान रूप स्थान में - ११

क्षायिक के ७ - ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

क्षायोपशमिक के ४ - ३ अज्ञान १ चारित्र

४ गुणस्थान रूप स्थान में - ८

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक का १ - सम्यक्त्व

औदयिक के ६ - २ ग. (नर.दे.) १ असंयत ३ लेश्या (अशुभ)

५ गुणस्थान रूप स्थान में - १

औदयिक का १ - तिर्यञ्चगति

६ गुणस्थान रूप स्थान में - १

क्षायिक का १ - चारित्र

७ गुणस्थान रूप स्थान में - ३

क्षायोपशमिक का १ - मन:पर्ययज्ञान

औदयिक के २ - पीत एवं पद्म लेश्या

८ गुणस्थान रूप स्थान में - १

औपशमिक - सम्यक्त्व

९ गुणस्थान रूप स्थान में - १०

क्षायोपशमिक के ४ - ३ ज्ञान (म.श्रु.अव.) १ दर्श. (अव.)

औदयिक के ६ - ३ कषा. (क्रो.मा.मा.) ३ लिङ्ग

१० गुणस्थान रूप स्थान में - १

औदयिक का १ - लोभकषाय

११ गुणस्थान रूप स्थान में - १

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

१२ गुणस्थान रूप स्थान में - ८

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ लब्धि

औदयिक का १ - अज्ञान

१३ गुणस्थान रूप स्थान में - १

औदयिक का १ - शुक्ल लेश्या

१४ गुणस्थान रूप स्थान में - ४

औदयिक के २ - १ ग. (मनु.) १ असिद्धत्व

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न १७ : इन स्थानों में होने वाले भावों का विशेष विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में होने वाले भावों का विशेष विवेचन -

२ गुणस्थान रूप स्थान में -

क्षायिक ज्ञानादि ७ भाव - तेरहवाँ चौदहवाँ गुणस्थान

३ अज्ञान - पहला दूसरा गुणस्थान

क्षायोपशमिक चारित्र - छठा सातवाँ गुणस्थान

४ गुणस्थान रूप स्थान में -

औपशमिक चारित्र - आठवें से ग्यारहवाँ गुणस्थान

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व - चौथे से सातवाँ गुणस्थान

नरक एवं देवगति - पहले से चौथा गुणस्थान

असंयत - पहले से चौथा गुणस्थान

३ अशुभ लेश्या - पहले से चौथा गुणस्थान

६ गुणस्थान रूप स्थान में -

आठवाँ, नवाँ, दसवाँ, बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ

७ गुणस्थान रूप स्थान में -

मन:पर्ययज्ञान - छठे से बारहवाँ गुणस्थान

पीत-पद्म लेश्या - पहले से सातवाँ गुणस्थान

९ गुणस्थान रूप स्थान में -

३ ज्ञान एवं अवधिदर्शन - चौथे से बारहवाँ गुणस्थान

३ कषाय एवं ३ लिङ्ग - पहले से नवाँ गुणस्थान

प्रश्न १८ : कितने स्थानों में तीन भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : २ स्थानों में तीन भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

१ गुणस्थान रूप स्थान में - क्षायोपशमिक औदयिक एवं पारिणामिक

४ गुणस्थान रूप स्थान में - औपशमिक क्षायोपशमिक एवं औदयिक

प्रश्न १९ : कितने स्थानों में केवल औदयिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : ३ स्थानों में केवल औदयिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

५ गुणस्थान रूप स्थान में - तिर्यञ्चगति

१० गुणस्थान रूप स्थान में - लोभ कषाय

१३ गुणस्थान रूप स्थान में - शुक्ल लेश्या

प्रश्न २० : किस स्थान में होने वाले कौन से भाव चारों गतियों में पाये जाते हैं?

उत्तर : वे स्थान जिनमें होने वाले भाव चारों गतियों में पाये जाते हैं -

१ गुणस्थान रूप स्थान में होने वाले २ - मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व

२ गुणस्थान रूप स्थान में होने वाले ३ - कुमति. कुश्रुत. विभंग.

४ गुणस्थान रूप स्थान में होने वाले ५ - १ क्षायो. सम्य., १ असंयत, ३ अशुभ ले.

८ गुणस्थान रूप स्थान में होने वाला १ - औपशमिक सम्यक्त्व

९ गुणस्थान रूप स्थान में होने वाले ७ - ३ ज्ञान, १ दर्शन, ३ कषाय

१० गुणस्थान रूप स्थान में होने वाला १ - लोभ कषाय

११ गुणस्थान रूप स्थान में होने वाला १ - क्षायिक सम्यक्त्व

१२ गुणस्थान रूप स्थान में होने वाले ८ - २ दर्शन, ५ लब्धि, १ अज्ञान

१४ गुणस्थान रूप स्थान में होने वाले ३ - १ असिद्धत्व, जीवत्व, भव्यत्व

नोट - इन भावों का अस्तित्व चारों गतियों में पाया जाता है, इसलिए इनका यहाँ ग्रहण किया गया है।

प्रश्न २१ : कितने स्थानों में केवल मोहनीय कर्म की अपेक्षा से होने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : ४ स्थानों में केवल मोहनीय कर्म की अपेक्षा से होने वाले भाव होते हैं -

६ गुणस्थान रूप स्थान में क्षायिक चारित्र - मोहनीय कर्म के क्षय से

८ गुणस्थान रूप स्थान में - औपशमिक सम्यक्त्व-मोहनीय कर्म के उपशम से

१० गुणस्थान रूप स्थान में - लोभ कषाय-मोहनीय कर्म के उदय से

११ गुणस्थान रूप स्थान में - क्षायिक सम्यक्त्व-मोहनीय कर्म के क्षय से

प्रश्न २२ : कितने स्थान केवल मनुष्यगति में ही बनते हैं?

उत्तर : ९ स्थान केवल मनुष्यगति में ही बनते हैं -

(१) ६ गुणस्थान रूप (२) ७ गुणस्थान रूप (३) ८ गुणस्थान रूप

(४) ९ गुणस्थान रूप (५) १० गुणस्थान रूप (६) ११ गुणस्थान रूप

(७) १२ गुणस्थान रूप (८) १३ गुणस्थान रूप (९) १४ गुणस्थान रूप

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	३	१ गुण. २ गुण. ८ गुण.	दो गुणस्थान रूप स्थान तिर्यञ्चगति की अपेक्षा बनता है।
	चारित्र	१	४ गुणस्थान रूप	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	२	१ गुण. ११ गुण.	१ (चौथे) गुणस्थान रूप स्थान तीन गतियों में बनता है।
	चारित्र	१	६ गुणस्थान रूप	
	ज्ञानादि सात	१	२ गुणस्थान रूप	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	३	१ गुण. २ गुण. ९ गुण.	दो गुणस्थान रूप स्थान तिर्यञ्चगति में बनता है।
	मन:पर्ययज्ञान	१	७ गुणस्थान रूप	
	३ अज्ञान	१	२ गुणस्थान रूप	
	चक्षु-अचक्षु.	३	४ गुण. ५ गुण. १२ गुण.	चार गुणस्थान रूप स्थान देव-नारकी की अपेक्षा बनता है।
	अवधिदर्शन	३	१ गुण. २ गुण. ९ गुण.	
	५ लब्धि	३	४ गुण. ५ गुण. १२ गुण.	५ गुण. रूप स्थान तिर्यंच गति की अपेक्षा होता है।
	सम्यक्त्व	३	१ गुण. २ गुण. ४ गुण.	१ गुण. रूप स्थान दो गति में बनता है।
	चारित्र	१	२ गुणस्थान रूप	
	संयमासंयम	१	१ गुणस्थान रूप	पंचम गुणस्थान रूप स्थान होता है।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	४ गुणस्थान रूप	
	तिर्यञ्चगति	१	५ गुणस्थान रूप	भोगभूमि की अपेक्षा चार गुणस्थान रूप स्थान भी बन सकता है।
	मनुष्यगति	१	१४ गुणस्थान रूप	
	देवगति	१	४ गुणस्थान रूप	
	३ कषाय	३	४ गुण. ५ गुण. ९ गुण.	
	लोभकषाय	३	४ गुण. ५ गुण. १० गुण.	
	स्त्रीलिङ्ग	३	४ गुण. ५ गुण. ९ गुण.	४ गुण. रूप स्थान केवल देवगति में बनता है।
	पुरुषलिङ्ग	३	४ गुण. ५ गुण. ९ गुण.	
	नपुंसकलिङ्ग	३	४ गुण. ५ गुण. ९ गुण.	
	मिथ्यादर्शन	१	१ गुणस्थान रूप	मिथ्यात्व गुण. रूप स्थान होता है।
	अज्ञान	३	४ गुण. ५ गुण. १२ गुण.	
	असंयत	१	४ गुणस्थान रूप	
	असिद्धत्व	३	४ गुण. ५ गुण. १४ गुण.	
	कृष्णादि ३ ले.	२	२ गुण. ४ गुण.	२ गुण. स्थान देवगति (भवनत्रिक) की अपेक्षा होता है।
	पीत-पद्म लेश्या	३	४ गुण. ५ गुण. ७ गुण.	
	शुक्ल लेश्या	३	४ गुण. ५ गुण. १३ गुण.	चार गुण.रूप स्थान देवगति की अपेक्षा होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	३	४ गुण. ५ गुण. १४ गुण.	
	भव्यत्व	३	४ गुण. ५ गुण. १४ गुण.	
	अभव्यत्व	१	१ गुणस्थान रूप	चारों गतियों में होता है।

प्रश्न २३ : किस भाव का कौनसा स्थान दो गति की अपेक्षा होता है?

उत्तर : उन भावों के वे स्थान जो दो गति की अपेक्षा होते हैं -

औपशमिक सम्यक्त्व का एक गुणस्थान रूप स्थान - नरक एवं देवगति की अपेक्षा

क्षायोपशमिक के १३

३ ज्ञान - १ गुणस्थान रूप स्थान - नरक एवं देवगति

चक्षु-अचक्षुदर्शन - ४ गुणस्थान रूप स्थान - नरक एवं देवगति

अवधि दर्शन - १ गुणस्थान रूप स्थान - नरक एवं देवगति

५ लब्धियाँ - ४ गुणस्थान रूप स्थान - नरक एवं देवगति

सम्यक्त्व - १ गुणस्थान रूप स्थान - नरक एवं देवगति

संयमासंयम - १ गुणस्थान रूप स्थान - तिर्यञ्च एवं मनुष्यगति

औदयिक के ६ - ४ कषाय १ अज्ञान १ असिद्धत्व - ४ गुणस्थान रूप स्थान- नरक एवं देवगति

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व - ४ गुणस्थान रूप स्थान - नरक एवं देवगति

प्रश्न २४ : कृष्णादि तीन अशुभ लेश्या रूप भाव में २ गुणस्थान रूप स्थान किस अपेक्षा बनता है?

उत्तर : कृष्णादि तीन अशुभ लेश्या रूप भाव में २ गुणस्थान रूप स्थान देवगति की अपेक्षा बनता है -

देवगति में पर्याप्त जीवों के शुभ लेश्याएँ ही होती हैं, मात्र भवनत्रिक देवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में अशुभ लेश्याएँ होती हैं। उनके निर्वृत्य पर्याप्त अवस्था में पहला और दूसरा दो ही गुणस्थान होते हैं, क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव भवनत्रिक में नहीं जाता है तथा तीसरा गुणस्थान पर्याप्त अवस्था में ही होता है। इसलिए उनके २ गुणस्थान रूप स्थान कहा गया है। शेष गतियों में कृष्णादि अशुभ लेश्याओं के साथ ४ गुणस्थान रूप स्थान होता है।

प्रश्न २५ : तीन ज्ञान रूप भावों में स्थानों का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : तीन ज्ञान रूप भावों में स्थानों का विवेचन -

एक गुणस्थान रूप स्थान - नरक एवं देवगति में - चौथा गुणस्थान होता है।

दो गुणस्थान रूप स्थान - तिर्यञ्चगति में - चौथा - पाँचवाँ गुणस्थान

नौ गुणस्थान रूप स्थान - मनुष्यगति में-चौथे से बारहवें गुणस्थान तक/यह स्थान तद्भव मोक्षगामी जीव के होता है।

विशेष - तीनों ज्ञानों में सामान्य अपेक्षा ९ गुणस्थान रूप स्थान बनता है। उपशम श्रेणी की अपेक्षा बारहवाँ एवं क्षपक श्रेणी की अपेक्षा ग्यारहवाँ गुणस्थान नहीं होने से ८ गुणस्थान रूप स्थान ही बनता है।

प्रश्न २६ : कितने भावों में मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा एक गुणस्थान रूप स्थान होता है?

उत्तर : ३४ भावों में मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा एक गुणस्थान रूप स्थान होता है।

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञान २ दर्श. ५ लब्धि

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न २७ : कितने भावों में ५ गुणस्थान रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : २१ भावों में ५ गुणस्थान रूप स्थान भी होता है -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के १२ - ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २८ : कितने भावों में एक स्थान पाया जाता है?

उत्तर : २२ भावों में एक स्थान पाया जाता है -

औपशमिक का १ - चारित्र-४ गुणस्थान रूप

क्षायिक के ८ - (सम्यक्त्व बिना) - चारित्र में ६ गुणस्थान रूप तथा शेष में दो गुणस्थान रूप

क्षायोपशमिक के ६ -

१ ज्ञा. (मन:.) ७ गुणस्थान रूप

३ अज्ञान - २ गुणस्थान रूप

१ चारित्र - २ गुणस्थान रूप

१ संयमासंयम - १ गुणस्थान रूप

औदयिक के ६ - ४ गति. क्रमश: ४ गुण. ५ गुण. १४ गुण. ४ गुण.

मिथ्यादर्शन - १ गुणस्थान रूप

असंयत - ४ गुणस्थान रूप

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व - १ गुणस्थान रूप

प्रश्न २९ : किस भाव का कौनसा स्थान तिर्यञ्चगति की अपेक्षा ही बनता है?

उत्तर : उस भाव का वह स्थान जो तिर्यञ्चगति की अपेक्षा ही बनता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व में २ गुणस्थान रूप स्थान

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञान में २ गुणस्थान रूप स्थान

चक्षु. अच. में - ५ गुणस्थान रूप स्थान

अवधिदर्शन में - २ गुणस्थान रूप स्थान

५ लब्धि में - ५ गुणस्थान रूप स्थान

सम्यक्त्व में - २ गुणस्थान रूप स्थान

औदयिक के १३ -

तिर्यञ्चगति - ५ गुण. रूप स्थान

४ कषाय - ५ गुण. रूप स्थान

३ लिङ्ग - ५ गुण. रूप स्थान

अज्ञा. - ५ गुण. रूप स्थान

असिद्धत्व - ५ गुण. रूप स्थान

३ शुभ लेश्या - ५ गुण. रूप स्थान

पारिणामिक के २ - जीवत्व - ५ गुण. रूप स्थान

भव्यत्व - ५ गुण. रूप स्थान

मिथ्यात्व गुणस्थान देखें - सम्यक्त्व मार्गणा

सासादन गुणस्थान देखें - सम्यक्त्व मार्गणा

सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान देखें - सम्यक्त्व मार्गणा

प्रश्न ३० : कितने भावों में केवल चार गुणस्थान रूप स्थान पाया जाता है?

उत्तर : ४ भावों में केवल चार गुणस्थान रूप स्थान पाया जाता है।

औपशमिक का १ चारित्र - इसमें आठवें से ग्यारहवें तक चार गुणस्थान होते हैं।

औदयिक के ३ - नरकगति देवगति - इनमें पहले से चौथे तक चार गुण. होते हैं।

असंयत - पहले से चौथे तक चार गुणस्थान होते हैं।

अविरत सम्यग्दृष्टि

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	मनुष्यों में कर्मभूमि की अपेक्षा भी होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	३ ज्ञान - मति. श्रु. अव.. ३ दर्शन - च. अच. अव. ५ लब्धि - दा.ला.भो.उप.वी. १ - सम्यक्त्व	 अवधिदर्शन अवधिज्ञानी के ही होता है।
४.	**औदयिक**	२०	४ गति - नर. तिर्य. म. दे. ४ कषाय - क्रो. मा. मा. लो. ३ लिङ्ग - स्त्री. पुरु. नपुं. १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	 स्त्रीलिङ्ग रूप भाव पर्याप्त अवस्था में ही होता है। निर्वृ. में छहों लेश्याएँ केवल मनुष्यों के हो सकती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न ३१ : अविरत सम्यग्दृष्टि जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अविरत सम्यग्दृष्टि जीवों के ३६ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अव.) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
औदयिक के २० - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३२ : अविरत सम्यग्दृष्टि कृष्ण लेश्या वालों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अविरत सम्यग्दृष्टि कृष्ण लेश्या वालों के ३० भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व (कर्मभूमिया मनुष्यों की अपेक्षा)
क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अ.) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
औदयिक के १४ - ३ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. १ ले.
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३३ : कितने भाव किस गति में केवल अविरतसम्यग्दृष्टि के ही होते हैं?

उत्तर : ७ भाव में गति की अपेक्षा केवल अविरतसम्यग्दृष्टि जीव -

औपशमिक सम्यक्त्व - २ गति की अपेक्षा - नरक एवं देवगति

क्षायिक सम्यक्त्व - ३ गति की अपेक्षा - नरक, तिर्यञ्च एवं देवगति

क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञान - दो गति की अपेक्षा - नरक व देवगति

१ दर्शन (अव.) - दो गति की अपेक्षा - नरक व देवगति

१ सम्यक्त्व - दो गति की अपेक्षा - नरक व देवगति

प्रश्न ३४ : अविरत सम्यक्त्व में होने वाले कितने भाव चारों गति में पाये जाते हैं?

उत्तर : अविरत सम्यक्त्व में होने वाले ३६ भावों में से २३ भाव चारों गति में पाये जाते हैं-

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के ७ - ४ क. १ अज्ञा. १ असं. १ असि.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

अर्थात् ४ गति. ३ लिङ्ग तथा ६ लेश्या चारों गति में नहीं पायी जाती है।

सम्यग्दृष्टि देवों के अशुभ लेश्याएँ नहीं होती हैं, क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव भवनत्रिक में नहीं जाता है। अशुभ लेश्याएँ भवनत्रिक देवों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ही होती हैं।

नोट - इसके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी ३६ भाव ही होते हैं।

प्रश्न ३५ : अविरत सम्यग्दृष्टि के कितने योगों में ३ सम्यक्त्व रूप भाव होते हैं?

उत्तर : अविरत सम्यग्दृष्टि के १२ योगों में ३ सम्यक्त्व रूप भाव होते हैं -

४ मनोयोग - सत्य., असत्य., अनुभय, उभय.

४ वचन योग - सत्य., असत्य., अनुभय., उभय.

४ काययोग - औदारिक काययोग, वैक्रियिक काययोग वैक्रियिक मिश्र काययोग तथा कार्मण काययोग

प्रश्न ३६ : अविरत सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कृष्णादि अशुभ लेश्या रूप भाव किस अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : अविरत सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्तअवस्था में कृष्णादि अशुभ लेश्या रूप भाव में अपेक्षा-

१) नरक से कोई सम्यग्दृष्टि जब मनुष्यगति में आता है तो उसके एक अन्तर्मुहूर्त्त तक पूर्व की लेश्या समाप्त नहीं होती है इसलिए उसके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कृष्णादि अशुभ लेश्या बनती है।

२) कोई बद्धायुष्क सम्यग्दृष्टि जब नरक, मनुष्य या तिर्यञ्चगति में जाता है तब उसके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कापोत लेश्या होती है।

शेष सम्यग्दृष्टियों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में शुभ लेश्याएँ ही होती हैं।

विशेष - क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा तीनों अशुभ लेश्याएँ एवं क्षायिक तथा कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा कापोत लेश्या होती है लेकिन उपशम सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा अशुभ लेश्याएँ नहीं होती हैं, क्योंकि उपशमसम्यग्दृष्टि वैमानिक देवों में ही उत्पन्न हो सकता है।

प्रश्न ३७ : अविरत सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कापोत लेश्या कितनी गति रूप भावों की अपेक्षा होती है?

उत्तर : अविरत सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कापोत लेश्या ३ गति रूप भावों की अपेक्षा होती है - नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति

नरक गति रूप भाव - यह प्रथम नरक में ही जाता है वहाँ कापोत लेश्या ही होती है। तिर्यंच गति रूप भाव - भोगभूमि में जाता है वहाँ सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कापोत लेश्या ही होती है।

मनुष्य गति रूप भाव - भोगभूमिया मनुष्य बनता है तब तथा प्रथम द्वितीय नरक से सम्यक्त्व को लेकर आता है तब कापोत लेश्या ही होती है और तृतीय नरक से आते समय कापोतलेश्या भी होती है।

प्रश्न ३८ : अविरत-सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने योगों के साथ पुरुषवेद रूप भाव ही होता है।

उत्तर : अविरत सम्यग्दृष्टि के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में केवल एक योग के साथ पुरुष वेद रूप भाव ही होता है।

औदारिक मिश्र काय योग

प्रश्न ३९ : अविरत-सम्यग्दृष्टि के क्षायिक सम्यक्त्व के साथ किस भाव का एक उत्तर भेद नहीं होता है?

उत्तर : अविरत-सम्यग्दृष्टि के क्षायिक सम्यक्त्व के साथ दो भावों का एक-एक उत्तर भेद नहीं होता है -

औदयिक का - मिथ्यादर्शन, पारिणामिक का - अभव्यत्व

प्रमत्त - अप्रमत्त संयत

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	
३.	**क्षायोपशमिक**	१४	४ ज्ञान - म.श्रु. अव. मन:.	आहारकद्विक वालों के मन:पर्ययज्ञान नहीं होता है।
			३ दर्शन - चक्षु. अच. अव.	
			५ लब्धि - दा. ला. भो. उप. वी.	
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - चारित्र	
४.	**औदयिक**	१३	१ गति - मनुष्य	
			४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो.	संज्वलन कषाय ही होती है।
			३ लिङ्ग - स्त्री.पुरु.नपु.	भाववेद की अपेक्षा जानना चाहिए
			१ - अज्ञान	
			१ - असिद्धत्व	
			३ लेश्या - पी.प.शु.	
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व	
			भव्यत्व	

प्रश्न ४० : प्रमत्त एवं अप्रमत्त गुणस्थान में कितने भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : प्रमत्त एवं अप्रमत्त गुणस्थान में ३१ भाव पाये जाते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १४ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के १३ - १ ग. (म.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४१ : प्रमत्त गुणस्थान में कितने भाव नियम से होते हैं?

उत्तर : प्रमत्त गुणस्थान में १७ भाव नियम से होते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - १ ज्ञा. १ दर्श. ५ ल. १ चा.

औदयिक के ६ - १ ग. (म.) १ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट - औपशमिक, क्षायिक एवं क्षायोपशमिक में से कोई एक सम्यक्त्व भी अवश्य होगा। इसलिए १७ भाव कहे गये हैं। ये भाव एक समय में एक जीव की अपेक्षा जानना चाहिए। पूरे जीवन काल में ज्ञानादि के परिवर्तन से अधिक भाव हो सकते हैं।

प्रश्न ४२ : प्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती मन:पर्ययज्ञानी के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : प्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती मन:पर्ययज्ञानी के २६ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ११ - १ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के ११ - १ ग. (म.) ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

इसी प्रकार अप्रमत्त संयत के भी जानना चाहिए।

प्रश्न ४३ : प्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती ७ प्राण वालों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : प्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती ७ प्राण वालों के २७ भाव होते हैं -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के ११ - १ ग. (म.) ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट - ये भाव आहारकमिश्र काय योग की अपेक्षा होते हैं, क्योंकि छठे गुणस्थान में ७ प्राण आहारकमिश्र अवस्था में ही पाये जाते हैं। इतने ही भाव इनकी निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में भी होते हैं।

प्रश्न ४४ : प्रमत्त संयत गुणस्थान में ज्ञानावरणीय कर्म की अपेक्षा होने वाले कितने भाव नहीं होते हैं?

उत्तर : प्रमत्त संयत गुणस्थान में ज्ञानावरणीय कर्म की अपेक्षा से होने वाले ४ भाव नहीं होते हैं -

क्षायिक का १ - ज्ञान

क्षायोपशमिक के ३ - कुमति. कुश्रुत. विभंगावधि

अर्थात् ज्ञानावरणीय कर्म की अपेक्षा से होने वाले ४ ज्ञा. एवं औदयिक अज्ञान रूप भाव होते हैं तथा उपर्युक्त ४ भाव नहीं होते हैं।

प्रश्न ४५ : क्या उपशम सम्यग्दृष्टि और क्षायिक सम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवों के भावों में कुछ अन्तर है?

उत्तर : नहीं, इन दोनों सम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवों के भावों में कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि दोनों के २९-२९ भाव होते हैं। इन दोनों के दो-दो सम्यक्त्व कम हो जाते हैं। विशेष यह है कि मन:पर्ययज्ञान द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा होता है प्रथमोपशम सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा यह एक भाव और कम हो जाने से २८ भाव ही होते हैं।

जिनको अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है उनके अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान तथा अवधिदर्शन ये तीन भाव कम हो जाने से २६-२६ भाव ही होते हैं।

यहाँ नाना जीवों की अपेक्षा कथन होने से यह नहीं सोचना चाहिए कि मन:पर्ययज्ञान के साथ स्त्री एवं नपुंसक वेद कैसे होता होगा। यहाँ मन:पर्ययज्ञानी जीव स्वामी नहीं है। यहाँ प्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती जीव स्वामी है इसलिए मन:पर्ययज्ञान और स्त्री एवं नपुंसक लिङ्ग का अस्तित्व एक साथ बन जाता है।

प्रश्न ४६ : अप्रमत्त संयत कृतकृत्य वेदक के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अप्रमत्त संयत कृतकृत्य वेदक के २९ भाव होते हैं।

क्षायोपशमिक के १४ - ४ ज्ञान, ३ दर्शन ५ लब्धि १ सम्य. १ चारित्र

औदयिक के १३ - १ गति, ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ शुभ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४७ : अप्रमत्तसंयत के किस-किस कर्म के क्षयोपशम से होने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : अप्रमत्तसंयत के चार घातिया कर्म के क्षयोपशम से होने वाले भाव होते हैं -

ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से ४ ज्ञान - मति.श्रुत.अवधि. मन:पर्यय.

दर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से ३ दर्शन - चक्षु. अचक्षु. अवधि.

अन्तराय कर्म के क्षयोपशम से ५ लब्धि - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से २ - सम्यक्त्व, चारित्र

अपूर्वकरण गुणस्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व	द्वितीयोपशम की अपेक्षा होता है।
			चारित्र	उपशम श्रेणी में ही होता है।
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	४ ज्ञान - म. श्रु. अव. मन:.	दोनों श्रेणियों में हो सकते हैं।
			३ दर्शन - चक्षु. अच. अव.	दोनों श्रेणियों में हो सकते हैं।
			५ लब्धि - दा.ला.भो.उप.वी.	दोनों श्रेणियों में हो सकते हैं।
४.	**औदयिक**	११	१ गति - मनुष्य	
			४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो.	
			३ लिङ्ग - स्त्री. पुरु. नपुं.	भाव की अपेक्षा तीनों लिङ्ग हो सकते हैं।
			१ - अज्ञान	
			१ - असिद्धत्व	
			१ लेश्या - शुक्ल	
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व	
			भव्यत्व	

प्रश्न ४८ : अपूर्वकरण गुणस्थान में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अपूर्वकरण गुणस्थान में २९ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ११ - १ ग. (म.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४९ : अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती स्त्रीवेदी के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती स्त्रीवेदी के २६ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ९ - १ ग. (म.) ४ क. १ लि. (स्त्री.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५० : अपूर्वकरण गुणस्थान में ज्ञानावरण कर्म की अपेक्षा से होने वाले कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अपूर्वकरण गुणस्थान में ज्ञानावरण कर्म की अपेक्षा से होने वाले ५ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के ४ - मति. श्रुत. अव. मन:पर्यय.

औदयिक का १ - अज्ञान।

प्रश्न ५१ : अपूर्वकरण गुणस्थान में होने वाले कितने भावों के साथ सभी भाव अर्थात् २९ भाव हो सकते हैं?

उत्तर : अपूर्वकरण गुणस्थान में होने वाले ११ भावों के साथ सभी भाव हो सकते हैं-

क्षायोपशमिक की ५ लब्धियाँ - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

औदयिक के ४ - १ गति (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५२ : इस गुणस्थान में किस-किस कर्म के उदय से होने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में कर्म के उदय से होने वाले भाव -

ज्ञानावरण कर्म के उदय से - १ भाव-अज्ञान

मोहनीय कर्म के उदय से - ७ भाव-४ कषाय, ३ लिंग

नाम कर्म के उदय से - २ भाव-मनुष्यगति, शुक्ल लेश्या

आठों कर्मों के उदय से - १ भाव-असिद्धत्व

नोट - १) अपूर्वकरण क्षपक के औपशमिक के दो भाव कम कर देने पर २७ भाव होते हैं।

२) इसमें निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	उपशम श्रेणी में भी होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	४ ज्ञान - म.श्रु.अव.मनः. ३ दर्शन - चक्षु. अच. अव. ५ लब्धि - दा.ला.भो.उप.वी.	मनःपर्ययज्ञान भी दोनों श्रेणियों में होता है।
४.	**औदयिक**	११	१ गति - मनुष्य ४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो. ३ लिङ्ग - स्त्री.पुरु. नपुं. १ - अज्ञान १ - असिद्धत्व १ लेश्या - शुक्ल	 द्रव्य की अपेक्षा पुरुषलिङ्ग ही होता है। भाव से शुक्ल लेश्या ही होती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न ५३ : अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में २९ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ११ - १ ग (म.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५४ : क्या पूरे अनिवृत्तिकरण गुणस्थान वालों के २९ भाव हो सकते हैं?

उत्तर : नहीं, अनिवृत्तिकरण गुणस्थान वालों के जब तक नपुंसक वेद की उदय व्युच्छित्ति नहीं होती है तब तक २९ भाव हो सकते हैं। उसके बाद -

जब नपुंसक वेद की व्युच्छित्ति हो जाती है तब २८ (नपुंसकवेद बिना)

जब स्त्रीवेद की व्युच्छित्ति हो जाती है तब २७ (नपुं. तथा स्त्री. बिना)

जब पुरुषवेद की व्युच्छित्ति हो जाती है तब २६ (तीन वेद बिना)

जब क्रोध की व्युच्छित्ति हो जाती है तब २५ (तीन वेद एवं क्रोध बिना)

जब मान की व्युच्छित्ति हो जाती है तब २४ (तीन वेद एवं क्रोध-मान बिना) जब माया की व्युच्छित्ति हो जाती है तब २३ (तीन वेद एवं तीन कषाय बिना) इस प्रकार नवें गुणस्थान में अधिक-से-अधिक २९ एवं कम-से-कम २३ भाव हो सकते हैं। **(गो.क.)**

प्रश्न ५५ : अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में कितने भावों के दो-दो उत्तर भेद पाये जाते हैं -

उत्तर : अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में ३ भावों के दो-दो उत्तर भेद पाये जाते हैं -

(१) औपशमिक के - सम्यक्त्व, चारित्र

(२) क्षायिक के - सम्यक्त्व, चारित्र

(३) पारिणामिक के - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५६ : क्या अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में पाँचों मूल भाव हो सकते हैं?

उत्तर : हाँ, अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में पाँचों मूल भाव हो सकते हैं -
क्षायिक सम्यग्दृष्टि जब उपशम श्रेणी चढ़ते हैं तब उनकी अपेक्षा ही पाँचों मूल भाव होते हैं।

१) क्षपक श्रेणी वालों के औपशमिक भाव बिना चार मूल भाव होते हैं, क्योंकि उपशमसम्यग्दृष्टि क्षपक श्रेणी नहीं चढ़ सकते हैं।

२) जो उपशम सम्यग्दृष्टि जीव उपशम श्रेणी चढ़ते हैं उनके भी क्षायिक भाव बिना चार मूल भाव होते हैं।

प्रश्न ५७ : अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती अचक्षुदर्शनी के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती अचक्षुदर्शनी के २७ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १० - ४ ज्ञा. १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के ११ - १ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट - सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान देखें - संयम मार्गणा

उपशान्तकषायवीतराग गुणस्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा होता है।
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	४ ज्ञान - म. श्रु. अव. मनः. ३ दर्शन - चक्षु. अच. अव. ५ लब्धि - दा.ला.भो.उप.वीर्य.	
४.	**औदयिक**	४	१ गति - मनुष्य १ - अज्ञान १ - असिद्धत्व १ लेश्या - शुक्ल	सभी जीवों के होती है। सभी जीवों के होता है। सभी जीवों के होता है। सभी जीवों के होती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	सभी जीवों के होता है। सभी जीवों के होता है।

प्रश्न ५८ : ग्यारहवें गुणस्थान में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : उपशान्त कषाय नाम के ग्यारहवें गुणस्थान में २१ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
औदयिक के ४ - १ ग. (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले.
पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न ५९ : उपशान्त कषाय गुणस्थान में कितने भावों का केवल एक उत्तर भेद पाया जाता है?

उत्तर : उपशान्त कषाय गुणस्थान में केवल एक भाव का एक उत्तर भेद पाया जाता है - क्षायिक भाव का - सम्यक्त्व

विशेष - क्षायिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा औपशमिक भाव का भी एक ही उत्तर भेद पाया जाता है।

उपशम सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा ग्यारहवें गुणस्थान में एक भी भाव का एक भी उत्तर भेद नहीं पाया जाता है।

प्रश्न ६० : क्या ग्यारहवें गुणस्थान में एक जीव की अपेक्षा भी औपशमिक और क्षायिक दोनों सम्यक्त्व रूप भाव हो सकते हैं?

उत्तर : नहीं, सामान्य रूप से ग्यारहवें गुणस्थान में एक जीव के दोनों सम्यक्त्व रूप भाव नहीं हो सकते हैं, क्योंकि एक समय में एक सम्यक्त्व ही हो सकता है अर्थात् जिस समय मोहनीय कर्म का उपशम होगा, उस समय क्षय नहीं होगा और जिस समय क्षय होगा तब उपशम नहीं। विशेष रूप से कोई उपशम सम्यग्दृष्टि उपशम श्रेणी चढ़कर गिरकर क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त करके यदि पुन: उपशम श्रेणी चढ़ता है तो उसके अपने जीवन में ग्यारहवें गुणस्थान में औपशमिक और क्षायिक दोनों सम्यक्त्व रूप भाव हो सकते हैं। इसी प्रकार आठवें नवें एवं दसवें गुणस्थान में भी जानना चाहिए।

नोट - क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थान में उपशान्त कषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थान वालों से केवल एक भाव कम होता है। उपशान्त कषाय वालों के होने वाले २१ भावों में से इनके औपशमिक सम्यक्त्व एवं औपशमिक चारित्र भाव नहीं होते हैं तथा क्षायिक चारित्र रूप भाव होता है इसलिए इनके २० भाव ही होते हैं -

क्षायिक के २	- सम्यक्त्व चारित्र
क्षायोपशमिक के १२	- ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
औदयिक के ४	- १ ग. १ अज्ञा. १ असि. १ ले.
पारिणामिक के २	- जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ६१ : क्या बारहवें गुणस्थान में जाने वाले ग्यारहवें गुणस्थान में भी जाते हैं?

उत्तर : नहीं, बारहवें गुणस्थान में जाने वाले ग्यारहवें गुणस्थान में नहीं जाते हैं। ये सीधे दसवें गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान में चले जाते हैं। ग्यारहवें गुणस्थान में चारित्रमोहनीय कर्म का उपशम करने वाले ही जाते हैं इसीलिए वे गिरकर नीचे आ जाते हैं, क्योंकि उनके मोहनीय कर्म नीचे दबा रहता है अर्थात् उदय के बिना सत्ता में स्थित रहता है। इसलिए गुणस्थान का काल समाप्त होने पर या भव के क्षय हो जाने पर मुनिराज गुणस्थान से गिर जाते हैं। क्षपक श्रेणी वाले दसवें गुणस्थान तक ही चारित्र मोहनीय कर्म को भी मूल से नाश करके बारहवें गुणस्थान में पहुँच जाते हैं इसलिए बारहवें गुणस्थान में जाने वाले को ग्यारहवें गुणस्थान में जाने की आवश्यकता नहीं रहती है।

सयोग केवली

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**क्षायिक**	९	ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य सम्यक्त्व चारित्र	तीर्थंकर भगवान के सभी लब्धियाँ व्यक्त रूप से होती हैं।
२.	औदयिक	३	१ गति - मनुष्य १ - असिद्धत्व १ लेश्या - शुक्ल	समुद्घात अवस्था में भी पाई जाती है।
३.	पारिणामिक	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न ६२ : सयोगकेवली गुणस्थान (भगवान) में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सयोगकेवली गुणस्थान (भगवान) में १४ भाव होते हैं -

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन....

औदयिक के ३ - १ ग. १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ६३ : सयोगकेवली गुणस्थान में कितने कर्मों की अपेक्षा से होने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : सयोगकेवली गुणस्थान में सामान्य रूप से ५ कर्मों की अपेक्षा से होने वाले भाव होते हैं -

ज्ञानावरणी कर्म के क्षय से १ - क्षायिक ज्ञान

दर्शनावरणी कर्म के क्षय से १ - क्षायिक दर्शन

मोहनीय कर्म के क्षय से २ - क्षायिक सम्यक्त्व क्षायिक चारित्र

अन्तराय कर्म के क्षय से ५ - क्षायिक दान क्षायिक लाभ क्षायिक भोग क्षायिक उपभोग क्षायिक वीर्य

नामकर्म के उदय से १ - मनुष्यगति

चार अघातिया कर्म के उदय से १ - असिद्धत्व

नामकर्म के उदय से १ - शुक्ल लेश्या

कहा भी है - शरीर नामकर्म के उदय से उत्पन्न योग भी लेश्या है।

विशेष रूप से असिद्धत्व भाव आठों कर्मों की अपेक्षा से होता है।

प्रश्न ६४ : सयोग केवली भगवान के क्षायोपशमिक भाव क्यों नहीं होते हैं?

उत्तर : क्षयोपशम घातिया कर्मों का ही होता है, क्योंकि उन्हीं में सर्वघाती एवं देशघाती स्पर्धक होते हैं। केवली भगवान के चार घातिया कर्मों का पूर्ण रूप से (बन्ध उदय सत्ता) नाश हो गया है इसलिए उनके क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं।

विशेष - १) सयोग केवली भगवान के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था एवं कार्मण काययोग के समय भी इतने ही भाव होते हैं।

२) चौदहवें गुणस्थान में इनमें से एक लेश्या को छोड़कर शेष १३ भाव होते हैं।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ६५ : किस गुणस्थान में सबसे कम क्षायोपशमिक भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : पहले एवं दूसरे गुणस्थान में सबसे कम क्षायोपशमिक भाव पाये जाते हैं -

यहाँ दस क्षायोपशमिक भाव होते हैं -

३ अज्ञान - कुमति कुश्रुत विभंग.

२ दर्शन - चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन

५ लब्धि - दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

नोट - तीसरे गुणस्थान में अज्ञान के स्थान पर मिश्र ज्ञान होते हैं। इसलिए इनका यहाँ ग्रहण नहीं किया गया है।

प्रश्न ६६ : किस-किस गुणस्थान में बराबर औदयिक भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : दूसरे-तीसरे चौथे गुणस्थान में - २०-२० (मिथ्यात्व बिना)

छठे-सातवें गुणस्थान में - १३-१३

आठवें - नवें गुणस्थान में - ११-११

ग्यारहवें - बारहवें गुणस्थान में - ४-४ (मनुष्यगति, अज्ञान, असिद्धत्व, शुक्ललेश्या)

प्रश्न ६७ : कितने गुणस्थानों में कषाय रूप भाव के साथ क्षायिक सम्यक्त्व पाया जाता है?

उत्तर : ७ गुणस्थानों में कषाय रूप भाव के साथ क्षायिक सम्यक्त्व पाया जाता है - चौथे से दसवें तक।

प्रश्न ६८ : कितने गुणस्थानों में चार ज्ञान रूप भावों के साथ अज्ञान रूप भाव पाया जाता है?

उत्तर : ७ गुणस्थानों में चार ज्ञान रूप भावों के साथ अज्ञान रूप भाव पाया जाता है - छठे से बारहवें तक।

प्रश्न ६९ : कितने गुणस्थानों में चक्षुदर्शन रूप भाव के साथ शुक्ललेश्या भी पाई जाती है?

उत्तर : सात गुणस्थानों में चक्षुदर्शन रूप भाव के साथ शुक्ल लेश्या भी पाई जाती है - पहले से सातवाँ, यहाँ अन्य लेश्याएँ भी पाई जाती हैं।

प्रश्न ७० : कितने गुणस्थानों में क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव के साथ कृष्ण लेश्या भी पाई जाती है?

उत्तर : केवल एक गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव के साथ कृष्ण लेश्या भी पायी जाती है - चौथा गुणस्थान

यह केवल कर्मभूमिया मनुष्यों की अपेक्षा जानना चाहिए क्योंकि अन्य गतियों में कृष्ण लेश्या के साथ क्षायिक सम्यक्त्व नहीं हो सकता है।

प्रश्न ७१ : किस गुणस्थान का कौनसा भाव केवल मनुष्यगति में ही पाया जाता है?

उत्तर : पहले गुण. से चौदहवें गुण. तक का - मनुष्यगति रूप भाव

छठे से बारहवें गुणस्थान तक का - मन:पर्ययज्ञान रूप भाव

छठे - सातवें गुणस्थान का - क्षायोपशमिक चारित्र रूप भाव

आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान का - औपशमिक चारित्र रूप भाव

आठवें नवें दसवें एवं बारहवें से चौदहवें गुणस्थान तक का - क्षायिक चारित्र रूप भाव

तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान के ७ - क्षायिक ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

यद्यपि क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव चारों गतियों में पाया जाता है तथापि पाँचवें गुणस्थान में पाया जाने वाला क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव मात्र मनुष्य गति में ही पाया जाता है।

प्रश्न ७२ : किस गुणस्थान के कौन से भाव सम्यग्ज्ञानी जीवों के ही होते हैं?

उत्तर : गुणस्थान एवं वे भाव जो सम्यग्ज्ञानी जीवों के ही होते हैं -

चौथे गुणस्थान के ७ -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञा. (मन:. बिना) १ दर्श. (अव.) १ सम्य.

पाँचवें गुणस्थान के ८ -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ६ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अव.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ संय.

छठे-सातवें गुणस्थान के ९ -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ७ - ४ ज्ञा. १ दर्श. १ सम्य. १ चारि.

आठवें से दसवें गुणस्थान के ९ -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के ५ - ४ ज्ञा. १ दर्श.

ग्यारहवें गुणस्थान के ८ - औपशमिक के २, क्षायिक का १ (सम्य.) क्षायो. के ५ (४ ज्ञा. १ दर्श.)

बारहवें गुणस्थान के ७ - क्षायिक के २ क्षायोपशमिक के ५ (४ ज्ञा. १ दर्श.)

तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान के ९ - क्षायिक ज्ञान.....।

प्रश्न ७३ : कितने स्थान केवलज्ञानी के एवं मिथ्याज्ञानी दोनों के होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान ऐसा है जो केवलज्ञानी के एवं मिथ्याज्ञानी दोनों के होता है - २ गुणस्थान रूप स्थान

इसमें केवली भगवान के तेरहवाँ एवं चौदहवाँ गुणस्थान और मिथ्याज्ञानी के पहला दूसरा

प्रश्न ७४ : कितने गुणस्थानों में मोहनीय कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : सभी गुणस्थानों में मोहनीय कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भाव होते हैं -

मिथ्यात्व गुणस्थान में - ९ - ४ क. ३ लि. १ मि. १ असं.

सासादनसम्यक्त्व तथा सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में - ८ - ४ क. ३ लि. १ असंयत

अविरतसम्यक्त्व गुणस्थान में - ११

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व - दर्शनमोह के उपशम से

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व - दर्शनमोह के क्षय से

क्षायोपशमिक का १ - सम्यक्त्व - दर्शनमोह के क्षयोपशम से

औदयिक के ८ - ४ क. ३ लि. १ असं.

संयमासंयम गुणस्थान में ११

औपशमिक का १ - सम्य., क्षायिक का १ सम्य.

क्षायोपशमिक के २ - सम्यक्त्व, संयमासंयम

औदयिक के ७ - ४ क. ३ लि.

प्रमत्त-अप्रमत्त गुणस्थान में - ११

औपशमिक का १ - सम्य. क्षायिक का १ सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के २ - सम्य. चारि.

औदयिक के ७ - ४ क. ३ लि.

अपूर्वकरण गुणस्थान में - ११

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

औदयिक के ७ - ४ क. ३ लि.

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में - ११

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र (चारित्र मोह के उपशम से)

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र (चारित्रमोह के क्षय से)

औदयिक के ७ - ४ क. ३ लि.

नोट - इसमें वेद आदि की व्युच्छित्ति होने पर कम भाव भी हो सकते हैं।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में - ५

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

औदयिक का १ - लोभ कषाय

उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थान में - ३

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थ गुणस्थान में - २

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

सयोगकेवली गुणस्थान में - २

क्षायिक सम्यक्त्व, चारित्र

अयोग केवली गुणस्थान में - २

क्षायिक - सम्यक्त्व, चारित्र

१) लेश्या नामकर्म के उदय से होती है इसलिए यहाँ उनका ग्रहण नहीं किया है।

२) असिद्धत्व भाव में भी मोहनीय कर्म के उदय की अपेक्षा रहती है।

प्रश्न ७५ : नवें गुणस्थान को क्षपक एवं उपशमक के स्वतंत्र रूप से अलग-अलग गुणस्थान क्यों नहीं कहे हैं?

उत्तर : नहीं, क्योंकि इस गुणस्थान के कारणभूत अनिवृत्ति रूप परिणामों की समानता दिखाने के लिए उन दोनों में एकता कही है। अर्थात् क्षपक और उपशमक इन दोनों में अनिवृत्ति रूप परिणामों की अपेक्षा समानता है। **(ध.१/१८७)**

प्रश्न ७६ : औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में ८ गुणस्थान रूप स्थान किस अपेक्षा बनता है?

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में ८ गुणस्थान रूप स्थान द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा बनता है। इसमें चौथे से ग्यारहवें तक ८ गुण. होते हैं। प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ श्रेणी नहीं चढ़ सकता है इसलिए उसकी अपेक्षा तो चार गुणस्थान रूप स्थान बनता है। इसमें चौथे से सातवाँ गुणस्थान होता है।

प्रश्न ७७ : कितने भाव एवं कितने गुणस्थानों को प्राप्त किये बिना भी जीव मोक्ष जा सकता है?

उत्तर : १० भाव एवं पाँच गुणस्थानों को प्राप्त किये बिना भी जीव मोक्ष जा सकता है -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के ५ - २ ज्ञान (अवधि.मन:पर्यय) १ अज्ञान (विभंग.) १ दर्शन (अव.) १ संयमासंयम

औदयिक के ४ - २ गति (न.देव.) २ वेद (स्त्री. पुरुष.)

तथा दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ एवं ग्यारहवाँ, इन ५ गुणस्थानों को प्राप्त किये बिना भी मोक्ष जा सकता है।

नोट - १) निगोद से निकलकर नपुंसक वेद वाला ही बनकर मोक्ष जा सकता है, क्योंकि भाव से तीनों वेद वाले क्षपक श्रेणी चढ़ सकते हैं।

२) संभव है कोई पीत-पद्म लेश्या रूप भाव को प्राप्त नहीं करे। इसमें शुक्ल लेश्या के काल का विचार करके कथन करना चाहिए।

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **कितने गुणस्थानों में सम्यक्त्व रूप भाव होते हैं?**

(अ) ११ (ब) १०
(स) १ (द) १४

(ii) **कितने गुणस्थानों में औदयिक भाव नहीं होते हैं?**

(अ) १३ (ब) १
(स) १२ (द) कोई नहीं

(iii) **कितने गुणस्थानों में औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव भी होता है?**

(अ) ८ (ब) ४
(स) ७ (द) ९

(iv) **क्षायोपशमिक भाव के साथ औदयिक भाव कितने गुणस्थानों में होते हैं?**

(अ) ८ (ब) ९
(स) १२ (द) १४

(v) **क्षायिक चारित्र रूप भाव कितने गुणस्थान रूप स्थान में आता है?**

(अ) ५ (ब) ७
(स) ३ (द) ६

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) कितने गुणस्थानों में पाँच क्षायिक लब्धिरूप भाव नहीं होते हैं?
(ii) कितने गुणस्थानों में औदयिक भाव के दो भेद होते हैं?
(iii) कितने गुणस्थानों में शुक्ल लेश्या रूप भाव भी होता है?
(iv) किस गुणस्थान में लिङ्ग रूप भाव का अभाव भी होता है?
(v) किस गुणस्थान में केवल एक कषाय रूप भाव रहता है?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) दो गुणस्थानों में क्षायोपशमिक एवं क्षायिक दोनों लब्धि रूप भाव होते हैं।
(ii) औदयिक भाव सभी गुणस्थानों में होता है।
(iii) गुणस्थानातीत जीवों के भी पारिणामिक भाव होता है।
(iv) चौदहवें गुणस्थान में तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं।
(v) तीसरे गुणस्थान में विभंगज्ञान रूप भाव भी होता है।

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए -

(i) दूसरे गुणस्थान में ………………… औदयिक ………………… लेश्या रूप तथा …………………पारिणामिक भाव होते हैं।

(ii) आठवें गुणस्थान में औपशमिक के ………………… क्षायिक के ………………… तथा ………………… लेश्या रूप भाव होते हैं।

(iii) मिश्र गुणस्थान में ………………… लब्धि रूप ………………… गति रूप तथा ………………… कषाय रूप भाव होते हैं।

(iv) ………………… गुणस्थान में संयमासंयम ………………… गुणस्थान में मनुष्यगति रूप भाव होता है।

(v) ………………… गुणस्थानों में औपशमिक चारित्र ………………… गुणस्थानों में क्षायिक चारित्र रूप भाव होता है।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	१३ गुणस्थान	-	८ गुणस्थान
(ii)	५ मूल भाव	-	४ गुणस्थान
(iii)	६ लेश्या रूप भाव	-	१३ वाँ - १४ वाँ गुणस्थान
(iv)	३४ भाव	-	क्षायिक चारित्र रूप भाव
(v)	सबसे कम भाव	-	१३ गुणस्थान
(vi)	क्षायिक लब्धि रूप भाव	-	शुक्ल लेश्या रूप भाव
(vii)	६ गुणस्थान	-	पहला गुणस्थान
(viii)	२ पारिणामिक भाव	-	चौदहवाँ गुणस्थान

- उत्तरमाला -

१. (i) अ (ii) द (iii) अ (iv) स (v) द

२. (i) १२ (ii) १ (iii) ७ (iv) ९वें (v) १०वें

३. (i) ना (ii) हाँ (iii) हाँ (iv) हाँ (v) ना

४. (i) २०, ६, २ (ii) २, २, १ (iii) ५, ४, ४ (iv) १ (५वाँ), १४ (v) ४, ६

५. (i) शुक्ल लेश्या (ii) ८ गुणस्थान
(iii) ४ गुणस्थान (iv) पहला गुणस्थान
(v) चौदहवाँ गुणस्थान (vi) १३वाँ-१४वाँ गुणस्थान
(vii) क्षायिक चारित्र (viii) १३ गुणस्थान

ग्रन्थ का मध्यम

मंगलाचरण

श्रुतमपि जिनवरविहितं गणधररचितं द्व्यनेक भेदस्थम्
अङ्गाङ्गबाह्यभावितमनन्तविषयं नमस्यामि ।।१।।
क्षायिक मनन्तमेकं त्रिकालसर्वार्थयुगपदवभासम्।
सकलसुखधामसततं वन्देऽहं केवलज्ञानम्।।२।।

जीव समास

प्रश्न १ : जीवसमास किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके द्वारा अनेक जीव तथा उनकी अनेक प्रकार की जातियाँ जानी जाती हैं, अनेक अर्थों के संग्रह करने वाले उन धर्मों को जीव समास कहते हैं। **(ध.२/४२०)**

अनन्तानन्त जीव जिसमें संग्रह किये जाते हैं उन्हें जीवसमास कहते हैं। **(ध.१/१३२)**

जिन धर्मविशेषों के द्वारा नाना जीव और उनकी नाना प्रकार की जातियाँ जानी जाती हैं, पदार्थों का संग्रह करने वाले उन धर्मविशेषों को जीव समास कहते हैं। **(पं.सं. प्रा. १/३२)**

त्रस-स्थावर, बादर-सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्त, प्रत्येक-साधारण ऐसी नामकर्म की प्रकृतियों के चार युगलों में यथासम्भव परस्पर विरोध रहित जो प्रकृतियाँ, उनके साथ मिला हुआ जो एकेन्द्रिय आदि जाति रूप नामकर्म का उदय, उसके होने पर जो तद्भाव सादृश्य सामान्य रूप जीव के धर्म हैं, वे जीवसमास हैं। **(गो.जी. ७१)**

प्रश्न २ : जीवसमास कितने होते हैं?

उत्तर : जीवसमास के १४ भेद होते हैं -

एकेन्द्रिय बादर, एकेन्द्रिय सूक्ष्म, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तथा संज्ञी पञ्चेन्द्रिय, इनके पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से जीव समास के - १४ भेद होते हैं। **(द्र.सं.१२)**

जीवसमास के १९ भेद होते हैं -

नित्यनिगोद इतरनिगोद पृथ्वीकायिक जलकायिक अग्निकायिक एवं वायुकायिक ये सूक्ष्म एवं बादर के भेद से दो-दो प्रकार के होते हैं इसलिए १२ + प्रत्येक वनस्पति दो प्रकार की सप्रतिष्ठित प्रत्येक और अप्रतिष्ठित प्रत्येक = १४ इनमें द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय संज्ञीपञ्चेन्द्रिय तथा असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय, ये ५ जीवसमास मिला देने पर १९ जीवसमास होते हैं।

इनके पर्याप्त - अपर्याप्त रूप भेद करने पर १९ X २ = ३८ भेद होते हैं। इन्हीं के पर्याप्त निर्वृत्यपर्याप्त एवं अपर्याप्तक रूप भेद करने पर ५७ जीवसमास बन जाते हैं। और भी अनेक प्रकार के जीवसमास होते हैं, उन्हें आगम से जानना चाहिए। **(गो.जी.७३)**

प्रश्न ३ : सयोग केवली एवं अयोग केवली भगवान संज्ञित्व-असंज्ञित्व से रहित होते हैं तो क्या वे समासातीत होते हैं?

उत्तर : सयोग केवली एवं अयोग केवली भगवान संज्ञित्व-असंज्ञित्व से रहित होने पर भी समासातीत नहीं होते हैं उनके आचार्य कुन्दकुन्द महाराज ने पञ्चेन्द्रिय जीवसमास माना है। **(बो.पा.३५)**

प्रश्न ४ : सयोग केवली भगवान को समासातीत (अतीत जीवसमास) क्यों नहीं कहा है?

उत्तर : नहीं, क्योंकि द्रव्य मन के अस्तित्व और भूतपूर्व न्याय के आश्रय से सयोग केवली के संज्ञीपना माना गया है। अथवा पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, प्रत्येक शरीर वनस्पतिकायिक, साधारण वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवों के पर्याप्त और अपर्याप्त सम्बन्धी चौदह जीवसमासों में सात अपर्याप्त जीवसमासों में से कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुद्घातगत सयोगिकेवली का अन्तर्भाव माना जाने से उन्हें अतीत जीवसमास वाला नहीं कहा है। यही अर्थ सर्वत्र कहना चाहिए। **(ध.२/६५४)**

प्रश्न ५ : जीवसमास किस कर्म के उदय से होते हैं?

उत्तर : त्रस-स्थावर, बादर-सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्त, प्रत्येक-साधारण ऐसी नामकर्म की प्रकृतियों के चार युगलों में यथासम्भव परस्पर विरोधरहित जो प्रकृतियाँ, उनके साथ मिला हुआ जो एकेन्द्रिय आदि जातिरूप नामकर्म का उदय, उसके होने पर जो.....। **(गो.जी. ७१)**

कर्म विवक्षा

क्र.	जीवसमास	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विशेष
१.	इतरनिगोद सूक्ष्म बादर नित्यनिगोद ,, पृथ्वी.सू. जल-सूक्ष्म अग्नि.सू.बा. वायु.सू.बा.	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
२.	पृथ्वीबा.ज.बा. सप्रतिष्ठित प्रत्येक अप्रतिष्ठित प्रत्येक	उदय	मिथ्यात्व सासादन.	औदयिक पारिणामिक	दूसरा गुणस्थान निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ही होता है।
३.	द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय	क्षयोपशम	मिथ्यात्व सासादन.	औदयिक पारिणामिक	
४.	असंज्ञीपञ्चेन्द्रिय	उदय (ध.७/सू. ८०)	मिथ्यात्व सासादन.	औदयिक पारिणामिक	दोनों केवल तिर्यञ्चगति में ही होते हैं। निर्वृ. अवस्था में ही होता है।
५.	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	क्षयोपशम (ध.७/सू. ८०)	मिथ्यात्व सासादन सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व अविरतसम्यक्त्व संयमासंयम से अप्रमत्त अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसाम्पराय उपशान्त कषाय. क्षीणकषायवीत.	औदयिक पारिणामिक क्षायोपशमिक औप.क्षा.क्षायो. क्षायोपशमिक औप.क्षा. भाव होता है। औप.क्षा. औप.क्षा. औपशमिक क्षायिक	 पर्याप्त-अपर्याप्त दोनों अवस्था में होता है। उपशम श्रेणी की अपेक्षा औपशमिक
६.	पञ्चेन्द्रिय	उदय	सयोग केवली अयोग केवली	क्षायिक क्षायिक	नामकर्म के उदय से होता है। नामकर्म के उदय से होता है।

प्रश्न ६ : कितने जीवसमासों में औदयिक भाव रूप गुणस्थान भी होता है?

उत्तर : ९ जीवसमासों में औदयिक भाव रूप गुणस्थान भी होता है -

(१) पृथ्वीकायिक बादर (२) जलकायिक बादर

(३) सप्रतिष्ठित प्रत्येक (४) अप्रतिष्ठित प्रत्येक

(५) द्वीन्द्रिय (६) त्रीन्द्रिय

(७) चतुरिन्द्रिय (८) असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय

(९) संज्ञी पञ्चेन्द्रिय

इन जीवसमासों में पहला गुणस्थान औदयिक भाव रूप होता है।

प्रश्न ७ : किस जीवसमास का कौनसा गुणस्थान केवल क्षायिक भाव रूप ही होता है?

उत्तर : संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास का एक गुणस्थान केवल क्षायिक भाव रूप ही होता है- क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ

तथा पञ्चेन्द्रिय जीवसमास के दोनों गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं।

विशेष - संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास में क्षायिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा चौथा एवं क्षपक श्रेणी की अपेक्षा आठवाँ, नवाँ, दसवाँ गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप ही होता है।

प्रश्न ८ : संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास में होने वाला चौथा गुणस्थान कितनी गति की अपेक्षा क्षायिक भाव रूप होता है?

उत्तर : संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव समास में होने वाला चौथा गुणस्थान चारों गति की अपेक्षा क्षायिक भाव रूप होता है।

नरकगति में प्रथम नरक की अपेक्षा, तिर्यञ्चगति में भोगभूमि की अपेक्षा, मनुष्यगति में कर्मभूमि और भोगभूमि की अपेक्षा तथा देवगति में वैमानिक देवों की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न ९ : संज्ञी जीवों के कितने गुणस्थान औपशमिक भाव रूप भी होते हैं?

उत्तर : संज्ञी जीवों के ४ गुणस्थान औपशमिक भाव रूप भी होते हैं -

(१) अविरतसम्यक्त्व (२) अपूर्वकरणसंयत

(३) अनिवृत्तिकरणसंयत (४) सूक्ष्मसाम्पराय संयत

प्रश्न १० : कितने जीव समासों के गुणस्थान एक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : १० जीवसमासों के सभी गुणस्थान एक भाव रूप ही होते हैं -

(१) नित्यनिगोद सूक्ष्म (६) जलकायिक सूक्ष्म

(२) नित्यनिगोद बादर (७) अग्निकायिक सूक्ष्म

(३) इतरनिगोद सूक्ष्म (८) अग्निकायिक बादर

(४) इतरनिगोद बादर (९) वायुकायिक सूक्ष्म

(५) पृथ्वीकायिक सूक्ष्म (१०) वायुकायिक बादर

इन सबके एक ही पहला गुणस्थान होता है जो केवल औदयिक भाव रूप होता है। पञ्चेन्द्रिय जीव समास में होने वाले दोनों गुणस्थान एक क्षायिक भाव रूप ही होते हैं।

विशेष - पृथ्वीकायिकादि स्थावर सम्बन्धी १४ जीवसमास कायमार्गणा में गर्भित होते हैं। कायमार्गणा औदयिकी है, क्योंकि यह नामकर्म के उदय से होती है। **(ध.७)** इसलिए यहाँ १४ जीवसमासों को कर्म के उदय से कहा है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, ये तीन जीवसमास इन्द्रिय मार्गणा में आते हैं, इन्द्रिय मार्गणा क्षायोपशमिकी कही गई है इसलिए इन तीन जीव समासों को क्षयोपशम से कहा गया है।

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तथा असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास संज्ञी मार्गणा में गर्भित हैं। संज्ञित्व को क्षायोपशमिक एवं असंज्ञित्व को औदयिक कहा गया है इसलिए इन्हें यहाँ क्षयोपशम एवं उदय से कहा है।

पञ्चेन्द्रियत्व यद्यपि क्षायोपशमिक कहा गया है लेकिन केवली भगवान के भी पञ्चेन्द्रियत्व का कथन करते हुए कहा है कि केवलियों के यद्यपि भावेन्द्रियाँ समूल नष्ट हो गयी हैं और बाह्य इन्द्रियों का व्यापार भी बन्द हो गया है, तो भी भावेन्द्रिय के निमित्त से उत्पन्न हुई द्रव्येन्द्रियों के सद्भाव की अपेक्षा उन्हें पञ्चेन्द्रिय कहा गया है। **(ध.१/२६३)** केवली को भूतपूर्व का ज्ञान कराने वाले न्याय के आश्रय से पञ्चेन्द्रिय कहा गया है। **(ध.१/२६३)**

पञ्चेन्द्रिय नामकर्म के उदय से पञ्चेन्द्रिय जीव होते हैं। इस व्याख्यान के अनुसार केवली के भी पञ्चेन्द्रिय जाति नामकर्म का उदय होता है अत: यह व्याख्यान निर्दोष है अतएव इसका आश्रय करना चाहिए। **(ध.१/२६४)**

इसलिए यहाँ पञ्चेन्द्रिय जीवसमास को उदय से या उपचार से कहा गया है।

स्थान विवेचन

प्रश्न ११ : जीवसमास में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : जीवसमास में मुख्य रूप से चार स्थान होते हैं -

(१) १९ जीवसमास रूप स्थान (२) ८ जीवसमास रूप स्थान

(३) १ जीवसमास रूप स्थान (४) पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान

तथा (१) इनमें ४ स्थान और होते हैं जिनका किसी गुणस्थान या गति वाला स्वामी नहीं होता है लेकिन उनमें भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं वे स्थान -

(१) ३ जीव समास रूप स्थान (२) २ जीवसमास रूप स्थान

(३) संज्ञीपञ्चेन्द्रिय एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान (४) १९ जीवसमास एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान (२) ८ जीवसमास रूप स्थान में किसी भी भाव के उत्तर भेद नहीं होते हैं लेकिन गुणस्थानवर्ती जीव स्वामी होता है इसलिए यहाँ ग्रहण किया है।

प्रश्न १२ : इन स्थानों में किस-किस जीवसमास को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में जीवसमास -

१) १९ जीवसमास रूप स्थान में -

एकेन्द्रिय सम्बन्धी १४ जीवसमास

विकलत्रय सम्बन्धी ३ जीवसमास

पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी २ जीवसमास

२) ८ जीवसमास रूप स्थान में -

(१) पृथ्वीकायिक बादर (२) जलकायिक बादर (३) सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति (४) अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति (५) द्वीन्द्रिय (६) त्रीन्द्रिय (७) चतुरिन्द्रिय (८) अंसज्ञीपञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी जीवसमास

३) १ जीवसमास रूप स्थान में - संज्ञी पञ्चेन्द्रिय

४) पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान में - संज्ञी-असंज्ञी व्यपदेश रहित

५) ३ जीवसमास रूप स्थान में -

(१) चतुरिन्द्रिय (२) असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय (३) संज्ञीपञ्चेन्द्रिय

६) २ जीवसमास रूप स्थान में -

(१) असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय (२) संज्ञी पञ्चेन्द्रिय

७) संज्ञी पञ्चेन्द्रिय एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान में - संज्ञीजीव एवं संज्ञी-असंज्ञी व्यपदेश रहित जीव

८) १९ जीवसमास एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान में - संसार के सभी जीव

प्रश्न १३ : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

१९ जीवसमास रूप स्थान के	-	प्रथम गुणस्थानवर्ती (मिथ्यादृष्टि) तथा तिर्यञ्चगति वाले
८ जीवसमास रूप स्थान के	-	सासादन गुणस्थानवर्ती जीव
१ जीवसमास रूप स्थान के	-	नरक एवं देवगति वाले तथा तीसरे से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव
पञ्चेन्द्रिय रूप स्थान के	-	तेरहवें-चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव
३ जीवसमास रूप स्थान के	-	चक्षुदर्शनी आदि
२ जीवसमास रूप स्थान के	-	पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च

संज्ञीपञ्चेन्द्रिय एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान के - मनुष्यगति एवं क्षायिक सम्यग्दृष्टि आदि

१९ जीवसमास एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान के - असिद्धत्व आदि भाव वाले

प्रश्न १४ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

१) १९ जीवसमास रूप स्थान में - २१

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के १२ - १ ग. (ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

२) ३ जीवसमास रूप स्थान में - १

क्षायोपशमिक का - चक्षुदर्शन

३) २ जीवसमास रूप स्थान में ३ -

औदयिक के ३-२ लिङ्ग (स्त्री. पुरु.) १ ले. (पीत)

४) १ जीवसमास रूप स्थान में - १४

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के ९ - ४ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के ३ - २ ग. (न.दे.) १ ले. (पद्म)

५) पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान में - ७

क्षायिक ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

६) संज्ञीपञ्चेन्द्रिय एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान में - ४

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

औदयिक के २ - १ ग. (मनु.) १ ले. (शुक्ल)

७) १९ जीवसमास एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान में - ३

औदयिक का १ - असिद्धत्व

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न १५ : कितने स्थानों में औदयिक भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : ५ स्थानों में औदयिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं -
(१) १९ जीवसमास रूप स्थान (२) २ जीवसमास रूप स्थान (३) एक जीवसमास रूप स्थान (४) संज्ञीपञ्चेन्द्रिय एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान (५) १९ जीवसमास एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान।

प्रश्न १६ : कितने स्थानों में दर्शन रूप भाव होते हैं?

उत्तर : ४ स्थानों में दर्शन रूप भाव होते हैं -
१९ जीवसमास रूप स्थान में - अचक्षुदर्शन
३ जीवसमास रूप स्थान में - चक्षुदर्शन
१ जीवसमास रूप स्थान में - अवधिदर्शन
पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान में - केवलदर्शन

प्रश्न १७ : कितने स्थानों में क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद नहीं होते हैं?

उत्तर : ४ स्थानों में क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद नहीं होते हैं -
(१) पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान (२) २ जीवसमास रूप स्थान
(३) संज्ञीपञ्चेन्द्रिय एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान
(४) १९ जीवसमास एवं पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान

प्रश्न १८ : कितने स्थान केवल तिर्यञ्चगति में ही होते हैं?

उत्तर : ४ स्थान केवल तिर्यञ्चगति में ही होते हैं -
(१) १९ जीवसमास रूप स्थान (२) ८ जीवसमास रूप स्थान
(३) ३ जीवसमास रूप स्थान (४) २ जीवसमास रूप स्थान

प्रश्न १९ : किस स्थान की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : १९ जीवसमास रूप स्थान की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में १ (पहला) गुणस्थान होता है। इनमें से १० जीवसमास वालों के पहला एवं ८ जीवसमासों में पहला एवं दूसरा दो गुणस्थान होते हैं।

१ जीवसमास रूप स्थान की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ४ गुणस्थान होते हैं -
(१) मिथ्यात्व (२) सासादन सम्यग्दृष्टि
(३) अविरतसम्यग्दृष्टि (४) प्रमत्तसंयत

तथा पञ्चेन्द्रिय जीवसमास की निर्वृ. अवस्था में केवल एक गुणस्थान होता है- सयोगकेवली जिन।

नोट - शेष स्थानों में यथायोग्य गुणस्थान लगा लेना चाहिए।

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	एक जीवसमास रूप स्थान	
	चारित्र	१	एक जीवसमास रूप स्थान	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	३	१ जीव. पञ्चे., संज्ञी. एवं पञ्चे.	एक जीव. रूप स्थान चौथे से बारहवें गुण. की अपेक्षा होता है।
	चारित्र	३	१ जीव., पञ्चे., संज्ञी. एवं पञ्चे.	
	ज्ञानादि सात	१	पञ्चेन्द्रिय रूप	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	१	एक जीवसमास रूप स्थान	
	मन:पर्ययज्ञान	१	एक जीवसमास रूप स्थान	
	कुमति-कुश्रुत.	३	१९ जीव. ८ जीव. १ जीव.	१९ जीव. स्थान पहले गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	विभंगज्ञान	१	१ जीवसमास रूप स्थान	
	चक्षुदर्शन	२	३ जीव. १ जीव.	१ जीव. स्थान तीसरे से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	अचक्षुदर्शन	३	१९ जीव. ८ जीव. १ जीव.	
	अवधिदर्शन	१	१ जीवसमास रूप स्थान	
	५ लब्धि	३	१९ जीव. ८ जीव. १ जीव.	१ जीव. स्थान तीसरे से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	सम्यक्त्व	१	१ जीवसमास रूप स्थान	
	चारित्र	१	१ जीवसमास रूप स्थान	
	संयमासंयम	१	१ जीवसमास रूप स्थान	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	१ जीवसमास रूप स्थान	
	तिर्यञ्चगति	३	१९ जीव. ८ जीव. १ जीव.	१ जीव. स्थान तीसरे से पाँचवें गुणस्थान तक होता है।
	मनुष्यगति	३	१ जीव., पञ्चे., संज्ञी एवं पञ्चे.	
	देवगति	१	१ जीवसमास रूप स्थान	
	४ कषाय	३	१९ जीव. ८ जीव. १ जीव.	
	स्त्री-पुरु. लिङ्ग	२	२ जीव. १ जीव.	२ जीव. रूपस्थान केवल तिर्यञ्चगति की अपेक्षा होता है।
	नपुंसकलिङ्ग	३	१९ जीव. ८ जीव. १ जीव.	
	मिथ्यादर्शन	२	१९ जीव. १ जीव.	एक जीव. रूप स्थान नरक मनु. देव की अपेक्षा होता है।
	अज्ञान	३	१९ जीव. ८ जीव. १ जीव.	
	असंयत	३	१९ जीव. ८ जीव. १ जीव.	
	असिद्धत्व	४	चारों स्थान होते हैं।	
	३ अशुभ लेश्या	३	१९ जीव. ८ जीव. १ जीव.	१ जीव. रूप स्थान चारों गति में हो सकता है।
	पीत लेश्या	२	२ जीव. १ जीव.	
	पद्म लेश्या	१	१ जीवसमास रूप स्थान	
	शुक्ल लेश्या	३	१ जीव., पञ्चे., संज्ञी एवं पञ्चे.	पञ्चे. जीव. तेरहवें गुण. की अपेक्षा होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	४	चारों स्थान होते हैं।	
	भव्यत्व	४	चारों स्थान होते हैं।	
	अभव्यत्व	२	१९ जीव. १ जीव.	एक जीव. रूप स्थान तीन गति की अपेक्षा होता है।

प्रश्न २० : तिर्यञ्चगति रूप भाव में एक जीवसमास रूप स्थान कितने गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : तिर्यञ्चगति रूप भाव में एक जीवसमास रूप स्थान तीन गुणस्थानों में होता है- तीसरे से पाँचवें तक।

विशेष - पहले-दूसरे गुणस्थान में भी संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा एक जीवसमास रूप स्थान ही होता है।

प्रश्न २१ : मनुष्यगति में होने वाले कितने भावों में एक जीवसमास रूप स्थान ही होता है?

उत्तर : मनुष्यगति में होने वाले ३६ भावों में एक जीवसमास रूप स्थान ही होता है -

औपशमिक के २	- सम्यक्त्व चारित्र
क्षायोपशमिक के १८	- ४ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि. १ संय.
औदयिक के १५	- ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. ५ ले. (शुक्ल बिना)
पारिणामिक का १	- अभव्यत्व

प्रश्न २२ : अभव्यत्व रूप भाव में एक जीव समास रूप स्थान कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : अभव्यत्व रूप भाव में एक जीव समास रूप स्थान तीन गतियों में पाया जाता है- नरकगति मनुष्यगति देवगति

तिर्यञ्चगति में अभव्यत्व रूप भाव में १९ जीवसमास रूप स्थान होता है।

प्रश्न २३ : किस भाव का कौनसा स्थान केवल एक भाव रूप होता है?

उत्तर : वे भाव जिनके स्थान केवल एक भाव रूप होते हैं -

संयमासंयम का एक जीवसमास रूप स्थान	- पाँचवाँ गुणस्थान-क्षायोपशमिक भाव रूप
मिथ्यादर्शन के-दोनों स्थान	- पहला गुण.-औदयिक भाव रूप
शुक्ल लेश्या का-संज्ञी और पञ्चेन्द्रिय जीव समास रूप स्थान	- तेरहवाँ गुण.-क्षायिक भाव रूप
अभव्यत्व के दोनों स्थान	- पहला गुण.-औदयिकभाव रूप

प्रश्न २४ : १९ जीवसमास रूप स्थान कितने गुणस्थानों में होता है?

उत्तर : १९ जीवसमास रूप स्थान केवल पहले गुणस्थान में होता है-

यद्यपि दूसरे गुणस्थान में भी एकेन्द्रिय जीव पाये जाते हैं लेकिन सभी एकेन्द्रिय जीवों के दूसरा गुणस्थान नहीं होता है। केवल ९ जीवसमासों में ही दूसरा गुणस्थान होता है-

(१) पृथ्वीकायिक बादर
(२) जलकायिक बादर
(३) सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति
(४) अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति
(५) द्वीन्द्रिय
(६) त्रीन्द्रिय
(७) चतुरिन्द्रिय
(८) असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय
(९) संज्ञी पञ्चेन्द्रिय

इन नौ जीवसमासों में ही दूसरा गुणस्थान होता है।

प्रश्न २५ : कितने भावों में दो स्थान होते हैं?

उत्तर : ६ भावों में दो स्थान होते हैं -

१) चक्षुदर्शन - ३ जीवसमास रूप तथा १ जीवसमास रूप स्थान
२) स्त्रीलिङ्ग - २ जीवसमास रूप तथा १ जीवसमास रूप स्थान
३) पुरुषलिङ्ग - २ जीवसमास रूप तथा १ जीवसमास रूप स्थान
४) मिथ्यादर्शन - १९ जीवसमास रूप तथा १ जीवसमास रूप स्थान
५) पीत लेश्या - २ जीवसमास रूप तथा १ जीवसमास रूप स्थान
६) अभव्यत्व - १९ जीवसमास रूप तथा १ जीवसमास रूप स्थान

प्रश्न २६ : कितने भावों में सभी स्थान होते हैं?

उत्तर : केवल तीन भावों में सभी स्थान होते हैं -

(१) असिद्धत्व (२) जीवत्व (३) भव्यत्व

क्योंकि ये तीन भाव चारों गति तथा सभी गुणस्थानों में पाये जाते हैं।

प्रश्न २७ : मनुष्यगति रूप भाव में होने वाला कौनसा स्थान सभी मनुष्यों के पाया जाता है?

उत्तर : मनुष्यगति रूप भाव में होने वाला कोई भी स्थान सभी मनुष्यों के नहीं बन सकता है, क्योंकि बारहवें गुणस्थान के आगे संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास रूप स्थान नहीं बनता है और बारहवें गुणस्थान तक पञ्चेन्द्रिय जीवसमास नहीं बनता है।

सामान्य रूप से जो आचार्य तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में भी संज्ञित्व मानते हैं उनकी अपेक्षा संज्ञी पञ्चेन्द्रिय रूप एक जीवसमास का स्थान सभी मनुष्यों के बन जाता है, क्योंकि लब्ध्यपर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त, गर्भज-सम्मूर्च्छनज, भोगभूमिया-कर्मभूमिया, कुभोगभूमिया, आर्य-म्लेच्छ आदि सभी मनुष्यों के संज्ञित्व पाया जाता है अर्थात् सभी मनुष्य संज्ञी ही होते हैं।

प्रश्न २८ : नपुंसक लिङ्ग रूप भाव में एक जीवसमास रूप स्थान किस अपेक्षा होता है?

उत्तर : नपुंसक लिङ्ग रूप भाव में एक जीवसमास रूप स्थान -

नरकगति में - पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

तिर्यञ्चगति में - तीसरे से पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा

मनुष्यगति में - पहले से नवें गुणस्थान की अपेक्षा

प्रश्न २९ : कितने भावों का एक जीव समास रूप स्थान चारों गति में पाया जाता है?

उत्तर : २७ भावों का एक जीवसमास रूप स्थान चारों गति में पाया जाता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व, नरक एवं देवगति में चौथे, तिर्यञ्चगति में चौथे पाँचवें तथा मनुष्यगति में चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान की अपेक्षा होता है।

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व, नरक तिर्यंच तथा देवगति में चौथे तथा मनुष्यगति में चौथे से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा।

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञान-नरक-देवगति में चौथे, तिर्यञ्चगति में चौथे-पाँचवें तथा मनुष्यगति में चौथे से बारहवें.......

विभंगज्ञान - चारों गतियों में पहले-दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा

चक्षु-अचक्षुदर्शन - नरक एवं देव गति में पहले से चौथे, तिर्यञ्चगति में तीसरे से पाँचवें तथा मनुष्यगति में पहले से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा

अवधिदर्शन - नरक एवं देवगति में चौथे, तिर्यञ्चगति में चौथे-पाँचवें तथा मनुष्यगति में चौथे से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा

५ लब्धि - चक्षु-अचक्षु दर्शन के समान

सम्यक्त्व - नरक एवं देवगति में चौथे, तिर्यञ्चगति में चौथे-पाँचवें तथा मनुष्यगति में चौथे से सातवें गुणस्थान की अपेक्षा

औदयिक के १०		
३ कषाय	-	नरक एवं देवगति में पहले से चौथे, तिर्यञ्चगति में तीसरे से पाँचवें तथा मनुष्यगति में पहले से नवें गुणस्थान की अपेक्षा।
लोभ कषाय	-	३ कषाय के समान ही जानना चाहिए। विशेष यह है कि मनुष्यगति में पहले से दसवें गुणस्थान की अपेक्षा...।
अज्ञान	-	नरक एवं देवगति में पहले से चौथे, तिर्यञ्चगति में तीसरे से पाँचवें तथा मनुष्यगति में पहले से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा
असंयत	-	नरक एवं देवगति में पहले से चौथे, तिर्यञ्चगति में तीसरे चौथे तथा मनुष्यगति में पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा
असिद्धत्व	-	नरक एवं देवगति में पहले से चौथे, तिर्यञ्चगति में तीसरे से पाँचवें तथा मनुष्यगति में पहले से बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा
३ अशुभ लेश्या	-	नरकगति में पहले से चौथे, देवगति में पहले-दूसरे, तिर्यञ्चगति में तीसरे-चौथे तथा मनुष्यगति में पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा
पारिणामिक के २	-	जीवत्व भव्यत्व - चक्षु-अचक्षु दर्शन के समान

प्रश्न ३० : केवलज्ञान में कितने जीवसमास होते हैं?

उत्तर : केवलज्ञान में एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास है तथा समुद्घात में एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास है। (मू. फलटन से प्रकाशित १२०१ के बाद)

नोट - केवलज्ञान में पंचेन्द्रिय जीवसमास होता है।

भावों में जीवसमास

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय	देवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी होता है।
	चारित्र	१	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१	संज्ञी पञ्चे.	पञ्चेन्द्रिय जीव समास भी होता है।
	चारित्र	१	संज्ञी पञ्चे.	पञ्चेन्द्रिय जीव समास भी होता है।
	ज्ञानादि सात	१	पञ्चेन्द्रिय	तेरहवें चौदहवें गुण. में होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	१	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय	
	मन:पर्ययज्ञान	१	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय	
	कुमति-कुश्रुत.	१९	एकेन्द्रिय १४ विक. ३ पञ्चे. २	तिर्यञ्चगति में ही १९ जीवसमास होते हैं।
	विभंगज्ञान	१	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय	
	चक्षुदर्शन	३	चतु. संज्ञीपञ्चे. असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय	
	अचक्षुदर्शन	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	
	अवधिदर्शन	१	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय	चारों गतियों में होता है।
	५ लब्धि	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	
	सम्यक्त्व	१	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	निर्वृत्य. में भी होता है।
	चारित्र	१	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	
	संयमासंयम	१	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	
	तिर्यञ्चगति	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	
	मनुष्यगति	१	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय जीवसमास भी होता है।
	देवगति	१	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	
	४ कषाय	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	
	स्त्री. पुरु.लिङ्ग	२	संज्ञीपञ्चे. असंज्ञीपञ्चे.	
	नपुंसकलिङ्ग	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	
	मिथ्यादर्शन	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	
	अज्ञान	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	
	असंयत	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	
	असिद्धत्व	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	पञ्चेन्द्रिय जीव समास भी होता है।
	३ अशुभ लेश्या	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	
	पीत लेश्या	२	संज्ञीपञ्चे. असंज्ञीपञ्चे.	
	पद्म लेश्या	१	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	
	शुक्ललेश्या	१	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय जीव समास भी होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	पञ्चेन्द्रिय जीवसमास भी होता है।
	भव्यत्व	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	पञ्चेन्द्रिय जीवसमास भी होता है।
	अभव्यत्व	१९	एके. १४ विक. ३ पञ्चे. २	

प्रश्न ३१ : कितने भावों में संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास चार गुण. की अपेक्षा होता है?

उत्तर : ९ भावों में संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास चार गुणस्थान की अपेक्षा होता है -

औपशमिक का १ - चारित्र (८वें से ११वें तक)

क्षायिक का १ - चारित्र (८वें से १०वाँ और १२वाँ गुणस्थान)

क्षायोपशमिक का १ - सम्यक्त्व (चौथे से ७वें तक)

औदयिक के ६ - २ ग. (न.दे.) १ असं. ३ ले. (अशु.)

इनमें पहले से चौथे तक चार गुणस्थान होते हैं।

विशेष - प्रथमोपशम सम्यक्त्व रूप भाव में भी यह जीवसमास चौथे से सातवें तक चार गुणस्थानों में होता है।

प्रश्न ३२ : कितने भावों में केवल संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव समास ही पाया जाता है?

उत्तर : १४ भावों में केवल संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव समास ही पाया जाता है -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के ९ - ४ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के ३ - २ ग. (न. दे.) १ ले. (प.)

नोट - क्षायिक सम्य. चारि. मनुष्यगति एवं शुक्ल लेश्या में पञ्चेन्द्रिय जीव समास भी होता है इसलिए इन्हें यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न ३३ : कितने भावों में असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास भी पाया जाता है?

उत्तर: २८ भावों में असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास भी पाया जाता है -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के १६ - १ (तिर्य.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले. (कृष्णादि)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३४ : कितने भावों में दो जीवसमास होते हैं?

उत्तर : ३ भावों में दो जीवसमास होते हैं -

औदयिक के ३ - स्त्रीलिङ्ग, पुरुषलिङ्ग, पीतलेश्या, इनमें संज्ञी पञ्चेन्द्रिय एवं असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय ये दो जीवसमास होते हैं।

क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, मनुष्यगति एवं शुक्ल लेश्या में संज्ञी पञ्चेन्द्रिय रूप एक जीवसमास होता है तथा तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान की अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय जीवसमास

भी होता है। इसलिए इन चार भावों में भी दो जीवसमास पाये जा सकते हैं। शुक्ल लेश्या में पंचेन्द्रिय जीवसमास १३वें गुण. की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न ३५ : ४ कषाय रूप भावों में संज्ञी पञ्चेन्द्रिय रूप जीवसमास किस गति में किस अपेक्षा पाया जाता है?

उत्तर : ४ कषाय रूप भावों में गति की अपेक्षा संज्ञी पञ्चेन्द्रिय रूप जीवसमास -

नरकगति में - पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

तिर्यञ्चगति में - तीसरे चौथे पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा

मनुष्यगति में - ३ कषाय - पहले से नवें गुणस्थान की अपेक्षा

लोभ कषाय - पहले से दसवें गुणस्थान की अपेक्षा

देवगति में - पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

प्रश्न ३६ : पुरुष लिंग रूप भाव में संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास कितने ज्ञानों में होता है?

उत्तर : पुरुष लिंग रूप भाव में संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास ज्ञान मार्गणा के सात भेदों में होता है।

३ मिथ्याज्ञानों में - ३ गति की अपेक्षा (तिर्यंच., देव., मनुष्य.)

३ सम्यग्ज्ञानों में - ३ गति की अपेक्षा (तिर्यंच., देव., मनुष्य.)

मन:पर्ययज्ञान में - मनुष्य गति की अपेक्षा

नोट - केवलज्ञान में न तो पुरुषलिंग रूप भाव है, न संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास है।

प्रश्न ३७ : अभव्यत्व रूप भाव में संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास कितनी गतियों में होता है?

उत्तर : अभव्यत्व रूप भाव में संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास चारों गतियों में होता है।

प्रश्न ३८ : शुक्ल लेश्या रूप भाव में कितने जीवसमास होते हैं?

उत्तर : शुक्ल लेश्या रूप भाव में एक जीवसमास होता है - संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास इसमें तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा पंचेन्द्रिय जीवसमास भी होता है।

१९ जीवसमास

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	-	-	
२.	**क्षायिक**	-	-	
३.	**क्षायोपशमिक**	८	२ अज्ञान-कुमति. कुश्रुत. १ दर्शन-अचक्षुदर्शन ५ लब्धि-दा.ला.भो.उप.वी.	कर्मभूमिया तिर्यञ्चों के पहले गुणस्थान की अपेक्षा १९ जीवसमास हो सकते हैं।
४.	**औदयिक**	१३	१ गति-तिर्यञ्च ४ कषाय-क्रो.मा.मा.लो. १ लिङ्ग-नपुंसक १ - मिथ्यादर्शन १ - अज्ञान १ - असंयत १ - असिद्धत्व ३ लेश्या - कृ.नी.का.	,, ,, ,,
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व	,,

(१) १९ जीवसमास में एकेन्द्रिय के समान २४ भाव होते हैं। इनके एक पहला गुणस्थान ही होता है इसलिए निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में भी २४ भाव ही होते हैं।

(२) चतुरिन्द्रिय, संज्ञी पञ्चेन्द्रिय एवं असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय रूप तीन जीवसमास में केवल चक्षुदर्शन रूप भाव अधिक होने से २५ भाव होते हैं इसका कथन चतुरिन्द्रिय के समान करना चाहिए।

(३) संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास में संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों के समान गुणस्थान तथा भाव जानना चाहिए।

(४) पञ्चेन्द्रिय जीवसमास में सयोग केवली एवं अयोगकेवली के समान कथन करना चाहिए।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ३९ : औदयिक भावों में स्थानों की विवेचना किस प्रकार करनी चाहिए?

उत्तर : औदयिक भावों में स्थानों की विवेचना -

क्र.	भाव	संख्या	विवेचन	गुणस्थान
१.	**नरकगति**	१	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय	-
२.	**तिर्यञ्चगति**	३	१९ जीवसमास	-
			८ जीवसमास	दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा
			१-संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	तीसरे से पाँचवाँ
३.	**मनुष्यगति**	३	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय	पहले से बारहवाँ
			पञ्चेन्द्रिय	तेरहवाँ-चौदहवाँ
			संज्ञीपञ्चे. तथा पञ्चे.	मनुष्यगति की अपेक्षा
४.	**देवगति**	१	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	पहले से चौथा
५-६	**३ कषाय**	३	१९ जीवसमास	पहले गुण. की अपेक्षा
			८ जीवसमास	दूसरे गुण. की अपेक्षा
			१ संज्ञीपचेन्द्रिय	तीसरे से नवें गुण. की अपेक्षा
८.	**लोभ कषाय**	३	१९ जीवसमास	
			८ जीवसमास	
			१ संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	तीसरे से दसवाँ
९-१०	**स्त्री-पुरुषलिङ्ग**	२	२ जीवसमास	पहले-दूसरे गुण. की अपेक्षा
			१ संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	तीसरे से नवें. गुण. की अपेक्षा
११.	**नपुंसकलिङ्ग**	३	३ कषाय के समान	
१२.	**मिथ्यादर्शन**	२	१९ जीवसमास	पहले गुण. की अपेक्षा
			१ संज्ञीपञ्चेन्द्रिय	नरक देव एवं मनुष्य की अपेक्षा
१३.	**अज्ञान**	३	३ कषाय के समान	
१४.	**असंयत**	३	३ कषाय के समान	
१५.	**असिद्धत्व**		सभी स्थान	
१६-१८	**३ अशुभ लेश्या**	३	३ कषाय के समान	
१९	**पीत लेश्या**	२	२ जीवसमास	तिर्यञ्चगति की अपेक्षा
			१ संज्ञी पञ्चेन्द्रिय.	
२०.	**पद्मलेश्या**	१	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय.	पहले से सातवें गुण. की अपेक्षा
२१.	**शुक्ल लेश्या**	३	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय.	पहले से बारहवें गुण. की अपेक्षा
			पञ्चेन्द्रिय	तेरहवें गुण. की अपेक्षा
			संज्ञी. तथा पञ्चे.	मनुष्य गति की अपेक्षा

नोट - अज्ञान, असंयत तथा ३ अशुभ लेश्या में गुणस्थान यथायोग्य लगाना चाहिए।

प्रश्न ४० : सूक्ष्म अग्निकायिक जीवसमास में कितने औदयिक भाव होते हैं?

उत्तर : सूक्ष्म अग्निकायिक जीवसमास में १३ औदयिक भाव होते हैं-

१ गति - तिर्यञ्च

४ कषाय - क्रोध, मान, माया, लोभ

१ लिङ्ग (नपुं.) - १ मिथ्यादर्शन, १ अज्ञान, १ असंयत

१ असिद्धत्व, ३ अशुभ लेश्या

प्रश्न ४१ : इतने ही भाव और किस-किस जीवसमास में होते हैं?

उत्तर : इतने ही अर्थात् १३ औदयिक भाव १६ जीवसमासों में भी होते हैं -

नित्य निगोद	- बादर-सूक्ष्म	सप्रतिष्ठित प्रत्येक
इतर निगोद	- बादर - सूक्ष्म	अप्रतिष्ठित प्रत्येक
पृथ्वीकायिक	- बादर - सूक्ष्म	द्वीन्द्रिय
जलकायिक	- बादर - सूक्ष्म	त्रीन्द्रिय
अग्निकायिक	- बादर	चतुरिन्द्रिय
वायुकायिक	- बादर - सूक्ष्म	

अर्थात् १७ जीवसमासों में १३ औदयिक भाव होते हैं।

प्रश्न ४२ : कितने जीव समासों में तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास को छोड़कर शेष १८ जीवसमासों में तीन भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक

पञ्चेन्द्रिय जीवसमास में भी तीन भावों के उत्तर भेद होते हैं -

क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक, यह जीव समास केवली भगवान के होता है।

प्रश्न ४३ : किस जीवसमास में होने वाले किस योग में कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय सम्बन्धी १४ जीवसमासों में औदारिकद्विक एवं कार्मण काययोग होते हैं। इनमें क्षायोपशमिक भाव के आठ भेद हैं -

२ अज्ञान (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ लब्धि

द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय जीवसमास में अनुभयवचनयोग औदारिकद्विक तथा कार्मण काययोग होते हैं, इनमें भी उपर्युक्त आठ ही क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

चतुरिन्द्रिय तथा असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास में उपर्युक्त चार योग होते हैं। उनमें नौ क्षायोपशमिक भाव होते हैं - २ अज्ञा. २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास में १५ योग-४ मनोयोग ४ वचनयोग ७ काययोग, इनमें से ४ मनो. ४ वच. तथा औदारिक काययोग में - १८ भाव

४ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र तथा कार्मण काययोग में - १४ भाव

३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

वैक्रियिक काययोग में - १५ भाव

३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

आहारकद्विक काययोग में - १३ भाव

३ ज्ञा. (मनः. बिना) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

पञ्चेन्द्रिय जीवसमास में २ मनो. (स.अनु.) २ वच. (स.अनु.) औदारिकद्विक एवं कार्मण ये सात योग होते हैं -

इनके एक भी क्षायोपशमिक भाव नहीं होता है।

प्रश्न ४४ : किस जीवसमास में सम्यक्त्व मार्गणा का कौनसा भेद किस भाव रूप होता है?

उत्तर : जीवसमास में सम्यक्त्व मार्गणा एवं भाव -

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास -	औपशमिक सम्यक्त्व	- उपशम भाव रूप
	क्षायिकसम्यक्त्व	- क्षायिक भाव रूप
	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	- क्षायोपशमिक भाव रूप
	मिथ्यात्व	- औदयिक भाव रूप
	सासादन सम्यक्त्व	- पारिणामिक भाव रूप
	सम्यग्मिथ्यात्व	- क्षायोपशमिक भाव रूप

८ जीवसमास (पृ.बा., ज.बा., सप्रतिष्ठित, अप्रतिष्ठित, द्वी.त्री.चतु.असं.) में मिथ्यात्व-औदयिक भाव रूप, सासादनसम्यक्त्व-पारिणामिक भाव रूप

१० जीवसमास (पृ.सू., ज.सू., अग्नि.बा.सू., वायु बा.सू., नित्यनिगोद बा.सू., इतरनिगोद बा.सू.) में मिथ्यात्व - औदयिक भाव रूप

प्रश्न ४५ : किस जीवसमास में सात प्राणों के साथ तीन पारिणामिक भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : तीन जीवसमासों में सात प्राण होते हैं -

त्रीन्द्रिय जीवसमास में - ३ इन्द्रिय, वचन एवं काय बल, श्वासो. आयु. - ३ पारिणामिक भाव

असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय में - ५ इन्द्रिय कायबल आयु - ३ पारिणामिक भाव

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय में - ५ इन्द्रिय कायबल आयु - ३ पारिणामिक भाव

नोट - संज्ञी-असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों के सात प्राण निर्वृत्यपर्याप्तक की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न ४६ : किस जीवसमास में कितनी जातियाँ होती हैं?

उत्तर : जीवसमास में जातियाँ -

एकेन्द्रिय के १४ जीवसमासों में - ५२ लाख

द्वीन्द्रिय के जीवसमास में - २ लाख

त्रीन्द्रिय के जीवसमास में - २ लाख

चतुरिन्द्रिय के जीवसमास में - २ लाख

संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास में - २६ लाख (न.४ ला., ति.४ ला., मनु.१४ ला., देव. ४ ला.)

असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास में - ४ लाख (पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्बन्धी)

प्रश्न ४७ : किस जीवसमास में योग मार्गणा के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय सम्बन्धी जीवसमासों में ३ - औदारिकद्विक और कार्मण काययोग

द्वीन्द्रियादि चार जीवसमासों में ४ - औदारिकद्विक और कार्मण काययोग और अनुभय वचनयोग

संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास में १५ - ४ मनो. ४ वचन. ७ काययोग

पंचेन्द्रिय जीवसमास में ७ - २ मनो. (सत्य. अनुभय.) २ वचन. (सत्य.अनु.) ३ काययोग-औदारिकद्विक काययोग, कार्मण काययोग

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **कितने जीवसमासों में १३ औदयिक भाव होते हैं?**

(अ) १७ (ब) ११

(स) ९ (द) कोई नहीं

(ii) **कितने जीवसमास केवल तिर्यञ्चगति रूप भाव में ही होते हैं?**

(अ) १८ (ब) २

(स) १९ (द) ५

(iii) **कौनसा जीवसमास मनुष्यगति रूप भाव में भी होता है?**

(अ) संज्ञी पञ्चेन्द्रिय (ब) असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय

(स) मनुष्यगति (द) पञ्चेन्द्रिय

(iv) **कितने जीवसमासों में विभंगज्ञान रूप भाव नहीं होता है?**

(अ) १९ (ब) १८

(स) ५ (द) १५

(v) **कितने जीवसमासों में चक्षुदर्शन रूप भाव होता है?**

(अ) १६ (ब) ५

(स) ३ (द) १९

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) १९ जीवसमास में कितने भाव होते हैं?

(ii) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में कितने जीवसमास होते हैं?

(iii) कितने औदयिक भावों में केवल संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास ही होता है?

(iv) कितने क्षायिक भावों में तीन स्थान होते हैं?

(v) नपुंसक लिङ्ग रूप भाव में मनुष्यगति सम्बन्धी कितने जीवसमास होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) औपशमिक भाव में संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास नहीं होता है?

(ii) क्षायिक चारित्र रूप भाव में पञ्चेन्द्रिय जीवसमास भी होता है?

(iii) कुमतिज्ञान रूप भाव में संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास नहीं होता है?

(iv) स्त्रीलिङ्ग रूप भाव में चतुरिन्द्रिय का जीवसमास भी होता है?

(v) सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति रूप जीवसमास में सभी पारिणामिक भाव होते हैं?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए-

(i) जलकायिक जीवसमास में .... औदयिक .... गति रूप तथा .... लिङ्ग रूप भाव होता है।

(ii) स्त्रीलिङ्ग रूप भाव में .... एकेन्द्रिय सम्बन्धी .... विकलत्रय सम्बन्धी जीवसमास नहीं होते हैं।

(iii) क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में .... जीव समास .... जीव समास .... जीवसमास रूप स्थान होते हैं।

(iv) द्वीन्द्रिय जीवसमास में .... क्षायोपशमिक एवं .... क्षायिक भाव होते हैं।

(v) संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास में .... क्षायोपशमिक तथा .... पारिणामिक भाव होते हैं।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	१९ जीवसमास	-	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव समास
(ii)	चक्षुदर्शनरूप भाव	-	४६ भाव
(iii)	पञ्चेन्द्रिय जीवसमास	-	१९ जीवसमास
(iv)	कुमतिज्ञान रूप भाव	-	पीत लेश्या
(v)	संज्ञीपञ्चेन्द्रिय जीवसमास	-	३ जीवसमास
(vi)	२ जीवसमास	-	१४ भाव
(vii)	२१ औदयिक भाव	-	२४ भाव
(viii)	९ क्षायिक भाव	-	पञ्चेन्द्रिय जीवसमास

- उत्तरमाला -

१. (i) अ (ii) अ (iii) अ (iv) ब (v) स

२. (i) २४ (ii) १ (iii) ५ (iv) २ (v) १

३. (i) ना (ii) हाँ (iii) ना (iv) ना (v) हाँ

४. (i) १३, १, १ (ii) १४, ३ (iii) संज्ञी, पञ्चे., संज्ञी पंचे.
(iv) ८, ० (v) १८, ३

५. (i) २४ भाव (ii) ३ जीवसमास (iii) १४ भाव (iv) १९ जीवसमास
(v) ४६ भाव (vi) पीत लेश्या (vii) संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास
(viii) पञ्चेन्द्रिय जीवसमास

पर्याप्ति

प्रश्न १ : पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : आहार आदि कारणों की पूर्णता का होना पर्याप्ति है। **(मू. १०४५ टी.)** जिस कर्म के उदय से आहार आदि छह पर्याप्तियों की रचना होती है वह पर्याप्ति नाम कर्म है। **(मू. १२३८ टी.)** इन्द्रिय आदि में विद्यमान जीवन के कारणपने की अपेक्षा न करके इन्द्रियादि रूप शक्ति की पूर्णता मात्र को पर्याप्ति कहते हैं। **(ध.१/२५७)** आहार, शरीर आदि की निष्पत्ति को पर्याप्ति कहते हैं। **(ध.१/३११)**

प्रश्न २ : पर्याप्तियाँ कितनी होती हैं?

उत्तर : पर्याप्तियाँ ६ होती हैं -

(१) आहार पर्याप्ति (२) शरीर पर्याप्ति (३) इन्द्रिय पर्याप्ति

(४) श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति (५) भाषा पर्याप्ति (६) मन:पर्याप्ति

ये आहारादि छह पर्याप्तियाँ हैं। ये सभी ओर से प्रकट होने वाली आत्मा की शक्तियों की समृद्धि रूप हैं। **(आ.सा. ११/७३)**

प्रश्न ३ : आहार पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : आहार की पूर्णता का कारण अथवा आहार के विषय में कर्म और नोकर्म रूप से परिणत हुए पुद्गलों को ग्रहण करना आहार है अथवा तृप्ति के लिए कारणभूत पुद्गल समूह का नाम आहार है। जिस कारण से जीव तीन शरीर के योग्य ग्रहण की गयीं आहार वर्गणाओं को खल (अस्थि-चर्म आदि रूप) रस (रक्त, वीर्य आदि) भाग से परिणमन कराने में समर्थ होता है, उस कारण की सम्पूर्णता का होना आहार पर्याप्ति है। **(मू. १०४७ टी.)**

प्रश्न ४ : शरीर पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : शरीर की पूर्णता में कारण अथवा शरीर के विषय में औदारिक आदि रूप से पुद्गलों का परिणत होना शरीर है। जिस कारण से जीव शरीर के योग्य पुद्गल वर्गणाओं को ग्रहण करके उन्हें औदारिक, वैक्रियिक, आहारक शरीर के स्वरूप से परिणमन कराने में समर्थ होता है उस कारण की सम्पूर्णता का होना शरीर पर्याप्ति है। **(मू. १०४७ टी.)**

प्रश्न ५ : इन्द्रिय पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : इन्द्रियों की पूर्णता का कारण अथवा इन्द्रिय के विषय में पुद्गलस्वरूप से परिणमन करना इन्द्रिय है। जिस कारण से एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय

के योग्य पुद्गलद्रव्यों को ग्रहण करके यह आत्मा अपने विषयों को जानने में समर्थ होता है उस कारण की पूर्णता का नाम इन्द्रिय पर्याप्ति है। **(मू. १०४७ टी.)**

प्रश्न ६ : श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : श्वासोच्छ्वास की पूर्णता का कारण अथवा श्वासोच्छ्वास के विषय में उच्छ्वास-नि:श्वास रूप वायु के स्वरूप से पुद्गल समूह को ग्रहण करना उच्छ्वास-नि:श्वास है। जिस कारण के द्वारा यह जीव श्वासोच्छ्वास के योग्य पुद्गल द्रव्यों को ग्रहण करके श्वासोच्छ्वास रूप रचना करने में समर्थ होता है उस कारण की सम्पूर्णता का नाम आनप्राण पर्याप्ति है। **(मू. १०४७ टी.)**

प्रश्न ७ : भाषा पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : भाषा की पूर्णता का कारण अथवा भाषा के विषय में शब्द रूप से पुद्गलों का परिणत होना भाषा है। जिस कारण से सत्य असत्य उभय और अनुभय इन चार प्रकार की भाषा के योग्य पुद्गलद्रव्यों का आश्रय लेकर उन्हें चतुर्विध भाषा रूप से परिणमन कराने में समर्थ होता है उस कारण की सम्पूर्णता को भाषा पर्याप्ति कहते हैं। **(मू. १०४७ टी.)**

प्रश्न ८ : मन:पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : मन की पूर्णता का कारण, अथवा मन के विषय में चित्त की उत्पत्ति के निमित्त परमाणु समूह का नाम मन है। जिस कारण से सत्यादि चार प्रकार के मन के योग्य पुद्गल द्रव्यों को ग्रहण करके उन्हें चार प्रकार की मन:पर्याप्ति से परिणमन कराने में समर्थ होता है उस कारण की सम्पूर्णता को मन:पर्याप्ति कहते हैं। **(मू. १०४७ टी.)**

प्रश्न ९ : पर्याप्तक और अपर्याप्तक जीव कौन कहलाते हैं?

उत्तर : जिस प्रकार गृह, घट और वस्त्र आदि द्रव्य पूर्ण और अपूर्ण दोनों प्रकार के होते हैं, उसी प्रकार जीव भी पूर्ण और अपूर्ण दो प्रकार से होते हैं। उनमें से पूर्ण जीव पर्याप्तक और अपूर्ण जीव अपर्याप्तक कहलाते हैं। **(ध.२/४२१)**

कर्म विवक्षा

क्र.	पर्याप्ति	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विशेष
१.	४ पर्याप्ति	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	एकेन्द्रिय जीवों के ही होती है।
			सासादन सम्यग्दृष्टि	पारिणामिक	
२.	५ पर्याप्ति	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तक होती है।
			सासादन सम्यग्दृष्टि	पारिणामिक	
३.	६ पर्याप्ति	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	पर्याप्त अवस्था में ही होता है।
			अविरतसम्यक्त्व	औप.क्षा.क्षायो.	
			संयमासंयम	क्षायोपशमिक	
			प्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था भी होती है।
			अप्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
			अपूर्वकरण.	औप.क्षा.	
			अनिवृत्तिकरण.	औप.क्षा.	
			सूक्ष्मसाम्पराय.	औप.क्षा.	
			उपशान्तकषाय.	औपशमिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि के भी होता है।
			क्षीणकषायवीत.	क्षायिक	
			सयोगकेवली	क्षायिक	
			अयोगकेवली.	क्षायिक	
४.	अतीतपर्याप्ति	क्षय	-	क्षायिक	

प्रश्न १० : क्या चार अपर्याप्ति वालों के भी दो गुणस्थान हो सकते हैं?

उत्तर : नहीं, अपर्याप्ति का अर्थ यदि लब्ध्यपर्याप्तक करते हैं तो चार अपर्याप्ति में दूसरा गुणस्थान नहीं हो सकता है, क्योंकि वह पर्याप्ति पूर्ण होने के पहले ही मरण को प्राप्त हो जाता है। दूसरी बात सासादन सम्यग्दृष्टि जीव लब्ध्यपर्याप्तकों में उत्पन्न नहीं होता है। और यदि अपर्याप्तक का अर्थ निर्वृत्यपर्याप्तक करते हैं तो दूसरा गुणस्थान हो सकता है। जब तक पर्याप्तियाँ पूर्ण नहीं होती हैं तब तक निर्वृत्यपर्याप्तक कहलाता है। वहाँ उसके अपर्याप्त होते हुए भी पर्याप्त नाम कर्म का उदय होता है लेकिन पर्याप्तियाँ पूर्ण होने के बाद अर्थात् पर्याप्त हो जाने पर दूसरा गुणस्थान नहीं होता है।

नोट - छहों पर्याप्तियाँ पर्याप्ति नाम कर्म के उदय से होती हैं। कहा भी है -

जिसके उदय से आहार आदि पर्याप्तियों की रचना होती है वह पर्याप्ति नामकर्म है। **(सर्वा. ८/११)** जिस कर्म के उदय से जीव पर्याप्त होते हैं वह पर्याप्त नामकर्म है। **(ध. १३/३६५)**

प्रश्न ११ : लब्ध्यपर्याप्तक किसे कहते हैं?

उत्तर : अपर्याप्त नाम कर्म के उदय से उत्पन्न हुई शक्ति से जिन जीवों की शरीर पर्याप्ति पूर्ण न करके मरने रूप अवस्था विशेष उत्पन्न हो जाती है, उन्हें लब्ध्यपर्याप्तक कहते हैं। **(ध.१/२६७)**

जो जीव श्वास के अठारहवें भाग में मर जाता है। एक भी पर्याप्ति को समाप्त नहीं कर पाता, उसे लब्धि अपर्याप्त कहते हैं। **(का.अ. १३७)**

प्रश्न १२ : निर्वृत्यपर्याप्तक किसे कहते हैं?

उत्तर : पर्याप्त नाम कर्म के उदय से एकेन्द्रियादि जीव अपने-अपने योग्य पर्याप्तियों की सम्पूर्णता की शक्ति से युक्त होते हैं। जब तक शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती तब तक अर्थात् एक समय कम शरीर पर्याप्ति सम्बन्धी अंतर्मुहूर्त पर्यंत निवृत्ति अपर्याप्त कहते हैं। **(गो.जी.१२१)**

जीव पर्याप्ति को ग्रहण करते हुए जब तक मन:पर्याप्ति को समाप्त नहीं कर लेता, तब तक निर्वृत्त्यपर्याप्त कहा जाता है। **(का.अ. १३६)**

प्रश्न १३ : ये पर्याप्तियाँ किस कर्म के उदय से उत्पन्न होती हैं?

उत्तर :

पर्याप्ति	**- कर्म-उदय**
आहार पर्याप्ति	- शरीर नामकर्म
शरीर पर्याप्ति	- शरीर नामकर्म
इन्द्रिय पर्याप्ति	- जाति नामकर्म
श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति	- श्वासोच्छ्वास नामकर्म
भाषा पर्याप्ति	- स्वर नामकर्म
मन:पर्याप्ति	- अंगोपांग नामकर्म। **(गो.जी.जी. ११९)**

प्रश्न १४ : कितनी पर्याप्तियों में औदयिक एवं पारिणामिक भावरूप गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : सभी पर्याप्तियों में औदयिक एवं पारिणामिक भाव रूप गुणस्थान होते हैं -

६ पर्याप्ति, ५ पर्याप्ति, ४ पर्याप्ति

इनमें पहला गुणस्थान औदयिक एवं दूसरा गुणस्थान पारिणामिक भाव रूप होता है।

प्रश्न १५ : कितनी पर्याप्ति वालों के चौदह गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : केवल छह पर्याप्ति वालों के ही चौदह अर्थात् सभी गुणस्थान होते हैं। यद्यपि आहार आदि सभी पर्याप्तियाँ चौदहवें गुणस्थान तक पायी जाती हैं लेकिन जिनके भाषा पर्याप्ति या भाषा और मन:पर्याप्ति नहीं होती है ऐसे ४ एवं पाँच पर्याप्ति वालों के पर्याप्त अवस्था

में पहला एवं निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में पहला और दूसरा दो ही गुणस्थान हो सकते हैं। यहाँ स्वामी की अपेक्षा कथन किया गया है।

विशेष - १) आहार और शरीर पर्याप्ति पर्याप्त एवं निर्वृत्यपर्याप्त दोनों अवस्थाओं में होती है तथा शेष पर्याप्तियाँ पर्याप्त अवस्था में ही होती हैं।

२) निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में होने वाली पर्याप्तियों में पाँच गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन (३) अविरत सम्यक्त्व

(४) प्रमत्तसंयत (५) सयोगकेवली जिन

और ये पर्याप्तियाँ पर्याप्त अवस्था में भी होती हैं इसलिए सभी पर्याप्तियों में चौदह गुणस्थान कहे गये हैं।

स्थान - विवेचन

प्रश्न १६ : पर्याप्तियों में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : पर्याप्तियों में तीन स्थान होते हैं -

(१) ४ पर्याप्तिरूप (२) ५ पर्याप्तिरूप (३) ६ पर्याप्तिरूप

अतीत पर्याप्ति वाले जीव भी होते हैं।

प्रश्न १७ : इन स्थानों में किस-किस पर्याप्ति को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में पर्याप्तियाँ -

४ पर्याप्ति रूप स्थान में - आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास

५ पर्याप्ति रूप स्थान में - आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति

६ पर्याप्ति रूप स्थान में - आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति, मन:पर्याप्ति।

नोट - यद्यपि इन स्थानों में किसी भी भाव के कोई उत्तर भेद विशेष रूप से नहीं पाये जाते हैं और न ही इन स्थानों के कोई गति या गुणस्थानवर्ती जीव ही स्वामी हैं, क्योंकि सभी भाव छह पर्याप्तियों में पाये जाते हैं और सभी भावों में छहों पर्याप्तियाँ पाई जाती हैं फिर भी ४ पर्याप्ति, ५ पर्याप्ति और ६ पर्याप्ति वाले जीव संसार में पाये जाते हैं। इस विवक्षा से यहाँ स्थान बनाये गये हैं।

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	पञ्चेन्द्रिय जीवों के ही होता है।
	चारित्र	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	तिर्यञ्चों में भोगभूमि की अपेक्षा होता है।
	चारित्र	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
	ज्ञानादि सात	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
	मन:पर्ययज्ञान	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
	कुमति. कुश्रु.	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	विभंग.	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
	चक्षुदर्शन	२	५ पर्या. ६ पर्या.	
	अचक्षुदर्शन	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	आदि के दो स्थान तिर्यञ्चगति में ही होते हैं।
	अवधिदर्शन	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
	५ लब्धि	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	६ पर्याप्ति रूप स्थान बारहवें गुण. तक होता है।
	सम्यक्त्व	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
	चारित्र	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
	संयमासंयम	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
	तिर्यञ्चगति	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	मनुष्यगति	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
	देवगति	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	
	४ कषाय	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	स्त्री.पुरु.	२	५ पर्या. ६ पर्या.	केवल असैनी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के ही ५ पर्याप्ति रूप स्थान होता है।
	नपुंसकलिङ्ग	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	मिथ्यादर्शन	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	अज्ञान	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	असंयत	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	असिद्धत्व	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	३ अशुभ लेश्या	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	पीत लेश्या	२	५ पर्या. ६ पर्या.	५ पर्याप्ति रूप स्थान तिर्यञ्चगति में ही होता है।
	पद्म-शुक्ल लेश्या	१	६ पर्याप्ति रूप स्थान	

५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	भव्यत्व	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	
	अभव्यत्व	३	४ पर्या. ५ पर्या. ६ पर्या.	६ पर्याप्ति रूप स्थान चारों गतियों में होता है।

प्रश्न १८ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में एक स्थान ही पाया जाता है?

उत्तर : दो भावों के सभी उत्तर भेदों में एक स्थान ही पाया जाता है -

(१) औपशमिक (२) क्षायिक

इनमें छह पर्याप्ति रूप स्थान ही होता है।

प्रश्न १९ : दर्शनावरणकर्म से सम्बन्ध रखने वाले, कितने भाव कितनी पर्याप्ति वालों के होते हैं?

उत्तर : दर्शनावरण कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भावों में पर्याप्तिवाले जीव -

(१) चक्षुदर्शन - पाँच एवं छह पर्याप्ति वालों के

(२) अचक्षुदर्शन - चार-पाँच एवं छह पर्याप्ति वालों के

(३) अवधिदर्शन - छह पर्याप्ति वालों के

(४) केवलदर्शन - छह पर्याप्ति वालों के

प्रश्न २० : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में तीन स्थान होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव के सभी उत्तर भेदों में तीन स्थान होते हैं -

पारिणामिक

प्रश्न २१ : तीन लिङ्ग रूप भावों में छह पर्याप्ति रूप स्थान कितनी गतियों में पाया जाता है?

उत्तर : तीन लिङ्ग रूप भावों में छह पर्याप्ति रूप स्थानों में गति -

स्त्रीलिङ्ग - तिर्यञ्चगति मनुष्यगति देवगति

पुरुषलिङ्ग - तिर्यञ्चगति मनुष्यगति देवगति

नपुंसकलिङ्ग - नरकगति तिर्यञ्चगति मनुष्यगति

नोट - स्त्री एवं पुरुष लिङ्ग में तिर्यञ्चगति के साथ पाँच पर्याप्ति रूप तथा नपुंसक लिङ्ग में ४ पर्याप्ति रूप स्थान भी होता है।

प्रश्न २२ : कितने पर्याप्ति वालों के दो भावों के उत्तर भेद नहीं होते हैं?

उत्तर : चार एवं पाँच पर्याप्ति वालों के दो भावों के उत्तर भेद नहीं होते हैं -

(१) औपशमिक (२) क्षायिक

प्रश्न २३ : किस लेश्या रूप भाव में किस गति की अपेक्षा कौनसा स्थान होता है?

उत्तर : लेश्या रूप भाव में गति एवं स्थान

कृष्ण-नील-कापोत लेश्या - ४ एवं ५ पर्याप्ति रूप स्थान - तिर्यञ्चगति की अपेक्षा
६ पर्याप्ति रूप स्थान - चारों गति की अपेक्षा

पीत लेश्या - ५ पर्याप्ति रूप स्थान - तिर्यञ्चगति की अपेक्षा
६ पर्याप्ति रूप स्थान - नरक बिना तीनगति की अपेक्षा

पद्म एवं शुक्ल लेश्या - ६ पर्याप्ति रूप स्थान - तिर्यञ्चगति मनुष्यगति एवं देवगति की अपेक्षा

नोट - १) लेश्यातीत जीवों के भी ६ पर्याप्ति रूप स्थान मनुष्यगति की अपेक्षा होता है।

२) देवों के यद्यपि ६ पर्याप्ति में अशुभ लेश्याएँ नहीं होती हैं। फिर भी वहाँ पर्याप्त नाम कर्म का उदय रहता है। छहों अपर्याप्तियाँ होती हैं, इसलिए उनका यहाँ ग्रहण किया है।

प्रश्न २४ : कितने भावों में चारों गति की अपेक्षा छह पर्याप्ति रूप स्थान होता है?

उत्तर : ३१ भावों में चारों गति की अपेक्षा छह पर्याप्ति रूप स्थान होता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न २५ : कितने भावों में पाँच पर्याप्ति रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : २८ भावों में पाँच पर्याप्ति रूप स्थान भी होता है -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. (कुम. कुश्रु.) २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के १६ - १ ग. (ति.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न २६ : कितने स्थान केवल कर्मभूमिया तिर्यञ्चों के ही होते हैं?

उत्तर : दो स्थान केवल कर्मभूमिया तिर्यञ्चों के ही होते हैं -

(१) चार पर्याप्ति रूप (२) पाँच पर्याप्ति रूप, क्योंकि कर्मभूमि में सभी प्रकार के तिर्यञ्च होते हैं।

प्रश्न २७ : क्या सम्मूर्च्छन मनुष्यों के भी सभी पर्याप्तियाँ होती हैं?

उत्तर : नहीं, सम्मूर्च्छन मनुष्यों के छहों (सभी) पर्याप्तियाँ नहीं होती हैं। उनके छहों अपर्याप्तियाँ होती हैं। उनके छहों पर्याप्तियों का प्रारम्भ हो जाता है लेकिन पर्याप्ति पूर्ण होने के पहले ही मरण को प्राप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार लब्ध्यपर्याप्तक एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा संज्ञी-असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों के भी जानना चाहिए अर्थात् एकेन्द्रिय के ४ अपर्याप्तियाँ, द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तक पाँच अपर्याप्तियाँ तथा संज्ञी जीवों के छह अपर्याप्तियाँ होती हैं।

नोट - निर्वृत्यपर्याप्तक एकेन्द्रिय आदि जीवों के भी अपर्याप्तियाँ होती हैं लेकिन उनके पर्याप्त नामकर्म का उदय पाया जाता है।

प्रश्न २८ : कितने भावों में छह अपर्याप्ति वाले जीव भी पाये जाते हैं?

उत्तर : २६ भावों में छह अपर्याप्ति वाले जीव भी पाये जाते हैं -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. (च. अच.) ५ ल.

औदयिक के १४ - २ ग. (ति.म.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

नोट - यहाँ लब्ध्यपर्याप्तक की अपेक्षा कथन करना चाहिए।

प्रश्न ३० : कितने औदयिक भावों में तीनों स्थान पाये जाते हैं?

उत्तर : १३ औदयिक भावों में तीनों स्थान पाये जाते हैं -

१ गति	- तिर्यञ्च	१	- असंयत
४ कषाय	- क्रो.मा.मा.लो.	१	- असिद्धत्व
१ लिङ्ग	- नपुंसक	३ लेश्या	- कृष्ण - नील-कापोत.
१	- मिथ्यादर्शन		
१	- अज्ञान		

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न २९ : क्या अपर्याप्त दशा (विग्रह गति) में जीव बिना श्वास के जीता है?

उत्तर : हाँ, बिना श्वासोच्छ्वास प्राण के जीता है, एकदम सब पर्याप्तियाँ प्राप्त नहीं होती हैं, क्रम से प्राप्त होती हैं। उदा. जैसे मकान बनाते समय नींव के एकदम बाद खिड़की नहीं लगती, ४ फुट के बाद ही लगती है। जिस प्रकार पहले गाड़ी का चेसिस/आधार लगता है इसमें मात्र पहिये लगे रहते हैं, एक व्यक्ति रहता है, पूरा खुला आकाश

रहता है यह अपर्याप्त अवस्था है। विग्रहगति में भी कार्मण शरीर को लेकर निकलते हैं। जैसे - चेसिस फिर नाम कर्म से उसकी फिटिंग (काच, सीट, डेकोरेशन आदि।) **(आ. विद्यासागर जी.)**

प्रश्न ३१ : किस स्थान के किस भेद में ५ पर्याप्ति रूप स्थान वाले जीव भी होते हैं?

उत्तर : उन स्थानों के उत्तर भेद जिनमें ५ पर्याप्ति रूप स्थान वाले जीव भी होते हैं -

स्थान	**भेद**	**स्थान**	**भेद**
१. गति मार्गणा	- तिर्यञ्चगति	१२. सम्यक्त्व मार्गणा	- मिथ्यात्व
२. इन्द्रिय मार्गणा	- पञ्चेन्द्रिय	१३. संज्ञी मार्गणा	- असंज्ञी
३. काय मार्गणा	- त्रस	१४. आहार मार्गणा	- आहारक
४. योग मार्गणा	- अनुभयवचनयोग औदा. काययोग	१५. गुणस्थान	- पहला
५. वेद मार्गणा	- तीनों वेद	१६. प्राण	- ७ प्राण
६. कषाय मार्गणा	- २५ कषाय	१७. संज्ञा	- ४ संज्ञा
७. ज्ञान मार्गणा	- कुमति-कुश्रुतज्ञान	१८. उपयोग	- कुम.कुश्रु.चक्षु. अच.
८. संयम मार्गणा	- असंयम	१९. ध्यान	- ४ आर्त्त. ४ रौद्र
९. दर्शन मार्गणा	- चक्षु. अचक्षुदर्शन	२०. आस्रव के प्रत्यय	- ४३
१० लेश्या मार्गणा	- कृष्णादि चार	२१. जाति	- ४ लाख
११ भव्यत्व मार्गणा	- भव्य अभव्य	२२. कुल	- ४३ १/२ ला.क.

प्रश्न ३२ : किस गुणस्थान में कौन-कौन सा पर्याप्ति रूप स्थान पाया जाता है?

उत्तर : पहले एवं दूसरे गुणस्थान में - तीनों पर्याप्ति रूप स्थान होते हैं।
तीसरे से चौदहवें गुणस्थान में - १ पर्याप्ति रूप स्थान - ६ पर्याप्तिरूप

प्रश्न ३३ : क्या संसार में ऐसे कोई जीव हैं जिनके एक भी पर्याप्ति नहीं होती है?

उत्तर : हाँ, संसार में कार्मण काययोग में स्थित जीवों के एक भी पर्याप्ति नहीं होती है, क्योंकि वहाँ किसी भी पर्याप्ति के योग्य वर्गणाओं का ग्रहण नहीं होता है। वहाँ अनाहारक अवस्था होती है।

विशेष - मनुष्यों के पर्याप्त अवस्था में अनाहारक होने का कारण यह है कि अयोगीकेवली भगवान के शरीर के निमित्तभूत आने वाले परमाणुओं का अभाव देखकर पर्याप्तक मनुष्यों के भी अनाहारकपना बन जाता है। **(ध.२/५०५)**

प्रश्न ३४ : ऐसे जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : ऐसे जीवों के ४८ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक के ९ - ज्ञानादि.....

क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञान, २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के २१ - ४ गति ४ कषाय.....

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

प्रश्न ३५ : कितने भाव छह पर्याप्ति वाले मिथ्यादृष्टि के ही होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव छह पर्याप्ति वाले मिथ्यादृष्टि के ही होता है -

क्षायोपशमिक का - विभंगज्ञान

प्रश्न ३६ : कितने भाव छह पर्याप्ति वाले तिर्यञ्च के भी होते हैं?

उत्तर : ३८ भाव छह पर्याप्ति वाले तिर्यञ्च के भी होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १६ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संय.

औदयिक के १७ - ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट - यहाँ ४, ५ पर्याप्ति वाले तिर्यञ्चों से तुलना नहीं करना चाहिए। मनुष्यगति वालों से तुलना की गई है।

प्रश्न ३७ : कितने भावों में छह पर्याप्ति वाले जीव ही होते हैं?

उत्तर : ५ भावों में छह पर्याप्ति वाले जीव ही होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के ४ - १ ज्ञा. (मनः.) १ अज्ञा. (विभं.) १ चा. १ संय.

नोट - शेष भावों में यद्यपि छह पर्याप्तियाँ होती हैं लेकिन उनके साथ कार्मण काययोग रूप अवस्था पाई जाती है जहाँ एक भी पर्याप्ति नहीं होती है इसलिए उनका यहाँ ग्रहण नहीं किया गया है।

उपर्युक्त भावों में कार्मण काययोग नहीं होता है इसलिए इनके छह पर्याप्तियाँ ही होती हैं। क्षायोपशमिक चारित्र में छठे गुणस्थान की अपेक्षा निर्वृ. बनती है। वहाँ छह अपर्याप्तियाँ होती हैं।

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **चार पर्याप्ति में कितने मूल भाव होते हैं?**

(अ) ३ (ब) २

(स) ५ (द) १

(ii) **कितने भावों में पर्याप्तियाँ नहीं होती हैं?**

(अ) ११ (ब) ९

(स) २ (द) कोई नहीं

(iii) **कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में ६ पर्याप्तियाँ होती हैं?**

(अ) १ (ब) ३

(स) ५ (द) २

(iv) **कुमतिज्ञान रूप भाव में कितनी पर्याप्ति वाले जीव होते हैं?**

(अ) ४, ५ (ब) ५, ६

(स) ४, ५, ६ (द) कोई नहीं

(v) **६ पर्याप्तियाँ किस भाव में नहीं होती हैं?**

(अ) क्षायिक भाव (ब) कुश्रुतज्ञान

(स) केवलज्ञान (द) कोई नहीं

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) कितने भावों में चार पर्याप्तियाँ हो सकती है?

(ii) देवगति रूप भाव की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितनी पर्याप्तियाँ होती हैं?

(iii) ६ अपर्याप्तियों में कितने वेद रूप भाव होते हैं?

(iv) ५ पर्याप्तियाँ कितने औदयिक भावों में हो सकती हैं?

(v) कितने क्षायोपशमिक भावों में चार पर्याप्तियाँ भी होती हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) क्षायिक भावों में ६ पर्याप्ति रूप स्थान ही होता है?

(ii) अभव्यत्व भाव में ६ पर्याप्ति रूप स्थान नहीं होता है?

(iii) ४ पर्याप्ति रूप स्थान में ५ लब्धि रूप भाव भी होते हैं?

(iv) सिद्ध भगवान के भी ६ पर्याप्तियाँ होती हैं?

(v) औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में ६ पर्याप्तियाँ होती हैं?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) ६ पर्याप्तियाँ .... औदयिक एवं .... क्षायोपशमिक भावों में भी होती हैं।

(ii) ४ पर्याप्तियाँ .... ज्ञान रूप .... अज्ञान रूप भाव में नहीं हो सकती हैं।

(iii) क्षायो. सम्यक्त्व रूप भाव की निर्वृ. अवस्था में.................... एवं .... पर्याप्ति होती है।

(iv) .... दर्शन .... लेश्या रूप भाव में ५ पर्याप्तियाँ होती हैं।

(v) ४ कषाय रूप भाव में .... पर्याप्ति .... पर्याप्ति .... पर्याप्ति रूप स्थान होता है।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		ब
(i)	५, ६ पर्याप्ति	-	मात्र छह पर्याप्ति
(ii)	४, ५, ६ पर्या. रूप स्थान	-	सिद्ध भगवान
(iii)	मात्र छह पर्याप्ति	-	५, ६ पर्याप्ति
(iv)	अचक्षुदर्शनरूप भाव	-	एक भी भाव नहीं
(v)	क्षायिक भाव	-	चक्षुदर्शन रूप भाव
(vi)	अतीतपर्याप्ति	-	औपशमिक चारित्र रूप भाव
(vii)	पीतलेश्या रूप भाव	-	कुमति-कुश्रुत ज्ञान रूप भाव
(viii)	५ पर्याप्ति ही होती है	-	४, ५, ६ पर्याप्ति

- उत्तरमाला -

१. (i) अ (ii) द (iii) स (iv) स (v) द

२. (i) २४ (ii) ६ अपर्याप्तियाँ (iii) ३ (iv) १६ (v) ८

३. (i) हाँ (ii) ना (iii) हाँ (iv) ना (v) हाँ

४. (i) १६,९ (ii) ५, १ (iii) आहार, शरीर (iv) २, ४ (v) ४, ५, ६

५. (i) चक्षुदर्शनरूप भाव (ii) कुमति-कुश्रुतज्ञान रूप भाव
(iii) औपशमिक चारित्र रूप भाव (iv) ४, ५, ६ पर्याप्ति
(v) मात्र छह पर्याप्ति (vi) सिद्ध भगवान
(vii) ५, ६ पर्याप्ति (viii) एक भी भाव नहीं।

प्राण

प्रश्न १ : प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके द्वारा यह जीव जीवितव्य रूप व्यवहार के योग्य होता है, उनको प्राण कहते हैं। **(गो.जी.जी.)** जिस प्रकार नेत्रों का खोलना-बन्द करना, वचन प्रवृत्ति आदि बाह्य प्राणों से जीव जीता है उसी प्रकार जिन अभ्यन्तर इन्द्रियावरण कर्म के क्षयोपशमादि के द्वारा जीव में जीवत्वपने का व्यवहार हो उनको प्राण कहते हैं। **(ध.१/२५७)**

पर्याप्ति पूर्ण हो जाने पर इन्द्रिय आदि का विषयों को ग्रहण करना आदि रूप अपने कार्य में प्रवृत्ति करना प्राण है। **(का.अ.टी. १४१)**

जिस प्रकार अन्न आदि बाह्य प्राणों से जीव जीवित रहते हैं, उसी प्रकार इन इन्द्रियादि प्राणों से जीव जीवित रहते हैं इसलिए इन्हें प्राण कहते हैं **(आ.सा. ११/७८)**

प्रश्न २ : प्राण कितने होते हैं?

उत्तर : प्राण दस होते हैं -

५ इन्द्रिय प्राण - स्पर्शनइन्द्रिय, रसना इन्द्रिय, घ्राण इन्द्रिय, चक्षु इन्द्रिय, कर्ण इन्द्रिय

३ बल - मनोबल वचनबल कायबल

१ - श्वासोच्छ्वास

१ - आयु

नोट - ये १० द्रव्य प्राण हैं।

इन्द्रियों के अगोचर जो शुद्ध चैतन्य प्राण है उसके प्रति शत्रुपक्षभूत क्षायोपशमिक इन्द्रिय प्राण हैं, अनन्तवीर्य रूप जो बल प्राण उसके अनन्त भागों में से एक भाग के प्रमाण मनोबल, वचनबल और काय बल रूप प्राण है। अनादि-अनन्त तथा शुद्ध जो चैतन्य प्राण है, उससे विपरीत एवं विलक्षण सादि और अन्तसहित आयु प्राण है, श्वासोच्छ्वास के आवागमन से उत्पन्न खेद से रहित जो शुद्ध चित् प्राण है उससे विपरीत आनपान प्राण अर्थात् श्वासोच्छ्वास प्राण है। ये व्यवहार से प्राण हैं। तथा सत्ता, चैतन्य, बोध आदि शुद्ध भाव प्राण हैं। **(वृ.द्र.सं. ३ टी.)**

प्रश्न ३ : इन्द्रिय आदि प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : **५ इन्द्रिय एवं मनोबल प्राण -** स्वार्थ (अपने अर्थ को) ग्रहण करने की शक्ति रूप लब्धि नामक भावेन्द्रिय स्वभाव वाले स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र से उत्पन्न हुए पाँच इन्द्रिय प्राण तथा नोइन्द्रिय से उत्पन्न मनोबल प्राण, ये छह प्राण तो वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से सहित मतिज्ञानावरण के क्षयोपशम से उत्पन्न होते हैं।

वचनबल प्राण - स्वर नामकर्म का उदय होने पर वचन व्यापार का कारण शक्ति-विशेष रूप वचन-बल प्राण होता है।

कायबल प्राण - शरीर नामकर्म का उदय होने पर शरीर की चेष्टा को उत्पन्न करने की शक्ति रूप काय-बल प्राण है।

श्वासोच्छ्वास - उच्छ्वास निश्वास नामकर्म के उदय के साथ शरीर नाम कर्म का उदय होने पर उच्छ्वास-निश्वास की प्रवृत्ति का कारण शक्ति रूप श्वासोच्छ्वास प्राण होता है।

आयुप्राण - आयुकर्म का उदय होने पर नारकादि पर्याय रूप भवधारण की शक्ति रूप आयुप्राण होता है। **(गो.जी.जी. १३१)**

प्रश्न ४ : प्राणातीत किसे कहते हैं?

उत्तर : इन दसों प्राणों के अभाव की अतीतप्राण (प्राणातीत) संज्ञा है। **(ध.२/४२३)**

प्रश्न ५ : प्राण प्ररूपणा में किन प्राणों को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : कितने ही आचार्य द्रव्येन्द्रियों की पूर्णता की अपेक्षा (केवली) १० प्राण कहते हैं परंतु उनका ऐसा कहना घटित नहीं होता है, क्योंकि सयोग जिन के भावेन्द्रियाँ नहीं पायी जाती हैं। यदि प्राणों में द्रव्येन्द्रियों का ही ग्रहण किया जावे तो संज्ञी जीवों के अपर्याप्त काल में सात प्राणों के स्थान पर कुल दो ही प्राण कहे जायेंगे, क्योंकि उनके द्रव्येन्द्रियों का अभाव है। अत: यहाँ पर भाव प्राणों को ग्रहण करना चाहिए। **(ध.२/४४७-४८)**

प्रश्न ६ : १० प्राण जीव से भिन्न हैं या अभिन्न?

उत्तर : कायादि प्राणों के साथ जीव का कथंचित् भिन्नपना है और कथंचित् अभिन्नपना है। वह ऐसे है कि तपे हुए लोहे के गोले की भाँति वर्तमान काल में वे दोनों पृथक् नहीं किये जाने के कारण व्यवहार नय से अभिन्न हैं और निश्चय नय से मरणकाल में कायादि प्राण जीव के साथ नहीं जाते हैं इसलिए भिन्न हैं। **(स.सा.)**

- यदि एकांत से प्राणों को सर्वथा जुदे मानें तो जिस प्रकार दूसरे के शरीर का घात होने पर दु:ख नहीं होता, उस प्रकार अपने देह का घात होने पर दु:ख नहीं होना चाहिए। इसलिए व्यवहार नय से अभेद है, निश्चय से नहीं, क्योंकि देह का विनाश होने पर जीव का विनाश नहीं होता है इसलिए भेद है। **(प.प्र.)**

कर्म विवक्षा

क्र.	प्राण	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	५ इन्द्रियप्राण	क्षयोपशम	मिथ्यात्व सासादनसम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व अविरतसम्यक्त्व संयमासंयम प्रमत्त-अप्रमत्त अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसाम्पराय उपशान्तकषाय क्षीणकषाय	औदयिक पारिणामिक क्षायोपशमिक औप.क्षा.क्षायो. क्षायोपशमिक क्षायोपशमिक औप. क्षा. औप. क्षा. औप. क्षा. औपशमिक क्षायिक	ये पाँचों प्राण सभी अवस्थाओं में सभी संज्ञी जीवों के पाये जाते हैं।
२.	मनोबल	क्षायोपशमिक (ध.१/१५९)	उपर्युक्त १२ गुणस्थान	पूर्ववत्	सैनी जीवों के पर्याप्त अवस्था में ही होता है।
३.	वचनबल	उदय	उपर्युक्त १२ गुण. सयोग केवली जिन	पूर्ववत् क्षायिक	
४.	कायबल	उदय	उपर्युक्त १२ गुण. सयोग केवली जिन	पूर्ववत् क्षायिक	
५.	श्वासोच्छ्वास	उदय	उपर्युक्त १२ गुण. सयोग केवली जिन	पूर्ववत् क्षायिक	
६.	आयु	उदय	उपर्युक्त १३ गुण. अयोग केवली जिन	पूर्ववत् क्षायिक	संसार के सभी जीवों के सभी अवस्था में होता है।
७.	प्राणातीत	क्षय	-	क्षायिक	सिद्ध भगवान

प्रश्न ७ : इन प्राणों में कौन-कौन से कर्म की अपेक्षा होती है?

उत्तर : इन प्राणों में कर्म की अपेक्षा -

५ इन्द्रिय प्राण - ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होते हैं।

मनोबल प्राण - ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होता है।

वचनबल प्राण - स्वर नामकर्म के उदय से। वचनबल रूप प्राण की उत्पत्ति में भाषा पर्याप्ति कारण है। **(ध.२/६६०)**

कायबल प्राण - शरीर नाम कर्म के उदय से। योग मार्गणा में गर्भित होने से योग के समान ही इसको क्षायोपशमिक आदि भाव रूप जानना चाहिए। **(ध.२/४१७ के आधार से)**

श्वासोच्छ्वास - श्वासोच्छ्वास नामकर्म के उदय से। श्वासोच्छ्वास प्राण में श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति कारण है। **(ध.२/६६०)**

आयु प्राण - आयु कर्म के उदय से

प्राणातीत अवस्था - आठों कर्मों के क्षय से

प्रश्न ८ : सयोग - अयोग केवली भगवान के मनोबल प्राण क्यों नहीं होता है?

उत्तर : मन:प्राण में भावमन और मन:पर्याप्ति दोनों कारण हैं इसलिए इनमें से जहाँ केवल एक कारण होता है वहाँ (सयोग केवली भगवान के) मन:प्राण नहीं कहा गया है केवली के भाव मन नहीं पाया जाता है इसलिए मन:पर्याप्ति के रहने पर भी मन:प्राण नहीं कहा गया है। **(ध.२/६६०)** द्रव्य की अपेक्षा सयोग केवली भगवान के भी १० प्राण होते हैं लेकिन क्षायोपशमिक भाव की प्रवृत्ति का अभाव होने से उनके भाव की अपेक्षा ४ प्राण होते हैं। **(बो.पा.३५)**

शेष संसारी जीवों के अपर्याप्त अवस्था में भावमन का अस्तित्व होते हुए भी मन:पर्याप्ति नहीं पाई जाती है। इसलिए मन:प्राण नहीं माना गया है।

प्रश्न ९ : मनोबल प्राण में कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : मनोबल प्राण में केवल एक गुणस्थान क्षायिक भावरूप होता है -

क्षीणकषायवीतराग छद्मस्थ

चौथा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होता है।

क्षपक श्रेणी की अपेक्षा आठवाँ, नवाँ, दसवाँ गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं।

प्रश्न १० : कायबल प्राण में कितने गुणस्थान औपशमिक भाव रूप भी होते हैं?

उत्तर : काय बल प्राण में ४ गुणस्थान औपशमिक भाव रूप भी होते हैं -

(१) अविरतसम्यक्त्व (२) अपूर्वकरण

(३) अनिवृत्तिकरण (४) सूक्ष्मसाम्पराय

प्रश्न ११ : कितने प्राणों के गुणस्थान पाँचों भाव रूप होते हैं?

उत्तर : सभी प्राणों के गुणस्थान पाँचों भाव रूप होते हैं -

उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान - औपशमिक

क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान - क्षायिक भाव रूप

सम्यग्मिथ्यात्व, संयमासंयम गुणस्थान - क्षायोपशमिक भाव रूप

प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयत गुणस्थान - क्षायोपशमिक भाव रूप

मिथ्यात्व गुणस्थान - औदयिक भाव रूप

सासादन सम्यक्त्व गुणस्थान - पारिणामिक भाव रूप

तेरहवें गुणस्थान में वचनबल, कायबल, श्वासोच्छ्वास एवं आयु, ये चार प्राण होते हैं। इनमें तेरहवाँ गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होता है। अर्थात् सभी प्राणों में उपर्युक्त गुणस्थान पाये जाते हैं अत: सभी प्राणों के गुणस्थान पाँचों भाव रूप होते हैं।

प्रश्न १२ : कौनसे प्राण में सबसे ज्यादा गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : आयु प्राण में सबसे ज्यादा अर्थात् तीन गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होते हैं -

(१) क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ (२) सयोगकेवली जिन

(३) अयोग केवली जिन।

इसमें क्षायिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा चौथा तथा क्षपक श्रेणी की अपेक्षा आठवाँ नवाँ दसवाँ गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप होता है।

प्रश्न १३ : कितने प्राण क्षयोपशम से उत्पन्न होते हैं?

उत्तर: ६ प्राण क्षयोपशम से उत्पन्न होते हैं -

५ इन्द्रिय प्राण - स्पर्शन इन्द्रिय प्राण, रसनाइन्द्रिय प्राण, घ्राणइन्द्रिय प्राण, चक्षुइन्द्रिय प्राण, कर्णइन्द्रिय प्राण - इन्द्रियावरण के क्षयोपशम से। मनोबल प्राण - अनिन्द्रियावरण कर्म के क्षयोपशम से।

प्रश्न १४ : कितने प्राण संसारी जीवों की प्रत्येक अवस्था में होते हैं?

उत्तर: केवल एक प्राण संसारी जीवों की प्रत्येक अवस्था में होता है-

आयु प्राण - यह पहले से चौदहवें गुणस्थान तक होता है।

यह निर्वृत्यपर्याप्त, लब्ध्यपर्याप्त तथा पर्याप्त सभी जीवों के होता है।

स्थान - विवरण

प्रश्न १५ : प्राणों में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : प्राणों में ४ स्थान होते हैं -

(१) १० प्राण रूप स्थान (२) ४ प्राण रूप स्थान

(३) १ प्राण रूप स्थान (४) प्राणातीत स्थान

प्रश्न १६ : इन स्थानों में किस-किस प्राण को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में प्राण -

१० प्राण रूप स्थान में - ५ इन्द्रिय प्राण, ३ बल प्राण, श्वासोच्छवास प्राण, आयु प्राण

४ प्राण रूप स्थान में - वचनबल कायबल श्वासोच्छ्वास आयु
स्पर्शनइन्द्रिय कायबल श्वासोच्छ्वास आयु
स्पर्शन इन्द्रिय रसना इन्द्रिय, कायबल आयु

१ प्राण रूप स्थान में - आयु प्राण

प्राणातीत स्थान - प्राण कर्मसापेक्ष नहीं होते हैं, चैतन्य प्राण होते हैं।

प्रश्न १७ : इन स्थानों के स्वामी कौन होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

१० प्राण रूप स्थान के - चारों गति के जीव एवं पहले से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

४ प्राण रूप स्थान के - तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीव
(एकेन्द्रिय एवं द्वीन्द्रिय जीव)

१ प्राण रूप स्थान के - चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव

प्राणातीत स्थान के - सिद्ध भगवान।

प्रश्न १८ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

१० प्राण रूप स्थान में - ४६

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १८ - ४ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन.....

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि.....

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

४ प्राणरूप स्थान में - ७

क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिकदान, क्षायिक लाभ, क्षायिक भोग, क्षायिक उपभोग, क्षायिक वीर्य

नोट - यद्यपि एक प्राण रूप स्थान में कोई भी भाव नहीं होता है लेकिन इस स्थान के स्वामी चौदहवें गुणस्थान वाले होते हैं इसलिए इसका यहाँ ग्रहण किया है।

विशेष - (१) ५ इन्द्रिय, कायबल एवं आयु, इन सात प्राण रूप स्थान भी होता है।

(२) कायबल एवं आयु, इन दो प्राण रूप स्थान भी होता है।

(३) कायबल, श्वासोच्छ्वास एवं आयु, इन तीन प्राण रूप स्थान तेरहवें गुणस्थान में होता है।

(४) एकेन्द्रिय आदि जीवों के ३, ४, ५, ६, ७, ८ एवं ९ प्राण रूप स्थान होता है।

७ प्राण रूप स्थान पहले दूसरे चौथे छठे गुणस्थान में पाया जाता है।

प्रश्न १९ : कितने स्थानों में पाँचों भावों के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान में पाँचों भावों के उत्तर भेद होते हैं -

१० प्राण रूप स्थान

विशेष - सात गण रूप स्थान में भी पाँचों भावों के उत्तर भेद होते हैं।

प्रश्न २० : कितने स्थानों में इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं?

उत्तर : दो स्थानों में इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं

४ प्राण रूप १ प्राण रूप

१) प्राणातीत स्थान में भी इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं लेकिन वहाँ कोई भी प्राण नहीं होता है इसलिए उसका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

२) २ बल, श्वासो. एवं आयु प्राण रूप स्थान केवली भगवान के होता है। उनके भावेन्द्रियाँ नहीं होने से इन्द्रियप्राण नहीं होते हैं। इसी प्रकार एक प्राण रूप स्थान अयोग केवली भगवान के होता है इसलिए एक प्राण रूप स्थान में भी इन्द्रियप्राण नहीं होते हैं। तेरहवें गुणस्थान में २ (कायबल, आयु) प्राण भी होते हैं उनके भी इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं।

विशेष : एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय जीवों की अपेक्षा ४ प्राण रूप स्थान में इन्द्रिय प्राण भी होते हैं।

प्रश्न २१ : कितने प्राण सभी स्थानों में पाये जाते हैं?

उत्तर : केवल १ प्राण सभी स्थानों में पाया जाता है - आयु प्राण।

तालिका का संकेत - यद्यपि ७ प्राण रूप स्थान के कोई विशेष गति एवं गुणस्थान वाले स्वामी नहीं हैं फिर भी इसमें गुणस्थान तथा भाव आदि पाये जाते हैं इसलिए उसका यहाँ ग्रहण किया गया है-

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	२	१० प्राण. ७ प्राण.	देवगति की अपेक्षा ७ प्राण रूप स्थान होता है।
	चारित्र	१	१० प्राण रूप स्थान	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	५	१० प्राण. ७ प्राण. ४ प्राण. १ प्राण. प्राणातीत	एक प्राण रूप स्थान चौदहवें गुण. की अपेक्षा होता है।
	चारित्र	४	१० प्राण. ४ प्राण. १ प्राण. प्राणा.	
	ज्ञानादि सात	३	४ प्राण. १ प्राण. प्राणा.	सिद्ध भगवान के प्राणातीत स्थान होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	मन:पर्ययज्ञान	१	१० प्राण रूप स्थान	
	कुमति. कुश्रुत.	२	१० प्राण. ७ प्राण.	एकेन्द्रिय एवं द्वीन्द्रिय जीवों की अपेक्षा ४ प्राण रूप स्थान भी होता है।
	विभंगज्ञान	१	१० प्राण रूप स्थान	चारों गति में होता है।
	चक्षु.अच.	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	अवधिदर्शन	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	५ लब्धि	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	सम्यक्त्व	२	१० प्राण. ७ प्राण.	चौथे एवं छठे गुणस्थान की अपेक्षा ७ प्राण रूप स्थान होता है।
	चारित्र	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	संयमासंयम	१	१० प्राण रूप स्थान	
४.	**औदयिक**			
	३ गति	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	मनुष्यगति	४	१० प्राण. ७ प्राण. ४ प्राण. १ प्राण.	४ प्राण रूप स्थान तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	४ कषाय	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	३ लिङ्ग	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	मिथ्यादर्शन	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	अज्ञान	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	असंयत	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	असिद्धत्व	४	१० प्राण. ७ प्राण. ४ प्राण. १ प्राण.	१० प्राण रूप स्थान पहले से बारहवें गुणस्थान तक होता है।
	३ अशुभलेश्या	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	पीत. पद्म लेश्या	२	१० प्राण. ७ प्राण.	
	शुक्ल लेश्या	३	१० प्राण. ७ प्राण. ४ प्राण.	४ प्राण रूप स्थान तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	५	१० प्राण. ७ प्राण. ४ प्राण. १ प्राण. प्राणातीत	
	भव्यत्व	४	१० प्राण. ७ प्राण. ४ प्राण. १ प्राण.	
	अभव्यत्व	२	१० प्राण. ७ प्राण.	दोनों स्थान पहले गुणस्थान में ही होते हैं।

नोट - एकेन्द्रिय में होने वाले २४ भावों में एकेन्द्रिय एवं द्वीन्द्रिय की अपेक्षा चार प्राण रूप स्थान होता है।

प्रश्न २२ : क्षायोपशमिक भाव के कितने उत्तर भेदों में १० प्राण रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : क्षायोपशमिक भाव के १५ उत्तर भेदों में १० प्राण रूप स्थान भी होता है -

३ ज्ञान - मति., श्रुत. अवधि.   ५ लब्धि - दान लाभ भोग उपभोग वीर्य
२ अज्ञान - कुमति. कुश्रुत.   १ - सम्यक्त्व
३ दर्शन - चक्षु. अचक्षु. अवधि.   १ - चारित्र

प्रश्न २३ : क्या क्षायिक ज्ञानादि के अलावा किसी भी भाव में चार प्राण रूप स्थान नहीं हो सकता?

उत्तर: नहीं, २ बल, श्वासोच्छ्वास तथा आयु, इन चार प्राण रूप स्थान तो क्षायिक ज्ञानादि १४ भावों में ही होता है लेकिन, १ इन्द्रिय कायबल श्वासोच्छ्वास तथा आयु या २ इन्द्रिय कायबल तथा आयु इन चार प्राण रूप स्थान में अन्य भाव भी पाये जाते हैं। इनमें होने वाले भाव -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.
औदयिक के १३ - १ ग (ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ)
पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न २४ : कितने भावों में ७ प्राण रूप स्थान केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होता है?

उत्तर : ४ भावों में ७ प्राण रूप स्थान केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व - चौथे गुणस्थान की अपेक्षा
क्षायोपशमिक का १ - चारित्र - छठे गुणस्थान की अपेक्षा
औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन - पहले गुणस्थान की अपेक्षा
पारिणामिक का १ - अभव्यत्व - पहले गुणस्थान की अपेक्षा

प्रश्न २५ : कितने भावों में चार स्थान पाये जाते हैं?

उत्तर : ४ भावों में चार स्थान पाये जाते हैं -

क्षायिक के १ - चारित्र (१० प्राण. ४ प्राण. १ प्राण. प्राणातीत.)
औदयिक के २ - १ ग. (म.) १ असि. (१० प्राण. ७ प्राण. ४ प्राण. १ प्राण.)
पारिणामिक के १ - भव्यत्व (१० प्राण. ७ प्राण. ४ प्राण. १ प्राण.)

प्रश्न २६ : किस भाव का कौनसा स्थान दो गति में ही होता है?

उत्तर : पीत-पद्म लेश्या रूप भाव का ७ प्राण रूप स्थान - मनुष्यगति देवगति
शुक्ल लेश्या रूप भाव का ७ प्राण रूप स्थान - मनुष्यगति देवगति
संयमासंयम में १० प्राण रूप स्थान - मनुष्यगति - तिर्यञ्चगति
असिद्धत्व भाव का ४ प्राण रूप स्थान - मनुष्य गति, तिर्यंचगति
जीवत्व एवं भव्यत्व भाव का ४ प्राण रूप स्थान - मनुष्य गति, तिर्यंचगति

प्रश्न २७ : कितने भावों में १० प्राण रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : ४२ भावों में १० प्राण रूप स्थान भी होता है -
औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारित्र
औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न २८ : कितने भावों में ७ प्राण रूप स्थान केवल मनुष्यगति की अपेक्षा होता है?

उत्तर : दो भावों में ७ प्राण रूप स्थान केवल मनुष्यगति की अपेक्षा होता है -
क्षायोपशमिक का १ - चारित्र
औदयिक का १ - मनुष्यगति

प्रश्न २९ : कितने भावों में दो स्थान होते हैं?

उत्तर : ३५ भावों में दो स्थान होते हैं -
औपशमिक का १ - सम्यक्त्व - १० एवं ७ प्राण रूप स्थान
क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अव.) २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा. इनमें १० एवं ७ प्राण रूप स्थान
औदयिक के १८ - ३ ग. ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. ५ ले. (शुक्ल बिना) इनमें १० एवं ७ प्राण रूप स्थान
पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

नोट - यह कथन तालिका के आधार से समझना चाहिए।

प्रश्न ३० : कितने भावों में ७ प्राण रूप स्थान के साथ चारों गतियाँ हो सकती हैं?

उत्तर : २९ भावों में ७ प्राण रूप स्थान के साथ चारों गतियाँ हो सकती हैं।

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १४ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३१ : कितने भावों में ४ प्राण रूप स्थान एक गुणस्थान की अपेक्षा होता है?

उत्तर : ११ भावों में ४ प्राण रूप स्थान एक गुणस्थान की अपेक्षा होता है -

क्षायिक के ९ - ज्ञान, दर्शन.....। (तेरहवें गुणस्थान में)

औदयिक के २ - १ मनुष्यगति, १ लेश्या (शुक्ल) (तेरहवें गुणस्थान में)

प्रश्न ३२ : कितने भावों में ५ स्थान होते हैं?

उत्तर : केवल २ भावों में ५ स्थान होते हैं -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

पारिणामिक का १ - जीवत्व

प्रश्न ३३ : कितने भावों में केवल चौथे एवं छठे गुणस्थान की अपेक्षा सात प्राण रूप स्थान बनता है?

उत्तर : ६ भावों में केवल चौथे एवं छठे गुणस्थान की अपेक्षा सात प्राण रूप स्थान बनता है।

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञान, १ दर्शन (अव.), १ सम्य.

तालिका संकेत - सामान्य रूप से क्षायिक ज्ञानादि सात भावों को छोड़कर शेष भावों में १० प्राण होते हैं, क्योंकि सभी भाव संज्ञी पञ्चेन्द्रिय की पर्याप्त अवस्था में भी होते हैं। लेकिन संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक को छोड़कर शेष एकेन्द्रियादि जीवों के दस प्राण नहीं होते हैं और भाव उन जीवों के भी पाये जाते हैं इसलिए यहाँ जिन भावों में जितने-जितने प्राण वाले जीव पाये जा सकते हैं, उन सबका संग्रह करके प्राणों की विवक्षा की गई है।

भावों में प्राण

क्र.	भाव	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**		
	सम्यक्त्व	१०, ७	
	चारित्र	१० प्राण-५ इन्द्रिय ३ बल श्वासो. आयु	
२.	**क्षायिक**		
	सम्यक्त्व	१०, ७, ४, २, १	तेरहवें गुण. वालों की अपेक्षा ४ और २ प्राण होते हैं।
	चारित्र	१०, ४, २, १	
	ज्ञानादि सात	४, २, १	१ प्राण चौदहवें गुण. वालों की अपेक्षा होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**		
	३ ज्ञान	१०, ७	
	मन:पर्ययज्ञान	१०	
	कुमति कुश्रुत.	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	३ प्राण वाले एकेन्द्रिय की अपेक्षा होते हैं।
	विभंगज्ञान	१०	
	चक्षु-दर्शन	१० ९ ८ ७ ६	८ एवं ६ प्राण वाले चतुरिन्द्रिय की अपेक्षा होते हैं।
	अचक्षुदर्शन	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	
	अवधिदर्शन	१० ७	
	५ लब्धि	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	
	सम्यक्त्व	१० ७	
	चारित्र	१० ७	७ प्राण वाले आहारक मिश्र काययोग में छठे गुण. की अपेक्षा होते हैं।
	संयमासंयम	१०	
४.	**औदयिक**		
	नरकगति	१० ७	
	तिर्यञ्चगति	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	
	मनुष्यगति	१० ७ ४ २ १	४ आदि प्राण केवली भगवान की अपेक्षा होते हैं।
	देवगति	१० ७	
	४ कषाय	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	१० और ७ प्राण वाले चारों गतियों में होते हैं।
	स्त्री-पुरु.	१० ९ ७	
	नपुंसकलिङ्ग	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	
	मिथ्यादर्शन	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	
	अज्ञान	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	
	असंयत	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	
	असिद्धत्व	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३ २ १	३ प्राण एकेन्द्रिय एवं तेरहवें गुण. की अपेक्षा होते हैं।
	३ अशुभलेश्या	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	
	पीत लेश्या	१० ९ ७	९ प्राण असैनी पञ्चेन्द्रिय के होते हैं।
	पद्मलेश्या	१० ७	
	शुक्ल लेश्या	१० ७ ४ २	४ और २ प्राण सयोगी केवली की अपेक्षा होते हैं।
५.	**पारिणामिक**		
	जीवत्व	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३ २ १	१० प्राण वाले चारों गति में होते हैं।
	भव्यत्व	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३ २ १	
	अभव्यत्व	१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३	९ आदि प्राण तिर्यञ्चगति वालों के ही होते हैं।

प्रश्न ३४ : कितने भावों के उत्तर भेदों में एक प्राण वाले जीव नहीं हो सकते हैं?

उत्तर : दो भावों के उत्तर भेदों में एक प्राण वाले जीव नहीं हो सकते हैं -

(१) औपशमिक (२) क्षायोपशमिक

प्रश्न ३५ : कितने भावों में १०, ९ ८ आदि एक पर्यन्त प्राण वाले जीव हो सकते हैं?

उत्तर : केवल ३ भावों में १०, ९ ८ आदि एक पर्यन्त प्राण वाले जीव हो सकते हैं -

औदयिक का १ - असिद्धत्व

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न ३६ : कितने भावों में १० प्राण वाले जीव केवल मिथ्यात्व गुणस्थान में पाये जाते हैं?

उत्तर : २ भावों में १० प्राण वाले जीव केवल मिथ्यात्व गुणस्थान में पाये जाते हैं -

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न ३७ : कितने भावों में तीन प्राण वाले जीव भी हो सकते हैं?

उत्तर : ३५ भावों में तीन प्राण वाले जीव भी हो सकते हैं -

इनमें से २१ भावों में एकेन्द्रिय की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था की अपेक्षा तीन प्राण होते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञान (कुम.कुश्रु.) १ दर्शन (अच.) ५ ल.

औदयिक के १२ - १ ग. (तिर्य.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ असं. १ अज्ञा. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

तथा ११ भावों में तेरहवें गुणस्थान में तीन प्राण वाले जीव होते हैं -

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन......

औदयिक के २ - १ ग. (मनु.) १ ले. (शुक्ल)

शेष तीन भावों में दोनों अपेक्षा ३ प्राण होते हैं -

औदयिक का १ - असिद्धत्व

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३८ : कितने भावों में छह प्राण वाले जीव भी होते हैं?

उत्तर : २५ भावों में छह प्राण वाले जीव भी होते हैं -

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १३ - १ ग. ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

७ प्राण

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	पर्याप्त अवस्था में नहीं होता है।
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	पर्याप्त अवस्था में नहीं होता है।
३.	**क्षायोपशमिक**	१५	३ ज्ञान - म.श्रु.अव.	सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं।
			२ अज्ञान-कुमति. कुश्रु.	
			३ दर्शन-च.अच.अव.	
			५ ल.-दा.ला.भो.उप.वी.	त्रीन्द्रिय जीव के भी होती हैं।
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - चारित्र	
४.	**औदयिक**	२१	४ गति-न.ति.म.दे.	
			४ कषाय-क्रो.मा.मा.लो.	
			३ लिङ्ग-स्त्री.पुरु.नपुं.	स्त्री-पुरुषलिङ्ग निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ही होते हैं।
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	तीन अशुभ लेश्या चारों गति में हो सकती हैं।
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	

प्रश्न ३९ : ७ प्राण वालों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : ७ प्राण वालों के ४१ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. २ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ कषा......

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ४० : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ ७ प्राण किस-किस के होते हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ ७ प्राणों में होने वाले जीव

मनुष्य गति में - कर्मभूमिया मनुष्यों के

देवगति में - वैमानिक देवों में

कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा तिर्यंच गति एवं नरक गति में भी ७ प्राण होते हैं। भोगभूमिया मनुष्यों के भी कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा ७ प्राण होते हैं।

प्रश्न ४१ : ७ प्राण वाले पर्याप्त होते हैं या निर्वृत्यपर्याप्त?

उत्तर : ७ प्राण वाले त्रीन्द्रिय की अपेक्षा पर्याप्त होते हैं, इनके ३ इन्द्रिय २ बल (वच. काय) श्वासोच्छ्वास तथा आयु, ये सात प्राण होते हैं। तथा संज्ञी और असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय की अपेक्षा निर्वृत्यपर्याप्तक होते हैं। इनके ५ इन्द्रिय, कायबल एवं आयु, ये सात प्राण होते हैं।

७ प्राण वाले लब्ध्यपर्याप्त भी होते हैं। उनके भी ५ इन्द्रिय १ बल (काय) तथा आयुप्राण होते हैं।

प्रश्न ४२ : सात प्राण वालों के पर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : सात प्राण वालों के पर्याप्त अवस्था में २४ भाव होते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. १ दर्शन (अच.) ५ ल.

औदयिक के १३ - १ ग. (ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ४३ : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ७ प्राण में होने वाले पूरे ४१ भाव होते हैं।

प्रश्न ४४ : इनके कितने भाव निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ही होते हैं?

उत्तर : इनके १७ भाव निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ही होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ७ - ३ ज्ञा. २ दर्श. (च.अव.) १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के ८ - ३ ग. (न.म.दे.) २ लि. (स्त्री-पुरु.) ३ ले. (शुभ)

प्रश्न ४५ : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ४ गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादनसम्यक्त्व (३) अविरतसम्यक्त्व (४) प्रमत्तसंयत.

इनमें भाव -

मिथ्यात्व गुणस्थान में - ३३

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्शन (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ....

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

इनमें से नरकगति, मिथ्यादर्शन तथा अभव्यत्व को छोड़कर शेष ३० भाव सासादनसम्यक्त्व में होते हैं।

अविरतसम्यक्त्व में - ३५

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १९ - ४ ग. ४ क. २ लि. (पु.नपुं.) १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रमत्त संयत में - २७

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के ११ - १ ग (म.) ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

४ प्राण

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	-	-	-
२.	**क्षायिक**	९	ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग वीर्य सम्यक्त्व चारित्र	तेरहवें गुणस्थान में होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**	८	२ अज्ञान-कुम. कुश्रु.	एके. तथा द्वीन्द्रिय की अपेक्षा होते हैं।
			१ दर्शन-अचक्षु.	एके. तथा द्वीन्द्रिय की अपेक्षा होते हैं।
			५ लब्धि-दा.ला.भो.उप.वी.	एके. तथा द्वीन्द्रिय की अपेक्षा होते हैं।
४.	**औदयिक**	१५	२ गति-तिर्य. मनु.	मनुष्यगति तेरहवें गुण. की अपेक्षा होती है।
			४ कषा.-क्रो.मा.मा.लो.	
			१ लि.-नपुंसक	वेदातीत जीव भी होते हैं।
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			४ लेश्या-कृ.नी.का.शु.	शुक्ल लेश्या तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा होती है।
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	
			भव्यत्व	
			अभव्यत्व	एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय की अपेक्षा होता है।

प्रश्न ४६ : चार प्राण वालों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : चार प्राण वालों के ३५ भाव होते हैं -

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन...

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के १५ - २ गति (ति.म.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ४७ : चार प्राण वाले पर्याप्त होते हैं या निर्वृत्यपर्याप्त?

उत्तर : चार प्राण वाले द्वीन्द्रिय की अपेक्षा निर्वृत्यपर्याप्त ही होते हैं तथा एकेन्द्रिय की अपेक्षा पर्याप्त होते हैं। तेरहवें गुणस्थानवर्ती सयोग केवली की अपेक्षा भी पर्याप्त ही होते हैं, क्योंकि समुद्घात अवस्था में जब उनके कार्मण काययोग या निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था होती है तब ४ प्राण नहीं होते हैं। इनके पर्याप्त अवस्था में ही २ बल (वचन. काय.) श्वासोच्छ्वास तथा आयु ये चार प्राण होते हैं।

प्रश्न ४८ : कितने भाव चार प्राण वाले सभी जीवों के पाये जाते हैं?

उत्तर : केवल तीन भाव चार प्राण वाले सभी जीवों के पाये जाते हैं -

औदयिक का १ - असिद्धत्व

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४९ : कितने भावों का कोई भी उत्तर भेद चार प्राण वालों के नहीं होता है?

उत्तर : केवल एक भाव का कोई भी उत्तर भेद चार प्राण वालों के नहीं होता है - औपशमिक

क्योंकि यह भाव चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक होता है इन गुणस्थानों में चार प्राण वाले जीव नहीं होते हैं।

प्रश्न ५० : चार प्राण वालों के कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : चार प्राण वालों के ३ गुणस्थान होते हैं -

पहला, दूसरा, तेरहवाँ

इनमें भाव - पहले गुणस्थान में - २४

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. १ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १३ - १ ग. (ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशुभ)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

दूसरे गुणस्थान में मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव कम कर देने पर २२ भाव होते हैं।

तेरहवें गुणस्थान में - १४

क्षायिक के ९, औदयिक के ३, पारिणामिक के २।

प्रश्न ५१ : कितने भाव चार प्राण वालों के दूसरे गुणस्थान में नहीं पाये जाते हैं?

उत्तर : १३ भाव चार प्राण वालों के दूसरे गुणस्थान में नहीं पाये जाते हैं -

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शनादि

औदयिक के ३ - १ ग. (मनु.) १ मि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

इनमें से मिथ्यादर्शन और अभव्यत्व को छोड़कर शेष भाव पहले गुणस्थान में भी नहीं पाये जाते हैं।

प्रश्न ५२ : चार प्राण वालों के किस गुणस्थान में कितने भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : चार प्राण वालों के गुणस्थानों में भाव -

पहले गुणस्थान में तीन भाव के - क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक

दूसरे गुणस्थान में तीन भाव के - क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक

तेरहवें गुणस्थान में तीन भाव के - क्षायिक औदयिक पारिणामिक

सामान्य रूप से ४ प्राण वालों के चार भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं - (१) क्षायिक (२) क्षायोपशमिक (३) औदयिक (४) पारिणामिक

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ५३ : क्षायिक ज्ञान रूप भाव में कितने प्राण नहीं हो सकते हैं?

उत्तर : क्षायिक ज्ञान रूप भाव में छह प्राण नहीं हो सकते हैं -

५ इन्द्रिय प्राण - स्पर्शनइन्द्रिय प्राण, रसनेन्द्रिय प्राण, घ्राण इन्द्रिय प्राण, चक्षुइन्द्रिय प्राण, कर्ण इन्द्रिय प्राण

१ बल - मनोबल

क्योंकि ये प्राण क्षायोपशमिक होते हैं, तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में क्षायोपशमिक भाव नहीं होते हैं, इसलिए क्षायिकज्ञानादि भावों के साथ ये प्राण नहीं होते हैं।

प्रश्न ५४ : कितने भावों में दस प्राणों के साथ केवल एक गति होती है?

उत्तर : ८ भावों में दस प्राणों के साथ केवल एकगति होती है -

औपशमिक का १ - चारित्र - मनुष्यगति

क्षायिक का १ - चारित्र - मनुष्यगति

क्षायोपशमिक के २ - मन:पर्ययज्ञान, चारित्र-मनुष्यगति

औदयिक के ४ - नरकगति रूप भाव में - नरकगति, तिर्यञ्चगति रूप भाव में-तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति रूप भाव में मनुष्यगति, देवगति रूप भाव में देवगति।

प्रश्न ५५ : कितने स्थानों में तीन गुणस्थान वाले जीव हो सकते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान में ३ गुणस्थान वाले जीव हो सकते हैं -

४ प्राण रूप स्थान - इसमें पहले, दूसरे और तेरहवें गुणस्थान वाले जीव हो सकते हैं।

प्रश्न ५६ : कितने प्राणों में किस गति रूप भाव के साथ कौनसा जीवसमास होता है?

उत्तर : प्राणों में गति की अपेक्षा जीवसमास -

प्राण	**गति रूप भाव**	**संख्या**	**जीवसमास**
१० प्राण	४	१	संज्ञीपंचेन्द्रिय सम्बन्धी
९ प्राण	तिर्यञ्चगति	१	असंज्ञीपञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
८ प्राण	तिर्यञ्चगति	१	चतुरिन्द्रिय सम्बन्धी
७ प्राण	तीन गति	१	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
	तिर्यञ्चगति	३	संज्ञीपञ्चे असंज्ञीपञ्चे. सम्बन्धी, त्रीन्द्रिय संबंधी
६ प्राण	तिर्यञ्चगति	२	चतुरिन्द्रिय द्वीन्द्रिय सम्बन्धी
५ प्राण	तिर्यञ्चगति	१	त्रीन्द्रिय सम्बन्धी
४ प्राण	मनुष्यगति	१	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी (केवली भगवान की अपेक्षा)
	तिर्यञ्चगति	१५	एकेन्द्रिय सम्बन्धी १४, द्वीन्द्रिय सम्बन्धी १
३ प्राण	तिर्यञ्चगति	१४	एकेन्द्रिय सम्बन्धी
२ प्राण	मनुष्यगति	१	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी - समुद्घातकेवली की अपेक्षा
१ प्राण	मनुष्यगति	१	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी - अयोगकेवली भगवान की अपेक्षा

नोट - तेरहवें गुणस्थान में वचन योग का निरोध हो जाने पर तीन प्राण होते हैं, उनके पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी जीवसमास होता है।

प्रश्न ५७ : कितने प्राण स्थानों में मनुष्यगति रूप भाव के साथ आहारक-अनाहारक होते हैं?

उत्तर : ५ प्राण स्थानों में मनुष्यगति रूप भाव के साथ आहारक-अनाहारक होते हैं -

१० प्राण रूप स्थान में - सभी जीव आहारक ही होते हैं, क्योंकि विग्रहगति एवं कार्मण काययोग में किसी भी जीव के १० प्राण नहीं होते हैं।

७ प्राण रूप स्थान में - सभी मनुष्य विग्रहगति में अनाहारक तथा लब्ध्यपर्याप्तक और निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में आहारक होते हैं।

४ प्राण रूप स्थान में - सयोग केवली भगवान आहारक ही होते हैं।

२ प्राण रूप स्थान में - समुद्घात अवस्था में कार्मण काययोग के समय अनाहारक तथा औदारिकमिश्र काययोग एवं (तीसरे) शुक्लध्यान के समय आहारक।

१ प्राण रूप स्थान में - अनाहारक ही होते हैं।

नोट - यहाँ सामान्य एवं विशेष स्थानों को लेकर यह कथन किया गया है।

प्रश्न ५८ : किस-किस प्राण वालों के वचनयोग के साथ कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

उत्तर : प्राण वालों के वचनयोग के साथ क्षायोपशमिक भाव -

१० प्राण वालों के चारों वचन योगों के साथ - १८ भाव

९ प्राण वालों के अनुभय वचन योग के साथ - ९ भाव (२ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.)

८ प्राण वालों के अनुभय वचन योग के साथ - ९ भाव (२ अज्ञा.२ दर्श.५ ल.)

७ प्राण वालों के अनुभय वचन योग के साथ - ८ भाव (२ अज्ञा. १ दर्श. ५ ल.)

६ प्राण वालों के अनुभय वचन योग के साथ - ८ भाव (२ अज्ञा. १ दर्श. ५ ल.)

४ प्राण वालों के सत्य-अनुभय वचन योग के साथ तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा क्षायोपशमिक भाव नहीं है।

नोट - द्वीन्द्रिय आदि जीवों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ४ आदि प्राण पाये जाते हैं लेकिन वहाँ वचन योग नहीं होने से उनका ग्रहण नहीं किया है।

केवली भगवान के २ एवं १ प्राण में न वचनयोग होता है और न क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

प्रश्न ५९ : लेश्या रूप भावों में सात प्राण कितनी गति की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : लेश्या रूप भावों में सात प्राणों में गति की अपेक्षा -

कृष्ण-नील-कापोत लेश्या में - चारों गति

पीत-पद्म-शुक्ल लेश्या में - २ गति (मनुष्य एवं देवगति)

तिर्यंच गति में शुभ लेश्याओं के साथ सात प्राण नहीं होते हैं, क्योंकि तिर्यंचगति में जाते समय देवगति के जीवों की भी शुभ लेश्याएँ नष्ट हो जाती हैं।

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **४ प्राण वाले जीवों के कितने क्षायिक भाव होते हैं?**

(अ) ८ (ब) ७

(स) ९ (द) १

(ii) **१० प्राण वालों के कितने भावों के उत्तर भेद हो सकते हैं?**

(अ) ५ (ब) ३

(स) ४ (द) १

(iii) **७ प्राण वालों के कितने क्षायोपशमिक भाव हो सकते हैं?**

(अ) १४ (ब) १५

(स) १६ (द) कोई नहीं

(iv) **एक प्राण वालों के कितने भाव होते हैं?**

(अ) ५ (ब) १३

(स) १४ (द) कोई नहीं

(v) **प्राण प्ररूपणा में कितने स्थान होते हैं?**

(अ) ४ (ब) ६

(स) ३ (द) १०

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) १० प्राण रूप स्थान में कितने भाव होते हैं?

(ii) कितने प्राण रूप स्थान के स्वामी चारों गति के जीव होते हैं?

(iii) क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में कितने स्थान होते हैं?

(iv) ४ कषाय रूप भाव में कम-से-कम कितने प्राण होते हैं?

(v) कितने औदयिक भावों में १० प्राण केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में १ प्राण वाले जीव भी होते हैं।

(ii) १० प्राण वालों के १५ क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

(iii) ७ प्राण कुमति ज्ञान रूप भाव वालों के भी होते हैं।

(iv) प्राणातीत जीवों के पारिणामिक भाव भी होता है।

(v) ४ प्राण वालों के क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद भी होते हैं।

४. **रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए।**

(i) ७ प्राण वालों के ………………… औदयिक ………………… क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

(ii) १० प्राण वालों के ………………… पारिणामिक एवं ………………… क्षायिक भाव होते हैं।

(iii) १ प्राण वालों के ………………… औपशमिक ………………… क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

(iv) ४ प्राण रूप स्थान में ………………… इन्द्रिय तथा ………………… बल प्राण नहीं होता है।

(v) ६ प्राण वालों के ………………… क्षायिक ………………… औपशमिक ………………… पारिणामिक भाव नहीं होते हैं।

५. **सही जोड़ी बनाइये -**

	अ		ब
(i)	१० प्राण	-	१० भाव
(ii)	१ प्राण	-	४ प्राण
(iii)	९ क्षायिक	-	४१ भाव
(iv)	४ प्राण	-	४६ भाव
(v)	७ प्राण	-	१३ भाव
(vi)	४ गति रूप भाव	-	२५ भाव
(vii)	प्राणातीत	-	२ गति रूप भाव
(viii)	८ प्राण	-	१० प्राण

- उत्तरमाला -

१. (i) स (ii) अ (iii) ब (iv) ब (v) अ

२. (i) ४६ (ii) १० (iii) ४ (iv) ३ (v) १

३. (i) हाँ (ii) ना (iii) हाँ (iv) हाँ (v) हाँ

४. (i) २१, १५ (ii) ३, २ (iii) ० ०

(iv) घ्राणादि तीन, मनोबल (v) ९, २, ०

५. (i) ४६ भाव (ii) १३ भाव

(iii) ४ प्राण (iv) २ गति रूप भाव

(v) ४१ भाव (vi) १० प्राण

(vii) १० भाव (viii) २५ भाव

संज्ञा

प्रश्न १ : संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनसे पीड़ित जीव इस भव में उन विषयों का सेवन करते हुए भी इस लोक और परलोक में उनके प्राप्त होने तथा न होने पर भी दारुण दुःख पाते हैं उन चार वांछाओं को संज्ञा कहते हैं। **(गो.जी. १३४)**

आहार आदि विषयों की वाँछा को संज्ञा कहते हैं। **(सर्वा. २/२४)**

प्रश्न २ : संज्ञाएँ कितनी होती हैं?

उत्तर : संज्ञाएँ चार होती हैं -

(१) आहार संज्ञा (२) भय संज्ञा (३) मैथुन संज्ञा (४) परिग्रह संज्ञा

आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रह संज्ञा तथा क्षीण संज्ञा वाले भी होते हैं। **(ध.२/४१९-२३)**

प्रश्न ३ : आहार संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर: आहार अर्थात् विशिष्ट अन्न आदि की वाञ्छा को आहार संज्ञा कहते हैं। **(गो.जी. १३५)**

आहार संज्ञा की उत्पत्ति के कारण -

१) खाद्य स्वाद्य लेह्य पेय आदि चार प्रकार के आहार को देखने से

२) भोजन का स्मरण करने से

३) उनकी कथा के श्रवण आदि रूप उपयोग से

४) पेट खाली होने से

५) असातावेदनीय कर्म की उदीरणा या तीव्र उदय से

इनमें से चार बाह्य कारण हैं तथा पाँचवाँ अन्तरंग कारण है। **(गो.जी. १३५)**

प्रश्न ४ : भय संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर : भय से उत्पन्न हुई भागने की इच्छा को भय संज्ञा कहते हैं। **(गो.जी. १३६)**

भय संज्ञा की उत्पत्ति के कारण -

१) अति भयंकर व्याघ्र आदि या क्रूर मृगारि को देखने से

२) भयंकर व्याघ्र आदि की कथा सुनने से

३) भयंकर व्याघ्र आदि की ओर उपयोग जाने से (उनकी स्मृति से)

४) शक्ति की कमी होने से

५) भय नामक नोकषाय के तीव्र उदय-उदीरणा से। **(गो.जी. १३६)**

इनमें से आदि के चार बाह्य कारण तथा पाँचवाँ अन्तरंग कारण है।

१) तीव्र भयंकर रूप वेष-क्रियादि तथा क्रूर पशु, सिंह, सर्पादि के अवलोकन से

२) भयंकर डाकू, व्याघ्र, सिंह, सर्पादि की स्मृति से

३) मनोबल की हीनता से

४) भयास्पद स्वप्न देखने या ऐसे स्वप्न की स्मृति आने से **(वी.व.चा.)**

ये भय संज्ञा की उत्पत्ति के (बाह्य) कारण हैं।

प्रश्न ५ : मैथुन संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर : कामसेवन रूप मिथुन कर्म में संज्ञा-वाँछा मैथुन संज्ञा है।

मैथुन संज्ञा की उत्पत्ति के कारण -

१) कामोत्पादक गरिष्ठ भोजन करने से,

२) कामकथा सुनने से,

३) अनुभूत काम-विषय के स्मरण आदि में उपयोग जाने से,

४) दुराचारी वेश्यागामी कामी पुरुषों की संगति-गोष्ठी से,

५) स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसक वेद में से किसी एक वेद रूप नोकषाय की उदीरणा से,

इनमें से आदि के चार बाह्य कारण हैं तथा पाँचवाँ अन्तरंग कारण है। **(गो.जी. १३७)**

प्रश्न ६ : परिग्रह संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर : परिग्रह को अर्जन करने की वाँछा को परिग्रह संज्ञा कहते हैं।

परिग्रह संज्ञा की उत्पत्ति के कारण -

१) बाह्य धन, धान्य आदि उपकरणों को देखने से,

२) उनकी कथा आदि सुनने से, कहने से,

३) मूर्च्छा परिणाम से,

४) परिग्रह आदि के उपार्जन करने की आसक्ति के सम्बन्ध से,

५) लोभ कषाय की उदीरणा से।

इनमें से चार कारण बाह्य तथा पाँचवाँ अंतरंग कारण है। **(गो.जी. १३८)**

क्षीणसंज्ञा - इन चारों संज्ञाओं के अभाव को क्षीण संज्ञा कहते हैं। **(ध.२/४१९)**

कर्म विवक्षा

क्र.	संज्ञा	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	आहार	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	चारों गति में होता है।
			सासादनसम्यक्त्व	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	पर्याप्त अवस्था में ही होता है।
			अविरतसम्यक्त्व	औप.क्षा.क्षायो.	
			संयतासंयत	क्षायोपशमिक	
			प्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
२.	भय	उदय	मिथ्यात्वादि छह गुण.	पूर्ववत्	
			अप्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
			अपूर्वकरण	औप.क्षा.	उपशम श्रेणी में उपशम भाव ही होता है।
३.	मैथुन	उदय	मिथ्यात्वादि आठ गुणस्थान	पूर्ववत्	
			अनिवृत्तिकरण	औप.क्षा.	क्षपक श्रेणी में क्षायिक भाव ही होता है।
४.	परिग्रह	उदय	मिथ्यात्वादि नौ गुण.	पूर्ववत	
			सूक्ष्मसाम्पराय	औप.क्षा.	
५.	उपशान्तसंज्ञा (संज्ञातीत)	उपशम	उपशान्तकषायवीतराग.	औपशमिक	
६.	क्षीणंसज्ञा (संज्ञातीत)	क्षय	क्षीणकषायवीतराग.	क्षायिक	संज्ञा का अभाव हो जाने से क्षायिक
			सयोगकेवली जिन	क्षायिक	भाव कहा गया है।
			अयोगकेवली जिन	क्षायिक	**(ध.२/४ ४२-४३ के आधार)**

प्रश्न ७ : आहारादि संज्ञाएँ किस-किस कर्म की अपेक्षा होती हैं?

उत्तर : आहारादि संज्ञाओं में कर्म विवक्षा -

आहार संज्ञा - असातावेदनीय कर्म के उदय-उदीरणा से

भय संज्ञा - भय नोकषाय के उदय - उदीरणा से

मैथुन संज्ञा - वेद नोकषाय के उदय-उदीरणा से

परिग्रह संज्ञा - लोभ कषाय के उदय - उदीरणा से

उपशांतसंज्ञा - मोहनीय कर्म के उपशम से

क्षीणसंज्ञा - मोहनीय कर्म के क्षय से

प्रश्न ८ : कितनी संज्ञाओं में सातवाँ गुणस्थान भी होता है?

उत्तर : तीन संज्ञाओं में सातवाँ गुणस्थान भी होता है -

भयसंज्ञा मैथुनसंज्ञा परिग्रहसंज्ञा

प्रश्न ९ : किस संज्ञा के कितने गुणस्थान दो भाव रूप होते हैं?

उत्तर : भय संज्ञा का केवल एक गुणस्थान औपशमिक और क्षायिक, इन दो भाव रूप होता है-

अपूर्वकरण

मैथुन संज्ञा के दो गुणस्थान औपशमिक क्षायिक इन दो भाव रूप होते हैं - अपूर्वकरण एवं अनिवृत्तिकरण

परिग्रह संज्ञा के तीन गुणस्थान औपशमिक-क्षायिक इन दो भाव रूप होते हैं - अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण एवं सूक्ष्मसाम्पराय

प्रश्न १० : क्या ऐसी कोई संज्ञा है जिसका गुणस्थान उपशम भाव रूप ही होता है?

उत्तर : नहीं, ऐसी कोई संज्ञा नहीं है जिसका सामान्य रूप से कोई गुणस्थान उपशम भाव रूप होता हो। विशेष रूप से उपशम श्रेणी में स्थित मुनिराज के भय आदि संज्ञाओं में आठवाँ आदि (ऊपर कहे अनुसार) गुणस्थान उपशम भाव रूप होता है। उपशान्तसंज्ञा वालों का ग्यारहवाँ गुणस्थान उपशम भाव रूप ही होता है।

प्रश्न ११ : क्या परिग्रह संज्ञा में होने वाले गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी हो सकते हैं?

उत्तर : हाँ, परिग्रह संज्ञा में होने वाले गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी हो सकते हैं -

चौथा गुणस्थान - क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा

आठवाँ, नवाँ, दसवाँ गुणस्थान - श्रेणी की अपेक्षा

प्रश्न १२ : संज्ञातीत जीवों के गुणस्थान कितने भाव रूप होते हैं?

उत्तर : संज्ञातीत जीवों के गुणस्थान दो भाव रूप होते हैं -

उपशम एवं क्षायिक

ग्यारहवाँ गुणस्थान - उपशम भाव रूप

बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ गुणस्थान - क्षायिक भाव रूप

प्रश्न १३ : चारों संज्ञाओं के कितने गुणस्थान केवल क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : चारों संज्ञाओं के ३ गुणस्थान केवल क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं-

(१) सम्यग्मिथ्यात्व (२) संयमासंयम (३) प्रमत्तसंयत

नोट - अप्रमत्तगुणस्थान तीन संज्ञाओं में क्षायोपशमिक भाव रूप होता है।

स्थान विवेचन

प्रश्न १४ : संज्ञा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : संज्ञा में पाँच स्थान होते हैं-

(१) १ संज्ञा रूप स्थान (२) २ संज्ञा रूप स्थान (३) ३ संज्ञा रूप स्थान

(४) ४ संज्ञा रूप स्थान (५) संज्ञातीत स्थान

प्रश्न १५ : इन स्थानों में किस-किस संज्ञा को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में संज्ञा -

१ संज्ञा रूप स्थान - परिग्रह संज्ञा

२ संज्ञा रूप स्थान - मैथुन संज्ञा एवं परिग्रह संज्ञा

३ संज्ञा रूप स्थान - भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रहसंज्ञा

४ संज्ञा रूप स्थान - आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रहसंज्ञा

संज्ञातीत - संज्ञाओं का अभाव

प्रश्न १६ : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

१ संज्ञा रूप स्थान के - दसवें गुणस्थानवर्ती एवं नवें गुणस्थान के अवेद भाग वाले जीव

२ संज्ञा रूप स्थान के - नवें गुणस्थान के सवेद भागवाले जीव

३ संज्ञा रूप स्थान के - सातवें-आठवें गुणस्थानवर्ती जीव

४ संज्ञा रूप स्थान के - पहले से छठे गुणस्थानवर्ती तथा चारों गति के जीव

संज्ञातीत स्थान के - ग्यारहवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थानवर्ती तथा सिद्ध भगवान

प्रश्न १७ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

४ संज्ञा रूप स्थान में - ४४

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १८ - ४ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ३ लि............

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

३ संज्ञा रूप स्थान में - २

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक का १ - चारित्र

संज्ञातीत स्थान में - ७

क्षायिक के ७ - ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

नोट - दो एवं एक संज्ञा रूप स्थान में कोई भाव नहीं होते हैं फिर भी उनके गुणस्थान वाले स्वामी पाये जाते हैं। इसलिए उनका यहाँ ग्रहण किया है।

प्रश्न १८ : कितने स्थानों में केवल एक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान में एक भाव के उत्तर भेद होते हैं -

संज्ञातीत स्थान

इसमें केवल क्षायिक भाव के उत्तर भेद पाये जाते हैं।

प्रश्न १९ : कितने स्थान छद्मस्थ एवं केवली भगवान दोनों के होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान छद्मस्थ एवं केवली भगवान दोनों के होता है -

संज्ञातीत स्थान

यह ग्यारहवें - बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा छद्मस्थों के तथा तेरहवें - चौदहवें गुणस्थान की अपेक्षा केवली भगवान के होता है।

प्रश्न २० : कौनसा स्थान केवल असंयमी जीवों के ही होता है?

उत्तर : ऐसा एक भी स्थान नहीं है जो केवल असंयमी जीवों के ही होता हो, क्योंकि ४ संज्ञा रूप स्थान भी छठे गुणस्थान की अपेक्षा संयमी मुनिराज के पाया जाता है।

प्रश्न २१ : कितने स्थान केवल क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं?

उत्तर : ऐसा कोई स्थान नहीं है जो केवल क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होता हो, क्योंकि संज्ञातीत स्थान भी उपशम एवं क्षायिक दोनों सम्यक्त्वों में होता है।

प्रश्न २२ : कितने स्थान दो गुणस्थान की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान दो गुणस्थान की अपेक्षा होता है -

३ संज्ञा रूप स्थान - ७वाँ, ८वाँ गुणस्थान

नोट - १ संज्ञा रूप स्थान भी ९वें (अवेदभाग) १० वें गुणस्थान की अपेक्षा बन सकता है।

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञातीत	
	चारित्र	४	३ संज्ञा. २ संज्ञा. १ संज्ञा. संज्ञातीत	३ संज्ञा. रूप स्थान केवल आठवें गुणस्थान में होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञातीत	
	चारित्र	४	३ संज्ञा. २ संज्ञा. १ संज्ञा. संज्ञातीत	
	ज्ञानादि सात	१	संज्ञातीत स्थान	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञा.	ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा संज्ञातीत स्थान होता है।
	मन:पर्ययज्ञान	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञा.	
	३ अज्ञान	१	४ संज्ञा रूप स्थान	
	३ दर्शन	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञा.	
	५ लब्धि	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञा.	
	सम्यक्त्व	२	४ संज्ञा. ३ संज्ञा.	सातवें गुणस्थान की अपेक्षा ३ संज्ञा का स्थान बनता है।
	चारित्र	२	४ संज्ञा. ३ संज्ञा.	
	संयमासंयम	१	४ संज्ञा.	
४.	**औदयिक**			
	३ गति	१	४ संज्ञा रूप स्थान	
	मनुष्यगति	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञा.	
	४ कषाय	४	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा.	नवें गुण. में १ संज्ञा रूप स्थान भी होता है।
	स्त्रीलिङ्ग	३	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.	दो संज्ञा रूप स्थान नवें गुण. में होता है।
	पुरुषलिङ्ग	३	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.	दो संज्ञा रूप स्थान नवें गुण. में होता है।
	नपुंसकलिङ्ग	३	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.	दो संज्ञा रूप स्थान नवें गुण. में होता है।
	मिथ्यादर्शन	१	४ संज्ञा रूप	
	अज्ञान	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञा.	
	असंयत	१	४ संज्ञा रूप	
	असिद्धत्व	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञा.	
	३ अशुभ लेश्या	१	४ संज्ञारूप	पहले से चौथे गुणस्थान तक होता है।
	पीत-पद्म लेश्या	२	४ संज्ञा. ३ संज्ञा.	
	शुक्ल लेश्या	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञा.	ग्यारहवें से तेरहवें गुण. तक संज्ञातीत स्थान होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञा.	
	भव्यत्व	५	४ संज्ञा. ३ संज्ञा. २ संज्ञा.१ संज्ञा. संज्ञा.	
	अभव्यत्व	१	४ संज्ञा रूप	केवल पहले गुणस्थान में होता है।

प्रश्न २३ : कितने भावों में केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा स्थान होते हैं?

उत्तर : ३५ भावों में केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा स्थान होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र; इनमें ग्यारहवें गुणस्थान की अपेक्षा संज्ञातीत, नवें गुणस्थान की अपेक्षा २ संज्ञा रूप तथा चारित्र में आठवें गुणस्थान की अपेक्षा तीन संज्ञा रूप स्थान भी होता है।

क्षायिक का १ - चारित्र-इसमें भी औपशमिक चारित्र के समान ही स्थान जानना चाहिए। विशेष यह है कि इसमें संज्ञातीत स्थान एक गुणस्थान की अपेक्षा नहीं होता है।

क्षायोपशमिक के १५ - सम्यक्त्व-३ संज्ञा रूप स्थान सातवें गुणस्थान की अपेक्षा
चारित्र-३ संज्ञा रूप स्थान सातवें गुणस्थान की अपेक्षा
संयमासंयम - ४ संज्ञा रूप स्थान पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा
४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ लब्धि में २ संज्ञा रूप स्थान नवें गुणस्थान की अपेक्षा

औदयिक के १४ - मिथ्यादर्शन में ४ संज्ञा रूप स्थान पहले गुण. की अपेक्षा
पीत-पद्म लेश्या में-३ संज्ञा रूप स्थान सातवें गुण. की अपेक्षा
१ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल) में-२ संज्ञा रूप स्थान नवें गुणस्थान की अपेक्षा

पारिणामिक के ३ - जीवत्व-भव्यत्व में-२ संज्ञा रूप स्थान नवें गुणस्थान की अपेक्षा
अभव्यत्व में-४ संज्ञा रूप स्थान पहले गुणस्थान की अपेक्षा

नोट - यहाँ नवें गुणस्थान में सवेद भाग की अपेक्षा ही २ संज्ञा रूप स्थान जानना चाहिए।

प्रश्न २४ : कितने क्षायोपशमिक भावों में पाँचों स्थान होते हैं?

उत्तर : १२ क्षायोपशमिक भावों में पाँचों स्थान होते हैं -

४ ज्ञान - मति. श्रुत. अव. मन:पर्यय

३ दर्शन - चक्षु. अचक्षु. अवधि.

५ लब्धि - दा. ला. भो. उप. वीर्य.

प्रश्न २५ : कितने भावों में दो गुणस्थान की अपेक्षा १ संज्ञा रूप स्थान होता है?

उत्तर : २३ भावों में दो गुणस्थान की अपेक्षा १ संज्ञा रूप स्थान होता है -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ५ - १ ग. (मनु.) १ क. (लो.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

इन भावों में नवें (अवेद भाग की अपेक्षा) एवं दसवें गुणस्थान की अपेक्षा १ परिग्रह संज्ञा रूप स्थान होता है।

प्रश्न २६ : कितने भावों में ४ संज्ञा रूप स्थान ही होता है?

उत्तर : १३ भावों में ४ संज्ञा रूप स्थान ही होता है -

क्षायोपशमिक के ४ - ३ अज्ञा. १ संयमा.

औदयिक के ८ - ३ ग (मनुष्य बिना) १ मिथ्या. १ असं. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न २७ : कितने भावों में संज्ञातीत स्थान भी होता है?

उत्तर : २२ भावों में संज्ञातीत स्थान भी होता है -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ४ - १ ग. (म.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २८ : कितने भावों में ४ संज्ञा रूप स्थान चारों गति की अपेक्षा हो सकता है?

उत्तर : ३१ भावों में ४ संज्ञा रूप स्थान चारों गति की अपेक्षा हो सकता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

भावों में संज्ञा

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	४	आ. भ. मै. परि.	
	चारित्र	३	भ. मै. परि.	आहार संज्ञा नहीं होती है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	४	आ. भ. मै. परि.	तिर्यञ्चों में भोगभूमि की अपेक्षा होता है।
	चारित्र	३	भ. मै. परि.	
	ज्ञानादि सात	०	-	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	४ ज्ञान	४	आ. भ. मै. परि.	मन:पर्ययज्ञान केवल मनुष्यगति में ही होता है।
	३ अज्ञान	४	आ. भ. मै. परि.	
	३ दर्शन	४	आ. भ. मै. परि.	
	५ लब्धि	४	आ. भ. मै. परि.	
	सम्यक्त्व	४	आ. भ. मै. परि.	
	चारित्र	४	आ. भ. मै. परि.	
	संयमासंयम	४	आ. भ. मै. परि.	मनुष्य एवं तिर्यञ्चगति में होता है।
४.	**औदयिक**			
	४ गति	४	आ. भ. मै. परि.	
	४ कषाय	४	आ. भ. मै. परि.	चारों गति में होती है।
	३ लिङ्ग	४	आ. भ. मै. परि.	
	मिथ्यादर्शन	४	आ. भ. मै. परि.	चारों गति में होती है।
	अज्ञान	४	आ. भ. मै. परि.	चारों गति में होती है।
	असंयत	४	आ. भ. मै. परि.	चारों गति में होती है।
	असिद्धत्व	४	आ. भ. मै. परि.	चारों गति में होती है।
	६ लेश्या	४	आ. भ. मै. परि.	अशुभ लेश्या चारों गतियों में होती है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	४	आ. भ. मै. परि.	चारों गति में होती है।
	भव्यत्व	४	आ. भ. मै. परि.	चारों गति में होती है।
	अभव्यत्व	४	आ. भ. मै. परि.	चारों गति में होती है।

प्रश्न २९ : कितने भावों में चारों संज्ञाएँ देवगति में भी होती हैं?

उत्तर : ३७ भावों में चारों संज्ञाएँ देवगति में भी होती हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १७ - १ ग. (दे.) ४ क. २ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३० : कितने भावों में एक गुणस्थान की अपेक्षा ४ संज्ञाएँ होती हैं?

उत्तर : ५ भावों में एक गुणस्थान की अपेक्षा ४ संज्ञाएँ होती हैं-

क्षायोपशमिक के ३ - १ ज्ञा. (मनः.) १ चारि. १ संय.

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न ३१ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में चार संज्ञाएँ होती हैं?

उत्तर : ३ भावों के सभी उत्तर भेदों में चार संज्ञाएँ होती हैं -

(१) क्षायोपशमिक (२) औदयिक (३) पारिणामिक

प्रश्न ३२ : कितने भावों में पहले से छठे गुणस्थान की अपेक्षा ४ संज्ञा होती है?

उत्तर : २२ भावों में पहले से छठे गुणस्थान की अपेक्षा ४ संज्ञा होती है -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के १३ - १ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३३ : कितने भावों में केवल मनुष्यगति की अपेक्षा चार संज्ञा होती है?

उत्तर : ३ भावों में केवल मनुष्यगति की अपेक्षा चार संज्ञा होती है -

क्षायोपशमिक के २ - १ ज्ञा. (मनः.) १ चारि.

औदयिक का १ - मनुष्यगति

ये भाव मनुष्यगति में ही होते हैं।

४ संज्ञा

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	१	सम्यक्त्व	चौथे से छठे गुणस्थान तक होती है।
२.	**क्षायिक**	१	सम्यक्त्व	
३.	**क्षायोपशमिक**	१८	४ ज्ञा. - म. श्रु. अ. मनः.	मन:पर्ययज्ञान में केवल छठे गुणस्थान में ही होती है।
			३ अज्ञान - कुम. कुश्रु. विभं.	
			३ दर्शन - चक्षु. अच. अव.	
			५ लब्धि - दा. ला. भो. उप. वी.	
			१ - सम्यक्त्व	
			१ - चारित्र	केवल छठे गुणस्थान में ही होती है।
			१ - संयमासंयम	
४.	**औदयिक**	२१	४ गति - नर. ति. म. दे.	
			४ कषाय - क्रो. मा. मा. लो.	
			३ लिङ्ग - स्त्री. पुरु. नपु.	
			१ - मिथ्यादर्शन	
			१ - अज्ञान	
			१ - असंयत	
			१ - असिद्धत्व	
			६ लेश्या - कृ.नी.का.पी.प.शु.	
५.	**पारिणामिक**	३	जीवत्व	पहले से छठे गुणस्थान तक होती है।
			भव्यत्व	पहले से छठे गुणस्थान तक होती है।
			अभव्यत्व	

प्रश्न ३४ : चार संज्ञा वालों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : चार संज्ञा वालों के ४४ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १८ - ४ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श.....
औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क.........
पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३५ : ४ संज्ञा वालों के होने वाले कितने भाव उपशम श्रेणी में भी होते हैं?

उत्तर : ४ संज्ञा वालों के होने वाले २७ भाव उपशम श्रेणी में भी होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
औदयिक के ११ - १ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३६ : ४ संज्ञा वालों के होने वाले कितने भाव १२ वें गुणस्थान में भी होते हैं?

उत्तर : ४ संज्ञा वालों के होने वाले १९ भाव १२वें गुणस्थान में भी होते हैं -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.
औदयिक के ४ - १ ग. (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३७ : ४ संज्ञा वालों के कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : ४ संज्ञा वालों के ६ गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादनसम्यक्त्व (३) सम्यग्मिथ्यात्व
(४) अविरतसम्यक्त्व (५) संयमासंयम (६) प्रमत्तसंयत

इनमें भाव गुणस्थानों के समान ही जानना चाहिए।

प्रश्न ३८ : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ४ गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादन सम्यक्त्व
(३) अविरतसम्यक्त्व (४) प्रमत्तसंयत

इनमें भाव -

मिथ्यात्व में - विभंगज्ञान बिना ३३ भाव
सासादन सम्यक्त्व में - उपर्युक्त ३३ भावों में से नरकगति, मिथ्यादर्शन तथा अभव्यत्व कम करने पर ३० भाव होते हैं।

अविरतसम्यक्त्व में ३५ -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १९ - ४ ग. ४ क. २ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रमत्तसंयत में २७ -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के ११ - १ ग. (मनु.) ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३९ : चार संज्ञाएँ शुभ लेश्या की अपेक्षा कितने भावों में होती हैं?

उत्तर : चार संज्ञाएँ शुभ लेश्या की अपेक्षा ६ भावों में होती हैं -

क्षायोपशमिक के ३ - मन:पर्ययज्ञान, चारित्र संयमासंयम

औदयिक के ३ - पीत लेश्या, पद्म लेश्या, शुक्ल लेश्या।

प्रश्न ४० : ४ संज्ञा में होने वाले कितने भाव तीन गतियों में ही होते हैं?

उत्तर : ४ संज्ञा में होने वाले ६ भाव तीन गतियों में ही होते हैं -

औदयिक के - ३ लिंग - स्त्री एवं पुरुष लिङ्ग-तिर्यंच, मनुष्य, देवगति

नपुंसक लिंग - नरक, तिर्यंच, मनुष्य

३ लेश्या - पीत, पद्म, शुक्ल - तिर्यंच, मनुष्य, देवगति

प्रश्न ४१ : ४ संज्ञा में होने वाले कितने भाव अशुभ लेश्याओं में नहीं होते हैं?

उत्तर : ४ संज्ञा में होने वाले ६ भाव अशुभ लेश्याओं में नहीं होते हैं-

क्षायोपशमिक के ३ - मन:पर्ययज्ञान, चारित्र, संयमासंयम

औदयिक के ३ - पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या

३ संज्ञा

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व	सातवें आठवें गुण. की अपेक्षा होती हैं।
			चारित्र	आठवें गुण. की अपेक्षा ३ संज्ञा होती हैं।
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	
३.	**क्षायोपशमिक**	१४	४ ज्ञा. - म.श्रु.अव.मनः.	
			३ दर्शन - चक्षु. अच.अव.	
			५ लब्धि - दा.ला.भो. उप.वी.	
			१ - सम्यक्त्व	केवल सातवें गुणस्थान में होती हैं।
			१ - चारित्र	केवल सातवें गुणस्थान में होती हैं।
४.	**औदयिक**	१३	१ गति - मनुष्य	
			४ कषाय - क्रो.मा.मा.लो.	
			३ लिङ्ग - स्त्री.पुरु. नपुं.	
			१ - अज्ञान	
			१ - असिद्धत्व	
			३ लेश्या - पीत पद्‌म शुक्ल	शुक्ल लेश्या में दोनों गुणस्थान होते हैं।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व	दोनों गुणस्थान होते हैं।
			भव्यत्व	दोनों गुणस्थान होते हैं।

प्रश्न ४२ : ३ संज्ञा वालों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : ३ संज्ञा वालों के ३३ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १४ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के १३ - १ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४३ : ३ संज्ञा में होने वाले कितने भाव ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होते हैं?

उत्तर : ३ संज्ञा में होने वाले ४ भाव ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होते हैं -

(१) मतिज्ञान (२) श्रुतज्ञान

(३) अवधिज्ञान (४) मनःपर्ययज्ञान

३ अज्ञान भी ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होते हैं लेकिन ३ संज्ञा वालों के तीनों अज्ञान नहीं होते हैं।

प्रश्न ४४ : ३ संज्ञा में होने वाले कितने भाव क्षपक श्रेणी में नहीं हो सकते हैं?

उत्तर : ३ संज्ञा में होने वाले ६ भाव क्षपक श्रेणी में नहीं हो सकते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

औदयिक के २ - पीत लेश्या पद्म लेश्या

प्रश्न ४५ : ३ संज्ञा में होने वाले कितने भाव क्षायोपशमिक चारित्र वालों के नहीं हो सकते हैं?

उत्तर : ३ संज्ञा में होने वाले २ भाव क्षायोपशमिक चारित्र वालों के नहीं हो सकते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक का १ - चारित्र

क्योंकि पहली बात ये दोनों चारित्र आठवें गुणस्थान से प्रारम्भ होते हैं तथा दूसरी बात एक चारित्र के साथ दूसरा चारित्र नहीं हो सकता है। इसलिए क्षायोपशमिक चारित्र के साथ औपशमिक एवं क्षायिक चारित्र नहीं हो सकते हैं।

प्रश्न ४६ : ३ संज्ञा में होने वाले कितने भावों में पीत-पद्म लेश्या हो सकती है?

उत्तर: ३ संज्ञा में होने वाले २९ भावों में पीत-पद्म लेश्या हो सकती है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १४ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.

औदयिक के ११ - १ ग (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (स्वकीय)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४७ : ३ संज्ञा वालों के कितने गुणस्थान हो सकते हैं?

उत्तर : ३ संज्ञा वालों के २ गुणस्थान हो सकते हैं -

(१) अप्रमत्तसंयत (२) अपूर्वकरण

इनमें भाव सातवें एवं आठवें गुणस्थान के समान क्रमशः ३१ एवं २९ जानना चाहिए।

नोट - (१) इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।

(२) २ संज्ञा वालों का कथन नवें गुणस्थान के सवेद भाग के समान करना चाहिए।

१ संज्ञा

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	उपशम श्रेणी में दोनों भाव होते हैं।
२.	**क्षायिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	४ ज्ञान-म.श्रु.अव.मन:. ३ दर्शन-च.अच.अव. ५ लब्धि-दा.ला.भो.उप.वी.	
४.	**औदयिक**	८	१ ग.-मनुष्य ४ कषाय-क्रो.मा.मा.लो. १ - अज्ञान १ - असिद्धत्व १ लेश्या - शुक्ल	अवेद भाग में एक संज्ञा होती है।
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व भव्यत्व	

प्रश्न ४८ : एक संज्ञा वालों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : एक संज्ञा वालों के २६ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ८ - १ ग. (मनु.) ४ क. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४९ : एक संज्ञा में होने वाले कितने भाव केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : एक संज्ञा में होने वाले ३ भाव केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होते हैं -

क्रोध मान माया

इनमें केवल नवें गुणस्थान की अपेक्षा एक संज्ञा होती है।

प्रश्न ५० : एक संज्ञा में होने वाले कितने भाव नरकगति में भी होते हैं?

उत्तर : एक संज्ञा में होने वाले २१ भाव नरकगति में भी होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ६ - ४ क. १ अज्ञा. १ असि.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५१ : क्या एक संज्ञा वाला संज्ञातीत बने बिना भी दो संज्ञा वाला बन सकता है?

उत्तर : नहीं, एक संज्ञा वाले संज्ञातीत बने बिना दो संज्ञा वाले नहीं बन सकते हैं, क्योंकि उपशम श्रेणी चढ़ने वाले मुनिराज नवें गुणस्थान के अवेद भाग में अथवा दसवें गुणस्थान में मरण कर सीधे (चौथे गुणस्थान में आ जाने से) ४ संज्ञा वाले बन सकते हैं। लेकिन ग्यारहवें गुणस्थान में गये बिना लौटकर नवें के सवेद भाग में नहीं आ सकते हैं वे यदि आयु समाप्त नहीं हुई है तो क्रमशः नीचे आते हैं अतः एक संज्ञा वाले संज्ञातीत बने बिना भी दो संज्ञा वाले नहीं बन सकते हैं।

प्रश्न ५२ : एक संज्ञा वालों के कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : एक संज्ञा वालों के २ गुणस्थान होते हैं -

नवाँ - अवेद भाग में, दसवाँ

इनमें भाव नवें गुणस्थान में २६-औ. २ क्षा. २ क्षायो. १२ औद. ८ पारि. २ तथा दसवें गुणस्थान में क्रोध-मान-माया कम कर देने पर २३ भाव होते हैं।

नोट - इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।

प्रश्न ५३ : एक संज्ञा वालों के कितने भावों के दो उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : एक संज्ञा वालों के ३ भावों के दो उत्तर भेद होते हैं -

औपशमिक के - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायिक के - सम्यक्त्व, चारित्र

पारिणामिक के - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न ५४ : एक संज्ञा में होने वाले कितने भाव केवल क्षपक श्रेणी में ही होते हैं?

उत्तर : एक संज्ञा में होने वाला एक भाव केवल क्षपक श्रेणी में ही होता है -

क्षायिक चारित्र

संज्ञातीत

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**	२	सम्यक्त्व चारित्र	
२.	**क्षायिक**	९	ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, सम्यक्त्व, चारित्र	ज्ञानादि सात भाव तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**	१२	४ ज्ञान - म.श्रु.अव.मनः.	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा होता है।
			३ दर्शन-चक्षु.अच.अव.	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा होता है।
			५ लब्धि-दा.ला.भो.उप.वी.	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा होता है।
४.	**औदयिक**	४	१ गति-मनुष्य	
			१ - अज्ञान	
			१ - असिद्धत्व	चारों गुणस्थानों की अपेक्षा होता है।
			१ लेश्या - शुक्ल	
५.	**पारिणामिक**	२	जीवत्व	
			भव्यत्व	

प्रश्न ५५ : संज्ञातीत जीवों के कितने भाव होते हैं?

उत्तर : संज्ञातीत जीवों के २९ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन.....

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ४ - १ ग. १ अज्ञा. १ असि. १ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५६ : कितने भाव संज्ञातीत जीवों के चारों गुणस्थानों में होते हैं?

उत्तर : ५ भाव संज्ञातीत जीवों के चारों गुणस्थानों में होते हैं -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

औदयिक के २ - १ ग. (मनु.) १ असि.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५७ : संज्ञातीत जीवों के होने वाले कितने भाव क्षायिक ज्ञान में भी पाये जाते हैं?

उत्तर : संज्ञातीत जीवों के होने वाले १४ भाव क्षायिक ज्ञान में भी पाये जाते हैं -

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन.....

औदयिक के ३ - १ ग. १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ५८ : कितने भाव संज्ञातीत अनाहारक जीवों के नहीं होते हैं?

उत्तर : १५ भाव संज्ञातीत अनाहारक जीवों के नहीं होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक का १ - अज्ञान

नोट - शुक्ल लेश्या तेरहवें गुणस्थान में जब समुद्घात के समय अनाहारक अवस्था होती है। उस समय की अपेक्षा जानना चाहिए।

प्रश्न ५९ : कितने भाव संज्ञातीत आहारक-अनाहारक दोनों के होते हैं?

उत्तर : १४ भाव संज्ञातीत आहारक अनाहारक दोनों के होते हैं -

क्षायिक के ९ - ज्ञान दर्शन दान लाभ.....

औदयिक के ३ - १ ग. (म.) १ असि. १ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट - शुक्ल लेश्या में आहारक-अनाहारक दोनों अवस्था केवल तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा जानना चाहिए। शेष भावों में चौदहवें गुणस्थान की अपेक्षा भी अनाहारक होते हैं।

प्रश्न ६० : कितने भावों में कितने गुणस्थानों की अपेक्षा संज्ञातीत स्थान होता है?

उत्तर : २९ भावों में गुणस्थान की अपेक्षा संज्ञातीत स्थान -

औपशमिक के २ -

सम्यक्त्व चारित्र में - १ गुणस्थान - ग्यारहवाँ

क्षायिक के ९ -

सम्यक्त्व में - ४ गुणस्थान - ग्यारहवें से चौदहवाँ

चारित्र में - ३ गुणस्थान - बारहवें से चौदहवाँ

ज्ञानादि सात - २ गुणस्थान - तेरहवाँ चौदहवाँ

क्षायोपशमिक के १२ -

४ ज्ञान ३ दर्शन में - २ गुणस्थान - ग्यारहवाँ-बारहवाँ

५ लब्धि - २ गुणस्थान - ग्यारहवाँ - बारहवाँ

औदयिक के ४ -

मनुष्यगति - ४ गुणस्थान - ग्यारहवें से चौदहवाँ

अज्ञान - २ गुणस्थान - ग्यारहवाँ- बारहवाँ

असिद्धत्व - ४ गुणस्थान - ग्यारहवें से चौदहवाँ

शुक्ल लेश्या - ३ गुणस्थान - ग्यारहवें से तेरहवाँ

पारिणामिक के २ - जीवत्व-भव्यत्व-४ गुणस्थान-ग्यारहवें से चौदहवाँ

प्रश्न ६१ : संज्ञातीत जीवों के कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : संज्ञातीत जीवों के ४ गुणस्थान होते हैं -

(१) उपशान्तकषाय वीतराग छद्‌मस्थ (२) क्षीणकषायवीतराग छद्‌मस्थ

(३) सयोग केवली जिन (४) अयोग केवली जिन

इनमें भाव गुणस्थान के समान ही क्रमशः २१, २०, १४ तथा १३ जानना चाहिए। इनमें से ग्यारहवाँ गुणस्थान उपशान्तसंज्ञा तथा बारहवाँ तेरहवाँ चौदहवाँ गुणस्थान क्षीणसंज्ञा वाला होता है।

प्रश्न ६२ : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में केवल एक गुणस्थान होता है -

सयोगकेवली जिन

इसमें पर्याप्त अवस्था के समान १४ भाव ही जानना चाहिए।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ६३ : ३ संज्ञा में होने वाले कितने भाव ४ संज्ञा में भी पाये जाते हैं?

उत्तर : ३ संज्ञा में होने वाले भावों में से औपशमिक-चारित्र तथा क्षायिक चारित्र को छोड़कर शेष सभी भाव ४ संज्ञा वालों के भी पाये जाते हैं।

प्रश्न ६४ : सातवें गुणस्थान में आहार संज्ञा क्यों नहीं होती है?

उत्तर : सातवें गुणस्थान में आहार संज्ञा नहीं होने का कारण यह है कि असातावेदनीय कर्म की उदीरणा का अभाव हो जाने से अप्रमत्तसंयत के आहार संज्ञा नहीं होती है। किन्तु भय आदि संज्ञाओं के कारणभूत कर्मों का उदय संभव है। इसलिए उपचार से भय मैथुन और परिग्रह संज्ञाएँ हैं। **(ध.२/४३७)**

प्रश्न ६५ : कितने भाव चार संज्ञा वालों के और संज्ञातीत दोनों जीवों के होते हैं?

उत्तर : २० भाव चार संज्ञा वालों के और संज्ञातीत दोनों जीवों के होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ४ - १ ग. (मनु.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ६६ : कितने भाव एक संज्ञा वालों के होते हैं लेकिन संज्ञातीत जीवों के नहीं होते हैं?

उत्तर : ४ भाव एक संज्ञा वालों के होते हैं लेकिन संज्ञातीत जीवों के नहीं होते हैं - क्रोध मान माया लोभ रूप भाव

प्रश्न ६७ : कितने भाव चार संज्ञा में ही होते हैं?

उत्तर : १३ भाव ४ संज्ञा में ही होते हैं -

क्षायोपशमिक के ४ - कुमति. कुश्रुत. विभंग. संयमासंयम

औदयिक के ८ - ३ ग. (मनु. बिना) १ मि. १ असं. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न ६८ : क्या ग्यारहवें एवं बारहवें दोनों गुणस्थान वाले संज्ञातीत ही होते हैं?

उत्तर : हाँ, सामान्य से ग्यारहवें एवं बारहवें दोनों गुणस्थान वाले संज्ञातीत ही होते हैं। लेकिन **ध.२/४४१-४२** में ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती मुनिराज को उपशांत संज्ञा कहा है, क्योंकि वहाँ मोहनीय कर्म का पूर्ण उपशम रहता है तथा बारहवें गुणस्थान वालों को क्षीणसंज्ञा कहा है, क्योंकि यहाँ मोहनीय कर्म का पूर्ण रूप से क्षय हो जाता है इसलिए यहाँ संज्ञाओं का क्षीण हो जाना स्वाभाविक है।

इसी प्रकार तेरहवें और चौदहवें गुणस्थानवर्ती भगवान भी क्षीणसंज्ञा ही होते हैं।

प्रश्न ६९ : असिद्धत्व भाव के साथ संज्ञा स्थानों में योग मार्गणा किस प्रकार लगाना चाहिए?

उत्तर : असिद्धत्व भाव के साथ संज्ञा स्थानों में योग मार्गणा -

४ संज्ञा रूप स्थान में -

४ मनो. ४ वचन. औदा. - पहले से छठे गुणस्थान तक

औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण काययोग -

पहला, दूसरा चौथा गुणस्थान

आहारकद्विक - छठा

वैक्रियिक काययोग - पहले से चौथा गुणस्थान

३ संज्ञा रूप स्थान -

४ म. ४ व. औदारिक - सातवाँ आठवाँ गुणस्थान

२ संज्ञा रूप स्थान -

४ म. ४ व. औदा. - नवाँ गुणस्थान

१ संज्ञा रूप स्थान -

४ म. ४ व. औदा. - नवाँ दसवाँ गुणस्थान

संज्ञातीत रूप स्थान -

२ म. (सत्य अनुभय) २ व. औदा. - ग्यारहवें से तेरहवाँ गुणस्थान

२ म. (असत्य-उभय) - ग्यारहवाँ बारहवाँ गुणस्थान

२ वचन. (असत्य-उभय) - ग्यारहवाँ बारहवाँ गुणस्थान

औदारिकमिश्र एवं कार्मण काययोग - तेरहवाँ गुणस्थान

योगातीत जीव - चौदहवाँ गुणस्थान

आहारकद्विक तथा वैक्रियिकद्विक योग में असिद्धत्व भाव तो होता है लेकिन उनमें संज्ञातीत स्थान नहीं होता है।

नोट - छह योगों में असिद्धत्व भाव तो होता है लेकिन १,२,३ संज्ञा रूप स्थान नहीं होता है।

प्रश्न ७० : किस स्थान में किस भाव के पूरे उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ४ संज्ञा रूप स्थान में तीन भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं।

(१) क्षायोपशमिक (२) औदयिक (३) पारिणामिक

प्रश्न ७१ : किस संज्ञा में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : संज्ञाओं में गुणस्थान -

आहार संज्ञा - पहले से छठा गुणस्थान

भय संज्ञा - पहले से आठवाँ गुणस्थान

मैथुन संज्ञा - पहले से नवाँ गुणस्थान

परिग्रह संज्ञा - पहले से दसवाँ गुणस्थान

प्रश्न ७२ : क्या ऐसा कोई गुणस्थान है जहाँ दो स्थान होते हैं?

उत्तर : हाँ, नवें गुणस्थान में दो स्थान बन जाते हैं -

सवेद भाग तक - मैथुन एवं परिग्रह संज्ञा रूप दो संज्ञा का स्थान

अवेद भाग में - परिग्रह संज्ञा रूप एक संज्ञा का स्थान

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **४ संज्ञा वालों के कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?**

(अ) १८ (ब) १५

(स) ८ (द) कोई नहीं

(ii) **कितने औदयिक भावों में एक संज्ञा वाले जीव भी पाये जाते हैं?**

(अ) २० (ब) २२

(स) १८ (द) ८

(iii) **संज्ञातीत जीवों के कितने भावों के उत्तर भेद होते हैं?**

(अ) ५ (ब) ४

(स) ३ (द) २

(iv) **कौनसा स्थान दो गुणस्थान की अपेक्षा होता है?**

(अ) ३ संज्ञा रूप (ब) ४ संज्ञा रूप

(स) २ संज्ञा रूप (द) कोई नहीं

(v) **एक संज्ञा वालों के कितने भाव होते हैं?**

(अ) २६ (ब) २४

(स) २३ (द) कोई नहीं

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) दो संज्ञा वालों के कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?

(ii) संज्ञातीत जीवों के कितने औदयिक भाव होते हैं?

(iii) कितनी संज्ञा वालों के तीन पारिणामिक भाव होते हैं?

(iv) कितने भावों में संज्ञातीत स्थान भी होता है?

(v) ४ संज्ञा वालों के कितने भावों के उत्तर भेद होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) एक संज्ञा रूप स्थान में आहार संज्ञा को लेना चाहिए?

(ii) मन:पर्ययज्ञान में भी चार संज्ञा होती है?

(iii) चार संज्ञा वालों के १८ औदयिक भाव होते हैं?

(iv) संज्ञातीत जीवों के ४ भावों के उत्तर भेद होते हैं?

(v) क्षायिक भाव के सभी उत्तर भेदों में संज्ञातीत जीव होते हैं?

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) २ संज्ञा रूप स्थान में ……………… क्षायिक ……………… क्षायोपशमिक ……………… पारिणामिक भाव होते हैं।

(ii) संज्ञातीत जीवों के ……………… गुणस्थान एवं ……………… औपशमिक भाव होते हैं।

(iii) पीत पद्म लेश्या रूप भाव में ……………… संज्ञा वाले ……………… संज्ञा वाले तथा ……………… जीव नहीं होते हैं।

(iv) १ संज्ञा रूप स्थान के स्वामी ……………… एवं ……………… गुणस्थान वाले होते हैं।

(v) स्त्रीलिङ्ग रूप भाव में ……………… संज्ञा रूप ……………… संज्ञा रूप ……………… संज्ञा रूप स्थान होता है।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		ब
(i)	४ संज्ञा	-	संज्ञातीत रूप स्थान
(ii)	१ संज्ञा रूप स्थान	-	२० भाव
(iii)	३ संज्ञा रूप स्थान	-	क्षायिक के ९ भाव
(iv)	६ लेश्या रूप भाव	-	४४ भाव
(v)	पाँचों स्थान	-	कोई भाव नहीं
(vi)	लोभ कषाय रूप भाव	-	भय मैथुन परिग्रह
(vii)	क्षायिक ज्ञानादि ७ भाव	-	४ संज्ञा
(viii)	संज्ञातीत	-	४ स्थान

- उत्तरमाला -

१. (i) अ (ii) द (iii) अ (iv) अ (v) अ

२. (i) १२ (ii) ४ (iii) ४ (iv) २२ (v) ५

३. (i) ना (ii) हाँ (iii) ना (iv) ना (v) हाँ

४. (i) २, १२, २ (ii) ४, २ (iii) २, १, संज्ञातीत
(iv) नवें, दसवें (v) ४, ३, २

५. (i) ४४ भाव (ii) कोई भाव नहीं (iii) भय मैथुन परिग्रह
(iv) ४ संज्ञा (v) २० भाव (vi) ४ स्थान
(vii) संज्ञातीत रूप स्थान (viii) क्षायिक के ९ भाव

उपयोग

प्रश्न १ : उपयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : जीव का जो भाव वस्तु के ग्रहण करने के लिए प्रवृत्त होता है, उसे उपयोग कहते हैं। **(पं.सं. १७८)**

आत्मा का चैतन्य अनुविधायी परिणाम सो उपयोग है। यह जीव से सर्वदा अपृथक्भूत (अभिन्न) ही है, क्योंकि एक अस्तित्व से रचित है **(पं.का ४० स.)**

ज्ञेय और दृश्य स्वभावों में जीव का जो अपनी शक्ति में परिणमन होता है वह उपयोग है। **(प.पु. १०५/१४७)** जो चैतन्य गुण के साथ-साथ अन्वय रूप से परिणमन करे सो उपयोग है अथवा जो पदार्थ के जानने के समय 'यह घट है यह पट है' इत्यादि पदार्थों को ग्रहण करता हुआ व्यापार करे सो उपयोग है। **(पं.का. ४० ता.)** स्व और पर को ग्रहण करने वाले परिणाम विशेष को उपयोग कहते हैं। **(ध.२/४१६)**

प्रश्न २ : उपयोग कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : उपयोग दो प्रकार के होते हैं -

(१) ज्ञानोपयोग (२) दर्शनोपयोग। **(पं का. ४०)**

(१) साकार उपयोग (२) अनाकार उपयोग **(ध.२/४१६)**

विशेष को ग्रहण करने वाला ज्ञानोपयोग है। जो विकल्प सहित उपयोग है सो ज्ञानोपयोग है। **(पं.का. ४० ता.)** ज्ञान लक्षण से लक्षित उपयोग ज्ञानोपयोग है। **(भा.सं. ३४१)** मति श्रुत अवधि और मन:पर्ययज्ञान तथा केवलज्ञान के द्वारा जो अपने-अपने विषय का विशेष ज्ञान होता है, उसे साकार उपयोग कहते हैं। **(पं.सं. १७९)** इन्द्रिय, मन और अवधि के द्वारा पदार्थों की विशेषता को ग्रहण न करके जो सामान्य अंश को ग्रहण करता है, उसे अनाकार उपयोग कहते हैं। अंतरंग उपयोग को दर्शनोपयोग कहते हैं। कारण यह है कि आकार का अर्थ कर्मकर्तृत्व है, उसके बिना जो अर्थोपलब्धि होती है उसे अनाकार उपयोग कहा जाता है। **(ध.११/३३३) (पं.सं.१८०)**

प्रश्न ३ : ज्ञानोपयोग कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : ज्ञानोपयोग ८ प्रकार के होते हैं -

(१) मतिज्ञानोपयोग (२) श्रुतज्ञानोपयोग (३) अवधिज्ञानोपयोग (४) मन:पर्ययज्ञानोपयोग (५) केवलज्ञानोपयोग (६) कुमतिज्ञानोपयोग (७) कुश्रुतज्ञानोपयोग (८) विभंगज्ञानोपयोग

मतिज्ञानोपयोग - जो ज्ञानावरण के क्षयोपशम से और इन्द्रिय तथा मन के अवलम्बन से मूर्त्त-अमूर्त्त द्रव्य का विकल रूप से विशेष रूप से अवबोधन करता है वह

आभिनिबोधिकज्ञान है। (आभिनिबोधिकज्ञान युक्त उपयोग आभिनिबोधिक ज्ञानोपयोग है।)

श्रुतज्ञानोपयोग - जो ज्ञानावरण (श्रुतज्ञाना.) के क्षयोपशम से और मन के अवलम्बन से मूर्त्त-अमूर्त्त द्रव्य का विकल रूप से विशेषत: अवबोधन करता है वह श्रुतज्ञान है। (श्रुतज्ञान से युक्त उपयोग श्रुतज्ञानोपयोग है।)

अवधिज्ञानोपयोग - जो अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से मूर्त्त द्रव्य का विकल रूप से विशेषत: अवबोधन करता है वह अवधिज्ञान है। (अवधिज्ञान से युक्त उपयोग अवधिज्ञानोपयोग है।)

मन:पर्ययज्ञानोपयोग - जो मन:पर्ययज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से ही पर मनोगत मूर्त्त द्रव्य का विकल रूप से विशेषत: अवबोधन करता है वह मन:पर्ययज्ञानोपयोग है। (मन:पर्ययज्ञान से युक्त उपयोग मन:पर्ययज्ञानोपयोग है।)

केवलज्ञानोपयोग - जो ज्ञानावरण के अत्यन्त क्षय से केवल ही (अकेला आत्मा) मूर्त्त-अमूर्त्त द्रव्य का सकल रूप से विशेषत: अवबोधन करता है वह स्वाभाविक केवलज्ञानोपयोग है (केवलज्ञान से युक्त उपयोग केवल ज्ञानोपयोग है।)

कुमतिज्ञानोपयोग - मिथ्यादर्शन के उदय के साथ आभिनिबोधिकज्ञान ही कुमति ज्ञानोपयोग है।

कुश्रुतज्ञानोपयोग - मिथ्यादर्शन के उदय के साथ श्रुतज्ञान ही कुश्रुतज्ञानोपयोग है।

विभंगावधिज्ञानोपयोग - मिथ्यादर्शन के उदय के साथ अवधिज्ञान ही विभंगज्ञानोपयोग है। **(पं.का. ४१ स.)**

नोट - अनंतानुबंधी के उदय से भी मति आदि ३ उपयोग कुमति आदि रूप हो जाते हैं।

प्रश्न ४ : दर्शनोपयोग कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : दर्शनोपयोग चार प्रकार के होते हैं -

(१) चक्षुदर्शनोपयोग (२) अचक्षुदर्शनोपयोग (३) अवधिदर्शनोपयोग (४) केवलदर्शनोपयोग

चक्षुदर्शनोपयोग - जो दर्शनावरण (चक्षु.) के क्षयोपशम से और चक्षु इन्द्रिय के अवलम्बन से मूर्त्त द्रव्य को विकल रूप से सामान्यत: अवबोधन करता है वह चक्षुदर्शन है। (चक्षुदर्शन से युक्त उपयोग चक्षुदर्शनोपयोग है)

अचक्षुदर्शनोपयोग - जो दर्शनावरण (अचक्षु) के क्षयोपशम से तथा चक्षु के अतिरिक्त शेष चार इन्द्रियों और मन के अवलम्बन से मूर्त्त-अमूर्त्त द्रव्य को विकल रूप से सामान्यत: अवबोधन करता है वह अचक्षुदर्शन है। (अचक्षुदर्शन से युक्त उपयोग अचक्षुदर्शनोपयोग हैं)

अवधिदर्शनोपयोग - जो दर्शनावरण (अवधि.) के क्षयोपशम से ही मूर्त्त द्रव्य को विकल रूप से सामान्यत: अवबोधन करता है वह अवधिदर्शन है। (अवधिदर्शन से युक्त उपयोग अवधिदर्शनोपयोग है।)

केवल दर्शनोपयोग - जो समस्त आवरण के अत्यन्त क्षय से, केवल ही (आत्मा अकेला ही) मूर्त्त-अमूर्त्त द्रव्य को सकल रूप से सामान्यत: अवबोधन करता है वह स्वाभाविक केवलदर्शन है। **(पं.का. ४२ स.)** (केवलदर्शन से युक्त उपयोग केवलदर्शनोपयोग है।)

कर्म विवक्षा

क्र.	उपयोग	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विशेष
१.	मति-श्रुत- अवधि ज्ञानोपयोग	क्षयोपशम	अविरतसम्यक्त्व संयमासंयम प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयत अपूर्वकरण. अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसाम्पराय उपशान्तकषाय. क्षीणकषाय.	औप.क्षा.क्षायो. क्षायोपशमिक क्षायोपशमिक क्षायोपशमिक औप. क्षा. औप. क्षा. औप. क्षा. औपशमिक क्षायिक	दोनों श्रेणियों में तीनों उपयोग होते हैं।
२.	मन:पर्यय- ज्ञानोपयोग	क्षयोपशम	प्रमत्तसंयत से क्षीणकषाय.तक	पूर्ववत्	
३.	केवलज्ञानो पयोग	क्षय	सयोगकेवली अयोग केवली	क्षायिक क्षायिक	यह उपयोग सिद्ध भगवान के भी होता है।
४.	कुमति.कुश्रुत- विभंग ज्ञानोपयोग	क्षयोपशम	मिथ्यात्व सासादन सम्यक्त्व	औदयिक पारिणामिक	विभंगज्ञानो. संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक के ही होता है।
५.	मिश्र ज्ञानोपयोग	क्षयोपशम	सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	
६.	चक्षु.अचक्षु. दर्शनोपयोग	क्षयोपशम	मिथ्यात्व से क्षीण. कषाय. गुणस्थान	पूर्ववत्	चारों गतियों में होते हैं।
७.	अवधिदर्शनोपयोग	क्षयोपशम	अविरतसम्यक्त्व से क्षीणकषाय. तक	पूर्ववत्	सम्यग्दृष्टि के ही होता है।
८.	केवलदर्शनोपयोग	क्षय	सयोगकेवली अयोगकेवली	क्षायिक क्षायिक	सिद्ध भगवान के भी यह उपयोग होता है।

प्रश्न ५ : कौन सा उपयोग किस कर्म की अपेक्षा से होता है?

उत्तर : उपयोगों में कर्म विवक्षा -

मतिज्ञानोपयोग	-	मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से
श्रुतज्ञानोपयोग	-	श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से
अवधिज्ञानोपयोग	-	अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से
मन:पर्ययज्ञानोपयोग	-	मन:पर्ययज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से
केवलज्ञानोपयोग	-	केवलज्ञानावरण कर्म के क्षय से
कुमति ज्ञानोपयोग	-	मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से
कुश्रुत ज्ञानोपयोग	-	श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से
विभंग ज्ञानोपयोग	-	अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से
३ मिश्रज्ञानोपयोग	-	मति-श्रुत-अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से
चक्षु-अचक्षुदर्शनोपयोग	-	चक्षु-अचक्षु दर्शनावरण के क्षयोपशम से
अवधिदर्शनोपयोग	-	अवधिदर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से
केवलदर्शनोपयोग	-	केवलदर्शनावरण कर्म के क्षय से

प्रश्न ६ : ३ ज्ञानोपयोग में होने वाले कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होते हैं?

उत्तर : ३ ज्ञानोपयोग में होने वाले चार गुणस्थान क्षायिक भाव रूप भी होते हैं -

(१) अविरतसम्यक्त्व (३) अनिवृत्तिकरण

(२) अपूर्वकरण (४) सूक्ष्मसाम्पराय संयत

प्रश्न ७ : चक्षुदर्शनोपयोग के कितने गुणस्थान क्षयोपशम भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : चक्षुदर्शनोपयोग के ४ गुणस्थान क्षयोपशम भाव रूप ही होते हैं -

(१) सम्यग्मिथ्यात्व (२) संयमासंयम

(३) प्रमत्तसंयत (४) अप्रमत्तसंयत

प्रश्न ८ : कितने उपयोगों का तीसरा गुणस्थान क्षयोपशम भाव रूप होता है?

उत्तर : ५ उपयोगों का तीसरा गुणस्थान क्षयोपशम भाव रूप होता है -

३ मिश्रज्ञानोपयोग, चक्षुदर्शनोपयोग अचक्षुदर्शनोपयोग

शेष उपयोगों में तीसरा गुणस्थान नहीं होता है।

प्रश्न ९ : कितने उपयोगों के सभी गुणस्थान केवल एक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : २ उपयोगों के सभी गुणस्थान केवल एक भाव रूप होते हैं -

केवलज्ञानोपयोग एवं केवलदर्शनोपयोग। इन दोनों में तेरहवाँ-चौदहवाँ गुणस्थान होता है जो एक क्षायिक भाव रूप ही होते हैं।

मिश्र उपयोग केवल तीसरे गुणस्थान में होते हैं जो क्षयोपशम भाव रूप होते हैं।

स्थान विवरण

प्रश्न १० : उपयोग में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : उपयोग में १० स्थान होते हैं -

(१) २ उपयोग रूप (२) ३ उपयोग रूप (३) ४ उपयोग रूप (४) ५ उपयोग रूप (५) ६ उपयोग रूप (६) ७ उपयोग रूप (७) ८ उपयोग रूप (८) ९ उपयोग रूप (९) १० उपयोग रूप (१०) १२ उपयोग रूप

प्रश्न ११ : इन स्थानों में किस-किस उपयोग को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में उपयोग -

२ उपयोग रूप स्थान में	- केवलज्ञानोपयोग, केवलदर्शनोपयोग
३ उपयोग रूप स्थान में	- कुमति. चक्षु. अचक्षुदर्शनो, कुश्रुत. चक्षु. अचक्षुदर्शनो. विभंगज्ञान-चक्षु-अचक्षुदर्शनो.
४ उपयोग रूप स्थान में	- मतिज्ञानो. ३ दर्शनो., श्रुत. ३ दर्शनो., अवधि. ३ दर्शनो., मन:पर्यय. ३ दर्शनो. ३ ज्ञानो. चक्षुदर्श. ३ ज्ञानो. अचक्षु., ३ ज्ञानो. अवधिदर्शनोपयोग
५ उपयोग रूप स्थान में	- ३ कुज्ञानो. चक्षुदर्शनो. अचक्षुदर्शनो., ४ ज्ञानो. १ चक्षु., ४ ज्ञानो. १ अचक्षु., ४ ज्ञानो. १ अवधि.
६ उपयोग रूप स्थान में	- ३ ज्ञानो. ३ दर्शनो.
७ उपयोग रूप स्थान में	- ४ ज्ञानो. ३ दर्शनो.
८ उपयोग रूप स्थान में	- ४ ज्ञानो. ३ कुज्ञानो. १ दर्शनो.
९ उपयोग	- ३ ज्ञानो. ३ कुज्ञानो. ३ दर्शनो. अथवा ५ ज्ञानो. ४ दर्शनो.
१० उपयोग रूप स्थान में	- ४ ज्ञानो. ३ कुज्ञानो. ३ दर्शनो.
१२ उपयोग रूप स्थान में	- ८ ज्ञानो. ४ दर्शनो.

प्रश्न १२ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

२ उपयोग रूप स्थान में - ७

क्षायिक ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग वीर्य

३ उपयोग रूप स्थान में - ३
क्षायोपशमिक के - कुमति. कुश्रुत. विभंग.
४ उपयोग रूप स्थान में - ४
क्षायोपशमिक के - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान
५ उपयोग रूप स्थान में - ३
क्षायोपशमिक का १ - अवधिदर्शन
औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन
पारिणामिक १ - अभव्यत्व
६ उपयोग रूप स्थान में - १
क्षायोपशमिक का - संयमासंयम
७ उपयोग रूप स्थान में - ४
औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
क्षायोपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
८ उपयोग रूप स्थान में - २
क्षायोपशमिक के - चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन
९ उपयोग रूप स्थान में - ११
क्षायिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र
औदयिक के ९ - ३ ग. (मनुष्यबिना) २ लि. (स्त्री.नपुं.) १ असं. ३ ले. (अशु.)
१० उपयोग रूप स्थान में - १३
क्षायोपशमिक के ५ - दान ल., लाभ ल., भोग ल. उपभोग ल., वीर्य लब्धि
औदयिक के ८ - ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. २ ले. (पी.प.)
१२ उपयोग रूप स्थान में - ५
औदयिक के ३ - १ ग. (मनु.) १ असि. १ ले. (शु.)
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

नोट - यद्यपि ३, ४, ८, १० उपयोग रूप स्थान के स्वामी कोई गति या गुणस्थानवर्ती जीव नहीं हैं फिर भी इनमें भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं इसलिए इनका यहाँ ग्रहण किया है।

प्रश्न १३ : इन स्थानों के स्वामी कौन होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

२ उपयोग रूप स्थान के - तेरहवें-चौदहवें गुणस्थानवर्ती जिनेन्द्रभगवान

५ उपयोग रूप स्थान के - पहले-दूसरे गुणस्थानवर्ती जीव

६ उपयोग रूप स्थान के - चतुर्थ एवं पञ्चम गुणस्थानवर्ती जीव

७ उपयोग रूप स्थान के - छठे से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

९ उपयोग रूप स्थान के - नरक, तिर्यञ्च तथा देवगति वाले जीव

१२ उपयोग रूप स्थान के - मनुष्यगति के जीव

विशेष - ३ उपयोग रूप स्थान के स्वामी

कुमति. चक्षु - अचक्षुदर्शनोपयोग के - पहले-दूसरे गुणस्थानवर्ती

कुश्रुत.चक्षु. अचक्षुदर्शनोपयोग के - पहले-दूसरे गणुस्थानवर्ती

विभंगज्ञानो. चक्षु.-अचक्षुदर्शनोपयोग के - पहले दूसरे गुणस्थानवर्ती पर्याप्त जीव

४ उपयोग रूप स्थान के -

चक्षुदर्शनो. ३ कुमतिआदिज्ञानो. - चक्षुदर्शनी पहले-दूसरे गुणस्थानवर्ती

अचक्षुदर्शनो. कुमतिआदि तीन ज्ञानो. - अचक्षुदर्शनी पहले-दूसरे गुणस्थानवर्ती जीव

मतिज्ञानो. चक्षु.अच. अवधि दर्शनो. - मतिज्ञानी चौथे से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

श्रुतज्ञानो. चक्षु.अच.अवधि दर्शनो. - श्रुतज्ञानी चौथे से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

अवधिज्ञानो. चक्षु.अच.अवधि दर्शनो. - अवधिज्ञानी चौथे से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

मन:पर्ययज्ञानो चक्षु.अच.अवधि दर्शनो. - मन:पर्ययज्ञानी छठे सेबारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

चक्षुदर्शनो. मति आदि तीन ज्ञानो. - चक्षुदर्शनी चौथे. पाँचवें गुणस्थानवर्ती जीव

अचक्षुदर्शनो. मति आदि तीन ज्ञानो. - अचक्षुदर्शनी चौथे. पाँचवें गुणस्थानवर्ती जीव

अवधिदर्शनो. मति आदि तीन ज्ञानो. - अवधिदर्शनी चौथे पाँचवें गुणस्थानवर्ती जीव

५ उपयोग रूप स्थान -

चक्षुदर्शनो. ४ ज्ञानो. - छठे से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

अचक्षुदर्शनो. ४ ज्ञानो. - छठे से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

अवधिदर्शनो. ४ ज्ञानो. - छठे से बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

विशेष स्थान -

१) छद्मस्थ जीवों के एक समय में एक ही उपयोग होता है इसलिए १० उपयोगों में स्वकीय उपयोग की अपेक्षा एक उपयोग रूप स्थान भी बन सकता है।

२) छद्मस्थ जीवों की अपेक्षा ५ लब्धि आदि में ४ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. की अपेक्षा १० उपयोग रूप स्थान बनता है।

३) क्षायिक सम्यक्त्व एवं चारित्र में ५ ज्ञानो. ४ दर्शनो. की अपेक्षा ९ उपयोग रूप स्थान बनता है।

४) जिनको अवधिज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है उनकी अपेक्षा चौथे से बारहवें गुणस्थान तक ४ उपयोग रूप स्थान बनता है।

५) जिनको अवधिज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है लेकिन मन:पर्ययज्ञान प्राप्त हुआ है उनके ३ ज्ञानो. २ दर्शनो की अपेक्षा ५ उपयोग रूप स्थान बनता है, क्योंकि जिनके अवधिज्ञान नहीं है उनके अवधिदर्शन भी नहीं होता है।

प्रश्न १४ : कितने स्थानों में केवल क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ४ स्थानों में केवल क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद होते हैं -

३ उपयोग रूप स्थान में - ३ अज्ञान

४ उपयोग रूप स्थान में - ४ ज्ञान

६ उपयोग रूप स्थान में - संयमासंयम

८ उपयोग रूप स्थान में - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन

प्रश्न १५ : कितने स्थानों में औदयिक भाव के उत्तर भेद नहीं होते हैं?

उत्तर : ६ स्थानों में औदयिक भाव के उत्तर भेद नहीं होते हैं -

(१) २ उपयोग रूप स्थान (२) ३ उपयोग रूप स्थान (३) ४ उपयोग रूप स्थान (४) ६ उपयोग रूप स्थान (५) ७ उपयोग रूप स्थान (६) ८ उपयोग रूप स्थान

प्रश्न १६ : किस स्थान में किस भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ७ उपयोग रूप स्थान में औपशमिक भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं।

प्रश्न १७ : कितने स्थानों में ज्ञानावरणी कर्म की अपेक्षा से होने वाले भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : ४ स्थानों में ज्ञानावरणी कर्म की अपेक्षा से होने वाले भाव पाये जाते हैं -

२ उपयोग रूप स्थान में - क्षायिक ज्ञान

३ उपयोग रूप स्थान में - कुमतिज्ञान कुश्रुतज्ञान विभंगावधिज्ञान

४ उपयोग रूप स्थान में - मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मन:पर्ययज्ञान

१० उपयोग रूप स्थान में - अज्ञान (औदयिक)

प्रश्न १८ : कुमति-कुश्रुत तथा चक्षुदर्शन या अचक्षुदर्शन रूप ३ उपयोग का स्थान क्यों नहीं बनता है?

उत्तर : कुमति-कुश्रुत तथा चक्षुदर्शन या कुमति-कुश्रुतज्ञान तथा अचक्षुदर्शन रूप ३ उपयोग का स्थान नहीं बन सकता है क्योंकि संसार में यद्यपि ऐसे जीव हो सकते हैं जिनके

कुमति-कुश्रुतज्ञान तथा चक्षुदर्शनोपयोग हो अथवा कुम-कुश्रु. तथा अचक्षुदर्शनोपयोग हो। चक्षुदर्शनोपयोगी या अचक्षुदर्शनोपयोगी जीवों के पहले-दूसरे गुणस्थान में ये तीनों उपयोग हो सकते हैं। लेकिन इन जीवों के विभंगज्ञानोपयोग भी पाया जाता है इसलिए उनके चार उपयोग रूप स्थान बनता है, तीन उपयोग रूप नहीं। चतुरिन्द्रिय एवं एकेन्द्रियादि जीवों के विभंगज्ञानोपयोग नहीं होने से यह स्थान बन सकता है किन्तु यहाँ गति और गुणस्थान की मुख्यता होने से यह स्थान नहीं बनता है- नहीं बनाया है। इसी प्रकार कुमतिज्ञानोपयोग तथा चक्षुदर्श.-अचक्षुदर्शनोपयोग रूप ३ उपयोग के स्थान में भी कोई गति या गुणस्थान नहीं है फिर भी इनमें कुमति. कुश्रुत. तथा विभंगज्ञानो. रूप तीन भाव पाये जाते हैं इसलिए इसका यहाँ ग्रहण किया है। अगर इस स्थान को नहीं लेते तो भावों का बँटवारा करते समय उपर्युक्त तीन भावों का किसी भी स्थान में ग्रहण नहीं होता जिससे प्रकरण अधूरा रह जाता अत: यहाँ ग्रहण करना उचित ही है। इसी प्रकार अन्य मार्गणा आदि में भी कई स्थानों पर ऐसा किया गया है उन्हें यथायोग्य समझ लेना चाहिए।

२) मात्र ४ ज्ञान ३ अज्ञान तथा ३ दर्शन में एक समय में एक ही उपयोग होने से स्वकीय ज्ञानोपयोग एवं स्वकीय दर्शनोपयोग ग्रहण किये जाते हैं लेकिन अन्य भावों में तो आठों ज्ञानोपयोग तथा चारों दर्शनोपयोग हो ही सकते हैं इसलिए अलग-अलग स्थान बनाये हैं।

प्रश्न १९ : कितने स्थानों में लेश्या रूप भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : तीन स्थानों में लेश्या रूप भाव पाये जाते हैं -

९ उपयोग रूप स्थान में - ३ लेश्या रूप भाव (कृष्ण, नील., कापोत.)
१० उपयोग रूप स्थान में - २ लेश्या रूप भाव (पीत. पद्म.)
१२ उपयोग रूप स्थान में - १ लेश्या रूप भाव (शुक्ल.)

प्रश्न २० : किस-किस स्थान में भगवान के होने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : वे स्थान जिनमें भगवान के होने वाले भाव होते हैं -

२ उपयोग रूप स्थान में - ७ क्षायिक ज्ञानादि....।
७ उपयोग रूप स्थान में - क्षायिक के २-सम्यक्त्व, चारित्र
१२ उपयोग रूप स्थान में - औदयिक के ३-१ गति (मनु.) १असि. १शुक्ल ले.
पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न २१ : कितने स्थान केवल क्षायोपशमिक भावों के उत्तर भेदों में ही पाये जाते हैं?

उत्तर : २ स्थान केवल क्षायोपशमिक भावों के उत्तर भेदों में ही पाये जाते हैं -

३ उपयोग रूप स्थान - कुमतिज्ञानो. चक्षु-अचक्षुदर्शनो., कुश्रुतज्ञानो. दो दर्शनो.....
४ उपयोग रूप स्थान - मतिज्ञानो. ३ दर्शनो., श्रुतज्ञानो. ३ दर्शनो.....

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	२	६ उप. ७ उप.	छठे से ग्यारहवें गुण. तक ७ उपयोग रूप स्थान होता है।
	चारित्र	१	७ उपयोग रूप स्थान	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	४	२ उप. ६ उप. ७ उप. ९ उप.	छह उपयोग रूप स्थान ४-५ वें गुण. में होता है।
	चारित्र	३	२ उप. ७ उप. ९ उप.	
	ज्ञानादि सात	१	२ उपयोग रूप	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	४ ज्ञान	१	४ उपयोग रूप	पहले दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	३ अज्ञान	१	३ उपयोग रूप	
	चक्षु.-अचक्षु.	३	४ उप. ५ उप. ८ उप.	
	अवधिदर्शन	२	४ उप. ५ उप.	
	५ लब्धि	५	५ उप. ६ उप. ७ उप. ९ उप. १० उप.	
	सम्यक्त्व	२	६ उप. ७ उप.	छठे सातवें गुण. में ७ उप. रूप स्थान होता है।
	चारित्र	१	७ उपयोग रूप स्थान	
	संयमासंयम	१	६ उपयोग रूप स्थान	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	३	५ उप. ६ उप. ९ उप.	गति की अपेक्षा ९ उपयोग रूप स्थान होता है।
	तिर्यञ्चगति	३	५ उप. ६ उप. ९ उप.	
	मनुष्यगति	५	२ उप. ५ उप. ६ उप. ७ उप. १२ उप.	१२ उपयोग रूप स्थान गति की अपेक्षा होता है।
	देवगति	३	५ उप. ६ उप. ९ उप.	
	४ कषाय	५	५ उप. ६ उप. ७ उप. ९ उप. १० उप.	
	स्त्रीलिङ्ग	३	५ उप. ६ उप. ९ उप.	
	पुरुषलिङ्ग	५	५ उप. ६ उप. ७ उप. ९ उप. १० उप.	
	नपुंसकलिङ्ग	३	५ उप. ६ उप. ९ उप.	
	मिथ्यादर्शन	१	५ उपयोग रूप स्थान	पर्याप्त अवस्था में ही होता है।
	अज्ञान	५	५ उप. ६ उप. ७ उप. ९ उप. १० उप.	
	असंयत	३	५ उप. ६ उप. ९ उप.	छह उपयोग रूप स्थान चौथे गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	असिद्धत्व	६	२ उप. ५ उप. ६ उप. ७ उप. ९ उप. १२ उप.	
	३ अशुभ. लेश्या	३	५ उप. ६ उप. ९ उप.	
	पीत-पद्म लेश्या	५	५ उप. ६ उप. ७ उप. ९ उप. १० उप.	
	शुक्ल लेश्या	६	२ उप. ५ उप. ६ उप. ७ उप. ९ उप. १२ उप.	२ उपयोग रूप स्थान तेरहवें गुण. में होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	६	२ उप. ५ उप. ६ उप. ७ उप. ९ उप. १२ उप.	पहले-दूसरे गुण.की अपेक्षा ५ उपयोग रूप स्थान होता है।
	भव्यत्व	६	२ उप. ५ उप. ६ उप. ७ उप. ९ उप. १२ उप.	
	अभव्यत्व	१	५ उपयोग रूप स्थान	

प्रश्न २२ : कितने भावों में केवल एक स्थान होता है?

उत्तर : १९ भावों में केवल एक स्थान होता है -

औपशमिक का १ - चारित्र-७ उपयोग रूप स्थान

क्षायिक के ७ - सम्यक्त्व एवं चारित्र बिना - २ उपयोग रूप स्थान

क्षायोपशमिक के ९ - ४ ज्ञा. - ४ उपयोग रूप स्थान

३ अज्ञान - ३ उपयोग रूप स्थान

चारित्र - ७ उपयोग रूप स्थान

संयमासंयम - ६ उपयोग रूप स्थान

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन - ५ उपयोग रूप स्थान

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व - ५ उपयोग रूप स्थान

प्रश्न २३ : कितने भावों में चौथे गुणस्थान की अपेक्षा भी स्थान बनते हैं?

उत्तर : ३० भावों में चौथे गुणस्थान की अपेक्षा भी स्थान बनते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व. - छह उपयोग रूप स्थान (३ ज्ञानो. ३ दर्शनो.)

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व - छह उपयोग रूप स्थान (३ ज्ञानो. ३ दर्शनो.)

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञान - ४ उपयोग रूप स्थान (१ ज्ञानो. ३ दर्शनो.)

३ दर्शन - ४ उपयोग रूप स्थान (१ दर्शनो. ३ ज्ञानो.)

५ लब्धि - ६ उपयोग रूप स्थान (३ ज्ञानो. ३ दर्शनो.)

१ सम्यक्त्व - ६ उपयोग रूप स्थान (३ ज्ञानो. ३ दर्शनो.)

औदयिक के १४ - २ गति (ति.म.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ) - ६ उपयोग रूप स्थान (३ ज्ञानो. ३ दर्शनो.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व - ६ उपयोग रूप स्थान (३ ज्ञानो. ३ दर्शनो.)

प्रश्न २४ : कितने भावों के उत्तर भेदों में २ उपयोग रूप स्थान होता है?

उत्तर : ३ भावों के उत्तर भेदों में २ उपयोग रूप स्थान होता है -

(१) क्षायिक (२) औदयिक (३) पारिणामिक

प्रश्न २५ : किस भाव का ९ उपयोग रूप स्थान किस गति की अपेक्षा पाया जाता है?

उत्तर : वे भाव, ९ उपयोग रूप स्थान एवं गति -

क्षायिकसम्यक्त्व-चारित्र - ९ उपयोग रूप स्थान - मनुष्यगति

५ लब्धि - ९ उपयोग रूप स्थान - नरकगति तिर्यञ्चगति देवगति

३ गति	- ९ उपयोग रूप स्थान	- स्वकीयगति
४ कषाय	- ९ उपयोग रूप स्थान	- तीनगति (मनुष्यगति बिना)
स्त्रीलिङ्ग	- ९ उपयोग रूप स्थान	- ३ गति (ति.म.दे.)
पुरुषलिङ्ग	- ९ उपयोग रूप स्थान	- दो गति (दे.ति.)
नपुंसकलिङ्ग	- ९ उपयोग रूप स्थान	- ३ गति (न.ति.म.)
अज्ञान-असिद्धत्व	- ९ उपयोग रूप स्थान	- ३ गति (मनु.बिना)
असंयत	- ९ उपयोग रूप स्थान	- ४ गति
३ अशुभ लेश्या	- ९ उपयोग रूप स्थान	- ३ गति (देवगति बिना)
३ शुभ लेश्या	- ९ उपयोग रूप स्थान	- २ गति (ति.दे.)
जीवत्व	- ९ उपयोग रूप स्थान	- तीन गति (न.ति.दे.)
भव्यत्व	- ९ उपयोग रूप स्थान	- तीन गति (न.ति.दे.)

प्रश्न २६ : कितने भावों में ५ उपयोग रूप स्थान अभव्यत्व भाव के साथ होता है?

उत्तर : २८ भावों में ५ उपयोग रूप स्थान अभव्यत्व भाव के साथ होता है -

क्षायोपशमिक के ५ - ५ लब्धि

औदयिक के २१ - ४ गति, ४ कषाय, ३ लिंग, १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व अभव्यत्व

प्रश्न २७ : कितने भावों में ७ उपयोग रूप स्थान ही होता है?

उत्तर : केवल २ भावों में ७ उपयोग रूप स्थान ही होता है -

औपशमिक का - १ चारित्र

क्षायोपशमिक का - १ चारित्र

प्रश्न २८ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में ५ उपयोग रूप स्थान होता है?

उत्तर : २ भावों के सभी उत्तर भेदों में ५ उपयोग रूप स्थान होता है -

औदयिक और पारिणामिक

भावों में उपयोग

क्र.	भाव	संख्या	उपयोग	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	७	४ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	द्वितीयोपशम की अपेक्षा मनःपर्यय ज्ञानो. होता है।
	चारित्र	७	४ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	९	५ ज्ञानो. ४ दर्शनो.	
	चारित्र	९	५ ज्ञानो. ४ दर्शनो.	
	ज्ञानादि सात	२	केवलज्ञानो. केवलदर्शनो.	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	४ ज्ञान	४	१ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	मतिज्ञान में मतिज्ञानो. श्रुतज्ञान में श्रुतज्ञानो...
	३ अज्ञान	३	१ ज्ञानो. २ दर्शनो.	चक्षु-अचक्षुदर्शनोपयोग होता है।
	चक्षु. अचक्षु.	८	७ ज्ञानो. १ दर्शनो.	
	अवधिदर्शन	५	४ ज्ञानो. १ दर्शनो.	अवधिदर्शनोपयोग होता है।
	५ लब्धि	१०	७ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	केवलज्ञानो. केवलदर्शनो. नहीं होता है।
	सम्यक्त्व	७	४ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	
	चारित्र	७	४ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	
	संयमासंयम	६	३ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	मति-श्रुत-अवधिज्ञानोपयोग होता है।
४.	**औदयिक**			
	३ गति	९	६ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	मनःपर्यय एवं केवल ज्ञानो., दर्शनो. नहीं होता है।
	मनुष्यगति	१२	८ ज्ञानो. ४ दर्शनो.	
	४ कषाय	१०	७ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	कर्मभूमिया मनुष्यों की अपेक्षा ७ ज्ञानो. होते हैं।
	स्त्रीलिङ्ग	९	६ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	
	पुरुषलिङ्ग	१०	७ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	
	नपुंसकलिङ्ग	९	६ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	मनःपर्ययज्ञानो. भी नहीं होता है।
	मिथ्यादर्शन	५	३ ज्ञानो. २ दर्शनो.	
	अज्ञान	१०	७ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	
	असंयत	९	६ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	
	असिद्धत्व	१२	८ ज्ञानो. ४ दर्शनो.	
	३ अशुभ लेश्या	९	६ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	३ ज्ञानो. एवं कुमति आदि ज्ञानो. होते है।
	पीत-पद्म लेश्या	१०	७ ज्ञानो. ३ दर्शनो.	
	शुक्ल लेश्या	१२	८ ज्ञानो. ४ दर्शनो.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	१२	८ ज्ञानो. ४ दर्शनो.	
	भव्यत्व	१२	८ ज्ञानो. ४ दर्शनो.	
	अभव्यत्व	५	३ ज्ञानो. २ दर्शनो.	३ कुमति आदि ज्ञानो. होते हैं।

प्रश्न २९ : कितने भावों में ९ उपयोग होते हैं?

उत्तर : ११ भावों में ९ उपयोग होते हैं -

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र - (५ ज्ञानो. ४ दर्शनो.)

औदयिक के ९ - ३ ग. (न.ति.दे.) २ लि. (स्त्री.नपुं.) १ असं. ३ ले. (अशु.)

इनमें ३ मति आदि ज्ञानो. ३ कुमतिआदि ज्ञानो. ३ दर्शनो. रूप ९ उपयोग होते हैं।

प्रश्न ३० : कितने औदयिक भावों में १२ उपयोग होते हैं?

उत्तर : ३ औदयिक भावों में १२ उपयोग होते हैं -

(१) मनुष्यगति (२) असिद्धत्व (३) शुक्ल लेश्या

प्रश्न ३१ : कितने भावों के किसी भी उत्तर भेद में ९ उपयोग नहीं हो सकते हैं?

उत्तर : तीन भावों के किसी भी उत्तर भेद में ९ उपयोग नहीं हो सकते हैं -

(१) औपशमिक (२) क्षायोपशमिक (३) पारिणामिक

प्रश्न ३२ : कितने क्षायोपशमिक भावों में चार ज्ञानोपयोग हो सकते हैं?

उत्तर : ३ क्षायोपशमिक भावों में चार ज्ञानोपयोग होते हैं -

१ दर्शन - अवधिदर्शन

१ - सम्यक्त्व

१ - चारित्र

प्रश्न ३३ : कितने भावों में केवल एक ज्ञानोपयोग होता है?

उत्तर : १४ भावों में केवल एक ज्ञानोपयोग होता है -

क्षायिक के ७ - सम्यक्त्व, चारित्र बिना - केवलज्ञानोपयोग

क्षायोपशमिक के ७ - ४ ज्ञान. ३ अज्ञान. - स्वकीय ज्ञानोपयोग

प्रश्न ३४ : गति रूप भावों में कौनसा उपयोग किस गुणस्थान की अपेक्षा होता है?

उत्तर : गति रूप भावों में होने वाले उपयोगों में गुणस्थान की अपेक्षा -

नरकगति -

कुम. कुश्रु. विभंगज्ञानो. - पहला दूसरा

मति. श्रुत. अवधिज्ञानो. - चौथा

चक्षु-अचक्षुदर्शनो. - पहले से चौथा

अवधिदर्शनो. - चौथा

इसी प्रकार देवगति में भी जानना चाहिए।

तिर्यञ्चगति : कुम. कुश्रु. विभंगज्ञानो. - पहला दूसरा
मतिश्रुत. अवधिज्ञानो. - चौथा पाँचवाँ
चक्षु अचक्षु. दर्शनो. - पहले से पाँचवाँ
अवधिदर्शनो. - चौथा पाँचवाँ

मनुष्यगति -

कुमति. कुश्रु. विभंगज्ञानो. - पहला दूसरा
मति. श्रुत. अवधिज्ञानो. - चौथे से बारहवाँ
मन:पर्ययज्ञानो. - छठे से बारहवाँ
केवल ज्ञानो. - तेरहवाँ चौदहवाँ
चक्षु.अचक्षु. दर्शनो. - पहले से बारहवाँ
अवधिदर्शनो. - चौथे से बारहवाँ
केवलदर्शनो. - तेरहवाँ-चौदहवाँ

नोट - सभी गतियों में तीन मिश्र ज्ञानोपयोग तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा होते हैं।

प्रश्न ३५ : अशुभ लेश्या रूप भावों में ९ उपयोग कितनी गति की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : अशुभ लेश्या रूप भावों में ९ उपयोग तीन गति की अपेक्षा होते हैं -
(१) नरकगति (२) तिर्यञ्चगति (३) मनुष्यगति

देवगति में अशुभ लेश्या निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ही होती है। वहाँ कुमति. कुश्रुतज्ञानो. चक्षु-अचक्षुदर्शनो. ही होते हैं।

मनुष्य एवं तिर्यञ्चगति में कर्मभूमि की अपेक्षा कथन करना चाहिए, क्योंकि भोगभूमि में अशुभलेश्या के साथ ९ उपयोग नहीं हो सकते हैं।

प्रश्न ३६ : ५ लब्धि रूप भावों के साथ निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने ज्ञानोपयोग होते हैं?

उत्तर : ५ लब्धि रूप भावों के साथ निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ५ ज्ञानोपयोग होते हैं -
पहले-दूसरे गुणस्थान की निर्वृ. अवस्था में - २ ज्ञानो. (कुमति. कुश्रु. ज्ञानो.)
चौथे गुणस्थान की निर्वृ. अवस्था में - ३ ज्ञानो. (मति आदि)
छठे गुणस्थान की निर्वृ. अवस्था में - ३ ज्ञानो. (मति आदि)

प्रश्न ३७ : कितने भावों में पाँच उपयोग पाये जाते हैं?

उत्तर : ३ भावों में पाँच उपयोग पाये जाते हैं -
क्षायोपशमिक का १ - अवधिदर्शन इसमें ४ ज्ञानो. १ दर्शनो.

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन इसमें ३ ज्ञानो. २ दर्शनो. (चक्षु.अच.)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व, इसमें ३ ज्ञानो. २ दर्शनो.

नोट - मति आदि ज्ञानोपयोग में भाव ज्ञान मार्गणा के समान तथा चक्षु आदि दर्शनोपयोग में भाव दर्शन मार्गणा के समान जानना चाहिए।

समुच्चय - प्रश्नोत्तर

प्रश्न ३८ : छद्मस्थ जीवों के अधिक से अधिक कितने उपयोग रूप स्थान हो सकता है-

उत्तर : छद्मस्थ जीवों के अधिक से अधिक १० उपयोग रूप स्थान हो सकता है - (१) कुमतिज्ञानोपयोग (२) कुश्रुतज्ञानोपयोग (३) विभंगज्ञानोपयोग (४) मतिज्ञानोपयोग (५) श्रुतज्ञानोपयोग (६) अवधिज्ञानोपयोग (७) मन:पर्ययज्ञानोपयोग (८) चक्षुदर्शनोपयोग (९) अचक्षुदर्शनोपयोग (१०) अवधिदर्शनोपयोग

प्रश्न ३९ : ये १० उपयोग कितने भावों में होते हैं?

उत्तर : ये १० उपयोग १३ भावों में होते हैं -

क्षायोपशमिक के ५ - दान लब्धि, लाभ लब्धि, भोग लब्धि, उपभोग लब्धि, वीर्य लब्धि

औदयिक के ८ - ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. २ लेश्या (पीत. पद्म)

प्रश्न ४० : ४ ज्ञानोपयोग और ३ दर्शनोपयोग रूप स्थान कितने भावों में हो सकता है?

उत्तर : ४ ज्ञानोपयोग और ३ दर्शनोपयोग रूपस्थान ४ भावों में हो सकता है -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायोपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

नोट - छद्मस्थों की अपेक्षा क्षायिक सम्यक्त्व और क्षायिक चारित्र में भी यह स्थान होता है।

प्रश्न ४१ : कितने उपयोग असंयत भाव में एवं क्षायोपशमिक चारित्र दोनों में होते हैं?

उत्तर : ६ उपयोग असंयत भाव में एवं क्षायोपशमिक चारित्र दोनों में होते हैं -

३ ज्ञानोपयोग - मतिज्ञानो. श्रुतज्ञानो. अवधिज्ञानो.

३ दर्शनोपयोग - चक्षुदर्शनो. अचक्षुदर्शनो. अवधिदर्शनो.

प्रश्न ४२ : कितने उपयोग नपुंसकलिङ्ग रूप भाव के साथ पञ्चेन्द्रिय जीवों के ही होते हैं?

उत्तर : ५ उपयोग नपुंसकलिङ्ग रूप भाव के साथ पञ्चेन्द्रिय जीवों के ही होते हैं -

४ ज्ञानोपयोग - मतिज्ञानो. श्रुतज्ञानोपयोग, अवधिज्ञानो. विभंगज्ञानोपयोग

१ दर्शनोपयोग - अवधिदर्शनोपयोग

नोट - स्त्रीलिङ्ग वालों के भी इसी प्रकार जानना चाहिए।

प्रश्न ४३ : उपयोगों में औदयिक अज्ञान के साथ योग मार्गणा किस प्रकार लगाना चाहिए?

उत्तर : उपयोगों में औदयिक अज्ञान के साथ योग मार्गणा -

मति-श्रुत-अवधिज्ञानोपयोग १५	- ४ म. ४ व. ७ का.
मन:पर्ययज्ञानोपयोग ९	- ४ म. ४ व. १ का. (औदारिक)
कुमति-कुश्रुतज्ञानोपयोग १३	- ४ म. ४ व. ५ का. (आहारकद्विक बिना)
विभंगज्ञानोपयोग १०	- ४ म. ४ व. २ का. (औदा. वैक्रि.)
चक्षु-अचक्षुदर्शनोपयोग १५	- ४ म. ४ व. ७ का.
अवधिदर्शनोपयोग १५	- ४ म. ४ व. ७ का.

नोट - केवलज्ञानोपयोग एवं केवलदर्शनोपयोग में अज्ञान भाव नहीं पाया जाता है।

प्रश्न ४४ : कितने उपयोगों में अभव्यत्व भाव नहीं हो सकता है?

उत्तर : ७ उपयोगों में अभव्यत्व भाव नहीं हो सकता है -

(१) मतिज्ञानोपयोग (२) श्रुतज्ञानोपयोग (३) अवधिज्ञानोपयोग (४) मन:पर्यय ज्ञानोपयोग (५) केवलज्ञानोपयोग (६) अवधिदर्शनोपयोग (७) केवलदर्शनोपयोग

नोट - जो आचार्य पहले गुणस्थान से अवधिदर्शन मानते हैं उनकी अपेक्षा अभव्यत्वभाव के साथ अवधिदर्शनोपयोग बन जाएगा।

प्रश्न ४५ : किस उपयोग को प्राप्त कर लेने पर जीव कितने भवों में क्षायिक भावों को प्राप्त कर लेता है?

उत्तर :

मति एवं श्रुतज्ञानोपयोग को प्राप्त कर लेने पर	- कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन काल में
अवधिज्ञानोपयोग को प्राप्त कर लेने पर	- सर्वावधि. परमावधि. वाला उसी भव में तथा सामान्य अवधि. वाला कुछ कम अर्धपुद्गलपरावर्त्तन काल में
मन:पर्ययज्ञानोपयोग प्राप्त कर लेने पर	- विपुलमतिमन: पर्यय. वाला-उसी भव में
ऋजुमति मन:पर्यय वाला	- (कुछ कम) अर्धपुद्गल परावर्तन काल में **(ध. ७/२२०-२२१ सू. १०५)**

चक्षु-अचक्षु, कुमति. कुश्रुत. विभंग. - कोई निश्चित नहीं है।

अवधिदर्शनोपयोग - अवधिज्ञानोपयोग के समान

केवलज्ञानोपयोग एवं केवलदर्शनोपयोग क्षायिक भावों के साथ ही होते हैं।

जिसके मतिज्ञानोपयोगादि क्षायिक सम्यक्त्व के साथ हैं तो चौथे भव में नियम से क्षायिकज्ञानादि प्राप्त करता है तथा तीर्थंकर प्रकृति के साथ है तो तीसरे भव में ही क्षायिकभावों को प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न ४६ : देवगति रूप भाव में लेश्याओं के साथ कितने उपयोग रूप स्थान बनता है?

उत्तर : देवगति रूप भाव में अशुभ लेश्याओं के साथ ४ उपयोग रूप स्थान बनता है - (१) कुमतिज्ञानोपयोग (२) कुश्रुतज्ञानोपयोग (३) चक्षुदर्शनोपयोग (४) अचक्षुदर्शनोपयोग तथा शुभलेश्याओं में ९ उपयोग रूप स्थान बनता है -

(१) मतिज्ञानोपयोग (२) श्रुतज्ञानोपयोग (३) अवधिज्ञानोपयोग (४) कुमतिज्ञानोपयोग (५) कुश्रुतज्ञानोपयोग (६) विभंगज्ञानोपयोग (७) चक्षुदर्शनोपयोग (८) अचक्षुदर्शनोपयोग (९) अवधिदर्शनोपयोग

इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में विभंगज्ञानोपयोग को छोड़कर शेष ८ उपयोग होते हैं।

प्रश्न ४७ : कितने स्थानों में केवल सम्यग्दृष्टि के होने वाले भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : वे स्थान जिनमें केवल सम्यग्दृष्टि के होने वाले भाव पाये जाते हैं -

२ उपयोग रूप स्थान में - क्षायिक ज्ञानादि सात

४ उपयोग रूप स्थान में - ४ मति आदि ज्ञान

६ उपयोग रूप स्थान में - संयमासंयम

७ उपयोग रूप स्थान में - औपशमिक के - सम्य., चारित्र

क्षायिक के - सम्यक्त्व, चारित्र

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **कितने उपयोगों में मिथ्यादर्शन रूप भाव निश्चित रूप से होता है?**

(अ) ३ (ब) २

(स) १ (द) कोई नहीं

(ii) **आठ ज्ञानोपयोग में कितने औदयिक भाव होते हैं?**

(अ) २ (ब) ३

(स) ४ (द) २१

(iii) **कितने उपयोगों में क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव होता है?**

(अ) ६ (ब) ७

(स) २ (द) कोई नहीं

(iv) **मन:पर्ययज्ञानोपयोग में कितने औपशमिक भाव होते हैं?**

(अ) २ (ब) १

(स) ० (द) कोई नहीं

(v) **केवलज्ञानोपयोग में भव्यत्व भाव कितने गुणस्थानों में होता है?**

(अ) २ (ब) १

(स) गुणस्थानातीत (द) १४

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) स्त्रीलिङ्ग रूप भाव में कितने उपयोग होते हैं?

(ii) दो उपयोग कितने भावों के उत्तर भेदों में हो सकते हैं?

(iii) कितने क्षायिक भावों में दो उपयोग ही होते हैं?

(iv) कितने उपयोग पाँचों भावों के उत्तर भेदों में पाये जाते हैं?

(v) कितने भावों में ज्ञानोपयोग एवं दर्शनोपयोग दोनों के उत्तर भेद होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) उपयोग में १० स्थान होते हैं।

(ii) ४ उपयोग रूप स्थान में मन:पर्ययज्ञान रूप भाव नहीं होता है।

(iii) संयमासंयम रूप भाव में ६ ज्ञानोपयोग होते हैं।

(iv) देवगति रूप भाव में ९ उपयोग रूप स्थान किसी भी गुणस्थान में नहीं होता है।

(v) ५ लब्धि रूप भाव में ७ उपयोग रूप स्थान बारहवें गुणस्थान में भी होता है।

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) अवधिज्ञानोपयोग में .... गति रूप .... लिङ्ग रूप तथा .... पारिणामिक भाव होते हैं।

(ii) चक्षुदर्शनोपयोग में .... क्षायिक भाव .... क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

(iii) ८ ज्ञानोपयोग में .... औदयिक के .... क्षायिक के एवं पारिणामिक भाव के .... उत्तर भेद होते हैं।

(iv) .... उपयोग क्षयोपशम से एवं .... उपयोग क्षय से होते हैं।

(v) चक्षु दर्शन रूप भाव में .... ज्ञानोपयोग एवं .... दर्शनोपयोग होता है।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	६ उपयोग	-	५ भाव
(ii)	२ उपयोग	-	१२ उपयोग
(iii)	कुमति ज्ञानोपयोग	-	७ क्षायिक भाव
(iv)	मन:पर्ययज्ञानोपयोग	-	चौथा पाँचवाँ गुणस्थान
(v)	८ ज्ञानोपयोग	-	१० उपयोग रूप स्थान
(vi)	भव्यत्व भाव	-	अभव्यत्व भाव
(vii)	४ दर्शनोपयोग	-	२ औपशमिक भाव
(viii)	१३ भाव	-	७ भाव

- उत्तरमाला -

१. (i) द (ii) ब (iii) ब (iv) अ (v) अ

२. (i) ९ (ii) ३ (iii) ७ (iv) ७ (v) ५३

३. (i) हाँ (ii) ना (iii) ना (iv) हाँ (v) हाँ

४. (i) ४, ३, २ (ii) २, १६ (iii) ३, ०, २ (iv) १०, २ (v) ७, स्वकीय

५. (i) चौथा पाँचवाँ गुण. (ii) ७ क्षायिक भाव
(iii) अभव्यत्व भाव (iv) २ औपशमिक
(v) ५ भाव (vi) १२ उपयोग
(vii) ७ भाव (viii) १० उपयोग रूप स्थान

ध्यान

प्रश्न १ : ध्यान किसे कहते हैं?

उत्तर : उत्तम संहनन के धारक पुरुष की चिन्ता का किसी एक पदार्थ में अन्तर्मुहूर्त्त के लिए रुक जाना सो ध्यान है और चिन्ता का अर्थ चंचल मन है। **(हरि. ५६/३)**

छह नयों के द्वारा ग्रहण किये हुए जीव आदि छह द्रव्यों और उनकी पर्यायों के यथार्थ स्वरूप का बार-बार चिन्तन करना ही ध्यान कहलाता है। **(आ.पु. २१/१०९)**

एकाग्रचिन्ता का निरोध करना ध्यान है। जो चिंतन किसी एक ही क्रिया के साधन करने में मुख्य हो उसे एकाग्रचिन्ता कहते हैं। उस एकाग्रचिंता का निरोध करना अर्थात् किसी एक मुख्य पदार्थ को छोड़कर अन्य सब पदार्थों के चिन्तन का त्याग कर देना एकाग्रचिन्ता निरोध कहलाता है और उसी को ध्यान कहते हैं। **(चा.सा.)**

प्रश्न २ : ध्यान कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : ध्यान चार प्रकार के होते हैं -

(१) आर्त्तध्यान (२) रौद्रध्यान (३) धर्मध्यान (४) शुक्लध्यान

- **आर्त्तध्यान -** ऋत अर्थात् पीड़ा-दु:ख में जो उत्पन्न होता है वह आर्त्तध्यान है, जैसे- किसी प्राणी के दिशाओं के भूल जाने से उन्मत्तता होती है, उसके समान है और यह ध्यान अविद्या अर्थात् मिथ्याज्ञान की वासना के वश से उत्पन्न होता है। **(ज्ञा.२५/२३)**
- **रौद्रध्यान -** तत्त्वदर्शी पुरुषों ने क्रूर आशय वाले प्राणी को रुद्र कहा है, उस रुद्र प्राणी के कार्य अथवा उसके भाव को रौद्र (ध्यान) कहते हैं। **(ज्ञा. २६/२)**

  जो पुरुष प्राणियों को रुलाता है वह रुद्र-क्रूर अथवा सब जीवों में निर्दय कहलाता है ऐसे पुरुष में जो ध्यान होता है वह रौद्रध्यान है। **(आ.पु. २१/४२)**
- **धर्मध्यान -** जो प्राणियों को संसार के दु:ख से उठाकर उत्तम सुख में धारण करे उसे धर्म कहते हैं। दया से विशुद्ध धर्म है। अहिंसा परम धर्म है। जो इष्ट स्थान में धारण करता है वह धर्म है। धर्म से युक्त जो ध्यान है वह धर्मध्यान है।
- **शुक्लध्यान -** जो शुचित्व अर्थात् शौच के सम्बन्ध से होता है वह शुक्लध्यान कहलाता है। दोष आदिक का अभाव हो जाना शौच है। **(हरि. ५६/५३)**

  जीव के निर्मल परिणामों से अथवा शुक्ल लेश्या से ही होने वाले ध्यान को शुक्ल-ध्यान कहते हैं। यह सफेद रंग की तरह स्वच्छ होता है इसलिए शुचि गुण से युक्त होने के कारण इसे शुक्लध्यान कहते हैं। **(का.अ. ४७१ टी.)**

पुरुषों के कषाय रूपी मल के क्षय होने से अथवा उपशम होने से यह शुक्ल ध्यान होता है, इसलिए उस ध्यान के जानने वाले आचार्यों ने इसका नाम शुक्ल ऐसा निरुक्ति पूर्वक अर्थात् सार्थक कहा है। **(ज्ञा. ४२/६)**

प्रश्न ३ : आर्त्तध्यान कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : आर्त्तध्यान चार प्रकार के होते हैं -

अनिष्टसंयोगज - ज्वर, शूल, शत्रु, रोग आदि का सम्पर्क होना, दु:ख देने वाली स्त्री, पुत्र, मित्र, नौकर, शत्रु, दुर्भाग्य आदि अनिष्ट पदार्थों का संयोग मिल जाने पर प्राप्त अनिष्ट पदार्थ से मेरा पीछा कैसे छूटे, इस प्रकार अन्य सब बातों का ध्यान छोड़कर बारम्बार उसी की चिन्ता में मग्न रहना अनिष्ट संयोगज नामका आर्त्तध्यान है। **(का.अ. ४७४ टी.)**

इष्टवियोगज - अपने मन को अच्छे लगने वाले इष्ट पुत्र, मित्र, पत्नी, भाई, धन-धान्य, सोना, रत्न, हाथी-घोड़ा, वस्त्र आदि का वियोग हो जाने पर शोक और मोह के वशीभूत होकर 'ये मुझे कैसे प्राप्त होंगे' इस प्रकार बारम्बार चिन्तन करना इष्ट-वियोग आर्त्तध्यान है। **(का.अ. ४७४ टी.)**

वेदना आर्त्तध्यान - क्षुधा-तृषा आदि के द्वारा मैं पीड़ित हो रहा हूँ, मुझसे कब इनका अभाव होवे? मुझे कैसे भात-भोजन आदि प्राप्त होवे कि जिससे मुझे क्षुधा आदि बाधाएँ न होवें? कब मेरे आहार की बेला आवे कि जिससे मैं भोजन करूँ अथवा पानी पीऊँ? हाहाकार या पूत्कार और जल सिञ्चन आदि करने से, पानी छिड़कने से भी प्यास आदि बाधाएँ दूर नहीं हो रही हैं। इत्यादि प्रकार से चिन्तन करना तीसरा आर्त्तध्यान है। **(मू. ३९५ टी.)**

निदान आर्त्तध्यान - इस लोक में यदि मेरे पुत्र हो जावें, पर-लोक में यदि मैं देव हो जाऊँ तो ये स्त्री, वस्त्र आदि मुझे प्राप्त हो जावें इत्यादि चिन्तन करना चौथा आर्त्तध्यान है। **(मू. ३९५ टी.)**

पुण्यकर्म को करके उससे देव-देवेन्द्र आदि पद की इच्छा करना अथवा पूजा-सत्कार, धनलाभ आदि की कामना करना अथवा अत्यन्त क्रोधित होकर अपना अहित करने वालों के कुल के विनाश की इच्छा करना निदान आर्त्तध्यान है। **(का.अ.४७३-७४ टी.)**

प्रश्न ४ : रौद्रध्यान कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : रौद्रध्यान चार प्रकार का होता है -

(१) हिंसानन्द (२) मृषानन्द (३) चौर्यानन्द (४) विषयसंरक्षणानन्द।

हिंसानन्द - षड्काय के जीवों की हिंसा के कार्य करके आनन्द मानना हिंसानन्द रौद्रध्यान है। जीवों को बाँधने, मारने, पीटने, पीड़ा देने में ही आनन्द आता है वह हिंसानन्द रौद्रध्यान है। कहा भी है- स्वयं अथवा दूसरों के द्वारा जन्तुओं को पीड़ा पहुँचाने पर या उनका विनाश होने पर जो हर्ष होता है उसे हिंसानन्द रौद्रध्यान कहते हैं।

मृषानन्द - ठग विद्या का शास्त्र रच कर, दयाशून्यमार्ग को चला कर, लोगों को व्यसनी बनाकर मैं इच्छित भोग करूँगा। मैं असत्य बोलने में चतुरता के बल से लोगों से बहुतसा धन, मनोहारिणी कन्याएँ आदि ठगूँगा, शत्रु का घात करवाऊँगा, आदि विचार मृषानन्द रौद्रध्यान हैं।

चौर्यानन्द - दूसरों के रत्न, सोना-चाँदी वस्त्राभरण आदि को चुराने में ही जिसे आनन्द आता है वह चौर्यानन्द रौद्रध्यान है। किसी के चोरी हो जाने पर हर्ष होता है दूसरे के धन की चोरी की चिन्ता सताती है वह सब चौर्यानन्द रौद्रध्यान है।

परिग्रहानन्द - दास-दासी, धन-धान्य, मकान आदि विषय सामग्री की रक्षा में ही दिन-रात लगे रहना परिग्रहानन्द रौद्रध्यान है। **(का.अ. ४७५-७६ टी.)**

धन, पशु, पुत्रादि के रक्षण के विषय में चोर, दायाद (भागीदार) आदि के मारने में प्रयत्न करना परिग्रहानन्द रौद्रध्यान है। **(मू. ३९६ टी.)**

प्रश्न ५ : धर्मध्यान कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : धर्मध्यान चार प्रकार का होता है -

(१) आज्ञाविचय (२) अपायविचय (३) विपाकविचय (४) संस्थानविचय

आज्ञाविचय - जो सुनिपुण है, अनादिनिधन है, जगत् जनों का हित करने वाली- जगत् के जीवों द्वारा संसेवित, अमूल्य-अमित-अजित-महान् अर्थ वाली है। महानुभाव- महान् विषय वाली है- निरवद्य है, अनिपुण जनों के लिए दुर्ज्ञेय है - नयभंगों तथा प्रमाणागम से गहन है ऐसी जगत् के प्रदीप स्वरूप जिन भगवान की आज्ञा का ध्यान करना तथा पाँच अस्तिकाय, छह जीव निकाय, काल द्रव्य तथा इसी प्रकार आज्ञा ग्राह्य अन्य जितने पदार्थ हैं उनका चिन्तन करना आज्ञाविचय धर्म ध्यान कहलाता है। **(ध.१३/७१)**

अपायविचय - मिथ्यात्व असंयम कषाय और योगों के निमित्त से कर्म उत्पन्न होते हैं और कर्मों के निमित्त से जाति, जरा, मरण और वेदना उत्पन्न होती है ऐसा चिन्तन करना तथा पाप का त्याग करने वाला साधु राग-द्वेष कषाय और आस्रव आदि क्रियाओं में विद्यमान जीवों के इहलोक और परलोक से अपाय का चिन्तन करना 'अपाय विचय धर्मध्यान' कहलाता है। **(ध.१३/७२)**

विपाक विचय - प्रकृति-स्थिति-अनुभाग और प्रदेश के भेद से चार प्रकार के शुभाशुभ कर्मों के विपाक (परिपाक) का चिन्तन करना 'विपाक विचय धर्म ध्यान' कहलाता है। **(ध.१३/७२)**

संस्थान विचय - तीनों लोकों के संस्थान प्रमाण और आयु आदि का चिन्तन करना तथा जिनेन्द्र देव द्वारा कहे गये छह द्रव्यों के लक्षण-संस्थान, रहने का स्थान भेद प्रमाण तथा उनकी उत्पाद, स्थिति और व्यय आदि रूप पर्यायों का पाँच अस्तिकाय मय अनादि-निधन, नामादि अनेक भेद रूप और अधोलोक आदि भाग रूप से तीन प्रकार के लोक का पृथ्वी-वलय, द्वीप-सागर, नगर, विमान, भवन आदि के संस्थान का एवं आकाश में प्रतिष्ठान नियत और लोक स्थिति आदि भेद का चिन्तन संस्थान विचय धर्मध्यान कहलाता है। **(ध.१३/७३)**

प्रश्न ६ : शुक्लध्यान कितने प्रकार का होता है?

उत्तर: शुक्लध्यान चार प्रकार का होता है -

(१) पृथक्त्ववितर्कवीचार (२) एकत्व वितर्क अवीचार (३) सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती (४) व्युपरतक्रियानिवृत्ति

पृथक्त्ववितर्कवीचार - नानात्व या अनेकपने को पृथक्त्व कहते हैं। द्वादशांग को वितर्क कहते हैं। अर्थ, व्यंजन और योगों की संक्रान्ति को वीचार कहते हैं, किसी पदार्थ के नाम को व्यंजन कहते हैं और उस व्यंजन के विषयभूत पदार्थ को अर्थ कहते हैं। मन, वचन, काय के द्वारा आत्मा के प्रदेशों के परिस्पन्द को योग कहते हैं। एक का दूसरे में बदल जाना संक्रान्ति है। जिस ध्यान में द्वादशांग श्रुतज्ञान अर्थ, व्यंजन और योगों में अनेक तरह से संक्रमण करता है वह पृथक्त्ववितर्कवीचार नाम का प्रथम शुक्लध्यान है। **(चा.सा.)**

एकत्ववितर्क अवीचार - एक के भाव को एकत्व कहते हैं, द्वादशांग श्रुतज्ञान को वितर्क कहते है, संक्रमण नहीं करने को अवीचार कहते हैं। जिस ध्यान में श्रुतज्ञान के अर्थ, व्यंजन, योगों का एक रूप से ही ध्यान किया जाता है, किसी तरह के अर्थ, व्यंजन, योगों का संक्रमण न हो उसको एकत्ववितर्कअवीचार नाम का दूसरा शुक्लध्यान कहते हैं। **(चा.सा.)**

सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती - जो सूक्ष्मकाय क्रिया में व्यवस्थित है अर्थात् जिसमें काययोग की क्रिया भी सूक्ष्म हो चुकी है वह सूक्ष्मक्रिया ध्यान है। यह अवितर्क और अवीचार है अर्थात् श्रुत के अवलम्बन से रहित है, अत: अवितर्क है और इसमें अर्थ, व्यंजन तथा योगों का संक्रमण नहीं है अत: यह अवीचार है। ऐसे इस सूक्ष्मक्रिया नामक तृतीय शुक्लध्यान को सयोग केवली ध्याते हैं। **(मू. ४०५ टी.)**

व्युपरतक्रियानिवृत्ति - जिस ध्यान को अयोग केवली ध्याते हैं वह समुच्छिन्न है। वह अवितर्क, अवीचार, अनिवृत्तिनिरुद्ध योग, अनुत्तर, शुक्ल और अविचल है, मणिशिखा के समान है अर्थात् इस समुच्छिन्न ध्यान में श्रुत का अवलम्बन नहीं है अत: अवितर्क है। अर्थ व्यंजन योग की संक्रांति भी नहीं है अत: अवीचार है। सम्पूर्ण योगों का - काययोग का भी निरोध हो जाने से यह अनिवृत्तिनिरोध योग है। सभी ध्यानों में अन्तिम है। इससे उत्कृष्ट अब और कोई ध्यान नहीं रहा है अत: यह अनुत्तर है। परिपूर्णतया स्वच्छ उज्ज्वल होने से शुक्लध्यान इसका नाम है। यह मणि के दीपक की शिखा के समान होने से पूर्णतया अविचल है। इस चतुर्थ ध्यान के स्वामी चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोगकेवली हैं। **(मू. ४०५ टी.)**

कर्म विवक्षा

क्र.	ध्यान	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	३ आर्त्तध्यान	क्षयोपशम **(ज्ञा.२५।४२)**	मिथ्यात्व सासादनसम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व अविरतसम्य. संयमासंयम प्रमत्तसंयत	औदयिक पारिणामिक क्षायोपशमिक औप.क्षा.क्षायो. क्षायोपशमिक क्षायोपशमिक	पर्याप्त अवस्था में ही होता है। औपशमिक भाव भी दोनों अवस्थाओं में होता है।
२.	निदान	क्षयोपशम **(ज्ञा.२५।४२)**	आदि के पाँच गुणस्थान होते हैं।	पूर्ववत्	
३.	४ रौद्रध्यान	क्षयोपशम **(ज्ञा.२६।३९)**	आदि के पाँच गुणस्थान होते हैं।	पूर्ववत्	
४.	४ धर्मध्यान	क्षयोपशम **(ज्ञा.४१।१४)**	अविरतसम्यक्त्व संयमासंयम प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयत	औप.क्षा.क्षायो. क्षायोपशमिक क्षायोपशमिक क्षायोपशमिक	भोगभूमि में भी ये ध्यान हो सकते हैं।
५.	पृथक्त्ववितर्क-वीचार शुक्ल.	क्षयोपशम	अपूर्वकरण. अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसाम्पराय उपशान्त कषाय. क्षीणकषाय.	औप. क्षा. औप. क्षा. औप. क्षा. औपशमिक क्षायिक	उपशम श्रेणी की अपेक्षा दोनों सम्यक्त्व हो सकते हैं।
६.	एकत्ववितर्क-अवीचार शु.	क्षयोपशम	उपशान्तकषाय क्षीणकषाय	औपशमिक क्षायिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होता है।
७.	सूक्ष्मक्रियाप्रति-पाती शुक्ल.	क्षय	सयोगकेवली	क्षायिक	
८.	व्युपरतक्रियानि-वृत्तिशुक्लध्यान	क्षय	अयोगकेवली	क्षायिक	

प्रश्न ७ : ये ध्यान किस भाव रूप होते हैं?

उत्तर : १६ ध्यानों में से -

४ आर्त्त - ४ रौद्रध्यान - क्षायोपशमिक भाव रूप हैं।

४ धर्मध्यान - क्षायोपशमिक भाव रूप हैं क्योंकि ये परोक्ष अर्थात् मति श्रुतज्ञान के गोचर होते हैं।

पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान - क्षायोपशमिक भाव रूप, क्योंकि यह परोक्ष अर्थात् मतिश्रुत-ज्ञान के गोचर होता है। **(चा.सा.)**

एकत्ववितर्क अवीचार शुक्लध्यान - क्षायोपशमिक भाव रूप, क्योंकि यह परोक्ष ज्ञान के गोचर है।

सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती एवं व्युपरतक्रिया निर्वृत्ति शुक्लध्यान - क्षायिक भाव रूप क्योंकि ये प्रत्यक्ष केवलज्ञान गोचर होते हैं।

नोट - दूसरा तीसरा चौथा शुक्लध्यान किस भाव रूप है, यह मेरे पढ़ने में नहीं आया इसलिए मैंने अनुमान से लिखा है। विद्वत्जन आगम के अनुसार ही ग्रहण करें।

प्रश्न ८ : आर्त्त-रौद्र ध्यान के कितने गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : ३ आर्त्त ध्यान के ३ गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं -

(१) सम्यग्मिथ्यात्व (२) संयमासंयम (३) प्रमत्तसंयत

निदान आर्त्तध्यान एवं ४ रौद्रध्यानों के दो गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं -

(१) सम्यग्मिथ्यात्व (२) संयमासंयम

प्रश्न ९ : कितने ध्यानों का प्रमत्तसंयत गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होता है?

उत्तर : ७ ध्यानों का प्रमत्तसंयत गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होता है -

३ आर्त्तध्यान ४ धर्मध्यान

शेष ध्यानों में छठा गुणस्थान नहीं होता है।

प्रश्न १० : कितने ध्यानों के गुणस्थान केवल एक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : २ ध्यानों के गुणस्थान केवल एक भाव रूप ही होते हैं -

तीसरा सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती शुक्ल ध्यान - तेरहवाँ गुणस्थान - क्षायिक भाव रूप।

चौथा व्युपरतक्रियानिवृत्ति शुक्ल ध्यान - चौदहवाँ गुणस्थान - क्षायिक भाव रूप।

जो आचार्य बारहवें गुणस्थान में पहला शुक्लध्यान नहीं मानते हैं उनकी अपेक्षा दूसरे शुक्लध्यान में भी क्षायिक भाव रूप गुणस्थान ही होगा, क्योंकि इसमें ग्यारहवाँ औपशमिक भाव रूप गुणस्थान नहीं होगा।

जो आचार्य ग्यारहवें गुणस्थान में दूसरा शुक्लध्यान नहीं मानते हैं उनकी अपेक्षा दूसरे शुक्लध्यान में भी क्षायिकभाव रूप गुणस्थान ही होगा।

दोनों में से एक श्रेणी की विवक्षा करेंगे तो उपशम श्रेणी की अपेक्षा ८वाँ ९वाँ १०वाँ गुण. औपशमिक भाव रूप तथा क्षपक श्रेणी की अपेक्षा ८वाँ ९वाँ १०वाँ गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होगा। इन दोनों के गुणस्थान एक-एक भावरूप ही होंगे।

प्रश्न ११ : कितने ध्यानों में दो भाव रूप गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : केवल एक ध्यान में दो भाव रूप गुणस्थान होते हैं -

पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान। इसमें आठवाँ नवाँ दसवाँ गुणस्थान - औपशमिक एवं क्षायिक, इन दो भाव रूप होते हैं।

प्रश्न १२ : कौनसे ध्यान के कितने गुणस्थान भोगभूमिया जीवों के भी कर्मभूमिया जीवों के समान ही होते हैं?

उत्तर : १२ ध्यानों के ४ गुणस्थान भोगभूमिया एवं कर्मभूमिया जीवों के समान ही होते हैं-

४ आर्त्तध्यान - इनका चौथा गुणस्थान - औप.क्षा. क्षायो. भाव रूप

४ रौद्रध्यान - इनका चौथा गुणस्थान - औप.क्षा. क्षायो. भाव रूप

इन आठों का पहला गुणस्थान औदयिक, दूसरा पारिणामिक, एवं तीसरा क्षायोपशमिक भाव रूप होता है।

४ धर्मध्यान का चौथा गुणस्थान तीन भाव रूप होता है।

भोगभूमिया तिर्यञ्चों एवं मनुष्यों का कथन एक समान ही करना चाहिए। विशेषता यह है कि कर्मभूमि में तिर्यञ्चों के चौथा गुणस्थान औपशमिक एवं क्षायोपशमिक, इन दो भाव रूप ही होता है।

स्थान - विवरण

प्रश्न १३ : ध्यान में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : ध्यान में ११ स्थान होते हैं -

(१) १६ ध्यान रूप (२) १५ ध्यान रूप (३) १४ ध्यान रूप (४) १३ ध्यान रूप (५) १२ ध्यान रूप (६) ९ ध्यान रूप (७) ८ ध्यान रूप (८) ७ ध्यान रूप (९) ४ ध्यान रूप (१०) २ ध्यान रूप (११) १ ध्यान रूप

प्रश्न १४ : इन स्थानों में किस-किस ध्यान को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में ध्यान -

१६ ध्यान रूप स्थान में - ४ आर्त्त. ४ रौद्र. ४ धर्म. ४ शुक्ल

१५ ध्यान रूप स्थान में - अन्तिम शुक्ल ध्यान बिना
१४ ध्यान रूप स्थान में - ४ आर्त्त. ४ रौद्र. ४ धर्म. २ शुक्ल. (पहला-दूसरा)
१३ ध्यान रूप स्थान में - ४ आर्त्त. ४ रौ. ४ धर्म. १ शुक्ल. (पहला)
१२ ध्यान रूप स्थान में - ४ आर्त्त. ४ रौ. ४ धर्म.
९ ध्यान रूप स्थान में - ३ आर्त्त. (निदान बिना) ४ धर्म. २ शुक्ल. (पहला-दूसरा)
८ ध्यान रूप स्थान में - ४ आर्त्त. ४ रौद्र.
७ ध्यान रूप स्थान में - ३ आर्त्त. ४ धर्म.
४ ध्यान रूप स्थान में - ४ धर्मध्यान अथवा ४ शुक्लध्यान
२ ध्यान रूप स्थान में - पहला-दूसरा शुक्लध्यान अथवा तीसरा-चौथा शुक्ल.
१ ध्यान रूप स्थान में - पहला या तीसरा या चौथा शुक्लध्यान

अथवा एक समय में एक ध्यान ही होता है इसलिए स्वकीय ध्यान होता है।

प्रश्न १५ : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

१६ ध्यान रूप स्थान के - मनुष्यगति वाले जीव
१२ ध्यान रूप स्थान के - चौथे, पाँचवें गुणस्थानवर्ती तथा तीन गति के जीव
८ ध्यान रूप स्थान के - पहले, दूसरे, तीसरे गुणस्थानवर्ती जीव
७ ध्यान रूप स्थान के - छठे गुणस्थानवर्ती जीव
४ ध्यान रूप स्थान के - सातवें गुणस्थानवर्ती जीव
२ ध्यान रूप स्थान के - ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव
१ ध्यान रूप स्थान के - आठवें, नवें, दसवें, तेरहवें तथा चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव

नोट : (१) १५ ध्यान रूप आदि कुछ स्थानों के स्वामी कोई गति एवं गुणस्थान वाला नहीं है, फिर भी इनमें भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं, इसलिए इसे यहाँ ग्रहण किया है। (२) जो आचार्य दसवें गुणस्थान तक धर्मध्यान मानते हैं उनकी अपेक्षा यथायोग्य स्थान एवं भाव लगा लेना चाहिए।

प्रश्न १६ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

१६ ध्यान रूप स्थान में - ५
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
औदयिक के २ - १ ग. (मनु.) १ असि.
पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

१५ ध्यान रूप स्थान में - १
औदयिक का - शुक्ल लेश्या
१४ ध्यान रूप स्थान में - १३
औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. (म.श्रु.अव.) ३ दर्श. ५ ल.
औदयिक का १ - अज्ञान
१३ ध्यान रूप स्थान में - ७
औदयिक के - ४ क. ३ लि.
१२ ध्यान रूप स्थान में - ११
क्षायोपशमिक के २ - सम्यक्त्व, संयमासंयम
औदयिक के ९ - ३ ग. (न.ति.दे.) १ असं. ५ ले. (कृष्णादि.)
९ ध्यान रूप स्थान में - १
क्षायोपशमिक का १ - मन:पर्ययज्ञान
८ ध्यान रूप स्थान में - ५
क्षायोपशमिक के ३ - कुमति. कुश्रुत. विभं.
औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन
पारिणामिक का १ - अभव्यत्व
७ ध्यान रूप स्थान में - १
क्षायोपशमिक का - चारित्र
४ ध्यान रूप स्थान में - १
क्षायिक का १ - चारित्र
२ ध्यान रूप स्थान में - ८
औपशमिक का १ - चारित्र
क्षायिक के ७ - ज्ञानादि

नोट : १ ध्यान रूप स्थान में कोई भाव नहीं होता है फिर भी इसके गुणस्थानवर्ती जीव स्वामी पाये जाते हैं इसलिए इसका यहाँ ग्रहण किया गया है।

प्रश्न १७ : कितने स्थानों में औदयिक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ६ स्थानों में औदयिक भाव के उत्तर भेद होते हैं -
(१) ८ ध्यान रूप स्थान (२) १२ ध्यान रूप स्थान (३) १३ ध्यान रूप स्थान (४) १४ ध्यान रूप स्थान (५) १५ ध्यान रूप स्थान (६) १६ ध्यान रूप स्थान

प्रश्न १८ : कितने स्थानों में केवल एक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ५ स्थानों में केवल एक भाव के उत्तर भेद होते हैं -

(१) ४ ध्यान रूप - क्षायिक (२) ७ ध्यान रूप - क्षायोपशमिक

(३) ९ ध्यान रूप - क्षायोपशमिक (४) १३ ध्यान रूप - औदयिक

(५) १५ ध्यान रूप - औदयिक

प्रश्न १९ : कितने स्थानों के स्वामी दो गुणस्थान वाले होते हैं?

उत्तर : २ स्थानों के स्वामी दो गुणस्थान वाले होते हैं -

२ ध्यान (पहला-दूसरा) शुक्लध्यान - ग्यारहवें - बारहवें गुणस्थानवर्ती जीव

१२ ध्यान (४ आ. ४ रौ. ४ ध.) - चौथे - पाँचवें गुणस्थानवर्ती जीव

प्रश्न २० : कितने स्थानों में क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद नहीं होते हैं?

उत्तर : ५ स्थानों में क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद नहीं होते हैं -

(१) २ ध्यान रूप स्थान (२) ४ ध्यान रूप स्थान

(३) १३ ध्यान रूप स्थान (४) १५ ध्यान रूप स्थान

(५) १६ ध्यान रूप स्थान

प्रश्न २१ : कितने स्थानों में आर्त्तध्यान नहीं होते हैं?

उत्तर : केवल ३ स्थानों में आर्त्तध्यान नहीं होते हैं -

(१) १ ध्यान रूप स्थान (२) २ ध्यान रूप स्थान

(३) ४ ध्यान रूप स्थान

अथवा - एक समय में एक ही ध्यान होता है इसलिए ४ आर्त्तध्यान को छोड़कर किसी भी ध्यान के साथ आर्त्तध्यान नहीं होते हैं। स्वकीय ध्यान की अपेक्षा भी इसी प्रकार जानना चाहिए।

प्रश्न २२ : कितने स्थानों में केवल एक भाव होता है?

उत्तर: ४ स्थानों में केवल एक भाव होता है -

(१) ४ ध्यान रूप स्थान में - क्षायिक चारित्र

(२) ७ ध्यान रूप स्थान में - क्षायोपशमिक चारित्र

(३) ९ ध्यान रूप स्थान में - मन:पर्ययज्ञान

(४) १५ ध्यान रूप स्थान में - शुक्ल लेश्या

प्रश्न २३ : कितने स्थान केवल मुनिराज के ही होते हैं?

उत्तर : ४ स्थान केवल मुनिराज के ही होते हैं -

(१) १ ध्यान रूप स्थान (२) २ ध्यान रूप स्थान (३) ४ ध्यान रूप स्थान
(४) ७ ध्यान रूप स्थान (५) ९ ध्यान रूप स्थान

नोट - १) १ ध्यान रूप स्थान केवली भगवान के होता है। वे भी स्नातक मुनिराज होते हैं इसलिए उनका यहाँ ग्रहण किया है।

२) सामान्य रूप से एक जीव के एक समय में एक ही ध्यान होता है इसलिए प्रथम गुणस्थान आदि वाले जीव भी इसके स्वामी हो सकते हैं लेकिन इन गुणस्थानों में स्थित सभी जीवों के एक ध्यान ही नहीं होता है। यहाँ एक ध्यान रूप स्थान में उस गुणस्थान में स्थित नाना (अनेक) समयों में एवं नाना जीवों के भी यही एक ध्यान ही होगा। इसलिए इनका ग्रहण किया है।

प्रश्न २४ : कितने स्थानों में केवल औदयिक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : केवल दो स्थानों में मात्र औदयिक भाव के उत्तर भेद होते हैं -

(१) १३ ध्यान रूप स्थान

इसमें ४ कषाय एवं ३ लिङ्ग रूप भाव होते हैं। इनमें
४ आर्त्तध्यान ४ रौद्रध्यान ४ धर्मध्यान एवं १ (पहला) शुक्लध्यान होता है।

(२) १५ ध्यान रूप स्थान

इसमें १ शुक्ललेश्या रूप भाव होता है इसमें
४ आर्त्तध्यान ४ रौद्रध्यान ४ धर्मध्यान, ३ शुक्लध्यान (चौथे शुक्लध्यान बिना)

प्रश्न २५ : एक ध्यान रूप स्थान कितनी अपेक्षा बनता है?

उत्तर : एक ध्यान रूप स्थान तीन अपेक्षा बनता है -

(१) पृथक्त्ववितर्कवीचार ध्यान रूप स्थान - आठवें, नवें, दसवें गुणस्थान में
(२) सूक्ष्म क्रियाप्रतिपाती ध्यान रूप स्थान - तेरहवें गुणस्थान में
(३) व्युपरतक्रियानिवृत्ति ध्यान रूप स्थान - चौदहवें गुणस्थान में

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	६	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. १२ध्या. १४ध्या.	
	चारित्र	२	१ध्या. २ध्या.	ग्यारहवें गुण. की अपेक्षा २ ध्यान रूप स्थान होता है।
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	६	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. १२ध्या. १६ध्या.	१६ ध्यान रूप स्थान मनुष्यगति की अपेक्षा होता है।
	चारित्र	३	१ध्या. २ध्या. ४ध्या.	बारहवें गुण. की अपेक्षा २ ध्यान रूप स्थान होता है।
	ज्ञानादि सात	२	१ध्या. २ ध्या.	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	६	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. १२ध्या. १४ध्या.	
	मन:पर्ययज्ञान	५	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ९ध्या.	
	३ अज्ञान	१	८ध्यान रूप	पहले दूसरे गुण. की अपेक्षा होता है।
	चक्षु.अचक्षु.	७	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ध्या. १४ध्या.	
	अवधिदर्शन	६	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. १२ध्या. १४ध्या.	
	५ लब्धि	७	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ध्या. १४ध्या.	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा २ ध्यान रूप स्थान होता है।
	सम्यक्त्व	३	४ध्या. ७ध्या. १२ध्या.	
	चारित्र	२	४ध्या. ७ध्या.	
	संयमासंयम	१	१२ ध्यान रूप	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	२	८ध्या. १२ध्या.	८ ध्यान रूप स्थान तीन गुण. की अपेक्षा होता है।
	तिर्यञ्चगति	२	८ध्या. १२ध्या.	
	मनुष्यगति	७	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ध्या. १६ध्या.	

	देवगति	२	८ध्या. १२ध्या.	चौथे गुण. की अपेक्षा १२ ध्यान रूप स्थान होता है।
	४ कषाय	६	१ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ध्या. १३ध्या.	
	स्त्री. पुरुषलिङ्ग	६	१ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ध्या. १३ध्या.	१ ध्यान रूप स्थान आठवें - नवें गुण. की अपेक्षा होता है।
	नपुंसकलिङ्ग	६	१ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ ध्या. १३ध्या.	
	मिथ्यादर्शन	१	८ ध्यान रूप	
	अज्ञान	७	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ध्या. १४ध्या.	
	असंयत	२	८ध्या. १२ध्या.	१२ ध्यान रूप स्थान केवल चौथे गुण. की अपेक्षा होता है।
	असिद्धत्व	७	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ध्या. १६ध्या.	
	३ अशुभलेश्या	२	८ध्या. १२ध्या.	१२ ध्यान रूप स्थान चौथे गुण. की अपेक्षा होता है।
	पीत-पद्मलेश्या	४	४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ध्या.	
	शुक्ल लेश्या	७	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ध्या. १५ध्या.	१५ ध्यान रूप स्थान मूल में ही होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	७	१ध्या. २ध्या. ४ध्या. ७ध्या. ८ध्या. १२ध्या. १६ध्या.	१६ ध्यान रूप स्थान मनुष्यगति की अपेक्षा होता है।
	भव्यत्व	७	१ध्या.२ध्या.४ध्या.७ध्या.८ध्या. १२ध्या.१६ध्या.	१६ ध्यान रूप स्थान मनुष्यगति की अपेक्षा होता है।
	अभव्यत्व	१	८ ध्यान रूप	

प्रश्न २६ : कितने भावों में केवल ८ ध्यान रूप स्थान होता है?

उत्तर : ५ भावों में केवल ८ ध्यान रूप स्थान होता है -

क्षायोपशमिक के ३ - कुमति कुश्रुत विभंग.

औदयिक का १ - मिथ्यादर्शन

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न २७ : कितने भावों में ४ ध्यान रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : ३२ भावों में ४ ध्यान रूप स्थान भी होता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायोपशमिक के १४ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चारि.

औदयिक के १३ - १ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २८ : कितने भावों में १६ ध्यान रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : ५ भावों में १६ ध्यान रूप स्थान भी होता है -

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

औदयिक के २ - १ ग. (मनु.) १ असि.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २९ : कितने भावों में १२ ध्यान रूप स्थान केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होता है?

उत्तर : ७ भावों में १२ ध्यान रूप स्थान केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होता है -

क्षायोपशमिक का १ - संयमासंयम - पाँचवाँ गुणस्थान

औदयिक के ६ - २ ग. (न.दे.) १ असं. ३ ले. (अशु.) - चौथा गुणस्थान

प्रश्न ३० : किस भाव का एक ध्यान रूप स्थान किस गुणस्थान की अपेक्षा हो सकता है?

उत्तर :

भाव	**१ ध्यान/रूप स्थान**	**गुणस्थान**
औपशमिक के २-सम्यक्त्व चारित्र	पृथक्त्ववितर्कवीचार	८वाँ ९वाँ १०वाँ
क्षायिक के २-सम्यक्त्व चारित्र	पृथक्त्ववितर्कवीचार	८वाँ ९वाँ १०वाँ
	सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती	- १३वाँ
	व्युपरतक्रियानिवृत्ति	- १४वाँ
ज्ञानादि सात -	सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती	- १३वाँ
	व्युपरतक्रियानिवृत्ति	- १४वाँ
क्षायोपशमिक के ४ज्ञा.३दर्श.५ल.-	पृथक्त्ववितर्कवीचार	- ८वाँ ९वाँ १०वाँ
औदयिक के मनुष्यगति-असिद्धत्व -	पृथक्त्ववितर्कवीचार	- ८वाँ ९वाँ १०वाँ
	सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती	- १३वाँ
	व्युपरतक्रियानिवृत्ति	- १४वाँ

३ कषाय-३ लिङ्ग पृथक्त्ववितर्कवीचार - ८वाँ ९वाँ
लोभ-अज्ञान - पृथक्त्ववितर्कवीचार - ८वाँ ९वाँ १०वाँ
पारिणामिक के जीवत्व-भव्यत्व - पृथक्त्ववितर्कवीचार - ८वाँ ९वाँ १०वाँ
सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती - १३वाँ
व्युपरतक्रियानिवृत्ति - १४वाँ

नोट - जो आचार्य ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान में भी एक ही ध्यान मानते हैं, उनके यथायोग्य ध्यानों का कथन करना चाहिए।

प्रश्न ३१ : कितने भावों में ६ स्थान होते हैं?

उत्तर : १३ भावों में ६ स्थान होते हैं -
औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के ४ - ३ ज्ञान, १ दर्श. (अव.)
औदयिक के ७ - ४ कषाय, ३ लिंग

प्रश्न ३२ : लेश्या रूप भावों में स्थानों का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : लेश्या रूप भावों में स्थानों का विवेचन -
३ अशुभ लेश्या रूप भाव में -
८ ध्यान रूप स्थान - तीन गुणस्थान की अपेक्षा
१२ ध्यान रूप स्थान - चौथे गुणस्थान की अपेक्षा
पीत-पद्म लेश्या रूप भाव में -
४ ध्यान रूप स्थान - सातवें गुणस्थान की अपेक्षा
७ ध्यान रूप स्थान - छठे गुणस्थान की अपेक्षा
८ ध्यान रूप स्थान - तीन गुणस्थान की अपेक्षा
१२ ध्यान रूप स्थान - चौथे - पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा
शुक्ल लेश्या रूप भाव में -
१ ध्यान रूप स्थान - आठवें, नवें, दसवें और तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा
२ ध्यान रूप स्थान - ग्यारहवें - बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा
४ ध्यान रूप स्थान - सातवें गुणस्थान की अपेक्षा
७ ध्यान रूप स्थान - छठे गुणस्थान की अपेक्षा
८ ध्यान रूप स्थान - पहले-दूसरे-तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा
१२ ध्यान रूप स्थान - चौथै-पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा
१५ ध्यान रूप स्थान - मनुष्य गति की अपेक्षा

प्रश्न ३३ : किस भाव में कौनसा स्थान दो गुणस्थान की अपेक्षा होता है?

उत्तर : उन भावों के वे स्थान जिनमें दो गुणस्थान होते हैं -

क्र.	भाव	स्थान संख्या	विवरण	गुणस्थान
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	३	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
			१ ध्यान रूप	तेरहवें-चौदहवें गुण. की अपेक्षा
	चारित्र	२	२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
			१ ध्यान रूप	तेरहवें-चौदहवें गुण. की अपेक्षा
	ज्ञानादि सात	१	१ ध्यान रूप	तेरहवें-चौदहवें गुण. की अपेक्षा
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	२	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
	मन:पर्ययज्ञान	१	२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
	३ अज्ञान	१	८ ध्यान रूप	पहले-दूसरे गुण. की अपेक्षा
	३ दर्शन	२	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
	५ लब्धि	२	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
	सम्यक्त्व	१	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
४.	**औदयिक**			
	मनुष्यगति	३	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
			१ ध्यान रूप	तेरहवें-चौदहवें गुण. की अपेक्षा
	३ क. ३ लि.	२	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			१ ध्यान रूप	आठवें-नौवें गुण. की अपेक्षा
	लोभकषाय	१	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
	अज्ञान	२	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
	असिद्धत्व	३	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
			१ ध्यान रूप	तेरहवें-चौदहवें गुण. की अपेक्षा
	पीत-पद्म ले.	१	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
	शुक्ल लेश्या	२	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			२ ध्यान रूप	ग्यारहवें, बारहवें गुण. की अपेक्षा
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	३	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
			१ ध्यान रूप	तेरहवें-चौदहवें गुण. की अपेक्षा
	भव्यत्व	३	१२ ध्यान रूप	चौथे-पाँचवें गुण. की अपेक्षा
			२ ध्यान रूप	ग्यारहवें-बारहवें गुण. की अपेक्षा
			१ ध्यान रूप	तेरहवें-चौदहवें गुण. की अपेक्षा

प्रश्न ३४ : कितने स्थान मनुष्यगति की अपेक्षा भी होते हैं?

उत्तर : केवल दो स्थान मनुष्यगति की अपेक्षा भी होते हैं -

(१) ८ ध्यान रूप

(२) १२ ध्यानरूप

प्रश्न ३५ : कौनसा स्थान सबसे अधिक भावों में होता है?

उत्तर : १२ ध्यान रूप स्थान सबसे अधिक भावों में होता है-
यह ३७ भावों में होता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संय.

औदयिक के २० - मिथ्यादर्शन बिना

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३६ : कितने भावों में एक ध्यान रूप स्थान हो सकता है?

उत्तर : ३६ भावों में एक ध्यान रूप स्थान हो सकता है -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के ९ - ज्ञानादि

क्षायोपशमिक के १२ - ४ज्ञा. ३दर्श. ५ ल.

औदयिक के ११ - १ ग. (म.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ३७ : कितने भावों में १४ ध्यान रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : १३ भावों में १४ ध्यान रूप स्थान भी होता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व - ४ आ. ४ रौ. ४ धर्म. २ शुक्ल

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक का १ - अज्ञान

भावों में ध्यान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१४	४ आ. ४ रौ. ४ धर्म. २ शु.	पहला-दूसरा शुक्ल ध्यान होता है।
	चारित्र	२	पृथ., एक.	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१६	४ आ. ४ रौ. ४ धर्म. ४ शु.	
	चारित्र	४	पृथ. एक. सूक्ष्म. व्युप.	
	ज्ञानादि सात	२	सूक्ष्म. व्युप.	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	१४	४ आ. ४ रौ. ४ ध. २ शुक्ल.	पहला-दूसरा शुक्लध्यान होता है।
	मन:पर्ययज्ञान	९	३ आ. ४ धर्म. २ शुक्ल.	
	२ अज्ञा.	८	४ आ. ४ रौ.	पहले-दूसरे गुणस्थान में होते हैं।
	विभंगज्ञान	८	४ आ. ४ रौ.	पहले-दूसरे गुणस्थान में होते हैं।
	चक्षु-अचक्षु.	१४	४ आ. ४ रौ. ४ ध. २ शुक्ल.	
	अवधिदर्शन	१४	४ आ. ४ रौ. ४ ध. २ शुक्ल.	
	५ लब्धि	१४	४ आ. ४ रौ. ४ ध. २ शुक्ल.	
	सम्यक्त्व	१२	४ आ. ४ रौ. ४ ध.	
	चारित्र	७	३ आ. ४ ध.	निदान आर्त्तध्यान नहीं होता है।
	संयमासंयम	१२	४ आ. ४ रौ. ४ ध.	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१२	४ आ. ४ रौ. ४ ध.	
	तिर्यञ्चगति	१२	४ आ. ४ रौ. ४ ध.	
	मनुष्यगति	१६	४ आ. ४ रौ. ४ ध. ४ शु.	
	देवगति	१२	४ आ. ४ रौ. ४ ध.	
	४ कषाय	१३	४ आ. ४ रौ. ४ ध. १ शुक्ल.	पहला शुक्लध्यान होता है।
	३ लिङ्ग	१३	४ आ. ४ रौ. ४ ध. १ शुक्ल.	
	मिथ्यादर्शन	८	४ आ. ४ रौ.	
	अज्ञान	१४	४ आ. ४ रौ. ४ ध. २ शु.	
	असंयत	१२	४ आ. ४ रौ. ४ ध.	
	असिद्धत्व	१६	४ आ. ४ रौ. ४ ध. ४ शु.	
	३ अशुभ लेश्या	१२	४ आ. ४ रौ. ४ ध.	
	पीत-पद्म	१२	४ आ. ४ रौ. ४ ध.	
	शुक्ल लेश्या	१५	४ आ. ४ रौ. ४ ध. ३ शु.	चौथा शुक्ल ध्यान नहीं होता है।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	१६	४ आ. ४ रौ. ४ ध. ४ शु.	मनुष्यगति में ही १६ ध्यान होते हैं।
	भव्यत्व	१६	४ आ. ४ रौ. ४ ध. ४ शु.	मनुष्यगति में ही १६ ध्यान होते हैं।
	अभव्यत्व	८	४ आ. ४ रौ.	

प्रश्न ३८ : कितने भावों में दो शुक्ल ध्यान होते हैं?

उत्तर : २२ भावों में दो शुक्ल ध्यान होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र (ग्यारहवें गुण. की अपेक्षा आदि के दो शुक्ल ध्यान)

क्षायिक के ७ - ज्ञान दर्शन........। (अन्तिम दो शुक्ल ध्यान)

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. (आदि के दो शुक्ल ध्यान)

औदयिक का १ - अज्ञान

प्रश्न ३९ : कितने भावों में आर्त्त-रौद्र ध्यान नहीं होते हैं?

उत्तर : ९ भावों में आर्त्त-रौद्र ध्यान नहीं होते हैं-

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना

नोट - मन:पर्यय ज्ञान एवं क्षायो. चारित्र में रौद्रध्यान नहीं होते हैं लेकिन आर्त्तध्यान होते हैं इसलिए उनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न ४० : कितने भावों में शुक्लध्यान भी होते हैं?

उत्तर : २७ भावों में शुक्लध्यान भी होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ११ - १ ग. (म.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न ४१ : क्या ऐसे कोई भाव हैं जिनमें १५ ध्यान होते हैं?

उत्तर : हाँ, मात्र एक भाव ऐसा है जिसमें १५ ध्यान होते हैं -

शुक्ल लेश्या

इसमें ४ आर्त्तध्यान ४ रौद्रध्यान ४ धर्मध्यान ३ शुक्ल ध्यान होते हैं।

व्युपरतक्रियानिर्वृति शुक्ल ध्यान नहीं होता है।

प्रश्न ४२ : कितने भावों में केवल एक शुक्ल ध्यान होता है?

उत्तर : ७ भावों में केवल एक शुक्ल ध्यान होता है -

४ कषाय - क्रोध मान माया लोभ

३ लिङ्ग - स्त्रीलिङ्ग पुरुषलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग

इनमें केवल पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान होता है।

प्रश्न ४३ : क्या ऐसा कोई भाव है जिसमें न रौद्रध्यान होते हैं और न शुक्लध्यान?

उत्तर : हाँ, एक भाव ऐसा है जिसमें न रौद्रध्यान होते हैं और न शुक्लध्यान - क्षायोपशमिक चारित्र

यह छठे - सातवें गुणस्थान में होता है इसलिए इसमें रौद्रध्यान और शुक्लध्यान दोनों नहीं होते हैं।

प्रश्न ४४ : कितने भावों में चारों ध्यानों के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : २६ भावों में चारों ध्यानों के उत्तर भेद होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ११ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ११ - १ ग. (म.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ४५ : आर्त्तध्यान में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : आर्त्तध्यान में ४४ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १८ - ४ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के २१ - ४ ग. ४ क. ....

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट - निदान नामक चौथे आर्त्तध्यान में इन ४४ भावों में से मन:पर्ययज्ञान एवं क्षायोपशमिक चारित्र रूप भाव कम कर देने पर ४२ भाव होते हैं। ये दोनों भाव छठे गुणस्थान से होते हैं वहाँ निदान आर्त्तध्यान नहीं होता है।

अर्थात् इष्टवियोगज, अनिष्ट संयोगज एवं वेदना आर्त्तध्यान में ४४ तथा निदान आर्त्तध्यान में ४२ भाव होते हैं।

प्रश्न ४६ : आर्त्तध्यान में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : ३ आर्त्तध्यान में ६ गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादनसम्यक्त्व (३) सम्यग्मिथ्यात्व (४) अविरतसम्यक्त्व (५) संयमासंयम (६) प्रमत्तसंयत

निदान आर्त्तध्यान में प्रमत्तसंयत गुणस्थान नहीं होने से आदि के पाँच ही गुणस्थान होते हैं।

इनमें भाव गुणस्थानों के समान ही जानने चाहिए।

प्रश्न ४७ : आर्त्तध्यान की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : ३ आर्त्तध्यान की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ४ गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादनसम्यक्त्व (३) अविरतसम्यक्त्व (४) प्रमत्तसंयत

इनमें भाव - मिथ्यात्व में ३३ क्षायोपशमिक के ९ (२ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.) औदयिक के २१ पारिणामिक के ३। सासादन गुणस्थान में - उपर्युक्त भावों में से नरकगति, मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व नहीं होने से ३० भाव होते हैं।

अविरतसम्यक्त्व में ३५ -

औपशमिक का १ (सम्य.)	- क्षायिक का १ सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १२	- ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.
औदयिक के १९	- स्त्रीलिङ्ग, मिथ्यादर्शन बिना
पारिणामिक के २	- जीवत्व, भव्यत्व

प्रमत्तसंयत गुणस्थान में २७ -

क्षायिक का १	- सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १३	- ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.
औदयिक के ११	- १ ग. (मनु.) ४ क. १ लि. (पु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
पारिणामिक के २	- जीवत्व भव्यत्व

निदान आर्त्तध्यान की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में ३ गुणस्थान होते हैं -

(१) मिथ्यात्व (२) सासादनसम्यक्त्व (३) अविरतसम्यक्त्व

इनमें भाव ३ आर्त्तध्यान के समान ही जानना चाहिए।

नोट - ४ रौद्रध्यान का सभी कथन निदान आर्त्तध्यान के समान ही करना चाहिए।

प्रश्न ४८ : आर्त्त-रौद्र ध्यान वालों के कितने भावों में चार गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : आर्त्त-रौद्र ध्यान वालों के ६ भावों में चार गुणस्थान होते हैं -
औदयिक के - २ गति (नर.दे.) १ असंयत ३ लेश्या-कृष्ण नील कापोत

प्रश्न ४९ : आर्त्त-रौद्र ध्यान वालों के कितने क्षायोपशमिक भावों में ५ गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : आर्त्त-रौद्र ध्यान वालों के ७ क्षायोपशमिक भावों में ५ गुणस्थान होते हैं -
२ दर्शन - चक्षु - अचक्षु.
५ लब्धि - दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

नोट - यहाँ आर्त्त और रौद्र दोनों ध्यानों के एक साथ होने की अपेक्षा कथन करना चाहिए।

प्रश्न ५० : क्या आर्त्त-रौद्र ध्यान वाले सभी मिथ्यादर्शन भाव वाले ही होते हैं?

उत्तर : नहीं, आर्त्त-रौद्र ध्यान वाले सभी मिथ्यादर्शन भाव वाले ही हों ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि आर्त्त-रौद्र ध्यान वाले चौथे गुणस्थान में सम्यग्दृष्टि (सम्यक्त्व रूप भाव वाले) तथा पाँचवें गुणस्थान में संयमासंयम रूप भाव वाले भी होते हैं। (३ आर्त्तध्यान वालों के छठे गुणस्थान में मन:पर्ययज्ञान एवं क्षायोपशमिक चारित्र रूप भाव भी होता है) हाँ, पहले-दूसरे-तीसरे गुणस्थान वालों के आर्त्त-रौद्र ध्यान ही होते हैं। चौथे आदि गुणस्थानों में धर्मध्यान भी होते हैं। इसलिए आर्त्त-रौद्र ध्यानी मिथ्यादर्शन भाव वाले ही हों, ऐसा कोई नियम नहीं है।

प्रश्न ५१ : धर्मध्यान में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : धर्मध्यान में ३९ भाव होते हैं -

औपशमिक का १	- सम्यक्त्व
क्षायिक का १	- सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के १५	- ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा. १ संयमा.
औदयिक के २०	- ४ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.
पारिणामिक के २	- जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न ५२ : धर्मध्यान में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : धर्मध्यान में ४ गुणस्थान होते हैं -
(१) अविरतसम्यक्त्व (२) संयमासंयम
(३) प्रमत्तसंयत (४) अप्रमत्तसंयत

नोट - १) जो आचार्य तीसरे गुणस्थान से धर्म ध्यान मानते हैं उनकी अपेक्षा तीसरा गुणस्थान भी होने से ५ गुणस्थान होंगे।

२) जो आचार्य दसवें गुणस्थान तक धर्मध्यान मानते हैं उनकी अपेक्षा तीसरे से दसवाँ या चौथे से दसवाँ गुणस्थान अर्थात् क्रमशः ८ या ७ गुणस्थान होंगे।

प्रश्न ५३ : धर्म-ध्यान वालों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : धर्म-ध्यान वालों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में २ गुणस्थान होते हैं -

(१) अविरतसम्यक्त्व (२) प्रमत्तसंयत

इनमें भाव : अविरतसम्यक्त्व में ३५ - औप.१, क्षा.१ क्षायो.१२ औद.१९ पारि.२

प्रमत्तसंयत में - २७ - क्षा.१ क्षायो. १३ औद. ११ पारि. २

प्रश्न ५४ : शुक्लध्यान में कितने भाव होते हैं?

उत्तर: शुक्लध्यान में ३६ भाव होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायिक के ९ - ज्ञान, दर्शन, दान.....

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ११ - १ ग. (मनु.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न ५५ : शुक्लध्यान में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : शुक्लध्यान में ७ गुणस्थान होते हैं -

(१) अपूर्वकरण. (२) अनिवृत्तिकरण (३) सूक्ष्मसाम्पराय (४) उपशांतकषाय (५) क्षीणकषाय (६) सयोगकेवलीजिन (७) अयोगकेवलीजिन

इनमें भाव, गुणस्थानों के समान ही जानना चाहिए।

प्रश्न ५६ : इनकी निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनकी निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में केवल एक गुणस्थान होता है-

सयोगकेवली जिन

इनके समुद्घात अवस्था की अपेक्षा निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था होती है।

इनके पर्याप्त और निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था, दोनों में १४-१४ भाव ही होते हैं।

प्रश्न ५७ : धर्मध्यान एवं शुक्लध्यान का फल क्या है?

उत्तर : मोह का सर्वोपशम करना धर्मध्यान का फल है, क्योंकि कषाय सहित धर्मध्यानी के सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान के अन्तिम समय में मोहनीय कर्म की सर्वोपशामना देखी जाती है।

तीन घातिया कर्मों का क्षय करना एकत्ववितर्क अवीचार ध्यान का फल है। किन्तु मोहनीय का विनाश करना धर्मध्यान का ही फल है, क्योंकि १०वें गुणस्थान के अन्तिम समय में उसका विनाश देखा जाता है। **(ध.१३/८१)**

चारित्र भावना के बल से जो ध्यान में लीन है उसके नूतन कर्मों का ग्रहण नहीं होता है, पुराने कर्मों की निर्जरा होती है और शुभ कर्मों का आस्रव होता है। अथवा जैसे मेघपटल पवन से ताड़ित होकर क्षणमात्र में विलीन हो जाते हैं वैसे ही (धर्म्य) ध्यान रूपी पवन से उपहत होकर कर्ममेघ भी विलीन हो जाते हैं। **(ध.१३/६८,७७)** ध्यान (धर्म) का फल संवर और निर्जरा है। **(पं.का.ता. १७३)**

औदारिक, तैजस और कार्मण इन तीन शरीरों का बन्ध नाश करने के लिए वे अयोगिकेवली भगवान समुच्छिन्न क्रिया निवृत्ति नामक चौथा ध्यान ध्याते हैं। **(भ.आ.मू. १८८३)**

तीसरे शुक्लध्यान से सयोगिकेवली भगवान सूक्ष्मकाययोग का निरोध करते हैं। **(भ.आ. १८८१)**

दूसरे शुक्लध्यान से ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्म का घात करके केवलज्ञानी केवलदर्शनी, केवलवीर्यधारी तथा दान लाभ आदि विघ्न से रहित होते हैं। **(ध.१३/८०)**

प्रश्न ५८ : धर्म एवं शुक्लध्यान किसके होते हैं?

उत्तर : आचार्य अकलंकदेव, पूज्यपाद स्वामी, उमास्वामी, शुभचन्द्र स्वामी, विद्यानन्दी महाराज आदि ने चौथे से सातवें गुणस्थान तक चारों धर्म ध्यान माने हैं।

आचार्य वीरसेनस्वामी ने चौथे गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक धर्मध्यान माना है।

चारों धर्मध्यान असंयत सम्यग्दृष्टि, देशविरत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती जीवों के होते है। (**सर्वा. ९/३६-३७)**

असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण तथा सूक्ष्मसाम्पराय संयत जीवों के धर्मध्यान की प्रवृत्ति होती है। ऐसा जिनदेव का उपदेश है। **(ध.१३/७४)**

सम्यक्त्व के प्रभाव से असंयत, संयतासंयत तथा प्रमत्तसंयत जनों में भी धर्मध्यान होना इष्ट है। **(रा.वा.९/३६)**

पहला शुक्लध्यान ग्यारहवें, दूसरा शुक्लध्यान बारहवें, तीसरा शुक्लध्यान तेरहवें तथा चौथा शुक्ल ध्यान चौदहवें गुणस्थान में होता है। **(भ.आ.वि. १८८२-८५)**

ग्यारहवें गुण. में पहला एवं दूसरा शुक्लध्यान होता है तथा बारहवें गुणस्थान में भी पहला एवं दूसरा शुक्लध्यान होता है। **(चा.सा.ध. १३/८१)**

प्रथम शुक्ल ध्यान उपशम श्रेणी की विवक्षा में ८वें, ९वें, १०वें एवं ११वें गुणस्थान में होता है तथा क्षपक श्रेणी की विवक्षा में ८वें, ९वें तथा १०वें गुणस्थान में होता है। **(द्र.सं. ४८ टी.)**

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **कितने क्षायिक भावों में चारों ध्यानों के उत्तर भेद होते हैं?**

(अ) १ (ब) २

(स) ९ (द) कोई नहीं

(ii) **क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में कितने ध्यान होते हैं?**

(अ) ८ (ब) १६

(स) १२ (द) कोई नहीं

(iii) **कितने ध्यानों में औदयिक भाव के सभी उत्तर भेद होते हैं?**

(अ) १२ (ब) ८

(स) ४ (द) ५

(iv) **कितने ध्यान क्षायिक भावों में ही होते हैं?**

(अ) २ (ब) ४

(स) १ (द) कोई नहीं

(v) **आर्त्तरौद्र ध्यान कितने औदयिक भावों में होते हैं?**

(अ) १८ (ब) २१

(स) १५ (द) २०

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) क्रोध रूप भाव में कितने ध्यान होते हैं?

(ii) पुरुषलिङ्ग रूप भाव में कितने ध्यान नहीं हो सकते हैं?

(iii) अभव्यत्व भाव में कितने ध्यानों के उत्तर भेद होते हैं?

(iv) क्षायोपशमिक अज्ञान रूप भाव में कितने स्थान होते हैं?

(v) १६ ध्यान कितने भावों में होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) ८ ध्यान भव्यत्व-अभव्यत्व दोनों भावों में होते हैं।

(ii) धर्म-ध्यान केवल क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में ही होते हैं।

(iii) देवगति रूप भाव में भी आर्त्त-रौद्र ध्यान हो सकते हैं।

(iv) संयमासंयम रूप भाव में १२ ध्यान रूप स्थान होता है।

(v) औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में चारों ध्यानों के उत्तर भेद होते हैं।

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए -

(i) ८ ध्यान रूप स्थान में .... औपशमिक के .... क्षायिक भाव के उत्तर भेद होते हैं।

(ii) उपशम सम्यक्त्व रूप भाव में .... आर्त्त .... रौद्र .... धर्मध्यान होते हैं।

(iii) अभव्यत्व भाव में .... धर्म ध्यान .... शुक्ल ध्यान नहीं होते हैं।

(iv) ४ धर्मध्यानों में .... गति रूप .... कषाय रूप तथा .... लेश्या रूप भाव होते हैं।

(v) क्षायोपशमिक चारित्र रूप भाव में .... आर्त्त .... धर्मध्यान होते हैं।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		ब
(i)	क्षायोपशमिक चारित्र रूप भाव	-	१२ ध्यान
(ii)	क्षायिक ज्ञान रूप भाव	-	मन:पर्ययज्ञान रूप भाव
(iii)	१२ ध्यान रूप स्थान	-	३ मिथ्याज्ञान रूप भाव
(iv)	प्रथमोपशम सम्यक्त्व रूप भाव	-	२ शुक्ल ध्यान
(v)	अभव्यत्व भाव	-	औपशमिक चारित्र रूप भाव
(vi)	९ ध्यान	-	७ ध्यान
(vii)	८ ध्यान	-	चौथा-पाँचवाँ गुणस्थान
(viii)	मात्र २ शुक्ल ध्यान	-	८ ध्यान

- उत्तरमाला -

१. (i) अ (ii) स (iii) ब (iv) द (v) ब

२. (i) १३ (ii) ३ (iii) २ (iv) १ (v) ५

३. (i) हाँ (ii) ना (iii) हाँ (iv) हाँ (v) हाँ

४. (i) ०,० (ii) ४, ४, ४ (iii) चारों, चारों (iv) ४, ४, ६ (v) ३, ४

५. (i) ७ ध्यान (ii) २ शुक्लध्यान (iii) चौथा पाँचवाँ गुणस्थान
(iv) १२ ध्यान (v) ८ ध्यान (vi) मन:पर्ययज्ञान रूप भाव
(vii) ३ मिथ्याज्ञान रूप (viii) औपशमिक चारित्र रूप भाव

आस्रव के प्रत्यय

प्रश्न १ : आस्रव किसे कहते हैं?

उत्तर : आस्रव नाम आने का है और शरीर नामकर्म के उदय से मन वचन और काय से युक्त जीव की जो शक्ति कर्मों के आगमन में कारण है, उसे योग कहते हैं। अत: योग आस्रव का कारण है। योग के निमित्त से ही कर्मों का आस्रव होता है। इसलिए योग को ही आस्रव कहा है। **(का.अ. ८८ टी.)**

मोहनीय कर्म के उदय से जीव के जो अनेक प्रकार के मिथ्यात्व आदि परिणाम होते हैं, उन्हें आस्रव जानो। **(का.अ. ८९)**

आस्रव के इन कारणों को आस्रव के प्रत्यय कहते हैं।

प्रश्न २ : आस्रव के प्रत्यय कितने हैं?

उत्तर : आस्रव के मूल में ४ प्रत्यय होते हैं-

१. मिथ्यात्व २. असंयम ३. कषाय और ४. योग। **(पं.सं. ४/७७)**

अथवा आस्रव के मूल में ५ प्रत्यय भी होते हैं।

१. मिथ्यात्व २. अविरति ३. प्रमाद ४. कषाय ५. योग **(वृ.द्र.सं.३०)**

आस्रव के उत्तर प्रत्यय ५७ होते हैं -

५ मिथ्यात्व १२ अविरति २५ कषाय १५ योग

प्रश्न ३ : ५ मिथ्यात्व कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर : (१) विपरीत (२) एकान्त (३) विनय (४) संशय (५) अज्ञान

विपरीत मिथ्यात्व - वस्तु का जैसा स्वरूप है उससे विपरीत श्रद्धान करना विपरीत मिथ्यात्व है, जैसे हिंसा में धर्म मानना, सग्रन्थवेष में मोक्ष मानना आदि।

एकान्तमिथ्यात्व - वस्तु अनेक धर्मात्मक है परन्तु उसे एक धर्म रूप ही श्रद्धान करना एकान्त मिथ्यादर्शन है। जैसे - वस्तु नित्य ही है, या वस्तु अनित्य ही है आदि।

विनयमिथ्यात्व - देव-अदेव, तत्त्व-अतत्त्व का विवेक न रखकर सबको एक सा मानना तथा सबकी भक्ति करना वैनयिक मिथ्यात्व है।

संशयमिथ्यात्व - सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान तथा सम्यक्चारित्र मोक्ष का मार्ग है या नहीं? अहिंसा में धर्म है या हिंसा में? इस प्रकार सन्देह रूप श्रद्धान करना संशय मिथ्यादर्शन है।

अज्ञानमिथ्यात्व - हित-अहित की परीक्षा रहित अज्ञानमूलक रूढ़िवश श्रद्धान करना अज्ञानमिथ्यात्व है। **(हरि.पु. ५८/१९५)**

प्रश्न ४ : अविरति किसे कहते हैं एवं उसके कितने भेद होते हैं?

उत्तर : पाँच पापों से तथा इन्द्रिय विषयों से विरक्त नहीं होना, त्याग नहीं करना अविरति है। अप्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय से असंयम (अविरति) भाव होता है। **(आचा.सा.११/१०६)** अविरति के १२ भेद हैं -

(१) पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा का त्याग नहीं करना (२) जलकायिक जीवों की हिंसा का त्याग नहीं करना (३) अग्निकायिक जीवों की हिंसा का त्याग नहीं करना (४) वायुकायिक जीवों की हिंसा का त्याग नहीं करना (५) वनस्पति कायिक जीवों की हिंसा का त्याग नहीं करना (६) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा पञ्चेन्द्रिय जीवों की हिंसा का त्याग नहीं करना अर्थात् मैं इन जीवों की विराधना नहीं करूँगा इस प्रकार का संकल्प नहीं लेना, ये छह अविरति हैं, इसे प्राणी-असंयम भी कहा जाता है। (७) स्पर्शन इन्द्रिय के विषय-भोग का त्याग नहीं करना (८) रसना इन्द्रिय के विषय-भोग का त्याग नहीं करना (९) घ्राण इन्द्रिय के विषय-भोग का त्याग नहीं करना (१०) चक्षु इन्द्रिय के विषय-भोग का त्याग नहीं करना (११) कर्ण इन्द्रिय के विषय-भोग का त्याग नहीं करना (१२) मन को वश में नहीं करना।

अर्थात् पञ्चेन्द्रिय और मन के विषयों में आसक्त रहना अथवा मैं पञ्चेन्द्रिय और मन को जीतूंगा, इसप्रकार संकल्प नहीं करना, ये छह प्रकार की अविरति हैं, इन्हें इन्द्रियासंयम भी कहते हैं।

प्रश्न ५ : कषाय किसे कहते हैं एवं उसके कितने भेद होते हैं?

उत्तर : जो आत्मा को दुर्गतियों में ले जाकर कष्ट दें, उन्हें कषाय कहते हैं। अथवा - जैसे-वटवृक्ष वगैरह का कसैला रस साफ वस्तु को भी काला कर देता है, वैसे ही जो निर्मल आत्मा को मलिन करने में कारण हो उसे कसैले रस के समान होने से कषाय कहते हैं। **(य.ति.चं. ८९२)**

कषाय के चार भेद हैं - क्रोध, मान, माया, लोभ।

क्रोध - अपनी या दूसरों की गलती से अपना या दूसरों का अनिष्ट होना या अनिष्ट करना अथवा बुरे भावों का उत्पन्न होना क्रोध है।

मान - विद्या, ज्ञान एवं ऐश्वर्य वगैरह के घमंड में आकर पूज्य पुरुषों का आदर-सत्कार नहीं करना अथवा युक्ति देने पर भी अपने दुराग्रह को नहीं छोड़ना मान है।

माया - दूसरों को ठगने के अभिप्राय से अथवा ख्याति, आदर-सत्कार या धनलाभ आदि के अभिप्राय से मन, वचन और काय की मिथ्याप्रवृत्ति करना माया है।

लोभ - चेतन स्त्री-पुत्रादिक में और अचेतन जमीन-जायदाद आदि में 'यह मेरे हैं'

इस प्रकार की जो अत्यन्त आसक्ति होती है अथवा इन वस्तुओं की वृद्धि होने पर जो महान् संतोष या इनकी हानि होने पर जो महान् असन्तोष होता है वह लोभ है।

ये चारों ही चार-चार प्रकार के होते हैं -

अनन्तानुबन्धी क्रोधमानमायालोभ	- जो सम्यग्दर्शन का घात करती है वह अनन्तानुबन्धी कषाय है।
अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमानमायालोभ	- जो सम्यग्दर्शन को तो नहीं घातती है किन्तु देशव्रत को घातती है उन्हें अप्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं।
प्रत्याख्यानावरण क्रो. मा. मा. लो.	- जो न तो सम्यग्दर्शन को रोकती है, न देशचारित्र को रोकती है किन्तु संयम को रोकती है उसे प्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं।
संज्वलन क्रो. मा. मा. लो.	- जो केवल यथाख्यात चारित्र को नहीं होने देती हैं उन्हें संज्वलन कषाय कहते हैं। **(य.ति.च. ८९२-९४)**

ये सोलह एवं नौ नोकषाय मिलकर २५ कषायें होती हैं।

नोकषाय	- क्रोधादि कषायों के बल से जो काम करती है वे नोकषाये है। इनके नौ भेद हैं -
हास्य कषाय	- जिसके उदय से हँसी आती है वह हास्य है।
रति कषाय	- जिसके उदय से जीव विषयों में आसक्त होकर रमता है वह रति है।
अरति कषाय	- जिसके उदय से सुख के कारण मिलने पर भी मन नहीं लगता है वह अरति है।
शोक कषाय	- जिसके उदय से विषाद उत्पन्न होता है वह शोक है।
भय कषाय	- जिसके उदय से भय (उद्वेग) उत्पन्न होता है वह भय है।
जुगुप्सा कषाय	- जिसके उदय से ग्लानि उत्पन्न होती है वह जुगुप्सा है।
स्त्री वेद	- जिसके उदय से पुरुष में रमने की भावना होती है वह स्त्री वेद है।
पुरुष वेद	- जिसके उदय से स्त्री में रमने की भावना होती है वह पुरुषवेद है।
नपुंसक वेद	- जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों में रमने की भावना होती है वह नपुंसक वेद है।

प्रश्न ६ : योग किसे कहते हैं एवं उसके कितने भेद हैं?

उत्तर: आत्मप्रदेशों के संकोच और विस्तार को योग कहते हैं। **(ध.१/१४१)** कर्मों के ग्रहण करने में कारणभूत आत्मा का जो प्रयत्न है, वह योग है। यह योग शरीर नामक पाप कर्म के उदय से आत्मप्रदेशों के परिस्पन्द रूप होता है। **(आचारसार ११/ ९९)** योग के १५ भेद हैं- ४ मनोयोग ४ वचनयोग ७ काययोग।

इनके लक्षणादि के लिए देखें योगमार्गणा।

कर्म विवक्षा

क्र.	प्रत्यय	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विशेष
१.	५ मिथ्यात्व	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
२.	१२ अविरति	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	
			अविरतिसम्य.	औप.क्षा.क्षायो.	तिर्यञ्चगति में भोगभूमि की अपेक्षा क्षायिकभाव होता है।
३.	११ अविरति	उदय	संयमासंयम	क्षायोपशमिक	
४.	३ कषाय	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन सम्य.	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्या.	क्षायोपशमिक	
			असंयतसम्य.	औप.क्षा.क्षायो.	
			संयमासंयम	क्षायोपशमिक	तिर्यञ्च एवं मनुष्यगति में होता है।
			प्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
			अप्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
			अपूर्वकरण	औप.क्षा.	क्षपक श्रेणी में क्षायिक भाव होता है।
			अनिवृत्तिकरण	औप.क्षा.	
५.	लोभ	उदय	उपर्युक्त ९ गुण. तथा	पूर्ववत्	
			सूक्ष्मसाम्पराय	औप. क्षा.	उपशम श्रेणी में औपशमिक भाव होता है।
६.	योग	उदय	योगमार्गणा के समान १३ गुणस्थान		
७.	प्रत्ययातीत (आस्रवातीत)	क्षय	अयोगकेवली.	क्षायिक	इसमें एक भी प्रत्यय नहीं होता है।

नोट - २५ कषाय का विशेष-देखें कषायमार्गणा

प्रश्न ७ : कषाय प्रत्यय में होने वाले कितने गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : कषाय प्रत्यय में होने वाले ४ गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं -

अप्रत्याख्यानावरण आदि तीन चौकड़ी कषाय - सम्यग्मिथ्यात्व गुण.

प्रत्याख्यानावरण कषाय - संयमासंयम गुण.

संज्वलन कषाय - संयमासंयम, प्रमत्त-अप्रमत्त संयत गुण.

हास्यादि नौ नोकषाय में चारों गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं।

नोट - अनंतानुबंधी कषाय का कोई भी गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप नहीं होता है।

प्रश्न ८ : किस कषाय रूप प्रत्यय का कौनसा गुणस्थान किस भाव रूप होता है?

उत्तर : सामान्य से सभी कषाय रूप प्रत्ययों के ....

अनन्तानुबन्धीचतुष्क	- २ गुणस्थान	- पहला - औदयिक, दूसरा - पारिणामिक
अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क	- ४ गुणस्थान	- २ गु. पूर्ववत्
	सम्यग्मिथ्यात्व	- क्षायोपशमिक
	अविरतसम्यक्त्व	- औप.क्षा.क्षायो.
प्रत्याख्यानावरण चतुष्क	- ५ गुणस्थान	- ४ गुण. पूर्ववत्
	संयमासंयम	- क्षायोपशमिक
संज्वलन त्रिक	- ९ गुणस्थान	- ५ गुणस्थान पूर्ववत्
	प्रमत्तसंयत	- क्षायोपशमिक
	अप्रमत्तसंयत	- क्षायोपशमिक
	अपूर्वकरण	- औप.क्षायिक
	अनिवृत्तिकरण	- औप.क्षायिक
संज्वलन लोभ	- १० गुणस्थान	- ९ गुणस्थान पूर्ववत्
	सूक्ष्मसाम्पराय	- औप.क्षायिक
हास्यादि छह नोकषाय	- ८ गुणस्थान	- पूर्ववत् भाव
३ वेद नोकषाय	- ९ गुणस्थान	- पूर्ववत् भाव

प्रश्न ९ : कितनी कषाय रूप प्रत्यय के गुणस्थान दो भाव रूप भी होते हैं?

उत्तर : १३ कषाय रूप प्रत्यय के गुणस्थान दो भाव रूप भी होते हैं -

३ संज्वलन कषाय के २ - आठवाँ, नवाँ

संज्वलन लोभ के ३ - आठवाँ, नवाँ, दसवाँ

हास्यादि छह का १ - आठवाँ

३ वेद के २ - आठवाँ, नवाँ

ये गुणस्थान औपशमिक एवं क्षायिक भाव रूप होते हैं।

प्रश्न १० : किस कषाय रूप प्रत्यय का कौनसा गुणस्थान केवल एक भाव रूप होता है?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी कषाय रूप प्रत्यय के दोनों गुणस्थान - पहला - औदयिक दूसरा-पारिणामिक

अप्रत्याख्यानावरण के तीन गुणस्थान - पहला-औद. दूसरा-पारि. तीसरा-क्षायोपशमिक

प्रत्याख्यानावरण के चार गुणस्थान पहला - औदयिक, दूसरा - पारिणामिक, तीसरा-पाँचवाँ - क्षायोपशमिक

संज्वलन चतुष्क के छह गुणस्थान - पहला - औदयिक, दूसरा - पारिणामिक, तीसरा पाँचवाँ छठा सातवाँ - क्षायोपशमिक

हास्यादि नौ नोकषाय-छह गुणस्थान - पहला - औदयिक दूसरा - पारिणामिक तीसरा पाँचवाँ छठा सातवाँ - क्षायोपशमिक

प्रश्न ११ : किस प्रत्यय का कौनसा गुणस्थान केवल क्षायिक भाव रूप होता है?

उत्तर : योग प्रत्यय का बारहवाँ एवं तेरहवाँ गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होता है। अर्थात् २ मनोयोग (असत्य-उभय) २ वचनयोग (असत्य-उभय) का बारहवाँ गुणस्थान, सत्य-अनुभय मनोयोग, सत्य-अनुभय वचनयोग, औदारिक काययोग का बारहवाँ-तेरहवाँ गुणस्थान तथा औदारिकमिश्र एवं कार्मण काययोग का केवल तेरहवाँ गुणस्थान क्षायिक भाव रूप होता है।

नोट - क्षपक श्रेणी की अपेक्षा ४ मनोयोग, ४ वचनयोग, औदारिक काययोग का आठवाँ, नवाँ, दसवाँ गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप होता है। १३ कषायों (४ संज्वलन तथा नौ नोकषाय) में भी यथायोग्य जानना चाहिए। अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क एवं १२ अविरति रूप प्रत्यय में क्षायिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा चौथा गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप ही होता है।

प्रश्न १२ : कितने प्रत्ययों के गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप नहीं होते हैं?

उत्तर : ९ प्रत्ययों के गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप नहीं होते हैं -

५ मिथ्यात्व - विपरीत, एकान्त, विनय, संशय, अज्ञान।

४ कषाय - अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ।

प्रश्न १३ : कितने प्रत्ययों के चार गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : २२ प्रत्ययों के चार गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं -

संज्वलन चतुष्क - क्रोध मान माया लोभ

९ नोकषाय - हास्य-रति, अरति-शोक, भय-जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद

९ योग - ४ मनोयोग ४ वचनयोग १ औदारिक काययोग

इनमें तीसरा, पाँचवाँ, छठा, सातवाँ गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं। इनका चौथा गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप भी होता है।

प्रश्न १४ : कौनसे प्रत्यय किस कर्म के उदय से होते हैं?

उत्तर:

प्रत्यय	**कर्म**
५ मिथ्यात्व	- मिथ्यात्व के उदय से
१२ अविरति	- चारित्रमोहनीय कर्म के उदय से
२५ कषाय	- स्वकीय कषाय के उदय से अर्थात् अनन्तानुबन्धी के उदय से अनन्तानुबन्धी कषाय....।
योग	- शरीर नाम कर्म के उदय से

योग को छोड़कर शेष कारण मोहनीय कर्म के उदय से होते हैं और मोहनीय कर्म का उदय दसवें गुणस्थान तक रहता है। दसवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म की उदय-व्युच्छित्ति हो जाने से ग्यारहवें आदि गुणस्थानों में योग के द्वारा केवल एक सातावेदनीय का ही बन्ध होता है। **(का.अ. ८९ टी.)**

दसवें गुणस्थान तक योग मोहनीयकर्म के उदय सहित होता है। किन्तु उसके आगे ग्यारहवें, बारहवें और तेरहवें गुणस्थान में जो योग रहता है, वह मोहनीय कर्म के उदय से रहित होता है। **(का.अ. ८८ टी.)**

स्थान - विवरण

प्रश्न १५ : आस्रव प्रत्ययों में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर: आस्रव प्रत्ययों में १९ स्थान होते हैं -

(१) ५७ प्रत्यय रूप स्थान (२) ५५ प्रत्यय रूप स्थान (३) ५३ प्रत्यय रूप स्थान (४) ५२ प्रत्यय रूप स्थान (५) ५१ प्रत्यय रूप स्थान (६) ५० प्रत्यय रूप स्थान (७) ४८ प्रत्यय रूप स्थान (८) ४६ प्रत्यय रूप स्थान (९) ४५ प्रत्यय रूप स्थान (१०) ४३ प्रत्यय रूप स्थान (११) ३७ प्रत्यय रूप स्थान (१२) २४ प्रत्यय रूप स्थान

(१३) २२ प्रत्यय रूप स्थान (१४) २० प्रत्यय रूप स्थान (१५) १६ प्रत्यय रूप स्थान (१६) १० प्रत्यय रूप स्थान (१७) ९ प्रत्यय रूप स्थान (१८) ७ प्रत्यय रूप स्थान (१९) आस्रवातीत।

प्रश्न १६ : इन स्थानों में किन-किन प्रत्ययों को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर: इन स्थानों में प्रत्यय -

१) ५७ प्रत्यय रूप स्थान में - ५ मि. १२ अवि. २५ क. १५ यो.

२) ५५ प्रत्यय रूप स्थान में - ५ मि. १२ अवि. २५ क. १३ यो. (आहारकद्विक बिना)

३) ५३ प्रत्यय रूप स्थान में - ५ मि. १२ अवि. २५ क. ११ यो.

४) ५२ प्रत्यय रूप स्थान में - ५ मि. १२ अवि. २४ क. ११ यो.

५) ५१ प्रत्यय रूप स्थान में - ५ मि. १२ अवि. २३ क. ११ यो.

६) ५० प्रत्यय रूप स्थान में - १२ अवि. २५ क. १३ यो.

७) ४८ प्रत्यय रूप स्थान में - १२ अवि. २१ क. १५ यो.

८) ४६ प्रत्यय रूप स्थान में - १२ अवि. २१ क. १३ यो.

९) ४५ प्रत्यय रूप स्थान में - १२ अवि. २१ क. १२ यो. (औदारिकमिश्र एवं आहारकद्विक बिना)

१०) ४३ प्रत्यय रूप स्थान में - १२ अवि. २१ क. १० यो. (४ म. ४ व. २ का.)

११) ३७ प्रत्यय रूप स्थान में - ११ अवि. १७ क. ९ यो.

१२) २४ प्रत्यय रूप स्थान में - १३ क. ११ यो.

१३) २२ प्रत्यय रूप स्थान में - १३ क. ९ यो.

१४) २० प्रत्यय रूप स्थान में - ११ क. ९ यो.

१५) १६ प्रत्यय रूप स्थान में - ७ क. ९ यो.

१६) १० प्रत्यय रूप स्थान में - १ क. ९ यो.

१७) ९ प्रत्यय रूप स्थान में - ९ यो. (४ म. ४ व. १ का.)

१८) ७ प्रत्यय रूप स्थान में - २ म. २ व. ३ का.

१९) आस्रवातीत स्थान में - आस्रव के प्रत्यय नहीं होते हैं।

नोट - १) यद्यपि ५७, ४८, ४५ तथा २० प्रत्यय रूप स्थान के किसी गुणस्थान एवं किसी गति वाले स्वामी नहीं हैं लेकिन इनमें भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं इसलिए इनका यहाँ ग्रहण किया है।

२) ५०, ४६, ४३, १६, १०, ९ तथा आस्रवातीत स्थान में कोई भाव नहीं पाया जाता है लेकिन इनके गुणस्थानवर्ती जीव स्वामी होते हैं इसलिए इनका यहाँ ग्रहण किया है।

प्रश्न १७ : इन स्थानों के स्वामी कौन होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

५५ प्रत्यय रूप स्थान - मनुष्यगति के जीव, मिथ्यात्व गुणस्थानवर्ती जीव
५३ प्रत्यय रूप स्थान - तिर्यञ्च गति के जीव
५२ प्रत्यय रूप स्थान - देवगति के जीव
५१ प्रत्यय रूप स्थान - नरकगति के जीव
५० प्रत्यय रूप स्थान - सासादन गुणस्थानवर्ती जीव
४६ प्रत्यय रूप स्थान - चतुर्थ गुणस्थानवर्ती जीव
४३ प्रत्यय रूप स्थान के - तृतीय गुणस्थानवर्ती जीव
३७ प्रत्यय रूप स्थान के - पंचमगुणस्थानवर्ती जीव
२४ प्रत्यय रूप स्थान के - प्रमत्तसंयतगुणस्थानवर्ती जीव
२२ प्रत्यय रूप स्थान के - अप्रमत्तसंयत-अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीव
१६ प्रत्यय रूप स्थान के - अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती जीव
१० प्रत्यय रूप स्थान के - सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती जीव
९ प्रत्यय रूप स्थान के - उपशान्तकषाय क्षीणकषाय गुण.
७ प्रत्यय रूप स्थान के - सयोगकेवली जिन
आस्रवातीत स्थान के - चौदहवें गुणस्थानवर्ती एवं सिद्ध भगवान **(पं.सं.४/८०-८५)**

शेष स्थानों के स्वामी -

५७ प्रत्यय रूप स्थान के - पंचेन्द्रिय त्रस आदि अथवा चक्षुदर्शनी आदि
४८ प्रत्यय रूप स्थान के - क्षायिक सम्यग्दृष्टि आदि
४५ प्रत्यय रूप स्थान के - औपशमिक सम्यग्दृष्टि
२० प्रत्यय रूप स्थान के - मन:पर्ययज्ञानी, परिहार विशुद्धि संयमी आदि।

प्रश्न १८ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

५७ प्रत्यय रूप स्थान में - १४

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.
औदयिक के ५ - १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शुभ)
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व
५५ प्रत्यय रूप स्थान में - १०
क्षायोपशमिक के २ - २ अज्ञा. (कुम. कुश्रु.)
औदयिक के ७ - १ ग. (म.) १ लि. (पु.) १ मि. १ असं. ३ ले. (अशु.)
पारिणामिक का १ - अभव्यत्व
५३ प्रत्यय रूप स्थान में - ३
औदयिक के - १ ग. (तिर्य.) २ लि. (स्त्री.नपु.)
५२ प्रत्यय रूप स्थान में - २
क्षायोपशमिक का १ - विभंगज्ञान
औदयिक का १ - देवगति
५१ प्रत्यय रूप स्थान में - १
औदयिक का १ - नरकगति
४८ प्रत्यय रूप स्थान में - ६
क्षायिक का १ - सम्यक्त्व
क्षायोपशमिक के ५ - ३ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ सम्य.
४५ प्रत्यय रूप स्थान में - ५
औपशमिक का १ - सम्यक्त्व
औदयिक के ४ - क्रो.मा.मा.लो.
३७ प्रत्यय रूप स्थान में - १
क्षायोपशमिक का - संयमासंयम
२४ प्रत्यय रूप स्थान में - २
क्षायिक का १ - चारित्र
क्षायोपशमिक का १ - चारित्र
२२ प्रत्यय रूप स्थान में - १
औपशमिक का १ - चारित्र

२० प्रत्यय रूप स्थान में - १

क्षायोपशमिक का १ - मन:पर्ययज्ञान

७ प्रत्यय रूप स्थान में - ७

क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दर्शन, क्षायिक दान, क्षायिक लाभ, क्षायिक भोग, क्षायिक उपभोग, क्षायिक वीर्य।

प्रश्न १९ : कितने स्थानों में क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ७ स्थानों में क्षायोपशमिक भाव के उत्तर भेद होते हैं -

(१) ५७ प्रत्यय रूप स्थान (२) ५५ प्रत्यय रूप स्थान (३) ५२ प्रत्यय रूप स्थान (४) ४८ प्रत्यय रूप स्थान (५) ३७ प्रत्यय रूप स्थान (६) २४ प्रत्यय रूप स्थान (७) २० प्रत्यय रूप स्थान

प्रश्न २० : कितने स्थानों में केवल क्षायिक भाव के ही उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान में मात्र क्षायिक भाव के ही उत्तर भेद होते हैं -

७ प्रत्यय रूप स्थान

प्रश्न २१ : कितने स्थान केवल मनुष्य गति में ही होते हैं?

उत्तर : ९ स्थान केवल मनुष्यगति में ही होते हैं -

(१) ५५ प्रत्यय रूप स्थान (२) २४ प्रत्यय रूप स्थान (३) २२ प्रत्यय रूप स्थान (४) २० प्रत्यय रूप स्थान (५) १६ प्रत्यय रूप स्थान (६) १० प्रत्यय रूप स्थान (७) ९ प्रत्यय रूप स्थान (८) ७ प्रत्यय रूप स्थान (९) आस्रवातीत स्थान

प्रश्न २२ : कितने स्थान के स्वामी किसी भी गुणस्थान वाले जीव नहीं होते हैं?

उत्तर : ७ स्थान के स्वामी किसी भी गुणस्थान वाले जीव नहीं होते हैं -

(१) ५७ प्रत्यय रूप स्थान (२) ५३ प्रत्यय रूप स्थान (३) ५२ प्रत्यय रूप स्थान (४) ५१ प्रत्यय रूप स्थान (५) ४८ प्रत्यय रूप स्थान (६) ४५ प्रत्यय रूप स्थान (७) २० प्रत्यय रूप स्थान

प्रश्न २३ : कितने स्थान केवल सम्यग्दृष्टि जीव के ही होते हैं?

उत्तर : ११ स्थान केवल सम्यग्दृष्टि जीव के ही होते हैं -

(१) ४८ प्रत्यय रूप (२) ४६ प्रत्यय रूप (३) ३७ प्रत्यय रूप (४) २४ प्रत्यय रूप (५) २२ प्रत्यय रूप (६) २० प्रत्यय रूप (७) १६ प्रत्यय रूप (८) १० प्रत्यय रूप (९) ९ प्रत्यय रूप (१०) ७ प्रत्यय रूप (११) आस्रवातीत।

नोट - १. सम्यग्दृष्टि चौथे से १४ वें गुणस्थान तक होते हैं इसलिए उपर्युक्त स्थानों का ग्रहण हो जायेगा।

२. ४५ प्रत्यय रूप स्थान असंज्ञी पंचेन्द्रिय के भी होता है इसलिए उनका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न २४ : कितने स्थान दो अपेक्षा से बनते हैं?

उत्तर : ५ स्थान दो अपेक्षा से बनते हैं -

१. ५५ प्रत्यय रूप स्थान -

(१) ५ मि. १२ अवि. २५ क. १३ योग - आहारकद्विक बिना (पहले गुण. में)

(२) ५ मि. १२ अवि. २५ क. १३ योग - वैक्रियिकद्विक बिना (मनुष्य गति की अपेक्षा)

२. ५२ प्रत्यय रूप स्थान -

(१) ५ मि. १२ अवि. २४ क. ११ योग (औदा.द्विक, आहा.द्विक बिना) देवगति की अपेक्षा

(२) ५ मि. १२ अवि. २५ क. १० योग (४ मनो., ४ व., औदा., वैक्रि. काय योग) विभंगज्ञान की अपेक्षा

३. ४३ प्रत्यय रूप स्थान -

(१) १२ अवि. २१ क. १० यो.-४ म. ४ व. औदा. वैक्रि. तीसरे गुणस्थान में

(२) १२ अवि. २० क. ११ यो.-४ म. ४ व. ३ काययोग - सम्यग्दृष्टि देवों के

४. २४ प्रत्यय रूप स्थान -

(१) १३ क. ११ यो.-४ म. ४ व. ३ का. (औदारिकद्विक, कार्म.) क्षायिक चारित्र में

(२) १३ क. ११ यो.-४ म. ४ व. ३ का. (औदा. आहारकद्विक)-छठे गुण. में

५. २२ प्रत्यय रूप स्थान -

(१) १३ क. ९ यो. - ४ म. ४ व. १ का. (औदा.) सातवें आठवें गुण. में

(२) ११ क. ११ यो. - ४ म. ४ व. ३ का. (औदा. आहारकद्विक)-आहारक द्विक काय योगी की अपेक्षा

तालिका संकेत -

१. तालिका में प्रत्येक भाव में होने वाले मूल प्रत्यय, उसके बाद भाव में होने वाले गुणस्थानों के प्रत्यय क्रमशः लिखे गये हैं।

२. जहाँ मूलप्रत्यय एवं गुणस्थान के प्रत्यय बराबर हैं वहाँ गुणस्थानों में ही क्रमशः प्रत्यय लगाना चाहिए। जैसे - कुमति-कुश्रुत ज्ञान में मूल में भी ५५ प्रत्यय हैं तथा पहले गुणस्थान में भी ५५ प्रत्यय हैं अतः यहाँ गुणस्थान क्रम से ही कथन करना चाहिए।

३. जहाँ एक ही संख्या को एक से अधिक बार लिखा गया है वहाँ जितनी बार अंक लिखा है क्रमश: उतने गुणस्थान तक उतने प्रत्यय लगाना चाहिए। जैसे - औपशमिक सम्यक्त्व में २२ का अंक तीन बार लिखा है। उसका अर्थ छठे, सातवें, आठवें गुणस्थान में २२-२२ प्रत्यय होते हैं। लेकिन प्रत्यय स्थान छह प्रकार के ही होने से संख्या लिखते समय उन्हें अलग नहीं गिना गया है।

४) तालिका में कुछ ऐसे प्रत्यय स्थान भी लिखे हैं जो स्थान विवरण में नहीं है लेकिन भाव विशेष में या भाव विशेष के किसी गुणस्थान में पाये जाते हैं इसलिए उनका यहाँ ग्रहण किया गया है जैसे - ३ ज्ञान रूप भाव में ४८ प्रत्यय रूप स्थान, मन:पर्ययज्ञान में नवें गुणस्थान की अपेक्षा १४ प्रत्यय रूप स्थान।

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	६	४५, ३७, २२, २२, २२, १६, १०, ९	९ प्रत्यय रूप स्थान ११वें गुण. की अपेक्षा होते हैं।
	चारित्र	४	२२, १६, १०, ९	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	१०	४८, ४६, ३७, २४, २२, २२ १६, १०, ९, ९, ७, आस्रवा.	
	चारित्र	७	२४, २२, १६, १०, ९, ७, आस्रवा.	२४ प्रत्यय रूप स्थान में १३ क. ९ योग को ग्रहण करना है।
	ज्ञानादि सात	२	७, आस्रवा.	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	८	४८, ४६, ३७, २४, २२, २२ १६, १०, ९, ९	
	मन:पर्ययज्ञान	४	२०, २०, २०, १४, १०, ९, ९	
	कुमति, कुश्रुतज्ञान	२	५५, ५०	
	विभंगज्ञान	२	५२, ४७	५ योग रूप प्रत्यय नहीं होते हैं।
	चक्षु-अचक्षुदर्शन	११	५७, ५५, ५०, ४३, ४६, ३७, २४ २२, २२, १६, १०, ९, ९	
	अवधिदर्शन	८	४८, ४६, ३७, २४, २२, २२ १६, १०, ९, ९	४८ प्रत्यय रूप स्थान मूल में होते हैं।
	५ लब्धि	११	चक्षु-अचक्षुदर्शनवत्	
	सम्यक्त्व	५	४८, ४६, ३७, २४, २२	
	चारित्र	२	२४, २२	
	संयमासंयम	१	३७ प्रत्यय रूप	मनुष्य एवं तिर्यंचों के समान प्रत्यय होते हैं।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	४	५१, ४४, ४०, ४२	
	तिर्यञ्चगति	५	५३, ४८, ४२, ४४, ३७	
	मनुष्यगति	१३	५५, ५३, ४८, ४२, ४४, ३७, २४ २२, २२, १६, १०, ९, ९, ७. आस्रवा.	आस्रवातीत स्थान मात्र १४वें गुण. की अपेक्षा होता है।
	देवगति	४	५२, ४७, ४१, ४३	
	३ कषाय	९	४५, ४३, ३८, ३४, ३७, ३१, २१ १९, १९, १३	३१ प्रत्यय रूप स्थान ५वें गुण. में होता है।
	लोभ	१०	४५, ४३, ३८, ३४, ३७, ३१, २१, १९ १९, १३, १०	१३ प्रत्यय रूप स्थान में १ क. ३ वेद और ९ योग ग्रहण करना चाहिए।

	स्त्रीलिङ्ग	६	५३, ४८, ४१, ४१, ३५, २०, २० २०, १४	४१ प्रत्यय रूप स्थान में १२ अवि. १९ क. और १० योग (४ मनो. ४ वचन. २ काय. औदा. वैक्रि.) लेना चाहिए।
	पुरुषलिङ्ग	९	५५, ५३, ४८, ४१, ४४, ३५, २२ २०, २०, १४	
	नपुंसकलिङ्ग	७	५३, ४७, ४१, ४३, ३५, २०, २० २०, १४	५ मिथ्या. एवं वैक्रि. मिश्र. कम करने पर ३रे गुण. के प्रत्यय बनते हैं।
	मिथ्यादर्शन	१	५५ प्रत्यय रूप	
	अज्ञान	११	चक्षु-अचक्षुदर्शन वत्	
	असंयत	४	५५, ५०, ४३, ४६	
	असिद्धत्व	१३	५७, ५५, ५०, ४३, ४६, ३७, २४ २२, २२, १६, १०, ९, ९, ७, आस्रवा.	५७ प्रत्यय रूप स्थान मूल में जानना चाहिए।
	२ अशुभ लेश्या	४	५५, ५०, ४३, ४५	४थे गुण. में वैक्रि. मिश्र. कम करना
	कापोत लेश्या	४	५५, ५०, ४३, ४६	चाहिए।
	पीत-पद्‌म लेश्या	८	५७, ५४, ४९, ४३, ४६, ३७, २४, २२	इसमें पहले दूसरे गुण. में औदा-मिश्र नहीं होता है।
	शुक्ल लेश्या	१२	५७, ५४, ४९, ४३, ४६, ३७, २४ २२, २२, १६, १०, ९,९,७	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	१३	असिद्धत्ववत्	
	भव्यत्व	१३	असिद्धत्ववत्	
	अभव्यत्व	१	५५ प्रत्यय रूप	

प्रश्न २५ : कितने भावों में आस्रव के १० प्रत्यय रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : २३ भावों में आस्रव के १० प्रत्यय रूप स्थान भी होता है -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र

क्षायोपशमिक के १२ - ४ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल.

औदयिक के ५ - १ ग. (म.) १ क. (लो.) १ अज्ञा. १ असि. १ ले. (शुक्ल)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न २६ : कितने भावों में २० प्रत्यय रूप स्थान भी हो सकता है?

उत्तर : ४ भावों में २० प्रत्यय रूप स्थान भी हो सकता है -

क्षायोपशमिक का १ - मन:पर्ययज्ञान

औदयिक के ३ - स्त्रीलिङ्ग पुरुषलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग

नोट - पुरुषलिङ्ग में ७वें ८वें गुणस्थान की अपेक्षा यह स्थान बन जाता है।

प्रश्न २७ : तीन लिङ्ग रूप भावों के गुणस्थानों में प्रत्ययस्थानों की विवेचना किस प्रकार करनी चाहिए?

उत्तर : तीन लिङ्ग रूप भावों के गुणस्थानों में प्रत्यय स्थानों की विवेचना -

स्त्रीलिङ्ग में - ५३ प्रत्यय रूप स्थान (आहारकद्विक एवं दो लिङ्ग बिना)

पहले गुणस्थान में ५३ - दूसरे में ५ मिथ्यात्व बिना - ४८

तीसरे गुणस्थान में ४१ - ४ अनन्तानुबन्धी तथा ३ योग बिना (वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र कार्मण.)

चौथे गुणस्थान में ४१ - १२ अवि. १९ क. १० यो.

पाँचवें गुणस्थान में - ३५ - ११ अवि. १५ क. ९ यो. (४ म. ४ व. १ का.)

छठे से आठवें गुणस्थान तक - २० - ११ क. ९ यो.

नवें में - १४ - ५ क. ९ योग

पुरुषलिङ्ग में ५५ प्रत्यय रूप स्थान - स्त्री एवं नपुंसकलिङ्ग बिना

पहले गुणस्थान में ५३ - आहारकद्विक बिना

दूसरे गुणस्थान में ४८ - आहारक द्विक एवं ५ मिथ्यात्व बिना

तीसरे गुणस्थान में ४१ - १२ अ. १९ क. १० यो.

चौथे गुणस्थान में ४४ - १२ अ. १९ क. १३ यो.

पाँचवें गुणस्थान में ३५ - ११ अ. १५ क. ९ यो.

छठे गुणस्थान में २२ - ११ क. ११ यो.

सातवें-आठवें गुणस्थान में २० - आहारकद्विक बिना

नवें गुणस्थान में १४ - ५ क. (४ क. १ वे.) ९ यो.

नपुंसकलिङ्ग - ५३ प्रत्यय रूप स्थान - आहारकद्विक स्त्री-पुरुषवेद बिना

पहले गुणस्थान में - ५३

दूसरे गुणस्थान में - ४७ - ५ मि. वैक्रियिकमिश्र बिना

तीसरे गुणस्थान में - ४१ - १२ अवि. १९ क. १० यो.

चौथे गुणस्थान में - ४३ - १२ अवि. १९ क. १२ यो. (आहारकद्विक एवं औदारिकमिश्र बिना)

पाँचवें गुणस्थान में - ३५ - ११ अवि. १५ क. ९ यो.

छठे - सातवें आठवें गुणस्थान में - २० - ११ क. ९ यो.

नवें गुणस्थान में - १४ - ५ क. ९ यो.

प्रश्न २८ : लेश्या रूप भावों में किस गति के किस गुणस्थान में कितने प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : लेश्या रूप भावों में होने वाली गति के गुणस्थानों में प्रत्यय -

कृष्ण नील लेश्या - नरकगति में क्रमशः - ५१, ४४, ४०, ४०

तिर्यञ्चगति में क्रमशः - ५३, ४८, ४२, ४२

मनुष्यगति में क्रमशः - ५३, ४८, ४२

चौथे गुणस्थान में ४४, सम्यग्दर्शन को लेकर नरकगति से आते समय एक अन्तर्मुहूर्त तक पूर्व लेश्या रहने से कृष्ण-नील लेश्या के साथ चौथे गुणस्थान में औदारिकमिश्र एवं कार्मण काययोग बन जाते हैं।

देवगति में क्रमशः - ४३, ३८ - यहाँ कृष्ण-नील लेश्या में पहला और दूसरा दो ही गुणस्थान होते हैं। इनमें निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था ही होने से ४ मनो. ४ वचनयोग तथा वैक्रियिक काययोग नहीं होगा। कार्मण काययोग में अशुभ लेश्याएँ होती हैं।

कापोत लेश्या में -

नरकगति में क्रमशः - ५१, ४४, ४०, ४२ (पहले नरक की अपेक्षा ४२ प्रत्यय होते हैं)

तिर्यञ्चगति में क्रमशः - ५३, ४८, ४२, ४४ (भोगभूमि की अपेक्षा औदा. मिश्र एवं कार्मण काययोग होते हैं।)

मनुष्यगति में क्रमशः - ५३, ४८, ४२, ४४

देवगति में क्रमशः - ४३, ३८

पीत-पद्म-शुक्ल लेश्या -

तिर्यञ्चगति में क्रमशः - ५१, ४६, ४२, ४२, ३७

मनुष्यगति में क्रमशः - ५१, ४६, ४२, ४४, ३७, २४, २२ शुक्ल लेश्या में होने वाले आठवें से तेरहवें गुणस्थान तक यथायोग्य प्रत्यय जानना चाहिए।

देवगति में क्रमशः - ५२, ४७, ४१, ४३

नोट - १) मनुष्य-तिर्यञ्चों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था के पहले-दूसरे गुणस्थान में पीतादि लेश्याओं के साथ औदारिकमिश्र एवं कार्मण काययोग नहीं होता है इसलिए इन दोनों गतियों के पहले-दूसरे गुणस्थान में क्रमशः ५१ एवं ४६ प्रत्यय कहे गये हैं।

२) नरकगति में शुभ लेश्याएँ नहीं होती हैं।

प्रश्न २९ : कितने भावों में ९ प्रत्यय रूप स्थान नहीं हो सकता है?

उत्तर : ३१ भावों में ९ प्रत्यय रूप स्थान नहीं हो सकता है -

क्षायिक के ७ - ज्ञान दर्शनादि

क्षायोपशमिक के ६ - ३ अज्ञा. १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के १७ - ३ ग. (मनु. बिना) ४ क. ३ लि. १ मि. १ असं. ५ ले. (शुक्लबिना)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न ३० : कितने भावों में केवल आठवें गुणस्थान की अपेक्षा २२ प्रत्यय रूप स्थान होता है?

उत्तर : २ भावों में केवल आठवें गुणस्थान की अपेक्षा २२ प्रत्यय रूप स्थान होता है-

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक का १ - चारित्र

प्रश्न ३१ : क्षायिक चारित्र रूप भाव में २४ प्रत्यय रूप स्थान किस प्रकार बनता है?

उत्तर : क्षायिक चारित्र रूप भाव में २४ प्रत्यय रूप स्थान की अपेक्षा -

१३ कषाय - ४ संज्वलन, ९ नोकषाय (आठवें गुण. में)

११ योग - ४ मनो. ४ वचन. ३ काय. (औदा.द्विक और कार्मणकाययोग)

नोट - औदारिक मिश्र. एवं कार्मण काययोग १३ वें गुणस्थान की अपेक्षा ग्रहण करना चाहिए।

प्रश्न ३२ : कषाय रूप भावों में ३१ प्रत्यय रूप स्थान में कौन से प्रत्यय ग्रहण करने चाहिए?

उत्तर : कषाय रूप भावों में ३१ प्रत्यय रूप स्थान में प्रत्यय -

क्रोध कषाय रूप भाव में-

११ अविरति - त्रस अविरति बिना

११ कषाय - २ क्रोध (प्रत्या., संज्व.) ९ नोक.

९ यो - ४ मनो. ४ वचन. १ काय. (औदा.)

इसी प्रकार मान, माया, लोभ में भी जानना चाहिए।

प्रश्न ३३ : कितने भावों में ५७ प्रत्यय रूप स्थान भी बनता है?

उत्तर : १४ भावों में ५७ प्रत्यय रूप स्थान भी बनता है -

क्षायोपशमिक के ७ - चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, ५ लब्धि

औदयिक के ५ - १ अज्ञान, १ असिद्धत्व, ३ लेश्या (शुभ)

पारिणामिक के २ -जीवत्व, भव्यत्व

भावों में प्रत्यय

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	४५	१२ अवि. २१ क. १२ यो.	आहारकद्विक एवं औदारिकमिश्र काययोग नहीं होता है।
	चारित्र	२२	१३ क. ९ यो.	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	४८	१२ अवि. २१ क. १५ यो.	अनन्तानुबन्धी चतुष्क नहीं है।
	चारित्र	२४	१३ क. ११ यो.	
	ज्ञानादि सात	७	७ योग	२ मनो. २ वचन. एवं ३ काययोग होते हैं।
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	४८	१२ अवि. २१ क. १५ यो.	
	मन:पर्ययज्ञान	२०	११ क. ९ यो.	४ मनो. ४ वच. औदारिककाययोग होता है।
	कुमति-कुश्रुत.	५५	५ मि. १२ अवि. २५ क. १३ यो.	
	विभंगज्ञान	५२	५ मि. १२ अवि. २५ क. १० यो.	
	चक्षु.अचक्षु.	५७	५ मि. १२ अवि. २५ क. १५ यो.	
	अवधिदर्शन	४८	१२ अवि. २१ क. १५ यो.	
	५ लब्धि	५७	५ मि. १२ अवि. २५ क. १५ यो.	
	सम्यक्त्व	४८	१२ अवि. २१ क. १५ यो.	
	चारित्र	२४	१३ क. ११ यो.	वैक्रियिकद्विक, औदारिकमिश्र एवं कार्मणकाययोग नहीं होता है।
	संयमासंयम	३७	११ अवि. १७ क. ९ यो.	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	५१	५ मि. १२ अवि. २३ क. ११ यो.	औदारिकद्विक एवं आहारकद्विक योग नहीं है।
	तिर्यञ्चगति	५३	५ मि. १२ अवि. २५ क.११ यो.	
	मनुष्यगति	५५	५ मि. १२ अवि. २५ क.१३ यो.	वैक्रियिकद्विक योग नहीं होता है।
	देवगति	५२	५ मि. १२ अवि. २४ क.११ यो.	
	४ कषाय	४५	५ मि. १२ अवि. १३ क.१५ यो.	९ नोकषाय एवं ४ क्रो.या ४ मा.....
	स्त्रीलिङ्ग	५३	५ मि. १२ अवि. २३ क.१३ यो.	पुरुष एवं नपुंसक लिङ्ग नहीं होता है।
	पुरुषलिङ्ग	५५	५ मि. १२ अवि. २३ क.१५ यो.	
	नपुंसकलिङ्ग	५३	५ मि. १२ अवि. २३ क.१३ यो.	आहारकद्विक योग नहीं होता है।
	मिथ्यादर्शन	५५	५ मि. १२ अवि. २५ क.१३ यो.	
	अज्ञान	५७	५ मि. १२ अवि. २५ क.१५ यो.	
	असंयत	५५	५ मि. १२ अवि. २५ क.१३ यो.	
	असिद्धत्व	५७	५ मि. १२ अवि. २५ क.१५ यो.	

	३ अशुभ लेश्या	५५	५ मि. १२ अवि. २५ क.१३ यो.	आहारकद्विक योग नहीं होता है।
	पीत-पद्म लेश्या	५७	५ मि. १२ अवि. २५ क.१५ यो.	
	शुक्ललेश्या	५७	५ मि. १२ अवि. २५ क.१५ यो.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	५७	५ मि. १२ अवि. २५ क.१५ यो.	
	भव्यत्व	५७	५ मि. १२ अवि. २५ क.१५ यो.	
	अभव्यत्व	५५	५ मि. १२ अवि. २५ क.१३ यो.	आहारकद्विक काय योग नहीं है।

प्रश्न ३४ : कितने भावों में आस्रव के ५७ प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : १४ भावों में आस्रव के ५७ प्रत्यय होते हैं -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के ५ - १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न ३५ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में ५ मिथ्यात्व रूप प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : २ भावों के सभी उत्तर भेदों में ५ मिथ्यात्व रूप प्रत्यय होते हैं -

(१) औदयिक (२) पारिणामिक

प्रश्न ३६ : कितने भावों में १३ योग रूप प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : ११ भावों में १३ योग रूप प्रत्यय होते हैं -

क्षायोपशमिक के २ - कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान

औदयिक के ८ - १ ग. (म.) २ लि. (स्त्री.नपुं.) १ मि. १ असं. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न ३७ : कितने भावों में अविरति रूप आस्रव के प्रत्यय नहीं होते हैं?

उत्तर : ११ भावों में अविरति रूप आस्रव के प्रत्यय नहीं होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना

क्षायोपशमिक के २ - १ ज्ञा. (मनः.) १ चारि.

नोट - संयमासंयम में त्रस की अविरति रूप आस्रव का प्रत्यय नहीं होता है।

प्रश्न ३८ : कितने भावों में २ लिङ्ग रूप आस्रव के प्रत्यय नहीं होते हैं -

उत्तर : ५ भावों में २ लिङ्ग रूप आस्रव के प्रत्यय नहीं होते हैं -

क्षायोपशमिक का १ - मन:पर्ययज्ञान - स्त्री. एवं नपुंसक लिंग नहीं है।

औदयिक के ४ - १ ग. (नर.) - स्त्री. पुरुष लिङ्ग नहीं हैं।
स्त्रीलिङ्ग - पुरुष एवं नपुंसक लिङ्ग नहीं हैं।
पुरुषलिङ्ग - स्त्री एवं नपुंसक लिङ्ग नहीं हैं।
नपुंसक लिङ्ग - पुरुष एवं स्त्री लिङ्ग नहीं हैं।

नोट - क्षायिक के ज्ञानदर्शन आदि ७ भावों में एक भी लिङ्ग रूप प्रत्यय नहीं होता है।

प्रश्न ३९ : कितने भावों में आस्रव के ११ योग रूप प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : ५ भावों में आस्रव के ११ योग रूप प्रत्यय होते हैं -

क्षायिक का १ - चारित्र - ४ मनो. ४ वच. ३ काय. (औदारिकद्विक और कार्मण)

क्षायोपशमिक का १ - चारित्र - ४ म. ४ वच. ३ काय (आहारकद्विक, औदारिककाययोग)

औदयिक के ३ - नरकगति - देवगति - ४ म. ४ व. ३ काय. (वैक्रियिकद्विक कार्मण) तिर्यञ्चगति - ४ म. ४ व. ३ काय (औदारिकद्विक कार्मण)

प्रश्न ४० : आस्रव के कितने प्रत्यय क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में, मिथ्यात्व रूप भाव में तथा सभी क्षायिक भावों में भी होते हैं?

उत्तर : आस्रव के मात्र ७ प्रत्यय क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप, मिथ्यात्व रूप तथा क्षायिक भावों में भी होते हैं -

२ मनोयोग - सत्य एवं अनुभय
२ वचनयोग - सत्य एवं अनुभय
३ काययोग - औदारिक-औदारिकमिश्र-कार्मण

प्रश्न ४१ : कितने प्रत्यय भावों के सभी उत्तर भेदों में होते हैं?

उत्तर : केवल ४ प्रत्यय भावों के सभी उत्तर भेदों में होते हैं -

२ मनोयोग - सत्य एवं अनुभय
२ वचनयोग - सत्य एवं अनुभय

प्रश्न ४२ : कितने भावों में ५ मिथ्यात्व रूप प्रत्यय नहीं होते हैं?

उत्तर : १९ भावों में ५ मिथ्यात्व रूप प्रत्यय नहीं होते हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र
क्षायिक के ९ - ज्ञान-दर्शनादि
क्षायोपशमिक के ८ - ४ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ सम्य. १ चा. १ संय.

प्रश्न ४३ : कितने भावों में मूल प्रत्ययों में से दो प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : ४ भावों में मूल प्रत्ययों में से दो प्रत्यय होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के २ - १ ज्ञा (मनः.) १ चारित्र

नोट - इनमें कषाय और योग रूप दो प्रत्यय होते हैं।

प्रश्न ४४ : कितने भावों में सभी गतियों में बराबर प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : ३ भावों में सभी गतियों में बराबर प्रत्यय होते हैं -

संयमासंयम - ३७ - मनुष्य एवं तिर्यंचगति में

स्त्रीलिंग - ५१ - मनुष्य एवं तिर्यंचगति में।

(वैक्रि. द्विक, आहा. द्विक एवं २ वेद बिना)

देवगति में - (औदा.द्विक, आहा.द्विक एवं २ वेद बिना)

नपुंसक लिंग - ५१ - नरकगति में (औदा.द्विक, आहा.द्विक एवं २ वेद बिना)

तिर्यंच एवं मनुष्यगति में - (वैक्रिद्विक. आहा. द्विक एवं २ वेद बिना)

प्रश्न ४५ : आस्रव के प्रत्ययों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : आस्रव के प्रत्ययों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में गुणस्थान -

५ मिथ्यात्व में	- पहला
१२ अविरति में	- पहला, दूसरा, चौथा
अनन्तानुबन्धी चतुष्क में	- पहला, दूसरा
अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क में	- पहला, दूसरा, चौथा
प्रत्याख्यानावरण चतुष्क में	- पहला, दूसरा, चौथा
संज्वलन चतुष्क में	- पहला, दूसरा, चौथा, छठा
हास्यादि ७ में	- पहला, दूसरा, चौथा, छठा
स्त्रीवेद में	- पहला, दूसरा
नपुंसक में	- पहला, दूसरा, चौथा
औदारिकमिश्र काययोग में	- पहला, दूसरा, चौथा, तेरहवाँ
वैक्रियिकमिश्र काययोग में	- पहला, दूसरा, चौथा
आहारकमिश्र काययोग में	- छठा

शेष योगों में निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था नहीं होती है।

नोट - कषाय मार्गणा में कषायों की मुख्यता से कथन किया गया था इसलिए वहाँ अप्रत्याख्यानावरण आदि कषायों में पहला आदि गुणस्थान नहीं कहा गया था। यहाँ प्रत्ययों का प्रकरण होने से पहले गुणस्थान से ही सभी कषायों को ग्रहण किया गया है।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ४६ : कितने प्रत्यय स्थान मिथ्यादर्शन रूप भाव के साथ बन सकते हैं?

उत्तर : ४ प्रत्यय स्थान मिथ्यादर्शन रूप भाव के साथ बन सकते हैं -

(१) ५५ प्रत्यय रूप स्थान (२) ५३ प्रत्यय रूप स्थान

(३) ५२ प्रत्यय रूप स्थान (४) ५१ प्रत्यय रूप स्थान

नोट - ५७ प्रत्यय रूप स्थान में भी पाँच मिथ्यात्व रूप प्रत्यय होते हैं लेकिन उनमें आहारकद्विक काययोग भी होते हैं जो छठे गुणस्थानवर्ती मुनिराज के ही होते हैं। इसलिए उन्हें मिथ्यादर्शन रूप भाव के साथ नहीं कहा जा सकता है।

प्रश्न ४७ : किस भाव में होने वाले कौनसे प्रत्यय केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : वे भाव एवं प्रत्यय जो केवल एक गुणस्थान की अपेक्षा होते हैं -

औपशमिक के - सम्यक्त्व में ८ प्रत्यय - १ अविरति ४ कषाय (अप्रत्याख्यानावरण) ३ योग (वैक्रियिकद्विक, कार्मण) - ये प्रत्यय केवल चौथे गुणस्थान की अपेक्षा होते हैं।

चारित्र में ६ प्रत्यय - हास्य - रति, अरति - शोक, भय - जुगुप्सा - आठवें गुणस्थान की अपेक्षा

क्षायिक के ९ -

सम्यक्त्व में ९ प्रत्यय - इनमें से १ अवि. त्रस सम्बन्धी ४ क. २ वैक्रि.द्विक चौथे गुण. की अपेक्षा

आहारकद्विक (२ प्रत्यय)-छठे गुण. की अपेक्षा

चारित्र में ८ प्रत्यय - इनमें से हास्यादि छह - आठवें गुणस्थान की अपेक्षा

औदा. मिश्र. कार्मणकाययोग - तेरहवें गुण. की अपेक्षा

ज्ञानादि सात - ७ प्रत्यय (२ मनो. २ वच. ३ का.)-तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा

क्षायोपशमिक के १७ -

३ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ सम्य. में ११ प्रत्यय. - इनमें से १ अवि. ४ कषा. ४ यो. (औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक, कार्मण) चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

आहारकद्विक - छठे गुणस्थान की अपेक्षा

३ अज्ञा. में - ५ मिथ्यात्व - पहले गुणस्थान की अपेक्षा

२ दर्श. ५ ल. में ७ प्रत्यय - इनमें से ५ मिथ्यात्व-पहले गुण. की अपेक्षा

आहारकद्विक - छठे गुणस्थान की अपेक्षा

चारित्र २ प्रत्यय आहारकद्विक - छठे गुणस्थान की अपेक्षा

संयमासंयम में ३७ प्रत्यय-१७ क. ११ अवि. ९ यो.-पाँचवें गुण. की अपेक्षा

औदयिक के - २१ भाव ५ मिथ्यात्व - पहले गुणस्थान की अपेक्षा

१ ग (म.) ४ क. १ लि. (पुरु.) १ अज्ञा. १ असि. ३ शुभ लेश्या - आहारकद्विक-छठे गुण. की अपेक्षा

२ लेश्या - पीत-पद्म - औदारिकमिश्र - चौथे गुणस्थान की अपेक्षा

मिथ्यादर्शन - ५५ प्रत्यय - पहले गुणस्थान की अपेक्षा

पारिणामिक के -

जीवत्व भव्यत्व - ५ मिथ्यात्व पहले गुणस्थान की अपेक्षा

आहारकद्विक - छठे गुणस्थान की अपेक्षा

अभव्यत्व - ५५ प्रत्यय - पहले गुणस्थान की अपेक्षा

प्रश्न ४८ : कितने भावों में कौनसे प्रत्यय चारों गति की अपेक्षा होते हैं?

उत्तर : वे भाव एवं प्रत्यय जो चारों गतियों की अपेक्षा होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व, इसमें होने वाले १२ अवि. १८ कषाय (४ अनन्ता. ३ वेद. बिना) ८ योग (४ मनो. ४ वच.) = ३८ प्रत्यय

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व, इसमें कार्मण काययोग और होता है अत: = ३९ प्रत्यय

क्षायोपशमिक के १५- ३ ज्ञा. १ दर्श. (अव.) १ सम्य., इनमें १२ अवि. १८ कषाय ९ यो.= ३९ प्रत्यय

२ अज्ञा. (कुम. कुश्रु.) २ दर्श. (च.अच.) ५ ल., इनमें ५ मि. १२ अवि. २२ कषा. (३ वेद बिना) ९ योग = ४८

विभंगज्ञान - ५ मि. १२ अवि. २२ कषा. ८ यो. = ४७

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. - ५ मि. १२ अवि.२२ कषा. ९ यो. = ४८ तीन अशुभ लेश्या में ४ मनो. ४ व.योग बिना ४० प्रत्यय होते हैं।

पारिणामिक के - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व - ५ मि. १२ अवि. २२ क. ९ यो. - ४८

प्रश्न ४९ : १२ अविरति रूप प्रत्यय में कितने भाव होते हैं?

उत्तर : १२ अविरति रूप प्रत्यय में ४१ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के २१ - ४ गति ४ क. ३ लि.........

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ५० : आस्रव के किस प्रत्यय के किस गुणस्थान में तीन भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : आस्रव के उन प्रत्ययों के वे गुणस्थान जिनमें तीन भाव के उत्तर भेद होते हैं -

५ मिथ्यात्व - पहला गुणस्थान - क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक

१२ अविरति - पहला, दूसरा, तीसरा गुण. क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक

अनन्तानुबन्धीचतुष्क - पहला, दूसरा गुण. क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक

२१ कषाय - पहला, दूसरा, तीसरा गुण. क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक

सत्य एवं अनुभय मन वचन योग - पहला दूसरा तीसरा गुण. क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक तेरहवाँ गुणस्थान - क्षायिक औदयिक पारिणामिक

असत्य एवं उभय मन-वचन योग - पहला दूसरा तीसरा गुणस्थान क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक

औदारिककाययोग - पहला, दूसरा, तीसरा क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक - तेरहवाँ गुणस्थान - क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक

औदारिकमिश्र एवं कार्मणकाययोग - पहला, दूसरा - क्षायो. औदयिक पारिणामिक तेरहवाँ गुणस्थान - क्षायिक औदयिक पारिणामिक

वैक्रियिककाययोग - पहला, दूसरा, तीसरा गुण.-क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक

वैक्रियिकमिश्र काययोग - पहला, दूसरा, गुण.-क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक

नोट - यदि क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि को स्वामी बनाते हैं तो चौथे पाँचवें छठे सातवें गुणस्थान में भी क्षायो. औद. पारि., ये तीन भाव ही होते हैं।

प्रश्न ५१ : कितने प्रत्ययों में पाँचों भावों के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ४५ प्रत्ययों में पाँचों भावों के उत्तर भेद होते हैं -

१२ अविरति - षट्काय के जीवों की रक्षा नहीं करना, ५ इन्द्रिय और मन को वश में नहीं करना

२१ कषाय - अनन्तानुबन्धी चतुष्क बिना

१२ योग - ४ म. ४ व. औदारिक. वैक्रियिकद्विक, कार्मण.

प्रश्न ५२ : किस प्रत्यय का कौनसा भाव आहारक अवस्था में ही होता है?

उत्तर : वे प्रत्यय एवं उनके वे भाव जो आहारक अवस्था में ही होते हैं।

५ मिथ्यात्व रूप प्रत्यय में होने वाला १ - विभंगज्ञान

१२ अविरति में होने वाला १ - विभंगज्ञान

त्रस अविरति से रहित ११ अविरति में होने वाला १ - संयामासंयम

अनन्तानुबन्धी एवं अप्रत्या. चतुष्क में होने वाला १ - विभंगज्ञान

प्रत्याख्यानावरण चतुष्क में होने वाला २ - विभंगज्ञान, संयमासंयम

संज्वलन चतुष्क में होने वाले ६ - औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक का १ - चारित्र

क्षायोपशमिक के ४ - १ ज्ञा. (मनः.) १ अज्ञा. (विभं.) १ चा. १ संय.

हास्यादि कषायों में भी इसी प्रकार (संज्वलन चतुष्क के समान) जानना चाहिए। १४ योगों में होने वाले सभी भाव आहारक अवस्था में ही होते हैं।

नोट - सभी कषायें पहले गुणस्थान से होती हैं इसलिए अप्रत्याख्यानावरण एवं प्रत्याख्यानावरण कषाय में विभंगज्ञान को तथा संज्वलन चतुष्क में विभंगज्ञान एवं संयमासंयम को भी ग्रहण किया है।

प्रश्न ५३ : किस भाव के किस उत्तर भेद में आस्रव के २४ प्रत्यय हो सकते हैं?

उत्तर : उन भावों के उत्तर भेद जिसमें आस्रव के २४ प्रत्यय हो सकते हैं -

क्षायिक के २ - सम्यक्त्व और चारित्र

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञान, ३ दर्शन, ५ लब्धि १ सम्य. १ चा.

औदयिक के १० - १ गति ४ कषाय १ अज्ञान १ असि. ३ लेश्या (शुभ)

पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

भावों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था एवं उनके गुणस्थानों में प्रत्यय

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	पहला	दूसरा	चौथा	छठा	तेरहवाँ
१.	**औपशमिक**							
	सम्यक्त्व	६२	१२ अवि. १९ क. १यो. (वै.मिश्र)	-	-	३२	-	-
२.	**क्षायिक**							
	सम्यक्त्व	३५	१२ अवि. २० क. ३ मिश्रयोग	-	-	३४	१२	१
	ज्ञानादि आठ	१	औदारिकमिश्रयोग	-	-	-	-	१
३.	**क्षायोपशमिक**							
	३ ज्ञान	३५	१२ अवि. २० क. ३ मिश्रयोग	-	-	३४	१२	-
	कुमति-कुश्रुत.	४४	५ मि. १२ अवि. २५ क. २ मिश्र.	४४	३९	-	-	-
	चक्षु-अचक्षु.	४५	५ मि. १२ अवि. २५ क. ३ मिश्र.	४४	३९	३४	१२	-
	अवधिदर्शन	३५	१२ अवि. २० क. ३ मिश्रयोग	-	-	३४	१२	-
	५ लब्धि	४५	५ मि. १२ अवि. २५ क. ३ मिश्र.	४४	३९	३४	१२	-
	सम्यक्त्व	३५	१२ अवि. २० क. ३ मिश्रयोग	-	-	३४	१२	-
	चारित्र	१२	११ क. १ आहारक मिश्रयोग	-	-	-	१२	-
४.	**औदयिक**							
	नरकगति	४१	५ मि. १२ अवि. २३ क. १ वै. मिश्र.	४१	-	३२	-	-
	तिर्यञ्चगति	४३	५ मि. १२ अवि. २५ क. १ औ.मिश्र.	४३	३८	३२	-	-
	मनुष्यगति	४४	५ मि. १२ अवि. २५ क. २ मिश्र.	४३	३८	३२	१२	१
	देवगति	४२	५ मि. १२ अवि. २४ क. १ मिश्र.	४२	३७	३२	-	-
	४ कषाय	३३	५ मि. १२ अवि. १३ क. ३ मिश्र.	३२	२७	२५	९	-
	स्त्रीलिङ्ग	४२	५ मि. १२ अवि. २३ क. २ मिश्र.	४२	३७	-	-	-
	पुरुषलिङ्ग	४३	५ मि. १२ अवि. २३ क. ३ मिश्र.	४२	३७	३३	१२	-
	नपुंसक लिङ्ग	४२	५ मि. १२ अवि. २३ क. २ मिश्र.	४२	३६	३२	-	-
	मिथ्यादर्शन	४४	५ मि. १२ अवि. २५ क. २ मिश्र.	४४	-	-	-	-
	अज्ञान	४५	५ मि. १२ अवि. २५ क. ३ मिश्र.	४४	३९	३४	१२	-
	असंयत	४४	५ मि. १२ अवि. २५ क. २ मिश्र.	४४	३९	३४	-	-
	असिद्धत्व	४५	५ मि. १२ अवि. २५ क. ३ मिश्र.	४४	३९	३४	१२	१
	कृष्ण-नीललेश्या	४४	५ मि. १२ अवि. २५ क. २ मिश्र.	४४	३९	३२	-	-
	कापोतलेश्या	४४	५ मि. १२ अवि. २५ क. २ मिश्र.	४४	३९	३४	-	-
	पीत लेश्या	४४	५ मि. १२ अवि. २४ क. ३ मिश्र.	४२	३७	३३	१२	-
	पद्म लेश्या	४३	५ मि. १२ अवि. २३ क. ३ मिश्र.	४१	३६	३३	१२	-
	शुक्ल लेश्या	४३	५ मि. १२ अवि. २३ क. ३ मिश्र.	४१	३६	३३	१२	१
५.	**पारिणामिक**							
	जीवत्व	४५	५ मि. १२ अवि. २५ क. ३ मिश्र.	४४	३९	३४	१२	१
	भव्यत्व	४५	५ मि. १२ अवि. २५ क. ३ मिश्र.	४४	३९	३४	१२	१
	अभव्यत्व	४४	५ मि. १२ अवि. २५ क. २ मिश्र.	४४	-	-	-	-

नोट - १. जहाँ (चौथे गुणस्थान में) २० कषाय रूप प्रत्यय कहे हैं वहाँ अनन्तानुबन्धी चतुष्क एवं स्त्री वेद को कम करना चाहिए।

२. कषाय रूप भाव में ४ को. या ४ मान. आदि तथा ९ नोकषाय ग्रहण करना चाहिए।

३. कार्मण काययोग अनाहारक अवस्था में होता है निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में नहीं, इसलिए उसका यहाँ ग्रहण नहीं किया है।

प्रश्न ५४ : लेश्या रूप भावों की निर्वृत्य. अवस्था में तथा उसमें होने वाले किस गुणस्थान में आस्रव के कितने प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : लेश्या रूप भावों की निर्वृ. अवस्था में तथा उसमें होने वाले गुणस्थानों में आस्रव के प्रत्यय -

कृष्ण - नील लेश्या के मूल में ४४ प्रत्यय -

प्रथम गुणस्थान में ४४ - ५ मि. १२ अवि. २५ क. २ यो. (औ.मि., वै.मि.)

दूसरे गुणस्थान में ३९ - १२ अवि. २५ क. २ योग

चौथे गुणस्थान में ३२ - १२ अवि. १९ क. (अन. स्त्री. नपुं. बिना) १ यो. (औ.मि.)

कापोत लेश्या में ४४ प्रत्यय -

प्रथम गुणस्थान में ४४ - ५ मि. १२ अवि. २५ क. २ यो.

दूसरे गुणस्थान में ३९ - ५ मिथ्यात्व बिना

चौथे गुणस्थान में ३४ - १२ अवि. २० क. (अन. स्त्री वेद बिना) २ यो. (औ.मि., वै.मि.)

पीत लेश्या में ४४ प्रत्यय -

प्रथम गुणस्थान में ४२ - ५ मि. १२ अवि. २४ क. (नपुं. वेद बिना) १ यो. (वै.मि.)

दूसरे गुणस्थान में ३७ - १२ अवि. २४ क. १ यो. (वै.मि.)
इन दोनों गुणस्थानों में स्त्रीवेद देवों की अपेक्षा ही होता है।

चौथे गुणस्थान में ३३ - १२ अवि. १९ क. २ यो.

छठे गुणस्थान में १२ - ११ क. १ यो. (आ.मि.)

पद्मलेश्या में ४३ प्रत्यय -

प्रथम गुणस्थान में ४१ - ५ मि. १२ अवि. २३ क. (स्त्री. नपुं. बिना) १ यो. (वै.मि.)

दूसरे गुणस्थान में ३६ - ५ मिथ्यात्व बिना

चौथे गुणस्थान में ३३ - १२ अवि. १९ क. २ यो. (औ.मि.वै.मि.)

छठे गुणस्थान में १२ - ११ क. १ यो. (आ.मि.)

शुक्ल लेश्या में - पद्म लेश्या के समान ही गुणस्थान एवं प्रत्यय जानना चाहिए। विशेष यह है कि इसमें तेरहवाँ गुण. भी होता है। उसमें १ औदारिकमिश्र काययोग रूप प्रत्यय होता है।

प्रश्न ५५ : तिर्यञ्चगति रूप भाव की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था के किस गुणस्थान में कितने प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : तिर्यञ्चगति रूप भाव की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था के गुणस्थानों में प्रत्यय -

मूल के ४३ प्रत्ययों में से -

प्रथम गुणस्थान में ४३ - ५ मि. १२ अवि. २५ क. १ यो. (औ.मि.)

दूसरे गुणस्थान में ३८ - ५ मिथ्यात्व बिना

चौथे गुणस्थान में ३२ - १२ अवि. १९ क. (अन. २ वेद बिना) १ यो. (औ.मि.)

प्रश्न ५६ : नपुंसक लिङ्ग की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था के किस गुणस्थान में कितने प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : नपुंसक लिङ्ग की निर्वृ. के गुणस्थानों में प्रत्यय -

मूल के ४२ प्रत्ययों में से -

प्रथम गुणस्थान में ४२ - ५ मि. १२ अवि. २३ क. (२ वेद बिना) २ यो. (औ.मि.वै.मि.)

दूसरे गुणस्थान में ३६ - ५ मिथ्यात्व एवं वैक्रियिकमिश्र काययोग कम करना चाहिए, क्योंकि दूसरे गुणस्थान को लेकर जीव नरकगति में नहीं जाता। देवगति में जाने पर वैक्रियिक मिश्र योग बनता है लेकिन वहाँ नपुंसकवेद नहीं होता है।

चौथे गुणस्थान में ३२ - यहाँ दूसरे गुणस्थान के ३६ प्रत्ययों में से चार अनन्तानुबन्धी कषाय तथा औदारिकमिश्र काययोग कम करके वैक्रियिकमिश्र काययोग मिला देना चाहिए, क्योंकि सम्यग्दृष्टि के औदारिकमिश्रकाय योग के साथ नपुंसक वेद नहीं होता है।

गति रूप भावों में आस्रव के प्रत्यय

क्र.	भाव	विवरण				विशेष
		नरक.	तिर्यञ्च.	मनुष्य.	देव.	
१.	**औपशमिक**					
	सम्यक्त्व	४०	४२	४२	४३	देवगति में वैक्रियिकमिश्र एवं कार्मण काययोग भी होते हैं।
	चारित्र	-	-	२२	-	
२.	**क्षायिक**					
	सम्यक्त्व	४२	४२	४६	४२	
	चारित्र	-	-	२४	-	
	ज्ञानादि सात	-	-	७	-	
३.	**क्षायोपशमिक**					
	३ ज्ञान	४२	४४	४६	४३	तिर्यञ्च एवं मनुष्यगति में तीनों वेद होते हैं।
	मन:पर्ययज्ञान	-	-	२०	-	
	कुमति.कुश्रु.	५१	५३	५३	५२	
	विभंगज्ञान	४९	५१	५१	५०	कार्मण एवं मिश्र योग कम करना चाहिए।
	चक्षु.अचक्षु.	५१	५३	५५	५२	
	अवधिदर्शन	४२	४४	४६	४३	
	५ लब्धि	५१	५३	५५	५२	
	सम्यक्त्व	४२	४४	४६	४३	देवगति में १२ अवि. २० क. तथा ११ योग होते हैं।
	चारित्र	-	-	२४	-	
	संयमासंयम	-	३७	३७	-	
४.	**औदयिक**					
	नरकगति	५१	-	-	-	
	तिर्यञ्चगति	-	५३	-	-	कर्म भूमि की अपेक्षा ५३ प्रत्यय होते हैं।
	मनुष्यगति	-	-	५५	-	
	देवगति	-	-	-	५२	
	४ कषाय	३९	४१	४३	४०	
	स्त्रीलिङ्ग	-	५१	५१	५१	
	पुरुषलिङ्ग	-	५१	५३	५१	दो वेद कम हो जाने से मनुष्यगति में ५३ प्रत्यय होते हैं।
	नपुंसकलिङ्ग	५१	५१	५१	-	

	मिथ्यादर्शन	५१	५३	५३	५२	
	अज्ञान	५१	५३	५५	५२	
	असंयत	५१	५३	५३	५२	
	असिद्धत्व	५१	५३	५५	५२	
	३ अशुभलेश्या	५१	५३	५३	४३	देवों के अशुभ लेश्या में ४ म. ४ व. एवं वैकि. काययोग नहीं होते हैं।
	३ शुभ लेश्या	-	५१	५५	५२	तिर्यंचों के औदा. मिश्र. एवं कार्मणकाय योग नहीं है।
५.	**पारिणामिक**					
	जीवत्व	५१	५३	५५	५२	
	भव्यत्व	५१	५३	५५	५२	
	अभव्यत्व	५१	५३	५३	५२	मनुष्यगति में वैक्रियिकद्विक एवं आहारकद्विक योग नहीं हैं।

प्रश्न ५७ : गति रूप भावों में क्षायिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के आस्रवों में क्या अन्तर है?

उत्तर : गति रूप भावों में क्षायिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के आस्रवों में अन्तर - नरकगति के आस्रवों में कोई अन्तर नहीं है।

तिर्यञ्चगति में क्षायिक सम्यक्त्व में १ पुरुष वेद ही होता है क्योंकि क्षायिक सम्यग्दृष्टि (तिर्यञ्च मनुष्य) पुरुष वेद में ही उत्पन्न होता है और क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में तीनों वेद होते हैं, क्योंकि क्षयोपशम सम्यक्त्व तिर्यञ्चों में भी अर्थात् तीनों वेद वालों के उत्पन्न हो सकता है।

मनुष्यगति में कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि तीनों वेद वालों के क्षायिक सम्यक्त्व भी उत्पन्न हो सकता है।

देवगति में क्षायिक सम्यक्त्व में १ पुरुषवेद ही होता है क्योंकि क्षायिक सम्यग्दृष्टि पुरुषवेद में ही उत्पन्न होता है और क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में दोनों वेद होते हैं, क्योंकि देवांगनाओं के भी क्षायोपशमिक सम्यक्त्व उत्पन्न हो सकता है।

प्रश्न ५८ : देवगति वालों के अशुभलेश्या के साथ ४३ प्रत्यय किस अपेक्षा कहे गये हैं?

उत्तर : देवगति वालों के अशुभ लेश्या के साथ ४ मनोयोग ४ वचनयोग तथा वैक्रियिक काययोग नहीं होते हैं, क्योंकि देवों के अशुभलेश्याएँ निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था तक ही होती हैं वहाँ उपर्युक्त नौ योग नहीं होते हैं इसलिए उनके ५२ में से ९ प्रत्यय कम किये गये हैं।

प्रश्न ५९ : औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में मनुष्य एवं देवगति के आस्रवों में क्या विशेषता है?

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में मनुष्य एवं देवगति के आस्रवों में विशेषता -

मनुष्यगति में - ५ मि., ४ कषाय तथा ६ योग (आहा. द्विक, औदा. मिश्र., कार्मण. और वैक्रि द्विक.) नहीं होते हैं। और

देवगति में - ५ मि. ४ कषाय, ४ योग (आहा. द्विक, औदा. द्विक) नहीं होते हैं।

प्रश्न ६० : किस-किस गति में क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ मिश्र योग कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा ही होते हैं?

उत्तर : दो गतियों में क्षायोपशमिक-सम्यक्त्व के साथ मिश्र योग कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा.....

नरकगति - वैक्रियिक मिश्र काययोग

तिर्यंच गति - औदारिक मिश्र काययोग

मनुष्य एवं देवगति में कृतकृत्य वेदक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व दोनों की अपेक्षा मिश्र काययोग हो सकते हैं।

नोट - १. क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ मनुष्य गति में देव एवं नरकगति से आते समय तथा देवगति में तिर्यंच और मनुष्यगति से जाते समय मिश्र योग बनते हैं।

२. मनुष्य गति में क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ आहारक मिश्र काययोग भी बनता है।

प्रश्न ६१ : तिर्यंच गति में शुभ लेश्या रूप भावों के साथ आस्रव के कितने प्रत्यय होते हैं?

उत्तर : तिर्यंच गति में शुभ लेश्या रूप भावों के साथ आस्रव के ५१ प्रत्यय होते हैं। ५ मि., १२ अवि., २५ कषाय, ९ योग (४ मनो., ४ वचन., १ औदारिक काययोग)

नोट - शुभ लेश्याओं के साथ तिर्यंचों में किसी भी गुणस्थान में औदारिक मिश्र. एवं कार्मण काययोग रूप प्रत्यय नहीं होता है।

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **आस्रव के ७ प्रत्यय रूप स्थान में कितने क्षायिक भाव होते हैं?**

(अ) ९ (ब) ७
(स) २ (द) ५

(ii) **अभव्यत्व भाव में आस्रव के कितने प्रत्यय होते हैं?**

(अ) ५७ (ब) ५५
(स) ५१ (द) ५२

(iii) **औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव में योग सम्बन्धी १२ प्रत्यय किस गुणस्थान में होते हैं?**

(अ) चौथे (ब) ग्यारहवें
(स) ७ वें (द) कोई नहीं

(iv) **तिर्यञ्चगति रूप भाव में कितने स्थान होते हैं?**

(अ) ५ (ब) १३
(स) ७ (द) १

(v) **असंयत रूप भाव में अविरति सम्बन्धी कितने प्रत्यय होते हैं?**

(अ) ० (ब) ११
(स) १२ (द) ५

२. **एक शब्द में उत्तर दीजिए -**

(i) शुक्ल लेश्या रूप भाव में मिथ्यात्व सम्बन्धी कितने प्रत्यय होते हैं?
(ii) आस्रव के १० प्रत्यय किस कषाय रूप भाव में होते हैं?
(iii) ५१ प्रत्यय किस गति रूप भाव में होते हैं?
(iv) २० प्रत्यय किस भाव में होते हैं?
(v) ७ प्रत्यय में कितने क्षायिक भाव हो सकते हैं?

३. **हाँ या ना में उत्तर दीजिए -**

(i) औपशमिक चारित्र रूप भाव में ९ प्रत्यय का स्थान भी होता है।
(ii) आहारकद्विक काययोग के साथ अवधिज्ञान में २० प्रत्यय होते हैं।
(iii) संयमासंयम रूप भाव में आस्रव के ३७ प्रत्यय होते हैं।
(iv) कुमति ज्ञान रूप भाव में कम-से-कम अविरति सम्बन्धी १२ प्रत्यय होते हैं।
(v) ५० प्रत्यय चारों गति रूप भावों में होते हैं।

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) २४ प्रत्यय रूप स्थान में .... कषाय एवं .... योग सम्बन्धी प्रत्यय होते हैं।

(ii) क्षायो. सम्यक्त्व रूप भाव में .... मिथ्यात्व एवं .... अविरति रूप प्रत्यय होते हैं।

(iii) असिद्धत्व भाव में .... अविरति .... कषाय .... योग रूप प्रत्यय होते हैं।

(iv) क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में .... मनोयोग .... वचनयोग.................. काययोग रूप प्रत्यय होते हैं।

(v) .... क्षायो. तथा .... औदयिक भाव में ५७ प्रत्यय होते हैं।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		ब
(i)	५७ प्रत्यय	-	३७ प्रत्यय
(ii)	२२ प्रत्यय	-	१३ भाव
(iii)	५२ प्रत्यय	-	औपशमिक चारित्र रूप भाव
(iv)	क्षायिकज्ञान रूप भाव	-	५१ प्रत्यय
(v)	पुरुषलिङ्ग रूप भाव	-	३ शुभ लेश्या रूप भाव
(vi)	नरकगति रूप भाव	-	७ प्रत्यय
(vii)	संयमासंयम रूप भाव	-	एकगति रूप भाव
(viii)	आस्रवातीत स्थान	-	१५ योग रूप प्रत्यय

- उत्तरमाला -

१. (i) ब (ii) ब (iii) अ (iv) अ (v) स

२. (i) ५ (ii) लोभ (iii) नरकगति (iv) मन:पर्ययज्ञान (v) ९

३. (i) हाँ (ii) ना (iii) हाँ (iv) ना (v) ना

४. (i) १३, ११ (ii) ०, १२ (iii) १२,२५,१५ (iv) ४, ४, ७ (v) ७, ५

५. (i) ३ शुभ लेश्या रूप भाव (ii) औपशमिक चारित्र रूप भाव
(iii) एक गति रूप भाव (iv) ७ प्रत्यय (v) १५ योग रूप प्रत्यय
(vi) ५१ प्रत्यय (vii) ३७ प्रत्यय (viii) १३ भाव

जाति

प्रश्न १ : जाति किसे कहते हैं?

उत्तर : यहाँ योनि को जाति नाम से कहा गया है।

योनि अर्थात् मिश्र रूप होना है। जिसमें जीव औदारिकादि नोकर्म वर्गणारूप पुद्‌गलों के साथ सम्बन्ध को प्राप्त होता है, जीव के उपजने के ऐसे स्थान का नाम योनि है। **(गो.जी.जी.८१)**

उपपाद देश के पुद्‌गल प्रचय रूप योनि है। (सर्वा. २/३२)

प्रश्न २ : योनि कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : योनि तीन प्रकार की होती है - (१) शंखावर्तयोनि (२) कूर्मोन्नतयोनि (३) वंशपत्रयोनि

शंखावर्तयोनि :- शंख के समान आवर्त जिसमें हैं, वह शंखावर्तयोनि है। इस योनि में गर्भ नियम से नष्ट हो जाता है। अत: शंखावर्त योनि वाली स्त्रियाँ वंध्या होती हैं। **(मू.आ. ११०४)**

कूर्मोन्नत योनि :- कछुए के समान उन्नत योनि कूर्मोन्नत योनि कहलाती है। इस योनि में तीर्थंकर, चक्रवर्ती आदि शलाका पुरुष उत्पन्न होते हैं। **(मू.आ. ११०५)**

वंशपत्र योनि :- बाँस के पत्ते के समान योनि को वंशपत्र योनि कहते हैं। इस योनि में सामान्य मनुष्य उत्पन्न होते हैं। **(मू.आ. ११०४)**

अथवा योनि नौ प्रकार की होती है -

(१) सचित्त (२) अचित्त (३) सचित्ताचित्त (४) शीत (५) उष्ण (६) शीतोष्ण (७) संवृत (८) विवृत (९) संवृतविवृत। **(त.सू. २/३२)**

अथवा - योनियाँ चौरासी लाख होती हैं -

नित्यनिगोद की	- ७ लाख	द्वीन्द्रिय की	- २ लाख
इतरनिगोद की	- ७ लाख	त्रीन्द्रिय की	- २ लाख
पृथ्वीकायिक की	- ७ लाख	चतुरिन्द्रिय की	- २ लाख
जलकायिक की	- ७ लाख	पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च	- ४ लाख
अग्निकायिक की	- ७ लाख	देवों की	- ४ लाख
वायुकायिक की	- ७ लाख	नारकियों की	- ४ लाख
वनस्पतिकायिक की	- १० लाख	मनुष्यों की	- १४ लाख

नोट - यहाँ ८४ लाख योनियों की अपेक्षा कथन किया गया है।

कर्म विवक्षा

क्र.	जाति	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	३० लाख (पृ.ज.व.द्वी.त्री. च.की जातियाँ)	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादनसम्य.	पारिणामिक	निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में ही होता है।
२.	२८ लाख (नि.इ.अ.वा. की जातियाँ)	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
३.	१४ लाख (मनुष्य की)	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादनसम्य.	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	
			अविरतसम्यक्त्व	औप.क्षा.क्षायो.	क्षा.सम्य. भी कर्मभूमि एवं भोगभूमि दोनों में होता है।
			संयतासंयत	क्षायोपशमिक	
			प्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
			अप्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
			अपूर्वकरण.	औप.क्षा.	क्षपक श्रेणी में क्षायिक भाव होता है।
			अनिवृत्तिकरण.	औप.क्षा.	
			सूक्ष्मसाम्पराय.	औप.क्षा.	
			उपशान्तकषाय.	औपशमिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि के भी यह गुण. औपशमिक भाव रूप ही होता है।
			क्षीणकषाय.	क्षायिक	
			सयोग केवली.	क्षायिक	
			अयोग केवली	क्षायिक	
४.	८ लाख (देव नारकी की	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
		सासादन सम्यक्त्व		पारिणामिक	नरकगति सम्बन्धी जातियाँ पर्याप्त अवस्था की अपेक्षा ही होती हैं।
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	
			अविरतसम्यक्त्व	औप.क्षा.क्षायो.	
५.	४ लाख (पञ्चेन्द्रियतिर्यंच की)	उदय	आदि के चार गुण.	पूर्ववत्	
			संयतासंयत	क्षायोपशमिक	कर्मभूमि की अपेक्षा ही यह गुण. होता है।

प्रश्न ३ : १४ लाख जाति में होने वाले कितने गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : १४ लाख जाति में होने वाले तीन गुणस्थान क्षायिक भाव रूप ही होते हैं -
(१) क्षीण कषायवीतराग छद्मस्थ (२) सयोगकेवलीजिन
(३) अयोगकेवली जिन

नोट - क्षायिक सम्यग्दृष्टि के चौथा गुणस्थान एवं क्षपक श्रेणी का आठवाँ नवाँ दसवाँ गुणस्थान भी क्षायिक भाव रूप ही होता है।

प्रश्न ४ : १४ लाख जाति में सबसे ज्यादा गुणस्थान किस भाव रूप होते हैं?

उत्तर : १४ लाख जाति में सबसे ज्यादा गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं -

(१) सम्यग्मिथ्यात्व (२) संयतासंयत

(३) प्रमत्तसंयत (४) अप्रमत्तसंयत

प्रश्न ५ : कितनी जातियों में वह गुणस्थान होता है जो तीन भाव रूप कहा है?

उत्तर : २६ लाख जातियों में वह गुणस्थान होता है जो तीन भाव रूप कहा है - अर्थात् इन जातियों में चौथा गुणस्थान होता है जो औपशमिक, क्षायिक एवं क्षायोपशमिक भाव रूप होता है।

प्रश्न ६ : कितनी जातियों का केवल एक गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होता है?

उत्तर : ८ लाख जातियों का केवल एक गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होता है। इन (चार लाख नरक एवं ४ लाख देव सम्बन्धी) जातियों में केवल तीसरा गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप है।

प्रश्न ७ : कितनी जातियों के दो गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं?

उत्तर : ४ लाख जातियों के दो गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप होते हैं -

(१) सम्यग्मिथ्यात्व (२) संयतासंयत

यहाँ ४ लाख जातियाँ पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च सम्बन्धी जानना चाहिए।

प्रश्न ८ : कितनी जातियों में औपशमिक भाव रूप गुणस्थान भी होता है?

उत्तर : २६ लाख जातियों में औपशमिक भाव रूप गुणस्थान भी होता है-

४ लाख नारकियों की ४ लाख पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च की

१४ लाख मनुष्यों की ४ लाख देवों की

इनमें चौथा गुणस्थान होता है जो औपशमिक भाव रूप भी होता है।

प्रश्न ९ : ४ लाख जाति के गुणस्थान किस-किस भाव रूप होते हैं?

उत्तर : ४ लाख जाति के गुणस्थान -

४ लाख - नरकसम्बन्धी -

पहला	- औदयिक	- पर्याप्त अपर्याप्त अवस्था की अपेक्षा
दूसरा	- पारिणामिक	- पर्याप्त अवस्था की अपेक्षा
तीसरा	- क्षायोपशमिक	- पर्याप्त अवस्था की अपेक्षा
चौथा	- क्षा.क्षायो.	- पर्याप्त - अपर्याप्त अवस्था की अपेक्षा (केवल प्रथम नरक में)
	औपशमिक	- पर्याप्त अवस्था की अपेक्षा

४ लाख - पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चसम्बन्धी -

पहला गुण. - औदयिक - पर्या. अपर्याप्त

दूसरा गुण. - पारिणामिक - पर्या. अपर्याप्त

तीसरा गुण. - क्षायोपशमिक - पर्या.

चौथा गुण. - क्षा. क्षायो. - पर्या. अपर्याप्त-भोगभूमि.

औपशमिक क्षायो. - पर्याप्त - (कर्म. भोग.)

पाँचवाँ गुण. - क्षायो. पर्याप्त.....(कर्म भूमि)

नोट - क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में अपर्याप्त अवस्था कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा जानना चाहिए।

४ लाख देवसम्बन्धी -

पहला गुण. - औदयिक - पर्याप्त अपर्याप्त.....

दूसरा गुण. - पारिणामिक - पर्याप्त अपर्याप्त

तीसरा गुण. - क्षायोपशमिक - पर्याप्त....

चौथा गुण. - औप.क्षा.क्षायो. - पर्याप्त - अपर्याप्त....

प्रश्न १० : मोहनीय कर्म के उदय से होने वाले भावों में कितनी जातियाँ होती हैं?

उत्तर : मोहनीय कर्म के उदय से होने वाले भावों में जातियाँ -

१. ४ कषाय रूप भाव में - ८४ लाख जातियाँ

५. असंयत रूप भाव में - ८४ लाख जातियाँ

२. स्त्री-पुरुषलिङ्ग रूप भाव में - २२ लाख जातियाँ

६. ३ अशुभ लेश्या रूप भाव में - ८४ लाख जातियाँ

३. नपुंसकलिङ्ग रूप भाव में - ८० लाख जातियाँ

७. ३ शुभ लेश्या रूप भाव में - २२ लाख जातियाँ।

४. मिथ्यादर्शन रूप भाव में - ८४ लाख जातियाँ

नोट - १. लेश्याएँ मोहनीय कर्म के उदय से भी मानी गई हैं।

२. असिद्धत्व भाव में भी मोहनीय कर्म की अपेक्षा है। इसमें ८४ लाख जातियाँ होती हैं।

स्थान - विवरण

प्रश्न ११ : जातियों में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : जातियों में १० स्थान होते हैं -

(१) ८४ लाख जाति रूप (२) ८० लाख जाति रूप (३) ६२ लाख जाति रूप (४) ५६ लाख जाति रूप (५) २८ लाख जाति रूप (६) २६ लाख जाति रूप (७) २२ लाख जाति रूप (८) १८ लाख जाति रूप (९) १४ लाख जाति रूप (१०) ४ लाख जाति रूप

प्रश्न १२ : इन स्थानों में किस-किस जाति को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में जातियाँ -

- ८४ लाख जाति रूप स्थान में - नित्यनिगोद की ७ लाख, इतरनिगोद की ७ लाख पृथ्वीकायिक की ७ लाख, जलकायिक की ७ लाख अग्निकायिक की ७ लाख, वायुकायिक की ७ लाख वनस्पति कायिक की १० लाख, द्वीन्द्रिय की २ लाख त्रीन्द्रिय की २ लाख, चतुरिन्द्रिय की २ लाख पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च की ४ लाख, नरकगति की ४ लाख देवगति की ४ लाख, मनुष्यगति की १४ लाख
- ८० लाख जाति रूप स्थान में - उपर्युक्त जातियों में से देवगति की ४ लाख जातियाँ कम करना चाहिए।
- ६२ लाख जाति रूप स्थान में - एकेन्द्रिय की - ५२ ला., विकलत्रय की ६ लाख पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च ४ लाख
- ५६ लाख जाति रूप स्थान में - नित्यनिगोद, इतरनिगोद, अग्निकायिक एवं वायुकायिक की जातियाँ कम करना चाहिए।
- २८ लाख जाति रूप स्थान में - पञ्चेन्द्रिय की २६ लाख एवं चतुरिन्द्रिय की २ लाख
- २६ लाख जाति रूप स्थान में - नरकगति की ४ ला. तिर्यञ्चगति (पञ्चेन्द्रिय) की ४ ला. देवगति की ४ ला. मनुष्यगति की १४ लाख
- २२ लाख जाति रूप स्थान में - उपर्युक्त जातियों में से नरकगति की जातियाँ कम करना चाहिए।

- १८ लाख जाति रूप स्थान में - पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च की ४ लाख मनुष्यगति की १४ लाख
- १४ लाख जाति रूप स्थान में - मनुष्यगति सम्बन्धी
- ४ लाख जाति रूप स्थान में - नरकगति या देवगति सम्बन्धी

नोट - ८० लाख जाति रूप स्थान में नपुंसक वेद वाले जीव होते हैं। यद्यपि ८० लाख, ६२ लाख २८ लाख २२ लाख जाति रूप स्थान में किसी गुणस्थान या गति वाले स्वामी नहीं हैं लेकिन इनमें भाव पाये जाते हैं इसलिए तथा ५६ लाख जाति रूप स्थान में कोई भाव नहीं होने पर भी दूसरे गुणस्थानवर्ती जीव इसके स्वामी होते हैं इसलिए इसका यहाँ ग्रहण किया गया है।

प्रश्न १३ : इन स्थानों में कौन-कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

८४ लाख जाति रूप स्थान में - २२

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

८० लाख जाति रूप स्थान में - १

औदयिक का - नपुंसकलिङ्ग

६२ लाख जाति रूप स्थान में - १

औदयिक का - तिर्यञ्चगति

२८ लाख जाति रूप स्थान में - १

क्षायोपशमिक का - चक्षुदर्शन

२६ लाख जाति रूप स्थान में - ८

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ६ - ३ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य.

२२ लाख जाति रूप स्थान में - ५

औदयिक के - २ लिङ्ग (स्त्री.पु.) ३ लेश्या (शुभ)

१८ लाख जाति रूप स्थान में - १ क्षायोपशमिक का संयमासंयम

१४ लाख जाति रूप स्थान में - १२

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - ज्ञान, दर्शन.....।

क्षायोपशमिक के २ - १ ज्ञा. (मनः.) १ चारित्र

औदयिक का १ - मनुष्यगति

४ लाख जाति रूप स्थान में - २

औदयिक के - नरकगति देवगति

प्रश्न १४ : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

८४ लाख जाति रूपस्थान के - मिथ्यात्व गुणस्थानवर्ती जीव

६२ लाख जाति रूपस्थान के - तिर्यञ्चगति के जीव

५६ लाख जाति रूपस्थान के - द्वितीय गुणस्थानवर्ती जीव

२६ लाख जाति रूपस्थान के - तृतीय एवं चतुर्थ गुणस्थानवर्ती जीव

१८ लाख जाति रूपस्थान के - पञ्चम गुणस्थानवर्ती जीव

१४ लाख जाति रूपस्थान के - मनुष्यगति वाले एवं छठे से चौदहवें गुण. जीव

४ लाख जाति रूपस्थान के - नरक एवं देवगति के जीव

प्रश्न १५ : कितने स्थानों में चार भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान में चार भाव के उत्तर भेद होते हैं -

१४ लाख जाति रूप स्थान

इसमें औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक तथा औदयिक, इन चार भावों के उत्तर भेद होते हैं।

प्रश्न १६ : कितने स्थानों में केवल औदयिक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ४ स्थानों में केवल औदयिक भाव के उत्तर भेद होते हैं -

८० लाख जाति रूप स्थान - नपुंसकलिङ्ग

६२ लाख जाति रूप स्थान - तिर्यञ्चगति

२२ लाख जाति रूप स्थान - २ लिङ्ग ३ लेश्या (शुभ)

४ लाख जाति रूप स्थान - नरकगति देवगति

प्रश्न १७ : कितने स्थानों में केवल एक भाव का एक उत्तर भेद होता है?

उत्तर : ४ स्थानों में केवल एक भाव का एक उत्तर भेद होता है -

(१) ८० लाख जाति रूप स्थान - औदयिक भाव का - नपुंसकलिङ्ग

(२) ६२ लाख जाति रूप स्थान - औदयिक भाव का - तिर्यंचगति

(३) २८ लाख जाति रूप स्थान - क्षायोपशमिक भाव का - चक्षुदर्शन

(४) १८ लाख जाति रूप स्थान - क्षायोपशमिक भाव का - संयमासंयम

प्रश्न १८ : कितने स्थानों में होने वाले भाव चारों गति के जीवों के होते हैं?

उत्तर : ३ स्थानों में होने वाले भाव चारों गति के जीवों के होते हैं -

(१) ८४ लाख जाति रूप स्थान (२) २८ लाख जाति रूप स्थान

(३) २६ लाख जाति रूप स्थान

प्रश्न १९ : कितने स्थानों में एकेन्द्रिय जीवों के होने वाले भाव भी पाये जाते हैं?

उत्तर : ३ स्थानों में एकेन्द्रिय जीवों के होने वाले भाव भी पाये जाते हैं -

(१) ८४ लाख जाति रूप स्थान के - २२ भाव

(२) ८० लाख जाति रूप स्थान का - नपुंसक लिङ्ग

(३) ६२ लाख जाति रूप स्थान का - तिर्यञ्चगति

संकेत - १. तालिका में क्रमश: गुणस्थानों के जाति स्थान लिखे गये हैं।

२. गति की अपेक्षा जाति स्थान एवं जाति में कोई अन्तर नहीं है इसलिए गति की अपेक्षा जातियाँ भावों में जाति की तालिका में देख लेना चाहिए।

३. तालिका में कुछ ऐसे भी स्थान हैं जो स्थान-विवरण में नहीं हैं फिर भी उस भाव के किसी गुणस्थान में उतनी जातियाँ होती हैं इसलिए उनका यहाँ ग्रहण किया है। जैसे- तिर्यञ्चगति में ३४ लाख जाति रूप स्थान, यह तिर्यञ्चों के दूसरे गुणस्थान में बनता है इसलिए स्थान में नहीं होने पर भी लिखा गया है। इसी प्रकार अन्य स्थानों को जानना चाहिए।

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	३	२६ ला. १८ ला. १४ ला.	चौथे गुणस्थान की अपेक्षा २६ लाख जाति रूप स्थान होता है।
	चारित्र	१	१४ लाख जाति रूप	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	२	२६ ला. १४ ला.	१४ लाख जाति रूप स्थान पाँचवें गुणस्थान से होता है।
	चारित्र	१	१४ लाख जाति रूप	
	ज्ञानादि सात	१	१४ लाख जाति रूप	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	३	२६ ला. १८ ला. १४ ला.	कर्मभूमिया मनुष्य-तिर्यञ्चों की अपेक्षा १८ ला. जाति रूप स्थान होता है।
	मन:पर्ययज्ञान	१	१४ लाख जाति रूप	
	कुम. कुश्रु.	२	८४ ला. ५६ ला.	
	विभंगावधि.	१	२६ लाख जाति रूप	यह स्थान किसी गति या गुणस्थान की अपेक्षा नहीं होता है।
	चक्षुदर्शन	४	२८ ला. २६ ला. १८ ला. १४ ला.	
	अचक्षुदर्शन	५	८४ ला. ५६ ला. २६ ला. १८ ला. १४ ला.	
	अवधिदर्शन	३	२६ ला. १८ ला. १४ ला.	
	५ लब्धि	५	८४ ला. ५६ ला. २६ ला. १८ ला. १४ ला.	
	सम्यक्त्व	३	२६ ला. १८ ला. १४ ला.	
	चारित्र	१	१४ लाख जाति रूप	
	संयमासंयम	१	१८ लाख जाति रूप	यह स्थान कर्मभूमि की अपेक्षा होता है।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	४ लाख जाति रूप	
	तिर्यञ्चगति	३	६२ ला. ३४ ला. ४ ला.	तीसरे से पाँचवें गुणस्थान तक ४ ला. जाति रूप स्थान होता है।
	मनुष्यगति	१	१४ लाख जाति रूप	
	देवगति	१	४ लाख जाति रूप	
	४ कषाय	५	८४ ला. ५६ ला. २६ ला. १८ ला. १४ ला.	

	स्त्रीलिङ्ग	३	२२ ला. १८ ला. १४ ला.	२२ ला. जाति रूप स्थान में नरक सम्बन्धी जातियाँ नहीं होती हैं।
	पुरुषलिङ्ग	३	२२ ला. १८ ला १४ ला.	
	नपुंसकलिङ्ग	५	८० ला. ५२ ला. २२ ला. १८ ला. १४ ला.	देवगति की ४ ला. जाति नहीं है।
	मिथ्यादर्शन	१	८४ लाख जाति रूप	
	अज्ञान	५	८४ ला. ५६ ला. २६ ला. १८ ला. १४ ला.	
	असंयत	३	८४ ला. ५६ ला. २६ ला.	२६ ला. जाति रूप स्थान तीसरे चौथे गुण. की अपेक्षा होता है।
	असिद्धत्व	५	८४ ला. ५६ ला. २६ ला. १८ ला. १४ ला.	
	३ अशुभ लेश्या	३	८४ ला. ५६ ला. २२ ला.	२२ ला. जातिरूप स्थान ३रे, ४थे गुण. की अपेक्षा होता है।
	३ शुभ लेश्या	३	२२ ला. १८ ला. १४ ला.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	५	८४ ला. ५६ ला. २६ ला. १८ ला. १४ ला.	
	भव्यत्व	५	८४ ला. ५६ ला. २६ ला. १८ ला. १४ ला.	
	अभव्यत्व	१	८४ लाख जाति रूप	

प्रश्न २० : तिर्यञ्चगति रूप भाव में ३४ लाख जाति रूप स्थान किस अपेक्षा कहा गया है?

उत्तर : यद्यपि स्थानों के विवरण में ३४ लाख जाति रूप स्थान नहीं बनाया गया है फिर भी तिर्यञ्च गति रूप भाव में उसका ग्रहण किया है क्योंकि स्थान बनाते समय सामान्य से गुणस्थान एवं गति को मुख्य बनाया गया है। गतियों में होने वाले गुणस्थानों में जाति रूप स्थानों का ग्रहण नहीं किया है। तिर्यञ्च गति में होने वाले दूसरे गुणस्थान में जो ३४ लाख जातियाँ होती हैं उन्हें यहाँ कहा गया है।

दूसरे गुणस्थान में ५६ लाख जातियाँ होती हैं लेकिन किसी भी गति वालों के दूसरे गुणस्थान में ५६ लाख जातियाँ नहीं हैं। यहाँ तिर्यञ्चगति रूप भाव का कथन है इसलिए वहाँ दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा ३४ लाख जाति रूप स्थान कहा गया है। शेष गतियों के सभी गुणस्थानों में बराबर जातियाँ ही होती हैं इसलिए वहाँ भिन्न-भिन्न कथन नहीं है।

प्रश्न २१ : नपुंसकलिङ्ग रूप भाव में स्थानों का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : नपुंसकलिङ्ग रूप भाव में स्थानों का विवेचन -

८० लाख जाति रूप स्थान - सामान्य रूप से नपुंसक वेद देवों को छोड़कर शेष सभी गतियों में होता है। इसका स्वामी मिथ्यादृष्टि जीव होता है।

५२ लाख जाति रूप स्थान - सासादन गुणस्थानवर्ती जीवों की अपेक्षा -

एकेन्द्रिय सम्बन्धी - २४ लाख जाति, नरकगति सम्बन्धी - ४ ला. जाति
विकलत्रय सम्बन्धी - ६ लाख जाति, मनुष्यगति सम्बन्धी - १४ ला. जाति
पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च सम्बन्धी - ४ लाख जाति

२२ लाख जाति रूप स्थान - तृतीय - चतुर्थ गुणस्थानवर्ती जीवों की अपेक्षा

१८ लाख जाति रूप स्थान - पंचम गुणस्थानवर्ती जीवों की अपेक्षा

१४ लाख जाति रूप स्थान - छठे से ९ वें गुणस्थान के सवेद भाग की अपेक्षा।

प्रश्न २२ : कितने भावों में १८ लाख जाति रूप स्थान नहीं होता है?

उत्तर : २५ भावों में १८ लाख जाति रूप स्थान नहीं होता है -

औपशमिक का १ - चारित्र
क्षायिक के ९ - सम्यक्त्व चारित्र ज्ञान दर्शन....
क्षायोपशमिक के ५ - १ ज्ञा. (मनः.) ३ अज्ञान १ चारित्र
औदयिक के ९ - ४ ग. १ मि. १ असं. ३ लेश्या (अशुभ)
पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

प्रश्न २३ : कितने भावों में केवल एक स्थान होता है?

उत्तर : १८ भावों में केवल एक स्थान होता है -

औपशमिक का १ - चारित्र - १४ लाख जाति रूप
क्षायिक के ८ - ज्ञान, दर्शन, दान.... - १४ लाख जाति रूप
क्षायोपशमिक के ४ - १ ज्ञा. (मनः.) - १४ लाख जाति रूप
१ अज्ञा. (विभं.) २६ लाख जाति रूप
१ चारित्र - १४ लाख जाति रूप
१ संयमासंयम - १८ लाख जाति रूप

औदयिक के ४ - ३ गति - नरक - ४ ला. जाति रूप
मनुष्य - १४ ला. जाति रूप
देवगति - ४ ला. जाति रूप
मिथ्यादर्शन - ८४ लाख जाति रूप
पारिणामिक का १ - अभव्यत्व - ८४ लाख जाति रूप

प्रश्न २४ : कितने भावों में ५६ लाख जाति रूप स्थान होता है?

उत्तर : २० भावों में ५६ लाख जाति रूप स्थान होता है -
क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.
औदयिक के १० - ४ क. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)
पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २५ : कितने भावों में ५ स्थान होते हैं?

उत्तर : १५ भावों में ५ स्थान होते हैं -
क्षायोपशमिक के ६ - १ दर्श. (अच.) ५ ल.
औदयिक के ७ - ४ क. १ लि. (नपुं.) १ अज्ञा. १ असि.
पारिणामिक के २ - जीवत्व, भव्यत्व

प्रश्न २६ : कितने भावों में २६ लाख जाति रूप स्थान नहीं होता है?

उत्तर : २९ भावों में २६ लाख जाति रूप स्थान नहीं होता है -
औपशमिक का १ - चारित्र
क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना
क्षायोपशमिक के ५ - १ ज्ञा. (मनः.) २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ चा.१ संय.
औदयिक के १४ - ४ ग. ३ लि. १ मि. ६ ले.
पारिणामिक के १ - अभव्यत्व

प्रश्न २७ : कितने भावों में १४ ला. जाति रूप स्थान केवल दो गुणस्थान की अपेक्षा होता है?

उत्तर : ११ भावों में १४ ला. जाति रूप स्थान केवल दो गुणस्थान की अपेक्षा होता है-
क्षायिक के ७ - ज्ञान, दर्शन, दान.....तेरहवें - चौदहवें गुण. की अपेक्षा
क्षायोपशमिक के २ - सम्यक्त्व, चारित्र. छठे - सातवें गुण. की अपेक्षा
औदयिक के २ - पीतलेश्या, पद्मलेश्या, छठे, सातवें गुण. की अपेक्षा

भावों में जाति

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**		**नरक. तिर्यञ्च. मनुष्य. देव.**	
	सम्यक्त्व	२६ ला.	४ला. ४ला. १४ला. ४ला.	नारकी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च तथा देवों की ४ लाख जाति होती है।
	चारित्र	१४ला.	मनुष्य सम्बन्धी	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	२६ला.	४ला. ४ला. १४ला. ४ला.	
	चारित्र	१४ला.	मनुष्य सम्बन्धी	
	ज्ञानादि सात	१४ला.	मनुष्य सम्बन्धी	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	२६ला.	४ला. ४ला. १४ला. ४ला.	
	मन:पर्ययज्ञान	१४ला.	मनुष्य सम्बन्धी	
	कुम.कुश्रु.	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	६२ लाख जाति तिर्यञ्च सम्बन्धी जानना चाहिए
	विभंगावधि.	२६ला.	४ला. ४ला. १४ला. ४ला.	
	चक्षुदर्शन	२८ला.	४ला. ६ला. १४ला. ४ला.	चतुरिन्द्रिय एवं पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च की ६ लाख जाति होती है।
	अचक्षुदर्शन	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	
	अवधिदर्शन	२६ला.	४ला. ४ला. १४ला. ४ला.	
	५ लब्धि	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	
	सम्यक्त्व	२६ला.	४ला. ४ला. १४ला. ४ला.	
	चारित्र	१४ला.	मनुष्य सम्बन्धी	
	संयमासंयम	१८ला.	४ला. १४ला.	पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च एवं मनुष्यों की जाति जानना चाहिए।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	४ला.	नरक सम्बन्धी	
	तिर्यञ्चगति	६२ला.	ए.५२ला.द्वी.२ला.त्री.२ला.चतु.-२ला. पंचे. ४ ल.	तिर्यञ्चगति सम्बन्धी सभी जातियाँ लेना चाहिए।
	मनुष्यगति	१४ला.	मनुष्य सम्बन्धी	
	देवगति	४ला.	देव सम्बन्धी	
	४ कषाय	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	
	स्त्रीलिङ्ग	२२ला.	- ४ला. १४ला. ४ला.	पञ्चेन्द्रिय तिर्य. एवं देवों की ४ ला. जाति है।
	पुरुषलिङ्ग	२२ला.	- ४ला. १४ला. ४ला.	

	नपुंसकलिङ्ग	८०ला.	४ला. ६२ला. १४ला. -	
	मिथ्यादर्शन	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	चारों गति सम्बन्धी जातियाँ होती हैं।
	अज्ञान	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	चारों गति सम्बन्धी जातियाँ होती हैं।
	असंयत	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	चारों गति सम्बन्धी जातियाँ होती हैं।
	असिद्धत्व	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	चारों गति सम्बन्धी जातियाँ होती हैं।
	३ अशुभ लेश्या	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	
	३ शुभ लेश्या	२२ला.	- ४ला. १४ला. ४ला.	
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	चारों गति सम्बन्धी जातियाँ होती हैं।
	भव्यत्व	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	
	अभव्यत्व	८४ला.	४ला. ६२ला. १४ला. ४ला.	

प्रश्न २८ : कितने भावों में ८४ लाख जातियाँ होती हैं?

उत्तर : २२ भावों में ८४ लाख जातियाँ होती है -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न २९ : कितने भावों में ४ लाख जातियाँ होती हैं?

उत्तर : २ भावों में ४ लाख जातियाँ होती हैं -

(१) नरकगति (२) देवगति

प्रश्न ३० : कितने भावों में चारों गति सम्बन्धी जातियाँ होती हैं?

उत्तर : ३१ भावों में चारों गति सम्बन्धी जातियाँ होती हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व

प्रश्न ३१ : कितने भावों में केवल मनुष्य सम्बन्धी जातियाँ होती हैं?

उत्तर : १२ भावों में केवल मनुष्य सम्बन्धी जातियाँ होती हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना

क्षायोपशमिक के २ - मन:पर्ययज्ञान, चारित्र

औदयिक का १ - मनुष्यगति

प्रश्न ३२ : कितने भावों में एकेन्द्रिय सम्बन्धी जातियाँ नहीं होती हैं -

उत्तर : २९ भावों में एकेन्द्रिय सम्बन्धी जातियाँ नहीं होती हैं -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के ९ - सम्यक्त्व चारित्र ज्ञान दर्शन दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

क्षायोपशमिक के १० - ४ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.) २ दर्श. (च.अव.) १ सम्य. १ चा. १ संय.

औदयिक के ८ - ३ ग. (न.म.दे.) २ लिङ्ग (स्त्री.पुरु.) ३ ले. (शुभ.)

प्रश्न ३३ : कितने भावों में २६ लाख जातियाँ होती हैं?

उत्तर: ८ भावों में २६ लाख जातियाँ होती हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ६ - ३ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य.

प्रश्न ३४ : कितने भावों में तिर्यञ्चगति सम्बन्धी ६२ लाख जातियाँ भी होती हैं?

उत्तर : २३ भावों में तिर्यञ्चगति सम्बन्धी ६२ लाख जातियाँ भी होती हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के १२ - ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३५ : जाति स्थानों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : जाति स्थानों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में गुणस्थान

८४ लाख जाति में - पहला गुणस्थान

८० लाख जाति में - पहला गुणस्थान

६२ लाख जाति में - पहला गुणस्थान

५६ लाख जाति में - दूसरा गुणस्थान

२८ लाख जाति में - पहला दूसरा गुणस्थान

२६ लाख जाति में - पहला, चौथा

२२ लाख जाति में - पहला, दूसरा, चौथा (चौथा गुण. पुरुषवेद की अपेक्षा)

१४ लाख जाति में - पहला, दूसरा, चौथा, छठा, तेरहवाँ

४ लाख जाति में - पहला (दे. ना.) दूसरा (देव.) चौथा (दे.ना.)

१) पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च की भी ४ ला. जाति होती है उनके भी पहला, दूसरा, चौथा गुणस्थान होता है।

नोट - इनमें भाव यथायोग्य जानना चाहिए।

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ३६ : कुमतिज्ञान रूप भाव में त्रस जीवों के कितनी जातियाँ होती हैं?

उत्तर : कुमतिज्ञान रूप भाव में त्रस जीवों के ३२ लाख जातियाँ होती हैं -

द्वीन्द्रिय की - २ लाख, नरक की - ४ लाख

त्रीन्द्रिय की - २ लाख, मनुष्यों की - १४ लाख

चतुरिन्द्रिय की - २ लाख, देवों की - ४ लाख

पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च की - ४ लाख।

प्रश्न ३७ : अनुभय वचनयोगी के उपशमसम्यक्त्व रूप भाव में कितनी जातियाँ होती हैं?

उत्तर : अनुभय वचनयोगी के उपशमसम्यक्त्व रूप भाव में २६ लाख जातियाँ होती हैं -

नरक गति की ४ लाख मनुष्यों की - १४ लाख

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च की ४ लाख देवों की - ४ लाख

प्रश्न ३८ क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में स्त्रीवेदी के कितनी जातियाँ होती हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में स्त्रीवेदी के १४ लाख जातियाँ होती हैं -

क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रीवेदियों में उत्पन्न नहीं होता है। जो भाव स्त्रीवेदी मनुष्य पर्याय में क्षायिकसम्यक्त्व उत्पन्न करता है उसकी अपेक्षा १४ लाख जातियाँ जानना चाहिए।

कहा भी है- क्षायिक सम्यक्त्व का प्रतिष्ठापक 'मणुसस्स मणुस्सणीए वा' अर्थात् सूत्र में मनुष्य कहने पर उससे पुरुषवेद और नपुंसकवेद के उदय वाले मनुष्यों का ग्रहण होता है। मनुष्यनी ऐसा कहने पर उससे स्त्रीवेद के उदय वाले मनुष्य जीवों का ग्रहण होता है। **(ज.ध.३/२४१)**

प्रश्न ३९ : चक्षुदर्शन रूप भाव वाले असंयमी के कितनी जातियाँ होती हैं?

उत्तर : चक्षुदर्शन रूप भाव वाले असंयमी के २८ लाख जातियाँ होती हैं -

नरकगति की ४ लाख मनुष्यों की १४ लाख

तिर्यञ्चगति की ६ लाख देवों की ४ लाख

प्रश्न ४० : अभव्यत्व भाव वाले अनाहारक जीवों के कितनी जातियाँ होती हैं?

उत्तर : अभव्यत्व भाव वाले अनाहारक जीवों के ८४ लाख जातियाँ होती हैं -

नरकगति की ४ लाख मनुष्यों की १४ लाख

तिर्यञ्चगति की ६२ लाख देवों की ४ लाख

प्रश्न ४१ : कितने भावों में मनुष्यगति सम्बन्धी जातियाँ १२ गुणस्थानों में पाई जाती हैं?

उत्तर : ८ भावों में मनुष्यगति सम्बन्धी जातियाँ १२ गुणस्थानों में पाई जाती हैं -

क्षायोपशमिक के ७ - २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक का १ - अज्ञान

प्रश्न ४२ : दर्शनावरणीय कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भावों में कितनी जातियाँ होती हैं?

उत्तर : दर्शनावरणीय कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भावों में जातियाँ -

चक्षुदर्शन - २८ लाख अवधिदर्शन - २६ लाख

अचक्षुदर्शन - ८४ लाख केवलदर्शन - १४ लाख

प्रश्न ४३ : औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव की अपेक्षा क्षायिक सम्यक्त्व में कितनी जातियाँ ज्यादा होती हैं?

उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव की अपेक्षा क्षायिक सम्यक्त्व में एक भी जाति ज्यादा नहीं होती है, क्योंकि दोनों ही भाव (सम्यक्त्व) चारों गतियों में होते हैं इसलिए दोनों में २६ लाख जातियाँ होती हैं।

नरक की ४ लाख	- औपशमिक सम्यक्त्व	- सातों नरकों की अपेक्षा
	क्षायिकसम्यक्त्व-पहले नरक की अपेक्षा	
पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च की ४ लाख	- औपशमिकसम्यक्त्व	- गर्भज जीवों की अपेक्षा
	क्षायिकसम्यक्त्व-भोगभूमि की अपेक्षा	
मनुष्यगति की १४ लाख	- दोनों सम्यक्त्व	- गर्भज जीवों के
देवगति की ४ लाख	- औपशमिक सम्यक्त्व	- चारों निकाय के देवों की अपेक्षा
	क्षायिक सम्यक्त्व-वैमानिक देवों की अपेक्षा	

प्रश्न ४४ : कषाय रूप भावों में स्थानों का विवेचन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर : कषाय रूप भावों में स्थानों का विवेचन -

सामान्य रूप से चारों कषायों में सभी स्थान होते हैं।

विशेष - अनन्तानुबन्धी चतुष्क में दो स्थान - ८४ ला. जाति रूप, ५६ ला. जाति रूप

अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क में - ३ स्थान - ८४ ला. जाति रूप ५६ ला. जाति रूप २६ ला. जाति रूप

प्रत्याख्यानावरण चतुष्क में - ४ स्थान - ८४ ला. जाति. ५६ ला. जाति २६ ला. जाति १८ ला. जाति

संज्वलन चतुष्क में - ५ स्थान - उपर्युक्त चार एवं १४ ला. जाति रूप

हास्यादि छह कषायों में - ५ स्थान उपर्युक्त चार एवं १४ ला. जाति रूप

स्त्री एवं पुरुषवेद में - ३ स्थान - २२ लाख जाति. १८ लाख जाति १४ ला. जाति

नपुंसकवेद में - ५ स्थान - ८० ला. जाति. ५२ ला. जाति. २२ ला. जाति. १८ ला. जाति. १४ ला. जाति.

नोट - आस्रव के प्रत्ययों में सभी कषायें पहले गुणस्थान से ही प्रारम्भ हो जाती हैं। इसलिए सभी कषायों में ८४ लाख जाति आदि स्थान कहे गये हैं।

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **४ लाख जातियाँ कितनी गति रूप भाव में होती हैं?**

(अ) २ (ब) ३

(स) ४ (द) १

(ii) **देवगति रूप भाव में कितनी जातियाँ होती हैं?**

(अ) २६ ला. (ब) ४ ला.

(स) २ ला. (द) कोई नहीं

(iii) **तिर्यञ्चगति रूप भाव में कितनी जातियाँ होती हैं?**

(अ) १३४$^{१}/_{२}$ ला.क. (ब) २ ला.

(स) ६२ ला. (द) ८४ ला.

(iv) **स्त्रीलिङ्ग रूप भाव में कितनी इन्द्रिय सम्बन्धी जातियाँ होती हैं?**

(अ) एकेन्द्रिय (ब) द्वीन्द्रिय

(स) चतुरिन्द्रिय (द) पञ्चेन्द्रिय

(v) **अभव्यत्व भाव में कितनी जातियाँ होती हैं?**

(अ) ८४ ला. (ब) १९९$^{१}/_{२}$ ला.क.

(स) ६२ ला. (द) ८० ला.

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) २८ लाख जातियाँ कौनसे भाव में होती हैं?

(ii) कितने क्षायोपशमिक भावों में नरक सम्बन्धी जातियाँ होती हैं?

(iii) औपशमिक चारित्र रूप भाव में कितनी जातियाँ होती हैं?

(iv) अभव्यत्व भाव वाले देवों के कितनी जातियाँ होती हैं?

(v) क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में संयमासंयम के साथ कितनी जातियाँ होती हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में ५८ ला. जातियाँ नहीं होती हैं।

(ii) भव्यत्व भाव में भी ८४ ला. जातियाँ होती हैं।

(iii) संयमासंयम रूप भाव में १४ ला. जातियाँ होती हैं।

(iv) क्रोध कषाय रूप भाव में देवगति सम्बन्धी जाति नहीं होती है।

(v) अज्ञान रूप भाव में १४ ला. जाति होती है।

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए -

(i) १४ ला. जाति रूप स्थान में .... औदयिक का एवं क्षायो. भाव के .... उत्तर भेद होते हैं।

(ii) क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में .... तिर्यंच गति सम्बन्धी .... नरक गति सम्बन्धी जातियाँ होती हैं।

(iii) असिद्धत्व भाव में .... नरकगति की .... मनुष्यगति की .... देवगति की जातियाँ होती हैं।

(iv) १८ ला. जाति में .... औदयिक एवं .... क्षायोपशमिक भाव होते हैं।

(v) २६ ला. जाति में .... ज्ञान .... क्षायो. अज्ञा. .... दर्शन होता है।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	२६ लाख जाति	-	१४ लाख जाति
(ii)	१४ लाख जाति	-	२ गति रूप भाव
(iii)	८४ लाख जाति	-	तिर्यञ्चगति रूप भाव
(iv)	मन: पर्ययज्ञान रूप भाव	-	क्षायिक के ८ भाव
(v)	८ क्षायोपशमिक भाव	-	औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव

(vi) ६२ लाख जाति - मिथ्यादर्शन रूप भाव

(vii) पीत-पद्म लेश्या रूप भाव - ८४ लाख जाति रूप स्थान

(viii) ४ लाख जाति - २२ लाख जाति

- उत्तरमाला -

१. (i) अ (ii) ब (iii) स (iv) द (v) अ

२. (i) चक्षुदर्शन (ii) १५ (iii) १४ लाख (iv) ४ लाख (v) १४ लाख

३. (i) हाँ (ii) हाँ (iii) ना (iv) ना (v) ना

४. (i) १, २ (ii) ४ला., ४ ला. (iii) ४ ला. १४ ला. ४ ला.
(iv) १२, १३ (v) ३, १, १

५. (i) औपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव (ii) क्षायिक के ८ भाव
(iii) मिथ्यादर्शन रूप भाव (iv) १४ लाख जाति
(v) ८४ लाख जाति रूप स्थान (vi) तिर्यञ्चगति रूप भाव
(vii) २२ लाख जाति (viii) २ गति रूप भाव

कुल

प्रश्न १ : कुल किसे कहते हैं?

उत्तर : भिन्न-भिन्न शरीरों की उत्पत्ति की कारणभूत नोकर्म वर्गणाओं के भेदों को कुल कहते हैं। **(मू.आ.)** ऊँच और नीच गोत्र रूप उत्तरोत्तर प्रकृति विशेषों के उदय से जो वंशों की उत्पत्ति होती है वे ही कुल हैं।

प्रश्न २ : कुल कितने होते हैं?

उत्तर : कुल १९९$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ होते हैं -

पृथ्वीकायिक के	- २२ ला.क.	जलचरों के	- १२$\frac{१}{२}$ ला.क.
जलकायिक के	- ७ ला. क.	थलचरों में चौपायों के	- १० ला.क.
अग्निकायिक के	- ३ ला.क.	सर्पादि के	- ९ ला.क.
वायुकायिक के	- ७ ला.क.	नभचर के	- १२ ला.क.
वनस्पतिकायिक के	- २८ ला.क.		
द्वीन्द्रिय के	- ७ ला.क.	नारकियों के	- २५ ला.क.
त्रीन्द्रिय के	- ८ ला.क.	मनुष्यों के	- १४ ला.क.
चतुरिन्द्रिय के	- ९ ला.क.	देवों के	- २६ ला.क.

कर्म विवक्षा

क्र.	कुल	कर्म विवक्षा	गुणस्थान	भाव	विवरण
१.	१० ला.क. (अग्नि.वायु.के)	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	अग्नि एवं वायु कायिक के कुल ग्रहण करना चाहिए।
२.	८१ ला.क. (पृ.ज.व.द्वी.त्री. च.के)	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादनसम्य.	पारिणामिक	
३.	४३$\frac{1}{2}$ ला.क. (पंचे. तिर्यंच)	उदय	मिथ्यात्व	औदयिक	
			सासादन.	पारिणामिक	
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायोपशमिक	
			अविरतसम्यक्त्व	औप.क्षायो.	कर्मभूमि की अपेक्षा होता है।
			संयमासंयम	क्षायो.	
४.	५१ ला.क. (देव.नारकी के)	उदय	मिथ्यात्व.	औदयिक	
			सासादन.	पारिणामिक	२६ ला.क. कुल पर्याप्त-अपर्याप्त दोनों अवस्था में होते हैं।
			सम्यग्मिथ्यात्व	क्षायो.	
			अविरतसम्य.	औप.क्षा.क्षायो.	
५.	१४ ला.क. (मनुष्य के)	उदय	उपर्युक्त ४	पूर्ववत्	
			संयतासंयत	क्षायोपशमिक	यहाँ से सभी गुणस्थान कर्मभूमि में ही होते हैं।
			प्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
			अप्रमत्तसंयत	क्षायोपशमिक	
			अपूर्वकरण.	औप.क्षा.	उपशम श्रेणी में औपशमिक भाव रूप होता है।
			अनिवृत्तिकरण.	औप.क्षा.	
			सूक्ष्मसाम्पराय	औप.क्षा.	
			उपशान्तकषाय.	औपशमिक	
			क्षीणकषाय.	क्षायिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होता है।
			सयोग केवली	क्षायिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होता है।
			अयोग केवली	क्षायिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि के ही होता है।

प्रश्न ३ : कितने कुल का केवल एक गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होता है?

उत्तर : ५१ ला.क. कुल का केवल एक गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होता है - सम्यग्मिथ्यात्व।

इनमें नरक के २५ ला.क. एवं देवों के २६ ला.क. कुल ग्रहण करना चाहिए।

प्रश्न ४ : कितने कुलों में औदयिक भाव रूप गुणस्थान भी होता है?

उत्तर : १८९$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुलों में औदयिक भाव रूप गुणस्थान भी होता है -

८१ ला.क. - अग्निकायिक वायुकायिक बिना एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक के

४३$\frac{१}{२}$ ला.क. - पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के

५१ ला.क. - देव-नारकियों के

१४ ला.क. - मनुष्यों के

प्रश्न ५ : ४३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल के कितने गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं?

उत्तर : ४३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल के २ गुणस्थान क्षायोपशमिक भाव रूप ही होते हैं -

(१) सम्यग्मिथ्यात्व (२) संयतासंयत

नोट - इन कुलों में संयतासंयत गुणस्थान औपशमिक एवं क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ ही जानना चाहिए। क्योंकि क्षायिक सम्यक्त्व के साथ तिर्यञ्चों के न संयमासंयम गुणस्थान होता है और न ही ४३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल होते हैं। क्षायिक सम्यक्त्व तिर्यञ्चों के भोगभूमि में ही होता है। इसलिए उनके जलचर सम्बन्धी १२$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल नहीं होते हैं।

प्रश्न ६ : कितने कुलों में तीन भाव रूप गुणस्थान होता है?

उत्तर : ६५ ला.क. कुलों में तीन भाव रूप गुणस्थान होता है -

इनमें नरकगति के २५ ला.क., मनुष्यों के १४ ला.क., देवों के २६ ला.क.

इनमें चौथा गुणस्थान तीन भाव रूप होता है।

नोट - पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों के ३१ ला.क. कुलों में भी चौथा गुणस्थान तीन भाव रूप होता है।

प्रश्न ७ : १४ ला.क. कुल के कितने गुणस्थान औपशमिक भाव रूप भी होते हैं?

उत्तर : १४ ला.क. कुल के ४ गुणस्थान औपशमिक भाव रूप भी होते हैं -

(१) अविरतसम्यक्त्व (२) अपूर्वकरण

(३) अनिवृत्तिकरण (४) सूक्ष्मसाम्पराय

प्रश्न ८ : कितने कुलों में केवल औदयिक भाव रूप गुणस्थान होता है?

उत्तर : १० लाख करोड़ कुलों में केवल औदयिक भाव रूप गुणस्थान होता है -

अग्निकायिक के - ३ ला.क., वायुकायिक के - ७ ला.क.

इनमें एक पहला गुणस्थान ही होता है जो औदयिक भाव रूप होता है।

स्थान विवरण

प्रश्न ९ : कुल प्ररूपणा में कितने स्थान होते हैं?

उत्तर : कुल प्ररूपणा में १२ स्थान होते हैं -

(१) १९९ $\frac{१}{२}$ ला.क. (२) १८९ $\frac{१}{२}$ ला.क. (३) १७३ $\frac{१}{२}$ ला.क. (४) १३४ $\frac{१}{२}$ ला.क. (५) ११७ $\frac{१}{२}$ ला.क. (६) १०८ $\frac{१}{२}$ ला.क. (७) ९६ ला.क. (८) ८३ $\frac{१}{२}$ ला.क. (९) ५७ $\frac{१}{२}$ ला.क. (१०) २६ ला.क. (११) २५ ला.क. (१२) १४ ला.क.

नोट - १. १८९ $\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान में किसी भी भाव का उत्तर भेद नहीं पाया जाता है लेकिन इसके दूसरे गुणस्थान वाले स्वामी होते हैं इसलिए इसका यहाँ ग्रहण किया गया है।

२. १७३ $\frac{१}{२}$ ला.क., ११७ $\frac{१}{२}$ ला.क., ९६ ला.क. ८३ $\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थानों के कोई गति या गुणस्थान वाले स्वामी नहीं हैं लेकिन इनमें भावों के उत्तर भेद पाये जाते हैं इसलिए इनका यहाँ ग्रहण किया गया है।

प्रश्न १० : इन स्थानों में किन-किन कुलों को ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर : इन स्थानों में कुल -

१९९ $\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में -

नरकगति के	- २५ ला.क.	त्रीन्द्रिय के	- ८ ला.क.
पृथ्वीकायिक के	- २२ ला.क.	चतुरिन्द्रिय के	- ९ ला.क.
जलकायिक के	- ७ ला.क.	जलचर के	- १२ $^{१}/_{२}$ ला.क.
अग्निकायिक के	- ३ ला.क.	थलचर के	- १९ ला.क.
वायुकायिक के	- ७ ला.क.	नभश्चर के	- १२ ला.क.
वनस्पति के	- २८ ला.क.	मनुष्यगति के	- १४ ला.क.
द्वीन्द्रिय के	- ७ ला.क.	देवगति के	- २६ ला.क.

- १८९ $\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - उपर्युक्त कुलों में से अग्निकायिक एवं वायुकायिक के कुल कम करने पर १९९ $\frac{१}{२}$ ला.क. - १० ला.क. = १८९ $\frac{१}{२}$ ला.क.
- १७३ $\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - मूल कुलों में से देवों के २६ ला.क. कुल कम करना चाहिए।
- १३४ $\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - नरक, मनुष्य तथा देवगति के कुल कम करना चाहिए।

- ११७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - नरकगति के-२५ ला.क. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों के-४३$\frac{१}{२}$ ला.क. चतुरिन्द्रिय के - ९ ला.क. मनुष्यों के १४ ला.क. तथा देवों के २६ ला.क.
- १०८$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - नरकगति के २५ ला.क. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के-४३$\frac{१}{२}$ ला.क. मनुष्यगति के १४ ला.क. देवगति के २६ ला.क.
- ९६ ला.क. कुल रूप स्थान में - नरक गति २५ ला.क. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च ३१ ला.क. मनुष्य के १४ ला.क. देवों के २६ ला.क.
- ८३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के ४३१/२ ला.क. मनुष्य के १४ ला.क. देवों के २६ ला.क.
- ५७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के ४३१/२ ला.क. मनुष्यों के १४ ला.क.
- २६ ला.क. कुल रूप स्थान में - देवगति सम्बन्धी
- २५ ला.क. कुल रूप स्थान में - नरकगति सम्बन्धी
- १४ ला.क. कुल रूप स्थान में - मनुष्यगति सम्बन्धी

प्रश्न ११ : इन स्थानों में कौनसे भाव होते हैं?

उत्तर : इन स्थानों में भाव -

१९९$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - २२

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

१७३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - १

औदयिक का - नपुंसकलिङ्ग

१३४$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - १

औदयिक का - तिर्यञ्चगति

११७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - १

क्षायोपशमिक का - चक्षुदर्शन

१०८$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - ७

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ६ - ३ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभंग) १ दर्श. (अवधि.) १ सम्य.

९६ ला.क. कुल रूप स्थान में - १
क्षायिक का - सम्यक्त्व
८३१/२ ला.क. कुल रूप स्थान में - ५
औदयिक के - २ लि. (स्त्री.पु.) ३ ले. (शुभ.)
५७१/२ ला.क. कुल रूप स्थान में - १
क्षायोपशमिक का - संयमासंयम
२६ ला.क. कुल रूप स्थान में - १
औदयिक का - देवगति
२५ ला.क. कुल रूप स्थान में - १
औदयिक का - नरकगति
१४ ला.क. कुल रूप स्थान में - १२
औपशमिक का १ - चारित्र
क्षायिक के ८ - ज्ञान, दर्शन....आदि
क्षायोपशमिक के २ - मन:पर्ययज्ञान, चारित्र
औदयिक का १ - मनुष्यगति

प्रश्न १२ : इन स्थानों के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : इन स्थानों के स्वामी -

१९९१/२ ला.क. कुल रूप स्थान के - प्रथमगुणस्थानवर्ती जीव
१८९१/२ ला.क. कुल रूप स्थान के - सासादन गुणस्थानवर्ती जीव
१३४१/२ ला.क. कुल रूप स्थान के - तिर्यञ्चगति के जीव
१०८१/२ ला.क. कुल रूप स्थान के - तीसरे-चौथे गुणस्थानवर्ती जीव
५७१/२ ला.क. कुल रूप स्थान के - पंचमगुणस्थानवर्ती जीव
२६ ला.क. कुल रूप स्थान के - देवगति के जीव
२५ ला.क. कुल रूप स्थान के - नरकगति के जीव
१४ ला.क. कुल रूप स्थान के - मनुष्यगति एवं छठे से चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव

प्रश्न १३ : कितने स्थानों में होने वाले भाव केवल संज्ञी जीवों के ही होते हैं?

उत्तर : ४ स्थानों में होने वाले भाव केवल संज्ञी जीवों के ही होते हैं-

(१) १०८१/२ ला.क. कुल रूप (२) ५७१/२ ला.क. कुल रूप
(३) २६ ला.क. कुल रूप (४) २५ ला.क. कुल रूप

नोट - १. १४ ला.क. कुल रूप स्थान संज्ञी-असंज्ञी से रहित जीवों के भी होता है।
२. ९६ ला.क. कुल रूप स्थान में होने वाला भाव (क्षा.स.) भी संज्ञी जीवों के ही होता है लेकिन वह संज्ञी-असंज्ञी से रहित जीवों के भी होता है।

प्रश्न १४ : किस स्थान में किस भाव के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं?

उत्तर : १९९$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में एक भाव के सभी उत्तर भेद पाये जाते हैं - पारिणामिक।

प्रश्न १५ : कितने स्थानों में ज्ञानावरण कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : ३ स्थानों में ज्ञानावरण कर्म से सम्बन्ध रखने वाले भाव होते हैं -

(१) १९९$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान - इसमें क्षायोपशमिक के २ - कुमतिज्ञान कुश्रुतज्ञान औदयिक का १ - अज्ञान

(२) १०८$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान - इसमें क्षायोपशमिक के ४ - ३ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.)

(३) १४ ला.क. कुल रूप स्थान - इसमें क्षायिक का १ - ज्ञान क्षायोपशमिक का १ - मन:पर्ययज्ञान

प्रश्न १६ : कितने स्थानों में केवल एक भाव होता है?

उत्तर : ७ स्थानों में केवल एक भाव होता है -

(१) १७३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - नपुंसकलिङ्ग

(२) १३४$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - तिर्यञ्चगति

(३) ११७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - चक्षुदर्शन

(४) ९६ ला.क. कुल रूप स्थान में - क्षायिक सम्यक्त्व

(५) ५७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - संयमासंयम

(६) २६ ला.क. कुल रूप स्थान में - देवगति

(७) २५ ला.क. कुल रूप स्थान में - नरकगति

प्रश्न १७ : कितने स्थानों में केवल औदयिक भाव के उत्तर भेद होते हैं?

उत्तर : ५ स्थानों में केवल औदयिक भाव के उत्तर भेद होते हैं -

(१) १७३$\frac{१}{२}$ ला.क. (२) १३४$\frac{१}{२}$ ला.क.

(३) ८३$\frac{१}{२}$ ला.क. (४) २६ ला.क.

(५) २५ ला.क.

प्रश्न १८ : कितने स्थानों में चारों गति में होने वाले भाव होते हैं?

उत्तर : ५ स्थानों में चारों गति में होने वाले भाव होते हैं -

१९९$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान

१७३$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान

११७$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान

१०८$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान

९६ लाख करोड़ कुल रूप स्थान

प्रश्न १९ : किस स्थान का कौन सा भाव मिथ्यादृष्टि मनुष्यों के भी पाया जाता है?

उत्तर : वे स्थान एवं भाव जो मिथ्यादृष्टि मनुष्यों के भी पाये जाते हैं -

१९९$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान में होने वाले - २१ भाव

१७३$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान में होने वाला - नपुंसकलिंग रूप भाव

११७$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान में होने वाला - चक्षुदर्शन रूप भाव

१०८$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान में होने वाला - विभंगज्ञान रूप भाव

८३$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान में होने वाले - २ लिंग, ३ शुभ लेश्या रूप भाव

१४ लाख करोड़ कुल रूप स्थान में होने वाला - मनुष्यगति रूप भाव

संकेत - १. तालिका में गुणस्थानों की अपेक्षा क्रमश: स्थान लिखे गये हैं। कुछ भावों में ऐसे स्थान भी लिखे हैं जिनका स्थान बनाते समय ग्रहण नहीं किया गया है, क्योंकि न उनका कोई गुणस्थान और गति वाला स्वामी है और न ही उनमें किसी भाव का उत्तर भेद पाया जाता है। फिर भी विशेष भाव के विशेष गुणस्थान में वे (उतने) कुल पाये जाते हैं इसलिए उनका ग्रहण किया है। जैसे - तिर्यञ्चगति रूप भाव में १२४$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान तिर्यञ्चगति में दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा एवं ४३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान उनके तीसरे से पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा बनता है। इसलिए पाठक यह विकल्प नहीं करें कि ये स्थान कहाँ से आये।

२. गति की अपेक्षा कुलस्थान एवं कुल में कोई अन्तर नहीं है इसलिए गति अपेक्षा कुल, भावों में कुल की तालिका में देख लेवें।

भावों में स्थान

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	३	१०८$\frac{1}{2}$ ला.क. ५७$\frac{1}{2}$ ला.क. १४ ला.क.	पाँचवें गुण. की अपेक्षा ५७$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान होता है।
	चारित्र	१	१४ ला.क. कुल रूप	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	२	९६ ला.क. १४ ला.क.	तिर्यञ्चों में इसके साथ पंचम गुणस्थान नहीं होता है।
	चारित्र	१	१४ ला.क. कुल रूप	
	ज्ञानादि सात	१	१४ ला.क. कुल रूप	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	३	१०८$\frac{1}{2}$ ला.क. ५७$\frac{1}{2}$ ला.क. १४ ला.क.	
	मन:पर्ययज्ञान	१	१४ ला.क. कुल रूप	
	कुमति कुश्रुत	२	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क. १८९$\frac{1}{2}$ ला.क.	
	विभंगज्ञान	१	१०८$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी कुल होते हैं।
	चक्षुदर्शन	४	११७$\frac{1}{2}$ ला.क. १०८$\frac{1}{2}$ ला.क. ५७$\frac{1}{2}$ ला.क. १४ ला.क.	११७$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान पहले-दूसरे दोनों गुणस्थानों में होता है।
	अचक्षुदर्शन	५	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क. १८९$\frac{1}{2}$ ला.क. १०८$\frac{1}{2}$ ला.क. ५७$\frac{1}{2}$ ला.क. १४ ला.क.	
	अवधिदर्शन	३	१०८$\frac{1}{2}$ ला.क. ५७$\frac{1}{2}$ ला.क. १४ ला.क.	
	५ लब्धि	५	अचक्षुदर्शनवत्	
	सम्यक्त्व	३	१०८$\frac{1}{2}$ ला.क. ५७$\frac{1}{2}$ ला.क. १४ ला.क.	१४ ला.क. कुल रूप स्थान छठे-सातवें गुणस्थान में होता है।
	चारित्र	१	१४ ला.क. कुल रूप	
	संयमासंयम	१	५७$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप	
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	१	२५ ला.क. कुल रूप	चारों ही गुणस्थानों में यही स्थान होता है।
	तिर्यञ्चगति	३	१३४$\frac{1}{2}$ला.क. १२४$\frac{1}{2}$ ला.क. ४३$\frac{1}{2}$ ला.क.	४३$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान ३ रे से ५वें गुणस्थान तक होता है।

	मनुष्यगति	१	१४ ला.क. कुल रूप	
	देवगति	१	२६ ला.क. कुल रूप	
	४ कषाय	५	अचक्षुदर्शनवत्	
	स्त्री-पुरुषलिङ्ग	३	८३$\frac{१}{२}$ ला.क. ५७$\frac{१}{२}$ ला.क. १४ ला.क.	
	नपुंसकलिङ्ग	५	१७३$\frac{१}{२}$ ला.क. १६३$\frac{१}{२}$ ला.क. ८२$\frac{१}{२}$ ला.क. ५७$\frac{१}{२}$ ला.क. १४ ला.क.	८२$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल तीसरे चौथे गुण. की अपेक्षा होते हैं।
	मिथ्यादर्शन	१	१९९$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप	
	अज्ञान	५	अचक्षुदर्शनवत्	
	असंयत	३	१९९$\frac{१}{२}$ ला.क. १८९$\frac{१}{२}$ ला.क. १०८$\frac{१}{२}$ ला.क.	
	असिद्धत्व	५	१९९$\frac{१}{२}$ ला.क. १८९$\frac{१}{२}$ ला.क. १०८$\frac{१}{२}$ ला.क. ५७$\frac{१}{२}$ ला.क. १४ ला.क.	
	३ अशुभ लेश्या	३	१९९$\frac{१}{२}$ ला.क. १८९$\frac{१}{२}$ ला.क. ८२$\frac{१}{२}$ ला.क.	८२$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान तीसरे चौथे गुणस्थान की अपेक्षा होता है।
	३ शुभ लेश्या	३	८३$\frac{१}{२}$ ला.क. ५७$\frac{१}{२}$ ला.क. १४ ला.क.	८३$^{१}/_{२}$ला.क. कुल पहले से चौथे गुणस्थान तक होते हैं।
५.	**पारिणामिक**			
	जीवत्व	५	अचक्षुदर्शनवत्	
	भव्यत्व	५	अचक्षुदर्शनवत्	
	अभव्यत्व	१	१९९$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप	

प्रश्न २० : क्षायिक सम्यक्त्व में ९६ ला.क. कुल रूप स्थान किस अपेक्षा होता है?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व में ९६ ला.क. कुल रूप स्थान में अपेक्षा -

नारकियों के - २५ ला.क.

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के - १९ ला.क. थलचर के

१२ ला.क. नभश्चर के

मनुष्यों के - १४ ला.क.

देवगति के - २६ ला.क.

१) यह स्थान चौथे गुणस्थान की अपेक्षा जानना चाहिए। पाँचवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक १४ ला.क. कुल रूप स्थान ही होता है।

२) इसमें जलचर सम्बन्धी कुल नहीं होते हैं, क्योंकि क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च भोगभूमि में ही होते हैं। वहाँ जलचर जीव नहीं होते हैं।

प्रश्न २१ : चक्षुदर्शन रूप भाव वालों के किस गुणस्थान में कौनसा स्थान होता है?

उत्तर : चक्षुदर्शन रूप भाव वालों के

पहले-दूसरे गुणस्थान में - ११७$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान

तीसरे-चौथे गुणस्थान में - १०८$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान

पाँचवें गुणस्थान में - ५७$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान

छठे से बारहवें गुणस्थान तक - १४ ला.क. कुल रूप स्थान होता है।

प्रश्न २२ : तिर्यञ्चगति में १२४$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान किस अपेक्षा कहा गया है?

उत्तर : तिर्यञ्चगति में १२४$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा कहा गया है।

इसमें अग्निकायिक एवं वायुकायिक के कुल नहीं होते हैं, क्योंकि सासादन सम्यग्दृष्टि जीव इनमें उत्पन्न नहीं होते हैं।

प्रश्न २३ : लिङ्ग रूप भावों में स्थानों की विवेचना किस प्रकार करनी चाहिए?

उत्तर : लिङ्ग रूप भावों में स्थानों की विवेचना -

स्त्री-पुरुष लिङ्ग में -

८३$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य एवं देवगति सम्बन्धी कुल होते हैं। ये कुल पहले से चौथे गुणस्थान की अपेक्षा जानना चाहिए।

५७$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च एवं मनुष्यों के...... यह पाँचवें गुण. की अपेक्षा जानना चाहिए।

१४ ला.क. कुल रूप स्थान में - मनुष्यों के कुल होते हैं। यह छठे से नवें गुणस्थान के सवेद भाग तक होता है।

नपुंसकलिङ्ग -

१७३$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - देवगति सम्बन्धी कुल नहीं होते हैं। यह पहले गुणस्थान की अपेक्षा...।

१६३$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - अग्निकायिक वायुकायिक के कुल भी नहीं होते हैं। यह दूसरे गुणस्थान की अपेक्षा....।

८२$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - नरक गति.पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च एवं मनुष्यगति सम्बन्धी कुल होते हैं। यह तीसरे-चौथे गुणस्थान की अपेक्षा होता है।

५७$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - पाँचवें गुणस्थान की अपेक्षा

१४ ला.क. कुल रूप स्थान में - छठे से नवें गुण. के सवेद भाग तक होता है।

प्रश्न २४ : अशुभ लेश्या रूप भाव ८२$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान में किस गुणस्थान की अपेक्षा पाया जाता है?

उत्तर : अशुभ लेश्या रूप भाव ८२$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान में तीसरे एवं चौथे गुणस्थान की अपेक्षा पाया जाता है, क्योंकि अशुभ लेश्याओं के इन गुणस्थानों में देव सम्बन्धी २६ ला.क. कुल भी नहीं पाये जाते हैं।

प्रश्न २५ : कितने स्थान केवल पहले गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर : ३ स्थान केवल पहले गुणस्थान में होते हैं -

(१) १९९$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप (२) १७३ $\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप

(३) १३४$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप।

प्रश्न २६ : कितने भावों में ५७$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान भी होता है?

उत्तर : २७ भावों में ५७$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान भी होता है -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १२ - ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

प्रश्न २७ : कितने भावों में केवल एक स्थान पाया जाता है?

उत्तर : १८ भावों में केवल एक स्थान पाया जाता है -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना

क्षायोपशमिक के ४ - १ ज्ञा. (मन:.) १ अज्ञा. (विभं.) १ चा. १ संय.

औदयिक के ४ - ३ ग. (तिर्यञ्चबिना) १ मि.

पारिणामिक का १ - अभव्यत्व

नोट : तालिका में गति के क्रम से कुलों को लगाना चाहिए ।

भावों में कुल

क्र.	भाव	संख्या	विवरण	विशेष
१.	**औपशमिक**			
	सम्यक्त्व	१०८$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क. ४३$\frac{1}{2}$ ला.क.१४ला.क. २६ला.क.	४३$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्च सम्बन्धी जानना चाहिए।
	चारित्र	१४ ला.क.	मनुष्य सम्बन्धी	
२.	**क्षायिक**			
	सम्यक्त्व	९६ ला.क.	२५ला.क. ३१ला.क.१४ला.क. २६ला.क.	३१ ला.क. कुल पञ्चे. तिर्यञ्चों के (जलचर जीवों को छोड़कर) जानना चाहिए।
	चारित्र	१४ ला.क.	मनुष्य सम्बन्धी	
	ज्ञानादि सात	१४ ला.क.	मनुष्य सम्बन्धी	
३.	**क्षायोपशमिक**			
	३ ज्ञान	१०८$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क. ४३$\frac{1}{2}$ ला.क.१४ला.क. २६ला.क.	
	मन:पर्ययज्ञान	१४ ला.क.	मनुष्य सम्बन्धी	
	कुमति. कुश्रु.	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क. १३४$\frac{1}{2}$ ला.क.१४ला.क. २६ला.क.	चारों गति सम्बन्धी कुल होते हैं।
	विभंगज्ञान	१०८$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क. ४३$\frac{1}{2}$ ला.क.१४ला.क. २६ला.क	
	चक्षुदर्शन	११७$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क. ५२$\frac{1}{2}$ ला.क.१४ला.क. २६ला.क.	चतुरिन्द्रिय एवं पञ्चे. तिर्यञ्चों के कुल होते हैं।
	अचक्षुदर्शन	१९९$\frac{1}{2}$ला.क.	२५ला.क.१३४$\frac{1}{2}$ ला.क.१४ला.क. २६ला.क.	
	अवधिदर्शन	१०८$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क. ४३$\frac{1}{2}$ ला.क.१४ला.क. २६ला.क.	
	५ लब्धि	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क. १३४$\frac{1}{2}$ ला.क.१४ला.क. २६ला.क.	
	सम्यक्त्व	१०८$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क. ४३$\frac{1}{2}$ ला.क.१४ला.क. २६ला.क.	
	चारित्र	१४ला.क.	मनुष्य सम्बन्धी	
	सयंमासंयम	५७$\frac{1}{2}$ ला.क.	४३$\frac{1}{2}$ ला.क. १४ला.क.	पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च एवं मनुष्यों के कुल होते हैं।
४.	**औदयिक**			
	नरकगति	२५ला.क.	नरक सम्बन्धी	
	तिर्यञ्चगति	१३४$\frac{1}{2}$ ला.क.	एके.६७ला.क. द्वी.७ला.क.त्री.८ला.क. चतु.९ला.क. पञ्चेन्द्रिय के ४३$\frac{1}{2}$ ला.क.	
	मनुष्यगति	१४ला.क.	मनुष्य सम्बन्धी	
	देवगति	२६ला.क.	देव सम्बन्धी	
	४ कषाय	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क. १३४$\frac{1}{2}$ला.क.१४ला.क. २६ला.क.	

	स्त्रीलिङ्ग	८३$\frac{1}{2}$ ला.क.	-	४३$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	नरक सम्बन्धी कुल नहीं होते है।
	पुरुषलिङ्ग	८३$\frac{1}{2}$ ला.क.	-	४३$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	नरक सम्बन्धी कुल नहीं होते है।
	नपुंसकलिङ्ग	१७३$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क.	१३४$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	-	देव सम्बन्धी कुल नहीं होते हैं।
	मिथ्यादर्शन	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क.	१३४$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	
	अज्ञान	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क.	१३४$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	
	असंयत	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क.	१३४$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	केवल पहले गुण. में ही १९९$\frac{1}{2}$ला.क. कुल होते हैं।
	असिद्धत्व	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क.	१३४$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	
	३ अशुभ ले.	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क.	१३४$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	
	पीत लेश्या	८३$\frac{1}{2}$ ला.क.	-	४३$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	४३$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल असंज्ञी जीवों के भी होते हैं।
	पद्म शुक्ल.	८३$\frac{1}{2}$ ला.क.	-	४३$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	
५.	**पारिणामिक**						
	जीवत्व	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क.	१३४$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	चारों गति सम्बन्धी कुल होते हैं।
	भव्यत्व	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क.	१३४$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	चारों गति सम्बन्धी कुल होते हैं।
	अभव्यत्व	१९९$\frac{1}{2}$ ला.क.	२५ला.क.	१३४$\frac{1}{2}$ला.क.	१४ला.क.	२६ला.क.	चारों गति सम्बन्धी कुल होते हैं।

प्रश्न २८ : कितने भावों में १०८$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल होते हैं?

उत्तर : ७ भावों में १०८$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के ६ - ३ ज्ञा. १ अज्ञा. (विभं.) १ दर्श. (अव.) १ सम्य.

प्रश्न २९ : कितने भावों में नरकगति सम्बन्धी कुल नहीं होते हैं?

उत्तर : २० भावों में नरकगति सम्बन्धी कुल नहीं होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक के ८ - सम्यक्त्व बिना

क्षायोपशमिक के ३ - १ ज्ञा. (मनः.) १ चारित्र १ संय.

औदयिक के ८ - ३ ग. (ति.म.दे.) २ लि. (स्त्री.पु.) ३ ले. (शुभ.)

प्रश्न ३० : कितने भावों में १४ ला.क. कुल ही होते हैं?

उत्तर : १२ भावों में १४ ला.क. कुल ही होते हैं -

औपशमिक का १ - चारित्र

क्षायिक का ८ - सम्यक्त्व बिना

क्षायोपशमिक के २ - १ ज्ञा. (मनः.) १ चारि.

औदयिक के १ - मनुष्यगति

प्रश्न ३१ : कितने भावों में १९९$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल होते हैं?

उत्तर : २२ भावों में १९९$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल होते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. (कुम.कुश्रु.) १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के ११ - ४ क. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३२ : कितने भावों में पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च सम्बन्धी कुल भी होते हैं?

उत्तर : ३८ भावों में पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च सम्बन्धी कुल भी होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १६ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संय.

औदयिक के १८ - १ ग. (तिर्य.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट - क्षायिक सम्यक्त्व में पंचेन्द्रिय तिर्यंच के सभी कुल नहीं होते हैं इसलिए उसका यहाँ ग्रहण नहीं किया गया है।

प्रश्न ३३ : कितने भावों के सभी उत्तर भेदों में जलचर सम्बन्धी कुल नहीं होते हैं?

उत्तर : केवल एक भाव के सभी उत्तर भेदों में जलचर सम्बन्धी कुल नहीं होते हैं - क्षायिक भाव

प्रश्न ३४ : कितने भावों में तिर्यञ्चगति सम्बन्धी पूरे कुल होते हैं?

उत्तर : २४ भावों में तिर्यञ्चगति सम्बन्धी पूरे कुल होते हैं -

क्षायोपशमिक के ८ - २ अज्ञा. १ दर्श. (अच.) ५ ल.

औदयिक के १३ - १ ग. (ति.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ३ ले. (अशु.)

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३५ : कितने भावों के किसी भी उत्तर भेद में १०८$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल नहीं होते हैं?

उत्तर : ३ भावों के किसी भी उत्तर भेद में १०८$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल नहीं होते हैं -

(१) क्षायिक (२) औदयिक (३) पारिणामिक

प्रश्न ३६ : चक्षुदर्शन रूप भाव में कितने कुल नहीं होते हैं?

उत्तर : चक्षुदर्शन रूप भाव में ८२ ला.क. कुल नहीं होते हैं -

पृथ्वीकायिक के - २२ ला.क. वनस्पतिकायिक के - २८ ला.क.

जलकायिक के - ७ ला.क. द्वीन्द्रिय के - ७ ला.क.

अग्निकायिक के - ३ ला.क. त्रीन्द्रिय के - ८ ला.क.

वायुकायिक के - ७ ला.क.

प्रश्न ३७ : कितने भावों में तीन गति सम्बन्धी कुल पाये जाते हैं?

उत्तर : ६ भावों में तीन गति सम्बन्धी कुल पाये जाते हैं -

स्त्री-पुरुष लिङ्ग - तिर्यञ्च मनुष्य देवगति

नपुंसकलिङ्ग - नरक-तिर्यञ्च मनुष्यगति

३ शुभ लेश्या - तिर्यञ्च मनुष्य देवगति

समुच्चय प्रश्नोत्तर

प्रश्न ३८ : भोगभूमिया जीवों के कितने कुल एवं भाव होते हैं?

उत्तर : भोगभूमिया जीवों के ४५ ला.क. कुल होते हैं -

तिर्यञ्चों के ३१ ला.क. मनुष्यों के १४ ला.क.

इनमें - ३८ भाव होते हैं -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १५ - ३ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १८ - २ ग. (ति.म.) ४ क. २ लि. (स्त्री.पु.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

प्रश्न ३९ : इनमें कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : इनमें चार गुणस्थान होते हैं -

१. मिथ्यात्व, २. सासादन सम्यक्त्व, ३. सम्यग्मिथ्यात्व, ४ असंयत

इनमें भाव, पहले गुणस्थान में ३१

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १८ - २ ग. ४ क. २ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ लेश्या

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

दूसरे गुण. में मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व रूप भाव कम करने पर ३१-२ = २९ भाव होते हैं।

तीसरे गुणस्थान में ३ अशुभ लेश्या नहीं होने से २९-३ = २६ भाव होते हैं।

चौथे गुणस्थान में ३१ -

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १५ - २ ग. ४ क. २ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ४ ले. (कापोतादि)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में तीसरा गुणस्थान नहीं होता है। शेष गुणस्थानों में भाव-

पहले गुणस्थान में विभंगज्ञान एवं ३ लेश्या (शुभ) नहीं होने से ३१-४=२७ भाव

दूसरे गुणस्थान में मिथ्यात्व एवं अभव्यत्व निकल जाने से २७-२ = २५

चौथे गुणस्थान में औपशमिकसम्यक्त्व, स्त्रीवेद एवं ५ लेश्या (कापोत बिना) नहीं होने से ३१-७ = २४ भाव

प्रश्न ४० : सम्मूर्च्छन जीवों के कितने कुल होते हैं?

उत्तर : सम्मूर्च्छन जीवों के १४८$^{१}/_{२}$ला.क. कुल होते हैं -

तिर्यञ्च गति सम्बन्धी १३४$^{१}/_{२}$ला.क.

मनुष्यगति सम्बन्धी - १४ ला.क.

इनमें भाव -

क्षायोपशमिक के १३ - २ ज्ञान २ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संयमा.

औदयिक के १७ - २ ग. ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

नोट - क्षायोपशमिक के २ ज्ञान, १ सम्यक्त्व १ संयमासंयम और औदयिक के ३ शुभ लेश्या रूप भाव पंचेन्द्रिय तिर्यंच के ४३$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल में ही होते हैं।

इनमें से पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च सम्बन्धी ४३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुलों में आदि के ५ गुणस्थान होते हैं, अग्निकायिक के ३ ला.क., वायुकायिक के ७ ला.क. तथा मनुष्यों के १४ ला.क.

कुलों में केवल एक मिथ्यात्व गुणस्थान होता है तथा ८१ ला.क. (पृथ्वी के २२ ला.क. जलकायिक के ७ ला.क. वन.के २८ ला.क. द्वी.के ७ ला.क., त्री के ८ ला.क. चतु. के ९ ला.क.) कुल में पहला एवं दूसरा दो गुणस्थान होते हैं।

इनमें भाव-पहले गुणस्थान में - २९

क्षायोपशमिक के ९ - २ अज्ञा. २ दर्श. (च.अच.) ५ ल.

औदयिक के १७ - २ ग. (ति.म.) ४ क. १ लि. (नपुं.) १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

दूसरे गुणस्थान में मनुष्यगति, मिथ्यात्व एवं अभव्यत्व भाव नहीं होने से २६ भाव होते हैं।

तीसरे गुणस्थान में भी इतने ही भाव होते हैं।

चौथे गुणस्थान में - २७

क्षायोपशमिक के १० - २ ज्ञा. २ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १५ - १ ग. (तिर्य.) ४ क. १ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

पाँचवें गुणस्थान में असंयत एवं ३ अशुभ लेश्या कम करके संयतासंयत भाव मिला देने पर २४ भाव होते हैं।

इनके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में केवल पहला दूसरा गुणस्थान होता है। इनमें पूर्वोक्त भावों में से ३ शुभ लेश्याएँ कम करना चाहिए।

नोट - जो आचार्य सम्मूर्च्छन जीवों के अवधिज्ञान अवधिदर्शन आदि भाव मानते हैं उनकी अपेक्षा यथायोग्य भाव लगा लेना चाहिए।

प्रश्न ४१ : गर्भज जीवों के कितने कुल होते हैं ?

उत्तर : गर्भज जीवों के ५७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल होते हैं -

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के ४३$\frac{१}{२}$ ला.क., मनुष्यों के १४ ला.क.

इनमें भाव ५१ -

औपशमिक के २ - सम्यक्त्व चारित्र

क्षायिक के ९ - सम्यक्त्व चारित्र ज्ञान दर्शन दान लाभ..........

क्षायोपशमिक के १८ - ४ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ चा.१ संय.

औदयिक के १९ - २ ग. (ति.म.) ४ क. ३ लि....

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

इन जीवों के १४ गुणस्थान होते हैं।

इनमें से ४३$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल में आदि के ५ गुणस्थान एवं १४ ला.क. कुल में १४ गुणस्थान होते हैं।

४३$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल में भाव - पहले गुणस्थान में - ३१

क्षायोपशमिक के १० - ३ अज्ञा. २ दर्श. ५ ल.

औदयिक के १८ - १ ग. (ति.) ४ क. ३ लि. १ मि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के ३ - जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व

दूसरे गुणस्थान में मिथ्यादर्शन एवं अभव्यत्व भाव नहीं होने से २९ भाव होते हैं। तीसरे गुणस्थान में भी इतने ही भाव होते हैं।

चौथे गुणस्थान में - ३२

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १२ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य.

औदयिक के १७ - १ ग. (ति.) ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असं. १ असि. ६ ले.

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

पाँचवें गुणस्थान में - २९

औपशमिक का १ - सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक के १३ - ३ ज्ञा. ३ दर्श. ५ ल. १ सम्य. १ संय.

औदयिक के १३ - १ ग. ४ क. ३ लि. १ अज्ञा. १ असि. ३ ले. (शु.)

पारिणामिक के २ - जीवत्व भव्यत्व

इनमें से ३१ ला.क. कुल वालों के चौथे गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव भी होता है।

नोट - १४ ला.क. कुल में सभी भाव मनुष्यगति के समान होते हैं।

प्रश्न ४२ : कुल रूप स्थानों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : कुल रूप स्थानों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में गुणस्थान -

१९९$\frac{1}{2}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - १ गुण. - मिथ्यात्व

१८९$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - १ गुण. - मिथ्यात्व

१७३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - १ गुण. - पहला

१३४$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - १ गुण. - पहला

११७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - १ गुण. - पहला

१०८$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - २ गुण. - पहला, चौथा

९६ ला.क. कुल रूप स्थान में - १ गुण. - चौथा

८३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान में - ३ गुण - पहला, दूसरा, चौथा (पुरुषवेद की अपेक्षा)

२६ ला.क. कुल रूप स्थान में - ३ गुण. - पहला, दूसरा, चौथा

२५ ला.क. कुल रूप स्थान में - २ गुण. - पहला, चौथा

१४ ला.क. कुल रूप स्थान में - ५ गुण. - पहला, दूसरा, चौथा, छठा, तेरहवाँ

नोट - १. इनमें भाव यथायोग्य जानना चाहिए।

२. आदि के छह स्थानों में नारकियों के कुल भी होने से दूसरा गुणस्थान नहीं कहा गया है।

प्रश्न ४३ : कितने स्थान में २ गति के जीव पाये जाते हैं?

उत्तर : केवल एक स्थान में २ गति के जीव पाये जाते हैं -

५७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान

इसमें तिर्यंच एवं मनुष्य गति

प्रश्न ४४ : कितने स्थानों में केवल एक गति के जीव होते है?

उत्तर : चार स्थानों में केवल एक गति के जीव होते है -

१३४$\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल रूप स्थान - तिर्यंच गति

२६ लाख करोड़ कुल रूप स्थान - देवगति

२५ लाख करोड़ कुल रूप स्थान - नरक गति

१४ लाख करोड़ कुल रूप स्थान - मनुष्य गति

- प्रश्न पत्र -

१. उपयुक्त विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइये -

(i) **१०८$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल में कितने क्षायोपशमिक भाव होते हैं?**

(अ) १४ (ब) १७

(स) १८ (द) कोई नहीं

(ii) **मिथ्यादर्शन रूप भाव में कितने कुल होते हैं?**

(अ) १७३$\frac{१}{२}$ ला.क. (ब) १९९$\frac{१}{२}$ ला.क.

(स) १४ला.क. (द) २६ ला.क.

(iii) **२५ ला.क. कुल रूप स्थान में कितने भाव होते हैं?**

(अ) १ (ब) २

(स) ४ (द) ३८

(iv) **संयमासंयम रूप भाव में कितने कुल होते हैं?**

(अ) १४२$\frac{१}{२}$ ला.क. (ब) ५७$\frac{१}{२}$ ला.क.

(स) १४ ला.क. (द) कोई नहीं

(v) **११७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल किस दर्शन रूप भाव में होते हैं?**

(अ) अचक्षुदर्शन (ब) चक्षुदर्शन

(स) अवधिदर्शन (द) केवलदर्शन

२. एक शब्द में उत्तर दीजिए -

(i) तिर्यञ्चगति रूप भाव में कितने स्थान होते हैं?

(ii) कितने भावों में १९९$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल होते हैं?

(iii) कितने पारिणामिक भावों में गुण. की अपेक्षा १४ ला.क. कुल रूप स्थान भी होता है?

(iv) कितने क्षायिक भावों में १४ ला. क. कुल ही होते हैं?

(v) पुरुषलिङ्ग रूप भाव में कितने कुल होते हैं?

३. हाँ या ना में उत्तर दीजिए -

(i) मनुष्यगति रूप भाव में १४ ला.क. कुल होते हैं।

(ii) २ लिङ्ग रूप भाव में नरकगति सम्बन्धी कुल नहीं होते हैं।

(iii) अभव्यत्व भाव में चारों गति सम्बन्धी कुल होते हैं।

(iv) संयमासंयम रूप भाव में दो गति सम्बन्धी कुल नहीं होते हैं।

(v) सभी क्षायिक भावों में १४ ला.क. कुल ही होते हैं।

४. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) संयमासंयम रूप भाव में .... गति तथा .... गति सम्बन्धी कुल होते हैं।

(ii) क्षायिक सम्यक्त्व रूप भाव में.................... कुल एवं .... कुल रूप स्थान होता है।

(iii) .... कषाय .... पारिणामिक भावों में अचक्षुदर्शन के समान स्थान होते हैं।

(iv) ८३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल .... लिङ्ग .... लिङ्ग रूप भाव में होते हैं।

(v) १९९$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान.................... ज्ञान एवं .... ज्ञान रूप भाव में होता है।

५. सही जोड़ी बनाइये -

	अ		**ब**
(i)	१०८$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल	-	३ स्थान
(ii)	१९९$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल	-	चक्षुदर्शन रूप भाव
(iii)	३ शुभ लेश्या रूप भाव	-	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव
(iv)	५७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल	-	११ औदयिक भाव
(v)	३ ज्ञान रूप भाव	-	संयमासंयम रूप भाव
(vi)	२५ ला.क. कुल	-	नरकगति रूप भाव
(vii)	११७$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल रूप स्थान	-	८३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल
(viii)	१४ ला.क. कुल	-	औपशमिकचारित्र रूप भाव

- उत्तरमाला -

१. (i) द (ii) ब (iii) अ (iv) ब (v) ब

२. (i) ३ (ii) २२ (iii) २ (iv) ८ (v) ८३$\frac{१}{२}$ ला.क.

३. (i) हाँ (ii) हाँ (iii) हाँ (iv) हाँ (v) ना

४. (i) तिर्यञ्च, मनुष्य (ii) ९६ला.क. १४ला.क. (iii) ४, २ (iv) स्त्री, पुरुष (v) कुमति, कुश्रुत

५. (i) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व रूप भाव (ii) ११ औदयिक भाव

(iii) ८३$\frac{१}{२}$ ला.क. कुल (iv) संयमासंयम रूप भाव

(v) ३ स्थान (vi) नरकगति रूप भाव

(vii) चक्षुदर्शन रूप भाव (viii) औपशमिकचारित्र रूप भाव

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

प्रशस्ति

पंचभाव प्रश्नोत्तर मंजूषा का प्रारम्भ अणुनगरी रावतभाटा वर्षायोग के अंत में हुआ। लगभग ४ वर्षों में लगभग २००० प्रश्नोत्तर के माध्यम से भावों का वर्णन करते हुए जिसकी उत्तर दिशा में ६ कि.मी. की दूरी पर नौगामा में भगवान आदिनाथ स्वामी के समवसरण सहित ५२ जिनालय भव्यों के मन को सहज ही लुभा लेते हैं उसी से एक कि.मी. दूरी पर लघु सम्मेदशिखर की आनंदप्रद रचना है। जिसकी पूर्व दिशा में १८ कि.मी. दूरी पर अंदेश्वर गाँव में भगवान पार्श्वनाथ स्वामी का बिम्ब चौबीसी सहित विराजमान है। ऐसे बागड़ (राज.) प्रांत की बागीदौरा नामक धर्म नगरी में वर्षायोग के दौरान १००८ देवाधिदेव श्री शान्तिनाथ भगवान की आराधना करते हुए विजयादशमी के दिन वीर निर्वाण संवत् २५४० शुक्रवार की दोपहर में भगवान शांतिनाथ स्वामी के प्रसाद से, आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी एवं आचार्यज्ञानसागर जी महाराज के द्वितीय शिष्य मम दीक्षा गुरु आचार्यकल्प स्व. विवेकसागर जी महाराज के शुभाशिष से उन्हीं की पंचम शिष्या आर्यिका विज्ञानमती के द्वारा संघस्थ आर्यिकावृन्द एवं ब्रह्मचारिणी बहिनों के सहयोग से पूर्ण हुआ। इसमें प्रमाद, अज्ञान तथा कषाय के कारण कुछ गलती हो, अधूरापन हो अथवा दोष लगा हो तो प्राज्ञजन शोधकर पढ़ें तथा आवश्यक संकेत देवें, ताकि दूसरे संस्करण में सुधार किया जा सके।

पंच परमेष्ठी की असीम कृपा से जिनेंद्र भगवान की जिनवाणी सदा-सदा जयवंत रहे...।

शुभं भूयात्, भद्रं भूयात्, वर्धतां जिनशासनं

पारिभाषिक शब्द सूची